मुंबई पायधोनी पास शान्ति सुधार प्रेसमें
चीमनलाल सांकळचंद मारणीयाने
मुद्रित कीया.

रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥
त्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनाथंजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥
वाणींहृदयेधृत्वा, लिखामिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंभव्यजीवा
नां, तत्वामृतादिमेलनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णयं
२ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनंरम्यं,
ध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिवहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चयं ॥
ोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्चसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रंथ संग्रहकृत्संक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्वीरजिनेंद्रतीर्थतिलकःसद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः
र्मगणाभृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽभवत्सुविहितेपक्षेस
ारवान्, सेव्यशोभनधीमतां सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥
नीतत्पदपंकजैकमधुकृत्श्रीवर्द्धमानाभिधः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर
गणभृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्भवसिद्धिपंक्तिसरदि ।
८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्बिरुदंकृतोखरतरे त्पार्ख्यं
देर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टानुक्रमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाभि
। दादाविरुदविख्यातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ क्षेमकीर्त्तिनृप,
धः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, क्षेमधाड़ी
ख्यी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविख्यातः, धर्मशीलवुधाग्रणीः ॥ पाठ
नेकभव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमालोढा, नि
धानकुशलाभिधः ॥ धर्ममग्नसमाधिस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥
उपाध्यायसदाचारा, वादीनांमानभंजका ॥ शास्त्रार्थेविजयंप्राप, सं
द्युक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकऋद्धिसारेण, कृतोयंग्रंथसंग्रहः ॥
स्परोपकृतेसम्यग्, प्रसिद्धंस्थापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यक्षेमचंद्रेण,
नामास्सबांधवैः ॥ श्रीगंधकृत्सहायेन, शुभव्यांशासकार्डरः ॥ १३ ॥

यंत्रेमुद्रापितंसम्यग्, यंत्राध्यक्षेणशोधितं ॥ पठकःपाठकेन्योवै, नित्यंश्रेयश्चमंगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरम्ये, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृद्दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदंमिलिष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाभ शुभ हमारे पोषपुत्र शिष्य पं । श्रीक्षेमचंद चि । पेमचंद चि । अमरचंदका है. हमने हमारा सर्व स्वरुपासरा पुस्तक धन्नमालका मालक इन तीनोकों किया है, दूसरा किसीका दावा नजर नहीं ॥ शुभं ॥

दसकत । उ० । श्रीरामलालगणिःका खुद ॥

॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहावीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वामी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रभवस्वामी, तत्पट्टे ५ श्रीशय्यंभवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोभद्रसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसंभूतविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीभद्रबाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीथूलभद्रस्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुभ्राता आर्यसुहस्तिसूरजी भये सो वीरभगवानसें २३५ वरसे संप्रतिराजा तथा एवंतीसुकमालकूं प्रतिबोधके धर्मका बहोत उद्योत किया ११, तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितसूरी १ क्रोम सूरिमंत्रका जाप कीया तबसे कोटिकगछ प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी दश पूर्वधर बमे प्रभावीक विद्यासिद्ध भये इनोंसे वज्रशाखा प्रसिद्ध भई, तेसेंइ १८ पट्टपर श्रीजिनचंद्रसूरी हुये इनोंसें चंद्रकुल प्रसिद्ध भया, इस तरे पट्टानुपाट भगवानसें ३८ में श्रीउद्योतनसूरिः भये सो एक तो निजशिष्य और दुसरा साधुओके ८३ अपणे विद्यार्थी शिष्योकों आचार्यपद दिया तबसें ८४ गछ भया, यह ८४ गछोंके आचार्य बमे प्रभावीक धर्मोद्योतक भए, इन उद्योतनसूरजीके निजपाटधारी आबूजीतीर्थ प्रगटकर्त्ता विमलमंत्री प्रतिबोधक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः भये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः भये सो अणहलपुरपट्टणमें दुर्लभराजाकी सभामें चैत्यवासियोंको शास्त्रार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने खरतर बिरुद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके झलझलायमान। अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसंयुक्त जिसमें खर कहींय बमे कठोर इस वास्ते खरतर बिरुद पाया,

कोट्टिकगच्छ वज्रशाखा चंद्रकुल खरतर विरुद एसें ४ भेद नवदीक्षित शिष्यकूं कहणा सरू भया, इनोंके ४१ में पट्ट दिल्लीके बादसाह प्रतिबोधक जीवहिंसा छुडाणेवाले श्रीमालमहतियाण गोत्र प्रतिबोधक श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, फेर इनोके पट्ट ४२ में इनोके लघुभ्राता श्रीस्थंभणातीर्थ और नवांगवृत्ति प्रगटकर्त्ता श्रीअभयदेवसूरिः भये, तत्पट्टे ४३ में अगरे हजार वागडीश्रावक प्रतिबोधक श्रीजिनवल्लभसूरिः युगप्रधान भये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रभावीक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिः भये जिनोंनें चितोड और उज्जयणी वज्रखंभसे साढीतीन कोटी विद्याम्नायकी पुस्तक निकालके साधकर बावनवीर चोसठ योगणी एक लाख तीस हजार घर राजन्यवंशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस वखत तीनसें गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारी लूणिया राखेचा सावणसुखा गाजेड इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण लिख नहीं सकते, वह आज तक बडे दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५ में मणीधारी दिल्लीके बादसाहकूं प्रतिबोधक अनेक चमत्कार दिखलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचंद्रसूरिः भये जिनोंका दिल्लीके भरबजारमें दाग भया बडा चमत्कार देख बादसाहादिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी भये, अनुक्रमे ५० में पट्टपर महाप्रभावीक कुशलसूरिःजी भये, सो आचार्यपद पायके बावनवीर चोसठयोगणीकूं वसकर संयमें बडे२ उपगार किये, गूजरमल बोथरेकी जिहाज व्याख्यान वांचते हुये पंखीरूपमें वहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण वदि अमावशकों स्वर्गवास भये. फागुण सुदि १५ सोमवारको प्रगट होय प्रथम दरशण दिया, जिसपीछे भक्तलोकोंका उपगार

जगेर करणे लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपणे आचार्यको इष्टदेव समझके सर्व नगर गामरमें चरणमूर्त्ति स्थूंभ स्थापन कर दादा जीके नामसें वंदन पूजन करणे लगें. सर्व जगे दादागुरूका जश प्रख्यात भया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी भये, इनोंके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंद्रसूरि भये, जिनोंने अकबर बादसाहकूं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका बताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उद्घोषणा फिरवाई, सर्व वेषधारियोंकी हिंदुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको गंटा गच्छकी व्यवस्था करमचंद बछावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोंके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोंके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोंके समयमें आचार्य गच्छ सागरचंद्रसूरिःसें भया, इनोंके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोंके समय रंगविजयसूरिःसें रंगविजय गच्छ भया, इनोंके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंद्रसूरि, इनोंके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनभक्तिसूरजी भये, इनोंके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाभसूरजी भये, इनोंके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी भये, इनोंके पट्ट ७० में श्रीजिनहर्षसूरिजी भये, इनोंके पट्ट ७१ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी भये, इनोंके समयमें महेंद्रसूरिजीसें मंडोवरागच्छ भया, इनोंके ७२ में पट्ट श्रीजिनहंसमूरिःजी भये, इनोंके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरिः भये, इनोंके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्त्तिसूरिःजी वर्त्तमान विजयराज्ये ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्त्ता कुल प्रकाशक पुन्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिब श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य महोपाध्याय श्रीक्षेमकीर्त्तिगणिःजीने जं । यु । प्र । भ । श्रीजिनचंद्रसूरिःजीके वखतमें साधुवोंके आचार्यमहाराजके पासमें घणेंन आमें रह कर यत्र२ ज्ञानवंत क्रियावंतोंको जगे२ जगे चतु-

मांस करणे भेजेगये, थोडे वहोत रहेथे सो भी गोचरी थंडिल्ल भूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फकत श्रीउपाध्यायजी ही वैठेथे, श्रीजीका थंडिलभूमीका हाथ धुलाणेकूं उठे, अपणे वि-द्यापाठकजीका एसा स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप विराजो समयका वडा अपरवलीपणा हे सो गछमें साधू वहोत कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिवके वखत कैसे२ ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसे२ पंडित वि-द्यमान थे, अव यह गछ किसदशाकूं पोहचा हे, थोडा समुदाय, जिसमें सुपात्र तो वहोतही थोडे हें, तव उपाध्यायजीने कहा म-हाराज यह वृहद्गछ खरतरमें किसी वातकी कमी नही रहेगी अभी गुरुदेवकी कृपासें यती२ होजांयगें, एसा कह दादासाहि वका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके वाहिर जा वैठे, गुरूके ध्यानमें लीन भये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-रणेकुं जारहीथी, साधूमुनिराजकूं वैठे देख पाशमें आके वंदन नमस्कार कर गुरूके सन्मुख वैठ गये, श्रीउपाध्यायजीनें शांतरश का भरा वेराग्यमई उपदेश दिया सो उन पांचसें राजपूतोंनें वि-वाहकी वांछा छोड दीक्षा ली, दादासाहिवनें देवशक्तीसें सवोंकों धर्मोपगरण वेष दीया, इन सवोंकों लेकर श्रीआचार्य पास आये, सूरिश्वरनें कहा, क्षेमाजी, धाडकीधाड लेआये, उपाध्यायजीने कहा तथास्तु, मेरे शंतानी क्षेमधाड नामहीसे प्रसिद्ध रहे, उस दिनसें वृहत्साखा क्षेमधाड विस्तारभावकू प्राप्त भई. यह साखाकी उत्पत्ती संवत् विक्रम तेरेसेमें सीवाणची देशमें भई, जो अव जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिद्ध हे, इस सारवामें वडे२ विद्वान होते चलेआये जिनोके वनाये अनेक प्रकरण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उस शाखा

में उपाध्याय श्रीनेमयूर्त्तिजीगणिः तत् शिष्य उ । श्रीक्षेममाणि क्यजीगणिः तत् शिष्य । पंडित प्रवर श्रीविनयचन्द्रजिगणिः तत् शिष्य श्रीपं । प्र । लब्धिहर्षजिगणिः तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म शीलजिगणिः (श्रीसाधूजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि गणिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्धिसारगणिजित्संगृहीत रत्नसमुच्चय ग्रंथ तथा रामविलास तच्छिष्य पं । क्षमासौभाग्यमुनिः चि । पेमचंद चि । अमरचंदकी तरफसें यह ग्रंथ सब जीवोंके उपगारार्थ पढणेकूं छपाया । श्रीबीकानेरमें सं । १ए५ए की ज्येष्ट वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ स्थापन करी है इसमें मदत देणवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम बीकानेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनथमलजी चांदमलजी ढढा.
११ रु । श्रीमगनमलजी मंगलचंदजी कानक.
११ रु । श्रीसदारामजी गोलछा.
११ रु । मानमलजी केसरीचंदजी साम.
११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलछा.
१० रु । श्रीराजरूपजी देवचंदजी नाहटा.
७ रु । श्रीआसकरणजी वरढिया.
११ रु । श्रीशादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.
११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेड.
२५ रु । श्रीनालचंद कनीराम आजम मुमईवाला.
३ रु । श्रीवठराजजी नाहटा.

आगे जो विवेकी श्रावक इन पाठशालाकूं मदत देंगें तो ज्ञानका अक्षयनिधान पावेंगें, जर्नलोकोंके कइएक शिष्य जैनपंडित तत्वज्ञानी बण जायगें, जैनउपदेशक वधेगें, ठर जो नही प-

हते हैं उनोंकों इसतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकुं उद्यमवंत करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोंका हे, इस नही पढणेके सबब जैनके भेषधारी उर भेषधारणीयां अनेक कुकर्मोंके वश नरकके पात्र उर धर्मकूं लजाते हे, क्यों की दशवैकालक सूत्रमें लिखा हे (॥ सूत्रं पढमं नाणं तउ दया ॥) पहली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीछै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञानीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा कहते हैं हमारे भावे विगडे तो क्या उर सुधरे तो क्या, हम नतो इनोंकों गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगें, देंगेंतो मानरहित कंगलोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह समझसें तो जैनधर्म अमावश चंडनाकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसें जैनधर्ममें पूनमचंद्रता केसें उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलासादि श्रावकाचार ग्रंथोमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें धर्मसें भृष्टभये धर्माचार्यकूं फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला उतरे, दस वीस आदमी एकठे होकर निंद्या करणेसें विगाडका सुधार नही होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जड विद्यावृद्धि हे, स्वभाव कोई किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसें कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य सो अछी क्रिया चोथा पांचमा छठा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा.

प्रश्न। हम जतियोंकों धर्माचार्य नही मानते? ॥ उत्तर ॥ कोइ कृतघ्नी अपणे पितासे पिताभाव न रखे तो उसका क्या कोइ कर सकता हे लेकिन् संसारमें वह लायकवंदतो नही गिणाजाता, एसेंइ श्रीश्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य तो जतीही हे, जतियोंसें पढते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पडिक्कमणा करते हैं, मंदिरोंमें गायन पूजा चोपी आदि वाचते है यह तो चलता उपगार है. और जतियोंके वडेरोंनें तुमारे वडेरोंकों चिंतामणी रत्न जेसा जैनधर्म दीया है, यह उपगार सबसें वडा है. ॥ प्रश्न ॥ एसोंकों तो हम मानने है लेकिन सुणाणे पढाणेवाले तो कम और धर्म लजाणेवाले वहोत जिनोकों केसें मानें? ॥ उत्तर ॥ सच्च है, इस वातका निर्णय हमने आगे लिखा है सो वांचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों करते हैं इनोंसें यथार्थ धर्म पलता नही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा है सो तो वज्रऋषभनाराच संहणन विच्छेद होतेइ गया, सामायक छेदोपस्थापनी यह दोय रहा, जिसमें भी उत्सर्ग और अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी प्रवृत्ती, सरागसंजमी रहे, वीतरागसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग सूत्रोंमें वांचणें योग्य ठहरगया, आपसमें कषायकी चोकडीका वरतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरंभत्यागकी हमेसां बुद्धि रखे पंचमकालमें वोही साधु है, जतियोके चेला वणाणेमें इतना फायदा है—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रमका पाप ज्ञानपढे वाद आपसेंही छोडदेणा, केइयक इनोंमें चोथा पांचमा छठा सातमादि गुणठाणे चढया, श्रावगवर्गका इस भव परभव संबंधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाभ परजीवकूं सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थंकर गोत्रकर्म वांधता है, योमेंमें विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकुं पढाया नही और गुरु मरे वाद गुरुके कमाये धनसें पापारंभ करे तो यह पाप चेलेका गुरुकुं जरुर लगे या नही? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसें करे जो पापारंभ सो करणेवालेकूं लगेगा, मातापिताकुं नही, यह जैनधर्मका

मर्म दे, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करे करावै अनुमोदे उसकूं पाप लगे ॥

विज्ञापन.

॥ अथ वर्त्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्त्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवंत रूपवंत उर विद्यावंत सुशीलही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्षणवाला दूसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसेंही होणा, फेर हमेसा शास्त्राभ्यासी होणा, बहोत प्रमादवंत नहीं होणा, देश क्षेत्र काल भाव मुजब सदा गच्छकी सारसंभालसें जैनधर्मके दीपक होणा, बेजा चलणसें यतीयोंकों हटकणा, उनोंके मन मुजब नही चलणे देणा, लांछित पुरुषकी संगत नही करणी, उभय काल प्रतिक्रमण करणा, अभक्षके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य जाप करणा, देवदर्शन उर थापनाचार्यादि पडिलेहण करणा, जती जतणींकूं शुद्ध परंपरागम वेष उर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें प्रवर्त्ताणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गच्छबहार करणा, स्वार्थके वश कसूरदारका पक्षपात न करणा, अछे सुशील पंडितो की सोहबत करणी, क्षमावंत भी होणा, समय भी सोचणा, उपदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य उर पंडितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख उर अयोग्य उर बुद्धिहीन अवस्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गच्छके अधिष्ठायक क्षेत्रपाल मानभद्रादिकके साहायसें धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रादिक विद्या लब्धिबलसें संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रभावीक होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्त्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने उर पढाणेवाले होणा, वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीभोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकूं सुविहित मार्गमें चलाणा, गच्छ के धोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधूओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके भंडार नहीं है उहां पुस्तक लिखवाके भंडार करवाणा, अपणी निश्रायें हजारो रुपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधूओंका धर्म नही, फकत अपणेसें उठे उर नित्य पडिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वांचनेकुं चहीये तो ज्ञानभंडारसें लेकर पीछा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिस२ वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहां उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके संघके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके भेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावच्च कराणी नही, उती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, जंघाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंडितोंहींसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर कृतघ्नी होकर उनही की पीछी हीलणा उर निंदा करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही है क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतीयोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पड्ते समयमेंभी होतेआए है, तपा सत्यविजयजी जिनके संतानमें बुंटेरायजी उर आत्मारामजी वगेरे भये है, खरतर अमृतधर्मजी उपाध्यायजी क्षमाकल्याणजी इयते पूर्वपुरुष इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे भये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी भायचंदजी

वगैरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनूंकी जरू इन पुरुषोके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीभी प्रमादी छठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूभी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्त्ती हे इस वास्ते केइयक तो छांने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें भाव करके पंचम गुणठाणी हे केइयक चतुर्थ गुणठाणी, इसी तरे साधुउके सुजबही शुभ भावसंयुक्त जतियोके भाव आश्री गुणठाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीभगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायक्लेस तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे. देखो गुणस्थानकक्रमारोहप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कषायकी बहुलता आजकल साधूउंमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणश्वालोंसें आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके भी देखणेमें आता हे, जब कषाय विद्यमान हे तो लिब्धिपद कैसें लभेगा बलीहारी उनहीकी हे जिनोंनें कषायकी चोकडी त्यागी हे. किंबहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मन वणिक् राजपूत जाट वगैरे उत्तम जाती का चेला तीन च्यार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरांत उमरवाला पढता नही उर बहोत छोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उनकी पालणेट करणेकूं तब बहोतसे कमजात अपणी एबकूं छिपावेकूं निंदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन् न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूंमेंसें बात नही निकालते मूर्खोंके कहणेसें सोना पीतल नही बणता, उणोका स्वभा-

वही होता है सो गुणमें अवगुण निकालते है, जनूंहर लिखता है-सूरवीरकुं निर्दई कहते है गमखाणेवालेकूं डरोकन केते है ब्रह्मचारीकूं नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत है, खैर एसे चेलेकूं मुखपाठ जैनधर्मका अवस्य कर्त्तव्य गुणाना निच फेर अक्षर वांचने सिखाणा अक्षर जमाणे वोलखा पाटी लिखाणी फेर कोश व्याकरण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जीवविचारादि पट् प्रकर्ण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोलपट्टा मुंहपत्ती जघा मांढा चेद्दर पांगरणी स्वेत हमेसां रखणा, मस्तकके वाल केचीसें कतराणे या जस्तरेसें मुंडाणा, पादस्त्राण स्वेत वस्त्र ऊपर दियेहुये शीत उष्ण कांटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर देश आश्री पहरणें दक्षिण पूर्वमें प्रायें नही उहां एसा उपसर्ग नही देश विरुधके कारण त्याज्य है, प्रवचनसारोध्धार ग्रंथमें कारणविशेष साधूंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा है, पुस्तक लिखणा पातरे पाटी वगेर रंगणा गूंथणा तिरपणीके डोरे वणाणे माला वणाणी छोकरे पढाणा मंत्रविद्यामें कुशलाता रखणी सो जी जिनधर्मके अन्यके नहीं, रातकूं चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख यथाशक्ति तप करणा, दोनुं वखत पडिक्कमणा करणा, वत्ती शके सचित्त त्यागणा, राजदंड लोकदंडके एसे रस्ते नही चलणा, कुलमर्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके वरखिलापनसा पीणेवालेकी संगत नही वेठणा, कुविसनीयोंकी संगतसे लंछन लगता है, श्रावक जो द्रव्य देवें सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थयात्रा चेला लेणा उनोंकूं खिलाणा पिलाणा पंडतोंकों रुजगार देके चेलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अंत समय जीवराशी खमाय पापोंकी गर्हा सुकृतकी अनुमोदना कर सब वोसराके परजव साधणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुलभबोधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोमें लिखा है, इस गुणोकूं धारणा चाहिये. ठाणांगसूत्रमें साधुजीकी प्रतिपाल करणेसें श्रावकोंकूं मातापिता तुल्य भगवंतनें कहा है, बालक कसूर भी करे तोभी मातापिता अपणे संतानपर अंतरंगसे कभी द्वेष नही करते है, इसी तरे श्रावकोंकूं साधुलोकोंसें वर्त्तणा चाहिये, भेषधारीसाधूओंमें कोइ तरेकी एव दीखपडे तो एकांतमें हितशिक्षा देके सुधारणा चाहिये, नहीं माने तो बालककूं धमकावे जेसें धमकाणा चाहिये, इस उपरांत सुधरते नही दीखेतो कर्मोकी विचित्रता समझके एसोंकी संगत न करे, जैनधर्मकूं लजावे, एसी एव कोइ नही होय उर शरीरके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल भाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानी नारायणकृष्णकी तरे जरूर करणी, उर जिनधर्मकूं लजावै एसा होयतो उहांसें रुकसत करादेणा. जिनमंदिर उर उपासरेकी आवंद खरचकी सारसंभाल जरूर करे, विनासंभाल किये वहोतसे मंदिर उपासरोंकी तजवीजें बिगड रही है, भंडार लोक खागये है, वास्ते शक्ते इस बातका खयाल दरतरेसें करे, अपणा लडका लडकीयोंकूं संसारविद्या उर धर्मकी प्रवृत्ती करणेकूं पडिक्कमणा चैत्यवंदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशास्त्र अक्षर बचपणेसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर धर्म २ अकलवंतोकी संगत करवाणी चहिये, बिरादरीमें सनातन कुलमरजादसें जो विपरीत आचारणा करे उसकी देखादेख आप न करणा, वणे जहांतक उणोंको भी रोकणा. विद्यमान अंग्रेजी इल्म लडकोंकूं सिखलावे तो पहली जैन न्यायसें हुसियार कर पीछे सिखलाणा क्योंकी इस अंग्रेजी इल्मकी ज्यादा शिक्षाओंके पढणेसें पीछे धर्म

कूं सत्य सनातन दयाधर्मका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बांधणा उर अंग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमें ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हें इस वजें वेलासक पढे उर पढावे, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ जिसने समझा हे वोही जाणता हे उर लसनकूं मुसककी खसबो कब लग सकती हे, जिनोंको संसारमें अभी वहोत भवभ्रमण करणा बाकी रहा हें उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही. कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पंथ न्यारे२ हे मानेभी तो कोन सच्चा उर कोण झूठा ? (उत्तर) हे भव्य हमने पेस्तरही लिखा हे न्याय जो जैनका सात भंगरूप हे उसकूं समझा उर वस्तुउ पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे. (प्रश्न) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोडे हें सो एसा न्याय पढके निश्चय करे सहजमें निश्चय केसें होय ? (उत्तर) जो इतना नही समझो तो जो ऋषभदेवजीसें लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे वीचरमें अल्पज्ञोने अहंकारके वस मनोकल्पित फंदसे एक नय पकडके अपने२ मत खडे किये हें, पट्शास्त्री चौदपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार भगवान भद्रबाहुस्वामी उमास्वाती भाष्यकार जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण इत्यादि पंचांगीकार जो समुद्र सरीखे बुद्धीके धणी उनोंने जिस वातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समझगा, श्रावगधर्मवालों पर वडा उपगार रत्नप्रभसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योने किया हे सो केइयक पापारंभकी वातें तो इस जातीके कायदेसेंही वंध होगई हे, जैसें मद्यका पाणा उर मांसादि अभक्ष खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धारे२ एसे उत्तम कुलमें निर्बुद्धीयोनें अधोगतीकी समझ वां-

घणे पर मुसलेद हुवे सुणनेमें आते है, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निग्न्नाग्यकी तरे क्यों हाथसें फेकते हो पीछे पछ-तावा होगा थोडे दिनकी जिंदगानी है, मदिरा पीणेमें बावन उगुण है एसेंइ मांसमें देखो जैनतत्वादर्श नाषाग्रंथ, यही चीज अछी होती तो तुमारे वगेरे लाखों राजपूत इस चीजोंको क्यों छोडते उर मुसलमीनोकों जो धर्मकायदेमें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किंबहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसें सत्कार करणा चाहिये, जैनकोममें संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पंमित तो दुस्मन जी अछा होता है मूर्ख हितकारी जी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेही करता है मूर्खके ! विनाका-रण द्वेष उर अहंकारीपणा होता है बाकी तो कवियोंने कहा है— दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जणनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपनोगमें लेता हे सो सब उत्तम चीजका दान करता है एक त्वो वर्जके उन करके जन्मांतरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता नोग कर संसारका पार पुन्यानुबंधी पुन्यसें पाता है मुक्तिपंथ जाते हुवे जीवकूं पुन्य वोलानठकर है, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिकसाधुवोंको देवे, देवके निमत्त अष्टद्रव्य गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंमें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे कलमणे दान करे, सा-धर्मी तथा जैनमंदिरोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र नोजनादिक यथायोग्य दान करे, तीर्थंकर नगवान जी संवत्सरी दान देते हैं, दानधर्म मुख्य है नगवतीजीमें मह-चक्र अनंतद्वार कहा है, नगवतीजू त्रमें सात गुरु कहे हे जिइ गुरु १ जो कारागरी सिखलावे सो, क-लागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु

३ सामायक पडिक्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेस दे के मुक्तिपंथ बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य भक्ती करे ॥ अत्रे चउभंगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवंत देसविराधक । १ । कष्टरूप क्रिया करणेवाला देशआराधक । २ । ज्ञान और क्रियारहित सर्वविराधक । ३ । ज्ञान और सतक्रियावंत सर्वआराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णयः ॥ विशेष श्रावकोंके करणे योग्य कर्त्तव्य देखणा होय तो हमारा छपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मंदिरके पूजारीयोंके कर्त्तव्य ॥

मारवाडमें प्रायें जैनमंदिर भोजगही पूजते हैं उनोंमें इस वखत प्रायें मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्ती बहोतही कम है, गुजरातमें जो भोजक जैनमंदिर पूजते हैं सो सब जैन हैं जिनोंको अन्य देशोंमें गंधर्व कहते हैं. (प्रश्न) पूर्वोक्त भोजकोंनें जैनधर्म कबसें छोडा है ? (उत्तर) पहले श्रीऋषभदेवजीनें भोगवंश स्थापनकर अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछै भरतजीनें ब्राह्मणवंश स्थापन करा, राजा सूर्ययशनें भोगवंशीयोंकों पूज्य जाण जिनमंदिरोंकी सारसंभाल सोंपी लेकिन् जिनमंदिरका चढापा मंदिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणेसें बलिदान भोगवंशी नही खातेथे वो सब पंखी जानवर खायाकरते, इनोंकों अनेक तरेसें पर्व महोत्सव पर द्रव्य वस्त्र भोजनादिकसें राजा और प्रजा सब सत्कार करतेथे वो सब नवमें दशमें भगवानके अंतरमें मिथ्याधर्मी होगये बाद कभी कोइ जैन कभी मिथ्यात्वी एसे होते चले आये, जब २४ सै वर्ष पहले उर्मीयामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राजपूतोंके संग भोगवंशी फेर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलदेव प्रधान वगेरोंनें भक्ती और बहुमानता के संग जिनमंदिरका पूजारीपणा साधर्मी ब्राह्मण जाण सुपत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवत् श्रीग्रेमें रामानुज माधवाचारी वगेरोनें विष्णु संप्रदाय निकाली, उसही जमानेमें अनेक राजन्यवंशीओंको दादा जिनदत्तसूरजीने लाखों ओसवाल फेर बणायें, तब राजवीयोंनें गुरूसें अरज की इस दयाधर्मके प्रभावसें निर्दयीपणा हम लोकोंसें होगा नहीं राज्य तो सदा थिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा, गुरूने कहा जो जिनमंदिरोंकी भक्ती और जतीगुरुकी सेवा अभक्ष्य त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहांतक चलोगे तहांतक पाटका मालक राजा और सर्व थाटका मालक तुमलोक रहोगे तथास्तु वरदान एसाहु भया, राजाउने अपणें भाई स्वजनवर्गी ओसवालोंकुं प्रधान हाकम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथायोग्य सुप्रत किया, तबसे २२ सौ रजवाडोंमें ओसवालोंका राज्याधिकार वणा तबसें ओसवालोंने महरवानी रखके विष्णुमंदिर शिवालयादिकोका पूजारीपणा भी भोजकोंकों सोंपा वह भोगवंशी फेर पीछे धीरे २ मिथ्यात्वी वणबेठे, विद्याहीनता होणेसें सब तरेकी हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण भोजकोंकों कर्म कर करके मानणे लगे पूर्वभाव उठगया, जो कभी भोजकलोक एसा समझतें होंगें की हम तो असलसेंही शैव वैष्णव थे (उत्तर) यह समझणा भूल है हम पहलां लिखदिया है जैनधर्मकी बहुलायतमें प्रजा जैन रही. ओधोक असल बौद्ध, सांख्यादिकोंके असलमें सांख्य, इत्यादि बातें तवारीकोंसें भी पाईजाती है लेकिन जैनधर्म और मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका है इतना भोजकोंको जरूर समझणा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मी होते तो राजा कुमारपाल प्रमुखादिक परमजैन तुमारा खाणा और बहुमान कुसंग पर कभी नही लगाते, मिथ्याधर्मीयोका और जैनकाम तेलोपर बड़ नग तकनाथा इतनेसेंही समझणा, शास्त्रोंमें

विष्णुमंदिरोंकी पूजा उर राजा वगेरेकी देखादेख संग होय लगा, उसवालोंनें तिथ नहीं करी वध गया. इस तेरहही वक्तसें उसवंशी भी खुसामदीसे दुसरा धर्म धारलिया तुमको क्या कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुछ मतलब नहीं मती जैसी गती हे लेकिन अब हम आगे लिखतें हें उस पर अमल करणा तुमारा फरज हे, लोकीक कहणावट भी हे " जिसकी खावे बाजरी जिसकी भरणी हाजरी " उसमें हरज करणेसें निमकहराम कहलाता हे ॥ अंतरंगभक्तीसें जिनमंदिरमे झाडू देणा, बरतन मलणा, अंगलूहणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी शुद्धी अंगकी शुद्धी विगर जिनमूर्तीका स्पर्श नही करणा, पूजा एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा भी नही रहणे देणा, दीपक जलाणेंमें ढकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध छाणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री बहोतही विवेकसें रखणा, देवद्रव्यकी चोरी नही करणी, हक्कमें हरकत भालणा नही, देव उर गुरूकी सेवा करणेसें तुम्हें सेवगपद मिला हे, जो भावसें करोगे तो जन्म सुधरेगा अगर कर्मोंके वश जो श्रद्धा नही आवे तो जिसकी व दोलत रोटी आदि सङकर्मो रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें सङकर्मो रुपै श्रावक देते हें वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलंविस्तरेण ॥

ऊपर ठ उपदेश मेंने लिखे हे कोइ कठोर लवज लिखा होय तो माफी मांगताहूं सरलभावसें लिखा हे द्वेषसें नही ॥

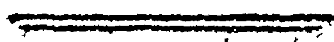
इस ग्रंथके छापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह गया होय सो सुधारके बांचे या गुरूसें शुद्ध करालेवें में मनशुद्धिसें सर्व संघसें क्षमा मांगताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते-

है, उनोंका मैं सदा आभार मानताहूं ॥ यतः ॥ तथापिकिंचित ग्रंथ, संतियद्यपिदुर्जना ॥ नहिदस्युभयाल्लोको, देन्यवानिदवर्त्तते ॥ ॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोभी करताहूं यद्यपि दुरजन बहोत हे चोरोंके मरमें लोक कंगाल नहीं बण बेठते तेसे १ मेंनें अपने हाथसे लिखकर मुंबइ भेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें संग्रह मेंने अनेक ग्रंथोंसे किया है, बहोत चीजें पं। प्र। श्रीअबीरचंदजीमुनिःसे लीहै, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संचय हे. ऋषभदेवजीका आदिअक्षर। र। महावीरस्वामीका। म। इन दोनोंसे बणा जो। राम। उनोंके मध्यवर्त्ती सब भगवंतोंके गुणोंका विलास इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे॥

॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सवईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवाः, यदीयपादाब्जतलेलुठंति ॥ मरुस्थलीकल्पतरुःसजीया, द्युगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिंतामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिभव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री जिनदत्तसूरेः, सर्वेपदार्थाललितपदेश्वविशः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी, नचपराधीशस्तनोशाकिनी ॥ नोवेताल पिशाचराक्षसगणाः, नोरोगशोगोभयं नोमारीनचविभ्रमः, प्रभूतयः श्रीत्याप्रगल्पुभकैः ॥ यस्तैःश्रीजिनदत्तसूरि, गुरुर्नोनामाक्षरंध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ सवईया ॥ बावन वीर किये अपणे वश, चौंसठ योगण पाय लगाई ॥ डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ बीज तणा कणका कडक, अटक रहे जु खटक्क न काई ॥ कहे धर्मसीद लंघे कुण लीक, दीधे जिनदत्तकी एक दुहाई ॥ १ ॥ इति ॥ राजे कुंभ ठोरठोर, एसो देव नहीं और ॥ दादो दादो नामसें, जगत्र जश गायो हे ॥ आपणेही भाव आप, पुजै जम्क लोक पाय ॥ ध्यावनकुं मनमांभ, पायो आन पायो है ॥ घाट घाट हाट हाट,

हाट पुर पाटणसें ॥ देह गेह नेहसें, कुशल वरतायो है ॥ धर्मसीह ध्यान धरे, सेवकां कुशल करै, साचौं श्रीजिनकुशलसूरि, नाम युं कहायो है ॥ १ ॥ कुशल अंग नवरंग, कुशल वणिजै व्यापारे, कुशल देव देहरे, कुशलै घन राजदुवारे ॥ पुन्य पसाये कुशल कुशल श्रीसंघ भणीजे, वाहण आवे कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिनचंद्र सूरि गुरु पट्टधर नाम मंत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि पाय पूजतां नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वस्यो संसार कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लच्छि घर कुशलै आवै ॥ कुशलै घन वरसंत कुशल धन धन्नरुवन्नो, कुशलै घोमां थट्ट कुशल पट्टरीय सुवन्नो ॥ एरसो नाम सदगुरुतणो कुशलै जय रलियामणो, भट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२ होय वधामणो ॥ १ ॥



रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.

ग्रंथोका नाम. पृष्टांक.

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

॥ अथ फुटकर चैत्यवंदन ॥

॥ पूजा प्रारंभ ॥

॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥

॥ अथ तपगच्छ सामाचारी ॥

---*---

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ रत्नसमुच्चय ॥

॥ मंगलाचरण ॥

ॐकारं बिंदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायंति योगिनः ॥
कामदं मोक्षदं चैव । ॐकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

ॐकार उदार अगम्म अपार । संसारमें सार पदारथनामी ॥
सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर भूप सुधामी ॥
मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अंतरजामी ॥
पंचही इष्ट बसे परमेष्ट । सदा ध्रमसी करे ताहि सलामी ॥ १ ॥
नमो निसदिस नमायके सीस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥
जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहै सब दीन असाता ॥
इंद नरिंद दिणिंद फणिंद । नमावत वृंद आनंद विधाता ॥
धारो धरमको धीर धराधर । ध्यान धरे ध्रमसी गुण ध्याता ॥ २ ॥

॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिनकी मोटी मेरु । जिनदीनो सदा दृढ ध्यान नगीनो ॥
ज्यूं मर्यो भ्रम भी तम रैणन । पूर जग्यो परकाश नवीनो ॥
देनहि देनहि दूजो देव । इक स्वामीहि सूझत नाहि मजानो ॥
धर्मो धर्मान कियो गुरुराय । निशि भ्रमरा पदपंकज लीनो ॥ ३ ॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाञ्जनशलाकया ॥
नेत्रमुन्मीलितं येन । तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीसारदायै नमः ॥

सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥
विश्वरूपी विसालाक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥
सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥
हंस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरें सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीको नीकी सेवा ।
रागे आए लागे पाए जागे मोटी माईहे ॥
चंगी रंगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।
हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकूं गाईहे ॥
हंसी केसी चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।
लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥
सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।
एसी माता शाता दानी धर्मसीहें ध्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः

॥ व्यंजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ड ढ ण । त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क्ष । ज्ञ ॥ क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ मृ वृ सृ गृ मृ हृ ॥ क्य ख्य ग्य घ्य च्य छ्य ज्य झ्य ट्य ठ्य ड्य ण्य त्य थ्य ध्य न्य प्य फ्य.भ्य म्य य्य ड्य प्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र घ्र ज्र त्र द्र प्र ब्र भ्र म्र श्र स्र ह्र ॥ क्व ग्व घ्व त्व द्व ध्व म्व स्व ह्व ष्व स्व ॥ क्ल ग्ल प्ल ल्ल म्ल म्ल श्ल प्ल ल्ल क्ष्ण ॥ क्म ग्म घ्म च्म ण्म ध्म न्म ड्म प्म स्म ल्म द्म । र्कें र्खें र्गें र्घें ॥ क्क क्क ग्ग ग्घ ङ्ग । च्च च्छ ज्ज ज्झ ञ्ज

ङ्ङ ङ्क ङ्ख ङ्घ ण्ण न्त न्थ न्द न्ध न्न ॥ प्प प्फ ब्ब ब्भ म्म य्य र्र ल्ल व्व श्श ष्ष स्स ॥ ह्य ह्न ह्म ॥ १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १००००० ॥ १०००० ॥ १००००० ॥ १०००००० ॥

स्वस्तिश्री कृष्णवृष्णस्था । णिंवद्राह्याम्युश्च स्वस्करा ॥
पृथ्वीभृद्वल्गुश्रेष्ठात्म । त्रम्यास्तेहयज्ञसिदा ॥

॥ अथ शिक्षावाक्य ॥

गुरुशुश्रूषया विद्या । पुष्कलेन धनेन वा ॥
अथवा विद्यया विद्या । चतुर्थं नैव कारणं ॥ १ ॥
विद्वत्वं च नृपत्वं च । नैव तुल्यं कदाचन ॥
स्वदेशे पूज्यते राजा । विद्वान सर्वत्र पूज्यते ॥ २ ॥
पंडितेच गुणा सर्वे । मूर्खे दोषा हि केवलं ॥
तस्मात्मूर्खसहस्रेषु । प्राज्ञ एको विशिष्यते ॥ ३ ॥
नक्षत्रभूषणं चंद्रो । नारीणां भूषणं पतिः ॥
पृथिव्या भूषणं राजा । विद्या सर्वस्य भूषणं ॥ ४ ॥
माता शत्रुः पिता वैरी । बालो येन न पाठितः ॥
न शोभते सभामध्ये । हंसमध्ये बको यथा ॥ ५ ॥
लालयेत्पंचवर्षाणि । दशवर्षाणि ताडयेत् ॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे । पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ ६ ॥
वरमेको गुणी पुत्रो । न च मूर्खशतान्यपि ॥
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति । न च तारागणोऽपि च ॥ ७ ॥
अविद्यं जीवनं शून्यं । दिक्शून्या चेदबान्धवा ॥
पुत्रहीनं गृहं शून्यं । सर्वशून्या दरिद्रता ॥ ८ ॥
न च विद्या समो बंधु । न च व्याधिसमो रिपुः ॥
न चापत्यसमः स्नेहो ॥ न च दैवात्परं बलं ॥ ९ ॥
किं तया क्रियते धेन्वा । या न सूते न दुग्धदा ॥

कोऽर्थः पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न भक्तिमान् ॥ १० ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शांतये ॥
पयःपानम्भुजंगानां । केवलं विषवर्द्धनं ॥ ११ ॥
मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥
आत्मवत्सर्वभूतानि । वीक्षंते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णः समाम्नायः तत्र चतुर्द्दशादौस्वराः दशसमाना तेषांद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णौ पूर्वोह्रस्वः परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जोनामी एकारादीनिसंध्यक्षराणि कादीनिव्यंजनानि तेवर्गापंचपंचवर्गाणांप्रथमद्वितियौ शषसश्चघोषाः घोषवंतोऽन्ये अनुनासिकाः ङञणनमाः अनतस्थाः यरलवाः ऊष्माणः शषसहाः अःइतिविसर्जनीयः कःइतिजिह्वामूलीयः पःइत्युपध्मानीयः अं इत्यनुस्वारः पूर्वपरयोरर्थोपलब्धौपदम् अस्वरंव्यंजनं परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्विश्लेषयेत् लोकोपचारात्ग्रहणसिद्धिः इतिसंधोसूत्रतः प्रथमश्चरणसमाप्तः ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अर्हतोभगवंतइंद्रमहिताः । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः । पूज्या उपाध्यायकाः ॥
श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा । रत्नत्रयाराधकाः ॥
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं । कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

अर्थः—(एते पंचपरमेष्ठिनः प्रतिदिनं वः युष्माकं मंगलंकुर्वंतु) यहजो पंचपरमेष्टिपदहै सो हमेसां तुमभव्यजीवोंकुं मंगलकरो. केसेकहै पंचपरमेष्टि (अर्हतोभगवंतइंद्रमहिता) प्रथम परमेष्टि श्री अरिहंतदेव आठकर्मरूप अंतरंगवेरियोंकों हणे सो अरिहंत कहीजे. फेर श्री अरिहंत केसेंहै, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहै फेर अरिहंतमाहाराज केसेंकहै भगवंतहै भगशब्दके अनेकार्थ कोषमें चौदे

अर्थहै ॥ सूर्य १ ज्ञान २ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६ रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य १३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसे दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १२ अर्थ अरिहंत भगवंतमेंहे एकतो सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो टालके फेर श्री अरिहंत भगवंत केसेंकहें (इंद्रमहिता) चोसठ इंद्रोंसें पूजनीक बारेगुणोंसें बिराजमानहे सो बारे गुण एसेहें प्रथमतो अरिहंतमें अद्भुत रूप होताहे रोग और पसीना और मलरहित बरा खुसबोदार सरीर होताहे १ सासोश्वासमें कमलके फूल जेसी खुसबो होतीहे २ लोही और मांस गउके दुध जेसा स्वेत होताहे ३ आहार नीहारकी विधि अदृस्य होतीहे अर्थात चर्म चक्षुवालेकों दिखाई नहीं देता ४ यह च्यार अतिशयगुण जन्मसेंही होताहे और बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न भये बाद होताहे अशोकवृक्ष १ भगवानके सरीरसें बारेगुणा ऊंचा होताहे जिसकी छाया बेठनेसें रोगसोकादिक दूर होताहे १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोंके समूह गोडे पर्यंत पंचरंगेफुलोंकी बरसात करे आकाससे गिरते सीधे गिरे । बींट नीचा रहे पांखडी ऊपर रहे २ । (दिव्यध्वनि) एक योजन तक देवता मनुष्य तिर्यंच सब जीव अपणीर भाषामें यथावस्थित समझे एसा उनोंकों मालम देवेके भगवान हमारी बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही बात सिद्धांतोंमें कहाभीहे ॥ गाथा ॥ एगाउसिगालेगे । संदेहच्छिंणसमंछिन्ना ॥ निहुयगमणंगामेंता । अरिहंताहंतिसिवसरणं १ । ३ ॥ चामर ४ भगवानके दोनों तरफ इंद्र चम्मर ढोल्ता रहे ४ ॥ आसनश्च ५ भगवंतके बेठणेकु इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासण रहे ५ ॥ भामंडलं ६ भगवानके पिछाडी भामंडल रहे जिस्में भव्यजीव भगवानके सन्मुख देखतेहि भगवंतके च्यारमुख च्यारोंदिशामें दीखाईदेवे भगवान पूर्वदिशामें मुख करके बेठे और तीन दिशामें भगवंतकी प्र-

तिमा व्यंतर देवता स्थापन करै लेकिन् भगवानके अतिशयसें च्यारोंहीदिसामें बारेपरखदाकूं अपने सामने उपदेश देतेभये दिखाइदेवे ६ ॥ दुंदुभी ७ आकाशमें देव ते देवदुंदुभीवाजित्र वजावे ७ ॥ छातपत्रं ८ भगवंतके विहारकी वखत मस्तकपर तीन छत्र रहै ८ ॥ यह आठगुण देवतोंके किये होतेहे एसे अरिहंत देवाधिदेव चोतीस अतिशय विराजमान पेंतीस वचनगुण सोभित एक हजार आठ लक्षणालंकृत अठारे दूषणरहित शांत दांत कृपासागर त्रैलोक्यनाथ तीन जगत्के गुरु वर्त्तमान कालमें महाविदेह क्षेत्रमें केवलज्ञान केवलदर्शनसें लोकालोकका भाव देखतेभये पृथ्वीमंडलपर भव्यजीवोंके मनोरथ पूरणायके विचरतेहें एसे अनंत गुणसें विराजमान अरिहंत देवाधिदेव श्री संघमें सदा मंगल करो १ ॥ (सिद्धाश्चसिद्धिस्थिता) दूसरे पदमें श्री सिद्धमहाराजकूं नमस्कार हुवे केसेकहें श्री सिद्धमहाराज अष्ट कर्मरूपकाष्टकों शुक्लध्यानरूप अग्निसें भस्मकर सिद्धगतिकों प्राप्तभये अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंततप अनंतवीर्य संयुक्त जन्म जरा मरणरोग सोक भयादिकसें रहित चवदे राजलोकमें सब जीवोंके मनोगतभाव एकसमयमें जाणते उर देखतेथके लेकिन् आत्मगुणोंमे मग्न रहेभये एसे श्रीसिद्धमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ॥ २ ॥ (आचार्या-जिनशासनोन्नतिकरा) तीसरे पदमें श्रीआचार्यमहाराजकूं नमस्कार हुवे केसेकहे श्रीआचार्यमाहाराज छत्तीसगुणोंसें विराजमान मुक्तिमार्गके साधक कर्मशत्रुकेविगावक पंचाचारपालक भव्यजीवप्रतिबोधक क्षमागुणभंडार समदृष्टी तरण तारण धर्मकेधोरी जिनशासनके उन्नतिके करणेवाले एसे परमउपगारी श्रीआचार्यमहाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ३ ॥ (पूज्याउपाध्यायका श्रीसिद्धांतसुपाठका) चोथे परमेष्ठिपदमें श्रीउपाध्यायमहाराजकूं नमस्कार हुवे केसेकहे श्रीउपाध्यायमहाराज द्वादशांगी सूत्रार्थके जा-

णकार नवनिक्षेपागमापर्यायसंयुक्त सिद्धांतकेपदार्थवाले २५ गुणोंमें विराजमान एसे श्रीउपाध्याय महाराज श्रीसंघमें सदा मंगल करो ४ ॥ (मुनिवराःरत्नत्रयाराधकाः) पंचम परमेष्टिपदमें सरव साधुमुनिराजजी कैसेकहे श्रीसाधुमुनिराज ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ इन तीन रत्नोंके आराधक पांचे सुमतेसमता तीनि गुप्ति-गुप्ता छकायके पीहर कुरकीसंयम चारित्रपात्र मोक्षमार्गके साधक एसे सब साधुमुनिराज सत्ताईस गुणोंसें सोभित श्रीसंघमें सदा मंगल करो ५ ॥ इति हितोपदेश दोनोंके कल्याणार्थं ॥

॥ अथत्रिंजिननाम ॥

॥ अतीतचोवीसी ॥

१ श्रीकेवलज्ञानीजी	२ श्रीनिर्वाणीजी ॥
३ श्रीसागरजी	४ श्रीमहायसजी
५ श्रीविमलदेवजी	६ श्रीसर्वानुभूतिजी
७ श्रीश्रीधरजी	८ श्रीदत्तस्वामीजी
९ श्रीदामोदरजी	१० श्रीसुतेजनाथजी
११ श्रीस्वामीजी	१२ श्रीमुनिसुव्रतजी
१३ श्रीसुमतिनाथजी	१४ श्रीशिवगतिजी
१५ श्रीअस्तागजी	१६ श्रीनमिश्वरजी
१७ श्रीअनिलनाथजी	१८ श्रीयशोधरजी
१९ श्रीकृतार्थजी	२० श्रीजिनेश्वरजी
२१ श्रीशुद्धमतीजी	२२ श्रीशिवकरजी
२३ श्रीस्यन्दनजी	२४ श्रीसंप्रतिस्वामीजी

॥ वर्तमानचोवीसी ॥

१ श्रीऋषभदेवजी	२ श्रीअजितनाथजी
३ श्रीसंभवनाथजी	४ श्रीअभिनंदनजी
५ श्रीसुमतिनाथजी	६ श्रीपद्मप्रभुजी

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी
८ श्रीचंद्रप्रभूजी
९ श्रीसुविधनाथजी
१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयांसजी
१२ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी
१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी
१६ श्रीशांतिनाथजी
१७ श्रीकुंथुनाथजी
१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमल्लिनाथजी
२० श्रीमुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी
२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी
२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी
२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी
४ श्रीस्वयंप्रभुजी
५ श्रीसर्व्वानुभूतिजी
६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी
८ श्रीपेढालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी
१० श्रीशतकीर्त्तिदेवजी
११ श्रीसूव्रतनाथजी
१२ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कपायदेवजी
१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी
१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी
१८ श्रीसंवरनाथजी
१९ श्रीयसोधरजी
२० श्रीविजयनाथजी
२१ श्रीमल्लिप्रभूजी
२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी
२४ श्रीभद्रंकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमंधरजी
२ श्रीयुगमंधरजी
३ श्रीबाहूजी
४ श्रीसुबाहूजी
५ श्रीसुजातजी
६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी ८ श्रीअनन्तवीर्यजी
९ श्रीसूरप्रभजी १० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी १२ श्रीचंद्राननजी
१३ श्रीचंद्रबाहुजी १४ श्रीभुजंगजी
१५ श्रीनेमप्रभजी १६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी १८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशाजी २० श्रीअजितवीर्यजी

॥ च्यारसाश्वतातीर्थंकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी २ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीवारिषेणजी ४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनामा जिना साश्वतेव भवंति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी २ चंदनबालाजी
३ श्रीराजीमतीजी ४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी ६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी ८ श्रीशीताजी
९ श्रीसुभद्राजी १० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी १२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीदमयंतीजी १४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रभावतीजी १६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि नरनार सतियांकों त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐपरमेष्ठिने नमः ॥

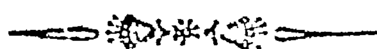
॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसंयुक्त देवसिराइ ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ णमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥ ॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥ इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन वेर गुण कें थापनाजीकी थापना करे, तब तेरे बोल चिंतवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पडिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारुं ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सद्दहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥ ॥ २ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पांच आचार पालुं ॥ १ ॥ पलावुं ॥ २ ॥ अनुमोदुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥ ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकरणसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीछें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने खमा हो कें तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ खमासमण ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार भगवन् सुहराइ, सुहदेवसी, सुख तप शरीर निराबाध सुखसंयम यात्रा निर्वहोछोजी? स्वामी शाता छेजी? इति ॥ ॥ ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवारें गुरु कहे देवगुरु प्रसाद ॥

॥ पीछें नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अभुट्ठिओमि कहे पीछें खमासमण देकें इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेह. पीछें इच्छं कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पचीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पडिलेहण डावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्रविराधना ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥ कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥ ३ ॥ परिहरुं ॥ यह नव पडिलेहण जिमणे हाथसें करणी ॥ यह पचीस बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अंगकी पचीस पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ कृष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या ॥ ३ ॥ ए तीनुं नीलाडें मस्तकें परिहरुं ॥

॥ ऋद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥३॥ ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशल्य ॥ १ ॥ नियाणाशल्य ॥ २ ॥ मिच्छादंसणं-शल्य ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंभे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय डावे खंभे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन डावे हाथे परिहरुं ॥

॥ भय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंछा ॥ ३ ॥ ए तीन जिमणे हाथे परिहरुं ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अप्पकाय ॥ २ ॥ तेऊकाय ॥ ३ ॥ ए तीन डावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाउकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥३॥ ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुहपत्ति पडिलेहणा संपूर्ण ॥५॥

॥ पीछें खमा होय कें इच्छामि खमासमणका पाठ कहे कें इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ सामायिक संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें फेर खमासमण दे कें इच्छा० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥

॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देइ थोभो झुकी तीन नवकार गणी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनुं पच्चक्खाण ॥

॥ करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि ॥ जाव नियमं पज्जुवासामि ॥ दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं,

करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीछें खमासमण देके इच्छाकारेण संदिसह भगवन्
इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ गुरु कहे पडिक्कमह, पीछें इच्छं कही ॥
इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ॥ इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ॥ ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥ अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया ॥ किलामिया उद्दविया ठाणाउ ठाणं संकामिया जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायच्छित्तकरणेणं ॥ विसोहीकरणेणं ॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ निग्घायणट्ठाए ॥ ठामि काउस्सग्गं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्थ ऊससिएणं ॥

॥ अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छाए ॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं ॥ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं ॥ अभग्गो अविराहिओ ॥ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥ ४ ॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ९ ॥ इहां चार नवकार अथवा एक लोगस्सको काउस्सग्ग

करे. पीछें णमो अरिहंताणं कहे कें काउस्सग्ग पारकें मुखसें प्रगट लोगस्स कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ लोगस्स ॥

॥ लोगस्स उज्जोअगरे ॥ धम्म तिथ्यरे जिणे ॥ अरिहंते कित्तइस्सं ॥ चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसन्न मजिअं च वंदे ॥ संन्नव मन्निणं दणं च सुमइं च ॥ पउमप्पहं सुपासं ॥ जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं ॥ सीअल सिज्जंस वासु पुज्जं च ॥ विमल मणंतं च जिणं ॥ धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं ॥ वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ॥ वंदामि रिठ नेमिं ॥ पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एव मए अन्निथुआ ॥ वि हुय रय मला पहीण जरमरणा ॥ चउवीसंपि जिणवरा ॥ तिथ्य रामे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया ॥ जे ए लोगस्स उ त्तमा सिद्धा ॥ आरुग्ग बोहिलान्नं ॥ समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवरगंन्नीरा ॥ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ सवलोए० ॥ इति ॥ १० ॥

॥ पीछें खमासमण देइ इच्छा० ॥ न्नगवन् बेसणो संदि स्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे कें वली खमा- समण दे कर ॥ इच्छा० ॥ न्नगवन् बेसणो ठाउं ? गुरु कहे ठाएह ॥ फेर इच्छं कहे कें खमासमण दे कर इच्छा० ॥ न्न० ॥ सिज्झाय संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कहे के वली खमासमण दे कर इच्छा० ॥ न्नग० ॥ सिय्झाय करुं? गुरु कहे करेह ॥ फेर खमासमण दे कें इच्छा सन्मे हो कर आठ नवकार कह कर सझ्झाय करे. तथा जो शीतकालादि होवे तो खमासमण दे कें इच्छा० ॥ न्न० ॥ पांगरणो संदिस्सावुं ? गुरु कहे संदिस्सावेह ॥ पीछें इच्छं कह कर खमासमण दे कर इच्छा० ॥ न्न० ॥ पांगरणो पडिग्गाहुं? गुरु कहे पडिग्गाहेह ॥ पीछें इच्छं क

ही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसासहित श्रावक वांदे तो "वंदामो" एसो कहे. और जो कोई दूसरो वांदे तो, सि च्चाय करेह, एसें कहे ॥ इति प्राभातिक सामायिक ॥

॥ अथ राइ प्रतिक्रमणविधि प्रारंभः ॥

॥ प्रथम एक खमासमण दे के इच्छा० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही जयउ सामि जयउ सामि इत्यादि कहे, सोही लिखते हैं ॥

॥ अथ सकलतीर्थंकरनमस्कारो लिख्यते ॥

॥ जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेत्तुंजि उज्जिंति ॥ ॥ पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंमण ॥ १ ॥ भरुअच्छेह मुणिसुव्वय, महुरिपास दुह दुरिय खंमण ॥ अवरविदेहिज तित्थ-यर, चिहुंदिसि विदिसि जं केवि ॥ तीआणागय संपयं, वंदु जिण सव्वेवि ॥ २ ॥

॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम संघयणि ॥ उक्कोसउ सत्त-रिसउ, जिणवराण विहरंत लप्भइ ॥ नवकोमीहिं केवलिण, कोमि सहस्स नव साहु संपइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोमीहिं वरनाण ॥ समणह कोमी सहस्स दुई, थुणिज्जइ निच्च विहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लख्खा छप्पन्न अठ कोमीउ ॥ चउ-सय छायासीआ, तिल्लुक्के चेइए वंदे ॥ २ ॥ वंदे नव कोमि सयं, पणवीसं कोमि लख तेवन्ना ॥ अठावीस सहस्सा, चउसय अठा-सिया पमिमा ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नाम तिठं ॥ सग्गे पायाले माणुसे लोए ॥ जाइं जिणबिंबाइं ॥ ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, ति-

ह्नगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंमरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अजयदयाणं, चरकुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं ॥ धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पमिहय वरनाण दंसण धराणं, विअट्ट उउमाणं ॥७॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सवन्नूणं सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत मरकय मवाबाह मपुणरावित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअ नयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईआ सिद्धा ॥ जेअ नविस्संति णागए काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सवे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं ॥ उड्ढेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सवाइं ताइं वंदे ॥ इहसंतो तच्छ संताइं ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावंत केवि साहू ॥

॥ नगवन् जावंत केवि साहू ॥ नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सवेसिं तेसिं पणाउ ॥ तिविहेण तिदंम विरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कारः ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवनं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहरविसनिन्नासं ॥ मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुलिंगमंतं ॥ कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरोगमारी ॥ डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिठउ दूरे मंतो ॥ तुअ पणामो वि बहुफलो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावंति न डुरक दोहग्गं ॥

॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे ॥ चिंतामणि कप्पपायवप्भहिए ॥ पावंति अविग्घेणं ॥ जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुअ महायस ॥ भत्तिप्भरनिप्भरेण हिअएण ॥ ता देव दिज्ज बोहिं ॥ भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होउ ममं तुह पभावओ भयवं॥ भवनिव्वेओ मग्गा, णुसारिआ इठ फलसिद्धी॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ ॥ गुरुजणपूआ परठकरणं च ॥ सुहगुरुजोगोतव्वय, ण सेवणा आभव मखंमा ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीयराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीछें खमासमण दे कें इछा० ॥ भ० ॥ कुसुमिणदुसुमिण राई पाय छित्त विसोहणठं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे करेह पीछें इछं कह कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायछित्त विसोहणठं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नठ ऊससिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे कें सोले नवकार अथवा चार लोगस्सका चंदेसु निम्मलयरा पर्यंत चिंतन कर कें काउस्सग्ग करे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कह कर काउस्सग्ग पारकें मुखसें एक लोगस्सका पाठ प्रगट कहे, जो रात्रिमें गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो काउस्सग्गमांहे ॥ सागर वरगंभीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पडिक्कमणा ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासमण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि कें वांदियें ॥ १ ॥ खमासमण देउ श्रीउपाध्यायजी मिश्र कहिकें वांदिये ॥ २ ॥ खमासमण देउ जंगम युगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक श्रीपूज्यजीका नाम ले कें वांदियें ॥ ३ ॥ खमासमण देइ कें सर्व साधुजीकुं वांदियें ॥ ४ ॥ इस तरे चार खमासमणसें पडिक्कमणा ठावी गोडालीयें बैठ कें मस्तक नमाय कर दोनुं हाथे मुहपत्ती मुहकें दे कर ॥ सव्वस्सविराइय

॥ इत्यादि पाठ कहे. परंतु इच्छाकारेणसंदिस्सह इच्छं इस माफक न कहे ॥

॥ अथ सबस्सवि ॥

॥ सबस्सवि देवसिअ दुचिंतिअ दुप्रासिय दुच्चिठिअ इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं० ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीछें नमुत्थुणं कह कें खमा होय कें ॥ करेमि भंते सा माइयं सावज्जं जोगं पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीछें इ च्छामि काउस्सग्गं जो मे राइउ० ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखतें हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं ॥ जो मे देवसिउ अइआरो क उ ॥ काइउ वाइउ माणसिउ ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक रणिज्जो ॥ दुज्झाउ ॥ दुव्विचिंतिउ अणायारो ॥ अणिच्छिअव्वो ॥ अ सावगपाउग्गो ॥ नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्हं गुत्तीणं ॥ चउन्हं कसायाणं ॥ पंचन्हमणुव्वयाणं ॥ तिन्हं गु णव्वयाणं ॥ चउन्हं सिरकावयाणं ॥ बारसविहस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंडिअं जं विराहिअं ॥ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ इ हां देवसियंके ठिकानें राइयं कहेना ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीछें तस्सउत्तरी० ॥ अन्नत्थ उससिएणं कह कर चारित्रशु द्धि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंत चेइआणं ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वंदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए. पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ बोहिलाभ वत्तिआए ॥ निरुवसग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुप्पेहाए ॥ वढमाणी ए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीछें अन्नत्थ० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्सका काउस्सग्ग करकें पारकें ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुक्खरवरदी० ॥ सुयस्स ज्ञगवउ करेमि काउस्सग्गं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ पुक्खरवरदी ॥

॥ पुक्खरवरदीवढे, धायइसंमे अ जंबुदीवेअ ॥ ज्ञरहे रवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥ सीमाधरस्स वंदे, पप्फोमिअ मोहजाल स्स ॥ २ ॥ जाईजरामरण सोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खलवि सालसुहावहस्स ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सार मुवलप्र करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेज्ञो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे ॥ देवं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्सप्भूअ ज्ञावच्चिए ॥ लोगो जत्थ पइठ्ठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वढउ सा सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वढउ ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुअस्स ज्ञ गवउ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर अन्नत्थूससिएणं कह कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउ स्सग्ग करे. काउस्सग्गके मांहे आजुणा चार प्रहर चिंतवे. सो आ गें लिखेंगे. पीछें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु- वगयाणं, नमो सया सवसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥ तं देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥ सं सारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उर्ज्जित सेल सिहरे,

दिरका नाणं निसीहिआ जस्स ॥ तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिहनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अठ दस दो, यवंदिया जिणवरा चउव्वीसं ॥ परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥१२॥

॥ अथ वेयावच्चगराणं ॥

॥ वेयावच्चगराणं संतिगराणं ॥ सम्मद्दिठि समाहिगराणं ॥ इति ॥ करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थ० ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवस्सग सूत्र वांदणां निमित्तें मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वांदणां दे. तिनका विधि कहते हैं ॥

॥ अवग्रहके बाहिर खडा हुआ आधा नीचा नम कर इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं. इतना पाठ कह कर भूमि प्रमार्जन करता हुआ निसीहि कह कें कछुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संमासा प्रमार्जन कर कें उत्कट बैठ के माथे हाथमें मुहपत्ती ले कें माथे कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निलाड पूंजी, मुहपत्ती आगें रख कें तिसके मध्य भागमें गुरुचरणकी कल्पना कर कें ॥ अहो कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कछुक नीचा नम कर मस्तकें अंजलि कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो भे किलामो ॥ इत्यादि पाठ कहे, पीछें फेर ॥ जत्ता भे ॥ इत्यादि आवर्तन कर कें खडा होकें पीछें पगसें भूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर निकलकें स्वस्थान पर आवे. वहां आवस्सियाए ॥ इत्यादि पाठ सब कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सुगुरुवांदणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए ॥ अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि ॥ अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो ॥ अप्पकिलंताणं बहु सुभेण भे, दिवसे

वइक्कंतो जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो ॥ देवसिअं वइक्कम्मं आवसिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं ॥ देवसिआए, आसायणाए ॥ तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्व मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए ॥ आसायणाए जो मे अइआरो कउ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि ॥ निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ दूजी वारके वांदणें आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइउ वइक्कंतो, तथा चउमासीयें चउमासीउ वइक्कंतो, पक्खीयें पक्खो वइक्कंतो, संवच्छरीयेसंवच्छरीउ वइक्कंतो ॥ एसीतरेंपाठकहेनां ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् देवसियं आलोउं इच्छं ॥ आलोएमि, जो मे० ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियंके ठिकाने राइयं कहेनां ॥

॥ पीछैं रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समक्ष आलोवे, सो कहेते हैं ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आजुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख तेउकाय ॥ सात लाख वाउकाय ॥ दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय ॥ चउदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख बेइंद्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय ॥ चउदे लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चोराशी लाख जीवायोनिमें, माहारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें भलो जाण्यो होय, ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अढारे पापस्थानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृषावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥३॥ मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥ अभ्याख्यान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥१५॥ परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृषावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ ए अढारे पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवना प्रत्यें भलां जाण्यां होय, ते सवे हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, देव गुरु धर्मकी आशातना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादानोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा करी होय. और जो कोई पाप पर निंदा कीधुं होय, कराव्युं होय, करतां अनुमोद्युं होय सो सर्व मन वचन, कायायें करकें, दिवस अतिचार आलोयणे कर कें पडिक्कमणामे आलोउं ॥ तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ इति आलोयणं ॥ इहां प्रभातके पडिक्कमणेमें दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेनां ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीछें सव्वस्सवि राइयं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां इच्छाका० ॥ भ० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रायश्चित मागे ॥ गुरु कहे पडिक्कमह ॥ पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कडं कह कें संडासा प्रमार्जन कर कें आसन पर बैठे कें जिमणा गोडा ऊंचा रख कें डावा गोडा नीचें कर कें ऐसें कहे कि भगवन्! सूत्र भणुं? तब गुरु कहे भणेह ॥ पीछें इच्छं कहि कें तीन नवकार अरु तीन वार करेमि भंते ॥ भण कें इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइअं इत्यादि कह कर ॥ तं निंदे तंच गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते हैं ॥ पीछें खमा हो कें अम्भुठि
उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देवसियं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥ रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे० ॥ ५ ॥ संका कंख विगिंछा, पसंस तह संथवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ ६ ॥ छक्काय समारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥ अत्तठाय परठा, उभयठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्ह मइयारे ॥ सिरकाणं च चउण्हं, पडिक्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइ भारे भत्त पाण वुच्छेए ॥ पढमं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउ ॥ आयारिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥ बीयं वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥ कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे० ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयंमि, निच्चं परदारगमण विरईउ ॥ आयरिअ मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व

अणुरागे ॥ चउत्थ वयस्स इआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिय मप्पसत्थंमि ॥ परिमाण परिछेए, इत्थ पमायप्पसं गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परि- माणे ॥ दुपए चउप्पयंमि, पडिक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि- माणे, दिसासु उड्ढं अहेअ तिरिअं च ॥ वुड्ढिसइअंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ ॥ उवभोग परिभोगे, वीयंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सचित्ते पडिबद्धे ॥ अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥ तुच्छोसहि भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वणसाडी, भाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥ वाणिज्जं चेव दं, त लख रस केस विसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥ सरदह तलाव सोसं, असई पोसंच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसल जंतग, तण कठ्ठ मंत मूल भेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरुव रसगंधे ॥ वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे०॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइ- रित्ते ॥ दंडंमि अणठ्ठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवठ्ठाणे तहा सइ विहुणे, ॥ सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रुवे अ पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथा रुच्चारविही, पमाय तह चेव भोयणाभोए ॥ पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पि- हिणे ववएस मच्छरे चेव ॥ कालाइक्कम दाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे असंजएसु अणुकंपा ॥ रागेणव दोसेणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव चरण करण जुत्तेसु ॥ संते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउगे ॥ पंचविहो अइआरो, मा मज्झ हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खागा, रवेसु सन्ना कसाय दंडेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठि जीवो, जइ विहु पावं समायरे किंचि ॥ अप्पोसि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पिहु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ, वाहिव्व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंत मूल विसारया ॥ विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावउ ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुउ, उहरिअ भरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥ दुक्खाण मंत किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, नयसंभरिआ पडिक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिउमि आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय पाव पणासणीइ, भवसयसहस्स महणीए ॥ चउवीस जिण विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहु सुअं च धम्मो अ ॥ सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण मकरणे पडिक्कमणे ॥ असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं

मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एव मइं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगं-छिअं सम्मं ॥ तिविहेण पमिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५० ॥ इति ॥४९॥ इहां प्रज्ञातके पमिक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं कहना ॥

॥ पीछें दो वादणां देकर अवग्रहंमांहियकोज कहे ॥ इच्छा-का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अब्भुट्ठिओमि अभिंतर ॥ राइयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह ॥ संमासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, बे बांह पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अब्भुट्ठिओ ॥

॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अब्भुट्ठिओमि अभिंतर देव-सिअं खामेउं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं परं पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर भासाए उवरिभासाए ॥ जं किंचि ॥ मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा ॥ तुब्भे जाणह अहं न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि दुक्कमं ॥ इति ॥

॥ इहां गुरु पण मिच्छामि दुक्कमं कहे. पीछे बे वांदणां देई भूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसें अवग्रह बाहिर आय के आय-रिय उवज्झाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवज्झाए ॥

॥ आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मीए कुलगणे अ ॥ जे मे कया कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मो निहिअ निअ चित्तो ॥ सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

पीछें करेमि भंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥ श्रीमहावीर स्वामी छमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें काउस्सग्ग करे, काउस्सग्गमें श्रीवीरकृत छम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा छ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पारिकें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेह ॥ मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां देई सकल तीर्थनाम लइ नमस्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्रग्धरा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने, व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिबिंबमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वखारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥ शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ डाहाले कोशले वा विगलिततसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥ अंगे वंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविडकवलये

कान्यकुब्जेसुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंदायां चंद्रमुख्या गजपुरमथु-रापत्तने चोज्जयिन्यां, कौशंब्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे ज्नद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीर्नीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने न्नूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्री-मन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंम्मले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके ज्नवंति त्रिज्नुवनवलये यानि चैत्या-लयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं ज्नक्तिज्नाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्री-तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम्॥ इति ॥ ३२ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सट्ठियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सि०ा० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हैं ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, ज्नवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरूढ संसार -विहारकारि, छुरन्तज्नावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, ज्नवावहं मोहज्नरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वी-रागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलज्नरलोज्नालीढलोला-लिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलज्नविकारागार

विद्धित्तिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३३ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ जावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताजिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराजिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥ ३॥ आमूला लोल धूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला. झंकारा रावसारा मलदलकमलागारजूमीनिवासे ॥ गयासंजारसारे वरकमलकरे तारहाराजिरामे, वाणीसंदोहदेहे जवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा जणी, शक्रस्तव कहे. पीछें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पजमावइ धरणिंद ॥ पद कहीं प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण जाणवो ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सवलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

कान्यकुब्जेमुराष्ट्रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ चंद्राचां चंद्रमुख्या गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कोशांव्यां कोशलाया कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्यां ॥ रासक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां ॥ श्री० ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽतरिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ॥ ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ "श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे, चौजान्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंम्डले मानुषांके ॥ इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि" ॥ ए ॥ इत्थं श्रीजिनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजस्त्रिसंध्यम् ॥ तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारि ॥ १० ॥ इति चैत्यवंदनं संपूर्णम् ॥ इति ॥ ३१ ॥

पीछें गुरुमुखें पच्चरकाण करि कें ॥ इच्छामोनि सद्धियं कहि कें गुरु एक गाथाकी स्तुति कहे.

॥ पीछेंणमो खमासमणाणं णमोऽर्हत्सि० ॥ कह कर. परसमय तिमिरतरणिं ए तीन गाथा कहीजें सो लिखते हें ॥

॥ अथ परसमय तिमिरतरणि ॥

॥ परसमय तिमिरतरणिं, भवसागर वारि तरण वरतरणिं ॥ रागपराग समीरं, वंदे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्ध संसार विहारकारि, दुरन्तभावारिगणा निकामं ॥ निरन्तरं केवलिसत्तमा वो, भवावहं मोहभरं हरंतु ॥ २ ॥ संदेहकारिकुनयागमरूढगूढ, संमोहपंकहरणामलवारिपूरम् ॥ संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥ परिमलभरलोभालीढलोलालिमाला, वरकमलनिवासे हारनीहारहासे ॥ अविरलभवकारागार

विज्ञिनिकारं, कुरु कमलकरं मे मङ्गलं देविसारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३१ ॥ अथवा संसारदावानी तीन गाथा कहेवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ संसारदावा स्तुति ॥

॥ संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरम् ॥ माया रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरम् ॥ १ ॥ भावावनाम सुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपद पदवी नीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहम् ॥ चूलावेलं गुरु गममणी संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥३॥ आमूला लोलधूली बहुल परिमला लीढलोलालिमाला. झंकारा रावसारा मलदलकमलागारभूमीनिवासे ॥ गयासंभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारम् ॥ ४ ॥ इति ॥ ३४ ॥

॥ इत्यादि तीन गाथा भणी, शक्रस्तव कहे. पीछें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणवत्तियाए० अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कहि कें ॥

॥ काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी ॥ एक श्रावक प्रथम काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ सद करी प्रणमूं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ ए गाथा एक जण कहे ॥ दूसरे सब काउस्सग्गमांहे रह्या हुआ सुणे ॥ पीछें णमो अरिहंताणं कहि कें काउस्सग्ग पारे ॥ इस तरे आगें पण जाणणो ॥ पीछें लोगस्स कहे ॥ सव्वलोए अरिहंत चेइआणं वंदण-

वत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ढ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखधाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्खरवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षट्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थू० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमो-ऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पउमावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ पीछें नीचा वैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमा-समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा॥ अट्ठारसहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन बखत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं जी, यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणार शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतर्गत- जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तित्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ और णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि कें सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद्र चंद्र चक्कीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण हो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुक्ख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० चेवणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

वणि० ॥ अन्नत्थ० ॥ इत्यादि कहि कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें दूजी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ कुल गिरिवेयड्ड, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखधाम ॥ भुवणेसुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम ॥ वर्त्ते ते जिणवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥

॥ पीछें पुक्खरवदीवड्ढे कहि कें सुयस्स भगवओ० वंदण० अन्नत्थ० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग पारि कें ॥ त्रीजी स्तुति कहे, सो लिखते,

॥ जिहां अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद ॥ दस पयन्ना आख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षद्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सद्दहतां, त्रूटे करम तुरत्त ॥ ३ ॥

॥ पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कह कें वेयावच्चगराणं० ॥ अन्नत्थ० कही ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करी पारि कें णमो-ऽर्हत्सिद्धा० कह कें चोथी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ पद्मावई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष ॥ सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ समरो जिनभक्ति, सूरि कहे इक चित्त ॥ सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ पीछें नीचा बैठ कें णमोत्थूणं० कहि कें ॥ तीन खमा-समणें पूर्वोक्त रीतें ॥ आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु वांदे ॥

॥ अथवा केई ठिकाने जिमणो हाथ नीचो करि, मुखें मुहपत्ती देई अड्ढाइज्जेसु कहे हैं, सो लखते हैं ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु ॥

॥ अड्ढाइज्जेसु ॥ दीव समुद्देसु ॥ पन्नरससु कम्मभूमीसु ॥ जावंत केवि साहू ॥ रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा॥ अट्ठारससहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायारचरित्ता ॥ ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ॥ इति ॥

॥ इतना विधि किया पीछें स्थिरता हुवे तो खमासमण तीन खमत देई ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् ॥ चैत्यवंदन करूं जी. यह पाठ कह कर चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भवि जनहितकामी ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंतवंत, अंतरगत-जामी ॥ १ ॥ पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ॥ त्रिकरणशुद्ध त्रिहुं कालमें, नितप्रति करूं प्रणाम ॥ २ ॥ जं किंचिनाम तित्थं० ॥ नमोत्थूणं० जावंति चेइआ० जावंत केवि साहू० ॥ नर णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः ॥ तक कहि के सीमंधरजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३७ ॥

॥ अथ सीमंधरजिनस्तवनम् ॥

॥ जगजीवन जग वालहो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीसीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ केवल ज्ञान दिवाकरू, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ इंद चंद चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूंता इक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ चरण कमलपिंजर वसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे ॥ चरण शरण मोहि आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अधम उधारण जो तुम्हें, दूर करो भव दुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करी, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ पीछें जयवीयराय० वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थू० कहि

कें ॥ एक नवकारका काउस्सग्ग करे ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० कही ॥ एक थुईनी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ महीमंमणं पुन्नसोवन्न देहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ उस होंज थिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवंदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाभि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंमण ॥ जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंमण ॥ जय जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुझ पद पंकज प्रीति धर, निशिदिन नमत कल्याण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतित्थं० ॥ णमोत्थुणं ॥ जावंति चेइआइं० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ णमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः तक कहि कें श्री सिद्धाचलजीका स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे ॥ धन्य भाग्य हमारां ॥ विमलाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा मोटो, कहेतां न आवे पारा ॥ रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध० ॥ १ ॥ मूलनायक श्रीआदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यसें पूजो भावें, समकित मूल आधारा रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हुं इहां आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उद्धारण बिरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा ॥ जात्रा करि भविजन शुभ भावें, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढार त्र्यासी मास आषाढ, वदि आठम भोमवारा ॥

प्रजुके चरण परतापसिंदमें, क्रमारतन प्रजु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीठें जयवीयराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नत्थ० ॥ कहिकें एक नवकारका कान्उस्सग्ग करी ॥ पारि कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रुषन्नदेव पुंमरीक ॥ शुन्न तपनो महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिशुं चैत्यवंदनीक ॥ करियें जिन आगल, टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरसद होवे तो पमिलेहण करे, सो लिखते हैं॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ खमासमण देई इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ पमिलेहण संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्साएह ॥ बीजे खमासमणें ॥ ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहे ॥ इमहीज दोइ खमासमणे अंग पमिलेहण संदिस्साउं ॥ अंगपमिलेहण करुं, कहीके धोतियुं कणदोरो पमिलेहि कें ॥ खमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसाउ करी पमिलेहण पमिलेहावो जी. एम कही ॥ थापनाचार्य पमिलेह रखे, अने जो गुर्वादिक थापनाचार्य पमिलेहे, तो पण खमासमण देई आग्या मागे, पीठें खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पमिलेहि ॥ दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पमिलेहण संदिस्साउं ॥ उही पमिलेहण करुं ॥ एम कही कंबल वस्त्रादि पमिलेहे ॥ पीठें पोसघशाला प्रमार्जी काजो, विधिशुं परठवी खमासमण देई इरियावही पमिक्कमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोजी उपिपमिलेहण तो अवश्य करणी ॥ अबजी प्राये एही करते दि-खते हैं ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीछैं सामायिक पारे ॥ एक खमासमण देई ॥ मुहपत्ती पडिलेहे ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारुं ॥ गुरु कहे पुणोवि कायव्वो, पीछैं यथाशक्ति कही वली खमासमण देई कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक पारेमि ॥ गुरु कहे आयारो न मोत्तव्वो ॥ पीछैं तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊभो थको, तीन नवकार गुणी नीचो गोमासीयें बेसी मस्तक नमावी ॥ भयवं दसणभद्दो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ भयवं दसणभद्दो ॥

॥ भयवं दसण भद्दो, सुदंसणो थूलिभद्द वयरोय ॥ सफली कयगिहचाया, साहू एहं विहा हुंती ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय मित्तंपि संभरइ जीवो ॥ जं च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय, मसुहं वायाइ भासियं किंचि ॥ असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सामायिक विधें लीधुं विधें कीधुं, विधि करतां अविधि आशातना लगी होय, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस दूषणमांहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन कर, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति सामायिक पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिलां सामायिक पारी कें, पीछैं पडिलेहण करे. इहां यथायोग्य अवसरें गुरुकूं सुहराइ पूछे ॥

दूसरा खमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें एसें कह्यो है ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पिछले पहोरे धर्मशाला प्रमार्जी वस्त्रादिक पडिलेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपडिलेहण करे ॥ पीछें गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आवी भूमि प्रमार्जी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक संदिसाउं ? गुरु कहे संदिसावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सामायिक ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार भगवन् ! पसाउ करी सामायिक दंडक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि भंते सामाइयं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुभाषण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ इरियावहियं पडिक्कमामि ? गुरु कहे पडिक्कमेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ इच्छामि पडिक्कमिउं ॥ इरियावहियाए इत्यादि पाठसें इरियावहियं पडिक्कमी ॥ एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी, णमो अरिहंताणं कही, काउस्सग्ग पारी मखे प्रगट लोगस्स कही, नीचें बेठ कें मुहपत्ती पडिलेहि वांदणां देई कहे. इच्छाकार भगवन् ! पसाउ करी पच्चक्खाण करावोजी. पीछें गुरु, दिवस चरिम पच्चक्खाण करावे ॥ गुरु अभावें थापनाचार्य समक्ष अथवा स्वमुखें, अथवा वडेरा साधर्मी मुखें पच्चक्खे ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पडिलेहि पच्चक्खाण करे ॥ वांदणां न देवे, अने जो चउविहार उपवास हुवे, तो पच्चक्खाण करवुं छे नही ॥ ते माटे मुहपत्ती नहि पडिलेहे ॥ ए विस्तार विधि छे ॥ पीछें एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज० ॥ सिद्धाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इच्छं कही वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह ॥ पीछें इच्छं कही ॥ खमासमण देई ॥ उन्नो थको मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिज्झाय करे ॥ पीछें खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणुं संदिस्साउं ? गुरु० संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेसणुं ठाउं ? गुरु कहे, ठाएह ॥ पीछें इच्छं कही जो शीत कालादि हुवे तो खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं पमिग्घाउं ? गुरु कहे पमिग्घाएह ॥ पीछें इच्छं कही शुन्न ध्यान करे ॥ इति संध्यासामायिक विधिः ॥

॥ अथ देवसि पमिक्कमण विधिर्लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीछें इच्छं कही ॥ जय तिहुयण कहे ॥ जिसमें परकी तथा चउमासी तथा संवत्सरीके रोज तीस गाथा कहेनी ॥ और दिनोमें तो पांच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा पिछामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे है. अब जयतिहुअण लिखते हैं ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुक्ख जय जिण धन्नं तरि, जय तिहुअण कल्लाणकोस दुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविलं-घियाण नुवणत्तय सामिअ, कुणसु सुहाइं जिणेस पास थंजणय पुरठिअ ॥१॥ तइं समरंत लहंति झत्ति वर पुत्त कलत्तइं, धण सुवन्न हिरण्ण पुसण जण नुंजइ रज्जइं ॥ पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पासपसाइण, इय तिहुअण वरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण महजिण॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्ण कण्णनठ्ठ सुकुठ्ठिण. चक्खुक्खीणखएणखुण्ण

निरलञ्छिअमूलिण ॥ तह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणणव, जय धन्नंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइस मंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण, भुवणब्भुअ अठविह सिद्धि सिज्झइ तुह नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तउवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पउत्तइ मंत तंत जंताइं विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्गविगंजइ ॥ दुत्थियसत्थ अणत्थ घत्थ नित्थारइ दय करि, दुरिअइं हरउ सुपासदेव दुरिअकरिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथंभेइ भीमदप्पुद्धर सुरवर, रक्खस जक्ख फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथलचारिरउद्दखुद्द पसुजोइणि जोइअ, इय तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिअ ॥ ६ ॥ पत्थिअ अत्थ अणत्थतित्थभत्तिब्भर निब्भर, रोमंचं चिअचारुकाय किन्नरनरसुरवर ॥ जसुसेवहिं कमकमलजुअल पक्खालिअ कलिमलु, सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय जोइअमणकमलभसलभय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेइणि वारिवाह जयजंतुपिआमह, थंभणयट्ठिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥८॥ बहु विहवन्नुअवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहि, मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहि ॥ जं झायइ बहु दरिसणत्थ बहु नाम पसिद्धउ, सो जोइअमण कमलभसलसुह पास पवद्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिअ सरीरय, तरलिअ नयणविसन्नसुन्नगग्गिरगिरकरुणय ॥ तइ सहसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, मह विज्झविसज्झसइ पास भय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइंपासिविअसंतनित्तपत्तंतपविन्निय, बाहपवाहपवूढरूढ दुहदाहसुपुलइय ॥ मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसुघंटटंकारवपिल्लिय, वल्लिरमल्लमहल्लभत्तिसुरवरगंजुल्लिय ॥ हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणेविमहूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद जय पाससुहप्पव ॥ १२ ॥ निम्मल केवल किरणनिय-
रविहुरिअ तमपहयर, दंसिअ सयलपयत्थवित्थरिअ पहाभर ॥ क-
लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणह अगोयर, तिमिरइं निरुहर
पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त
माणव मइ मेइणि, अवरावरसुहुमत्थबोह कंदलदलरेहणि ॥ जायइ-
फलभरभरिय हरिय दुहदाह अणोवम, इय मइ मेइणि वारिवाह
दिसिपास मइं मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवल्लिउल्लूरि-
यदुहवणुं, दाविअसग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगम वारणुं ॥ जय जंतुह-
जणएणतुल्लजंजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयउ पास जय
जंतु पिआमह ॥ १५ ॥ भुवणारणनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,
जोइणिपूअणखित्तवाल खुद्दासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ्ठ
अविसंठुलचिठ्ठहिं, इय तिहुअण वणसिंह पास पावाइ पणासहिं
॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंतरयण कर रंजिअ नहयल, फलिणी
कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग संस-
ग्गअगंजिअ, जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणय पुरठ्ठिअ ॥ १७ ॥
मह मणतरलपमाणनेय वाया वि विसंठुलु, नियतणु वि अविणयसहाव
आलसविहलंघलु ॥ तुहमाहप्पपमाणदेव कारुणपवित्तउ, इयम-
इमाअवहीरपासपालहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किंकिंकप्पिउणेयकलु-
णकिंकिंवनजंपिउ, किं वनचिट्ठिउकिठ्ठदेवदीणयमवलंबिउ ॥ का-
सुनकियनिप्फलल्लअह्लेहिंदुहत्तइं, तहवि न पत्तउताण किंपि पइं
पहु परिचत्तइं ॥ १९ ॥ तुहुं सामिउ तुहुं माय बप्प तुहुं
मित्तपियंकरु, तुहुं गइ तुहुं मइ तुंहि ज ताण तुहुं गुरु खेमंकरु
॥ हउं दुहभरभारिअवराउ राउलनिब्भग्गउ, लीणउ तुह कमक-
मल सरणाजिणपालहि चंगउ ॥ २० ॥ पइंकिवि कयनीरोय-
लोयकिवि पावियसुहसय, किवि मइमंतमहंतकेवि किवि साहियसिव-
पय ॥ किवि गंजिअरिउवग्गकेवि जसधवलियभूयल, मइं अवही-

रहिकेणपास सरणागयवच्छल ॥ २१ ॥ पच्चुवयारनिरीहनाहनिप्पन्न पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिक्कपरायण ॥ सत्तुमित्त सम चित्तवित्तिनयानिंदअसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरंजण ॥ २२ ॥ हउं बहुविहदुहतत्तगत्ततुहुं दुहनासणपरु, हउं सुयणहकरुणिक्कठाण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ हउंजिण पासअसामिसालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं झखंतइय पासन सोहिअ ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्ग विभागनाहमहुजोअणतुहसम, भवणुवयारसु हावभाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ किंघण नएइ भुविदाहुसमंतउ, इय दुहवंधव पासनाह मइं पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अन्नविकिविजुग्गय, जं जोइयउवयारुकरइउवयारसमुज्जय ॥ दीणह दीणनिहीणजेणतुहनाहिणचत्तउ, तो जुग्गउअहमेव पासपालहिमइं चंगउ ॥ २५ ॥ अहअन्नविजुग्गयविसेसकिविमन्नहि दीणह, जं पासविउवयारुकरइ तुहनाह समग्गह ॥ सुच्चिअकिल कल्लाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अन्नुंण तंचेव देव मामइंअवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण नहु होइ विहल जिणजाणउ किं पुण, हउं दुक्खिउ निरुसत्तचत्तदुक्कहु उस्सुयमण ॥ तं मन्नउ निमिसेण एण एउविजइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह मइं अप्पपयासिउ, किज्जउ जं नियरूवसरिसुनमुणंवहुं जंपिउ ॥ अन्नु ण जिणजगतुहसमोविदक्खिणदयासउ, जइअवगिन्नसि तुंहिजअहहाकिंहोइसहयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ पाइणवेलंविउ, तउजाणुंजिणपास तुम्ह हउंअंगीकरिअउ ॥ इयमहइच्छिअ जं न होइ सातुहउहावण, रक्खंतह नियकित्तिणे य जुज्जइअवहीरण ॥ २९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणमहूसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ॥ इय मइं पसिअसुपासनाहथंभणयपुरट्ठिअ, इय मुणिवरसिरि अभयदेव विन्नवइ

श्राणिंदिश्च ॥ १० ॥ इति श्रीस्तंभनकतीर्थराजश्रीपार्श्वनाथस्तवनम् ॥

पीछे जय महायस कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ जय महायस प्रारंभः ॥

॥ जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुह फलय ॥ जय समच्छ परमछजाणय, जय जय गुरु गिरिम गरु ॥ जय दुहत्त सत्ताण ताणय, थंभणयछिय पासजिण ॥ भविय भीम भवत्थु, भव अवणं ताणं तं गुण ॥ तुऊत्ति संझ नमोत्थु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ पीछे शक्रस्तव कह कें खमा हो कर अरिहंत चेइयाणं० ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिश्राए० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि पाठ कह कें काउस्सग्गमांहे एक नवकार चिंतवी एक श्रावक काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही एक गाथा स्तुति कहे, सो लिखते हैं

॥ अथ महावीरजिनस्तुति प्रारंभः ॥

॥ मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय ॥ सिद्धारथ नंदन, त्रिशलादेवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान ॥ दिनदिन सुख दायक, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥

॥ ए स्तुति एक श्रावक कहे. अरु दूसरे श्रावक सब काउस्सगमें रहे थके सुने. पीछें णमो अरिहंताणं कह कें काउस्सग्ग पारे. इसीतरें आगें पण स्तुतिकी चारों गाथामें जान लेनां.

॥ पीछें लोगस्स कह कर सवलोए अरिहंत चेइयाणं वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक नवकारका काउस्सग्ग करे. पारि कें उक्त स्तुतिकी दूसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद ॥ कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियणनें तारे, प्रवहण सम नि-

शिदीस ॥ चोवीशे जिनवर, प्रणमुं विशावा वीस ॥ यह दूसरी गाथा कहि कें काउस्सग्ग पारे. पीछें पुरकरवरदी० वंदणवत्तिआए० अन्नत्थू० कहि कें, एक नवकारका काउस्सग्ग कर कें, पारि कें उक्त स्तुतिकी तीसरी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अरथें करि आगम, जाख्या श्रीजगवंत ॥ गणधरने गूंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पण महिमा, कहि न शके एकंत ॥ समरुं सुखसायर, मन शुद्ध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ यह गाथा कहि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ वेयावच्चगराणं अन्नत्थू० ॥ कही काउस्सग्ग पारी उक्त स्तुतिकी चोथी गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ सिद्धायिकादेवी, वारे विघन विशेष ॥ सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ॥ अहोनिश कर जोमी, सेवे सुर नर इंद ॥ जंपे गुण गण इम, श्रीजिनलाज सूरिंद ॥ ४ ॥ इति महावीरजिन स्तुतिः ॥ यह चोथी स्तुति कहिके बैठ कें नमोत्थूणं कहे, पीछें एक खमासमण देई कें श्रीआचार्य मिश्र दूसरा खमासमण दीये. पछें श्रीउपाध्यायजी मिश्र तीसरा खमासमणदे कर श्रीवर्त्तमान आचार्यजीका नाम ले कें मिश्र चोथे खमासमणमें सर्व साधुजीमिश्र इसी तरें कह कर गोमालीयें बेठ कें मस्तक नमावी सव्वस्सवि देवसिय० इत्यादि कह कर तस्स मिच्छामि दुक्कमं कहे, परंतु 'इच्छाकारेण संदिस्सह जगवं' ए पद न कहे ॥

॥ पीछें खमे हो कर करेमि जंते सामाइयं० ॥ इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ० ॥ तस्सुत्तरि० ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहि कें, आठ नवकारका काउस्सग्ग करे. काउस्सग्गमांहे आजू गाचउ प्रहरमें ॥ इत्यादि पाठ मनमें चिंतवी, णमो अरिहंताणं कही काउस्सग्ग पारि कें प्रगट लोगस्स कहे ॥

॥ पीछें संमासा प्रमार्जन पूर्वक बैठ कें तीसरे आवश्यक सूत्र वांदणां मुहपत्ती पमिलेहुं ? गुरु कहे पमिलेहेह. पीछें मुह-पत्ती पमिलेहि कें वांदणां देवे. पीछें अवग्रहमांहिज उनो थको इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ देवसियं आलोउं, एसा कहे. तब गुरु कहे आलोएह. पीछें इच्छं आलोएमि० ॥ यह पाठ कह कें अति-चार आलोवे. पीछें सव्वस्सवि देवसियं इत्यादिथी मांमाने इच्छा-कारेण संदिस्सह पर्यंत कहे, तव गुरु पमिक्कमह. यह पाठ कहे ॥

॥ पीछें इच्छं तस्स मिच्छामि डुक्कमं कहि कें संमासा प्रमार्जि प्रमार्जित जूमियें आसन पर बैठ कें जगवन् ! सूत्र जणुं एसा कहे. तब गुरु कहे जणेह. पीछें इच्छं कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणीने इच्छामि पमिक्कमिउं जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे. दूसरा सब सुने. पीछें खमा दो कर अप्भुठ्ठिउमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण पाठ कही, दो वांदणां देवे, अरु अवग्रहमांहिज खमा हुवा इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अप्भुठ्ठिउमि अप्भिंतर देवसियं खामेउं ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीछें इच्छं खामेमि देवसियं कहि कें गोमालीयें बैठ कें वाम हाथे मुहपत्ती मुखें धर कें दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर कें सर्व पाठ कहे. पीछें विधिसेंती दो वांदणां दे कर आयरिय उव-ज्ञाय इत्यादि त्रण गाथा कहिकें करेमि जंते सामाइयं इच्छामि गमि काउस्सग्गं इत्यादि कही चारित्र शुद्धि निमित्तें करेमि काउ-स्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि कें आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें पीछें दर्शनशुद्धि निमित्तें प्रगट लोगस्स कही सवलोए अरिहंत चेइयाणं० ॥ वंदणवत्ति० अन्नत्थू० ॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करी पारि कें ज्ञान शुद्धि निमित्तें पुक्खरवरदीवड्ढे कहि कें सुयस्स जगवउ० ॥ वंदणवत्ति० ॥ अन्नत्थू०

॥ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें पारि कें सिद्धाणं बुद्धाणं० कहि कें वेयावच्चगराणं न कहे. पीछें सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पीछें गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक काउस्सग्ग पारिकें णमो अर्हत्सिद्धा० कहि कें श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण कें काउस्सग्ग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीछें खित्तदेवयाए, करेमि काउस्सग्गं० ॥अन्नत्थू० ॥ कहि कें, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परें क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ क्षेत्रदेवताकी स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षंतु क्षेत्रदेवताः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ पीछें खमा हुवा एक नवकार कही, संडासा प्रमार्जि उकडूबैठ कें छठे आवश्यककी मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे पडिलेहेह.

॥ पीछें मुहपत्ती पडिलेही विधिशुं दो वांदणां देइ ॐ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभः ॥

॥ ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सव्वामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ भवणवय वाण मंतर, जोइसवासविमाण वासीय ॥ जे केवि दुठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मे स्वाहा ॥१॥ पच्चस्काण नहिं लिया होय तो करे ॥ सामायिक चोइसत्थो पडिक्कमणां, वांदणां, काउ-

स्सग्ग, पच्चरकाण, ह आवश्यक सांधतां कानो, मात्रा, नंगो अधिको अक्षर नंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायायें करी मिछामि ऊक्कडं ॥ इच्छामो अणुसठिं० ॥ कही बैठे. पछे गुरु एक स्तुति कह्या पीछें श्रावक समस्त, मस्तकें अंजलि करिकें णमो खमासमणाणं ॥ णमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कही ॥ णमोऽस्तु वर्द्धमानाय० इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका णमो खमासमणाणं, कही संसारदावाकी स्तुति कहे.

॥ अथ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येषां विकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोतियो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टि सन्निभो, ददातु तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरभिगंधा. लीढभृंगीकुरङ्गं, मुखशशिनमजस्रं बिभ्रती या बिभर्ति ॥ विकच कमलमूर्ध्नैः साऽस्त्वचिंत्यप्रभावा, सकलसुखविधात्री प्राणभाजां श्रुताङ्गी॥४॥ इति॥

॥ यह तीन गाथा कहि कें पीछें णमोत्थूणं० कहे कें एक श्रावक खमासमण दई कहेः—इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवन भणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ स्तवनभणुं स्तवन सांभलुं ? गुरु कहे, भणेह सांभलेह. पीछें आसन पर बैठ कें नमोऽर्हत्सिद्धा० ॥ कहि कें बड़ो स्तवन कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ भविका श्रीजिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शंका

कांई ॥ आगम वाणीने अनुसारें, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज॰ श्री॰ ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहियें किम जाणे ॥ भूला तेह अज्ञानें भरिया, नहिं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ २ ॥ अंबड श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक ॥ विविधपरें जिन भगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगतें जोतां, होय निश्चय उपगार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, छे बहु जलधि मझार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ५ ॥ पांचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपणें अधिकार ॥ सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मझार रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, छठे ज्ञाता अंगें रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य भाव बिहुं भेदें कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें, कोइ शंका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ १० ॥ चिंतामणि प्रभु पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनलाभ सुगुरु उपदेशें, श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज॰ ॥ श्री॰ ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पीछें तीन खमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वांदी, अह्माइज्जेसु कहनां, फेर खमासमणे ॥ इच्छाका॰ ॥ सं॰ ॥ भ॰ ॥

देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे, करेह. पीछैं इछं कहि कें देवसि पायच्छित्त विशुद्धि निमित्तं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थू० ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारी कें लोगस्स कहे.

॥ पीछैं खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ खुद्दोवद्दव उड्डावणठं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू० ॥ इत्यादि कहो. शोल नवकार अथवा चार लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पारि कें प्रगट लोगस्स कहे. पीछें खमासमण देई ॥ सज्झाय संदिस्साउं फेर खमासमण देई सज्झाय करुं? तीन नवकार गुणीजें. पीछें खमासमण देई कें ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भगवन् चैत्यवंदन करुं जी ॥ ऐसा कह कर थंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन करें, सो लिखते हे ॥

॥ अथ श्रीथंभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तंभने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपितः ॥ संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलं स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः समे प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावल्लोशिरोमणिः ॥ पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणां श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीछैं नमोत्थुणंसें लेकें जयवीयराय सुधी कहे ॥ पीछें खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि थंभणयछिय पास सामिणो०' इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे.

॥ अथ श्रीथंभणयठियपाससामिणो ॥

॥ श्री थंभणयछियपाससामिणो सेस तिच्छसामीणं ॥ तित्थ समुन्नय कारणं, सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एस महं सरणठं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए ॥ भत्तीए गुण सुछियस्स, संघस्स समुन्नय निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीथंजणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ पीछें खमा दो के वंदणव॰ ॥ अन्न॰ ॥ कही चार लोगस्सका काउस्सग्ग करि कें पीछें पारी प्रगट लोगस्स कही कें ॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहारजंगम युगप्रधान ज्ञट्टारक दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू॰ कहि कें, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, पीछें प्रगट लोगस्स कह कें

॥ श्रीखरतरगच्छ सिणगारहार जंगमयुग प्रधान ज्ञट्टारक दादाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ॥ अन्नत्थू॰ कहि कें एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे. पीछें प्रगट लोगस्स कहि बैठ कें मावो गोमो उंचो करि कें खमासमण देई कें, इच्छा॰ ॥ सं॰ ॥ ज॰ ॥ चैत्यवंदन करुं जी. ऐसें कहि कें चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउक्कसाय ॥

॥ चउक्कसाय पमिमल्लूल्लूरण, डुज्जय मयण वाण मुसुमूरण ॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास ज्जुवणत्तय सामिउ ॥ १ ॥ जसु तणु कंति कमप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणा लिद्धउ ॥ नंनव जलहर तमिल्लय लंछिय, सो जिणु पासु पयच्छय वंछिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो ज्ञगवंत इंद्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायकाः ॥ श्रीसिद्धांतसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीछें नमुत्थूणंसें ले कें जयवीयराय पर्यंत कहि के पक्की, चउम्मासी अरु संवच्छरीके रोज तो बमी शांति सुणे, परंतु और

दिनोंमें छोटी शांति सुणे, सो लिखते हैं.

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥ भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह भूतपिशाच, शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥ विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥ अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्र कल्याण मंगलप्रददे ॥ साधूनां च सदा शिव, सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयां ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ॥ अभय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रीसंपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानल विषविषधर, दुष्ट ग्रह राज रोगरणभयतः ॥ राक्षस रिपुगण मारी, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, करु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

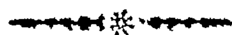
ऊ मिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥१४॥ एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमतां, नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-विदर्भित: स्तवः शांतेः ॥ सलिलादिभय विनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्॥१९॥ इति॥

॥ पीछैं चीराकका अथवा वीजलीका चांदणा पड्या होय तो इरियावहि० तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहि कें, एक लोगस्सका काउ-स्सग्ग करे, पछैं प्रगट लोगस्स कही पूर्वलो परें सामायिक पारे, पीछैं एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवसी पडिक्कमण विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता भगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम् ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुतिः ॥

॥ कल्याणकमला गेहं, नीलदेहं महालहं ॥ नवखंमाभिधं पार्श्व, सदा ध्यायामि मानसे ॥



॥ अथ छुटक चैत्यवंदनस्तुतिर्लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुतिः ॥

॥ सकलकुशलवल्ली, पुष्करावर्त्तमेघो, दुरिततिमिरज्ञानुः, कल्पवृक्षोपमानः ॥ ज्ञवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स ज्ञवतु सततं वः, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन० ॥

॥ अथ जिनस्तुतिः ॥

॥ दर्शनाद्दुरितध्वंसी, वंदनादिच्छितप्रदः ॥ पूजानात्पूरकः श्रीणां, जिन साक्षात्सुरद्रुमः ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुतिः ॥

॥ सुवर्णवर्णं गजराजगामिनं, प्रलंबबाहुं सुविशाललोचनम् ॥ नरामरेंद्रैः स्तुतपादपंकजं, नमामि ज्ञक्त्या रुषज्ञं जिनोत्तमम् ॥ ३ ॥ इति आदिजिनस्तुतिः

॥ अथ शांतिजिन स्तुतिः ॥

॥ सोलम जिनवर शांतिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कंचन वरण शरीर कांपि, अतिशय अज्ञिरामी ॥ अचिरा अंगज विश्वसेन, नरपति कलचंद ॥ मृगलंछन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृंद ॥ जुगमां अमृत जेहवी ए, जास अखंमित आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोमि कल्याण ॥ ४ ॥ श्रीशांतिनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुतिः ॥

॥ प्रह सम प्रणमुं नेमिनाथ, जिनवर जयवंत ॥ यादवकुल अवतंस हंस, उत्तम गुणवंत ॥ समुद्रविजय शिवा देवी जास, मति सहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे सुखकार ॥ गढ गिरनारें जिण लह्युं ए, अमृत पद अज्ञिराम ॥ तास क्षमा कल्याण मुनि, निशिदिन नमत कल्याण ॥ ५ ॥ इति श्रीनेमिनाथ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमियें मन रंग ॥ नील वरण अश्वसेन नंद, निरमल निःशंक ॥ वांछित पूरण कल्प साख, वामासुत सार ॥ श्रीगोमी पुर स्वामि नाम, जपियें निरधार ॥ त्रिभुवनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जसु वाण ॥ ध्यान धरंतां एहनुं, प्रगटे परम कल्याण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव संपत्ति कारण ॥ जन्म जरा मरणादि रूप, भव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात, त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिभुवन विख्यात ॥ अमृतरूपें राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ क्षमाप्रमुख कल्याण मुणि, आपो करि सुपसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर० ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पडिक्कमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम वंदित्तु सूत्र पर्यंत दैवसिक पडिक्कमी ॥ १ ॥ खमासमण देई देवसी आलोइयं पडिक्कंता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पक्खिय मुहपत्ती पडिलेहुं ? चउमासीएं चउम्मासियं मुहपत्ती, संवछरीये संवछरी मुहपत्ती पडिलेहुं ? एम कहे. पीछें गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कहे, दूजी खमासमण देइ, मुहपत्ती पडिलेही, वांदणां देई, तिहां पक्खीमें पक्खो वइक्कंतो ॥ चउमासी पडि० ॥ चउमासीउ वइक्कंतो संवछरीमें संवछरो वइक्कंतो, एम यथायोगें कहे ॥ पीछें गुरु कहे, पुण्यवंतो देवसीने स्थानकें पाक्खिक ॥ चउमासिक सांवछरिक भणजो. छींक जयणा करजो, मधुर स्वरें पडिक्कमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो. मांडलमें सावचेत रहेजो, पाछें सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीछें कही ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ संबुद्धा खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अब्भिं-

तर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे, खामेह ॥ पछैं मस्तके अंजलि करतो थको, इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३॥ कही, गोमालीयें वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करी, मुहपत्ती मुखें देई ॥ पक्खियें पनरसण्हं दिवसाणं पनरसण्हं राईणं जं किंचि-अप्पत्तियं ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउण्हं मासाणं अ-ठण्हं पक्खाणं वीसोत्तरसो राइंदियाणं जं किंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि कहे. संवच्छरीयें डुवालसण्हं मासाणं चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसय-सट्ठिराइंदियाणं ॥ जं किंचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारें गुरु पण मिच्छामि डुक्कडं कहे ॥ तिहां दोय साधु उचरता हुवे तो पा-खियें तीन, चउमासीयें पांच, संवच्छरीयें सात साधुने खमावे ॥ ॥ पीछैं उगी अवग्रहमांहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ भ० ॥ पक्खियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीछै इच्छं आलोएमि, जो मे पक्खिउ ॥ ३ ॥ अइयारोकउ, इत्यादि सूत्र भणी ॥ संक्षेपे अथवा विस्तारें पाखी चउमासी संवच्छरी, अतिचार आलोवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमिय, चरणंमि तवेय तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहाभणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्रार ३. तपाचार ४, वीर्याचार ५. एवं पांच विधि आचारमांहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण

अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञानः—कालवेला-मांहि पढिउं गुणिउं नही, अकालें पढिउं, विनय हीन बहुमान हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकनें नही पढिउं, अथवा अनेरा-कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पव्यो, देव वांदणे पडिक्कमणे सिज्झाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने मात्रें अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्या, भणीनें वीसार्यों, तपोधन तणे धर्मे काजो अण उधरे दांडो अण-पडिलेही, वसती अणसोधी, असिज्झाई अणोज्झा कालवेलामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकरवाली, सांपडा सांपडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रतें आशातना हुई, पग लागो थूंक लागो ओसोसे मूक्यो कनें छतां आहार नीहार कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापराधें विणाश्यो विणसतो उवेख्यो, छती शक्तें सार संभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रतें मच्छर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रतें भणतां गुणतां प्रद्वेष मत्सर अंतराय अपघात कीधो. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोई तोतडो बोबडो हस्यो, वितर्क्यो आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषइउ जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते सहु मन वचन कायाइं करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल पभावणे अट्ठ ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणो न कीधो, तथा एकांत निश्चय धर्यो नहीं,

सघलाइ मत भला छे, एहवी श्रद्धा कीधी, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निःसंदेह बुद्धि धरी नही. चारित्रिया साधु साधवी तणां मल-मलीन गात्र देखी दुगंछा उपजावी, मिथ्यात्वीतणी पूजा प्रभावना देखी, मूढदृष्टिपणो कीधो. संघमांह गुणवंततणी अनुपबृंहणा अ-स्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चिंतवी. संघमांहे थिरीक-रण वात्सल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधी. देवद्रव्य विनाशिउं, विणसंतुं उवेखीउं. छतो शक्ते सार संभाल न कीधी, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधुं, जिन भवन तणी चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रतें तेत्रीश आशातना कीधी, अधौतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पाखें देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठबको लागो, मुखतणी बाफ लागी, ठवणारिय हाथथकी पडीओ, पडिलेहवो वीसार्यो, नवकारवालीनें पग लागो, दर्शनाचार विषईओ जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायवो ॥ १ ॥ इरियासमिती १, भा-सासमिती २, एषणासमिती ३, आयाणभंडमत्तनिख्खेवणासमिती ४, उच्चारपासवणखेलजल्लसंघाणपारिठावणीयासमिती ५. मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पंच समिती तीन गुप्ति, रूडी परें पाली नहीं ॥ साधु तणे सदैव श्रावक तणे पोसह पडिक्कमणे लीये अष्टविध चारित्राचार विषईओ जिको अतिचार० ॥ ४ ॥

॥ विशेषतः श्रावकतणें धर्में श्रीसम्यक्त्वमूल बारह व्रत श्री सम्यक्त्वतणा पांच अतिचारः—संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ संकाः--श्रीअरिहंत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गांभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियानां चारित्र जिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः--ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देहराना प्रभाव देखी रोगे आतंके इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बौद्ध सांख्यादिक संन्यासी भरडा भगत लिंगिया योगी दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मंत्र चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण भूल्या, अनुमोद्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांभल्यां, शराध संवत्सरी होली वलेव माहीपूनिम अजोपडिवो प्रेतबीज गोरत्रीज विणायगचोथ नागपांचम झूलणाछठ शीलसातम ध्रो आठम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस वत्सबारस धनतेरस अनंतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदक, जाग भोग उतारणा कीधा, पिंपल पाणी घाल्यां घलाव्यां वर बाहिर कूई तलाव नदी समुद्र कुंडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान दीधां, ग्रहण शनिश्चर माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणनां थाप्यां, अनेराई व्रत व्रतोलां कीधां, कराव्यां. विचिकित्सा:—धर्मसंबंधिया फल तणो संदेह कीधो. जिण अरिहंत धर्मना आगर विश्वोपकार सागर मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें न पूज्या, न मान्या, महात्माना भात पाणी तणी दुगंछा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया ऊपरें अभाव हुओ मिथ्यात्वी तणी प्रभावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांडी, दाक्षिणलगें तेहनो धर्म मान्यो ॥ श्रीसमकितविषे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां अजाणतां हुओ होय, ते सहू मन, वचन, कायाइं करी मिच्छामि० ॥ १ ॥

॥ पहिले प्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार. वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाण वुच्छेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें रीशवशें गाढो घाउ प्रहार घाल्यो, गाढे बंधन बांध्यां, घणे भारें पीड्या. निर्लांछन कर्म कीधां. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

भाल न कीधो, लहिणे देणे किणहीप्रतें लंघाव्युं, तेणें भूखे आपण जिम्या, अणगल पाणी वावर्युं, रूडे गल्युं नहो, गलाव्युं नही, अणगल पाणी झील्यां लूगडां धोयां, इंधण अणसोध्युं जाल्युं. साप कानखजूरा सुलहला माकड जूआ गोगिंडा साहतां मूआं, दूखव्यां, रूडे थानक न मूक्या, कोडी मकोडी उदेहो घीवेली कातरा चूडेली पतंगिया डेडकां अलसिया ईली कूति डांस मसा बगतरा माखी प्रमुख जे कोई जीव विणठा चांपिया दूहव्या माला हलावतां पंखी काग चिडकलानां इंडां फूटां, अनेरा एकेंद्रियादिक जिके जीव विणठा चांप्या, दूहव्या, हालतां चालतां अनेरुं कांइ काम काज करतां विध्वंसपणुं कीधुं. जीव रक्षा रूडे न कोधी, संखारो सूकव्यो, सुल्या धान तावडे दीधां, दलाव्यां, भरडाव्यां, खाटला तावडे झाटक्या, मूक्या, मूकाव्या, जीवाकुल भूमि लीपावी, वाशी गार राखी रखावी, दलणे खांडणे लीपणे रूडी जयणा न कीधी. आठम चउदशना नियम भांग्या, धूणी करावी ॥ पहिला प्राणातिपात व्रत विषइओ अनेरो० ॥ १ ॥

॥ बीजुं स्थूल मृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥

॥ सहसा रहस्सदारे, मोसुवएसे य कूड लेहे य ॥ सहसात्कारः—किणहिक प्रतें अजुक्तो आल दीधो, किणहिक प्रतें एकांतें वात करतां देखी तुम्हें तो राजविरुद्ध चिंतवो छो. इत्यादिक कह्युं. स्वदार मंत्र भेद कीधो, अनेराई किणहीनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, किणहीनें कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लिख्यो, कूडी साख भरी, थापण मोसो कीधो, कन्या ढोर गाय भूमि संबंधिया लेहणें देयणें व्यवसाय वाद वढावढि करतां मोटकुं झूठ बोल्युं, हाथ पग भणी गाल दीधी, करडका मोड्या, अधर्म्म वचन बोल्यां ॥ बीजे मृषावाद व्रत विषइ० ॥

॥ त्रीजे अदत्तादानविरमण व्रतना पाच अतिचार ॥ तेना-हडप्पओगे. घर वाहिर क्षेत्र खले पराई वस्तु अणमोकलावी लीधी, दीधी, वावरी, चोरीनी वस्तु मोल लीधी, चोर धाडीत प्रतें संवल दीधुं, संकेत कह्युं. विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधो, नवा पुराणां सरस विरस सजीव निर्जीव वस्तु तणा भेल संभेल कीधा, खोटे तोल मान माप वहोर्यां, दाणचोरी कीधो, साटे लांच लीधी, माता पिता पुत्र कलत्र परिवार वंची जूदो गांठ कीधी, किणहोनें लेखे पलेखे भुलव्युं, पडी वस्तु ओलवी लीधी, त्रीजे अदत्तादान व्रत विषइओ० ॥

॥ चोथे स्वदार संतोप मैथुनव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर, अणंग वीवाह तिव्वअणुरागे ॥ अपरिगृहीतागमन, इत्वरपरिगृहितागमन. विधवा वेश्या स्त्री कुलाङ्गना स्वदार शोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम चउदस अनेराई पर्व तिथि तणा नियम भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, अनुमोदीयां, कुविकल्प चिंतव्या, अनङ्गक्रीडा कीधी, पराया विवाह जोड्या काम भोगतणेविषे तीव्राभिलाप कीधो, कुस्वप्न लाधां, नट विट पुरुपशुं हांसुं कीधुं, चोथे मैथुन व्रत वि०

॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धन धान्य क्षेत्र वस्तु रूप्प सुवर्ण कुप्प द्विपद चतुष्पद नव परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता पिता पुत्र कलत्रादि तणे लेखें कीधो, परिग्रह परिमाण लेई पढ्यो नहीं. पढी वीसारिओ, नियम वीसारिओ ॥ पांचमे परिमाण व्रतविषइओ० ॥

॥ छठ्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ उर्द्धदिसि अधोदिसि तिर्यगदिसि जायवा आयवा तणो

८

नियम: जे कोई अजाणे भागो, एक गमा संकोडी बीजी गमा वधारी, विस्मृति लगें अधिक भूमि गया, पाठवणी आवी मोकली ॥ छठे दिग्व्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भोगोपभोग परिमाण व्रत ॥ जेहना भोजन आश्री पांच अतिचार अने करमहूंती पन्नरे, एवं वीश अतिचार॥ सचित्त पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलयं च आहारे० सचित्त तणे नियम लीधे अधिक सचित्त लीधुं, तथा सचित्त मली वस्तु अपक्काहार दुपक्काहार तुच्छौषधि तणुं भक्षण कीधुं. होला उंबी पहुंक काकडी मडथां कीधां, सुल्यां धान प्रमुख भक्षण कीधां ॥ सचित्त दव्व विगई, पाणह तंबोलवत्थ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंभ दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते संभार्या संक्षेप्या नहिं, लेई नियम भांग्या. बावीस अभक्ष, बत्रीस अनंतकायमांहि आदुं मूला गाजर पींडालू सूरण सेलरां काची आंवली गोल्हां खाधां, चोमासी प्रमुखमांहे वासी कठोल्ली रोटी खाधी. त्रिहुं दिवसनुं दही लीधुं, मधु महुडां माखण माटी वेंगण पील्लू पीचू पंपोटा पीपी विष हीम करहा घोल वडां अणजाण्यां फल टींवरुं अथाणुं आमणबोर काचुं मीठुं, तिल खसखस काचां कोठिंबडां खाधां. रात्रिभोजन कीधुं, लगभगती वेलायें व्यालू कीधुं; दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नर कर्मा-दान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत वाणिज्ये, लक्ख वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये, जंत पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर दह तलाव सोसणया, असई पोसणया, ए पांच वाणिज्य पांच कर्म, पांच सामान्य; महारंभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नींवाह पचाव्या, घाणी चणा पक्वान्न करी वेच्या. वासी माखण तपाव्यां, अंगीठा

कीधा करान्या. तिलादिक संचीया. फागुण मास उपरांत राख्या, कुकडा सूडा प्रमुख पोष्या. अनेरुं जे कांई बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्युं ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए० ॥ कदर्प्प लगें विटनी पेरें हास्य कुतूहल मुखादि अंग कुचेष्टा कीधी, मूर्खपणा लगें कुणहोने असंबद्ध वाक्य बोल्या. खांडा कटारो कुंश कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, मांग्यां आप्यां. कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांइ पापोपदेश दीधो. अंघोल नाहण, दातण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आण्यां, हींडोले हींच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या. करडका मोड्या, संभेडा लाया, भेंसा सांढ कुकडा, सिंढा श्वानादि जूझतां कलह करतां जोयां, खाधी लगें अदेखाइ चिंतवी माटो मोडुं कण कपासिया काजविण चांप्या, मेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुंद्रो, छाण पाणी विंस तेल फुल आस्लेनरस घृतादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां. ते मांहि कीडो कंथुआ माखो उंदर गिरोली प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव कीडा हेतें बांधी राख्या. घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगें एकनें ऋद्धि परिवार वांछी एकनें मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतनें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चिंतव्युं, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्युं हलाव्युं. छती वेलाइं सामायिक न लीधुं, सामायिक लइ उघाडे मुखे बोल्या, ऊंघ आवी कन्नी. बीज दीवा तणां उजाही लागी. कण कपासीया माटी मीठुं खडी फूल

हरिकायना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यंचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यंची आभडी, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अण पूरउं पारिउं पारवुं वीसारिउं, नवमे सामायिक व्रतविषइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाइ रूवाणुवाइ बहिया पुग्गल खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहिबाहिर थको कांइ अणाव्युं, आप कन्हाथी बाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी कांकरी नाखी आपणपणुंछतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविषइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा भोए० ॥ पोसह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरला थंडिलां दिवसें शोध्यां पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपडिलेह्युं वावरिउं, अणपुंजी भूमिकाइं परठविउं, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो. परठव्यां पुठें वार त्रण वोसिरामि वोसिरामि न कह्युं. पोसहशालामांहि पइसतां नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी वीसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय वाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, संथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ. पोरसिमांहि उंघ्या, अविधि संथारुं पाथर्युं, काल वेलायें पडिक्कमणुं न कीधुं, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, कालवेला देव वांदवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवारो पारीयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नही ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविषइयो० ॥

॥ बारमे अतिथि संविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सच्चित्ते निक्खवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि थके महातमा प्रतें असूझतुं दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, देवा

तणी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, आपणुं फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुर करी महातमा तेड्या, मच्छरलगें दान दीधुं, गुणवंत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साधर्मिक वात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्म्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ बारमे अतिथि संविभाग व्रतविषइयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पांच अतिचार. इहलोए परलोए० ॥ इहलोका संसप्पउगे परलोगासंसप्पउगे जीविआसंसप्पउगे मरणा संसप्पउगे कामभोगासंसप्पउगे इहलोक मनुष्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठकुराई वलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछ्या. परलोक इंद्र अहमिंद्र देवाधिदेव पदवी वांछी, सुख आव्ये जीववा तणी वांछा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ संलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार बारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमूणोयरिया, अणसण कहीयें उपवास, ते पर्वतिथि छतो शक्त कीधुं नही. ऊणोदरी ते पांच सात कवल ऊणा रह्या नही, द्रव्य संक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधुं नहीं. आसनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग संकोच्यां नहीं, नवकारसी पोरसी गंठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमढ एकासणो वेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चख्काण पारवां वीसार्यो. वेसतां नवकार भण्यो नही, उठतां दिवसचरिमं न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुंपाणी पीधुं, वमन थयुं ॥ बाह्य तपव्रत विषइयो० ॥

॥ अभ्यंतर तप॥ पायछितं विणओ० गुरुकनें मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायछित तप लेखा शुद्ध पुहचाड्युं नहीं, देव गुरु संघ साहम्मी प्रतें विनय साचव्यो नहीः वाचना पृच्छना परावर्त्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध सिज्झाय

कीधी नहीं, धर्म्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायुं नही, कर्म क्षय निमित्त लोगस्स दस वीसनो काउस्सग्ग न कीधो॥ अभ्यंतर तप विषइयो० ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ, परिक्कमइ जो जहुंत ठाणेसु ॥ जुंजइअ जहा थामं, नायवो वीरियायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक दान शील तप भावना प्रमुख धर्म्म कृत्यतणे विषे मन वचन कायतणुं छतुं बल वीर्य गोपव्युं, रूडां पंचाङ्ग खमासमण न दीधां, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो० ॥

॥ नाणाइ अट्ठ अइ वय, समसंलेहण पण पनर कम्मेसु ॥ बारस तवविरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणं करणे० ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धबावीस अभक्ष्य बत्तीसअनंत काय बहुबीज भक्षण महाआरंभ महापरिग्रहादिक कीधां, नित्यकृत्य देवपूजा सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न कीधां, जीवाजीवादि विचार सद्दहियां नहीं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी, प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११, कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अरतिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वशल्य १८. ए अढारह पापस्थानकमांहि जे कोइ कीधो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एवं प्रकारें श्रावक धर्मे श्री सम्यक्त्व मूल बारह व्रत चोवीसां सो अतिचार मांहि जिको कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म बादर जाणतां अजाणतां हुवो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्रीश्रावकोंके बारह व्रतका अतिचार संपूर्ण ॥

॥ पछें सव्वस्सवि पडिक्कम ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिसह पर्यंत कहे. तेवारें गुरु कहे. चउक्केण पडिक्कमह, चउमासे छट्ठेण पडिक्कमह, संवच्छरीयें अट्ठमेण पडिक्कमह. इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं कही. द्वादशावर्त्त वांदणा देवे. पछें इच्छाकारेण संदिसह भगवन्, देवसियं आलोइयं पडिक्कंता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतरपक्खियं ॥ २ ॥ खामेउं? गुरु कहे खा० ॥ पीछें इच्छं खामेमि पक्खियं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्वे कह्यो, तिम कही मिच्छामि दुक्कडं देई खमावे, पछें बे वांदणां देई. भगवन्! देवसियं आलोइयं पडिक्कंता पक्खियं ॥ ३ ॥ पडिक्कमावह? गुरु कहे सम्मं पडिक्कमह. पछें इच्छं कही करेमि भंते सामाइयं॥इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० ॥ कही ॥ काउस्सग्ग करे, गुरु, पाखीसूत्र कहे, ते सांभले, अने गुरुथको जूदा पडिक्कमता हुवे, तो एक श्रावक खमासमण देई कहे. भगवन्! सूत्र भणुं? गुरु कहे, भणेह, एसो वचन मनमें धारी ॥ इच्छं कही, ऊभो थको, हाथ जोडी मुहपत्ती मुखे देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें चिंतवतो वंदित्तु सूत्र गुणे. बीजा श्रावक करेमि भं ते० इच्छामि ठामि काउस्सग्ग तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कही काउस्सग्गमें रह्या सुणे. सूत्रप्रांतें णमो अरिहंताणं कही. काउस्सग्ग पारी, ऊभा थका तीन नवकार गुणी बेसे. पछें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि भंते कही. इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पडिक्कमने देवसियं सर्वे ॥ एहने ठिकाणें पक्खिये पक्खियं, चउम्मासियं संवच्छरियं सर्वं कहे. पछें ऊभा, अब्भु-ट्ठिओमि आराहणाए इत्यादि पूर्ण भणी, खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं, काउस्सग्ग करुं? गुरु कहे करेह. पछें इच्छं कही, करेमि भंते

सामा० इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सु० अन्नत्थू० इत्यादि कही, पाखीयें बार लोगस्स चउमासियें वीस लोगस्स संवच्छरीयें चालीस लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, एक नवकार ऊपर, काउस्सग्ग करी. पारी लोगस्स कहे. बेसी मुहपत्ती पडिलेही, बे वांदणां देई इच्छा० ॥ सं० ॥ उ० ॥ समाप्ति खामणेणं ॥ अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर पक्खियं ॥ ३ ॥ खामेऊं ? गुरु कहे खामेह. पीछें इच्छं खामेमि पंक्खियं ॥ इत्यादि पाठ पूर्वे कह्यो. तिम कहे, पीछें इच्छाका० ॥ सं०॥उ०॥पाखी॥३॥ खामणां खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर खमासमण देई. तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त खामणां खामेह. पीछें श्रावक एक खमासमण देई. मस्तक नीचुं नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीछें गुरु कहे नित्थारग पारगाहोह. पीछें श्रावक कहे. इच्छं इच्छामि अणुसट्ठिं कही, गुरु कहे, पुण्यवंतो पाखीने लेखे, एक उपवास अथवा दोय आंबिल अथवा तीन नीवी, अथवा चार एकासणां, अथवा बे हजार सज्झाय करी, एक उपवासनी पेठें पूरज्यो, पाखीनें स्थानकें दैवसिक उणजो. एम चउमासे ए सर्व डुगुणो कहणो, संवच्छरीयें त्रिगुणो कहणो. पीछें जिणें तप कीधो हुवे ते पइट्ठियं कहे, न कीधो हुवे ते तहत्ति कहे ॥ पीछें बे वांदणां देई, अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर देवसियं खामेमि इत्यादि कहे. पीछै बे वांदणा देई. आयरिय उवज्झाए० तीन गाथा कहे, इम आगें सर्व विधि दैवसिक पडिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो काउस्सग्ग करी स्तुति कहे. पीछें उवण देवयाए करेमि काउस्सग्गं. इत्यादि विधें उवनदेवताको काउस्सग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी भुवनवासिनी ॥ निहत्य दुरितान्येषा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्सग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन अजितशांति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पडिक्कमणो पूरो हुवा पीछें एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सिद्धा० कही, वडी शांतिका स्तोत्र कहे, वोजा सर्व सुणे, जिणनें रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी सांभले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पच्चख्खाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चउदे नियम संभारे, सो इस तरें पच्चख्खाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंठसहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगइओ पच्चख्खाइ. अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहित्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चख्खाइ. अणत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संभारे नहिं, सो विगइका और देसावगासिकका आगार न पच्चख्खे. निकेवल नवकारसी आदिक पच्चख्खाण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ ॥ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुंठसी पच्चख्खामि, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थ०॥ सहसा०॥ पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं ॥ साहुवयणेणं सव्व० निगइओ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्वकी

परें कहणां ॥ इति पोरिसी पच्चक्खाण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इस माफक साढ्ढ पोरसीका पच्चक्खाण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पच्चक्खाइके ठिकाने इहां साढ्ढपोरसिं पच्चक्खाइ कहणां ॥ इति साढ्ढ पोरसिपच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमढ्ढं अवढ्ढं वा पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० ॥ पच्छ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सव्व० ॥ विगइउ पच्चक्खाइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमढ्ढपच्चक्खाण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं बिआसणं वा पच्चक्खाइ. दुविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारि० मह० सव्व० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥४॥ इति एकासण बिआसण पच्चक्खाण ॥आ०८॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० पच्छन्नका० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं पच्चक्खाइ. दुविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह० सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिठाव० मह० सव्व० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठाणा पच्चक्खाण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साढ्ढ पोरसिं वा पच्चक्खाइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अन्न० सह० पच्छ० दिसामो० साहु० सव्व० आयंबिलं पच्चक्खाइ. अन्नत्थ० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिठा० मह० सव्व० एकासणं पच्चक्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्न० सह०

सागारिआगारेणं आउट्टणपसारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठा० मह० सब० वोसिरइ ॥ ६ ॥ इति आंबिल पच्चख्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साड्ढ पोरसिं वा पच्चख्खाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० लेवालेवेणं गिहत्थसंसिठेणं उख्खित्तविवेगेणं पडुच्चमख्खिएणं पारि० मह०सव्व० एकासणं पच्चख्खाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मह० सव्व० देसावगासियं जोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति नीवी पच्चख्खाण ॥ आगार ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्भत्तठं पच्चख्खामि. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० मह० सव्व० देसावगासियं जोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अण्ण० सह० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति चउविहार उपवास पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ सूरे उग्गए अप्भत्तठं पच्चख्खामि. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साड्ढ पोरसिं पुरिमड्ढ अवड्ढं वा पच्चख्खाइ अण्ण० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव देसावगासियं जोगपरिभोगं पच्चख्खामि. अ० स० म० सव्व० वोसिरामि ॥ इति तिविहार उपवास पच्चख्खाण ॥

॥ पोरसिं साड्ढ पोरसिं पुरिमड्ढ अवड्ढ वा पच्चख्कामि. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अ० सह० पच्छ० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगठाणं दत्तियं पच्चख्खामि. तिविहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह० सागा० गुरु० मह० सव्व० विगइउ पच्चख्खामि. इत्यादि पूर्ववत्. देसावगासियं इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खाइ. चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ इति दिवसचरिम पच्चख्खाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चख्खामि दुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्न० सह० मह० सव० वोसिरामि. देसावगासियं पूर्ववत् ॥इति दिवसचरिम दुविहार पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पच्चख्खाण ॥ ए ॥

॥ भवचरिमं पच्चख्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ आगार ॥ ४ ॥ भवचरिम, दो आगारकाभी होय ॥ इति भवचरिम पच्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिसहि मुठिसहि अंगुठसहि प्रमुख अभिग्रह पच्चख्खाणकेभी ए चार आगार. अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ पांचमो चोलपट्टागारेणं सो साधुकों होय ॥ इति अभिग्रह पच्चख्खाण ॥

॥ अहणं भंते तुझ्माणं समीवे देसावगासियं पच्चख्खामि दवउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं देसावगासियं खित्तउणं उन्न वा अन्नत्थवा कालउणं मुहुत्तधारणाप्रमाणें जावनियमं पच्चख्खामि भावउणं जावगहेणं न गहिज्जामि उलेणं न छलिज्जामि असेणकेवि रायंकेण वा एसो परिणामो न पमिवज्जइ ता अभिग्गह अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति देसावगासी पच्चख्खाण ॥

॥ तथा साधु पच्चख्काण करे. तब देसावगासी नही पच्चखे. अरु तिविहार उपवासमें आंबिलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें पाणस्सका ठ आगार पच्चखे सो दिखावे हैं. पाणस्स लेवाडेण वा

अलेवामेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा वोसिरइ ॥

॥ अथ पच्चख्खाण आगार संख्या ॥

॥ दोचेव नमुक्कारो आगार छच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त पुरमिड्ढे, एगासणंमि अठेव ॥ १ ॥ सत्ते गठाणस्सउ, अठेवय आ-यंबिलंमि आगारा ॥ पंच वयन्नाठे, छप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउरो अभिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पच्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहियं पच्चख्खाइ चउविहंपि आहारं ॥ अर्थः–इहां गुरु कहे पच्चख्खाइ. शिष्य कहे पच्चख्खामि. पच्चख्खाइका अर्थ सब जगे अंगीकार वांची जाणना. जेसें सूरज उदय हुआ पीछे नवकारसी व्रत अंगीकार करुं. यह पच्चख्खाण मुहुर्त्त कहते दो घमी काल उपरांत जहां तक नवकार गुणकर पारूं नहीं तहां तक चउवि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो च्यार प्रकारका आहार इस मुजब हे. असन कहते अन्न, चावल, गहूं, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गहूं जवकूं आदि लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लडू वगेरे सब तरेका पकवांन सूरणादिक सब तरेका कंद दूध दही रोटी राब घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूंफ लूंण सेंधवादिक इत्यादिक सब असणमांहि जाणना ॥ १ ॥ पाणं इसका अर्थ आछण जवोदक तुषोदक तंदुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहने सब अप्प-काय ॥ २ ॥ खाइमं कहने खादिम सूखमी नालेर खजूर द्राख सेकया अनाज आंबा केला कारुमी अखरोट खारक बिदाम वगेरह सब जातका मेवा सब जातका फल खादम जाणना ॥ ३ ॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूंठि मिरच पींपर हरम्हे बहेम्हा आंबला तुलछी कसेला काथ्या मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लौंग वायविम्हंग अजमा अजमोद कुलिंजन कबाबचीणी कचूर नागरमोथा कांटासेलिया कुंन्नटिआ पांनसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजम्ह वावची वांवल-छाल धवछालि खेजम्हेकीछालि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींबकीछालि जम्ह पांन सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूम्हेकीछालि चंदन-कीराख रोहिणीकीछालि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया चिरमी कथर बोरकीजम्ह इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब छो-म्हणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तब ता अनाहारहे अगर जो इच्छा संयुक्त लेवे तो आहारका दूषण लगे. पच्चरक्खाणका अर्थ जाणे विगर जो पच्चक्खाण करे सो अंधा पच्चख्खाणहे इस वास्ते संक्षेप मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे. जिस पच्चख्खाणमें जितना आगार होय सो रखकर हमारे पच्चख्खाणहे. अन्नत्थणान्नोगेणं कहिये अना-न्नोग टालके किया जो पच्चख्खाण. अत्यंत न्नूल जाणेसें कोइन्नी चीज न्नूलके मुंमे म्हालली होय लेकिन् जाणे बाद तत्काल उसी वखत पीछा नाख देवे तो पच्चख्खाणमें न्नंग नही. उर जाणे बाद न्नक्षण करे तो पच्चखाण निश्चे न्नंग होय ॥१॥ पच्छन्नकालेणं कहते कालकी प्रच्छन्नता. आकाशमें गर्द ऊम्हनी होय आकाशमें बद्दल छाये होय तेसेइ पहाम्हकीउट आजावे सूरज नही दीखे तब न्न-रमसुं पच्चख्खाणका वखत पूरा हुवा जाणकर न्नोजन करे तो व्रत न्नंग नही ॥२॥ दिसामोहेणं कहतां दिसा न्नूलकर पूरवकूं पच्छिम जाणकर पच्चरकाणका काल पूरा हुये विगर न्नोजन कर लेवे तो व्रत न्नंग नही ॥३॥ सहस्सागारेणं कहतां सहसात्कार बहोत उताव लके योगसें अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते घी वगेरेका छींटा

मूंमें गिर जाय तो व्रत भंग नहीं ॥४॥ सहूवयणेणं कहतां साधूके वचनसें उग्घाडा पोरसीआदिक भरम संयुक्त सुणकर पच्चख्काणका काल पूरा हुवा जाणकर भोजन करे तो व्रत भंग नहीं ॥५॥ सव्व समाहिवत्तियागारेणं कहतां पच्चख्काणका काल पूरा होणेसें पहली अकस्मात् शूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी थिरता रहे नहीं आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उनका रोग मिटाणे वास्ते ओषधादिक पथ्य देवे वा आप लेवे तो पच्चख्काण भंग नहीं ६ महत्तरागारेणं कहतां पच्चख्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा निर्जराका कारण अथवा हरकिसीसें वण नहीं आवे एसा जो चैत्य संघादिकका प्रयोजन होणेसें पच्चख्काणका काल पूरण भये विगर ही भोजन कर लेवे तो व्रत भंग नहीं ७ सागारीआगारेणं कहतां गृहस्थ देखतां साधू भोजन करे नहीं एसी जिनराजकी आज्ञा है इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पच्चख्काण कर भोजन करणे बेठाहे उस वखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब साधू उस ठिकाणेसें ऊठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नहीं उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार है जिस पुरुषकी निजर लगती होय तो उन पुरुषके आणेसें एकासणेवाला उठकर उर ठिकाणे जाकर भोजन करे तो व्रत भंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं कहतां पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणेसें थोडासा आसन चल जाय तो व्रत भंग नही ॥९॥ गुरु अब्भुट्ठाणेणं कहतां आपका गुरु आणेसें तथा आपसें कोइ बडा पुरुष आणेसें विनयके वास्ते भोजन करतां एकासनादिकमें आसन छोड खडा हो जावे तोभी व्रत भंग नहीं ॥१०॥ पारिट्ठावणियागारेणं कहतां सब पच्चख्काणमें यह आगार साधुकाहे. जिस आहारके परठणेसें बहुत जीवकी विराधना होती जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार है तब

ए परिग्गहसन्नाए पडिक्कमामि चउहिं विगहाहिं इत्थिकहाए भत्तकहाए देसकहाए रायकहाए पडिक्कमामि चउहिं झाणेहिं अट्टेणं झाणेणं रुद्देणंझाणेणं धम्मेणंझाणेणं सुक्केणंझाणेणं पडिक्कमामि पंचहिं किरियाहिं काइयाए अहिगरणियाए पाउसियाए पारतावणीआए पाणायवायकिरियाए पडिक्कमामि पंचहिं कामगुणेहिं सद्देणं रूवेणं रसेणं गंधेणं फासेणं पडिक्कमामि पंचहिं महव्वएहिं पाणाइवायाउविरमणं मुसावायाउवेरमणं अदिन्नादाणाउवेरमणं मेहुणाउवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं पडिक्कमामि पंचहिं समिईहिं इरिआसमिईए भासासमिईए एसणासमिईए आयाणभंडमत्तनिखेवणासमिईए उच्चारपासवण खेलजल्लसंघाणपारिठावणियासमिईए पडिक्कमामि छहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएणं आउकाएणं तेउकाएणं वाउकाएणं वणस्सईकाएणं तस्सकाएणं पडिक्कमामि छहिं लेसाहिं किन्हलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए पउमलेसाए सुक्कलेसाए पडिक्कमामि सत्तहिं भयठाणेहिं अठहिं मयठाणेहिं नवहिं बंभचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं उवासगपडिमाहिं बारसहिं भिक्खुपडिमाहिं तेरसहिं किरियाठाणेहिं चउद्दासहिं भूयगामेहिं पन्नरसहिं परमाहम्मिएहिं सोलसएहिं गाहाहिं सतरसविहे असंजमे अठारसविहे अबंभे इगुणवीसाए नायज्झयणेहिं वीसाए असमाहिठाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं बावीसाए परीसहेहिं तेवीसाए सुयगडज्झयणेहिं चउवीसाए अरिहंतेहिं पचवीसाए भावणाहिं छव्वीसाए दसाकप्पववहाराणं उद्देसणकालेणं सत्तावीसाए अणगारगुणेहिं अठावीसाए आयारपकप्पेहिं एगुणतीसाए पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअठाणेहिं इगतीसाए सिद्धाइगुणेहिं बत्तीसाए जोगसंगहेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिहंताणं आसायणाए सिद्धाणंआसायणाए आयरिआणंआसायणाए उवज्झायाणंआ-

सायणाए साहूणंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० साविर्याणंआ० दे वाणंआसाय० देवीणंआ० इहलोगस्सआ० परलोगस्सआ० केवलिपन्नत्तस्सधम्मस्सआ० सदेवमणुआसुरस्सलोगस्सआ० सव्वपाणभूअजीवसत्ताणंआ० कालस्सआ० सुअस्सआ० सुयदेवयाएआसा० वायणायरिअस्सआ० जंवाइद्धं वच्चामेलिअं हीनक्खरिअं अच्चक्खरिअं पयहीणं विणयहीणं जोगहीणं घोसहीणं सुट्ठुदिन्नं, दुट्ठुपडिच्छियं अकालेकउसज्झाउ कालेनकउसज्झाउ असज्झाइए सज्झाइयं सज्झाइए नसज्झाइयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं णमो चउवीसाए तित्थयराणं उसभाइमाहावीरपज्जवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुण्णं नेआउयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमविसंधि सव्वदुक्खपहीणमग्गं इत्थठिआजीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतंकरंति तंधम्मं सद्दहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अणुपालेमि तंधम्मं सद्दहंतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालिंतो अणुपालिंतो तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए असंजमं परिआणामि संजमं उवसंपज्जामि अबंभं परिआणामि बंभंउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं उवसंपज्जामि अन्नाणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्छत्तं परिआणामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि अबोहिं परिआणामि बोहिं उवसंपज्जामि अमग्गं परिआणामि मग्गं उवसंपज्जामि जं संभरामि जं च न संभरामि जं पडिक्कमामि जं च न पडिक्कमामि तस्स सव्वस्स देवसिअस्स अइयारस्स पडिक्कमामि समणोहं संजय विरय पडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे अनियाणो दिट्ठिसंपन्नो मायामोसविवज्जिउ अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्छ

परिग्गहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पक्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवठ्ठिउतं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वयं उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछठ्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खितउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोए कालडणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावत्तणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लरकणस्स सच्चाहिठियस्स विणयमूलस्स खंती पहाणस्स अहिरणसोवाणियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिखावित्तियस्स कुरकीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपरकालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निवियारस्स निव्वि-त्तीलरकणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निधाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-गदोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोरक मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग-रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-डुपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहिं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसरिकयं सिद्धसरिकयं साहुसरिकयं देवसरिकयं अप्पसरिकयं एवं हवइ भिरकुवा भिरकू-णीवा संजयविरय पडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुरकणयाए अ-सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुरकरकयाए कम्मरकयाए मोरक

पग्गिहधारा ॥ पंचमहव्वयधारा, अठार सहस्स सीलंगधारा ॥ अक्खयायार चरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे॥ मित्ति मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं नकेणई ॥१॥ एवमहं आलोइय, नंदिअ गरहिय दुगंछियं सम्मं ॥ तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणेचउवीसं ॥२॥ इतिश्री साधू प्रतिक्रमणसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ पक्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तित्थंकरे अतित्थे, अतित्थसिद्धेय तित्थसिद्धे अ ॥ सिद्धेयजिणेयरिसी, महरिसि नाणं च वंदामि ॥ १ ॥ जेयइमंगुणरयणसायर, मविरातिऊणं तिन्निसंसारा ॥ ते मंगलं करित्ता, अहमविआराहणाभिमुहो ॥ २ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुयं च धम्मोय ॥ खंती गुत्ती मुत्ती, अज्जवया मद्दवं चेव ॥ ३ ॥ लोगंमि संजया जं करंति, परम रिसि देसियमुपारं ॥ अहमवि उवट्ठिउतं, महव्वय उच्चारणं काउं ॥ ४ ॥ सेकिंतं महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा पंचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणछट्ठा तंजहा सव्वाउ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाउ मूसावायाउ वेरमणं सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं सव्वाउमेहुणाउवेरमणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं सव्वाउराइभोयणाउवेरमणं तत्थ खलु पढमे भंते महव्वए पाणाइवायाउवेरमणं सव्वं भंते पाणाइवायं पच्चक्खामि से सुहुमं वा वायरं वा तसं वा थावरं वा नेवसयं पाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से पाणाइवायाए चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं पाणाइवाए छसुजीवनिकाएसु खित्तउणं पाणा

इवाए सयललोंए कालत्तणं पाणाइवाए दियावा राउवा भावत्तणं पाणाइवाए रागेण वा दोसेण वा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलि पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सच्चाहिठ्ठियस्स विणयमूलस्स खती-पहाणस्स अहिरणसोवण्णियस्स उवसमपभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वि-त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विं अन्नाण याए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रा-गदोस पडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारव-गरुयाए चउकसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोख्ख मणुपालयंतेणं इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-वाउ कउवा कारिउवा कीरंतोवा परेहिं समणुन्नाउ तं निंदामि ग-रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि प-डुपन्नं संवरेमि सव्वं पाणाइवायं जावज्जीवाए अणिस्सिउहं नेव सयंपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहिं पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइ भिख्खूवा भिख्खू-णीवा संजयविरय पडिहय पच्चख्खाय पावकम्मे दियावा राउवा एगोवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु पाणाइवायस्सवेरमणे हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुख्खणयाए अ-सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणु-चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तं दुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोख्ख

याए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि पढमे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ पाणाइवायाओवेरमणं ॥ १॥ अहावरेदोच्चेभंते महव्वए मुसावायाओवेरमणं सव्वं भंते मुसावायं पच्चक्खामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसयं मुसंवाइज्जा नेवन्नेहिं मुसंवायाविज्जा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मुसावाए सव्वदव्वेसु खित्तओणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालओणं मुसावाए दियावा राओवा भावओणं मुसावाए रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणय मूलस्स खंतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निवित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा भासिज्जंतो वा परेहिं समणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडिपन्नं संवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमुसंवइ

वा नेवन्नेहिं मुसंवायावेज्जा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणयाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तं दुक्खखयाए कम्मखयाए मोक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि दोच्चे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाओवेरमणं सव्वं भंते अदिन्नादाणं पच्चक्खामि से गामेवा नगरेवा रन्नेवा अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिण्हाविज्जा अदिन्नं गिण्हंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणे गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु खित्तओणं अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रन्नेवा कालओणं अदिन्नादाणे दियावा राओवा भावओणं अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अपयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स

निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासुक्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवेअन्नेसुवा भवग्गहणेसु अदिन्नादाणं गहियंवा गाहावियंवा घिप्पंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वं अदिन्नादाणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं अदिन्नं गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्नं गिन्हाविज्जा अदिन्नंगिन्नंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहूसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहयपच्चक्खाय पावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एस खलु अदिन्नादाणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाय अजूरणयाय अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुद्दवणयाय महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पसत्थे तं दुक्खक्खयाय कम्मक्खयाय मोहक्खयाय बोहिलाभाय संसारुत्तारणाय त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि तच्चे भंते महव्वए अब्भुट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमणं ॥ ३ ॥ अहावरे चउत्थे भंते महव्वए मेहुणाओवेरमणं सव्वं भंते मेहुणं पच्चक्खामि से दिव्वंवा माणुसंवा तिरिक्खजोणियंवा नेवसयं मेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिं मेहुणं-

सेवाविज्ञा मेहुणंसेवंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि। अप्पाणं वोसिरामि से मेहुणे चउविहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्तओणं मेहुणे उड्ढलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मेहुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नवबंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसंवलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वत्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचियस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामिस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मेहुणंसेवियंवा सेवावियंवा सेविज्जंतोवा परेहि समणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयं निंदामि पडुप्पन्नंसंवरामि अणागयं पच्चख्खामि सव्वंमेहुणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयंमेहुणंसेविज्जा नेवन्नेहिंमेहुणंसेवाविज्जा मेहुणंसेवंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसख्खियं सिद्धसख्खियं साहुसख्खियं देवसख्खियं अप्पसख्खियं एवं हवइभिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चख्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एस खलु मेहुणस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्थे तंदुक्खखयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओवेरमणं ४ अहावरेपंचमे भंते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं सव्वं भंते परिग्गहं पच्चक्खामि से अप्पंवा बहुंवा अणुंवा थूलंवा चित्तमंतंवा अचित्तमंतंवा नेवसयं परिग्गहं परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहं परिगिण्हाविज्जा परिग्गहंपरिगिन्नंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सचित्ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओणं परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्नेसुवा कालओणं परिग्गहे दियावा राओवा भावओणं परिग्गहे अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचयस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाण गमण पज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं राग-

दोस पडिवद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किमयाए तिगारव-गरुयाए चउक्कसाउवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-सोरकमणुपालयंतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु परिग्गहो ग-हिउवा गाहाविउवा घिप्पंतोवा परेहिंसमणुन्नाउ तंनिंदामि गरि-हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं घायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुप्प-न्नंसंवरेसि अणागयंपच्चरकामि सवंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिस्सि-उहिं नेवसयंपरिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हाविज्जा परिग्गहं-परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसरिकयं सिद्ध-सरिकयं साहुसरिकयं देवसखियं अप्पसरिकयं एवंहवइभिख्खूवा भि-रवुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चरकाय पावकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरिग्गहस्स-वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसिं पाणाणं सवेसिंभूयाणं सवेसिंजीवाणं सवेसिंसत्ताणं अदुरकणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-णियाए अणुद्दवणयाए महत्थे महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्थे तंदुरकरकयाए कम्मरकयाए बोहिलाभाए सं-सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महवए उवट्ठिउमि सवाउपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेछट्ठे भंते महव्वए रा-इभोयणाउवेरमणं सवं भंते राईभोयणं पच्चरकामि सेअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविज्जा राइंभुं-जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवोसिरामि से राई-भोयणे चउविहेपसत्ते तंजहा दवउ खित्तउ कालउ भावउ दव्वउणं राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तउणं राईभोयणे

समयखित्ते कालओणं राइभोयणे दियावा रत्तिंवा भावओणं राईभोयणे तित्तेवा कडुएवा कसाएवा अंबिलेवा महुरेवा लवणेवा रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इमस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अहिंसालक्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नव बंभचेरगुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिक्खावित्तियस्स कुक्खीसंबलस्स निरग्गिसरणस्स संपक्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलक्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसंचिअस्स अविसंवाइयस्स संसारपारगामियस्स निव्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विंअन्नाणयाए असवणयाए अबोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंदयाए किड्डयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोखमणुपालयंतेणं इहंवा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु राईभोयणं भुत्तंवा भुंजावियंवा भुजंतंवा परेहिंसमणुन्नाओ तंनिंदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं अइयंनिंदामि पडुपन्नंसंवरेमि अणागयं पच्चक्खामि सव्वंराइ भोयणं जावज्जीवाए अणिस्सिओहं नेवसयं राईभुंजिज्जा नेवन्नेहिंराईभुंजाविज्जा राईभुंजंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसक्खियं सिद्धसक्खियं साहुसक्खियं देवसक्खियं अप्पसक्खियं एवंहवइभिक्खूवा भिक्खुणीवा संजयविरय पडिहय पच्चक्खायपावकम्मे दियावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुराईभोयणस्सवेरमणे हिएसुहेखमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिंजीवाणं सव्वेसिंसत्ताणं अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियावणियाए अणुद्दवणयाए महत्थेमहागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसि-

देसिएपसत्थे तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहखयाए वोहिलाभाए संसाकत्तारणाए तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठे भंते महव्वए उवठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥ ६ ॥ इच्चेइयाइं पंच-महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछठाइं अत्तहियठाइं उवसंपज्जित्ताणंविह-रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाइवायस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिव्वरागायजाभासा तिव्वदोसातहेवय मुसावायस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सद्दा-रूवारसागंधा फासाणंचविआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसवुत्ते अइ-क्कमे ॥ ४ ॥ इच्छापुछायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे एसवुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरयामोपाणाइवायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-धम्मे तइयंवयमणुरक्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विर-यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-णधम्मे पंचमंवयमणुरक्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्टंवयमणुरक्खे विरयामो-राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमण-धम्मे पढमंवयमणुरक्खे विरियामोपाणाइयाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-हारसमिओ जुत्तोगुत्तोठिओसमणधम्मे बीयंवयमणुरक्खे विरियामो-अलियवयणाउ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तईयंवयमणुरक्खे विरियामो अदिन्नादाणाउ ॥ १४ ॥ आलियविहार-समिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरक्खे विरियामोमेहु-

णाउ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे पंचमंवयमणुरक्के विरयामो परिग्गहाउ ॥ १६ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे छठंवयमणुरक्के विरयामोराईभोयणाउ ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिउ जुत्तोगुत्तोठिउसमणधम्मे तिविहेणपडिक्कंतो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिछत्तं एगमेवअन्नाणं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अणवज्जजोगमेगं सम्मत्तंएगमेवनाणंतु उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइंअट्टरुद्दाइं परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तंधम्मं दोन्नियझाणाइंधम्मसुक्काइं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २२ ॥ किण्हानीलाकाऊ तिन्नियलेसाऊअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिन्नियलेसाउसुप्पसत्थाउ उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविऊ वायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविउ रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसन्नातहाकसायाय परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहंसंवरंसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ २७ ॥ पंचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २८ ॥ पंचेंदियसंवरणं तहेवपंचविहमेवसज्झायं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पियभासाउअप्पसत्थाउ परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३० ॥ छविहमभ्भिंतरियं वज्जंपियछविहंतवोकम्मं उवसंपन्नोजुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयठाणाइं सत्तविहंचेवनाणविभ्भंगा परिवज्जंतोगुत्तो रक्कामिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंडेसणपाणेसण उग्गहंसत्तिक्कयामहज्झयणा उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३३ ॥

अठमयठाणाइं अट्ठकम्माइंतेसिंबंधिच परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच॥३४॥ अठयपवयणमाया दिठाअठविहनिठिअठेहिं उवसं पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणाइं संसार- त्थायनवविहाजीवा परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ नवबंभचेरगुत्तो दुनवविहंबंभचेरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि वज्जंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिठाणा दस चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥ आसायणंचसव्वं तिगुणं एक्कारसंविवज्जंतो परिवज्जंतोगुत्तो रक्खामि महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंतिदंडविरउ तिगरणसुद्धोतिसल्लनिसल्लो ति विहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥४१॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं थिरत्तं सल्लुद्धरणं धिइवलंववसाउ साहणठेपावनिवारणं निकायणा भावविसोही पडागाहरणं निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो प सत्थझाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमठो उत्तमठो एसखलुतित्थं करेहिं रइरागदोस महणेहिं देसिउ पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय संजमं उवइसिउं तिल्लुक्क सक्कयंठाणं अब्भुवगया नमोत्थुते सिद्धबुद्ध मुत्तनीरय निस्संग माणमूरण गुणरयण सायर मणंत मप्पमेय न मोत्थुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहउ नमोत्थुते भग वउ त्तिकट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्छामोसुत्तकित्तणं काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं छव्विहमावस्सयं भग वंतं तंजहा सामाइयं चउवीसत्थउ वंदणयं पडिक्कमणं काउसग्गो पच्च क्खाणं सव्वेहिं विएयंमि छव्विहे आवस्सए भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरहंतेहिं भ गवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं

फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपख्खस्स अंतोचउमासीए अंतो संवछरस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहिलाभाए संसारुत्ता रणाए त्तिकट्टुउवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नप ढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवी रिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमोपडिक्कमामो निंदामो गरि हामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अभुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तंपडिवझामो तस्समिछामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जे हिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं तंजहा दसवेयालियं कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुयं महाकप्पसुयं उववाइयं रायप्पसेणीयं जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नंदीअणुयोगदाराइं देविंद थुउ तंदुलवेयालियं चंदाविझयं पमायप्पमायं वीयरागसुयं विहार कप्पो चरणविसोही आउरपच्चख्खाणं महापच्चख्खाणं सव्वेहिंपिए यंमि अंगबाहिरिए उक्कालिए भगवंते ससुत्ते सअछे सगंथे सन्नि ज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं प न्नत्तावा परूवियावा तेभावे सद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावेसद्दहंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं अणुपालंतेणं अंतोपख्खस्स जंवाइयं पढियं परिअट्टियं पुछियं अणु पेहियं अणुपालियं तंदुख्खख्खयाए कम्मख्खयाए मोहखयाए बोहि लाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणंविहरामि अंतोप ख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपा लियं संतेवले संतेबोरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो प डिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमोविसोहेमो अकरणयाए अभुट्ठे मो आहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिवझामो तस्समिछामिदुक्कडं न मोतेसिं खमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं अंगबाहिरियं उक्कालियं भगवंतं

तंजहा उत्तरज्झयणाइं दसाउकप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं जंबुद्दीवपन्नत्ती सूरपन्नत्ती चंदपन्नत्ती दीवसागरपन्नत्ती खुड्डियाविमाणपविभत्ती महल्लियाविमाणपविभत्ती अंगचूलिया वंगचूलिया विवाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाणसुए समुट्ठाणसुए नागपरियावलियाउ निरयावलियाउ कप्पियाउ कप्पवडिंसयाउ पुप्फियाउ पुप्फचुलियाउ वह्नीदसाउ आसीविसभावणाउ दिट्ठीविसभावणाउ चारणसुमिणभावणाउ महासुमिणभावणाउ तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहिंपिएयंमि अंगबाहिरए उक्कालिए भगवंतेससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहिं भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो ते भावे सद्दहंतेहि पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतोपक्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुच्छियं अणुपेहियं अणुपालियं तंदुक्खक्खयाए कम्मक्खयाए मोहक्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपक्खस्स जंन वाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्छियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संते बले संतेवीरिए संतेपुरिसक्कारपरिक्कमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अब्भुट्ठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तंपडिवज्जामो तस्स मिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइयं दुवालसंगंगणिपिडगं भगवंतं तंजहा आयारो सूयगडो ठाणो समवाउ विवाहपन्नत्ती नायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइअदसाउ पण्हावागरणं विवागसुयं दिट्ठिवाउ सुदिट्ठिसुहाउ सव्वेहिं पिएयंमि दुवालसंगे गणिपिडगे भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गंथे सनिज्जुत्तीए ससंगहणीए जेगुणावा भावावा अरिहंतेहि भगवंतेहिं पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्द हंतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासंतेहिं पालंतेहिं अणुपालंतेहिं अंतो पख्खस्स जंवाइयं पढियं परियट्टियं पुछियं अणुपेहियं अणुपालियं तं दुख्खरकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अंतोपख्खस्स जंनवाइयं नपढियं नप रियट्टियं नपुछियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेबले संतेवीरिए संतेपुरिस क्कारपरिक्कमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामोविउट्टेमो विसोहेमो अकरणयाए अभ्भुठेमो अहारिहं तवोकम्मं पायछित्तं पडिव ज्जामो तस्समिच्छामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणंजेहिंइमंवाइयं दुवाल संगं गणिपिडगं भगवंतं सम्मंकाएण फासंति पालंति पूरंति तीरंति किट्टं ति सम्मंआणाए आराहंति अहंचनाराहेमि तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ सुय देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसंघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसिं सुयसागरेभत्ती १ इति पाक्षिकसूत्रं समाप्तं ॥

॥ अथ अष्टपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥

॥ रात्रिनी पाछली घडियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्मरण करी, गृहचिंता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पडिलेही राख्यां, जे पोसहनां उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें आपनाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी, भूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावहि पडिक्कमि पछें खमासमण देई, ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. इछं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें उन्नो थई, खमासमण देई इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह, पीछें इछं कही, खमासमण देई. इछाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पोसह ठाउं ? गुरु कहे

गाएह, पीछें इछं कही खमासमण देई ऊनो थई, आधो शरीर नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार नगवन् पसाउ करी, पोसह दंमक उच्चरावो ? गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीछें करेमि नंते पोसहं ॥ इहांसें ले के अप्पाणं वोसिरामि ॥ तक कहे. अब पोसहका पच्चख्खाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पच्चखाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि नं ते पोसहं, आहार पोसहं, देसउ सबउ वा, सरीरसक्कार पोसहं, सबउ बंनचेर पोसहं, सबउ अवावार पोसहं, सबउ चउविहे पोसहे, सावज्जं जोगं पच्चख्खामि, जावदिवसं अहोरत्तिं वा पज्जुवासामि, डविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स नं ते पमिक्कमामि निंदामि, गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुन्नाषण करतो उच्चरे ॥ पीछें एक खमासमणें ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ सामायिक मुहपत्ती पमिलेहुं? गुरु कहे, पमिलेहेह. बीजी खमासमण देई मुहपत्ती पमिलेहे. पीछें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्साउं? सामायिक ठाउं? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र ऊन्नो थको तीन नवकार, गुनी तीन करेमि नंते उच्चरी दोय खमासमणें बेसणो संदिस्साउं? बेसणो ठाउं? कही, पीछें दोय खमासमणें सिझाय संदिस्साउं? सिझाय करुं? कही खमासमण देई ऊनो थको, आठ नवकारनो सिझाय करे. शीतादि परिसहें दोय खमासमणें, पांगरणुं संदिस्साउं? पांगरणुं पमिग्गाउं? कहे. ए सर्व सामायिकविधि पूर्वे कह्यो छे. तिमहीज करवो, पण इतनो विशेष छे. पहिलां इरियावही पमिक्कमी छे, तेमाटें इहां सामायिक दंमक उच्चर्यां पीछें इरियावही नही पमिक्कमीजें ॥ पीछें चैत्यवंदन, जयवीयराय

सूधी करी कुसुमिण डुस्समिण काउस्सग्ग करे, पीछें पडिक्कमण-वेलासीम सिझाय ध्यान करे. पीछें पूर्वोक्त रीतें पडिक्कमण करे, पण इतरो विशेष के च्यारे थुइयें देव वांद्या पीछें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ बहुवेलं संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. पीछें इच्छं कही खमासमण देइ कहे. इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वहुवेलं करुं? गुरु कहे, करेह ॥ पीछें इच्छं कही, तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र २, त्रीजे सर्वसाधु वांदी, कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं इत्यादि नमस्कार जणे, जो पडिलेहणवेला नाहिं हुवे, तो सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदनादि करी, सिझाय करे. हवे पडिलेहण वेला पडिलेहण करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठमां लिख्यो छे तो पण संक्षेपें फेर लखीयें छैयें. दोय खमासमणें,इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्साउं ? अंग पडिलेहण करुं ? कहे. पीछें गुरुवचनें इच्छं कही. धोतियो कणदोरो पडिलेही वस्त्र पहेरी, खमासमण देई, इच्छकार जगवन्! पसाउ करी, पडिलेहण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे, अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पडिलेहे, तो पण खमासमण देई उक्त रीतें आग्या मागे. पीछें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उही पडिलेहण संदिस्साउं? गुरु कहे, संदिस्सावेह. उही पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह.

॥ अथ २४ थंडिलां पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मझे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मझे पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए थंमिलपमिलेहण पाठ कह्या ॥

॥ यह चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ थंमिला शय्याके दोनुं तरफ दहिणें पासे ३, वाम पासे ३, पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके भीतर पासें दहिणें ३, वामें ३ पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां दरवज्जेके बाहर दोनुं पासें पमिलेहे ॥ ६ थंमिलां जिहां उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पमिलेहे ॥ इति २४ थंमिलां पमिलेहणविधिः संपूर्णः ॥

पीछे इरियं करी, कंबल वस्त्रादि पमिलेही पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिशुं परठवी, एक खमासमण देई इरियावही
पडिक्कमे. इहां आचार दिनकरमें कह्यो छे. दोय खमासमणें इच्छा
का० ॥ सं० ॥ भ० ॥ वसती संदिस्साउं ? वसती पडिलेहुं
कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जें. इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें
न कह्यो ॥

॥ हवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सि
ज्झाय संदिस्साउं ? गुरु कहे, संदिस्सावेह. बीजे खमासमणें ॥ इ
च्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ सिज्झाय करुं ? गुरु कहे करेह. पीछें इच्छं
कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिज्झाय करी
नवकार एक कही धर्मध्यान करे, भणे, गुणे. वखाण सुणे. इम क
रतां पूर्ण पहुर दिन चढथां. उग्घाडा पोरिसी अथवा, बहुपडिपुन्न
पोरिसी कही, खमासमण देई. इरियावही पडिक्कमी दोय खमास
मणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० भ० ॥ पडिलेहण करुं ? गुरु वचनें इच्छं
कही, मुहपत्ती पडिलेही पान भोजन पात्र पडिलेही राखे. पीछें
सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे कालवेलायें आवस्सही पूर्वक देहरे जई पांचे शक्र
स्तवें देववांदण विधि दो प्रकारसें लिखते हैं ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, भूमि प्र
मार्जी, पुरुष हुवे तो प्रभुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो
वाम पासें बेसे. पीछें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ चैत्यवंदन करुं ?
इच्छं कही, चैत्यवंदन कहे. पीछें नमोत्थुणं कहे. खमासमण देई
इरियावही पडिक्कमे. एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करे. मुखें लोगस्स
कहे. संडासा प्रमार्जी बेसे. तीन तथा चार तथा पांच आदि देई
नमस्कार कहे. "जं किंचि नाम तित्थं" इत्यादि कही पीछें नमो
त्थुणं कहे. उभो थई अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्ती०

अन्नत्थू० कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीछें लोगस्स० सव्वलोए अरि० वंदणव० अन्नत्थू कही एक नव० पारी दूरी थुईकी गाथा कहे. पीछें पुक्खरवरदी० सुअस्स भग० वंदण० अन्नत्थू कही एक नवकार० पारी तीसरी थुईकी गा० पीछें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थू० इत्यादि कथन पूर्वक चोथी थुइकी गाथा कह कर, बैठके नमोत्थूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इसी तरें चार थुइयें देव वांदी बेसे ॥ नमोत्थूणं कहे. नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीछें स्तवन कहे, पीछें जयवीयराय कही. नमोत्थूणं सव्वे तिविहेण वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तवें देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोद्धार प्रमुख ग्रंथमें कह्यो छे. तथा चैत्यवंदन बृहद्भाष्यमें एम कह्यो छे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसें देव वांदे. फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेइयाइं " गाथा भणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोत्थूणं कही जयवीयराय कहे ॥ इति देववंदन विधिः ॥

॥ पीछें निस्सही पूर्वक पोसहशाला मांहे आवी, इरियावही पडिक्कमे. पीछें सिज्झाय ध्यान करे, जो तिविहार उपवास कियो हुवे, तो पच्चख्खाण वेला पूर्ण हुवां जल पीणेकूं पच्चक्खाण पारे ॥

॥ हवे पच्चख्खाण पारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे. फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ भ० ॥ पच्चख्खाण पारवा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह ॥ पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. फेर एक खमासमण देई, इच्छाका० ॥ सं० ॥

न० ॥ पाणहार अमुक पच्चरकखाण पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि का यव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० पाणहार पारुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही, अमुक पच्चरकखाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पच्चरकखाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं, जं च न आराहियं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिज्झाय करी यथासंभवें अतिथिसंविभाग करी पाणीपीये॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिसी प्रमुख पच्चरकखाण पारी आहार करे. पीछे आसण बेठो थकोहीज दिवस चरिम पच्चरकखे, पीछें इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करे. ए चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्तें छे ॥ इति पच्चरकखाण पारणेका विधि ॥

॥ पीछें जो बहिर्भूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी थको, निर्जीव थंडिल जई; अणुजाणह जस्सुग्गहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध थई तीन वार वोसिरामि, एहवुं कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालायें निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही प डिक्कमे. खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ गमणा गमणं आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह. पीछें इच्छं कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक देशें जई, संडा सा पूंजी, थंडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशालायें आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विरा हियं, तस्स मिच्छा मि डुक्कडं, एम कही वेसे. पीछें पडिलेहण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाछले पहुरे इरियावही पडिक्कमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ न० ॥ पडिलेहण करुं? गुरु कहे करेह.

इच्छं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ पोसहशाला प्रमार्जुं? गुरु कहे, प्रमार्जेह. पीछें इच्छं कही, मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावुं? अंग पडिलेहण करुं? कहे. पीछें गुरु वचनें इच्छं कही मुहपत्ती पडिलेही दंडासणो पूंजणी प्रमुखसें प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीछें काजो शुद्ध करी, उद्धरी एकांतें विखरतो परठवी इरियावही पडिक्कमी, खमासमण पूर्वक कहे ॥ इच्छकार जगवन् पसाउ करी पडिलेहणा पडिलेहावोजी ॥ पीछें स्थापनाचार्य पडिलेही स्थापे. गुरुसमीपें अथवा स्थापनाचार्य समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे. पीछे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० सिज्झाय संदिस्सावुं? सिज्झाय करुं? उक्त रीतें क्षणमात्र सिज्झाय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु सारवें पाणिहार पच्चक्खे ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे, तो वांदणां दोय देई, पच्चक्खाण करे. पीछें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उपधि थंडिला पडिलेहण संदिस्सावुं? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ उपधि थंडिला पडिलेहुं? गुरु वचनें इच्छं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज्ञ० ॥ बेसणो संदिस्सावुं बेसणो ठावुं? कही बेसे. वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. पुंजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पडिलेहे. उपवासी तो वे तेमाटें सर्व पाछो कडिपट्टो धोतीयो कणदोरो पडिलेहे, उपधानवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कडिपट्टादि पडिलेहवां. पीछें वस्त्र कंबलादि पडिलेहे. ए विशेष छे ॥ पीछें कालवेला सीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवण २४ थंडिला पडिलेहे, जो चउदशी हुवे, तो पाखी चउमासी पडिक्कमणो करे, संवत्सरीयें

संवच्छरी पडिक्कमणो करे. तिहां देवसी पडिक्कमणो पूर्वे लिख्यो छे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष छे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीछें " ठाणे कमणे चंकमणे " इत्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव काउस्सग्ग कियां पीछें बीय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० सिज्झाय संदिस्साउं ? सिज्झाय करुं? कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिज्झाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि आगें एही पुस्तकमें लिख गये हैं. वहासें जान लेना.

॥ हवे पडिक्कमणो हुवा पीछें साधुको वेयावच्च करी पोरसी सीम सिज्झाय ध्यान करे. जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसन्न कहेतो थको, भूमि प्रमार्जे थंडिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे. भगवन् ! बहु पडिपुन्ना पोरसी एम कही खमासमण देई इरियावही पडिक्कमे, पीछें राई संथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारा मुहपत्ती पडिलेहुं ? गुरु कहे, पडिलेहेह. पीछें इच्छं कही, खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ भ० ॥ राइ संथारो संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं० ॥ भ० राई संथारो ठावुं ? पीछें गुरु वचनें इच्छं कही, चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरण इत्यादि नमस्कारे कथन पूर्वक जयवीयराय सूधी चैत्यवंदन करे. भूमि प्रमार्जी, संथारो उत्तर पट्टो पाथरे. पीछें शरीर प्रमार्जी निस्सही निस्सही एम कही संथारे बेसी, तीन नवकार तीन करेमि भंते उच्चरी ॥ णमो खमासमणाणं, गोयमाईणं महामुणीणं, 'अणुजाणह जिट्ठिज्जा अणुजाणह [illegible]'

इत्यादि राइ संथारा गाथा नणी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जां सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवाडो फेरे तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेरे, जो देह शंकायें ऊठे, तो पूर्वोक्त विधें देहशंका निवारी, इरियावही पडिक्कमे ॥ पीछें जघन्यें पण तीन गाथानी सिझाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिनें पाछिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पडिक्कमे. खमासमण देई कुसुमिण दुस्सुमिण काउस्सग्ग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहां इरियावही न पडिक्कमे. पीछें दोयखमासमणें सिझाय संदिस्सावी आठ नवकार गुणी, पडिक्कमण वेला सीम सिझाय करे. पडिक्कमण वेला हुवां पडिक्कमणो पूर्वली परें करे, पण इतरो विशेष छे, के राइ आलोयां पीछें संथारा उवट्टणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पडिक्कमणो करी पडिलेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पडिलेहण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊद्धरी इरियावही पडिक्कमे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी, उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. पीछें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पडिलेहे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं? गुरु कहे, पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पार्युं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें ऊनो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पडिलेहे, पीछें खमासमण देई कहे ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायव्वो. पीछें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इछाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पार्युं ? गुरु कहे आ-

थारो न मोत्तव्वो. पीछें तहत्ति कही खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उन्नो थको हाथ जोड्यां- मुहपत्ती मुखें दियां थकां तीन न वकार गुणी संथारा पडिलेहे. गोडालोयें बेसी मस्तक नमावी, " जयवं दसन्नजद्दो " इत्यादि जावनारूप गाथा कहे. पीछें पोसहना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे. घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविजागव्रत साचवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीछें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधिः ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीछें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चिंत थई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पडिलेही, कचरो विधिशुं परठवी इरियावही पडिक्कमे. खमासमण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुहपत्ती पडिलेहे, आगें पोसह ग्रहणका विधि पूर्वें लिखा है. तिमहिज जाणवो. पण दिवस पोसहहीज करणो हुवे, तो पोसह दंडक उच्चरतां जावदिवसं पज्जुवासामि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि एहवो पाठ कहे. पीछें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवंदन कुसुमिणदुस्समिण काउस्सग्ग करी पडिक्कमणो करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, अने जो पूर्वें पडिक्कमणो गुरु साथें कर्यो हुवे, तो पडिक्कमणानें अंतें पडिलेही राख्यां जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे १, तथा जो गुरुसें जूदो पडिक्कमणो कर्यो हुवे, तो गुरुपासें आवी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आलोयण खामणादि निमित्तें मुहपत्ती पडिलेही बे वांदणां

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइयं आलोउं ? गुरु कहे, आलोएह, पीछें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ज० ॥ अप्रुछिउमि अप्भिंतर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे खामेह. पीछें सव पाठ कहे, राई खामे, पहिलां पडिक्कमणामें नवकारसी पच्चख्यो थो तेमाटे पीछें गुरु साखें पच्चक्खाण उपवासनो करे. पीछें दोय खमासमणें बहुवेलं संदिस्सावे ॥ ए तीन प्रकारका विकल्प जाणनां. हवे पडिलेहण तो पूर्वें करी छे, तो पण आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पडिलेहण संदिस्साउं ? बीजे खमासमणें पडिलेहण करुं ? कही मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें इमहीज दोय खमासमणें अंग पडिलेहण संदिस्सावी मुहपत्ती पडिलेहे. पीछें वली खमासमण देई इच्छकार जगवन् ! पसाउ करी पडिलेहण पडिलेहावो जी. एम कहे, पीछें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? कही कोई वस्त्र अणपडिलेह्यो राख्यो हुवे, तो पडिलेहे. नहीं तो वली आसण पडिलेहे. दोय खमासमणें सिझाय संदिस्सावी उपदेशमाला प्रमुख सिझाय करे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी, पण इहां अठ पुहरी पोसह तो पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. जिणें दिवस संबंधी चउ पुहरो पोसह लीधो हुवे, ते पाछले पुहर पच्चक्खाण किया, पीछें दोय खमासमणें उही पडिलेहण संदिस्साउं ? उही पडिलेहण करुं ? कहे, पण अंगिला पद न कहे. अने थंडिला नहीं पडिलेहे.यह निःकेवल दिन संबंधी पोसह ग्रहण करणेमें विशेष विधिही. सो बताई ॥ इति दिनसंबंधी पोसह ग्रहण विधिः ॥

॥ अथ रात्रि संबंधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊच्चरयो है. पछैं संध्यानी पडिलेहण करतां रात्रि पोसहनो न्नाव थयो, तो पच्चक्खाण कियां पछैं दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंडक उच्चरे. तिहां जाव रत्तिं पज्जुवासामि एम पाठ उच्चरे, पीछें सामायिक विधि पूर्वें लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊच्चरयां पछैं दोय खमासमणें सिज्झाय संदिस्सावी आठ नवकार कही बेसणो संदिस्सावी, पांगरणो संदिस्सावी, पछें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ न्न० ॥ उही थंडिलां पडिलेहण संदिस्साउं उही थंडिलां पडिलेहण करुं? गुरु कहे, करेह. इच्छं कही उपधि पडिलेहे. आगें सर्व क्रिया पूर्वें लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो न्नाव थये, पाछले पहुर धर्मस्थानकें आवे. जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो सरयो, नहीं तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपगरण पडिलेही इरियावही पडिक्कमे. पीछैं चउविहार पच्चक्खाण करी दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पडिलेही दोय खमासमण देई पोसह संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन वार पोसह दंडक ऊच्चरे. तिहां दिवसेसंरत्तिं पज्जुवासामि कहे. संध्या हुवे, तो रत्तिं पज्जुवासामि कहे. पीछैं बिहुं खमासमणें सामायिक मुहपत्ती पडिलेहे. दोय खमासमण देई, सामायिक संदिस्सावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि न्नंते ऊच्चरे. दोय खमासमण देई सिज्झाय संदिस्सावी, आठ नवकार कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो संदिस्सावी सीतादिकें बे खमासमण देई, पांगरणुं संदिस्सावे. पछैं बे खमासमण देई, अंग

पमिलेहण संदिस्सावी, मुहपत्ती पमिलेहे. फेर बे खमासमण देई, उंही थंमिलां पमिलेहण संदिस्सावी जो अणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पमिलेहे. जो सर्व उपगरण पमिलेह्यां हुवे, तो पण आनक शून्यता टालवा न्नणी वली आसण पडिलेही, पडिक्कमण वेला सीम सिज्झाय ध्यान करे. पीछें उच्चार प्रश्रवणना २४ थंडिला पडिलेही पडिक्कमणो करे. तथा पाछली रातें वली सामायिक न लेवे. इतनो निकेवल रात्रिसंबंधि पोसह लेवाना विकल्प जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेक्कमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेक्कमणे चंकमणे आउत्ते अणाउत्ते ॥ हरिअकायसंघट्टे बीयकायसंघट्टे थावरकायसंघट्टे छप्पइयासंघट्टे सव्वस्सवि देवसिअ, दुच्चिंतिय दुप्भासिय दुच्चिट्ठिअ ॥ इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ संथाराउवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी, छप्पइयासंघट्टणकी, अचक्खुविसयकायकी, सव्वस्स विराहिअ, दुच्चिंतिअ, दुप्भासिअ, दुच्चिट्ठिय, इच्छाकारेण संदिस्सह, इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देववांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम पांचकी स्तुति ॥

॥ महीमंमणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानंद लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमंधरं तित्थरायं ॥ १ ॥ पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सव्व न्नवाण ताया ॥ तहा संपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दिंतु ते मे तिलोयप्पहाणा ॥ २ ॥ दुरुत्तार संसार कुवार पोयं, कलंका नली पंकपक्खाल

तोयं ॥ मणोवंछियक्के सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वंदिमो सुमदप्पे ॥ ३ ॥ विकोसे जिणंदाणणंज्नोजलीणा, कलारूव लावस सोहग्ग पीणा ॥ वहं तस्स चित्तंमि णिचं पि ऊाणं, सिरी ज्नारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानक्रमं, पंचानुत्तरसीमदिव्य पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपंचमीवरतपो व्याहारि तत्कारिणां, श्रीपंचाननलांछनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम् ॥ १ ॥ ये पंचाश्रवरोधसाधनपराः पंचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपंच सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पंचऋषीकनिर्जयमथो प्राप्ता गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपंचमीव्रतज्नृतां तीर्थंकराः शंकराः ॥२॥ पंचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रितं, पंचज्ञानविचारसारकलितं पंचेषुपंचत्वदम् ॥ दीपाज्नं गुरुपंचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी, पंचम्यादिफलप्रकाशनपटुं ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां परमेष्ठिनां स्थिरतया श्रीपंचमेरुश्रियां, ज्नक्तानां ज्नविनां गृहेषु बहुशो या पंचदिव्यं व्यधात् ॥ प्रह्वो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न पश्चालिका, पंचम्यादितपोवतां ज्नवतु सा सिद्धायिका त्रायिका ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुतिः ॥

॥ चउवीसे जिनवर, प्रणमुं हुं नितमेव ॥ आठम दिन करियें, चंद्रप्रज्नुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीगं दुःख जाये, पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इंद्र, पूजे प्रज्नु जीना पाय ॥ इंद्राणी अपछर, कर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड ॥ अठाइ महोछव, करता होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें, जाणी लाज्न अपार ॥ चउमासें रहिया,

गणधर मुनि परिवार ॥ भवियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं, करिये व्रत पच्चरकाण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसूखसूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मल्लेर्जन्म व्रतमपमलं केवलमलं ॥ वलक्षैकादश्यां सहसि लसदुद्दाममहसि, क्षितौ कल्याणानां क्षपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेंद्रश्रेण्या गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥ जिनानामप्यायुः क्षणमतिसुखं नारकसदः, क्षितौ० ॥ २ ॥ जिना एवं यानि प्रणिजगदुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तॄणामिति च विदितं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुभवेयुर्बहुमुदः,क्षि० ॥३॥ सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखिलभवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तॄणां विदधति सुखं विस्मितहृदः,क्षितौ० ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ठेंठेंकि धपमप, धुधुमि धोंधों, धसकिधर, धपधोरवं ॥ धोंदोंकि दों दों, दाग्दिदि दाग्दिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणवं ॥ झझिंझंकि झुंझुं, झणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर शैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिगड्दां धुधुकि धुटनट, पाटवं ॥गुणगुणण गुणगण, रणकि णोंणों, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ झझि झेंकि झूझू, झणण रणरणण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश, महेजिनाः ॥ २ ॥ ठक्कि ठेंकि ठूंठूं, ठट्ठेंक ठ

ह्रिंक, गर्ह्रिपट्टा, ताड्यते ॥ तललोंकि लोंलों, त्रेंषि त्रेंषिनि, मेंषिमेंषि नि, वाद्यते ॥ ँदें ँदें कि ँदें ँदें, थुंगि थुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, कल रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुच्छवे ॥ ३॥ थुंदांकि थुंदां, थुथुद्दि थुंदां थुथुद्दि दोंदों, अंबरे ॥ चाचपट चचपट, रणकि णेंणें कणण केंकें, कंबरे ॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी जी, करुणासागर निजगुण आगर शुन्न समता रस धामी जी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रंगे जी, ते मानव श्रीपालतणी परें पामे सुख सुर संगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनुं ध्यान धरंतां लहियें, अविचल पद अविनाशी जी, ते सघला जिननायक नमियें, जिणें ए नीति प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिवसें जी ॥ तेर सहस वलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी ॥ इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥ विमल कमलदललोयण सुंदर, श्रीचक्केसरि देवी जी ॥ नवपद से वक न्नविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीखरतर गच्छ ना यक सदगुरु, श्रीजिनन्नक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इणपरि पन्नणे, श्रीजिनलान्न सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद० ॥

॥ अथ पज्जूसणकी स्तुति ॥

॥ वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पज्जु

सण, दाख्यां धरमनी शीर ॥ आषाढ चौमासें हूंती दिन पंचास, पडिकमण संवच्छरी करियें त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करियें नलें नावें नरियें पुण्य नंमार ॥ वलि चैत्य प्रवाडें फिरतां लान अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्प सूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परनावना धूप अगर उस्केव, इम नवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा हम्मीवछल करियें वारंवार, केइ नावना नावे केइ तपसी शी· लधार ॥ अमदीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध करे जिनलान सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूषणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणमल्लअक्षोनितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लंबन शोनितं ॥ शिवादेवि नंदन त्रिजग वंदन नविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेतशिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू, चउवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ छेद ग्रंथ प्रसन्न अन्ना चार मूल वखाणियें ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन मत गाइयें, एह वृत्ति चूर्णी नाष्य पेंतालीश आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ उर्द्धु दिसें बालक दोय जेहने सदा नवियण सुखकरू, उप वरें अंबा लुंब सुंदर उरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंमण नेमि जिनवर चरणपंकज सेवियें, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो अंबा देवियें ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंमण श्रीनेमि० ॥

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापायां पुरि चारुषष्ठतपसा पर्यंकपर्यासनः, क्ष्मापालप्रभुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्त्तिकदर्शनागकरणे तूर्यारकांते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहितं संस्तौमि वीरप्रभुम् ॥ १ ॥ यज्ञागमनोभव व्रतवरज्ञानाकरास्तिकणे, संभूयाशु सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् क्षणात् ॥ श्रीमन्नाभिभवादिवीरचरमास्ते श्रीजिनाधीश्वराः, संघायानघचेतसे विदधतां श्रेयांस्यनेनांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद जिनपः श्रीवर्द्धमानाभिध, स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचयांचक्रुस्तरां सूत्रतः ॥ श्रीमत्तीर्थसमर्थनैकसमये सम्यग्दृशां भूस्पृशां, भूयाद्भावुककारकप्रवचनं चेतश्चमत्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थभावनपरा सिद्धायिका देवता, पंचचक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिनचंद्रगीस्सुमतिनो भव्यात्मनः प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टहस्तिनिधने शार्दूलविक्रीडितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसंग्रह लिख्यते ॥

॥ अथ वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविषे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरणकमल तसु नामूं सीस । अहनिस समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पंच मेरुपासे झलकंता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर वे जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥२॥ गणहर कहिय दुवालस अंग । थानक वीस भण्या तिहां चंग ॥ तिण ऊपर जे आणे रंग । ते नर पामे सुक्ख अभंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी चउवीस । पूरे मुझ मनतणी जगीस ॥ संघतणा जे विघन निवारे । तिहुअण जन मन वंछिय सारे ॥ ४ ॥

॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापणं । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ नगरजेसलमेरविभूषणं । भजति पार्श्वजिनं गतदूषणं ॥ १ ॥ सुरनरेश्वरनम्रपदांवुजाः । स्मरमहीरुहभंगमतंगजाः ॥ सकलतीर्थंकराः सुखकारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जिनशासनं । विपुलमंगलकेलिविलासनं ॥ प्रवलपुन्यरमोदयधारिका । फलति तस्य मनोरथमालिका ॥३॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी । जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तिपहारमुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकयरूपयदेवगणं । सिरिश्रथुव वंदू आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसियपायजुआ घणमोहमहीरुहमत्तगया ॥ परिपालिअनिच्चलजीवदया । मम हुंति जिनागमसुक्खसया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । कल्लाणपयोरुहवुड्ढिकरं ॥ सुहमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जिनागममन्द्दिकरं ॥ ३॥ सिरइंदसमुज्जलगायलया । सुहझाणनिणम्मियएगलया ॥ असुरिंदसुरेंदसुरप्पणया । मम वाणि सुहाणि कुणेसुसया ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेसर, परमातमपद धारीजी । प्रथम जिनेसर प्रथम नरेसर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीसर जिनराज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपीजी । ऋषभजिनेसर लोकदिनेसर, आतमसंपद भूपीजी ॥ १ ॥ पांच भरत वलि पांचे एरवत, पंच विदेह मझारोजी। काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिवपद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, थास्ये इणही प्रका

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंदु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीजिनराज वखाण्या, गूंथ्यां श्रीगणधारोजी । अंग दुवालस अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय भंग प्रमाणे, जिहां षट्द्रव्य विचारोजी । ते आगम मन शुद्ध आराध्यां, तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुंदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्केसरिदेवीजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी ध्यो, वंछित नित सेवीजी ॥ कल्याण कारण जेहनी सेवा, संघ सकल सुख कंदाजी । श्रीजिनचंद मुणिंद पसाये, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्रणमे देव अने देविंद ॥ भवलहरी गहरी सब मन धरी अमंद । श्रीसूरतसहिरे वंदो अजितजिनंद ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अतिशय बलि चोतीस । दिलरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणित ऋद्धिधारी आचारीमां ईस । एह गुणना धारक वंदु जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुद्ध अरथ अनोपम जिन भाषित सिद्धांत । स्याद्वादनयादिक हेतुयुक्ति नवि भ्रांत ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सहनाणी । सुणिये नित भविका आगमकेरी वाणी ॥३॥ सासणनी साची देवी सानिधकारी । दुःखकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे ते सुख लाभ अपारी । जिनलाभ पयंपे होज्यो जयश्कारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोझारी ॥

॥ यदंह्रिनमताद्देव । देहिनःसंति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाभेयजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्वचनपालनपरा । जलांजलिंददतु दुःखेभ्यः ॥ २ ॥ वदंति वृंदारुगणाग्रतो जिनाः । सदर्थतो यद्रचयंति

सूम्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्थसमर्थनक्षणे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥ ३॥ शक्रः सुरासुरवरैस्सहदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । भव्यान् जनान्नयतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति अणोकारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीरं देवं नित्यं वंदे १ जैनाः पादा युष्मान् पांतु २ जैनं वाक्यं भूयाद्भूत्यै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुतिः ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मांन, दिन२ सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविंद, कामित भरपूरण अभिनव सुरतरुकंद ॥ भवियणने तारे प्रवहणसम निसदीस, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम भाख्या श्रीभगवंत, गणधर ते गुंथ्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कह न सके एकांत, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघन विशेष, सहू संकट चूरे पूरे आस अशेष ॥ अहनिसि कर जोडी सेवे सुरनर इंद, जंपे गुणगण इम श्रीजिनलाभ सूरिंद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नाभेयं संभवं तं, अजियमभिनंदणं, नंदणं सुप्पयवा ॥ सुप्पासं पउमनाहं, सुविधशशिपहं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयांसं भ भंशानिं, विमलमरिजिनं, मल्लिकुंथुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं, नमिमथिनमिसौ, पंच कल्याण गुणु ॥ १ ॥ गब्भ हाणेसु जम्मे,

वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पन्नाणिवाणठाणे, पगवण समए, संथुआ जावसारं ॥ देवेहिं दाणवेहिं, नवणवणसए, विंतरे किंन्न रेहिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कल्लाण एसु ॥२॥ देक्क तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सवन्नूणं च पासा, अहमविनियमा, जायए सवकालं ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममहणं, बीयअंकूररूवं । अवावाहं जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कल्लाण एसु ॥३॥ गोरीगंधारकाली, नरवरमहिषी, हंससंगोरिहढा । सवन्नामाणमं वा, वरकमलकरा, रोहिणीठत्तअंबा ॥ पन्नत्ती उत्तपउमा, धणइसर णई, खित्तगेहाइवासा । संतिं संघे कुणंतु, गहगणसईया, पंच कल्लाण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकल्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय स्तुतिः ॥

॥ श्रीसेत्रुंजमंरूण आदिदेव । हूं अहनिस समरूं तास सेव ॥ रायणतल पगलां प्रनूतणा । पूजि सफल फूल सोहामणा ॥१॥ तेवीस तीर्थंकर समवसरया । विमलाचल ऊपर गुण जरया ॥ गिरि करूणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोहम सांमी उपदिस्या । जंवुगणधरने मन वस्या ॥ पुंरूरगिरि महिमा जे मांह । ते आगम समरूं मनउछाह ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुख करूयक्क । मन वंछित पूरण कल्पवृक्क ॥ सिद्धक्षेत्रसिहरे सहदेवता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥४॥ इतिश्रीसत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवल ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कल्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु जवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अष्टावय चंपा पावापुर गुन्न ठाण । आइम बारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजितादिक वीसे पुहता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

उद्दास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूंती सुणि त्रिपदी ततकाल । गणधारक गूंथ्या द्वादश अंग विशाल ॥ नयभंग पदारथ सत्त९ नव तत्त । भवियणने तारे सायर जिम बोहित्थ ॥ ३ ॥ चक्केसरि अंबा पउमादेवि प्रत्यक्ष । श्रीसंघ मनोरथ पूरे बासुरवृक्ष ॥ ध्यावे सुख पावे श्रीजिनलाभ सरीस । जिनवर सुप्रसादे आस फले सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीशितलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतरुकंद । दृढरथ नृप राणी नंदाकेरो नंद ॥ भद्दिलपुर स्वामी फेरू भवना फंद । चित चोखे नमिये श्रीशीतलजिनचंद ॥ १ ॥ अतीत अनागत हुआ होस्ये अनंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहुं भवणे ठवणा सासय असासय हुंत । ते सगला त्रिकरण प्रणमुं श्रीअरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयभंग निक्षेपा स्याद्वाद मितसिठ ॥ भविजन उपगारी भारी जिन उपदेश । श्रुत श्रवणे सुणतां नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजक्ष असोका सासन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिनलाभसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मिल चोविह सुरवर विरचे त्रिगडो सार । अढी गाउ ऊंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुखकार । श्रीतीरथनायक बैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन छत्र सिरोवर चामर ढोले इंद । देवदुंदुभि वाजे भाजे कुमति फंद ॥ भामंडल पूंठे झलके जांण दिनंद । तिहुअण जन भवि मन मोहे सयल जिनंद ॥ २ ॥ द्रव्य भाव सुठवणा नाम निक्षेपा च्यार ।

जिण गणहर भाख्या सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा जिन सरखी सुखकार । शुभ भावे वंदो पूजो जग जयकार ॥३॥ दुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । भवछेद कृपाणी मीठी अमिय समाणी ॥ मन शुद्धे आणी प्रतिबूझो भवि प्राणी । सुष देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुंजगिरि नमिये ऋषभदेव पुंडरीक । शुभ तपनी महिमा सुण गुरुमुख निरभीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य वंदनीक । करिये जिन आगल टाली वचन अलीक ॥ १ ॥ शक्र स्तवनादिक प्रथम तिलक दस वीस । अक्षत गिणतीसे चढता तिम चालीस ॥ पंचासनी पूजा भाषइ इम जगदीस । तेहिज नित प्रणमूं स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पक्षनी पूनम चेत्र मास शुभ वार । विधिसेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले वरसलग धरिये ज्ञान उदार । करतां नर नारी पामे भवनो पार ॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविंद । चक्केसरीदेवी सेविय नर सुरवृंद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणंद । जंपे गणनायक श्रीजिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुतिः ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरुं सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद महिमा भाषी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव दीस । नव आंबिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरिहंत वलि सिद्ध आचारज उवझाय । मुनि दरसण तिम वलि नाण चरण तव थाय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हजार । सहु जिननी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अडत्तीस पण वीस सग वीस सार । सडसठ इक्कावन सितर पच्चास प्रकार ॥ इण

संख्या काउसग परदक्षा परिणाम । आगम भाषित विधि इम कीजे अभिराम ॥ ३ ॥ चक्केसरिदेवी तिम विमलेसर जक्ख । श्री पालतणीपर पूरे वंछित सुक्ख ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र भवि प्राणी । जिनहर्ष वदे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुतिः ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अभिनव कामी जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदघन धामीजी ॥ थानक वीसे आगम भणिया वीतराग गुण भुक्ताजी । जे नर अंतर आतम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन सूरी थिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत तिछ भूपोजी । ए पद निज भवि भावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सया उपवासोजी । द्रव्यभावसें विधि परकासे तीर्थंकर पद खासोजी ॥ तीजे भव वर वीस थांनकनी सेव करे भव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे निज आतम आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल दे मोटो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाधारी पाटोधर वरदाईजी ॥ जिन सौभाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण गावेजी । संघ सकलकुं सानिधकारी मन वंछित फल पावेजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज थिवराण । उवझाय साहू नाण दंसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम जिनभाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे ठाण ॥ १ ॥ उत्कृष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । वलि काल जघन्ये जिनवर

वीस गंभीर ॥ जिन थाय अनंत अतीत अनागत काल । ए वीसे थानक आराधी गुणमाल ॥ २ ॥ आवश्यक बे वेला जिनवंदन त्रिण काल । थानकपद गिणवो सहस दोय सुकमाल ॥ काउसग गुण स्तवना पूजा प्रभावना सार । इम शासन वच्छल करतां भ वनो पार ॥ ३ ॥ समरीजे अहनिशि गुणरागी सुर साथ । जक्ख जक्खणी सुरपती वेयावच कर नाथ ॥ थानकतप विधसुं जे सेवे मन रंग । देवचंद आणाये सानिध करे तसु चंग ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तुति ॥

॥ अनुपम गुण आगर सुक्ख सागर वंदित सुरनर वृंदाजी ॥ नवपदमांहि मुख्य वखाण्या ऋषभादिक जिनचंदाजी ॥ भाव धरी ने जे भवि वंदे छेदे कर्म निकंदाजी । नृप श्रीपालतणीपर ध्यावो पावो सुक्ख अमंदाजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया सकल मुनि सुखकारीजी । दंसण नाण चरण तप नवपद धारे चित सं भारीजी ॥ नवमें भव भवि सिवपद पावे प्रवचन वाणी साखीजी । वीरजिनंदे ज्ञानानंदे गौतम आगे भाखीजी ॥ २॥ द्वादस आठ छत्तीसे गुण वलि पणवीस सगवीस सारोजी । सड़सठ इक्कावन वलि जैती सितर पच्चास प्रकारोजी ॥ आसू चैत्रक मास धवल पख सातम थी नव दिहसेंजी । तेरसहस नव पदनों गुणनो नव आंबिल नव विहसेंजी ॥ ३ ॥ विमलयक्ष चक्केसरीदेवी रिध सिध वंछित दाता जी । ओली नव विधि युक्ते सेवे ते पामे सुखशाताजी । खरतर गच्छ जिन आज्ञाकारी पाटोधरपद भुक्ताजी । जिन सौभाग्यसूरिंद पसाये हंससूरिंद गुण भक्ताजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीनवपदस्तुति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ विमलाचल मंडन जिनवर आदिजिणंद । निरमम निरमोही केवलज्ञान दिणंद ॥ जे पूर्व निवाणूं वार धरी आनंद । सेत्रुंजगि-

रिसिखरे समवसरथा सुखकंद ॥ १ ॥ इण चउवीसीमां ऋषजादिक जिनराय । वलि काल अतीते अनंत चोवीसी थाय ॥ ते सवि इण गिरवर आवी फरसी जाय । इम जावी काले आवस्ये सवि मुनि-राय ॥ २ ॥ श्रीऋषजना गणधर पूंमरीक गुणवंत । द्वादस अंग रचना कीधी जेण महंत ॥ सब आगममांहे सेत्रुंज महिम महंत । जाखी जिन गणधर सेवो करि थिर चित्त ॥ ३ ॥ चक्केसरि गोमुह कवम पमुह सुर सार । जसु सेवा कारण थापे इंद उदार ॥ देवचंद-गणि जाखे जविजनने आधार । सब तीरथमांहे सिद्धाचल सिरदार ॥ ४ ॥ इतिसेत्रुंजयस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशांतिनाथ स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर जग अलवेसर आचरा उदर अवतरियाजी । विश्वसेन नृप नंदन जगगुरु हथणापुर सुख करियाजी ॥ ईत उपद्रव मारि विकारी शांति करी संचरियाजी । जे जवि मंगल कारण ध्यावे ते हुथ गुणगण दरियाजी ॥ १ ॥ वर्त्तमान जिन सब सुखकारण अतीत अनागत वंदोजी । बारे चक्री नव नारायण नव प्रतिचक्री आनंदोजी ॥ रामादिक जे पुरष सलाका वंदत पाप निकंदोजी । द्रव्य निक्षेपे जिनसम जाणो काटे जवजय फंदोजी ॥ २ ॥ अंग उपांगे जिनवर प्रतिमा श्रीजिन सरखी जाखीजी । द्रव्य जाव बिहुं जेदे पूजा महानिसीथे साखीजी ॥ विषय निवृत्ती सत् आरंजे विनय तपी ते जाणोजी । शुजयोगे नहि आरंजकारी जग वइ अंग प्रमाणोजी ॥ ३ ॥ थापना सत्ये देवी निर्वाणी श्रीसंघने सुखकारीजी । कारणथी सब कारज सीके जिनवर आज्ञा धारीजी ॥ श्रीजिनकीर्त्ति सूरीश्वर गछपति पाठक श्रीऋद्धिसारीजी । समकितधारी देव सहाई सुखसंपत्त दातारीजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीशांति-नाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन दूज स्तुति ॥

॥ मन सुद्ध वंदो न्नावे न्नवियण श्रीसीमंधर रायाजी । पांचसें धनुष प्रमाण विराजित कंचनवरणी कायाजी ॥ श्रेयांस नरपति सत्यकि नंदन वृषन्नलंछन सुखदायाजी । विजय न्नली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतीत जे जिनवर हूआ होस्ये वलिय अनंताजी । संप्रति काले पंच विदेहे वरते वीस विख्याताजी ॥ अतिशयवंत अनंत जिनेसर जगबंधव जगत्राताजी । ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिवसुख साताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी । मोह मिथ्यात तिमिरन्नर नासन अन्निनव सूर समाणीजी ॥ न्नवोदधि तरणी मोक्ष निसरणी नय निक्षेप पहाणीजी । ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो न्नविप्राणीजी ॥ ३ ॥ शासणदेवी सुरनर सेवी श्रीपंचागुली माईजी । विघन विफारण संपत्तिकारण सेवकजन सुखदाईजी ॥ त्रिन्नुवनमोहनी अंतरजामनी जग जस ज्योति सवाईजी । सांनिधकारी संघने होयज्यो श्रीजिनहर्ष सहाईजी ॥ ४ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनदूजस्तुति ॥

॥ अथ श्रीज्ञानपंचमी स्तुति ॥

॥ पंच अनंत महंत गुणाकर पंचम गति दातार । उत्तम पंचम तपविधि वायक ज्ञायक न्नाव अपार ॥ श्रीपंचानन लांछन लांछित वंछित दान सुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिनंदसु वंदो ध्यावो न्नविजन पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक न्नव्य उदार । पंच अनुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दम सिव पहुता ते सगला जिनराय । पांचम तप धर न्नवियण ऊपर सुप्रिर करी सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर जुगवर पंचम गणधर जाण । पंच ज्ञान विचार विराजित न्नाजत मद पंच बाण

॥ पंचम काल तिमरभरमांहे दीपकसम सिद्धंत । पांचम तपफल मूल प्रकासक ध्यावो जिनसिद्धंत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवाकारक जे नरनार । निरमल पांचम तपना धारक तेह भणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिकादेवी अहनिशि आपो सुख अमंद । श्री जिनलाभ सुरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इतिज्ञानपंचमीस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमौन एकादशी स्तुति ॥

॥ अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा नमिजिन ज्ञान । श्रीमल्लि जनम व्रत केवलज्ञान प्रधान ॥ इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुण धार । इग्यारे वारे प्रतिमा देसव्रत धार ॥ इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सूधे सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जिहां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । बलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास ॥ जिन आगमवाणी जाणी जगत प्रधान । इक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवण वण सम्यग् दरसणवंत । जिनचंद सुसेवक वेयावच्च करंत ॥ श्रीसंघ सकलमें आराधक बहु जाण । जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इतिश्रीमौनएकादसीस्तुति ॥

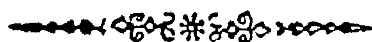
॥ अथ रोहणी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर वासुपूज्य अरिहंत । रोहिण तपनो फल भाख्यो श्रीभगवंत ॥ नरनारी भावे आराधो तप एह । सुख संपत लीला लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर रोहणी तप सुविचार । जिनमुख परकासे बेठी परखदा बार ॥ रोहिण दिन कीजे रोहिणनो उपवास । मन वंछित लीला सुंदर भोगविलास ॥ २ ॥ आगममें एहनो बोल्यो लाभ अनंत । विधसुं परमारथ साधे सुधो संत । दुखदो

इग तेहनो नासि जाय सब दूर। बलि दिन२ अंगे वाधे अधिको नूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो रोहिण तप फल जाण। सौभाग्य सदा जे पामे चतुर सुजाण ॥ नित घर२ महोछव नित नवला सिणगार। जिनशासनदेवी लब्धिरुची जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पखी चौदश स्तुति ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गछ चोरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह ॥ तेहने पाखी चोदस कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम२ संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिनपूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चोदस जोवो चतुर सुजाण ॥ इण पर गाम२ तुम देखो चउदस पखी होय, भूला कांइ भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चवदसरे दिन पाखी कीजे सूत्रांकेरी साख, भविक जीव इम मन आराधो टीका चूरणी भाख ॥ आवस्यक सूत्र इण पर बोले चउदसरे दिन पाखी, चउद पुरवधर इणपर बोले ते निश्चल मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वंछित फल होय, जे जे आज्ञा सूधी पाले ज्यांनो विघन हरेय ॥ सेवक इणपर करे वीनती सूधो समकित पाय, खरतरगछ मंडण कुमति विहंडण माणिक्य सूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति पखी चोदस थुइ संपूर्ण ॥



॥ अथ सप्त स्मरणानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथमं ॥

॥ श्री बृहदजितशांतिस्मरणं लिख्यते ॥

॥ अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ॥ जय गुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विउल तवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प ज्ञावे, थोसा मि सुदिठ सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुरकप्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३॥ सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुरकयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धिगयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारणयं च नमं सणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुरकवारणं, जइअ विम्मग्गह सुरककारणं ॥ अजिअं संतिं च ज्ञावउ, अज्ञयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जरमरणं, सुर असुर गरुल ज्ञुयगवई, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ, सुनय नय निउणमज्ञयकरं, सरणमुवसरिअ ज्ञुवि दिविज, महिअं सयय मुवणमे ॥७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिअरं पणमामि दमुत्तम तिज्ञयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थि मत्थय पसत्त वित्थिन्न संथिअं थिर सरित्थ वत्थं मयगल लीलायमाण वर गंध हत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं हत्थिहत्थ वाहुं धंतकणग रुअग निरुवहय पिंजरं पवर लरकणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहमणाज्ञिराम परम रमणिज्ज वरदेव दुंदुहि निनाय महुरयर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढउ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वज्ञयं ज्ञवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयउ, पावं पसमेउ मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउं ॥ कुरु जणवय हत्थिणाउर नरीसरो पढमं तउ महाचक्कवट्टिज्ञोए महप्पज्ञावो जो वाहत्तरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम

जणवय वई बत्तीसारायवर सहस्साणु आयमग्गो चनदस वररयण नव महानिहि चनसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी छसवइगाम कोमि सामी आसिजो नारहंमि नयवं ॥ ११ ॥ वेढ्न ॥ तं संतिं संतियरं, संतिन्नं सव नया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेन मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इरकागु विदेह नरीसर, नरव सहा मुणिवसहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहुअग्या ॥ अजिनत्तम तेअ गुणेहिं महामुणि, अमिय बलाविजल कुला ॥ पणमामि ते नवनय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणविंद चंद सूरवंद हठ तुठ जिठ परम, लठ रूव धंत रुप्प पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंतपंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ नाविअ प्पन्नावणे अ पइसमे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायन ॥ विमल ससिकलाइरेअसोम्मं, वितिमिरसूर कलाइरेअ तेअं ॥ तियसवइगणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अबले अजिअं ॥ तव संजमअ अजिअं, एस अहं थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नूअगपरिरिंगिअं ॥ सोम्मगुणेहिं पावइ न तं नवसरय ससी, तेअ गुणेहिं पावइ न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअस गणवइ, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तिन्नवर पवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअ कलिकलुसं ॥ संतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयन, संतिमहं महा मुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणनणय सिरिरइ अंजलि, रिसिगण संथुअं थिमिअं ॥ विवुहाहिव धणवइ नरवइ, थुअ महिअच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पन्नं तवसा ॥

गयणंगण विचरण समुइअ, चारण वंदिअं सिरसा ॥ १ए॥ किसलय माला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देव कोमि सयसंथुयं, समणसंघ परिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अजयं अणहं अरयं अरुयं ॥ अजिअं अजिअं पयउ पणमे ॥२१॥ विजुविलसिअं ॥ आग यावर विमाण, दिव्वकणग रह तुरय पहकर सएहिं हुलिअं ॥ स संजमो अरण खुनिअ लुलिअ चल कुंमलंगय तिरीम सोहंत मउ लिमाला ॥ २२ ॥ वेढउ ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा, वेर विउत्ता जत्ति सुजुत्ता, आयर जूसिअ संजमपिंमिअ, सुठु सुविह्मिअ सव्वब लोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ जासुर जूसण जासुरिअंगा, गाय समोणय जत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया हिणं ॥ पणमिऊणय जिणं सुरासुरा, पमुइआ सजवणाइतो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजलि, राग दोस जय मोह वज्जिअं ॥ देवदाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंस वहुगामि णिआहिं ॥ पीण सोणिथण सालणिआहिं, सकल कमल दललो अणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीण निरंतर थणजरविणमिय गायल याहिं, मणिकंचण पसिढिलमेहल सोहिअ सोणितमाहिं ॥ वरखिं खिणि नेउर सतिलय वलय विजूसणियाहिं, रइकर चउर मणो हर सुंदर दंसणियाहिं ॥ २७ ॥ चित्तरकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिआय जस्स ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहिं मंमणोमुगप्पगारएहिं केहिं केहिं वीअवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं जत्ति सन्निविठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदि आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं ॥ धुअसव्वकिलेसं पयउ पणमामि ॥ २ए ॥ नंदिअयं ॥

लंता णंतणाणं सुपूरो, पयम्म मजिअसंती झाण सूरो न जाव ॥ए॥ अरि करि हरि तिएहु एहंबु चोरा हिवाही, समर म्मर मारी रुद्द खुद्दो वसग्गा ॥ पलय मजिअसंती कित्तणे झत्तिजंती, निविम्मतरत मोहा न्नक्करालुंखिअ व ॥ १० ॥ निचिअदुरिअदारु दित्तझाणग्गि जाला, परिगय मिव गोरं, चिंतिअं झाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा कंतिचोरं करिज्जा, चिरथिर मिह लच्छिं गाढसंथंन्निअव ॥ ११ ॥ अम्मविनिवम्मिआणं पह्निवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण गुत्ति ठियाणं ॥ जलिअ जलण जाला लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संतिनाहा जिआणं ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिसं पक्क पाइकपुसं, सयलपुहवि रज्जं ठम्भिअं आण सज्जं ॥ तण मिव पम्भि लग्गं जेजिणामुत्तिमग्गं, चरण मणुपवसा हुंतु ते मे पसरा ॥१३॥ ठणससिवयणाहिं फुल्लनित्तुप्पलाहिं, थणन्नरनमिरीहिं मुहिगिज्जोद रीहिं ॥ ललिअ न्नुअलयाहिं पीण सोणिठणीहिं, सयसुर रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४॥ अरिस किम्भि न्नकुठ गंठि कासाइसार, खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणच्छी कुच्छिक साइरोगे, मह जिणजुअ पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इय गुरु छुहतासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर दुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं ॥ पढइ सुणइ सिद्धा एह झाएइ चित्ते, कुणइ मुणइ विग्घं जेण धा एह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त सिरिअजिअ जिणे सर, तह अइराविससेण तणइ पंचम चक्कोसर ॥ तित्थंकर सोल सम संति जिणवल्लह संथुअ, कुरु मंगल मम हर दुरिअमखिलं पि थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशांतिस्तवनं द्वितीयं० ॥

॥ अथ नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूमामणि किरणरंजिअं मुणि णो ॥ चलणजुअलं महान्नय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सम्भिय

कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लावन्ना ॥ कुठ महारोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सवंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलिसेय वुड्ढिय छाया ॥ वण दवदड्ढा गिरिपा यव व पत्ता पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ डुवाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसंठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पास जिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे ॥ डज्झंत मुद्धमिय वहु, भीसरणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअ सयल तिहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजल य, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंत कीड सरिसं, दूर परिछुड्ढ विसम विस वेगा ॥ तुह नामक्खर फुडसि द्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥ अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्नकायर, उल्लुरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविह वसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह कुलिसघायविअलिअ, गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंभम पत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयण पहरण धरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंतमुसलं, दीह करुल्लाल वड्ढि उच्छाहं ॥ महुपिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजल हरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मितिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कवंधे ॥ कुंतविणिभि

न्न करि कल, इ मुक्क सिकार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर रिउ, नरिंद निवहा जणा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण न्नयाइं ॥ पास जिणनाम संकि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा न्नयहरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ न्नविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपरनिहाणं ॥ १९ ॥ राय न्नय जक्ख रक्खस, कुसुमिण डुस्सजण रिक्ख पीमासु ॥ संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासो पावं पसमेउ, सयल न्नुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृतीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ तं जयउ जय तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तिअंन्न, व सत्त संताणसुह जणयं ॥ १ ॥ नासिअ सयलकिलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तित्थ, स्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म बीआ, बीआपरंमिट्ठिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु डुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयार मायरंता, पंचपयारं सया पयासंता ॥ आयरिआ तह तित्थं, निहय कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वायगा वा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पडिणीय कए, वणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ सव्व साहज्जा ॥ तित्थप्पन्नावगा ते, हवंतु परमिट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं नाणं, निव्वाणफलं च चरणमवि हवइ ॥ तित्थस्स दंसणं तं, मंगलमुवणेउ सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग न्नवंगि वग्ग कय सम्मो ॥ गुणसुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममि

ह दिसउ ॥ ७ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविअ ज्ञवसत्त सिवस म्मो ॥ नीसेस किलेसहरो, हवउ सया सयल संघस्स ॥ ए ॥ गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिब्रस्स ॥ सिरिवद्धमाण पहुपय, म्मिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जियपम्भिवरकाजरका, गोमुह मायंग गयमुह पमुरका ॥ सिरि बंज्ञ संति सहिआ, कय मयररका सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पम्भिहयम्भिंबा, सिद्धा सिच्झाइआ पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुरकाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उदिंतु संघस्स मंगलं विउलं ॥ अच्छुत्ता सहिआउ, विस्सुअ सुयदेवयाउ समं ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रस्का, जरका चउवीस सासण सुरावि ॥ सुहज्ञावा संतावं, तिब्रस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाउ सव हासवे ॥ वेयावच्च गरा विअ, तिब्रस्स हवंतु संतिकरा ॥ १६ ॥ जिणसमय सुद्धसमग्ग, विहिअ ज्ञवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीयरई गीयजसो, सपरिवारो सुहं दिसउ ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पव्वय वासि देव देवीउ ॥ जिण सासण ठिआणं, उहाणि सवाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासरिक, त्तवालया नवग्गहा सनरकत्ता ॥ जोइणि राहुग्गहका, लपास कुलिअह पहेरेहिं ॥ १८ ॥ सहका ल कंटएहिं, सविठिवच्छेहिं कालवेलाहिं ॥ सवे सवत्र सुहं, दिसंतु सवस्स संघस्स ॥ १ए ॥ ज्ञवणवइ वाणमंतर, जोइस वमोणिआ य जे देवा ॥ धरणिंद सक्क सहिआ, दलंतु उरिआइं तिब्रस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरउपणासिअ तमोहं ॥ तंतिब्रस्स ज्ञ गवत्तु, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्स ऊविसासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपहसासणं कुप, ह नासणं सव ज्ञय महणं ॥ २२ ॥ सिरि उसज्ञसेण पमुहा, हयज्ञय नि

वहा दिसंतु तिस्थस्स ॥ सव्व जिणाणं गणिहा, रिणो णहं वंदिअं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि वद्धमाण तित्था, हिवेण तित्थं समप्पिअं जस्स ॥ सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥ २४ ॥ पय इएत्तहिआ जे, त्तहाण दिसंतु सयल संघस्स ॥ इयरसुरा विहु सम्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्स ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सझं तस्स नत्थि किंपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिउ, सुनिठिअढ सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचमं स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिऊणं ॥ सुगुरुजण पारतंतं. उवहिव थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ, सुह संदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर तित्थ जणिय संखोहा ॥ पडिभग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्थ सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सत्थवाहा, हय दुह दाहा सिवंब तरु साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुणजण जणिअ पुज्जा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह साहण सज्जा, त्तयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥५॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जिणाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ जिण देवो, देवायरिउ दुरंत त्तवहारी ॥ सिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमाण सूरी, पयडीकय सूरि मंत माहप्पो ॥ पडिहय कसाय पसरो, सरय ससंकुव्व सुहजणउ ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, णपच्चलो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर सिद्धसिद्धं, तझाणउ पणय सुगुणजणउ ॥ ९ ॥ पुरउ दुल्लह महिव, लहस्स अणहिल्ल वाडए पयडं ॥ मुक्काविं आरिऊणं, सीहेणव दव्वलिंगि गया ॥ १० ॥ व

समच्छेरय निसिवि, प्फुरंतु सच्छंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरेणव सूरि जिणे, सरेण हयमहिअ दोसेण ॥ ११ ॥ सुक्कइत्त पत्त कित्ती, पय मिअ गुत्ती पसंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दित्ती, जिणचंद जई सरो मंती ॥ १२ ॥ पयमिअ नवंग सुत्तठ, रयणुक्कोसो पणासिअ पनसो ॥ नवन्नीअ मविअ जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥ ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणबंधु रोधणिअं ॥ सिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पसमधरो ॥ १४ ॥ कय सावय संतासो, हरि व सारंग नग्ग संदेहो ॥ गय समय दप्प द लणो, आसाइअ पवर कवरसो ॥ १५ ॥ नीमन्नव काणणमिअ, दंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुउ, सूरी जिणव छहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिअ सच्चरणो, चउरणुउग प्पहाण सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उठमुहो सहइ जस्स करो ॥ ॥ १७ ॥ दंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावउठ नउ ॥ गुरुगिरि गरुउ सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होत्रा ॥ १८ ॥ जुग पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया नवा ॥ जेण जिणवल्ल हेणं, गुरुणा तं सवहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर पवयण, सि रोमणी वूढ डुवह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व लहइ लत्ताणता णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरूणं पारतंत मुवहइ ॥ जयइ जियइ जिणदत्त सूरी, सिरि निलउ पणय मुणितिलउ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीषष्ठम्स्मरणम् ॥

॥ सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणु गामि संघस्स ॥ सिरि पासजिणो थंभण, पुरठिउ निठिआनिठो ॥ १ ॥ गोयम सु हम्म पमुहा, गणवइणो विहिअ नय सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाण जिणाति, ज सुठयंते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुराजे, जिणं

वेयावच्च कारिणो संति ॥ अवहरिअ विग्घ संघा, हवंतु ते संघ संति करा ॥ ३ ॥ सिरि थंभणय ठिअ पा, ससामि पयपउम पणय पाणीणं ॥ निद्दलिअ डुरिअ विंदो, धरणिंदो हरउ डुरिआइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुख जरका, पम्हिहय पमिवरक परक लरका ते ॥ कयसुगुण संघ ररका, हवंतु संपत्त सिवसुरका ॥ ५ ॥ अप्पमिचक्का पमुहा, जिण सासण देवयाउ जिण पणिआ ॥ सिद्धाइआ समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासणउर, पुरष्ठिउ वष्ठमाण जिण भत्तो ॥ सिरि वंभ संति जरको, ररकउ संघं पयत्तेण ॥ ७ ॥ खित्तगिह गुत्त संता, ण देस देवाहि देवया ताउ ॥ निव्वुइ पुर पहियाणं, भव्वाण कुणंतु सुरकाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधरा, विहिपहरि उच्छिन्न कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ए ॥ तिछवइ वद्धमाणो, जणेसरो संगउ सुसंघेण ॥ जिणचंदो भयदेवो, ररकउ जिणवल्लहो पहुमं ॥ १० ॥ सो जयउ वष्ठमाणो, जिणेसरो णेस रुद्व हयतिमिरो ॥ जिणचंदा भयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवल्लह पाए, भयदेव पहुत्त दायगे वंदे ॥ जिणचंद जिणेसरव, ष्ठमाण तिछस्स वुछिकए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जेय कारंति ॥ मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिआ तेवि ॥ १३ जिणदमं त्तगणे नाणाइणो, सया जे धरंति धारिंति ॥ दंसिअलिय वुडुरंत्थपए, नमामि साहम्मिआ तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामकं सप्तम स्मरणम् लिख्यते ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसहर विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि भाणवहे ॥ भवेभवे पासजिणचंद पर्यंत संपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीगोडीपार्श्वजिन स्तवनं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं दलितपापत
मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले
पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा, दु
द्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तो
ष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्धया विना
पि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥ बा
लं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा
ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्ष
मः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतनक्रचक्रं, को
वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ
क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवी
र्यमविचार्य मृगोमृगेंद्र, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्
॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते
बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचाम्रक
लिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥ आक्रांतलोकमलिनी
लमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति
नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः
॥ ८ ॥ आस्तां तवस्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवन
भूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति
भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति
जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः, क्षारं जलं
जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणु
भिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंत एव खलु तेप्य
णवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व
ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं
कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम्
॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव
लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति
संचरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि,
र्नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलि
ताचलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव
र्त्तिरपवर्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न
जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः
॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा
युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहि
मासि मुनींद्र! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमन
ल्पकांति, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु
शशिनाह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि
ष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः
॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिह
रादिषु नायकेषु ॥ तेजःस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु
काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव
दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भु

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री
णां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी
प्रसूता ॥ सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जन
यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति
मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्रपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि
भुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं
विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥
बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंक
रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भग
वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्व
राय, तुभ्यं नमोजिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो
ऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो
ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपममलं
भवतो नितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव
पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि
भ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलतावित
नं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम
रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशु
चिनिर्झरवारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र
त्रयं तव विभातिशशांककांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रता
पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वर
त्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांती, पर्युल्लसन्नखमयूख

शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र, धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्य दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति जयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवताम् र्हदादिप्रभावा, दारोग्यश्रीधृतमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां, समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं अवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोपाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाद्रिशृंगे, विहितजन्माभिषेकः, शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन गतस्स पंथाः ॥ इति भव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं इति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं २, प्रीयंतां २, भगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रैलोक्यमहिताः त्रैलोक्यपूज्याः त्रैलोकेश्वराः त्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायश ४, विमल ५, सर्वानुभूति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०, स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जिनेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४, एते अतीत.

॥ चतुर्विंशतितिर्थंकराः ॥

॥ ॐ श्रीऋषभ १, अजित २, संभव ३, अभिनंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रभ ६, सुपार्श्व ७, चंद्रप्रभ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयांस ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुंथु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्श्व २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिनाः

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्श्व ३, स्वयंप्रभ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, उदय ७, पेढाल ८, पोट्टिल ९, शत कीर्त्ति १०, सुव्रत ११, अमम १२, निष्कषाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशो धर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, भ द्रंकर २४.

॥ एते भावितीर्थंकराः जिनाः ॥ शान्ताः शान्तिकरा भ वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्षंतु वो नित्यं ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, संवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, दृढ रथ १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, कृतवर्म १३, सिंहसेन १४, भानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुंभ १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्था ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नंदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रभावती १९, पद्मा

२०, वप्रा २१, शिवा २२, वामा २३, त्रिशला २४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्यः ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायक्ष २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंबुरु ५, कुसुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ए, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, षण्मुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १ए, वरुण २०, भृकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितबला २, डुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, भृकुटि ८, सुतारका ए, अशोका १०, मानवी ११, चंडा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कंदर्पा १५, निर्वाणी १६, बला १७, धारिणी १८, धरणप्रिया १ए, नरदत्ता २०, गांधारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धायिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति, कीर्त्ति, कांति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयंति ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृंखला ३, वज्रांकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ए, गांधारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोट्या १३, अच्छुप्ता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः षोडशविद्यादेव्यो रक्षंतु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्चंद्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताःसलोकपालाः सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां ॥ २ ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो भवंतु ॥ अस्मिंश्च भूमं मले आयतननिवासिनां साधुसाध्वी श्रावकश्राविकाणां, रोगोपस र्गव्याधिदुःखदौर्भिनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋ द्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः भवंतु ॥ सदाप्रादुर्भूतानि दुरितानि पापा नि शाम्यंतु शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना थाय, नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्य र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥ शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ न्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंपत्, नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंगपौरजनपद, राजाधिपरा जसंनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु,श्रीपौरलोकस्य शांतिर्भवतु, श्रीराज संनिवेशानां शांतिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकाना शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिः प्रतिष्ठा यात्रास्नात्रावसानेषु, शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधू पवासकुसुमांजलिसमेतः, स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः, शुचिः शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतः, चंदनतिलकं विधाय पुष्पमालां कंठे कृत्वा, शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तो त्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणभाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसमं भवतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवंतु लोकाः ॥ २ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यंते वि

प्रवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्तिः समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापक्षयंकरः॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरींद्रो, भाषते जिनपंजरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवं ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षएमासैर्लभते फलं ॥ ५ ॥ अर्हंतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचंद्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः॥ ८ ॥ पूर्वाशां श्रीजिनो रक्षे, आग्नेयीं विजितेंद्रियः ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतिं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरां तीर्थकृत् सर्वा, मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हं, आकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षंतु सकलं कुलं ॥ ११ ॥ ऋषभो मस्तकं रक्षे, दजितोपि विलोचने ॥ संभवः कर्णयुगलं, नासिकां चाभिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्ठोश्रीसुमती रक्षेत्, दंतान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चंद्रप्रभो विभुः ॥ १३ ॥ कंठं श्रीसुविधीरक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रे

यांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्षे, दनंतोऽसौ स्तनावपि ॥ सुधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशांतिर्नाभिमंडलं ॥ १५ ॥ श्रीकुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरूपृष्ठिवं शं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेत्, श्रीनेमि श्चरणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथः सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमयं जगत् ॥ रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, संग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादि, भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥ २० ॥ डाकिनी शाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥ नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपंजरं ॥ तस्य किंचिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदं ॥२२॥ जिनपंजरनामेदं, यः स्मरेत्यनुवासरं ॥ कमलप्रभराजेंद्र, श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥ आसादयेत्सःकमलप्रभाख्यां, लक्ष्मीं मनोवांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादींद्रचूडामणिरेषजैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तोत्रोमेंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वडानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पतरुरे अयाण चिंतउ मणभितरिं, किं चिंतामणि कामधेनु आराहो वहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसांतर लंघउ, रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघउ ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धउ ए नवकार, सयल काज महियल सरे डुत्तर तरे संसार ॥ १ ॥ के

वलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहै, भोगवि सुक्ख अणंत अंत परम प्पयसाहै ॥ इण झाणे सुर रिद्धि पुत्त सुह विलसै बहु परि, इण झाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो जपे अचिंत चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि नियगेह ॥ २ ॥ निय सिर ऊपर झाण मझ चिंतवै कमल नर, कंचणमय अठदल सहित तिहां मांहे कनकवर ॥ तिहां वेठा अरिहंतदेव पञमासण फिटकमणि, सेयवत्थ पहेरेवि पढम पय चिंते नियमणि ॥ निवारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुक्ख, अरिहंत झाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्ख ॥ ३ ॥ पनर भेय तिहां सिद्ध बीय पद जे आराहे, राते विद्रुमतणे वन्ननिय सोहग साहे ॥ राती घोती पहर जपै सिद्धहिं पुव्व दिसि, सयल लोय तिह नरहि होइ ततखिणसेंवसि ॥ मूलमंत्र वशीकरण अवर सहू जगधंद, मणमूलो उग्रथ करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण दिसि पंखमी जपे नमो आयरिआणं, सोवनवन्नह सीस सहित उवए सहिनाणं ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे लाख ऊपर जे ध्यावे, पहेरे पीलावत्थ तेह मन वंछिय पावै ॥ इण झाणे नव निधि हुवेए रोग कदे नवि होय, गज रथ हय वर पालखी चामर छत्त सिर जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवझाय सीस पाढंता पच्छिम, आराहिजे अंग पुव्व धारंत मणोरम ॥ पच्छिम दिसि पंखमीय कमल ऊपर सुहझाण, जोवौ परमानंद तासु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्के विउर तिहां नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहां फल सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ सर्व साधु उत्तर विभाग सामला वइठा, जिण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिठा ॥ मण वयण काएहिं जपे जे एके झाणे, पंचवन्न तिहां नाण झाण गुण एह पमाणे ॥ अनंत चोवीसी जग हुइए होसी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोक्कारो पद दिसिअ गणेहिं, सव पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएइ मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रन्नाव धरणिंद हुन पायालह सामी, समलीकुअर नपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥ संवल कंवल वे वलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ए ॥ ठींके बैगे चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाठरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही नयर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चोर धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिछंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण न्नूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीमते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणाही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण ठउमछ एह गुण पार न जाणूं ॥ जिम सत्तुंजय तिछराज महिमा नदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिछंकर गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुन नवकार ॥ १२ ॥ अम संपय नव पय सहित इगसठ लहु अरकर, गुरु अरकर सत्तैव इह जाणो परमरकर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि न्नणे सिव सुरकह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु उरक निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पंच

परमेष्टि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृहद नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शप्तति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासं । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असिआ । पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल उरियं । नवियाणं नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहनूअ रस्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पणतीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चौरारि महाज्ञयं हरउ ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रस्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंस । हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गर्भ । चक्कं किर सवउ नदं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्रसंखला तहय वज्र अंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाकालि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय अच्चुता ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्जा देवीउ रस्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मनूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो । वसोहिअं हरउ उरिआइं ॥ ए ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तित्थयर गयमोहा । झाए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्रुम । मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ नुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि उठ देवा । ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फल हे लिहिकणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गय । साइणि नूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं उवार पडि

नही इण नवकारह मंत ॥ ७ ॥ एसो पंच नमोक्कारो पद दिसिश्र गणेहिं, सव पावप्पणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि झाएह मंगलाणं च सवेसि, पढमं हवइ मंगलं ईसाण पएसिं ॥ चिहुं दिसि चिहुं विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु जाणी जपै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रन्नाव धरणिंद हुत्र पायालह सामी, समलीकुअर उपन्न न्निल्ल सुर लोयह गामी ॥ संवल कंवल वे वलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन वंछिय करे जोगी लियो मसाण, सोनापुरसो सीधलो इण नवकार प्रमाण ॥ ए ॥ छींके वैठो चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह नामी ॥ वाछरू आचारंत वाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंठही उपर मंत्र जपियो मनमांहे ॥ चिंत्या काज सवे सरे इरत परत विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चोर धाड संकट टले राजा वसि होवे, तिछंकर सो होइ लाख गुण विधिसुं जोवे ॥ साइण डाइण न्नूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि व्याधि ग्रहतणी पीडते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सवे नासै एणही मंत, मयणासुंदरितणी परे नव पय झाण करंत ॥ ११ ॥ एक जीह इण मंत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण छउमछ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिछराज महिमा उदयवंतो, सयल मंत्र धुरि एह मंत्र राजा जयवंतो ॥ तिछंकर गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण गिरुउ नवकार ॥ १२ ॥ अड संपय नव पय सहित इगसठ लहु अस्कर, गुरु अस्कर सत्तैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह सूरि न्नणे सिव सुरकह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग वहु डस्क निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवे इक चित्त, पंच

परमेष्टि मंत्रह तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ शश्वति जिन स्तोत्र ॥

॥ विजय पहुत्त पयासं । अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समय खित्त ठियाणं । सरेमि चक्कं जिणं दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय असिआ । पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेउ सयल दुरियं । भवियाणं भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गहभूअ रक्क साइणि । घोरुवसग्गं पणासेइ ॥ ३ ॥ सत्तरि पण तीसा विय । सठी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि । चौरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्कंतु मे शरीरं । देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंस । हरहुंहः तहय चेव सरसुंसः ॥ आलिहिय नाम गर्भं । चक्कं किर सवउ भद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । वज्जसंखला तहय वज्ज अंकुसिआ ॥ चक्केसरि नरदत्ता । कालि महाकालि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥ माणसि महमाणसिआ । विज्जा देवीउ रक्कंतु ॥ ८ ॥ पंचदस कम्मभूमिसु । उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ॥ विविह रयणाणवन्नो । वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ । अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥ तिथयर गयमोहा । झाए अवा पयत्तेण ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्रुम । मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सत्तरि सयं जिणाणं । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भुवणवइ वाणमंतर । जोइसवासी विमाणवासीअ ॥ जे केवि दुठ देवा । ते सवे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेणं । फल हेलिहिऊणखालिअंपीयं ॥ एगंतरगहभुगय । साइणि भूयं पणासेइ ॥ १३ ॥ इय सत्तरि सयं जंतं । सम्मं मंतं दुवार पडि

सिद्दियं ॥ डुरिआरि विजयतंतं । निप्नंतं निच्चमच्चेद ॥ १४ ॥
॥ इति शततति जिन स्तोत्रं ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दक्खो, नालियायरवियालिगोपसरो॥ रयणत्तय स्स जणउ, पासजिणो जयउ जय चक्कू ॥ १ ॥ कय कुवलय प म्मिबोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलउ ॥ विहियारविंद मह णो, दीयराउ जयउ पासजिणो ॥ २ ॥ कंतीइ निज्झिणंतो, सि दूरं पुहवि नंदणो कूरो ॥ जय जंतुअमअबक्को, सुमंगलो जयउ पहुपासो ॥ ३ ॥ उप्पलं दल नीलरुइ, हरिमंफल संगुउ इलानंदो ॥ रयणियरदारउमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय विबट्टो, नायज्ञो नागरायकय पूउ ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय रिउ सुहं दिसउ ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा मंफलो म हाभूइ ॥ असुरेहिं नमिज्जंतो, पासजिणंदो कवी जयउ ॥ ६ ॥ तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा सरिस सिरी, जय चक्कु सुउ जयउ पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो सायर, मायंफरहं अहो तणु विमुक्कं ॥ लोआ जरणी मूयं, पास जिणं सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिआइं पासनाहो, सिंहावमालीनहो नवणकेउ ॥ दूरंतम रासीउ, सत्तम वाण छिंउ हरउ ॥ ए ॥ इअ नवगह थुइ गप्पं, जिणपहसूरीहिं गुंफियं थवणं ॥ तुह पास पढइ जोतं, असुहावि गहा न पीमंति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं ॥ ग्रहशांतिं प्र वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्राः खेचराज्ञेयाः, पूज नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

ए मार्त्तंड, श्चंद्रश्चंद्रप्रन्नस्य च ॥ वासुपूज्ये नूमिपूत्रो, बु धोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्मारा:, शांति:कुंथुर्नमिस्त था ॥ वर्द्धमानो जिनेंद्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रुषन्ना जतसुपार्श्वा, श्चान्निनंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संन्नवः स्वामी, श्रेयांस वृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ॥ मिनाथे न्नवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनाँल्लग्ने च शौ च, पीमयंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेद्धीमान्, खेचरैः स हतान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिन्निर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुतै ॥ वं र्णसदृशदानैश्च, वासोन्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल, वुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव तिष्टंतु ॥ ए ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू जिता न्नक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं न्नक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११॥ न्नद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रन्नाव तः पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग र्भित नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रन्नुजीकी माला फेरणी. चंद्र । २ चंदाप्रन्नुजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्री शांतिनाथजी, श्रीकुंथुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी ॥ वृहस्पति । ५ श्रीरुषन्नदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्श्व नाथजी, श्रीअन्निनंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी, श्रीसंन्नवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥ शनीश्चर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु । ए मल्लिनाथजी, पार्श्वनाथजी ॥ रंग मुजब दान गुरुसुपात्रन्न

क्ति करणी माला पूर्वोक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये जर न्नावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यन्नेदि, न्नीतान्नयप्रदमनिंदितमंह्रि पद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमन्निनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृत मतिर्न विन्नुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्या हमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥२ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश न्नवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदिवा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुन्नवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अन्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्त्तुं स्तवं लसदसंख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना मपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं न्नवति तेषु ममावकाशः ॥ जातातदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति न्नवतो न्नवतो जगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्म पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विन्नो शिथिली न्नवंति, जंतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ॥ सद्यो न्नुजंग मया इव मध्यन्नाग, मन्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंत एव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयिवीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपला यमानैः ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं न्नविनां त एव, त्वामुद्वहंति हृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनून, मंतर्गतस्य म रुतः स किलानुन्नावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रनृतयोऽपि हतप्रन्नाव वाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतन्नुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥ स्वामि न्ननुल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हंत महतां यदि वा प्रन्नावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विन्नो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता स्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरा पिलोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संन्नवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश न्नवतो न्नविनः क्षणेन, देहं विहाय परमा त्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलन्नावमपास्य लोके, चामीकरत्व मचिरादिव धातुन्नेदाः ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिन यस्य विन्नाव्यसे त्वं, न्नव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुन्नावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म नीषिन्निरयं त्वदन्नेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र न्नवतीह न्नवत्प्रन्नावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरो ति ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विन्नो हरिहरा दिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिन्निरीश सितोपि शंखो, नो गृ ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १७ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुन्ना वा, दास्तां जनो न्नवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अन्युद्गते दिनपतौ स महीरुहोपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १ए ॥ चित्रं विन्नो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरला सुरपुष्पवृ ष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवा मुनीश, गच्छंति नूनमधएव हि

बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गम्भीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गम्भीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजो जिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३० ॥ प्राग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा, दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जित
घनौघमदभ्रजीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त
मथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥
ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड, प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ॥
प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहे
तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्व
यं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनि
धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु
तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥
जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्ष
म् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां, जातो निकेतनमहं मथि
ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं वि
भो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामन
र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि
तोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ॥
जातोऽस्मि तेन जनबांधवदुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न
भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारु
विमल [illegible] वसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,
शांतिनाथ [illegible] हलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारशरणं श
॥ वृन्द प्रप[illegible]साद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्र
विविधवर्णे, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥
वा, दास्तां जनो देताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ
स महोरुहोपि, [illegible] करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबु
विश्वं विभो कथम् ॥ यद्यस्तिनाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं कि
रिः ॥ त्वद्गोचरे

मपि संततिसंचिताथाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मल मुखांबुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥४३॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ॥ ते विग लितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक ल्याणमंदिरस्तोत्रं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ आद्यंताक्षरसंलक्ष्यं, मक्षरं व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा लासमं नाद, बिंदुरेखासमन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं, मं नोमलविसोधकं ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स र्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य ईशेभ्य, ॐ सिद्धेभ्यो न मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः, उपाध्यायेभ्य ॐ नमः॥४॥ॐ नमः सर्वसाधूभ्यः ॥ ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः ॥ ॐनमः तत्त्वदृष्टिभ्यः । चा रित्रेभ्यो नमोनमः ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्हदाद्यष्टकं शुभं ॥ स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्यं पदं शिखां रक्षे, त्परं रक्षेत्तु मस्तकं ॥ तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकां ॥ ७ ॥ पंचमं तु मुखं रक्षेत्, षष्ठं रक्षेच्च घंटिकां ॥ नाभ्यंतं सप्त मं रक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवतः सांतः, सरेफोद्व्यब्धि पंचषान् ॥ सप्ताष्टदशसूर्यांकान्, श्रितोबिंदुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षरा आद्याः, पंचातोज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ॥ ह्रीं सांतहसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः । जंबूवृक्षधरो द्वीपः, क्षारोदधिसमावृतः ॥ अर्हदाद्यष्टकैरष्टः, काष्टाधिष्ठैरलंकृतः ॥११॥

सन्मध्यसंगतो मेरुः, कूटलक्षैरलंकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-मंमलमंमितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारांतं, बीजं मध्यास्य सर्वगं ॥ नमामि विंबमार्हंत्यं, ललाटस्थं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितं ॥ निरीहं निरहंकारं, सारं सारतर घनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ्रं स्फीतं, सात्विकं राजसंमतं ॥ तामसं-चिरसंबुद्धं, तैजसं शर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरसं विरसं परं ॥परापरपरातीतं, परंपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च, त्रिवर्णं तूर्यवर्णकं ॥ पंचवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्भृतं भ्रांतिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसंबुद्धं, बुद्धं सिद्धं मतं गुरु ॥ ज्योतिरूपं महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु-वर्णांतः, सरेफो विंदुमंमितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे, वृषभाद्यां जिनो-त्तमाः ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चंद्रसमाकारो, विंदुर्नीलसमप्रभः॥ कलारुणसमासांतः, स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृतः ॥ वर्णानुसारसंलीनं, तीर्थकृन्मंमलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रभपुष्पदंतौ, नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विंदुमध्यगतौनेमि, सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ, कलापदमधिष्ठितौ ॥ सिरिई स्थिति-संलीनौ, पार्श्वमल्लीजिनेश्वरौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकृतः सर्वे, हर-स्थाने नियोजिताः ॥ मायाबीजाक्षरं प्राप्ता, श्चतुर्विंशतिरर्हतां॥२६॥ गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविवर्जिताः॥ सर्वदा सर्वकालेष, ते भवंतु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं, तस्य चक्रस्य या विभा ॥ तयाछादितसर्वांङ्ग, मामांहिनस्तुमाकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य० मामांहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवद० मामांहिनस्तुलाकिनी ॥३०॥

देव० मामांह्निस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांह्निस्तु-शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांह्निस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामांह्निस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांह्सिंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामांह्निस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांह्सिंतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांह्सिंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांह्सिं-तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांह्सिंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० मामांह्सिंतुभूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या भुविलब्धयः ॥ ताभिरभ्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः ॥ स्ववीसिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डुर्जनाभूत-वेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रभा-वतः ॥ ४५ ॥ ॐह्रीं श्रींश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंडी सरस्वती, जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामांगा काम-बाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जग-त्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुडः प्राप्यः, श्रीरुपिमंगलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थे, जगत्-त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले डुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्र-ष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ भार्यार्थी लभते भार्यां, पुत्रार्थी लभते सुतं ॥ वित्तार्थी लभते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ भूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

नुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्यं, सर्वन्नीतिविनाशकं ॥५४॥ नूतैः प्रे तैर्ग्रहैर्यक्षैः, पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः ॥ वातपित्तकफोद्रेकै, मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ नूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठः, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥ तैःस्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्यं महा स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावलीं ॥ अष्टसाहस्त्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रात, र्ये पठंति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रन्नवंति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत्, प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् ॥ स्तोत्रमे तन्महातेजो, जिनविंबं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यार्हते विंबे, न्नवे सप्तमके ध्रुवं ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानंदनंदितः ॥ ६१ ॥ विश्ववंद्यो न्नवेध्याता, कल्याणानि च सोश्नुते ॥ गत्वा स्थानं परं सोपि, नूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं ॥ पठनात्स्मरणाज्जापात्, लन्नते पदमु त्तमं ॥ ६३ ॥ इति ऋषि मंमल स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य मूलयंत्रकल्पानुसारेण लिखितं गणि । श्रीक्षमाकल्याणोपाध्यायै र्वदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्ष्ये तस्यैव ना मानि । मोक्षसौख्याभिलाषया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुद्धः । निर्वि कल्पो निरामयः ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः ॥ निर्न्नयो निरहं कारो । निर्विकारोथ निष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषोनिरुजः शांतः । नि र्न्नयो निर्ममः शिवः । निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मा निष्कलप्र न्नुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपमज्ञान । निरागो निरघो जिनः ॥ निःशब्द

देव० मामांहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामांहिनस्तुशाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुडाकिनी ॥ ३३ ॥ देव० मामांहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामांहिसंतुपन्नगा ॥ ३५ ॥ देवदे० मामांहिनस्तुहस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामांहिसंतुराक्षसा ॥ ३७ ॥ देवदे० मामांहिसंतुवह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदे० मामांहिसंतुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामांहिसंतुडुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदे० मामांहिसंतुन्नूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा, तस्या या नुविलब्धयः ॥ तान्निरन्युद्यतज्योति, रर्हं सर्वनिधीश्वरः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा, देवान्नूपीठवासिनः ॥ स्ववर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः, मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ डुर्जनान्नूतवेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु, देवदेवप्रन्नावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी, गौरी चंमी सरस्वती, जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदड्वा ॥ ४६ ॥ कामांगा कामवाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तते या जगत्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांतिं कीर्त्तिं धृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुडुः प्राप्यः, श्रीरुषिमंमलस्तव ॥ न्नापितस्तीर्थे, जगत्त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्हौ, जले डुर्गे गजे हरौ ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं, प्राप्नुवंति न संशयः ॥५१॥ न्नार्यार्थी लन्नते न्नार्यां, पुत्रार्थी लन्नते सुतं ॥ वित्तार्थी लन्नते वित्तं, नरःस्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धिः, गृहे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ न्नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुर्ध्नि वा

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोटमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसापुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह तामहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा त्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं वोघ । एकानेकवि निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह्र द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारनिर्हंसो । निष्कामो विषयाच्यु तः ॥ जगवंतामहाज्ञांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमश्रा त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना कृतिं नाकरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त जसंवेद्यः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्म्मजित् धर्म्मनायकः ॥३४॥ वोधसत्सु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातातः । रुपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं वंद्यः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि

प्रतिमश्लेष, । तत्रूपो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्ठकः शब्दवर्जितः ॥ अनिंद्यो महपूतात्मा । जगत् शिखरशेखरः॥६॥ निःशद्धो गुणसंपन्नाः । पापतापप्रणाशनः ॥ सोपि योगात् शुभं प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्ध । अचिंतः अक्षयो विभुः ॥ अमुर्त्तः अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीशः प्रजापतिः॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो भवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथः, बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान लोचनः ॥ अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवार्जितः ॥ १० ॥ अजेयसर्वतो भद्रः । निष्कषायो भवांतकः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः॥ वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ अंतको सहज्ञानंद । अवाङ्मानस गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनंत विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्म्मार्जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्याबाधो वरः शंभुः । विश्ववेदी पितामहः ॥ सर्वभूतहितो देव । सर्वलोकसरण्यकः॥ १४ ॥ आनंदरूपचैतन्यो । भगवांस्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनंतानंतधीशक्तिः । सत्यव्यक्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्म्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥ गौरवादित्रयाद्दूरः । सर्वज्ञानादि संयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ सर्वेशः सततसुखावासः। जिनेंद्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरम ज्ञानी । विश्वतत्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोभगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुन्य कारकः ॥१९॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः ॥ ईश्वरो भुवनाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लभः ॥ योगींद्रो नादिसंसिद्धः । निरोहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्त्रः । महसौख्यस्त्रिपुरांतकः॥ त्रिनेत्रः

त्रिजगत्पूज्य: । कल्याणकोटिमूर्त्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपापविवर्जितः ॥ सर्वदेवाधिकोदेवः । सर्वभूतहितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद । चैतन्यश्चैत्यवैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह तांमहः ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निरागः परमेश्वरः ॥ २५ ॥ महा देवो महावीरो । महामोहविनाशकः ॥ महाभावो महादर्शः । म हामुक्तिप्रदायकः ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा त्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महांतिकपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा पूज्यो महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंनो । महामहिम अच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजसं बोध । एकानेकवि निश्चलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः ॥२९॥ महासूरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाहृ द्यो महागुरुः ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविद्वंसो । निष्कामो विषयाच्यु तः ॥ भगवंतामहाभ्रांतो । शांतिकल्याणकारकः ॥३१॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टी परमेश्वरः ॥ परमात्मा परानंद । परंपरमआ त्मकः ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना कृतिं नाक्षरो वर्णो । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त जसंबोधः । संसारछेदकारणः ॥ निरवद्यो महाराध्यः । कर्म्मजित् धर्म्मनायकः ॥३४॥ बोधसत्तु जगद्वंद्यो । विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंभूपापहृत्पूज्यः । पुनीतो विभवः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीतः । रुपातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो भवविध्वंसी । योगिनां ज्ञानगोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् भव्यसं बंधः । पवित्रो गुणसागरः ॥ प्रसन्नः परमाराध्यः ॥ लोकालोकप्र काशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी । ईंद्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ नि

प्प्रपंचो निरातङ्को ॥ निःशेषक्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोक
संसेव्यो । लोकालोकविलोकनः ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठंति पुनः पुनः
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीभ
द्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुजिनसहस्रनाम संपूर्ण ॥

॥ अथमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्नः पारन्ते परमविदुषस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम
पि गुणगुरौर्गंतुमनलम् ॥ नलम्भं लम्भं त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकल
। नुवद्भिः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागिमृतजित् ॥ १ ॥ जगन्नातः स्तो
किल निरवकाशोप्यहमिहो । घनप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोच्चावच
वचः । गृणीयां सह्यं तत्तनुभुव इवेष्टार्थप्रतिभूपदोपास्ने पार्श्वासन
यजनयित्र्याशित्रमम ॥ २ ॥ त्वकाग्रामासूनोधुतनिधनमूनोयवसु
ना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोन्नानो
वनन्नवने नो वृषन्नरं । व्यर्थामोहादेनोरयमथनतेनोत्कटविपत् ॥३॥
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । र्जगत्रय्यारामेमरकुरुहवामे
यज्जिनपाः ॥ हतोग्राकग्रामे शितरसमकामेपुविजयो । त्वमकालि
न्नामे डुरमदजधामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चिरतरमपारे
भुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ धुतारेकतारे
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्वारे भवदहनवारे कुरुकृप
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरमम्रृतधारासुमधुरा । न्समादेयान्सारान
द्विमिथुनमाराध्ययविज्ञो ॥ ज्वलद्वस्योदारान्विषयकुमाराधिपतित
। मनुक्रोशागारायतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे
वव्रजविहितसेवः कुशलता, लताजातेदेवः प्रशमिवरदेवत्वमतमाः ॥
तनालाम्नोमेवः परिकरिहेस्वत्सलसदा, मदानंदंकेवल्यचलपदमेवस्तु
तिकृते ॥ ७ ॥ कजन्माहंकार्यंकिरनगणाहंकीर्तिधवलं, कुबेरज्यं

कुंदाव्रततिपरशुंकेतकगुणम् इतं कैवल्यंकोकिलकलरवंकौशलकरं ददानंकंकह्लोपमसुरमरालंनुततमम् ॥ ८ ॥ श्रियः पात्रंगात्रं भवकुशकदात्रंसुहृदये रहोरात्रंत्रात्रंदधदतनुमात्रंतवप्रभो पवित्रं सचित्रंशुचितरचरित्रंखुतमसा ममित्रंयैर्मित्रंस्तुतपुरुपवित्रंसरणकम् ॥ ९ ॥ वदान्यस्वच्छन्दंहृगुदकन्नवैः पीतममलै रिहावन्यांधन्याः स फलजनुपस्तेखलुमताः इमेवन्याः सत्वाश्वतुसदसव्यक्तिविकला भ वारण्येटन्तकथमपिभवंत्वंनददृसुः ॥ १० ॥ नजानेहंनेतः कुमततिमर प्रावृतदृशां गतिर्म्मोहकाणादरहरभवित्रीवरदका यदेतेवस्यन्तोप्य भिमतफलोत्सर्जनपरां त्वदाख्यांनोचिंतामणिमिवभजन्तेस्तविधयः ॥ ११ ॥ त्वमेवेशेदानींमयिवितनुतात्कामपिकृपां भवास्ताघोदत्व त्तलनिपतितं प्रोद्धरत्तराम् मुहुःखिन्नस्त्वत्यकजशरणमीतोस्म्यशर णः शरण्योमिश्रेयान्प्रभुदलमकध्वंसनविधौ ॥ १२ ॥ जयत्वंधीरत्वा धरितकनकाद्रार्य्यमहिमा हिमालोप्रान्त्याब्धि प्रतिभटगभोरत्वविदितः दितःप्रत्यूहालिः शुभमन जगत्यावनजिना जिनाशीनश्रीरः कुमतिवसुधासीरसततं ॥ १३ ॥ ततंविश्वहोधंपरमपुरुषः सिद्धिन गर्यां गरीयः साम्राज्यंगणधरमहामात्रमहितः हितः कर्त्तुकर्म्माष्टकरि पुवलंप्रत्ज्जयमहा माद्तीर्थेशश्रीभरमतुलमासः प्रभुमहाः ॥ १४ ॥ महाराज स्तुत्योदुरिततरुसिन्धुरनिलको लकोनः पालाकः सकलभ निनांमोहशमनः मनस्यश्रान्तं मेवरसरसिकादम्बश्चसन् वसन्जी यात्पार्श्वप्रभुरनघपार्श्वप्रणुतपत् ॥ १५ ॥ तपः श्रीभोलोकोत्तरपद मुपेतःसकलवि । भविश्रंदोप.ल.यवमलवनेप्रामविभव: भवध्वस्त्यै नस्तादनुपममहानन्दकलितो लितोविश्वख्यातैरनिशमवदातैर्गुण गणैः ॥ १६ ॥ पयचतुष्कंसिंहावलोकवंधुरम् ॥ भवन्तंमद्योग प्रथि तपदवीचागिनिवहा श्रज्मस्रंविश्रामंप्रणिदधति विश्वेश्वरसमे इदंस्थाने चन्तिप्रमृमरगिते।म्यंखलुखगाः कलावन्तांफिनश्रुतमतसदाचारनि

रताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोषान्तकत्तरुप्रकाशोधतमसं हरन्लोकंकुर्व
न्नमलकमलोल्लासमयकम् प्रबोधंव्यातन्वनिततःकरतःपंकदलनो ज
गच्चक्षुः पार्श्वोदिशतुकुशलंमेसमयभृः ॥ १८ ॥ नितान्तंसन्तापंस
मतनुमतांयन्नमृतगुःकलाभिःसंपूर्णः कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो
षेनोरम्यः समुपचितरत्नाकरइहा वताच्छ्रामापुत्रः सपदिविपदस्तार
कपतिः १९ स्फुरंत्यासिंदुरं निजतनुरुचाचारुप्रकृति मंहीजन्मातद्वा
स्यपभृतिदुःखाग्निजलदः बुधोबोधस्फीतिंददविरतंराजतनयो भु
यातोलोकेतनुभवनमाप्नोतिबलवान् ॥ २० ॥ धरादिस्येशानः शु
भनरुविभागौरकरणः सदापायाद्देमासुरगुरुरपायाज्जिनपतिः स्फुरः
स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोभानुतनय स्तमोविघ्नध्वंसीनकुशलकरः
केतुरसितः ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽयेऽन्यस्त्रिदसविसरेभ्योवरतया सि
लोकेशोनूनंत्रिजगदवनात्वंकमलभूः सुयोगीन्द्रस्वान्तामलकमलज
न्माधिवसना चतुर्वक्त्र्याश्रेयोजिनपचतुरास्योस्युपदिशन् ॥ २२ ॥
प्रतीतोदैत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्पराध्यैश्रीयोगात्कमलनिलयेसौ
सिभगवन् ननाकश्रद्धिश्वातिशयभरवित्तस्त्रिभुवने भवाद्दक्कोगीतः
परमपुरुषोतोदहरिद्दयैः ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिभुवनजनैकाधि
पतया शिवःशश्वन्नृणांपरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञः सकल
जगदर्थौघकलना भशूलीनोचोग्रोनचपशुपतिर्नोविषमदृक् ॥ २४ ॥
अवासःश्रेयः श्रीप्रवितरणलीलाविदलिता वितेषाग्रकोणोरुदमदि
मलारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसङ्गःकृतकुमतभङ्गःसुमनसां कृताया
शेषाणांसुकृतपदवींत्वंकथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंद्राद्रोरात्रंयदु विपदम
त्रंधृतमरं कलत्रंयेनात्रकसहरिहरादिःसुरगणः सकर्माणाकस्यामित
चरितताधूर्त्तनिवद प्रतार्यसद्दोषः मित्तसततरोषःस्थितिहतः॥ २६॥
समग्रामग्रामप्रभवभयदो बोधरहितः सरुग्भव्यद्वेषीपुरुदुरितकर्मा
नकलितः पुराणोदान्तुतश्रिरमिरुसदादोनमहितः सदेवोऽप्याद्यत्वंकथ

मपिसमासादिमयकाः॥ २७ ॥ प्रश्नोकिंवामेतैरभिमतविधानेलसतरै रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोलिम्मेलत्वत्यद्वनजयुगले सम्प्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुहृशा ॥ २८॥ अदभ्रंद भ्रांतिन् इविणभरमडीसहृशं विहायेनाप्रत्नंधरसिकिलरत्नत्रयमहो दधत्सौवर्णानामुपरिनलिनानाक्रमयुगं पुनर्निर्लोभानांधुरिसुमतिमन्नि स्त्वमुदितः ॥ २९॥ लसन्तिः सीमश्री परिकलितमग्र्यंसुवरण त्रयी मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोष्पतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल क्ष्मांणिदधत कुतस्तैनैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं प्राज्यंराज्यंविदितविभवापास्यलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व रतरम् कृतेनिर्गं्रथत्वंप्रशमरसवाहेस्त्यसुमतांमहच्चित्रंचित्तेजनयतित वेदंतुचरितं ॥३१॥निकामार्थोत्स्पृहया ततवनदवप्रख्यातिशयितं जगद्दा रिद्र्याग्निं स्मकिलजिनविध्यापयसियः त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु ग्मं सुहृादया नतर्पै स्वेष्टासैसुरशिखरिणीशानदधते ॥ ३२ ॥ जग त्येकाधाराद्दितनरककारानिलयतः समुद्धर्त्तुंजंतून्परिवृढसमंतूनपिकि ल तवज्ञातर्ज्जन्माजनिजननमुख्याकगणाहृत् भवेवेशस्तोर्थोपिचनिश्च पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना मनाक्यस्येन्द्रक्तोयदिश्वदनुगंमद्यसनितं नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुरू तेतंस्वपसमं समाङ्लयंवाथप्रभवतिनकः स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र लापायाज्ञुद्धास्तवगुणगणाभान्तिविशदा स्त्रिलोकीभूजानेसुरपथमणे भ्रानवञ्च रसज्ञानांकोट्याप्यमलधिषणोनत्यधिपणा नतानीट्टेनरव्या तुमदरपरार्ध्यंतुतरदां ॥ ३५॥ नमस्तुभ्यंभंसृत्यतनुतटिनीतारगतरे नमस्तुभ्यंभीमामयसमदहन्तावलहरे नमस्तुभ्यंसूक्तानिमधुरिमहाती ष्टनसुधा ससुद्रायामुद्रभ्युदयसिततुभ्यंजिननमः ॥ ३६ ॥ पादेयाद् महिमालयायसुमनः सन्दोहशुभ्रूपितां ह्रिहन्हायकलिभिदेभगवते भव्यावलीहंतने लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय

कृणादोदयायसततंश्रीपार्श्वतुभ्यंनमः ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्ररमा भरनिर्जिततारकराजगणः कृतल क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकतारवदे ॥ ३८ ॥ तोटकछन्द॥ भवदमलपदाम्भोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलिःप्रार्थये हम् वितरविततबोधंयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुषरम्यंत्वामचिन्त्य स्वरूपम् ॥३९॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा दप्रसादसनृपंरघुनाथदासम् मांशुद्धशासनसदायकपार्श्वयक्ष पद्मावती प्रणुतसंसृतितोवपार्श्वे ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भ्रवसंततिलका वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रभुस्तवः ॥ अहार्ग्येपुस्तम्बेरमशशिमितेहायन यरे नभोमासकृष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु नाथाह्वामुनिना स्तवोवामासूनोररचितलिखितोमोदभरतः ॥ १ ॥ इतिश्री पार्श्वप्रभोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमगात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धो विज्जाइ चक्की नमि विनमि ॥ मुणी पुंडरीओ मुणिंदो । वाली पज्जुन्न संबो भरहसग मुणी सेलगो पंथगोय ॥ रामो कोडी पंच द्रविड नरवई नारदो पंडुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विमलगिरिमहं तित्थमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवं॥

॥ अथ श्रीथंभणापार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, थंभणपुर गांम ॥ सुरतरु सम सिरि पास सांम, राजे अभिरांम ॥ १ ॥ विबुधेसर सिरि अभय देव संथवियाणं दिय थुइ जलसिरिय नील वण, फण पल्लव मंडिय ॥ २ ॥ सुर नर सुद्ध कुसुमावलीए, सिवफल दायक जांण ॥ आराहउ जदि एग मण, पावो पद कल्यांण ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ वंदू जिनवर विहरमांण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला कांत दांत, करुणारस धामी ॥ १ ॥ कांचनगिरि सम देह, कांति वृष लांछन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजता ए, पुंमरीकनी भांण ॥ प्रभु थो दरसन संपदा, कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरब दीसे दीपतो । गिरवो गिरवर नित्त । तीरथ सिखर समेतको । चाहूं दरसण चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम बारम प्रभु । बावीसम विण वीस ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु जगीस ॥ २ ॥ सुणिये ऽणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वांण ॥ भविजन भेटो भगतसुं । तीरथ करण कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाभ । समरुं सुखकारी ॥ भावी जिनवर भरहखित्त । मंमण मणिधारी ॥ १ ॥ लांछन वर्ण सुदेह मांन । थिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर सिरि वर्द्धमांन । जिनराज समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जांण ॥ भावी जिनवर भेटिये । कारण पद कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवामा वामाङ्के सकलमुभयः कालघटना । द्विधा भूतं रूपं भगवदभिधेयं भवतिय॥ तदंतर्मंत्रं मे स्मरहरमयं सेंदुममलं निराकारं शश्वज्जप नरपते सिध्यतु सते ॥१॥ अविरलशद्दघनोघा । प्रक्षालितसकलभूतलकलंकाः ॥ मुनिभिरुपासितचरणा । सरस्वती हरतु मे दुरितं ॥ १ ॥ इति सरस्वती स्तुतिः ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं ॥ दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेन च ॥ न तिष्टति चिरं पापं । छिद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं । नेत्रे च सफलो कृते । मुक्तोहं सर्वपापेभ्यो । जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ३ ॥

॥ हत्था जेह सुलक्षणा, जे जिनवर पूजंत ॥ जे जिनवर पूज्या नहीं, ते परघर काम करंत ॥ १ ॥ वारी चंपो मोगरो, सोवन कूपलियांह ॥ पास जिनेसर पूजसा, पांचू आंगलियांह ॥ ॥ २ ॥ जीवडा जिनवर पजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमे परजा नमे, आंण न लोपे कोय ॥ ३ ॥ फूलां केरे बागमें, बेठा श्रीजिनराज ॥ ज्यूं तारामें चंद्रमा, त्यूं सोभे महाराज ॥४॥ जगमें तीरथ दो बडा, सेत्रुंजो गिरनार ॥ उण गिरि ऋषभ समोसरया, उण गिरि नेमकुमार ॥ ५ ॥ मोहनी मूरत पासकी, मो मन रही लोभाय ॥ ज्यूं मेहदीके पातमे, लाली लखी न जाय ॥ ६ ॥ राजमती गिरवर चढी, वंदन नेमकुमार ॥ स्वामी अजहु न बावडे, मो मन प्राण आधार ॥ ७ ॥ धन ते साइ पंखियां, वसे जो गढ गिरनार ॥ चूंच भरे फल फूलसुं, चाढे नेमकुमार ॥ ८ ॥ श्री केशरियानाथकूं, नमन करूं चित चाय ॥ ऋद्धि वृद्धि मोहे दीजिये, दिन२ अधिक सवाय ॥ ९ ॥ श्रीकेसरियानाथके, केसर हंदा कीच ॥ मरुदेवाके लाडले, वसे पहाडा बीच ॥१०॥ इस रागको नांम कल्याण हे, प्रभुजीको नांम कल्याण ॥ सकल सभा कल्याण हे, जब प्रगटी राग कल्याण ॥ ११ ॥ सोरठ राग सुहामणी, मुखां न मेली जाय ॥ ज्यूं ज्यूं रात गलंतडी, त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १२ ॥ धंदो कर धन जोडियो, लाखां ऊपर कोड॥ मरती वेला मानवी, लियो कंदोरो तोड ॥ १३ ॥

दया गुणारी वेलडी, दया गुणारी खाण ॥ अनंत जीव मुगते गया, दयातणे परिमाण ॥१॥ दया मुगतितरु वेलडी, रोपी आद जिनंद ॥ श्रावक कुल मंडन भई, सींची सर्व जिनंद ॥२॥

॥ अथ नवपद चैत्यवंदनलिख्यते ॥

श्रीअरिहंत उदार कांति अति सुंदर रूप, सेवो सिद्ध अनंत संत आतम गुण भूप ॥ आचारज उवझाय साधु समतारस धांम, जिन भाखित सिद्धांत सुद्ध अनुभव अभिरांम ॥ १ ॥ बोधबीज गुण संपदा ए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ २ ॥ इह परभव आणंद जगमांहि प्रसिद्धो, चिंतामणि सम जास जोग बहु पुन्ये लद्धो ॥ तिहुअण सार अपार एह महिमा मन धारो, परहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥ ३ ॥ सिद्ध चक्र पद सेवता ए, सहजानंद सरूप ॥ अमृतमय कल्याणनिधि प्रगटे चेतन भूप ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पञ्चतिर्थोंका स्तवन ॥

॥ सुगुण सनेही साजण श्रीसीमंधरस्वाम, अरज सुणो एक जगगुरु मुझ आशाविशराम ॥ पूरव विदेहें विजय भली पुष्कला वई नाम, जिहां विचरे जिनवरजी धन ते नयरी गाम ॥ १ ॥ धन ते लोक सुणे जे जोजनगामिनी वाण, धन ते महियल चरण धरे जिहां जिनवर भाण ॥ धन ते भविजन जे रहे प्रभु ताहरे परसंग, वदनकमल निरखी नित्य माणे उत्सव अंग ॥ २ ॥ सुगुरु मुखें प्रभु सुजस तुम्हीणो सांभल कान, मिलवाने उलसे मन मा हरुं धरुं एक ध्यान ॥ भगति जुगति करवानी छे मुझ सघली जोम, पण प्रभु लग पहुंचीजें तेह नहि पग दोम ॥ ३ ॥ आडा डूंगर अति घणा विचवहे नदियां पूर, किम मुझथी अवराये प्रभुजी एटली दूर ॥ आंखडली उलझे करे जोयवा मुख जिनराज, पांख

ऋली पाई नहि ते विन किम सरे काज ॥ ४ ॥ वाटऋली वहतो कोई न मिले सेंगू साथ,कागलियो लिख आपूं हुं जिम तेहने हाथ ॥ जाणूं शशहर साथें कहुं संदेशा जेह, पण अलगो थई ऊपरि वाऋे निकले तेह ॥५॥ जो कोई रीतें प्रज्ञुजी तुमथी एथ अवाय, तो इण ज्ञरतना वासी ज्ञविजन पावन थाय ॥ साहिबनी तो सुनजर सघले सरिखी होय, पण पोतानी प्राप्ति सारू फल प्रति जोय ॥ ६ ॥ अलगो हुं पण माहरे तुम शुं साची प्रीत, गुण गुणवंतना आवे हियऋे खिण खिण चित्त ॥ हुं हुं सेवक तुं ठे माहरो आतमराम, नहिंय विसारूं जीवुं ज्यां लगि ताहरुं नाम ॥ ७ ॥ साचे दिलथी मुऊशुं धरजो धरम सनेह, करुणाकर प्रज्ञु करजो मोपरि महिर अठेह ॥ दूलम काल तणो ङुःख टालो दीन दयाल, पालो बिरुद संज्ञालो निज सेवकशुं कृपाल ॥ ८ ॥ आशविलुद्धा अलग थकी पण करे अरदास, पण महोटानी महिर ठतां नवि थाय निराश ॥ केई वसे प्रज्ञु पासें केई वसे ठे दूर, राजमहिरनी रीतें सकलने जाणे हजूर ॥ ए ॥ शिव सुखदायक नायक लायक स्वामि सुरंग, ध्यायक ध्येय स्वरूप लहे निज आत्म उमंग ॥ सहिजें एक पलक जो थाये प्रभु तुऊ संग, लाज्ञ उदयजिन चंद लहे नित प्रेम अज्ञंग ॥ १० ॥ इति श्रीसीमंधर स्वामी स्तवनं ॥

॥ अथ बीजो स्तवन ॥

॥ सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, सामि सीमंधरा तुह्म ज्ञगते ज्ञणुं ॥ ज्ञेटवा पायकमल ज्ञाव हियऋे घणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुह्मशुं कूऋ अरिहंत शुं राखियें, जिस्यो अठे तिस्यो कर जोऋि करि ज्ञाखियें ॥ अति सबल मुऊ हिये मोह माया घणी, एक मन ज्ञगति किम करूं त्रिज्ञुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नव नवी परिगऋे, रीश चटको चढे

लोभ्न वयरी नमे ॥ नयण रस वयण रस काम रस रसीयो, तेम अरिहंत तूं हीयमे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवस ने राति हियमे अनेरो धरूं, मूढ मन रीझवा वलिय माया करूं ॥ तूंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुःख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहंत कि णने कहूं ॥ करि दया करि मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुख करि सामि सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोतें घणुं ॥ एक अरिहंत तूं देव बीजो नहिं, एह आधार जग जाणजो अह्म सही ॥६॥ धण कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग रातो बहू ॥ जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुह्म समोवरू नहिं अवर वा ल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय सम वाणि जाणुं सदा सांभलुं, वारवर परपदामांहि आवी मिलुं ॥ चित्त जाणुं सदा सामि पाय उलगुं, किम करुं गाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ भोलिमा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये ॥ जेहने नामें मन वयण तन उल्लसे, दूरथी हूकमा जेम हियमे वसे ॥ ए ॥ भल भलो एणि संसार सहु ए अछे, सामि सीमंधरा ते सहू तुम पछे ॥ ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखियें नयण तो चित्त अरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुह्म जो कहे ॥ तुह्म पय भेटवा अति छणा टलवलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करुं, क्षीरसागर तणां दूध खडिया भरुं ॥ तुह्म मि लवा तणा सामि संदेशडा, इंद पण लखिय न शके अछे एवडा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात मुख जेटली, उपजे सामि न कहाय मुख तेटली ॥ सुणो सीमंधरा रायराजेसरा, लाभ ने कोम प्रभु

पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव भवि मोह वश नेह हुवे जेहने, समरियें एणि संसार नित्त तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल भम रो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरुं अरिहंतनुं ध्यान हियमे वस्युं, बापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं ॥ गाम जिम गरुमवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कऊा सावऊा सहु परिहरी, सामि सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहियें प्रभु पालशुं, दुःख भं मार संसार भय टालशुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में वात अरिहंत आगल कही ॥ एवमो मारी भगति जाणी करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥१७॥ कलश॥ एम ऋद्धि वृद्धि, समृद्धि कारण, दुरित वारण, सुख करो ॥ नवऊाय वर श्री, भक्ति लाभें, थुण्यो श्री, सीमंधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनवुं प्रभु, पूर आ शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति संपूर्ण ॥

॥ अथ पंजमी वृद्ध स्तवन प्रारंभः ॥

॥ प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पांचमि तप भणुं ए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचंद, केवल न्यान दिणंद ॥ त्रिगमे गहगह्यो ए, भवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥ न्यान वडुं संसार, न्यान मुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए, साचो सर्दह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुविलास, लोकालोक प्र काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किस्युं ए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु ए, किरिया देशतु ए॥ न्यानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही ए, कोम वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोल्या

सूत्र मझार ॥ किरिया वे सही ए, पण पांठे कही ए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ग्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरो ए, शंख दूधें जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पांचमि अक्षर सार ॥ जगवंत जांखीयो ए, गणधर साखियो ए ॥ ए ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि सांजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥ श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जवियणने हितकारो रे ॥ पां० ॥ १ ॥ मिगसर माह फागुण जला, जेठ आषाढ वैशाखो रे ॥ इण षट मासें लीजियें, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पां० ॥ २ ॥ देव जुहारी देहरें, गीतारथ गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति हुवे तो मंदी रे ॥ पां० ॥ ३ ॥ वे कर जोमी जावशुं, गुरु मुख करो उपवासो रे ॥ पांचमि पमिक्कमणो करो, पढो पंमित गुरु पासो रे ॥ पां० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन आरंज टालो रे ॥ पांचमि स्तवन थुई कहो, ब्रह्मचरिज पिण पालो रे ॥ पां० ॥ ५ ॥ पांच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टी रे ॥ पांच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पां० ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ उल्लालानी देशी ॥

॥ हिव जवियण रे पांचमी उजमणो सुणो, घर सारू रे वारू धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवंतां वलि दोहिलो, पुण्य जोगें रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उल्लालो ॥ सोहिलो वलिय धन पामतां पण धर्मकाज किहां वली, पांचमी दिन गुरु पास आवी कीजियें काउस्सग्गरली ॥ त्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी देइ पुस्तक पूजियें, थापना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजियें ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिद्धांतनी रे पांच प्रति वीटांगणां, पांच पूठां रे मखमल सूत्र प्रमुख तणां ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

भजीसणा, वासकूंपा रे कांबी वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥ वतरणां वारू वलीह कमली पांच झिलमिल अति नली, स्थाप नाचारिज पांच ठवणी मुहपत्ती परूपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच कोथल पंच नवकरवालियां, इण परें श्रावक करे पांचम ऊजमणुं उजवालियां ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजियें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल ढोवणुं ढोइयें, पूजानां रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥ जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश भृंगार ए, आरति मङ्गलथाल दीवो धूपधाणुं सार ए ॥ घनसार केशर अगर सूखड़ अंगलूहणुं दीस ए, पंच पंच सघली वस्तु ढोवो सगतिशुं पचवीश ए ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पांचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाडियें रात्रि जोगे रे गीत रसाल गवाडीये ॥ इण करणी रे करतां ज्ञान आराधियें, ज्ञान दरिसण रे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक मांहे ज्ञानवंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासतां सुख जे लहे, जे करे पांचमी तप अखंडित वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥ कलश ॥ एम पंचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में थुण्यो श्री अरिहंत भगवंत, अतुल बल अलवेसरो ॥ जयवंत श्री जिन चंद सूरिज, सकलचंद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर, भगति भाव, प्रशंसियो ॥ १५ ॥ इति श्रीपंचमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पंचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पछे किरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ नंदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥२॥ मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ असंख्य प्रकार रे ॥ दोय जेद मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेहनुं तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोमी पास ॥ सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोजागी साहिब मेरा वे, अरिहा सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ ए आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मो मन अधिक सुहाय ॥ पलक पलकमें पेखतां मानुं, नव नवि ठबिय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥ जव दुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा माहरां, विकस्यां अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथियां पहिले नहिं साहिया, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रजु मुखचंद विलोकित हरषित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे मनमें तुं वसे साहिब, शिवसुखनोहे ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत्तरेश व्यासीयें, वदि वैशाख वखाण ॥ आठम दिन जले जावशुं, मारी यात्र चढी परिमाण ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी

विघ्ननिवारी, परउपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारता, मोरी सफल फली सहु आश ॥ सो० ॥ श्र० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय ॥ गयवर बांध्यो बारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल जिन महारी तुम्हशुं प्रीति, सुर सकलंकितशुं मिळ्या जी, हियमुं हींसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुण खरू खावा जाय ॥ आदर साहिबनो लह्यो जी, कुण छ्ये रांक मनाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न छते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाथ ॥ कुण सुरतरुथी ऊविनें जी, बावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव अवर जो हुं करूं जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज भवो भवें जी, तुंहिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परषदा बेठी जुगी, मागशिर शुदि इग्यारश वगी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मा० ॥ २ ॥ नमिने ऊपनुं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणिक हुवे तिमहीज, पंचासनी संख्या परगडी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढशें कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथ छे ए तिथि जेवडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण पेरें गिणो, लाभ अनंत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौनपणें रह्या श्रीमल्लि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मौन तणी परि व्रत इम पडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहुरी पोसो

कीजियें, चोविहार विधिशुं कीजियें ॥ पण परमाद न कीजें घणी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजें उपवास, जावजीव पण अधिक उल्हास ॥ ए तिथि मोक्ष तणी पावणी ॥ मा० ॥ ए ॥ ऊजमणुं कीजें श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पणी ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीजें वली, पोथी पूजीजें मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजें ढूकणी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहियें सर्व ॥ व्रत पच्चखाण करो आखणी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल शोल इक्याशी समे, कीधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ समयसुंदर कहे करो याहणी ॥ मा० ॥ १३ ॥ इति श्रीएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिभुवनके स्वामी ॥ संतहि संत जपे सब कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥ शांत जपीने कीजे कांमा, सोइ कांम हुवे अभिरामा ॥ शांति ज पी परदेश सिधावे, ते कुशले कमला ले आवे ॥ २ ॥ गर्भथकी प्रभु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर शांति तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जा नरकूं प्रभु शांति सुहाई, ता नरकूं कुछ आरति नांही ॥ जो कछु वंछे सोही पूरे, दालिद दोष मिथ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योति प्रकासी, घट२ के भीतर प्रभु वासी ॥ स्वामि सरूप कह्या नवि जावे, कहितां मो मन अचरज आवे ॥ ५ ॥ मार दिया सबही ह थियारा, जीता मोहतणा दल सारा ॥ नारि तजी शिवसुं रंग राचै, राज तज्या पिण साहिब साचे ॥ ६ ॥ महा बलवंत कहीजै देवा, कायर कुंथु न एक हणेवा ॥ ऋद्धि सहू प्रभु पास लहीजै, भिक्षा हारी नांम कहीजे ॥ ७ ॥ निंदक पूजक हे सम भायक, पिण

सेवगकूं सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह भए जग नायक, नाम अर्तात सवै विध लायक ॥ ८ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै, नांम देव अरिहंत भणीजै ॥ सयल जीव हितवंत कहीजें, सेवक जांण महा पद दीजै ॥ ए ॥ सायर जैसा होय गंभीरा, दूषण नहि इक मांहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण न रहै प्रभु एकण गांमी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रभुजी सब देखे, पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीस विना बावीस परीसह, सैन्या जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मांन विना जग आंण मनावै, माया विना सबसुं मन लावे ॥ लोभ विना गुणरास ग्रहीजै, भिक्षु भये त्रिगमो सेवीजै ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणै सिर छत्र धरावै, नांम जती पिण चमर ढुलावे ॥ अभय दांन दाता सुखकारण, आगे चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल भणीजे, कर्म सवीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ थांपै, लब्ध घणी देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावै, ना किसही कूं सीस नमावे ॥ अकिंचनको बिरुद धरावे, पिण सोवन पंकज पगठावे ॥ १५ ॥ तजि आरंभ निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकूं साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा संग वारे ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अद्भुत कहिये, तेरे गुणांको पार न लहिये ॥ तुं प्रभु समरथ साहिब मोरा, हुं मनमोहन सेवक तोरा ॥ १७ ॥ तूं त्रिहुंलोकनणो प्रतिपाला, मै हुं अनाथ तूं दीन दयाला ॥ तुं सरणागत राखण धीरा, तुं प्रभु तारक है नरवीरा ॥ १८ ॥ तुम जैसें वरूभागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स वायो ॥ कर जोडी प्रभु वीनवुं तोसुं, करो कृपा जिनवरजी मोसुं ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो ताग़े, भवनायरथी पार उतारो ॥ श्रीहथणापुर मंडण सोहै, तिहां जिन शांति सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुराज पसायै, श्रीगुणसागरके मन भायै ॥ जे नर नारी इक चित गावै, मन वंछित फल निश्चे पावै ॥ २१॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जय२ जिण पास जगत्र धणी, सोभा ताहरी संसार सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण तणी ॥ १ ॥ धन२ जे न पडे जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै ॥ आसातना चउरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संभालै ॥ २ ॥ जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि कला सीखण ढूंकै, कुरलो तंबोल भखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वडी लघुनीत तणी, संज्ञा कंगुलिया दोष सुणी ॥ नख केस समारण रुधिर क्रिया, चांदीनी नाखै चांमडियां ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये कावो, खावे धांणी फूली लावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखे, नख गाल वपुषना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विहचन अपणो कर धन धरणो ॥६॥ वैसे पग ऊपर पग चढिया, थापै छाणा वडे ढूंढणियां ॥ सूकवै कप्पड पप्पड वडियां, नासीय छिपे नृप भय पडियां ॥ ७ ॥ शोके रोवे विकथा ज कहै, इहां संख्या चेतालीस लहै ॥ हथियार घडे ने पशु बांधै, तापे नांणो परखे रांधै ॥ ८ ॥ भांजो निस्सही जिनगृह पेसे, धरे छत्र ने मंडपमें वेसे ॥ पहिरे वस्त्र अने पनहो, चामर वींझे मन गंम नहीं ॥९॥ तनु तेल सचित्त फल फूल लिये, भूषण तज आप कुरूप थिये ॥ दरसणथी सिर अंजली न धरे, इगसाडे उतरासंग न करे ॥१०॥

छोगो सिरपेच मोफ जोमै, इणिये रमनै वेसे होमै ॥ सयणासुं जुहार करे मुजरो, करे भ्रंभ चेष्टा कहै वचन बुरो ॥ ११ ॥ धरे ध रणो फगमै उल्लंठी, सिर गूंथे बांधे पालंठी ॥ पसारे पग पहरे षावडि यां, पग फटक दिरावे डुखडियां ॥ १२ ॥ करदम छूटै मैथुन मंफै, जू आवलि ओंठ तिहां वंफै ॥ उघामै गुफ करै वयदा, काढे व्यापार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंघोले पीवा ठाम भरे ॥ दूषण जिनभवनमें ए दाख्या, देववंदनभाष्यमें जे भाख्या ॥ १४ ॥ सुज्ञानी श्रावग सगति छतां, आसातन टाले वारसतां, परमाद वसै कोई थावै, आलोयां पाप सहू जावै ॥ १५ ॥ तंबोल ने भोजन पांन जूआ, मल मूत्र सयन स्त्री भोग हुआ ॥ भूषण पनहो ए जघन्य दसे, वरज्या जिनमंदिर मांहि वसे ॥ १६ ॥ द्रव्यत ने भावत दोय पूजा, एहना हिज भेद कह्या दूजा ॥ सेवा प्रभुनी मन शुद्ध करै, वंछित सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥ कलश ॥ इम भव्य प्राणी भाव आंणी, विवेकी शुभ वातना ॥ जिनबिंब अरचै परी वरजै, चोरासी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थं कर अरजै, नमें जेहने केवली ॥ उवझाय श्री अमरसिंह वंदे, जैन शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री चोरासी आसातना स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणमुं ऋषभ जिनेसर पाय, धनुष पांचसै ऊंचो काय ॥ बीजो अजित जिन मुझ मन वसै, मांन धनुष साढाच्यारसै ॥ १ ॥ तीजो संभव सुख दातार, ऊंची काय धनुष सो च्यार ॥ अभिनंदन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो साढातीन ॥ २ ॥ पंचम सुमतिनाथ भगवांन, धनुष तीनसो देही मांन ॥ पदम प्रभू पूरे मन आस, देह धनुष दोयसै पच्चास ॥ ३ ॥ सामि सुपारस सतन दोय, देह प्रमांण धनुष सो दोय ॥ चंद्रप्रभु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसें ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, तंच प्रमांण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमांण धनुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयांस नमूं उल्लसी, तंच प्रमांण धनुष तनु असी ॥ वासपूज्य बारम जिन चंद, मान धनुष सित्तर सुख कंद ॥ ६ ॥ विमल२ गुणकर गंभीर, साठ धनुष जसु मान सरीर ॥ अनंत ज्ञांन अनंत प्रकाश, देह प्रमांण धनुष पच्चास ॥ ७ ॥ पनरम धरमनाथ जगदीस, मांन धनुष जस पेंतालीस ॥ शांति करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोभंति ॥ ८ ॥ सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मांन धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अ ढारम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ए ॥ मल्लि नाथ जिन उगणीसमो, मांन पच्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम मुनिसुव्रत अरिहंत, वीस धनुष तनु मांन कहंत ॥ १० ॥ इकवी सम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपें जांस दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री पारसनाथ, नील वरण साढे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो वीस, प्रणमें मद शम धरिय जगीस ॥ तो घर ऋद्धि सिद्धि उछ रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन देहमांन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ ऋषभदेव प्रणमुं जिनराय, लाख चोरासी पूरव आय ॥ बी जो अजित जनु मूंगे साख, आउ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती र्थंकर संभव तीसरो, आउ लाख पूरव साठरो ॥ अभिनंदन पूरे मन आन, आउ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम जगदीस, आउ लाख पूरव चालीस ॥ श्री पद्मप्रभुनी ए स्थिति

जांण, लाख तीस पूरव परिमांण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्श्व लाख पूरब वीस, दस लख पूरब चंदप्रभु ईस ॥ सुविधनाथ लख पूरव दोय, इक लख पूरव शीतल थित होय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी लाख, श्री श्रेयांस तणी श्रुत साख ॥ लाख बहुत्तर वरसां तणो, वासुपूज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आयु लख साठ वरीस, वरस अनंत तणो लख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद, लाख वरस श्री शांतिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस थिति पच्याणवें, श्री कुंथुनाथ तणी संभवे ॥ सहस चोरासी अर जिनतणी, मल्लि सहस पचावन भणी ॥ ७ ॥ वरस संपूरण त्रीस हजार, मुनिसु व्रत परमाउ उदार ॥ वीस सहस नमिजिन थित भणी, वरस सहस नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस बहुत्तर वीरजिणंद ॥ रुषभतणा तेरे अवतार, सात चंद्र शांतीसर बार ॥ ए ॥ सुव्रत भव नव नव नेमीस, पार्श्व वीर दस सत्तावीस ॥ त्रिहुं२ भव सतरे जगदीस, सगला भव एकसो अडतीस ॥ १० ॥ सिद्ध लही सहुने धन धन्न, गणधर चवदेसै बावन्न ॥ सहुनें मुनि लख अठावीस, सहस ऊपरे अडतालीस ॥ ११ ॥ लाख चमाल छयाल हजार, पडधिक सहु साधवी सो च्यार ॥ श्रावक लाख पचावन धुरे, अडतालीस सहस ऊपरे ॥ १२ ॥ एक कोडि श्रावका सुजगीस, लाख पांच सहस अडतीस ॥ ए संघ चतुर्विध सहु जिनतणो, रंग विनय प्रणमें हित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सारं ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु चरण कमल मन धारं, त्रेसठ उत्तम नर अधिकारं, पन्नवणसु श्रुत अनुसारं ॥ जेहने नाम लियें निसतारं, आपण सफल

हुवे अवतारं, पामीजे नव पारं ॥ १ ॥ रुषन्न अजित संन्नव अ-न्निनंदन, सुमति पदमप्रन्नु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंद्र-प्रन्नू ने सुविध शीतल जिन श्रेयांस, वासपूज्य जिन सुरमणि, विमल गुणंकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-थुनाथ अर मल्लि सुहंकर, मुनिसुव्रत नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए जिन चोवीस ॥ जग वच्छल जगगुरु जगदीस, प्रणमीजे धर प्रेम ॥३॥

॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपन गज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम न्नरत नरइंद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पांचमो शांति चक्कोस, बठो कुंथु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संन्नूमि सनाथ ॥ ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दसमो कहेस ॥ इग्यारम जय तांम, बारम ब्रह्मदत्त नांम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर बार, क्षेत्र न्नरत सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, पोहता सरग मझार ॥ ७ ॥ स-न्नूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ थया सिवगामी, ते प्रणमुं सिरनांमी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिवर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जांण, द्विपृष्ट दूसरो, तीजो स्वयंप्रन्नु जा-णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पंचम परगमो, पुरुषसिंह परमांणिये ए ॥ ए ॥ बठो पुरुष पुंमरीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नामे आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहां पहिलो वासुदेव, नारकी सातमी, अगला पांच बठी गया ए ॥ सातमो पंचमी नेर, चोथी आठमो, नवमो तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें न्नद्र, सुप्रन्नु सुदर्शन, आनंद नंदन शुन्न मती ए ॥ रामचंड बलन्नड, बलदेव ए नव, आठ थया तिहां सिव गती ए ॥ १२ ॥ बलन्नद्र ब्रह्म देवलोक,

काल उसप्पणी, जास्यै सिव कृष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक नाम. तीर्थंकर होस्ये, चवदमो इम बहुश्रुत भणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहतां काल सुखे गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नैं तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंभ वलय प्रह्लाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक गति गामिया ए, ते पिण भावि जिनेस केई प्रणमुं मुदा ए ॥ १४॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

शांति नैं कुंथु अरि एह भव एकही, चक्रधर तीर्थंकर दोय पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत भव जूजूआ, देह तिणसाठ पिण जीव गुणसठ थया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय वलदेव केरा पिता, एकहिज थाय नव एण लेखे गता ॥ तीन चक्रधर तणा त्रिजिय वारे टल्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥ तीन चक्रवर्त्ततणी टाल दीजे इसे, माय सहुनी थई साठ लेखे इसे ॥ एह नररयणनो ध्यांन नित जे धरे, तेह सुग्पद लही मोक्ष पदवी वरे ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थंकर चक्रीसर वासुदेव वलदेव ए, प्रतिवासु-देव सुलेव जेहनी करें सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सेत्रुंजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाचल सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला धर्म निवारणो, भय भंजण भगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुझ मनक लट अति घणो, सो दिन सफल गिणेस ॥ स्वामी श्री रिषभेसरु, भर नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ २ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तणे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निवाणूं वार ॥ श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानंदने, जगबंधव जगतात ॥ इण गिरचउमासे रह्या, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामे शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंमरीक ॥ पुंमरगिरि तिण कारणें, जगति करो निरभीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नें विनमि सहोदरू, विद्याधर बलवंत ॥ सेत्रुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवंत ॥ श्री० ॥ ६ ॥ थावच्चा मुनिवर सुक, सहस परिवार ॥ पंथग वयणे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पांमव पांच महाबली, मुणि जादव निरवाण ॥ ते सीधा सिद्धाचलै, सुर नर करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इम सीधा इण मूंगरे, मुनिवर कोमा-कोमि ॥ पाज चढंता सांभरै, ते प्रणमूं करजोमि ॥ श्री० ॥ ९ ॥ जे वाघण प्रतिबूझवी, ते दरवाजे जोय ॥ गोमुख यक्ष कवम मिली, सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावतां, अविचल लील विलास श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवनं लिख्यते ॥

॥ देसी गरबानी ॥

श्री सिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीमा जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेसर राया रे, जिहां पूरव निनाणूं आया रे, प्रभु समवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणो रे, पांच कोमिसुं पुंमरीक जाणो रे, जे पाम्या पद निरवाण ॥ या० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख संते रे, बे बे कोमिसुं साधु संघाते रे, एतो पोहता पद लोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ कार्ती पूनम कर्मने तोमी रे, जिहां सीधा मुनि दस कोमी रे, ते वंदो बे कर जोमी

॥ या० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटे रे, असंख्यात साधु गिर थाटे रे, पाम्या मुगति तणी ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनी परवारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पंच सेलग अणगार ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीसे रे, सीधा बहु यादववंसे रे, ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव इण गिर आया रे, सीधा नव नारद ऋषिराया रे, वली संत्र प्रद्युन कहाय ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंते रे, जिहां सीधा साधु अनंते रे, इम भाष्यो श्रीभगवंत ॥ या० ॥ १० ॥ तजाल गिर सम नहीं कोइ रे, तीरथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्यां पावन होइ ॥ या० ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त परिहारी रे, पदचारी ने भूमि संथारी रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम छहरी जे नर पाले रे, बहुं दांन सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण भय टाले ॥ या० ॥ १३ ॥ धनश् ते नर ने नारी रे, भेटे विमलाचल इक तारी रे, जइये तेहतणी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंद सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपदं ॥

॥ अथ श्री ऋषभदेव स्तवनं ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब, वीनतडी अवधारो रे ॥ जगना तारू ॥ मुझ तारो जी कृपानिध स्वांमी, जग जसवाद प्रगट छै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥ निज गुण भोक्ता पर गुण लोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥ अविनासी अविचल अविकारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज० ॥ २ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयो रे ॥ ज० ॥ तुम रीझावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ मु० ॥ काल अनंत रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पांमी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धरथा दुख धामी रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि वली नरकतणी गति, पंचेंद्रीपणो धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंडक मांहि भमियो, अब तो हूं पिण हारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ भव नाटक नित करतो नव नव, हूं तुझ आगल नाच्यो रे ॥ ज० समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, निरखी तुझने याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझ्या, तो मन वंछित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीझ्या तो मुझ भाखो, वलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥ लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं दुखमा नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता सेती सुंम भलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥ तुझ सरिखा साहिब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ज०॥ तो मुझ करमतणी गति अवली, दोस न कोइ तुमारो रे ॥ ज० ९ ॥ मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सहु नाणी रे ॥ ज० ॥ सुगुण सेवकना वंछित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥ ज० ॥१०॥ मु०॥ वर्ष अढारे गुणतालीसे, ज्येष्ट सुदी सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन भेट्या, बीकानेर मझारो रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवनं ॥

॥ वीर सुणो मोरी वीनती, करजोडी हो कहुं मननी वात ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिभुवन तात ॥ वी० ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हूं भम्यो, भव मांहे हो स्वामीसमुद्र मझार ॥ दुख अनंता में सह्या, ते कहितां हो किम आवे पार ॥ वी० ॥ २ ॥ पर उपगारी तूं प्रभु, दुख भंजे हो जग दीनदयाल ॥ तिण तेरे चरणे हूं आवियो, स्वामी मुझने हो निज नयण निहाल ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वाम ॥ हुंनो परम भक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं ढीलनो कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिबूझव्या, जिण कीधा हो तुझ ने उपसर्ग ॥ डंक दियो चंडकोसिये, तैं दीधो हो तसु आठमो सर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहीण घणो, जिण बोल्या हो तोरा अवरणवाद ॥ ते बलतो तैं राखीयो, सीतललेस्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छै इंद्रजालियो, इम कहता हो आयो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तैं कियो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, ते झगड्या हो तुझ साथ जमाल ॥ तेहनें पिण पनरे भवे, शिवगांमी हो तैं कीधो कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिष जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल ॥ तिरती मूंकी काचली ॥ तैं तारयो हो तेहनें ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दूहव्यो, चित चूको हो चारितथी अपार ॥ एकावतारी तेहने, तैं कीधो हो करुणा भंडार ॥ वी० ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूंकी हो संजमनो भार ॥ नंदिषेण पिण उधरयो, सुर पदवी हो दीधो अति सार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते पिण आद्रकुमारनें ॥ तैं तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणक रांणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह ॥ समवसरण साधु साधवी, तैं कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ विरत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसो हो नहीं आदर दीख ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तैं कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तैं उधरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥ सार करो हिव माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तेहवो हो मुझ दरसण ज्ञान ॥ पिण आधार छै एतलो, इक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

वी० ॥ १६ ॥ मेह मदितल वरसतो, नवि जोवे हो सम विखमी ग्राम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंछित कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो दुख जाये दूर ॥ तुम नांमे वंछित फलै, तुम नांमे हो मुझ आनंद पूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मंडन, तीर्थंकर चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह लंछन, सेवतां सुरतरु समो ॥ जिनचंद त्रिसलामात नंदन, सकलचंद कला निलो, वाचनाचारज समयसुंदर ॥ संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री महा वीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ ढाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करूं अरदास जी ॥ तारण तरण विरुद तुझ सांभलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥ इण संसार समुद्र अथागे, भमियो भवजल मांहि जी ॥ गलगिचिया जिम आयो गिड़तो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं ज्ञानी तो पिण तुझ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंडक हूं भमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते नरकतणो इक दंडक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच थावर में तीन विकलेंद्री ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतषी ने वैमानिक, इम दंडक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंद्री तिर्यंच अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवांमें ऊपजै, इम देवां गति होय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आउखे नर तिरि, निश्चै देव ज थाय जी ॥ निज आउखे सम के हीने, पिण अधिके नवि जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ भवनपती के व्यंतर मांहे, सम्मूर्छिम तिर्यंच

जी ॥ सरग आठमां तांइ पोहचै, गरभज सुकृत संच जी ॥ पू०॥ ॥ ८ ॥ आउ संख्याते जे गरभज, नर तिरजंच विवेक जी ॥ बादर पृथ्वी नें वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ए॥ पर्यापता इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पांचा मांहे पिण आगे, अधिकाई कहुं हेव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी मांमी सुर, एकेंद्री नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला, मानवमांहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परें, जीव भमै संसार॥दोय गति नें दोय आगत जांणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ संख्याते आयु परजापता, पंचेंद्री तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहिज वे नरकमें, जायै पाप प्रपंच ॥ न० ॥ १३॥ प्रथम नरक लग जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम बीय ॥ गृद्ध प्रमुख पंखी त्रीजी लगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४॥ पंचमी नरकै सोमा सापणी, छठि लग स्त्री जाय ॥ सातमियें माणस के माछलो ॥ ऊपजे गरभज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे बिहुं दंडकें, तिरयंच के नर थाय ॥ ते पिण गरभज ने परयापता ॥ संख्याती जमु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकियां ने नरकथी नीसरघा, जे फल प्रापति होय ॥ उत्कृष्टे भांगे करते कहुं, पिण निश्चे नही को य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्त्ति हुवे, बीजी हरि बलदेव ॥ तीजी लग तीर्थंकर पद लहे ॥ चोथी केवल एव ॥ न० ॥ ॥१८॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहे, छठि देसविरत्त ॥ सातमी नरकनो समकितहीज लहे, न हुवे अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मानव गति विन मुगति हुवे नही रे, एहनो इम अधिकार

॥आउ संख्याते नर सहु दंमके रे, आदी लहे अवतार॥मा०॥२०॥ तेउ वाऊ दंमक वे तजी रे, बीजा जे बावीस॥ तिहांथी आया आवे मानवी रे, सुख दुख कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच असं खी आवे रे, सातमी नरकना तेम ॥ तिहांथी मरने मनुष्य हुवे नही रे, अरिहंत जाख्यो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव तथा वली रे, चक्रवर्त्ती ने अरिहंत॥ सरग नरगना आया ए हुवे रे, नर तिरिथी न हुवंत ॥ मा० ॥२३॥ चोविह देव थकी चवि ऊप जे रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थंकर ए हुवे रे, वैमानिकथी देव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ नाभि थने मरुदेवा ॥ ए देशी ॥

हिव तिरयंच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमे इण पर जव मांहे करम विशेष ॥ आउ संख्यातो जे नर तिर्यंच निचार, ते सगला तिरयंचा मांहे लहे अवतार ॥ २५ ॥ जिण तिरयंचा मांहे आवे नारक देव, ते कह्या पहली तिण कारण न कहूं हेव ॥ पंचेंडी तिर्यंच संख्याते आऊखे जेद, ते मरी चिहुंगतिमां जावे इहां नही संदेह ॥ २६ ॥ थावर पांच तीने विकलेंडी आठ कहावे, तिहांथी आउ संख्याता नर तिरयंचमें आवे॥ विकल चवी लहे सरवविरति पिण मुगति न पावे, तेउ वाउथी आयो तेहने समकित नावे ॥ २७ ॥ नारक वरजीनें सगलाही जीव संसार, पृथवी आउ वनस्पतीमांहि लहे अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि आवे दसे ठामे, थावर विकल तिरी नरमांहे उतपत पामे ॥२८॥ पृथवीकाय आद देई दस दंमके एह, तेउ वाऊ मांहे आवी ऊपजे तेह ॥ मनुष्य विना नव मांहे तेउ वाउ वे जावे, विकलेंडी ते दसमांहि जावे पूठाही आवे ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्यात्वी जीव एकंत, वनस्पती मांहे तिहां रहियो काल अनंत ॥ पुढवी

पाणी अगनि अनै चोथो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ जीव रहाय ॥ ३० ॥ बेइंद्री तेइंद्री अने चौरिंद्री मझारै, संख्याता वरसां लगै भमियो करम प्रकारे ॥ सात आठ भव लगि तां नर तिरयंचमें रहियो, हिव मांनवभव लहिनें साधुनें वेषमें रहियो ॥ ३१ ॥ राग द्वेष छूटे नही किम हुवै छूटकबार, पिण छे माहरै मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्धे अरिहंत लाधो, हिव संसार घणो भमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥ तूं मन वंछित पूरण आपद चूरण सांमी, ताहरी सेव लही तो मैं नवनिध सिद्ध पांमी ॥ अवर न कांइ इछू इण भव तूंहिज देव, सूधै मन इक होज्यो भव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेसल, मेर महिमा दिन दिनें ॥ संवत सतर गुणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चंद समान वाचक, विजय हरष सुसीस ए ॥ श्री पासना गुण एम गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मिच्छामिदुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमूं रे पास जिनेसर थंभणो ॥ ए देसी ॥

पद पंकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पडिक्कमी जिम इरियावही, श्री वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लालो ॥ सरदही वांणी मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मिछामिदुक्कड तणी संख्या, कहिसुं जिम कहे केवली ॥ भू दग जलण तिम वाउ, वणसइ विगल पण इंद्री तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, दुर ते कहिवा भणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुढवि दग रे वाउ तेउ वणस्सइ, पण थावर रे बादर सुहम दसे थई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, बावीसे रे पज्जत्तग अपज्जत्तया ॥ उल्लालो ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग वखाणया, विगल तिय ठह जाल ए ॥ जल थल खचर भुयंग उर, पण इंद्रिय तिरि अम्पाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुरुवी, नारकी तिहां सात जे ॥ ते चवद भेदे करी जाणो, पज्जत्तय अपज्जत्त जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा हम्मिया, किलविषिया रे त्रिविध करम ते निम्मिया ॥ जंभिय दस रे नव लोगंतिक जांणियै, सोलह विध रे व्यंतर देव वखाणियै ॥उल्लालो॥ वखाणियै दस विध भुवनपतिना, तार रवि ससि रिसिगहा ॥ चर थिर दसे विध जोइसी सुर, वखाणया जिनवर जिहां ॥ बारह विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवेके नव भणया ॥ पज्जत्त अपज्जत्तग अठाणूं, अधिक सत संख्या गिणयां ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मेघ आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचभरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर भूमिका ए ॥ खेत्र ए पनरह करम भूमि जाणीयै असि कसि मसिहि आजीविकाए ॥ हेमवत खेत्र वलि तिम हरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए॥मेरुपिण पाखती चारि श खेत्र दस कुरु अकरम भूमीकहीए॥ ४ ॥ हिमगिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुद्रमांहि विस्तरीए ॥ सात २ अंतर दोय पासे दीप छप्पन्न अन्तर धरीए ॥ तेइसे भेद उड आगला जांणी मणुय पज्जत अपज्जत्तयाए॥ एक सौ एक समुर्छिम भेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवलहू छे एह अभिहय आदिक दस गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस छसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥ ते रागे दोसै दुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ दुइ सहस इग्यारह दुइसय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो जिनवर आण ॥मन-

वंच काया करि त्रिगुणाकरि त्रिअंक ॥ तेतीस सहस सत सात-असी निःशंक॥ ७ ॥ वलि करण करावण अनुमति त्रिगुण किद्ध॥ इकलक्ख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत वर्त्तमान वलिकाल जे थइयविराधना तिणि त्रिगुण संज्ञाल ॥ ७ ॥ तीन लाख सहस च्यार वेसै अधिक तेथाय ॥ अरिहंत प्रमुख वद साखे ब्गुण जाय ॥ इम लाख अढारह वलि सहस चउवीस ॥ इकसो वीसोत्तर हुइ संख्या निलदीस ॥ ए ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिछामि डुक्कडं देई भविक तरया भवजल नि धिकेई ॥ तरे अछै वलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम करि निरमल ॥ सें मुखभाषे वीर जिणेसर ॥ सूत्रकरि गूंथे ते श्रुतधर ॥ ११ ॥ इम पडिक्कमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केवल पदपत्तो ॥ त्रिकरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुहंकरो ॥ तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंधरो ॥ उवझाय लक्ष्मी किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लब्धिवल्लभ तवन करि इम संथुणयो भावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिछामि डुक्कड संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥दोहा॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, जगदीपक जिनराज॥ वस्तु-तत्त्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्त भंग रचना विना, बंधन

वेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे गम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एहं गज, ग्रही अवयव अकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नयें करी, जुगति योग शुद्ध बोध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्याद्वाद शुद्ध रुप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ ६ ॥ ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥ काले ऊपजै विणसे कालै, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री०॥ काले गर्भ धरै जग वनिता ॥ कालै जनमे पूत रे ॥ काले बोलै कालै चाले, कालै झाले घरसूत रे ॥८॥ कालै दूधथकी दही थायै, काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावे, अंत करे वे वाक रे ॥ ए ॥ श्री० ॥ जिन चउवीसे बार चक्कवे, वासुदेव बलवंत रे ॥ काले कवलित कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥ ॥ श्री० ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पणी आरा, छै छै जूजूये भांते रे, षट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ भिन्न२ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री०॥ कालै बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ वृद्धपणे हुय बलि२ दुर्बल, सकत नहीं लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ ढाल ॥ २ री ॥ गिरुश्रा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तब स्वभाववादी वदे जी, काल किसुं करै रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निस्संक ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारी जुओ २ वस्तु स्वभाव ॥ ए आंकणी ॥ छते योग योवनवतीजी, वांझणि न जणै बाल ॥ मूछ नहीं महिला मुखे जी, करतल ऊगै न वाल ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण स्वभाव नवि संपजे जी, किमह पदारथ कोय॥

अंब न लागे नींबमें जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु०॥ मोरपं.छ कुण चीतरे जी, कुण करे संध्यारंग ॥ अंग विविध सब जीवना जी, सुंदर नयण कुरंग ॥१६॥ सु० ॥ काटा बोर बंबूलना जी, कुणें अणि-याला कीध ॥ रूप रंग गुण जूजूआ जी ॥ तस फल फल प्रसिद्ध॥ ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसहर मस्तकें नित वसे जी, मणि हरै विस ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरध अगननी झाल॥१८॥ ॥सु० ॥ मछ तुंब जलमां तिरे जी, बूडै काग पाहाण ॥ पंख जाति गयणे फिरे जी ॥ इण परे सहिज विनाण ॥ १ए ॥सु० ॥ वाय सुंठथी उपशमें जी, हरडे करे विरेच॥ सीझे नही कण कांगडो जी॥ सकल स्वभाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषे काठनो जी, भुंयमां थाये पाखाण ॥ संख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमांण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो ससि सीयलो जी, भव्यादिक बहु भाव ॥ षट् द्रव्य आपापणा जी, न तजे कोइ सुभाव ॥ ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देसी ॥

काल किसुं करे बापडो रे, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो न होय भवतव्यता जी, तो किम सीजे कज्ज रे ॥ २३ ॥ प्रांणी म करो मन जंजाल, ए तो भावी भाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ जलधि तरे जंगल फिरे जी, कोडि यतन करे कोय ॥ अणभावी होवे नही जी, भावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥ आवे मोर वसंतमां जी, झाले केइ लाख ॥ खरपा केइ खाखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ बाउल जिम भव तव्यता जी, जिण जिण दिसे उजाय ॥परवस मन मानवतणो जी, तृण जिम पूठे धाय रे ॥प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसे विण चिंतव्युं जी, आवी मिले ततकाल ॥ वरमां सोनुं चिंतव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ आठमो चक्री सुभूमिते जी, समुद्र पड्यो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हरे गोवाल रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करे जी, किम राखीस रे प्राण ॥ आहेडी सर ताकियो जी, ऊपर भमें सीचाण रे ॥प्रा० ॥२९॥ आहेडी नागे डस्यो जी, बांण लग्यो सींचाण ॥ कोकूहो ऊडी गयो जी, कोइ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सस्त्र हण्या संग्राममां जी, रात पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांहे मानवी जी, राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ मारुणी मनोहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वभाव नियत मति कूडी, करम करे ते थाय ॥ करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव भवंतरे जाय ॥ ३२ ॥ चेतन चेतज्यो रे करम न छूटे कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें राम वस्या वनवासें, सीता पामी आल ॥ कर्में लंकापति रावणनुं, राज्य थयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर ॥ कर्में नर गुणवंत ॥ कर्में रोग सोग दुख पीडित, जनम जाये विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्में वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में जिननें जोउ निमा रे, खीला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥ ॥ चे० ॥ कर्में एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय चढया चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम मांनी अंधतणी पर, जग हींडे हाहूतो ॥ कर्म बली ते लहे सकल फल, सुखभर सेजे सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंदर एके कीधो उद्यम ॥ करंडीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूखो, नाग रह्यो सलफोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूषक तसु मुखमां, दीधे आपणुं देह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारया, कर्म मर्म जोवो एह ॥ चे० ॥ ३९ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥ नो चाढियो घन मान गजे ॥ ए देशी ॥

हिव उद्यमवादी जणे ए, ए ध्यारे असमञ्ज तो ॥ सकल पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरछ तो ॥ ४० ॥ उद्यम करतां मानवी ए, स्युं नवि सीझै काज तो ॥ रामें रयणायर तणी ए, लीधो लंका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरे ए, जेहमां सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिन पैसंता जोय तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम करतां इक समें ए, जेह न सीझै काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि करयां विना ए, नवि रंधायै अन्न तो ॥ आवी न पडे कोलियो ए, मुखमां छेपे जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्म्मनो मर्म्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र हार हत्या करी ए, कीधा पाप आरंभ तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ४७ ॥ टीपे२ सरवर भरे ए, कां करे २ पाल तो ॥ गिर जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलबिंदुउ ए, करे पाहाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणै ए, उद्यम जोडै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ ए देसी ॥

ए पांचेही वाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय रसैं जिन वयण सुणीनें, आणंद अंग न मावे रे ॥५०॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥ ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जांणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ ए पाचें समवाय मिल्यां विन, कोइ काज न सीझै ॥ अंगुल जोगे

कवल तणी पर, जे बूझै ते रांझै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी कोइ एकनें, एहमां दिये वडाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणांगण, जीते सुभट लडाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावे, काल क्रमें वणाई ॥ भवितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सवल सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म थईनें, निगोदथकी नीकलियो ॥ पुण्यें मनुज भवादिक पांमी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे प्रा० ॥ ५५ ॥ भवथितनो परपाक थयो तव, पंडित वीर्य उल्लसियो ॥ भव्य स्वभावे शिवगति गांमी, शिवपुर जइनें वसियो रे ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्द्धमांन जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गावो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्याद्वाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्षे हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सुरिंद पटधर, विजयप्रभ मुणिंद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक सीस इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च समवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ पंचणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार, आणी भाव अपार ॥ चवदे गुण थानक सुविचार, कहिस्युं सूत्र अरथ मन धार, पांमे जिम भव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात कह्यो गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आंणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चोथो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमांणो, छठो प्रमत्त

पिठाणूं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजे, अष्टम अपुरव करण कहीजै, अनिवृत्ति नांम नवम्म ॥ सुखम लोभ दसम सुविचार, उपशांत मोह नांम इग्यार, खीणमोह वारम्म ॥ ३ ॥ तेरम सयोगी गुणधांम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणूं प्रथम विचार॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म्म वखाणे, ए लक्षण मिथ्या गुणठाणै, तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकांत मिथ्यामती ते कहे ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहे रहे विकलप घणें, संस यी नाम मिथ्यात चोथो भणे ॥ ६ ॥ समक नहीं काय निज धंद रातो रहे, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहे ॥ एह अनादि अ नंत अभव्यनें, करिय अनादि थिति अंतसुभव्यनें ॥ ७ ॥ जेम नर खीर घृत खंम जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि स्वाद केहवो गमें ॥ चोथ पंचम छठे ठाण चढने पके, किणहि कषाय वस आय पहले थके ॥ ८ ॥ रहे विच एक समयादि षट आवली, लहीय सासादनें थित इसी सांभली ॥ हिव इहां मिश्र गुणठाण तीजो कहे, जेह उत्कृष्ट अंतरमहुरत लहे ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी नांम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकित, कैतो सादि मिथ्यामती ए ॥ ए वेदिज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, मर दक्षणा बेऊं वती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय मांहि, मरण लहे नहीं, आउ बंधनपणे नवो ए ॥ के तो लहे मिथ्यातके समकित लहे, मति सरखी गति परभवेए ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान, उदय करी लहे, मति विन किहां समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणठाण, तेत्रीस सागर, साधिक थिति एहनी भणी ए ॥ १२ ॥ दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥ सहु जिन वचन प्रमांण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुद्गल अरधतां, उत्कृष्ट भव में रहै ए ॥ केइएक भेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद लहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण वलि मोहनी, मिथ्या मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते क्षय कीध, ते नर क्षायकी, तिणहिज भव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बांध्यो आऊ, तौतें तिहां थकी, तीजे चोथे भव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणठाण, प्रगटे चोकरी प्रत्याख्यान ॥ जेस तजेवा वीस अभक्ष, पांम्यो श्रावकपणो प्रत्यक्ष ॥ १७ ॥ गुण इकवीस तिके पिण धारै, साचा बारै व्रत संभारै ॥ पूजादिक षट् कारज साधै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आर्त्त रौद्र ध्यान है मंद, आयो मध्य धरम आणंद ॥ आठ वरस ऊणी पुव्वकोड़, पंचम गुणठाणे थित जोड़ ॥ १९ ॥ हिव आगे साते गुणथान, इक २ अंतरमहुरत मांन ॥ पंच प्रमाद वसे जिण ठाम, तेण प्रमत्त छठो गुणधांम ॥ २० ॥ थिवरकलप जिनकलप आचार, सावै षट् आव-स्यक सार ॥ उद्यत चोथा च्यार कषाय, तेण प्रमत्त गुणठांण कहाय ॥ २१ ॥ रूंधो राखै चित्त समाधे, धरम ध्यान एकांत आराधै ॥ जिहां प्रमाद क्रिया विध नासे, अपरमत्त सप्तम गुण भासे ॥ २२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर उडै दोय पंखिया ॥ ए देसी ॥

पहिले अंसे अष्टम गुणठाणातणें, आरंभे दोय श्रेण संस्थेपै

ते गयें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवे उपशमी, क्षपकश्रेणि क्षायक प्रकृति दस क्षय गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम अपूरव गुण लहै, अष्टम नांम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुक्ल ध्यांननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणांम अडिग ध्याने धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जांणिये, जिहां भाव थिररूप निवृत्ति न जांणिये ॥ क्रोध मांन ने माया संजलणा हणें, उदै नही जिहां वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहां रहै सुखम लोभ कांइक शिव अभिलखै, ते सूखम संपराय दसम पंडित अखै ॥ संत मोह इण नांम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण ठांम सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढ्यो जो काल करै किणही परें, तो पावै अहमिंद अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि करै संसारमें, एक भवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥ चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरध पुदगल रडै ॥ क्षपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी बारम्म चढै ध्यांने रही ॥ २८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागध आयो पुरंदर पास ॥ ए देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो बारम जाण, मोह खपायो नेडो आयो केवलज्ञांन ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात, हिव आगे तेरम गुणथांन तणी कहे वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकडी क्षय गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिच्यासी जेहने जूना कप्पड जेम ॥ दरसण ज्ञांन वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान प्रगट थयो विचरे श्रीभगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी ठानी परगट वात, महिमावंत अढारे दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे ऊणी कही इक पूरवकोडि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए थिति जोडि ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरूंध्या मन वच काय, तेण अयोगी

अंत समय सहु प्रकृति खपाय ॥ पांचे लघु अक्षर ऊचरता जेहनो मांन, पंचम गति पांमें सिवपद चउदम गुणथान ॥ ३२ ॥ त्रीजे बारमें तेरमें मांहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चोथो परन्नव साथे होय ॥ नारक देवनी गति माहे लान्नै पहिला च्यार, धुरला पांच तिरी मांहि मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर बाहड़ मेरु मंमण, सुमति जिण सुपसाउलै ॥ गुणठाण चवद विचार वरण्यो, न्नेद आगमनें न्नलै ॥ संवत सतरैसै बत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरष सानिध, कहै मुनि इम धर्मसी ॥ ३४॥ इति श्री चवदै गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिहंतनें, सिद्ध सुरि उवझाय ॥ साधु सकल प्रणमी करी, प्रणमी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव तत्वनी, गाथा न्नासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधे, कहिस्युं सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निर्जर बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल बयासी वलि बायाल, सत्तावन बारै सौ नव क्रम न्नेदनी माल ॥ १ ॥ इग उ ति चौविह पणविह उबिह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे काय ॥ एगेंदी सुखम बादर ए दोय लिय गण, सन्नि असन्नि पणिंदी बि ति चौरिंदी आण ॥ २ ॥ ए सग पज्जत्ता अपज्जत्ता चवदै होय, अनुक्रम जीव ठाण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण दंसण चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए पम लक्षण सकत जीव द्रव्य हैद लोग ॥३॥ इग आहार सरीर इंदिय पज्जत्ती तीन, सासोसास

भाषा मन पद ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगेंद्री पंच पज्जत्ती विगलें जोय ॥ पंच असन्नि सन्नि तें षट पज्जत्ती होय ॥४॥ इंद्रिय पांच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार छ सात आठ एगिंदी विगलें जाण ॥ असन्नि सन्नि पंचेंद्री नें नव दस क्रम थाय, प्राणाथी जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तीनूं ना त्रिण२ भेद, काल दसम इग आगास पुग्गल च्यार विछेद ॥ खंधा देस पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुग्गल नभ काल ए पांच न जीव ॥६॥ चलण सहाई धम्में थिर संठाण अधम्म, अवगाहें पूरण गलणें नभ पुग्गल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें साल पल्योपम सागर उसप्पणी सप्पणी काल॥७॥पट इग दो सग सग सग पट इग अंक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊसासें माण, केवलनाणी भणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ साता उच्च गोय मणु सुर दुग पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति सरीर उवंग कहाय ॥ आदि संघैण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आतप नें उज्जोय ॥ ९ ॥ सुभखगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल, सुर नर तिरि आऊ तित्थंकर पुण्य बयाल ॥ तस बादर पज्जत्त पत्तेय थिरं सुभ सोय ॥ सुभग सुसर आइज्ज जसें त्रस दसको होय ॥ १० ॥ नाणंतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मिथ्य थावर दशनादग त्रिक पचवीस कसाय ॥ निरियं च दुग एगेंद्री वि ति चोरिंद्री तेय, कुखगइ उपघा अपसत्थ वरण चौ भेयं ॥ ११ ॥ पढम संघयण विना संघेण तेम संठाण, एम बयासी प्रकृति पाप तनी ए जाण ॥ थावर सुहम अपज्ज साहारण अथिर गेय, असुभ दुभग दू सरणा इज्ज अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय इंदि कसाय अव्रय निम जोग आयालीस सेव पच्चीस किया संजो

ग ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणातिपात आरं जकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यय मिछादंसण वसी तेम,, अपच्चखाणकी दि० पु० पाडुच्चिय जेम ॥ सामंतो पनवणि य ने सत्थि सहत्थे जेह, आज्ञापनकी वेयारण अणाभोगा तेह ॥ १४ ॥ अणव कंख पंचेर्यनी भवभंगी समुदाय, प्रेम द्वेष इरियाव ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिसहज ६ धम्म भाव स चारित्त, पणतिग बावीस दस बारे पण संवर तत्त ॥ १५ ॥ इ रिया भाषा एषणा सुमतीना भेद होव, आदान भंड उच्चार नि क्खेवण पांचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती त्रिण जांण, हि व आगे बावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ भूख पिपासा सीत उसन डांसा निरवत्थ, अरति जोषा चरिआ नेदिया सिज्जा सत्त ॥ अक्कोसवहजायणा अलाभ रोग त्रिण फास, मल सक्कार य न्ना अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ खंति मद्दव अज्जव मुत्ती तव संजम सम्म, सत्यं सोच अकिंचन बंभचेरज ६ धम्म ॥ पढम अ नित्य असरण संसार एग अनत्त, असुचि आश्रव संवर निज्जर भ वि भावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुभाव बोध दुरलभ इग्यारम गाम, धरम साधक अरिहंत ए बारे भावना भाव ॥ सापायक छेदोप स्थापन बीजो सोय, परिहार विशुद्ध सूखम संपराय चउत्थो जोय ॥ १९ ॥ तिम अहखाय चरित्त सरब जिय लोग प्रसिद्ध, जेह सु विधि आचरणें के जिय पांम्या सिद्ध ॥ बारे विध निर्ज्जर तत्व बंध ना च्यार प्रकार, प्रकृति ठिइ अनुभाग प्रदेस भेदें निरधार ॥२०॥ अणसण ऊणोदर वृत्ति संखेप रसनो त्याग, काय कलेस सल्लीनता बाहिर तप षट भाग ॥ पायच्छित विनय वेयावच्च तेम सिज्झाय, ध्यान काउसग्ग अभ्यंतर तप षट विध थाय ॥ २१ ॥ प्रकृतिसु भाव काल अवधारण थित निरबंध, अनुभागे रस तेम प्रदेसे दल

नो संच ॥ पट प्रतिहार धार तग्वार मद्य वलि तेम, निगड चित्र कर कुंनकार नंमारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना नाष्या जे जे नाव, तिम ज्ञानावरणादिक अमना एह सन्नाव ॥ इम संखेप विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावे पाम्यो वरण वस्युं हिव मोख तत्त ॥ २३ ॥ संत पदे परूपण इव्य नें खेत्र प्रमाण, फरसन काल पांचमो उठो अंतर जाण ॥ नाग सातमो नाव आठ तिम अलप बहुत्त ॥ ए नव नेदें नावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक पदवी ठे जे पदेअविनान्नाव, व्योम कुसुम तिम ससिक शृंग जिम नहीय अन्नाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण द्वार, विवरण कर वरणवस्युं सुणज्यो सुहुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्ते क्षायक सन्नी असन्नी पेसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी क्रपक्ष ड्व्य प्रमाणे सिद्ध जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम नाग एग सिद्ध होय अणंत ॥ २६॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपातां नावे नहि सिद्धां अंतर जोय, सरव जीवथी नाग अनंतम सहू सिद्ध होय ॥ २७ ॥ दंशण नाण जेहने बे ते क्षायक नाव, जीवत जेहनें वलि परणामक नाव समाव ॥ सहुथी थोमा वेद नपुंसकथी जे सिद्ध, तेहथी थीनर अनुक्रम संख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक नव तत्त तस सम्मत्तं, अणजाणंताने हुय जे सग्वा नेरत्त ॥ सरव जिनेसर मुखथी नाष्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत निश्चल तत्थ ॥ २९ ॥ अंतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अर्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम संसार निमित्त ॥ उसप्पणिय अणंते इग पुग्गल परियट्ट, अनंत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३० ॥ इम नव तत्त नेद परिछेदें विवरण कीध, श्रावक आग्रह कीन सदाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गण मुन्न मदन प्रकास नदी उपमान,

श्रीजिनलाभचंद कुल पूनमचंद समान ॥ ३१ ॥ श्रम्यानादिक करिवर सिंदे वथरो साख, रत्नराजमुनि ते वमसाखानी पमिसाख ॥ ग्यानसार ते पमिसाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे विनाणें गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवछर निश्चय नय विगई प्रवचन माय, परम सिद्धि पद वाम गते ए अंक गिणाय ॥ माघ किसन ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा जज नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ ऋषभादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥ दंमक रचनायें तवुं, संखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंमक प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें थणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आउ तेउ वलि, वाउ वणस्सइ काय ॥ बि ति चौरिंदी गब्भचर, तिरि नर तिहां मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस वेमाणिया, ए दंमक चोवीस ॥ एहना द्वार कहूं हिवै, गणनायें ते वीस ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाहणा संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग, उपपात वलि चवण ठिई पज्जत्ति प्रयोग ॥ १ ॥ केहिमिनोआहार सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा त्रगनो ए अरथ कह्यो संक्षेप ॥ हिव तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुचो हुं तेहथी कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ देसी गूरनी महीनानी ॥

चौ गब्भय तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य में पांच दंमक इगवीस रह्या ति सरीर ॥ थावर च्यारनें जघन्य उक्कोसे देह

प्रमाण, भाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो जघन्य स्वभावक अंगुल भाग संख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने विख्यात ॥ सुरनो सात हाथ गभ्रय तिरि वणस्सय काय, जोयण सहस साधक इक सहस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइंदि तिगाउ बेइंदी जोयण बार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंभ काले वैक्रिय देहनो ए परिमाण, भाग एक इग आंगुलनो संख्यातम जांण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख, नवसै जोयण तिरयंचने ए सूत्रे साख ॥ सामावकथी दुगणो नारक वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥ सुरनें पक्ष एक उक्कोसविउवण काल, विगल संघयणो थावर सुर नारकनी माल ॥ गभ्रय नर तिरनें षट विगलनें छेवट एक, सर्व जीवनें च्यार दसेसणाये लेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें षट सुरनें समचौरंस संठाण, हुंडग इग नारग विगलेंडी सूत्र प्रमाण, नाणाविह धयसूईमसूरनी चंद आकार, वणसइ वाऊ तेऊ भू बुदबुद अप्पाकार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गभ्रय षट नर तिरि होय, वेमाणिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस रह्या ने च्यार, हार इंद्रियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥ समुद्घात सग नरनें पण गभ्रय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार भसनें तीनुं भेव ॥ दिठी दोय विगलमें थावरने मिथ्यात, सेसने तीन दिठि जिम प्रवचनमें विख्यात ॥ ८ ॥ थावर बि ति नें एक अचक्खू दंसण होय, चौरिंडी ते चक्खू अचक्खू दंसण होय ॥ मनुजनें च्यार सेस दंडगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर नारगनें तीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो नाण अनाण, गभ्रय मणुनें तीन अनाणनें पांच नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें तेरे जोग, मनुजनें पनरे च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाऊकायनें पाच तीन थावर संयोग, मनुजने वार नरग तिर देवनें नव उपयोग ॥ विगल दुगै पण पम चौरिंद्री थावर तीन, उववायं इग चवण दार दोनुं सम कीन ॥ ११ ॥ एग समै संख्यात असंख्या चवण पपात, गम्भय तिरि विकलेंद्री नारय सुरनी ख्यात ॥ मणुआ अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज असन्नी असंख चवंत तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस सहस उक्किठ, वणस्सई ज्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पल्य सुर नारग अयर तेतीस, व्यंतर पल्य अधिक लख वरष पल्य जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिक दसनें इक सागर अधिको आय, देसैं ऊणा दोय पल्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास दिवस छम्मास ॥ अंतमुहुत्तजहन्न पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥ भुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पल्य तेना अमंस वेमाणिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें षट थावरनें च्यार ॥ विगलनें पंच पज्जत्ती ए अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय छए दिवसनो आहार ॥ होय नें होय पंचादिक दिस ए सव मझार, दीह कालकी चौविह सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पएसा सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गम्भय मणुजनें दीठ कालकी सन्ना होय, केइक आचारज कहे दिठिवायथी होय ॥ निश्चय पज्जत्ता पंचिंद्रि तिरि नर जेह, चौविह देवां माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥ संखाउपज्जत पंचेंद्री तिरि नर तेम, पज्जत्ता भू दग पत्तेय वणस्सई जेम ॥ ए त्ररयेमें निश्चे सुरनी आगति हुंति, पज्जत्त संख गम्भय तिरि नर सग नरके जंत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर उपजै न हुवे सेस, भू अप्प वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस॥ पुढवाई दस पयमें भू आऊ वणा जंनि, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ उपजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पर नवमें हुंत, पुढ-

वाई दस पदमें विगल जावंत आवंत ॥ सहुमें तिर गति आगति मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊथी मरीने जीव मनुज नवि थाय ॥ २० ॥ थीपुरसे चोविह सुर तिरि नर तीनूं वेद, थावर विगल नारकनें एक नपुंसक भेद ॥ पज्जत्ता मणु बादर अगन वेमाणिक तेम भवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एम॥ २१ ॥बेइंद्री तेइंद्री पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्सइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥ हे जिन ए सहु भावमें पांम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणतां किमही न आवे अंत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दंडगमें ते गति संयोग, लाधो नही तुह दंसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण दंसण लहि विरत न पांमी मूल, ते सुर जात सहावे देसविरत प्रतिकूल ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेहथी तुह दरसणनो किंचित पांम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥ खरतर गछ भट्टारक श्रीजिनलाभ सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना पद अरविंद ॥ रज मकरंदे लीनो ग्यानसार तसु सीस, तेण तव्या तेवीस दार दंडग चोवीस ॥ २५ ॥ संवत्त ससि रस वारण तेम चंद निरधार, पोस मास पख उज्जल सातमनें सोमवार ॥ श्रावक आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अठम चौमासो कर जैपुर नगर मझार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंडग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविचार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दुहा ॥ भुवन प्रदीपक वीर नमि, किंचित् जीव सरूप ॥ कहस्युं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

एक सुगति बीजा संसारी जीव दु भेद, सगा जिने सिद्ध अनंत-रूप अभेद॥संसारी थावर इग तिम त्रस दोय प्रकार, भु अप वाउ

तेउ वणस्सइ थावर धारा॥१॥ फिटक रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ जोडल तूरी ऊस भूमि पाइण जे खाण ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विछेद ॥ भूमि आकास ऊस हिम करग आऊना भेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं अर तेम ॥ होय घणो दधि अप्पकाय पिण पाइण जेम ॥ ३ ॥ अंगारा झाला भोभर तिम ऊलकापात, असणि कणग विद्युतादिक अगनि जीव विख्यात ॥ उम्रामगऊकलिका मंडल वलि मुख वात, सुद्ध गुंज तिम घण तणु वाऊ भेदें ख्यात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय वणस्सई जीव दु भेय, एग सरीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ कंदा अंकुर कूंपल फूलण वलि जंवाल, भूंफोडा अदत्तिय सरवे जे फल वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत सिरा सांधा गांठ भांजे सम भाग ॥ काटी डाल भूमिमें रोप्यां पल्लव थाय, लाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सरीरें एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गल फल मूल काठ वीजें जिय एक॥ वण पत्तेय विना जे पांचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमुहुर्त्ते आय ॥ ७ ॥ सूखमणी ते नियमा दिठी निजर न होय, लोकालोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय॥ कवडी संख गंडोला लहिगा लटनी जात, चंदन काथलसीमेहरजोका विख्यात ॥ ८ ॥ माय वाहाकम पोरादिक बेंइंद्री होय, गोमी माकण जूआ कीडा कीडी होय ॥ दीपक ईली धीवेल। गोगींडा जात, चरम जू कागादहिया गोवर कुम उतपात ॥ ए ॥ धनकीडा जिम चोरकीडा गोवालो तेह, ईली कंथुक इंद्रगोप तेइंद्री एह ॥ वीछू ढंकण भमरा भमरी इंद्री च्यार, तीडा माखी डांस मछर कंसारी धार ॥ १० ॥ कषमडोला मांकडिय पतंग इत्यादिक भेद, नारक तिरि मणु देव पंचेंद्री च्यार विभेद॥

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इंद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो अंधकार ॥ आठमें धज लहकंती, वरण विचित्र सोहंती ॥ ८ ॥ नवमें पूरण कूंभ, भरियो निरमल अंभ ॥ देखि सरोवर दसमें, मनह थयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें गंमें, खीरजलधि इण नामें ॥ बारम देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥ तेरम रतननी रासि, दह दिसि ज्योति प्रकासी ॥ सुपन चवदमें ए दीठो, पातिक धूमथी नीठो ॥ ११ ॥ सुपन कह्या सुविचार, हरख्यो नृप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै उदय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण, आवी मंदिर ऊत्ति ॥ देव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्थ ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर पहुता आपणै, दीधां दान अपार ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरु जगत्र थयो जयकार, खिण इक नारकियें पायो सुख अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध, कर थांनक पोहती वंछित तेहनो सिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ इंद्र मिली तिहां आवें, लेइ निज भक्ते सुरगिरि स्नात्र करावे ॥ करी जनम महोछव जननी पासे ठावै, तिहांथी सुर सव मिल द्वीप नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम रयण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार, घर २ गाइजें कीजें मंगलाचार ॥ इग्यारमें दिनसे मिली सहू परिवार, तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधे दिन २ कला करी जिम चंद, त्रिहुं ज्ञान विराजित रूप जिसो देविंद ॥ गुणकला विचक्षण विद्यातणो निधान, जोबनवय आयो परणायो राजान १९

॥ ढाल ४ ॥

कुमरपदे प्रनु रहतां काल सुखे गमै ए, आयो मन वैराग संजम लेवा समै ए ॥ तब लोकांतिक देव जणावै अवसरू ए, देइ संवछरी दांन याचक जन सुखकरू ए ॥ २० ॥ स्वामी संजम लेय इंद्रादिक सब मिल्या ए, देस विदेस विहार करी कर्म निरदल्या ए, पांमीय केवलज्ञांन सुरे महिमा करी ए, थापीय चौविह संघ मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ५ ॥

इम श्री गौमीपासतणा गुण जे नर गावै, ते नर नारी इह परलोग सुवंछित पावै ॥ संघ करी संघपति जिके गवमीपुर जावै, चोर धाम संकट टलै विघन बुराइ न आवै ॥ २२ ॥ धरणराय पनमावइ जास वहे सिर आंण, सांमल वरण सुसोन्नित नव कर काय प्रमांण ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि कांमगवी सम तोलै, श्री गुण-शेखर सीस समयरंग इण पर बोलै ॥ २३ ॥ इति श्री गोमी पार्श्व-जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन स्तवनं लि० ॥

मंगल कमला कंद ए, सुख सागर पूनम चंद ए ॥ जगगुरु अजिय जिणंद ए, शांतीसर नयणानंद ए ॥ १ ॥ बिहुं जिनवर प्रणमेव ए, बिहुं गुण गाइस संखेव ए ॥ पुण्यनंमार न्नरेसु ए, मानव न्नव सफल करेसु ए ॥ २ ॥ कोमहि लाख पचास ए, सागर जिनसासण न्नास ए, रिसह जिनेसर वंस ए, उवझाय सरोवर हंस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर तिहां राजियो ए, राजा जितशत्रु तिहां गाजियो ए ॥ विजया तसु घरनार ए, त्रिहुं रमयति पासा सार ए ॥ ४ ॥ कूखहि जिन अवतार ए, तिण राय मनाव्यो हार ए ॥ उयर वस्यो दस मास ए, प्रनू पूगी जननी आस ए ॥ ५ ॥ तिहुं जण

मन आणंदियो ए, सुत नांम अजित जिण तो दियो ए ॥ तिहुअण सयल उछाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हंस धवल सारिस तणी ए, गति सुललित निज गति निरजणी ए ॥ मलपति चाले गेल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो संसार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए, लंछन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जब आवियो ए, तब वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साधे सब काज ए, प्रभु पाले पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हथणापुर ठाम ए, विश्वसेन नरेश्वर नांम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे हेव ए ॥ १० ॥ चवदह सुपनें परवर्यो ए, अचिरा उयरें सुत अवतर्यो ए ॥ मांनव देव वखाणियो ए, चक्रीसर जिणवर जांणियो ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय मंत ए, तिण नांम दियो श्रीशांत ए ॥ जिन गुण कुण जांणे कही ए, त्रिहुं भुवणे तसु उपम नही ए ॥ १२ ॥ नयण मलूणो हिरणलो ए, वन सिंह बीहै एकलो ए ॥ नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गीतहि राग सुरंग ए, पिण पड़ले लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो ससि संक ए ॥ तिण पांम्यो नाम कलंक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग अति खलभल्यो ए, भय भंजण सांमि सांभल्यो ए ॥ आणंदियो मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लंछन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति परणे वणी ए, नव नविय कुमर रायां तणी ए ॥ बल छल अरियण जोगवे ए, पीव राज भला पर भोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर तणें संमत समें ए, पंचास सहस्र वरसां गमे ए ॥ तो तेजे दिणयर जिसो ए, कप्पडो चक्ररयण तिसो ए ॥ १७ ॥ साधी भरह छखंड ए, वरताणी आण अखंड ए ॥ चवद रयण नव निधि मही ए, चमु सेस सहस जस्कि अडी ए ॥ १८ ॥ सहस्र बहुत्तर पुर

वरा ए, बत्तीस मौमबद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोम ए, बिन्न वे नमें वे कर जोम ए ॥ १ए ॥ हय गय रहवर जुजुवा ए, लख चौरासी मंदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, बत्तीस सहस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिसी सुरसुंदरी ए, लक्कण ला वएय लीला नरी ए ॥ जंगम सोहग देहरी ए, एसी चौसठ सह स अंतेजरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र यण नंमार ए ॥ ते कहिवा कुण जांण ए, वपुवपु रे पुण्य प्रमांण ए ॥२२॥ इम चक्कीसर पंचमो ए, चोथो दूसम सूसम समो ए ॥ वरस सहस पचवीस ए, सब पूरी मनह जगीस ए ॥२३॥ इण पर बिहुं तीर्थंकरा ए, चिर पालिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए सार ए, बिहुं लीधो संजम नार ए ॥ २४ ॥ बिहुं खम दम धीर ज धरी ए, बिहुं मोह मयण मद परिहरी ए ॥ बिहुं जिन झाण समाण ए, बिहुं पांम्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ बिहुं देवहि कोम-हिमहि ए, बिहुं चौतीसे अतिसय सहि ए ॥ समवसरण बिहुं गण ए, बिहुं योजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेजरी ए, बिहुं आगलि इंड अंतेजरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगहि गुण गावे सुरबहू ए ॥ २७ ॥ बिहुं सिर उत्र चमर विमल, बिहुं पग तल नव सोवन कमल ॥ बिहुं जिनतणें विहार ए, नवि रोग न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ बिहुं उवयार नुवन नरी ए, बिहुं सिद्ध रमणासुं परवरी ए, बिहुं नंजी नव फंद ए, बिहुं उदयो परमाणंद ए ॥ २ए ॥ इम कीजो ने सोलमो ए, जांणे चिंतामण सुर तरु समो ए ॥ मुणि अति संक विहाण ए, तिहां इह परनव नवि हांण ए ॥ ३० ॥ बिहुं उत्तम मंगल करण, बिहुं संघ सयल डुरिय हरण ॥ बिहुं वर कमल नयण वयण, बिहुं श्रीजिनराज नुवण रयण ॥ ३१ ॥ इम नगते नोलिमतणी ए, श्रीअजिय शांति

जिण थुय भणि ए ॥ सरण विहुं जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन उवझाय ए ॥ ३२ ॥ इति अजित शांति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान क्रिया जिण उपदिसी जी, सिव सुख तणो उपाय ॥ भविक जन धर श्रीजिन उपदेस, छूटे कर्म कलेस ॥ भ० ॥ आंकणी ॥ पडिलेहण मुहपत्ती तणी जी, भाखी छे पचवीस ॥ तिहां ए भाव विचारिये जी, इम भाखै जगदीस ॥ भ० ॥ २ ॥ प्रथम बे पास विलोकिये जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी पुष्टि ॥ भ० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥ भ० ॥ सीध वधू टक गुरुथकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव अखोडा आदरो जी, नव पखोडा गमाउ ॥ ५ ॥ भ० ॥ देवतत्व गुरुतत्वसुं जी, धर्मतत्व यह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी, तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ भ० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी, संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अवधार ॥ भ० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति ग्रहीजे शुद्ध ॥ परिहरिये वलि डांगनें जी, तीने दंड विशुद्ध ॥ भ० ॥ ८ ॥ पडिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥ हास्य अरति रति धोयनें जी, मुख करी वांम बाह ॥ तज भय शोक दुगंछना जी, दक्षिण पिण कर साह ॥ १० ॥ भ० ॥ कृष्णी लेस्या तीन ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवा जी, करि मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ भ० ॥ काढ सल्य तीन ऊपरी जी, मा

या नियाण मिथ्यात ॥ च्यार कषाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करी घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराधना जी, चरण विन्हे सुद्ध होय ॥ ए पमिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तूं जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥ इम पमिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै करै जी, पांमैं सुख्ख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिनवरतणा मुखथी, अरथ गणधर सांजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहाणी, सुणो नविषण मन रली ॥ उवझाय वर श्रीलब्धिकीरत, सुखथकी ए संग्रही ॥ मुंहपती पमिलेहण तणी विध, लब्धिकीरत गणि कही ॥ इति श्रीमुहपत्ती पमिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल संसारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणो, जास परसाद उपगार थाये घणो ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित अनें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यांन धर तप जप खप करै, जिणथकी जीव संसारसागर तिरै ॥ दोष लागा जिके गुरुमुख आलोइयै, जीव निमर्ल हुवै वस्त्र जिम धोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे तिके चार प्रकारना, धुरथकी नांम नें अरथ ते धारणा ॥ किणही कारण वसे पाप जे कीजियै, प्रथम ते नांम संकप्प कहीजियै॥३॥ कीजीये जेह कंदर्प्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद संज्ञा धरी ॥ कूदतां गर्वतां होय हिंसा जिहां, दर्प्प इण नांम करि दोष तीजो तिहां ॥ ४ ॥ विणलतां जीव जीवनेंगिनर करैं जिको, चोथो आकुट्टिया दोष कहजै तिको ॥ अनुक्रमें च्यार ए अधिक एक एकथी, दोष धर प्रायच्छित्त जेह विवेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोई मागध आयो पुंदर पास ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्याननां उपगरण तणी आसातन कीधी होय ॥ जघन्यथी पुरमढ एकासणो आंबिल उपवास, अनुक्रम एह आलोयण सुगुरु बताई तास ॥ ६ ॥ ए जो खंमित थायै अथवा किहांई गमाय ॥ तो वलि नवा करायां दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपमिलेह्यां परिमढनो तप धार, गिरतां एकासणनें गमतां चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार तिहां पुरमढ जघन्य, एकासण आंबिल अठम चिहुं भेदं मन्न ॥ आशातन गुरु देवनी साहमींसुं अप्रीति ॥ जघन्य एकासणनी आलोयण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनंतकाय आरंभ विणास्यां चोथ प्रसिद्ध, बि ति चउरेंडी प्रतापां एकासणथी वृद्ध॥ बहु बि ति चौरेंद्रिय हणयां बि ति चउ उपवास, संकल्पादि चिहुं विधि डुगुणा डुगुण प्रकास ॥ ए॥ उदेही कुलियावमा कीमी नगरा भंग, बहुत जलोयां मूंक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन कृमि पातन आंबिल इक एक, जीवांनी ढोलंता दोय उपवास विवेक ॥ १० ॥ संकल्पादिक एक पंचेंडी उपडव होय, दोइ त्रिण आठ दसे उपवासे आलोयण जोइ, बहु पंचेंडी उपडव छठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं प्रकारे चढती आलोयण सुण ले सीस ॥ ११ ॥ पंचेंडीनें लकमी प्रमुखे कीध प्रहार, एकासण आंबिल उपवास में छठ विचार ॥ साथ समकें लोक समकें राज समक, कूमा आल दियां डुइ चोथरु छठ प्रत्यक्ष ॥ १२ ॥ उपवास दस हेरायां तेम मरायां वीस, इक लख अती सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चैमास वरस लग इक त्रिण दस उपवास, अधिको क्रोध करे तो आलोयण नहि तास ॥ १३ ॥ सूत्रावमना दोष कियां गुरु ऊपर रोस, जोय विराधन कीधां बहु असतोन पोस ॥ कोस डुचालस चार हजार गुणो नव-

कार, मिछाउक्कड़ देइ आलोवो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ वे कर जोडी तांम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीधा पच्चखाण, विण दीधां वांदणा, पडिकमणा विध पांतरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै भणया, इकर आंविल आचरे ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एकत्र, निवी आंबिल, भांगे आलोयण इमें ए ॥ एक पांच षट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास भंग उपवास, आंबिल ऊपरां, अधिको दंड वखाणिये ए ॥ पांचम आठम आदि, भंग कियां वली, फिर महा पातिक हाणीयै ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग, चूलै घरटियै, दीधै अठम तप करै ए ॥ मांगी सूई दीध, कातरणी छुरी, आंविल चढता आदरे ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री भोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परद्रोह चींतव्या, उपवास एकर जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनरे करमादान, नियम करी भंग, मद्य मांस माखण भख्या ए ॥ आलोयण उपवास, संकप्पादिक, चिहुं भेदे चढतां लिख्या ए॥ २० ॥ बोल्या मिरखावाद, अदत्तां दान स्युं, जघन्य एकासण जांणीये ए ॥ अति उत्कृष्टी एण, जांण आलोयण, उपवास दस२आंणिये ए ॥ २१ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत भागे अतीचार, जघन्य छठ आलोयण धार ॥ मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥ परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमांहे भंग ॥ च्यार सिक्षा व्रतने अतिचारे, आंबिल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी नववाड़ि कदाय, तिहां जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस हुआं अविवेके, एक आंबिल कीजे प्रत्येके ॥२४॥ साधु अने श्रावक पोसाध, एकेंद्री सचित्त संघट्टे कीध ॥ वीसर भोले सचित जल पी

ध, देह एकासण आंबिल दीध ॥ २५ ॥ विण धोयां विण लूह्यां पात्र, एकासण निम पुरिमड्ढ मात्र ॥ गठ मुठ्ठपत्तो आंबिल सागे, तिम चउथे अठम अवधागे ॥ २६ ॥ च्यार आगार नीमो राखे, व्रत पच्चखाण करे एह भाखे ॥ दोष मिच्छामिच्छक्कड दाखे, आलोयण लेतां अभिलाखे ॥ २७ ॥ आलोयणनो अति विस्तार, पूरो कहितां नावे पार ॥ तोपिण संक्षेप तंत सार ॥ निरमल मन करतां वि स्तार ॥ २८ ॥ इम श्रीवीर जिनेसर स्वामी, जसु आगम वचने विधि पामी ॥ जीतकल्प गणांगे आदि, वली परंपर गुरु सुप्रसाद २९

॥ कलश ॥

॥ इम जेह धरमी चित्त विरमी, पाप सर्व आलोयने ॥ ए कांत पूछे गुरु वतावे, शक्ति वय तसु जोयने ॥ विध एह करती तेह तिरसी, धरमवंततणे धुरे ॥ ए तवन श्रीभ्रमासिंह कीधो, चौ पने फल वरी पुरे ॥ ३० ॥ इति श्री आलोयण स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नंदीश्वर द्वीप स्तवनं ॥

नंदीसर बावन जिनालय, सास्वता चोमुख सोहे रे ॥ ऋष भानन चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान मनमोहे रे ॥ नं० ॥ १ ॥ आठमो द्वीप नंदीसर अदभुत, वलयाकार विराजे रे ॥ तेहने मध्य चिहुं दिस सोभित, अंजन गिरिवर छाजे रे ॥ नं० ॥ २ ॥ जोयण सहस्र चोरासी ऊंचा, ऊंच पणे अभिरामा रे ॥ मूले प्रथुल सहस दस जोयण, उपरि सहस्र कर ॥३॥ नं० ॥ ते ऊपर प्रासाद प्रभूना, अति उतंग उदार रे ॥ साधु जंघा विद्याचारण, वांदे वि विध प्रकार रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ चैत्यदीठ एकसो चोवीस, बिंब संख्या मन धारो रे ॥ स्वामी सेवो भवियजन जगते, सुध आगम कर मा न्यो रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ ऊंच पणे सहु जोयण बहुतर, सो जोयण आयामा रे ॥ विहुनपणे पचास जोयणना, प्रभूप्रासाद सुठामा रे

॥ नं० ॥ ६ ॥ धनुष पांचसै आयत प्रभुनी, विविध रतनमई काया रे ॥ जिन कल्याणक उच्छव करवा, सुरपति भक्ते आया रे ॥ नं० ॥ ७ ॥ अंजन अंजनगिरि चहुं नवरे, चोमुख च्यार विसाला रे ॥ वावश् विच डकर पर्वत, राजत रंग रसाला रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ चोसठ सहस जोयण उत्तंगें, दस सहस सत पिहुला रे ॥ चिहुं दिसि सोल सहस दधिमुखगिरि, तिहां प्रासाद सुविमला रे ॥ नं० ॥ ए॥ वाव२ नें अंतर विदसें, रतिकर परवत रूमारे ॥ दोय२ संख्या जगदीसै, कह्या नही ए कूमा रे ॥नं०॥१०॥ जोयण सहस मांन दस ऊंचा, दस२ सहस विस्ताराारे ॥ झल्लरि सम संठाण जगत गुरु, निश्चय ए निरधारघा रे ॥ नं० ॥११॥ तेह ऊपर प्रासाद सतोरण, अंजनगिरि परमाणै रे ॥ जिनपमिमानी संख्या तेहिज, श्रीजिनराज वखाणै रे ॥ नं० १२ ॥ इम प्रासाद प्रभूना बावन, नंदीसर वर दीपे रे ॥ इव्य भाव विधि पूजा करतां, मोह महा भम जीपै रे ॥ नं० ॥ १३ ॥ प्रवचन सार उद्धार प्रकरणे, जोवाभिगमें जाणो रे ॥ इम अधिकार छै ग्रंथ अनेकै, इहां संका मत आणो रे ॥ नं० ॥ १४ ॥ जिम सुरपति विरचै तिहां पूजा, ते अनुभव इहां ध्यावो रे ॥ ध्यावो जिम पावो परमातम, जैनचंद गुण गावो रे ॥ नं० ॥ १५ ॥ इति नंदीश्वर स्तवनं ॥

॥ अथ अढाइ द्वीपे वीस विहरमाण स्तवनं ॥

॥ नेउ मनसुध विहरमाण जिणेसर वीस, द्वीप अढीमें विचरे जयवंता जगदीस ॥ केवलग्यानने धारे तारे कर उपगार. किण २ ठामे कुण२ जिन कहस्युं सुविचार ॥१॥ पैंतालीस लक्ष योजन मानुषक्षेत्र प्रमाण. वलयाकारे आधे पुष्कर सीमा जाण ॥ दोय समुद्र दोढे द्वीप अढाई सार, तिणमें पनरे करमभूमीनो कहूं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबूद्वीप मभे विच थाल आकार, लांबो पिहुलो इक लख

जोयणनें विसतार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदरसन नांमें मेर, तिणथी दिसि विदसानी गिणती च्यारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षण दिसि एह भरत सुभ क्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छ कला तेहनो क्षेत्र ॥ उत्तरखंडमें एहवो एरवत क्षेत्र कहाय ॥ इण बिहु करमांभूमी छए अरा फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसे चोरासी जोयण जाण, च्यार कला ए महाविदेह विखंभ वखाण ॥ बावीसछे तेरे जोयण एक विजय पहुलाण, एहवी बत्तीस विजय विराजे जेहने ठाण ॥ ॥ ५ ॥ मेरु विचे कर पूरब पश्चिम दोय विभाग, सोले २ विजय तिहां विचरे श्रीवीतराग ॥ सासते चोथे आरे तारे श्रीअरिहंत, एहवे महाविदेह करमभूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूरब विदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठांम, पुंडरीकणी नगरी तिहां श्रीसीमंधर-स्वांमि ॥ वप्रविजय पचवीसमी विजयापुरनो नांम, पश्चिम विदेह बीजो युगमंधिर कीजे प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहिज नवमी वच्छविजय वलि पूरब विदेह, नयर सुसीमा त्रीजो बाहु नमूं धरि नेह ॥ नलिनावर्त्त चोवीसमी पश्चिम विदेह वखाण, वीतसोका नगरी तिहां चोथो सुबाहु सुजांण ॥ ८ ॥ ए च्यारेइ जिणवर जंबूद्वीप मझार, महाविदेह चउरंगण मेरुतणें परकार ॥ एहवो जंबूद्वीप महा गढ जेम गिरिंद, खाई रूपे दोय लख जोयण लवण समंद ॥ ए ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दिवाली दिन आवियो ॥ ए चाल ॥

द्वीपे बीजो द्वीप ए, धन२ धातकी खंड ॥ विहुलो चिहुं लख जोयणे, मंडल रूपे मंड ॥ १० ॥ द्वी० ॥ दोय भरत दोय एरवत, दोय वलि महाविदेह ॥ करमभूमि खट छे जिहां, गण-तिज नांमें एह ॥ ११ ॥ द्वी० ॥ पूरब पश्चिम धातकी, खंड गिणीजे दोय, विजयमेरु पूरब दिसें, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ १२ ॥ द्वी० ॥ इक २ मेरुने अंतरे, करमभूमि तीन २ ॥ निज २ मेरुथी मांभिने,

सेवो चिहुं दिसि लीन ॥ १३ ॥ दी० ॥ श्रीसुजात जिन पांचमो, छठो स्वयंप्रभु ईस ॥ ऋषभानन जिन सातमो, समरीजै निस दीस ॥ १४ ॥ दी० ॥ अनंतवीरज जिन आठमो, ए च्यारे जिनराय ॥ पूरब धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहिली परें जिननी परे, विजयनगर दिसि ठाण, ॥ तिणहिज नांमे अनुक्रमें, विजयमेरु अहिनांण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमो सूर प्रभु नमूं, दसमो देव विसाल ॥ इम वज्रधर इग्यारमो, त्रिकरण नमूं त्रिहुं काल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमो चंद्रानन जिन, पच्छीम धातकी मांहि ॥ विचरे च्यारुं जिणवरा, अचलमेरु उछांहि ॥ दी० ॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, परदक्षणा परकार ॥ अठ लख जोयण वींटीयो, समुद्र कालोदधि सार ॥ १९ ॥ दी० ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ पहिली प्रतिमा एकण मासनी ॥ ए चाल ॥

कालोदधिने पैलै पार ए, वींट्यो चूडी जेम विचाल ए ॥ सोलह लख जोयण विसतार ए, द्वीप पुखरवर अति सुखकार ए ॥ चलालो० सुखकार पुष्करद्वीप त्रीजो, तेहनें आधे पगे ॥ विच पड्यो परवत मानुष्योत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहां लगे ॥ तिण आधिकर अठ लाख योजन, अरध पुष्कर एम ए ॥ तिहां करमभूमी छ ए कहीजें, धातकी खंड जेम ए ॥ २० ॥ ढाल ॥ आधे पुष्करनें पूरब दिसे, मंदिर नांमे मेरु तिहां वसे ॥ पच्छिम विद्युनाली मेर ए, इहां किण इनरो नांम फेर ए ॥ च० ॥ फेर ए इनरो इहां नांमे, अवर ठामे को नही ॥ एक २ मेरे तीन तीने, करमभूमि तिहां कही ॥ इम भरत एरवत महाविदेहे, नांम सरखो हेत ए ॥ तिणहीज नांमे विजय सगली, साम्रता धर्म खेत ए ॥ २१ ॥ ढाल ॥ धातकी खंमे तिम पुष्कर मही, इहां क्षेत्रानी रचना विध कही ॥ चार २ कहनां ए विसतार ए, पहिला पर लख्यो सुविचार ए ॥ च० ॥ सुविचार चार्की तेह सगली,

नगर निमवित्र मन गमें ॥ पूरबे पश्चिम जेहनी ते, तेह तिम दीव अनुक्रमें॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग ईसर नेम च्यार तीर्थंकरा, पूरबे पुष्कर अरध मांहे, सरब जीव सुखंकरा॥२१॥ ढाल॥ वैरसेन वंदू जिन मतेरमो, श्री महाभद्र अठारम नित नमो॥ देवजसा अगणीसम देव ए, जसो सिद्ध वीसम जिण देव ए॥ ३०॥ जिण च्यार पुष्कर अरध माहे, कह्या पश्चिम भाग ए॥ तिहां मेरु विद्युनमालि थिहुं दिसि, विचरता वीतराग ए॥ चोरासी पूरब लाख वरसां, आउ इक २ जिण तणो॥ पाचसै धनुष सरीर सोहे॥ सोवन वरण सुहामणो॥ २३॥ ढाल॥ काल जघन्ये ए जिण वीस ए॥ हिव उत्कृष्टे जद कहीस ए॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनवर कहे, पांचे भरते जिम पांच लहे॥ ३०॥ जिण लहे पांचे तेम पांचे, एरवत मिल दस हुवा॥ इक २ विदेहे बत्तीस विजया, तिहां पिण है जूजूआ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोडि नवसय केवली, नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदिये नित ते वली॥ २४॥ ढाल॥ इहां भरते एरवते आज ए, पंचम आरे नहीं जिनराज ए॥ धन २ पांचे महाविदेह ए, विचरे वीस जिन गुणगेह ए॥ ३०॥ गुणगेह दोष अढार वरजित, अतिसयां चोतीस ए॥ चोसठि इंद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए॥ तिहां आज जाणण तरण विचरे, केवली दोय कोड ए॥ दोय सहस कोडी सुसाधु बीजा, नमुं बे कर जोड ए॥२५॥ कलश॥ इम अढी द्वीप पनर करमा भूमी छेत्र प्रमाण ए, सिद्धांत प्रकरण तेह भाख्या चाल विचारमांग ए॥ श्रीनगर जेसलमेर संवत सतर गुणनीसै समै, गुणविजय हरख जिनंद साहिब नह धरि ध्रमसी नमें॥ २६॥ इति अढी द्वीप स्तवन संपूर्ण॥ १ जंबूद्वीप २ धातकी खंड ३ आधो पुष्करद्वीप एवं ३॥ ढाल॥ नगर॥ स्तवन॥ महाविदेह ॥ कर्मभूमांमे विच-

रता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुवो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीड़ाभाई आबूजोनी जात्र करेज्यो, जात्र भणी ऊमहेज्यो, तुम्हे नरभव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथी मांहे गाजे, आबू मारूमैं देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी वादे लागो, ऊंचो अंबरियें जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास कहावे, निरखंता त्रिपति न आवे रे ॥ जा० ॥ एतो डुंगरियानो राजा, एहनी छै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ छह ऋतु वास वणायो, एतो चंपला अंबला छायो रे ॥ जा० ॥ सरवर झरणा झाझा, जिहां तिहां वनवेल्या आझा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ भार अढार वणराई, एतो इहां दिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिसि परिमल आवै, फूलड़ानो रंग सुहावे रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर भूमि विसाला, देवल दीठा रलियाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरबाई, चक्केसरि देवी सहाई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवाड़ वंस वदीतो, जिण दलपति साहि जीतो रे ॥ जा० ॥ देवल तेण करायो, पाहण आरास मंडायो रे ॥ जा० ॥ ६ ॥ झीणी२ कोरणी केरयो, दल माखण जेम उकेरयो रे जा० ॥ नवी२ भांति वणाई, जिहां तिहां कोरणिया किणाई रे ॥ जा० ॥ ७ ॥ उत्तरे पाहण जेतो, जोखीजे पाहण तेतो रे ॥ जा० ॥ आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी हितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥ तगणिस कोड़ सोनइया, द्रव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा० ॥ करजोड़ीने आगे, मंत्री जिनवर पाय लागे, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुठे चढिया हाथी, मंडाणा पति साह साथी रे ॥ जा० ॥ इण देवल समवड़ कोई, भूमंडल माहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ वलि तिण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नो ऋद्धि पाई, इहां नियां पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥

छवो जिणहर पासें, चार कोसनी लागति जाणें रे ॥ जा० ॥ देरा
णी जेठाणी, आलानी अनघ कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहां देव
ल मोह वधारी, नेमनाथजी बाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस
वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल
वाम्हे दीठा, ते तो लागे नयणें मीठा रे ॥ जा० ॥ तिहां केइ देवल
पासें, लोक जोवे घणो तमासें रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गाउ आ
गल जाइये, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा
च्यारे, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते
घातो, झिगमिग रही दिन ने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसे चम्मा
लो, जिण बिंबनो जाव निहालो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली
जाम सोभागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६
॥ पहलनी करणी वाकवाडो, इहां लीधो लखमी लाहो रे ॥ जा०
॥ १७ ॥ इण डुंगरिये आवी, जिण जात्र करे मन भावी रे ॥
जा० ॥ जिहां तिहां पूज रचावे, नाटकिया नाच करावे रे ॥ जा० ॥
॥ १८ ॥ गातीजोगो दियरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥
जा० ॥ साहमी वछल कीज्यो, जानमलीनो जगरीजो रे ॥ जा०
॥ १९ ॥ आगरथी आवी चाली, वातां केइ अचरज वाली रे ॥
जा० ॥ सुणिये ते जे कोइ, अहिनाण जोज्यो तेइ रे ॥ जा० ॥
॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावे, जात्रानो फल ते पावे रे ॥
जा० ॥ ए तीरथ सममोलें, कुण आवे रूपचंद बोले रे ॥ जा० ॥
२१ ॥ इति आबूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिषभानन वर्धमान, चंद्रानन जिन, वारिषेण नामे जि
णा ए॥१॥ नंद तणा प्रासाद, त्रिभुवन शासता, प्रणमुं बिंब सोहा-
मणा ए ॥ २ ॥ मेरुहर गत कोडि, साम्ठ बहुत्तर, चेइय प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोमि, साठ लाख सुंदर, भुवनपती मांहि मन वसी ए ॥ ४ ॥ बारे देवलोक प्रासाद, चौरासी लाख, सहस गिन्नू नें सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥

हिवै नवग्रीवेके पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अमत्रीस सहस सत साठ अठे गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर बावन कुंमल रुचक वखाण, चउ२ चेईहर साठ सवे त्रिहुं ठांण ॥ इकसो चोवीसे गुण प्रतिमा चिहुं नाम, ग्यारसै चालिसा सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥ नंदीसर विदिसे सोलस कुल गिरि तीस, मेरू वन अस्सी दस कुरु गजदंते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असो अति सुंदर वक्ष सकार मझार ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी द्रह सुजगीस ॥ कंचन गिर वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढय, वीस सत सो आढय ॥ सतर महानदी ए, पंच चूला सदी ए ॥ १० ॥ जंबु प्रमुख दस रुक्ख, इग्यारेसे सत्तर सुक्ख ॥ कुंम त्रणसय असी ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं, वीस सो ए अंक गुणिये रे, तीर्थंकर प्रतिमा थुणिये ॥ १२ ॥ त्रिण लाख सहस वलि ब्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ मनमाहे सव मेलीजे रे, जिनवर प्रासाद नमीजे ॥ १३ ॥ आठ कोमि सत्तावन लक्ख रे, दोयसे निव्यासी कहक्खा ॥ इण प्रतिमा ध्यान करीजे

रे, जिनवरनी आण वहीजे ॥ १४ ॥ पनरेसे बेतालीस कोमी रे, अमवन लख अधिके जोमी ॥ बत्रीस सहस अधिक कहीये रे, प्रतिमा सगली सरदहिये ॥ १५ ॥

॥ ढाल ॥ ५ मी ॥

जोइस विंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ॥ पायकमल तेहना नित प्रणमिये, सोवन वरण सुदेहो जी ॥ १ ॥ विनय करी जिन प्रतिमा वंदिये, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजे प्रतिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर नूपो जी ॥ २ ॥ वि० ॥ जिनप्रतिमा बोली जिन सारखी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ॥ नवियणने नवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ॥ जीवाभिगम प्रमुख मांहि नाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ॥ सांनलतां नणतां सुख संपदा, हियडे हरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ॥

॥ कलश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा संथुणया जिनवर तणा, बिहुं नाम जिनचंद तणा त्रिनुवन सकलचंद सुहावणा ॥ वाचनाचारिज समयसुंदर गुण नणें अभिराम ए, त्रिहुं काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो सदा मुऊ परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबिंब संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत मंडर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवनं ॥

नविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ॥ प्रनूजी बिराजे रे सूरत बिंदर रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ न० ॥ जगहितकारी रे जिनजी अवतरया रे, श्रीहृढरथ नृप गेह ॥ श्रीवत्स सोहे रे लांबन सुंदर रे ॥ कनक वर्ण प्रनु देह ॥ २ ॥ न० ॥ विषय निवारी रे संजम संग्रह्यो रे, लाधुं केवलनाण ॥ सघन घनाघन जिम धम वरसता रे, बिहरया त्रिनुवन नाण ॥ न० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, च्यार अघाती कर्म ॥ दूर निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्युं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज॰ ॥ संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिबिंब ॥ प्रतिदिन लहिये रे प्रभु सुप्रसादथी रे, मन वांछित अविलंब ॥ ५ ॥ ज॰ ॥ श्रीजिनवरनो बिंब बिलोकतां रे, कुकृत दूर पुलाय ॥ इंद्रिय निग्रह सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ थाय ॥ ६ ॥ ज॰ ॥ श्रीसद्गुरुना मुखथी सांभल्या रे, एहवा वचन विलास ॥ ते बहुमाने रे निज चित्तमें धरया रे, नेमी सुत आईदास ॥ ७ ॥ ज॰ ॥ चैत्य कराव्युं रे सुंदर सोभतो रे, मनधर अधिक उलास ॥ शीतल प्रभुनो रे बिंब भरावियो रे, सहसफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज॰ ॥ वरस अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मझार ॥ उज्जल द्वादशी दिवसे थापियो रे, बिंब अनेक उदार ॥ ए ॥ ज॰ ॥ एकसो इक्यासी लहु मेले थया रे, बिंबादिक सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन तेहनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज॰ ॥ श्रीजिनलाभ सूरीश्वर दीपता रे, श्रीखरतर गछ भाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन थुण्या रे, विबुध क्षमा कल्याण ॥ ११ ॥ ज॰ ॥ इति शीतल जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हूं तो भरवा गइथी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवडलो ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने थास्ये कोइयक समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातडली तव थास्ये मनोरी सवि वगे रे लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो भंभेरयो माहरो नाथ जो, उवेखस्ये नहीं क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी सरिखो कुण छे दुनियां मांह जो, जइये जे जिम तेहने घर आस्या

करी रे लो ॥२॥ हांरे मारे जग सेव्यांथी स्वारथनी नही सिद्ध जो, थानी रे सही करवी तेहथी गोठडी रे लो ॥ हांरे कांइ कूडुं खाइ ने मिठाइने माटे जो, क्यांही रे परमारथनी नही प्रीतडी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे प्रभु अंतरजामी जीवन प्राणाधार जो, वायो रे नवि जाणीयो कलियुग वायरो रे लो ॥ हांरे मोरा लायक नायक जगत वच्छल भगवंत जो, वारु रे गुण केरा साहिब सायरु रे लो ॥ ४ ॥ हांरे प्रभु लागी मुजने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रह्यांथी होइ उननागलो रे लो ॥ हांरे कुण जाणे अंतरगतिनी विण महा-राज जो, हेजे रे हसी बोलो एमी आमलो रे लो ॥ ५॥ हांरे तारे मुखने मटके अटक्युं माहरो मन्न जो, आंखडली अणियाली का-मणगारीयूं रे लो ॥ हांरे मारे नयणा लंपट जोवे खिण खिण तुज जो, राती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हांरे प्रभु अलगा ते पिण जाणज्यो करीने हजूर जो, ताहरी रे बलिहारी हुं जाउं वारणे रे लो ॥ हांरे कवि रूप विबुधनो मोहन करे अरदास जो, गिरुआ थइ मन आणो कलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुर स्तवनं ॥

राणपुरे रलियामणो रे लाल, श्रीआदीश्वर देव, मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे लाल, निरखीजे नित्य मेव ॥म०॥ रा० ॥ १ ॥ चोवीस मंडप चिहुं दिसे रे लाल, चौमुख प्रतिमा च्यार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरो रे ला०, समवड नही संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल, मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलो भूंहरणां भोंयरा रे लाल, सूरतां कुल सेर ॥ म० ॥३॥ रा० ॥ देव जाणीने देहरुं रे लाल, मेरु देव संसार ॥म०॥ रूख नवाणुं लगाविया रे लाल, धन धन्नो पोरवाड ॥ म० ॥४॥ रा० ॥ सगलट मगई संतर्युं रे लाल, निर

खेतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल, जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे लाल, दूर गयूं दुख दंद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल छियं-तरे रे लाल, मिगसिर मास मझार ॥ म० ॥ राणपुरे यात्रा करी रे लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री राणपूरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रीआदिजिन स्तवनं ॥

समकित द्वार गंभारे पेसतां जी, पाप पडल गयां दूर रे ॥ मोहन मारुदेवीनो लाडलो जी, दीठो मीठो आनंद पूर रे ॥ स० ॥ ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोडाकोडी हीण रे ॥ स्थिती पढम करणे करी जीवने जी, वीरज अपूरवनो घर लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ भुंगल भांगी आदि कषायनी जी, मिथ्यात मोहनी सांकल साथ रे ॥ बार उघाड्या शम संवेगना जी, अनुभव भवने बेठो नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बांधू जीवदया तणूं जी, साथियो पूरो सरधा रूप रे ॥ धुपघटी प्रभुगुण अनुमोदना जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग पखालने जी, केशर चंदन उत्तम ध्यांन रे ॥ आतम गुण रुची मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधांन रे ॥ ५ ॥ स० ॥ भावपूजाने पावत आतमां जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥ कारण जोगे कारज नीपजे जी, क्षमा विजय जिन आगम रीत रे ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजे रे ॥ निरंजन प्रभु दरसण दीजे, म्हारो मनडो रीझे रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग दुरलभ, विन दरसन नहीं किरिया रे ॥ जे दरसण विन किरिया पाले, ते नवि कहिये तरिया रे ॥आ०॥२॥ नय एकांते दरसन थापे, पिंम भरे ते पापे रे॥ आप आपणा मति आलापैं, ते भूला भव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्याद्वादनें संगे, जे ग्रहे आतम उमंगे रे ॥ आनंदघन उपजै तसु अंगे, सिद्धरमणने रंगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भव कोमाकोमीमें भमतां, तुझ दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत संयोगे ताहरे सनमुख, आज भले हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटको, जो जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आतम गुण उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दरसण दीजे रे ॥ लाभउदय जिनचंद लहीने, सगला कारज सीझै रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं॥

॥ अनंत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण संपदा रे, तुझ अनंत अपार ॥ ते सांभलतां ऊपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥ तारज्यो दीनदयाल, अ०॥ता॥०१॥ ए आंकणी ॥ जे जे कारण जेहनो रे, सामग्री संयोग ॥ मिलतां कार्य नीपजे रे, कर्त्ता तनय प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० । २ ॥ कार्य सिद्धि कर्त्ता वसु रे, लहि कारण संयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्या रे, होय निमित्तम भोग ॥ अ०॥ ता० ३॥ अज कुलगत्त केसरी लहे रे, निज पद सिंह निहाल ॥ तिम प्रभु भक्ते भवि लहे रे, आतम शक्ति संभाल ॥ ॥ अ० ता० ॥४॥ कारण पद कर्त्तापणें रे, करि आरोप अभेद॥ निज पद अर्थी प्रभुथकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥ अहवा परमातम प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद सत्तारसी रे,

अमल अखंड अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध ॥ समरयो अभिलाखीपणो रे, कर्त्ता साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज भाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ श्रद्धा भासन रमणता रे, दानादिक परिणाम ॥ सकल थया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता० ॥ ९ ॥ तिणें निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद सुख सागरू रे, भावधरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ बे कर जोडी वीनवूं जी, सुणि स्वांमी सुविदीत ॥ कूड कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार ॥ आंकणी ॥ तूं समरथ त्रिभुवन धणी जी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकां जी, दीठां दुख अनंत ॥ भागसंयोगे भेटियो जी, भयभंजण भगवंत ॥ कृ० ॥ ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणा जी, तेहनें कहिये दुक्ख ॥ परदुख भंजण तूं सुण्यो जी, सेवगने द्यो सुक्ख ॥ कृ० ॥ ४ ॥ आलोयण लीधां पखे जी, जीव रुले संसार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह सुण्यो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषमकाले दोहिलो जी, सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ पीछे नहीं जी, गडरप्रवाही लोक ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय बाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिन धरम२ सहू कहे जी, थापे अपणी जी वात ॥ सामाचारी जुइ जुइ जी, शंसय पड्यां मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजांणपणे करी जी, बोल्या उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

उभावता जी, हारयो जनम निटोल ॥ कृ० ॥ ए ॥ भग-
वंत भाष्यो ते किहा जी, किहां मुऊ करणी एह ॥ गज पाखर
खर किम सहे जी, सबल विमासण तेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आप
परूंपुं आकरो जी, जांणे लोक महंत ॥ पिण न करूं परमादियो
जी, मासाहस दृष्टांत ॥ कृ० ॥ ११ ॥ काल अनंते मैं लह्या जी,
तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे पामिया जी, किहां जइ करूं
पुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणूं उत्कृष्टी करूं जी, उग्रत करूं अ-
विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥
सहज पड्यो मुऊ आकरो जी, न गमें भूंमी वात ॥ परानिंदा क-
रता थकां जी, जायै दिन नें रात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरिया करतां
दोहिली जी, आलस आणे जीव ॥ धरम पखै धंदे पड्यो जी,
नरकै करसी रीव ॥ कृ० ॥ १५ ॥ अणहूंता गुण को कहे जी, तो
हरखूं निसदीस ॥ को हितसीख भली दियै जी, तो मन आणूं
रीस ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वादभणी विद्या भणी जी, पररंजण उपदेश
॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम संसार तरेस ॥ कृ० ॥ १७ ॥
सूत्र सिद्धांत वखाणतां जी, सुणतां करम विपाक ॥ खिण इक
मनमांहे ऊपजै जी, मुऊ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध
२ कर उच्चरूं जी, भगवंत तुम्ह हजूर ॥ वार २ भांजू वली जी,
छूटकबारो दूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचतां जी, कीधा
आरंभ कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जी, देवदया पर छोम
॥ कृ० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दाख्या अनरथ दंम ॥
कूम कपट बहु केलवो जी, व्रत कीधा सत खंम ॥ कृ० ॥ २१ ॥
अणदीधो लीजे तृणो जी, तोही अदत्तादांन ॥ ते दूषण लागा घणा
जी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नही
जी, राचै रमणी रूप ॥ काम विटंबन सी कहूं जी, ते तूं जांणे

सरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया ममतामें पड्यो जी, कीधो अधिको लोज्ञ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो जी, न चढी संजम सोज्ञ ॥ कृ०॥ ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लालचें जी, रात्रीज्ञोजन दोष ॥ में मन मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण ज्ञव परज्ञव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिछामिडुक्कडं जी, ज्ञगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या जी, प्रगट अढारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगस२ माइ बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार है एतलो जी, सरदहणा है शुद्ध ॥ जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ रिषज्ञदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणा जी, कर प्रज्ञु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिछामिडुक्कडं जी, देतां दूर पुलाय ॥ कृ० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिब तूं देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, ज्ञव २ ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण ज्ञेट्या नाज्ञिनंदन जिन तणा, करजोडि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणों, गणि सकलचंद सुसीस वाचक समयसुंदर गणि ज्ञणों ॥ ३२ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रुषज्ञ देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए चाल ॥

रुषज्ञ जिनेसर प्रीतम माहरो रे, और न चाहूं रे कंत ॥ रीझ्यो साहिब संग न परिहरे रे, ज्ञांगे सादि अनंत ॥ कृ० ॥ १ ॥ प्रीत सगाई रे जगमां सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत

सगाई रे निरूपाधिक कही रे, सोपाधिक धन खोय ॥ रू० ॥ २ ॥ कोइ कंत कारण काष्ट भक्षण करे रे, मिलसुं कंतने धाय ॥ ए मेलो नवि कहिये संभवे रे, मेलो ठाम न ठाय ॥ रू० ॥ ३ ॥ कोइ पति रंजन अति घणो तप तपे रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति रंजन में नवि चित धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ रू० ॥ ४ ॥ कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरे मन आस ॥ दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ रू० ॥ ५ ॥ चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखंडित एह ॥ कपट रहित थई आतम अरपणा रे, आनंदघन पद रेह ॥ रू० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवनं ॥

॥ मारुं मन मोह्युं रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथडो निहालूं रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥ जे तें जीत्या रे तेणे हुं जीतियो रे, पुरुष किस्युं मुझ नांम ॥ पं० ॥ ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, भूलो सयल संसार ॥ जेणें नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ पं० ॥ २ ॥ पुरुष परंपर अनुभव जोवतां रे, अंधोअंध पुलाय ॥ वस्तु विचारे रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क विचारे रे वाद परंपरा रे, पार न पहुंचे कोय ॥ अभिमते वस्तु वस्तुगते कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य नयणतणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे, वासित बोध आधार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लबधि लही पंथ निहालसुं रे, ए आस्या अविलंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जाणज्यो रे, आनंदघन मत अंब ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमिनें किहांथी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संभव देव ते धुर सेवो सबे रे, लहि प्रभू भेद ॥ सेवन सेवन कारण पहली भूमिका रे, अभय अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥१॥ भय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक भाव ॥ खेद प्रवृत्ति हो करतां थाकियें रे, दोष अबोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥ चरमावर्त्त हो चरम करण तथा रे, भव परणति परिपाक॥दोष टले वली दृष्टी खुले भली रे, प्रापति प्रवचन वाक॥ सं०॥ ३ ॥ परिचय पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत॥ग्रंथ अध्यातम श्रवण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण जोगे हो कारज नीपजे रे, एमां कोइ न वाद ॥ पण कारण विण कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सुगम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप॥ देजो कदाचित सेवक याचना रे, आनंदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनंदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अभिनंदन जिन दरशन तरसिये, दरसण दुर्लभ देव ॥ ॥ मतर भेदे रे जो जइ पूछिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अभि० ॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिसण दोहलूं, निरणय सकल विशेष ॥ मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥ २ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति दुरगम नय वाद ॥ आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विषवाद ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाती डूंगर आडा अतिघणा, तुझ दरिसण जगनाथ ॥ धीगाइ करी मारग संचरूं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिसण२ रटतो जो फिरुं, तो रणरोझ समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम जाजे विष पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे हो मरण जीवन तणो, सीझे जो दरसण आज ॥ दरिसण दुर्ल भ सुलभ रुपाथकी, आनंदघन महाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसंत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जांणिये, परि सरपण सु विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत मा, बहिरातम धुरि भेद ॥सु० ॥ बीजो अंतर आतम तीसरो, पर मातम अविछेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक ग्र ह्यो, बहिरातम अघ रूप ॥ सुग्यानी॥ कायादिकनो हो साखीधर र ह्यो, अंतर आतम रूप॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रिय गुण गण मणि आगरू, इय परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ बहिरा तम तज अंतर आतमा, रूप सुग्यानी थइ थिर भाव॥परमातमनूं हो आतम भाववूं, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम०॥ ५ ॥ आ तम अरपण वस्तु विचारतां, भरम टलै मतिदोष ॥ सु० ॥ परम पदारथ संपति संपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम ०॥६॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मंगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी, विविध भंगी मन मो हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्षणता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी० ॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्षणा रे ॥ हानादाना रहित परणामी, उदासीनता वीक्षणा रे ॥ शी० ॥ २ ॥ परदुःख छेदन इछा करुणा, तीक्षण परदुख रीझे रे ॥ उदासी

नता ज्ञन्नय विलक्षण, एक ठामे केम सीझे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ
ज्ञयदांन ते मल क्षय करुणा, तीक्षणता गुण ज्ञावे रे ॥ प्रेरण
विग्रु कृत जदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥
शक्ति व्यक्ति त्रिज्ञुवन प्रज्ञुता, निर्ग्रंथता संयोगे रे॥योगी ज्ञोगी वक्ता
मौनी, अनुपयोगि जपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु ज्ञं
ग त्रिज्ञंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,
आनंदघन पद लेती रे॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथश्री कुंथुजिन स्तवनं ॥

॥ राग गुर्जरी ॥

॥ मनमो किमही न बाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज
तन करीनें राखूं, तिम२ अलगो ज्ञाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥१॥ रज
नी वासर वसती कजम, गयण पायालें जाय॥सांप खायने मुखमुं
थोथुं, ए जखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा
अज्ञिलाषी तपिया, ज्ञान नें ध्यांन अज्ञ्यासें ॥ वयरीमुं कांइ एहवुं
चिंते, नाखे अवले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम
धरनें हाथे, नावे किण विध आंकू॥किहां कणे जो हठकरीहटकूं,
तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥४॥ जो ठग कहूं तो
ठग तो न देखूं, साहूकार पिण नांही ॥ सर्वमांह ने सहुथी अ
लगूं, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहूं ते
कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंमित जन समझावे,
समझै न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्युं ए
लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वातें समरथ है नर,
एहने कोई न झेले हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साध्युं तिण स
गलूं साध्युं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साध्युं ते नवि मानुं,
ए कहि वात छे मोटी हो ॥ कुं०॥ म० ॥ ८ ॥ मनडुं डुराराध्य तें

वस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदघन प्रभु माहरो आणो, तो साचूं कर जाणुं हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पडिक्कमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ कुं ॥

॥ श्रीसंखेसर पास जिनेसर भेटियै, भवना संचित पाप परा सब मेटियै ॥ मन धर भाव अनंत चरण युग सेवतां, अणइंूते एक कोमि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यांन धरूं प्रभू दूरथकी में ताहरो, जल जिम लीनो मीन सदा मन माहरो ॥ भव २ तुमहीज देव चरण हूं सिर धरुं, भवसायरथी तार अरज आहीज करूं ॥ २ ॥ भूख त्रिषा तप शीत आतप ए ना सहै, तप जप संजम भार त णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी, एहिज छै आधार जगतगुरु अम्ह भणी॥ ३॥ तुम्ह दरिसण विण स्वांम भवोदधि हूं फिरयो, सहीया डुख अनेक न कारज को सरयो ॥ मिलिया हिव प्रभु मुझ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीकृष्णतणी आरति हरी, सैन्या कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो, जयवंतो जिणचंद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद २ जुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन भुवन सिरताज ॥ आछेलाल, नगर ब्रहानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल सुगुण निधान ॥ आछेलाल, वामासुत वडभागीयाजी ॥ २ ॥ सेवकनी संभाल, करिय खरी ततकाल ॥ आछेलाल, संकट सहु प्रभु परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिंता करी चकचूर, प्रगट्यो आनंद पूर ॥ आछेलाल, वाट विषमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आछेलाल, मन वंछित मुऊ सहु फल्यां जी ॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी थाप, मिलिया छो प्रजु आप ॥ आछेलाल, देज्यो दरिसण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्षमा-कल्याण ॥ आछेलाल, वाचक इम वीनती करे जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जुं ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसादाणी रे ॥ वामासुत वरदाय, निरमल नांणी रे ॥ १ ॥ पांच कमल प्रजु अंग, निरुपम निरख्या रे॥ तीन कमल मुऊ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख, चंद लजाणूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंणूं रे ॥ ३ ॥ सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजे रे ॥ हृदयकमल सुविलास, थाल ज्यूं छाजे रे ॥ ४ ॥ प्रजु कर चरण विलोक, पंकज हारयो रे॥ ततखिण निज संवास, जलमें धारयो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग उदार, श्रीजिन राया रे ॥ साचे पुण्य संयोग, साहिब पाया रे ॥ ६ ॥ प्रजु-गुण अनुजव नीर, सांग सुरंगे रे ॥ टाल्यो पातिक पंक, आतम संगेरे ॥ ७ ॥ वरस अढार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पांचम दीस, सहु संघ साखै रे ॥ नगर मंदेवा मांहि, पास जुहारया रे ॥ श्री जिनचंद मुणिंद, वांछित सारया रे ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमीचाराय ॥ प्रगट थई पातालथी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आंख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसण देखण काज हो ॥ गो० ॥ पांणीनखमे पातली, गो० ॥ द्यो दरसण महा-राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिब सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो छे नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-रवा सेव हो, गो० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवमो, गो० ॥ सगली

भ्राति सदीव हो, गो० ॥ ऊंची नीची वातमें, गो० ॥ थे मति घालो जीव हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ४ ॥ देव घणांही देवलै, गो० ॥ दीठां ते न सुहाय हो ॥ गो० ॥ इक दीठां मन ऊलसे, गो० ॥ इक दीठां उल्हाय हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ५ ॥ कालै वाल्है माहरे, गो० ॥ कीधी खरी सनीम हो ॥ गो० ॥ दरसण देवानी नकी, गो० ॥ पाणीवलि पिण ढील हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ ६ ॥ तें कीधी तिम तूं करे, गो० ॥ राखी चिहुं मांहे लाज हो ॥ गो० ॥ वलि अवसर संभारज्यो, गो० ॥ इम जंपै जिनराज हो ॥गो०॥वा०॥ ७॥ इति पदं॥

॥पद ५ मुं॥

अरज सुणीजै अंतरजामी, पास जिनेसर स्वामी रे॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, त्रिभुवन जन विसरामी रे ॥ अ० ॥१॥ गुण गिरवा गोडीचा स्वामी, नाथ निरंजन नामी रे॥ अ० ॥ भव अटवी वन घन विच भमतां, पुण्ये सेवा पामी रे ॥ अ० ॥ २ ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, अनुभव गुण अभिरामी रे॥ चरणकमल सेवा चित चाहत, सुगण सदा हितकामी रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ६ हुं ॥

प्यारी पासकी, देखी मूरत मो मन भाय ॥ प्या० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, देख्यां दिल हरखाय॥ प्या० ॥ १ ॥ तीन लोकमें महिमा जाकी, सुर नर मुनि गुण गाय ॥ प्या०॥ नील वरण मनमोहन निरख्यो, नाथ गोडीचा राय ॥ प्या० ॥ २ ॥ सुगण सेवगकी येही अरज है, भवदुख ताप मिटाय॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति पदं॥

॥ पद ७ मुं ॥

॥ श्रीचिंतामण पासजी, अजब सुरंग अनूप ॥ सवाइ प्रभूजी, थांरी सांवली सूरत म्हांनु प्यारी लागे राज ॥ वामाजी नंदन वांदवा, चितमांमें लागी छै चूंप ॥ सवाइप्रभूजी ॥ १ ॥ अणिया-

ली प्रभू आंखमी, वदन सरोज विकास ॥ स० ॥ थां० ॥ नयण सलूणे जी निरखतां, ऊपजै अधिक उल्हास ॥ स० ॥ थां० ॥ २ ॥ अंगज नृप अश्वशेननो, करुणा निधि करतार ॥ स० ॥ थां० ॥ पुण्य संयोगे जी पांमीयो, दिल रंजन दीदार ॥ स० थां० ॥ ३ ॥ सो दिन सफलो जांणियै, सो य घमी सुप्रमांण ॥ स० ॥ जगतवछल जल भेटियै, जिनवर चतुरसुजांण ॥ स० ॥ थां० ॥ ४ ॥ जालम जेसलगढ जयो, श्रीचिंतामणि पास ॥ स० ॥ जगपति श्रीजिनचंदनी, अविचल पूरो जी आस ॥ स० ॥ थां० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ८ मुं ॥

॥ जीवन मारा तेवीसमा जिनराय रे, जिनवरजी ॥ तुम विन देख्यां एक घमी न रहाय, म्हारा जिनवरजी ॥ १ ॥ तुमे अमारा हीयमलाना हार रे, जि० ॥ अमे तुमारा दास छियै निरधार ॥ म्हारा जि० ॥ लागी तुमसुं लगन हमारी जोर रे, जि० ॥ चंद चकोरा जलधर नें जिम मोर ॥ म्हारा जि० ॥ २ ॥ नयण तुमारा कामणगारा जोर रे, जि० ॥ चितमो लीधो जिम तिम करि नें चोर ॥ म्हारा जि० ॥ अरज हमारीमानो मोटा देव रे, जि० ॥ आपो भव२ चरणकमलनी सेव ॥ म्हारा जि० ॥ ३ ॥ आस धरीनें आवे जे तुझ पास रे, जि० ॥ नवि मूंकीजे स्वामी तेह निरास म्हाराजि० ॥ मोटानी तो मोटी थाये बुद्धि रे; जि० ॥ इम जांणिने करज्यो माहरी शुद्ध ॥ म्हारा जि० ॥४॥ राखेज्यो मुझ ऊपर निवम सनेह रे, जि० ॥ अवगुण जांणी छिटक न देज्यो छेह ॥ म्हारा जि० ॥ खरतर गछपति श्रीजिनलाभ सूरिंद रे, जि० ॥ तासु पसायें पभणें अनोपमचंद ॥ म्हारा जि० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ९ मुं ॥

॥ सुगण सनेही प्रभुजी अरज सुणीज्यो, अरज सुणीने मोसुं महिर धरीज्यो राज ॥ सु० ॥ तुं छै प्रभूजी म्हारो अंतर जामी, पूरब पून्यै थांरी सेवा में पांमी राज ॥ साहिब में तो तुझनें जाण्यो छै साचो, कदिय न दिलमांहे आणुं हुं काचो राज ॥ सु० ॥ १ ॥ साचे तो दिलसुं राज करीय सगाई, सुगण प्रभु जीस्युं वधज्यो प्रीत सवाई राज ॥ सु० ॥ दरसण प्रभुजी तादरो दिलमांहे वसियो, रांत दिवस थारा गुणनो हूं रसियो राज ॥ सु० ॥ २ ॥ खिजमतगारो प्रभुजी चाकर हूं खासो, कदिय न मेलूं प्रभुजी पलभर पासो राज ॥ सु० ॥ मोटानी महरे राज मोटा कहीजै, लाहो लाखीणो प्रभुजी संगे लहीजै राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ पिंजर तो फिरसी राज केइ परदेसे, राज सदाइ मारा दिलमांहे रहसी राज ॥ सु० ॥ रंगे हूं चोल मजीठ रंगाणो, नहिय विसरस्युं प्रभुजी दरसण टाणो राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ लुलि२ हूं तुम पाये जी लागूं, मोज महिर तुम पासे हूं मांगू राज ॥ सु० ॥ श्रीजिनचंद सदा साधारो, तारक प्रभुजी थे भवजल तारो राज ॥ सु० ॥ ५ इति पदं ॥

॥ पद १० मुं ॥

॥ मोरा पास जिनराज, सूरत थारी लागे प्यारी ॥ दीठ आवे दाय, मो० ॥ जिम२ सूरत देखिये प्रभु, तिम२ वाधे प्रीत ॥ तन मन मारा उलसै कांइ, रूडी प्रीतनी रीत ॥ मो० ॥१॥ नयण कमलदल पांखडी प्रभु, मुखडो पूनमचंद ॥ दीपशीखासी नासिका काइ, दीठां परमानंद ॥ मो० ॥ २ ॥ कांने कुंडल झिगमिगे प्रभु, कंठे नवसर हार ॥ चंपकली सोहे भली कांइ, मुखडै उद्योत अपार ॥ मो० ॥ ३ ॥ तूं छै जगनो वालहो प्रभु, थारे सेवग कोड ॥ म्हारे

तूंहिज साहिबो कांइ, वंदू बे कर जोम, ॥ मो० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ सब फळ्या, में दीठा श्रीजिनराज ॥ सदानंद पाठक तणा कांइ, सीधां स्यलां काज ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ११ मुं ॥

जिनजी महिर करीने राज, दरसण वहिलो दीजै ॥ दीजै २ जी माहाराज, कारज सगला सीझै ॥ ए आंकणी ॥ मुझ मन भ्रमरतणी पर मोह्यो, भेमायो नवि छूटै ॥ प्रेम राग बंधाणो पूरण, ते तो कदेय न खूटै ॥ जि० ॥ १ ॥ अलगथकां पिण हूं प्रभु तुमने, नहिय विसारुं दिलसुं ॥ रात दिवस एहवी मन वरतै, जांणूं जइ मिलुं तुमसुं ॥ जि० ॥ २ ॥ पूरब पुन्यथकी में पायो, ए अवसर आजूणो ॥ मिलियो तूं प्रभु पास चिंतामण, साहिब सहज सलूणो ॥ जि० ॥ ३ ॥ थारे तो सेवग छै बहुला, मो सरिषा लख ग्याने, माहरे तो इण जगमे जोतां, थारे नही कोइ टाणे ॥ जि० ॥ ४ ॥ आस हिये इक ताहरी राखूं, बीजो सुख नही भाखूं ॥ अमृत जेम लही तुझ गुणरस, खारो जल किम चाखूं ॥ जि० ॥ ५ ॥ मोहन ए मुझनी महिमा, कहतां पार न आवे ॥ सायर लहर मालानें गिणतों, कहो कुण मति उपजावै ॥ जि० ॥ ६ ॥ भगतपणै किंचित गुण भाखूं, हूं म्हारी मति सारू ॥ निरुपमा अनुपम तुझ गुण लायक, त्रिभुवन जीवन सारू ॥ जि० ॥ ७ ॥ वरस अढार वली इकताले, मिगसर पख उजवाले ॥ इग्यारस दिन अधिक सनेहे, यात्र करी सुविशाले ॥ जि० ॥ ८ ॥ जेसलगिरि श्रीसंघ जुगतसुं, मेलो तिहां मंमायो ॥ लाभ उदय जिनचंदने प्रभुजी, वांध्यो प्रेम सवायो ॥ जि० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ पद १२ मुं ॥

॥ तूं मेरे मनमें प्रभु तूं मेरे दिलमें, ध्यांन धरूं पलपमें ॥

पास जिनेसर अंतरजामी, सेवा करुं छिनश्में ॥ तूं० ॥ १ ॥ काहूको मन तरुणीसें राच्यो, काहूको चित्त धनमें ॥ मेरो मन प्रभु तुमहीसे राच्यो, ज्युं चात्रक चित्त घनमें ॥ तूं० ॥ २ ॥ जोगीसर तेरी गति जांणै, अलख निरंजन छिनमें ॥ कनककीरत सुखसागर तूंही, साहिब तीन भुवननें ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोक्षनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ भाव दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया, संघ सकल आधारो रे, हिवइण भरतमां ॥ कुण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणो रे संघ ॥ साधे कुण आधारथी रे, परमानंद अभंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणां बाल ज्युं रे, अरहां परहा अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थायो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे, ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक भवसमुद्रनो रे, भव अटवी सथवाह ॥ ते परमेसरविण मिल्यां रे, किम वाधे उत्सादो रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर थकां पण श्रुत तणो रे, हुंतो परम आधार ॥ हमणां श्रुत आधार छे रे, ए जिन आगम सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो भविजना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ भव भव आगम संगथी रे, देवचंद पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय ऋषभ समोसर्या, भला गुण भर्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, तीरथ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरिसेहरो रे ॥ भरतें भराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अति भलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थंकर वीश ॥ ती० ॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी, रुद्धे भरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बिकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो रे ॥ फलोधी थंभण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अमीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसदेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनाकुलाई जादवो, गोमी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन भलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतिमा छती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुऊ इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ८

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सहीयो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धाचलगिरि जईएं वहेनी, विमलाचलगिरि जईएं रे ॥ आ० ॥ सुण वहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनंद इम भाखी ॥ भरतादिक नरपतिने आगल, इंद्रादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणगिरिवरियें काल अनंते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणनां दुःख छोमीने, अमल अखय गुण लीधा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि सन्मुख पगलां भरतां, आतम शुद्ध सुभावें ॥ कोमि भवांरां पातक कीधां, एक पलकमें जावे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीरथ ए शेत्रुं

जो, जोतां लागे मीठो ॥ तीन भुवनमें इण गिरि तोले, बीजो कोइ न दीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरंजनशुं नेह धरीने, आगें भलग करस्यां ॥ अद्भुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥ ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगंधा लेइ पचरंगा, हार सुगंधा गूंथी ॥ पहिरावी प्रभु कंठें लहिस्यां, शिव मारगनी सूधी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करियें ॥ मन गमती भमती विच भमतां, भवसायर निस्तरियें रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव नवाणूं वार प्रथम जिन, रायण रूंखे आया ॥ ए तीरथ शुभ भावें फरसी, करियें निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाभ भदे ए गिरिवर लहियें, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित वत्सल, प्रेम घणे चित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीअरिहंत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥ मुनि जे ज्ञानी संजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अनुमोदना, करतो जीरणसेठ ॥ श्रावक अच्युत गति लहे, नवग्रैवेका हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत संजम वास ॥ वेशालापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इग्यारमी जी, विचरत साहसधीर ॥ वेसालापुर बाहिरे जी, आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी, भले में भेट्या श्री जिनराय ॥ सखीरी चोक पुरावो आय, मेरे भाग्य अनोपम माय ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो वे देहरो जी, तिहां प्रभु काउसग्ग लीध ॥ पच्चक्खाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥ जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले श्रावकधर्म ॥ आकारे तिण ओलख्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवासीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रभु जीमस्ये जी,

से हथ देस्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, होसी सफल मुऊ आस ॥ एक मास गिणतां थकां जी, पूरी थइ चोमास ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीधी तइयार ॥ प्रन्नुनो मारग देखतो जी, बेठो घरने बार ॥ ज० ॥ ७ ॥ घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एकण वार ॥ प्रन्नुजी कां न पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीछे करस्यूं पारणो जी, हूं प्रन्नूने पमिलान्न ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय विन वरसे आन्न ॥ ज० ॥ ए ॥ अवसर ऊब्या गोचरी जी, श्री सिद्धारथपुत ॥ वेसालापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत्त ॥ ज० ॥ १० ॥ मिथ्यात्वी जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेमी प्रते इम कहे जी, कांइक न्निक्षा देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू न्नरने वा कला जी, प्रन्नूने आंगी दीध ॥ नीरागी तेही लिया जी, तिहां प्रन्नू पारणो कीध ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुन्नि जी, जै बोले कर जोमि ॥ हेम वृष्टि हुइ तिहां जी, साढीबारे कोमि ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रते इम कहे जी, में वहिराइ कीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजादिक सहूए कहे जी, धन२ पूरणसेठ ॥ ऊंची करणी तें करी जी, अवर सहू तुऊ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तवे जी, वाजित डुंडुन्निनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रन्नु पारणो जी, मनमें थयो विषवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अन्नागियो जी, मेरे न आया सांम ॥ कल्पवृक्ष किम पामीये जी, मारूमंमल ठांम ॥ ज० ॥ १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमांहि ॥ निरधन जिम२ चिंतवे जी, तिम२ निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास संतानिया जी, तिहां मुनि केवलधार ॥ ज० ॥ १ए ॥ वेशालापुर

राजियो जी, लोकास्युं आणंद ॥ राय प्रश्न पूछे इस्यो जी, सुगुरु
चरण अरविंद ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अछे जी, जीव पु
न्य जसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥
२१ ॥ राय कहे किण कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो
जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे
केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न
कोइ प्रमांण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण
घाल्यो बंध ॥ विना दांन दियां लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०
॥ २४ ॥ घर्मी एक सुर डुंडुन्नि जी, जो न सुणंतो कान ॥ लहि-
तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल गांम ॥ ज० ॥ २५ ॥
राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें था
पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाण ॥ ज० ॥ ॥ २६ ॥ दांन दिया सु
पात्रने जी, ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदांन अनुमोदना जी,
जीरण जिम फल थाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना
जी, दांन सुपात्र रसाल ॥ दांन देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मु
नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांणपणो ज
ग दोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुझ मिच्छामिडुक्करं ॥ १ ॥ अ-
रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते मु०
॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते
ऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-
दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंद्री जीवना, बे बे लाख विचार ॥
ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार२ प्रकाशी ॥ चवदे लाख
मनुष्यना, ए लाख चोरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणभव परभव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध२ कर वोसरूं, दुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादांनना, मैथुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निंद्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी चोतरे, कीधो थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आंण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारया दिन ने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भव माछला, झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग मारया पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जबे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवाल भवमें किया, आकाराकर दंड ॥ वंदीवान मरा विया, कोरडा छडी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधा नारकी दुख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना, अति तिख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारने भव में किया, निवाह पचाया ॥ तेली भव तिल पिलिया, पापे पेट भराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खड्या, फाड्या पृथवी पेट ॥ सूडाने दान किया घणा, दीधा बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधेवाही आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया नावी लिगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छींपाने भव छेतरयो, कीधा रंगणपास ॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूरपणे रणझूंझतां, मारया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूला ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी

लेंव्या ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ते०॥२२॥ अंगारकर्म किया वली, धरमें दव दीधा ॥ सूंस लेइ वीतरागना, कूडा कोसज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भव ऊंदर गिल्या, गि लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे भवे, में जूं लीख मारी॥ते०॥२४॥ भाडभूजातणे भवे, एकेंद्री जीव, ज्वार चिणाग हुंसे किया, पाडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पडाडिया, रोदन वि खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने भागा, मूल अने उत्तरतणा, मुझ दूषण लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विछु सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवे, हिंसा कीधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवडे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंजाया ॥ ते०॥३०॥ भव अनंत भमतां थकां, किया कुटुंब संबंध, ॥ त्रिविध २ कर वो- सरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरूं, करूं जनम पवित्र ॥ ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेराडी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥ ३३॥इति आलोयण सिझाय सं०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां, मुझ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह म्मदावादे पास ॥ गोडीनो धणी जागतो, सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ॥ प्रतिमा तीने पासनी, थई प्रतिष्टा जांण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, वामानो सुत साचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी॥गु०॥ ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनी भूमे अश्वनी पीमा, अश्वनी वाल विगूती जी॥ गु० ॥५॥ जागंतो जक जेहने कहिये, सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुम संतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रहक ठीने परगट करजे, मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे डंगो मले जे, टक्का पांचसे लेजे जी ॥७॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मारीस सुरमिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्र धन हय गय हाथी, लाठ धणी घर जास्ये जी ॥८॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुमने मिलस्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढया, वस्तु वहे तस पोठी जी ॥ ए ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं विहतो तुरकमो, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वमा देव हे कोइ ॥ अब सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥११॥ पाठलीरात परोमिये, पहली बांधे पाज ॥ सुहणामांहे सेठने, संभलावे यक्कराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक्क आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तूं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥ पांचसे टक्का तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थानक, प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुमने होसी बहु फलदायक, भाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणमे तेहना पाया, प्रदक्कीने थुणजे जी ॥ए०॥१५॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो,

आपणे थानक पहुतो जी ॥ पाटणमांहे सारथवाहू, हींमे तुरकने जोतो जी ॥ ए० ॥ १६ ॥ तुरके जानो दीठो गोठी, चोखा तिलक निलामे जी ॥ संकेत पहुतो साचो जाणी, बोलावे बहु लामे जी ॥ ए० ॥ १७ ॥ मुज घर प्रतिमा तुजने आपूं, श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांचसे टका जो मुज आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए० ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी, केशर चंदन मृगमद घोली, विधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए० १९॥ गादी रूमी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या पारकरमांहे, श्रीसंघने सुर साखे जी ॥ ए० ॥ २० ॥ उच्छव दिन२ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी ॥ गाम२ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए० ॥ २१ ॥

॥ दूहा ॥

इक दिन देखे अवधिसुं, पारकरपुरनो भंग ॥ जतन करूं प्रतिमातणो, तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने, थल, अटवी ऊजाम ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुचाम ॥ २३ ॥ कुशल क्षेम तिहां अछे, तुजने मुजने जांण, संका छोमी काम कर, करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, वाहण एक वृषेन्द्र जोतरे ॥ पारकरथी परियाणो करे, इक थल चढ बीजे ऊतरे ॥ २५ ॥ बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नवि चाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास वचन संभावूं सही ॥ २६ ॥ आ अटवी किम करूं प्रयाण, कुटको कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो, मंमाउं किम घरथे विणो ॥ २७ ॥ जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहां, सिलावटा किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे, यक्षराज आवी इम

कहे ॥ २८ ॥ गूंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहां ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण, पाहणतणी ञलटस्ये खांण॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किण जुउ, अमृत जल निसरिस्ये कूउ ॥ खारा कूआनो इह सहनांण, ञूमि पड्यो ठे नीलो गाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसे, कोढ पराञवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तूं इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मांनजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, शिलाचटाने सुहणो दियो॥ रोग गमाडुं ने पूरुं आस, पासतणो मंमे आवास ॥ ३२ ॥ सुपनमांहि मांन्यो ते वेण, हेम वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, सिलावटने गया तेमवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवे सूरमो, जीमे खीरखांम घृत चूरमो॥ घमे घाट करे कोरणी, लगन ञले पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंञ १ कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली ॥ रंगमंमप रलियामणो रसे, जोतां मानवनो मन वसे ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्राशाद, स्वर्ग समो मंमे आवास ॥ दिवस विचारी इंमो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढयो ॥ ३६ ॥ शुञ लगन शुञ वेला वास, पवासण वेठा श्रीपास ॥ महिमा मोटी मेरु समांन, एकलमल वगमे रहे वांन ॥ ॥ ३७ ॥ वात पुराणी में सांञली, तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठीतणा गोतरिया अठे, यात्र करीने परणे पठे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विमारण जक जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखामे निजरूप ॥ ३९ ॥ गिरूठ गोमीपास जिन ॥ आपे अरथ ञंमार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार, मारग चूकां मांनवी, वाट दिखावणहार ॥ ४१ ॥

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ प
वित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर
धनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो
धरे, पार उतारे लछी वरे ॥ ४३ ॥ दोजागीने दे सोजाग ॥ पग
विहूणाने आपे पाग ॥ गांम नही तेहने घे गांम ॥ मन वंछित पूरे
अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने घे आधार, जवसायर ऊतारे पार ॥
आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यांन ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां
साद दिये जक्रराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि
प्रकाश ॥ गूंगाने घे वचन विलास ॥ ४६ ॥ डुखियाने सुखनो दा
तार, जयजंजण रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेरीतणा, श्रीपार्श्व
नाम अक्षर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तियुद्ध
दूरे टले, डुध्र सींह सियाल ॥ ४८ ॥ चोरतणा जय चूकवे, विष
अमृत उपकार ॥ विषधरना विष ऊतरे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥
रोग शोग दालिद डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-
हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

ॐजतनू २ ॐज उपशम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपार्श्व अक्षर ज
पंते ॥ जूतने प्रेत ऊोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणंते
॥ ५१ ॥ ॐ० ॥ डुष्टा रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डु
नपंते ॥ गर्ज़बंधन ऊणं सर्प विछू विषं, चालिका बाल मेवाऊखंते
॥ ५२ ॥ ॐ० ॥ साडणी माडणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका
दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदरतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दंते ॥५३॥ ॐ० ॥ धरणेंद पद्मावती समर सोन्नावती, वाट आघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महान्नय हरे कानपीमा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग न्नणंते ॥ वदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रन्नु, श्रीपास जिण नांम अन्निराम मंते ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोमीपार्श्व जिन स्तवनं ॥

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संनि, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डुम्मस्स पुप्फेसु, न्नमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एव मेए समणा वुत्ता, जे लोए संति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाणन्नत्ते सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लप्नामो ॥ नहि कोइ नव हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु न्नमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे न्नवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंम रयादिंता, तेण वुच्चंति साहुणोत्तिबेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति शाशनं॥ १ ॥ मंगलं न्नगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रन्नु ॥ मंगलं स्थलन्नद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं॥ २॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म रक्षा करं वज्र, पंजरा न्नस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटंवरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव ज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दढं ॥ ३ ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं, मोचके पादयो सुन्ने ॥ एसो पंच नमोक्कारो, शिला वज्रमई तले ॥ ४ ॥ सव्व पावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च स-

भांसिं, खादिरंगार खातिका ॥ ५ ॥ स्वाहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥ महा प्रभावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्टी पदे सदा ॥ तस्य नस्याद्भयं व्याधि, राधि श्चापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा० स्तोत्रं संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

॥ सुखकारण भवियण समरो मित नवकार, जिनशासन आगम चवदे पूरव सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिंतित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड़, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोड़ि ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत, पंचमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छभार धुरंधर सुंदर शशिहर शोभ, कर शारणवारण गुण छत्तीसे थोभ ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गंभीर, तीजे पद नमिये आ चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुत्ता ते कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमूं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरयां संकट दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ (छंद)

॥ शेवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमूं नाथ निश्चे करी एक वुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गे, अहो जव्य लोको जुला कां जमो गे ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गे, पड्या पाश मे जूतमाने जजो गे ॥ सुराधेनु बंमी अजाने अजो गे, महापंथ मूंकी कुपंथे व्रजो गे ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे, ग्रहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरडुम ऊपामने आक वावे, महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु शृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रजु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना डुख दालिद दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो गे, कुशीले करी देहने कां दमो गे, नहि मुक्ति वासं विना वितरागं ॥ जजो जगवंत तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥उदय रत्न जाखे सदा हेत आणी, दयाजाव कीजे मोहि दास जांणी ॥ मोरे आज मोतीअमे मेह वूठा, प्रजु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नांमे गिरवर चढे, मन वंछित लीला संपजे ॥ गौतम नांमे नावे रोग, गौतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकमा, तसनांमे नावे ढूंकमा ॥ जूत प्रेत नवि मंमे प्रांण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नांमे निरमल काय, गौतम नांमे वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नांमे जयजयकार

॥ ४ ॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवंछित कप्पम तंबोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नांमे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल नांण, गौतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोमानी जोम, वारू विलसे वंछित कोमि ॥ महियल मांने मोटा राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम सरसी संगत मिले ॥ गौतम नांमे निर्मल ज्ञान, गौतम नांमे वाधे वान ॥८॥ पुण्यवंत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण छे वहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोमि, गौतम तूठा संपत कोमि ॥९॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए॥ प्रज्ञात उठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजियेए॥ १ ॥ वालकुमारी जगहितकारी, व्राह्मी जरतनी वहिनमी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वमी ए ॥ २ ॥ वाहुवल जगनी सतिय शिरोमणि, सुंदरी नांमे रुषत्र सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला वालपणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उमदना वाकला वीर प्रति लाज्या, केवल लहि व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रशेन धूआ धारणी नंदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम लेइ देव उल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, द्रुपदा नांम वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंद्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशंविक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरजुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नहीं विषयारसें ए, मुखनो जोतां पाप पुलाये नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी जेहनो कामण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जांणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कूवाथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिय सुन्नद्रा चंपा बार उघाड़ियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये वलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांडव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन डुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नल नरपतनी, दवदंती तसु गेहनी, ए संकट पड़ियां शीलज राख्यो, त्रिन्नुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता, पुष्पचूला ने प्रन्नावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न न्नाषे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर न्नणसे, ते लहिस्ये सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ पृथ्वीकूख रत्नहीर, विश्वन्नूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जड़ रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥ करत धरत गात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रन्नु आये चंग, वाणी गुण सप्त न्नंग ॥ वर्द्धमांन जित अनंग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेख॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव तार, न्नये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥६॥ सिद्धियोग नंद चंद, कार्त्तिक शित संघ वृंद ॥ फूलत घर कल्प कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इंद्रभूति जगधणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक ऋद्धिसारीज०॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हांने० हाथ लकड़िया कांधे कंबलिया, शिर शोभित तनु केश म्हां० ॥ १ ॥ चोलपट्ट चादर पांगरणी, उज्जल रहत हमेश ॥ म्हां० ॥ २ ॥ जयणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३॥ थिवरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हां० ॥५॥ करत रामऋद्धिसार वंदना, निरखत एसो भेस॥ म्हां०॥६॥ इति पदं॥

॥ अथ अरिहंत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहंत२ ध्याते हे ॥ अरिहंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय२ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानंदी जगत उधारण, सुरनर चरण जुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ रचाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुंदुभि नाद बजाते हे, धर्म केते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें लाते हे ॥ रामऋद्धिसार कहे ऋद्धसार, तूं आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तुं उठे परभात, चार घडी ले पाछली रात॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥१॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं छे कुलकर्म, कवण अ मारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले जे मन शुद्ध, धर्मनी हेडे धरजे बुध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्ते करे पच्चरकाण सूधि पाले जिननी आण ॥ जणजे गणजे स्तवन सझाय, जिणहुंती निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यजावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषाले गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां, सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ डुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटाशुं म करे अजिमान ॥ गुरुने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश ए के घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंग अधिकानो परिहार ॥ म जरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म जांख ॥ ए ॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अजक्ष्य वाविशे विश्वावीश ॥ ते जक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बेवे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ गणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म जरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकि

त शुद्ध हैये राखजे, बोल विचारीने भाखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, ऊघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार; चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आलोए पाप, जिम भां जे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर च रण शरण भव भवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अण सण ले सोय ॥१९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जा यवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन धन अवतार ॥ ॥२०॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छुटे आमला ॥ २१ ॥ वारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम॥ कहे जिनहर्ष घणे सस नेह, करशो दुःखहरणी छे एह ॥२२॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पणमवि प भणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकंद कर वि निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥जंबूदीव सिरिभरहखित्त खोणी तल मंडण, मगहदे स सेणियनरेस रिउदल बलखंडण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम जि हां गुणगणसज्जा, विप्प वसे वसुभूइ तच्छ तसु पुहवी भज्जा ॥२॥ ताणपुत्त सिरिइंद भूय भूवलयपसिद्धो, चवदह विज्जा विविहरूव ना री रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सा त हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जाणवि पंकजजलपाडिय, तेजहिं तारा चंद सूर आकास भमाडिय ॥ रूवहि मदण अनंग करवि मेल्हयो निरधाडिय, धीरम मेरु गंभी

र सिंधु चंगम चयचाम्रिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जंपे किंचिय, एकाकी किल जीत्त इन्न गुण मेल्ह्या संचिय ॥ अह वा निश्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गंग रतिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र गात्र हींमे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासमि खोणीतल मंमण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुवरगाम तिहां, विप्प वसे वसभूइ, ं र तसु पुहवि भज्जा, सयलगुणगणरूवनिहा ण, ताणपुत्त विज्जानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ भास ॥ चर म जिनेसर केवलनाणी, चोविहसंघ पइठा जाणी॥ पावा पुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहास सन बेठा, ततखिण मोह दिगंत पइठा ॥ ए॥ क्रोध मान माया म दपूरा, जाये नाठा जिम दिनचोरा ॥ देव दुंदुभि आगासें वाजे, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि नवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसभर वरवरसंता, जोज नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलहलकंता, गयण विमाणहि रणरणकंता ॥ पेखवि इंद्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंमक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ मोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपम दी

जं ॥१५॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण संपन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्मविय, समवसरण वहु सुरक कारण ॥ जिणवर जग उज्जोय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण सामी ठव्यो, हुउ तो जयजयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इंदभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो करसं चरिय, कवणसु जिणवर देव तो ॥ जोजन भूमि समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवंती सुरंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदंम ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि वर्जितजंगुगण, प्रातीहारिज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंइ इंद्राणी राय तो ॥ चित्त चमक्किय चिंतव ए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इंइ जाल तो ॥ तो बोला वइ त्रिजग गुरु, इंइभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेरू वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे, भगतहिं ना म्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥२०॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ विहुं उपवा सें पारणो ए, आपणपें विहरंत तो गोयम संयम जग सयल, जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंइभूइ इंइभूइ चढियो वहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेरे फुरंततो ॥ बोधवीज सज्झायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिरक लेई सिरका सही, गणहरपयसंपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥ दीठ गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे

संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढ चउवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेइ, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतो ए ॥२५॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंड कलस ध्वज वड सहिय॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर भरतेसर महिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यकजृंभक देव तिहां ॥ प्रति बोध्या पुंडरीक, कंडरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमीय वूठ अंगूठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे ॥ पंचसयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरुसंयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम ॥ जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिउरिय जिणनाह वंदइ, जाणेवी जग गुरु इयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरमजिनेसर इम भणे,

गोयम म करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ल बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल सिय ॥ विहरियो ए भरहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव तो ए कणय पउमेण, पायकमल संघें सहिय ॥ आवियो ए नय णाणंद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मनविखवाद, नादभेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि, जाण्यो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए बालक जेम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो यम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें सं वसिय तीसवरससंजम विभूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सह कारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गंधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल तेजें झ लके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हंसा, जिम सुरतरुवर कणयय तंसा, जिम महुयर राजीववनें ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३७ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जगमांहे, पूरब दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाषा, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जूमीपती जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधें गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी, अष्टमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहिलो पजणीजें, माया बीजो श्रवण सुणीजें ॥ श्रीमिति सोजा संजवो ए ॥ देवां धुर अरिहंत नमीजें, विनय पहू उवझाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय जमीजें, कवण काज आयास करे ॥ प्रह ऊगी गोयम समरीजें, काज समग्गल ततखिण सीऊे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मंगल ए पजणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए ॥ विनयवंत विद्या जंमार, तसु गुण पुहवी न लब्नइ पार, वरु जिम साखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धिवृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन उछो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेस

णो ए ॥ तिहां ठेठी गुरु देशना देशी, जविक जीवना काज सरेसी, नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, मह ऊगमते सूर ॥ जूख्यां जोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जंमार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मनवंछित दातार ॥ २ ॥ पुंमरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं, सुविणियं सबलद्धि संपन्नं ॥ वीरस्स पढम सीसं, गोयम सामी नमंसामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आंणी मन आनंद ॥ रास जणूं रलियामणो, सेत्रुंजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हुआ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज माहातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसरया, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इंद्रादिक आगल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुंज तीरथ सारिखो, नही छे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सगला जोय ॥ ४ ॥ नांमे नव निध संपजे, दीठा दुरित पुलाय ॥ जेटंता जव जय टले, सेवंता सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण जरत मफार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजो ने श्रीपुंमरीक, सिद्धक्षेत्र कहूं नहतीक ॥ विमलाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुंजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरि

ने महागिरि पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुगांम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम कीजे गुणधांम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवीस नांम, जपेज बेठा अपने ठांम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दूहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमांण ॥ पिहुलो मूल ऊंचपण, छवीस जोयण जांण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जांणवो, बीजे अरे विसाल ॥ वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदना त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यांन धरूं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण, चोथे अरे मझार, ऊंचो दस जोयण अचल, नित प्रणमें नर नार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम अरे, मूलतणो विसतार ॥ दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुंजो तीरथ सार ॥ ॥ ५ सात हाथ छठे अरे, पिहुलो परबत एह ॥ ऊंचो होस्ये सो धनुष, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थंकर, अनंत सीधा इण ठांम रे ॥ अनंत वली सिझस्ये इण ठामे, तिण करूं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुंजसाधू अनंता सीधा, सीझसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज तीरथ नही भेट्यो, ते गरभावास कहंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकार रे ॥ रायणरूंख समोसरया स्वांमी, पूर्व निनाणूं वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरतपुत्र चैत्री पुनम दिन, इण सेत्रुंजगिरि आय रे ॥ पांच कोडीसुं पुंडरीक सीधा, ति

ण पुंमरीक कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, वे बे कोमी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण प्रणमुं परभात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदसने दिन, न मीपुत्री चउसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी धा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्रावम ने वारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोमी मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांमव इण गिर सी धा, नव नारद ऋषिराय रे ॥ संब प्रद्यून्न गया इहां मुगते, आठू क र्म खपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तिर्थंकर, समवस रया गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थंकर बेहूं, रह्या चोमासे सुरंग रे ॥ से० ॥ ए ॥ सहस्र साधु परिवार संघाते, थावच्चासुत साध रे ॥ पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाध रे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुंज सीधा, भरतेसरने पाट रे ॥ रा म अने भरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥ जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोमि रे ॥ साधु अन ता सेत्रुंज सीधा, प्रणमुं बे कर जोमि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइनी ॥

॥ सेत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार ॥ सुणतां आणंद अंग न माय, जनम श्ना पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋ षभदेव अयोध्यापुरी, समवसरचा स्वामी हित करी ॥ भरत गयो वंदणने काज, वे उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमांहे मोटा अरिहंत देव, चोसठ इंद्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, भर त सुणीने मन गहगह्यो ॥ भरत कहे ते किम पांमिये, प्रभु कहे से त्रुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवीपद मुऊ, द्ये आपो

हू अंगज तुझ ॥ इंदे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघवीपद ता स ॥ ५ ॥ इंदे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष भदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू की सहु देस, भरत तेमायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ भगत कीधी अतिघणी, सं घ चलायो सेत्रुंज भणी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोडि साथे लिया वली ॥ ए ॥ चक्रवर्त्तनी सघली ऋद्धि, भरते साथे ली धीसिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कहतां नाये पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंजा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माणिक मोत्यांसु वधाय ॥ तिण ठामे रही महोछव कियो, भरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक झड पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूख छे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोदामणी, भरतें दीठी कौतुक भणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंदे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो, भरत करायो गुरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतनतणी प्रतिमा मन रंग ॥ भरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोदामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवानी प्रतिमा वली, माहो पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद, भरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्राशाद, भरतें कराया गुरु सुप्रशाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चोथी ॥ राग सिंधूडो आसाउरी ॥

॥ ज्ञरततणे पाट आठमे, दंमवीरज थयो रायो जी ॥ ज्ञरततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुंज उद्धार सांज्ञलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात वीजा वली, तेन कहुं अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपातणो, सोनानो विंब सारो जी ॥ मूलगो विंब ज्ञंमारीयो, पश्चिमदिसि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दंमवीरज राजातणो, ए वीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंमवीरजथी जिवारो जी, इशानेंद्र कराविया ॥ ए तीजो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए चोथो उद्धारो जी ॥ से० ॥६॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेंद्र समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो कराविया, ए पांचमो उद्धारो जी ॥ से० ॥७॥ ज्ञुवनपती इंद्रनो कियो, ए छठो उद्धारो जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उद्धारो जी ॥से०॥८॥ अज्ञिनंदन पासे सुणयो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यंतरइंद्र कराविया, ए आठमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ ए ॥ चंद्रप्रज्ञु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चंद्रजशराय कराविया, ए नवमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शांतिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय कराविया, ए दशमो उद्धारो जी ॥ से० ॥११॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वामी वारो जी ॥ श्रीरामचंद्र कराविया, ए इग्यारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांमव कहे अमे पापिया, किम छूटां मोरी मायो जी ॥ कहे कुंती सेत्रुंजतणी, जात्र कियां पाप जायो जी ॥ से० ॥१३॥ पांचे पांमव संघ करी, सेत्रुंज ज्ञव्यो अपारो जी, काष्ट चै

स्थ विंब लेपना, ए बारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाखाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजनो संघ करी, थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥१५॥ अठोतर सो वरसां गया, विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाड जावड कराविधो, ए तेरमो उद्धारो जी ॥१६॥ से०॥ संवत बार तिडोतरे, श्रीमाली सुविचारो जी, वाहडदे मुंहते कराविथो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥ से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह कराविथो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर सत्यासिये, वेसाख वदि शुन्न वारो जी ॥ करमे डोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते ठे उद्धारो जी॥नित२कीजे वंदना,पांमीजे न्नवपारो जी॥२०॥से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहुं, सांन्नलो जिम ठे तेम ॥ सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्शनी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ न्नगवंतनो न्नेप मांनता, लान्न हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपरे, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमांण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्त्तनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उपवास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सीधा दश कोडि ॥ मह्न स्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे ठोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक न्नणी, न्नोजन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज साधु पडिलान्नतां, अधिको तेहथी देख ८

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ सेत्रुंज गया पाप छूटिये, लीजे आलोयण एमो जी, तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमो जी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तुतणी चोरी करी, ए आलोयण तासो जी ॥ चैत्रीदिन सेत्रुंज चढी, एक करे उपवासो जी ॥ ३ ॥ से० ॥ कांसी पीतल तांबा रजतनी ॥ चोरी कीधी जेणो जी ॥ सात दिवस पुरिमड्ढ करे, तो छूटे गिरि एणो जी ॥४॥ से० ॥ मोती प्रवाला मूंगिया, जिण चोरया नर नारो जी ॥ आंबिल कर पूजा करे, त्रिण टंक शुद्ध आचारो जी ॥ ५ ॥ से० ॥ धान पाणी रस चोरिया, ते भेटे सिद्धक्षेत्रो जी ॥ सेत्रुंज तलहटी साधुने, पडिलाभे सुध चित्तो जी ॥ से० ॥६॥ वस्त्राभरण जिणे हरया, ते छूटे इण मेलो जी ॥ आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहू वेलो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुध्ध थाये एमो जी ॥ अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहू प्रेमो जी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोडा महि, गज ग्रह चोरणहारो जी ॥ थे ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारो जी ॥ से० ॥९॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लिखे अपणो नांमो जी ॥ छूटे छम्मासी तप कियां, सामायक तिण ठामो जी ॥ से० ॥१०॥ कुंआरी परिव्राजका, सधव अधव गुरुनारो जी ॥ व्रत भांजे तेहने कह्यो, छम्मासी तप सारो जी ॥ ११ ॥ से० ॥ गो विप्र स्त्री बालक रुषि, एहनो घातक जेहो जी ॥ प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप कर तेहो जी ॥ १२ ॥ से० ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा

करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ बहरी पालतां चालिये ए, सेत्रुंज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पोहचिये ए, संघ मि ल्या बहु थाट ॥ से० ॥ २॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्ता नी वावि ॥ तिहां विसरांमो लीजिये ए, वमने चौंतरे आवि ॥३॥ से० ॥ पालीताणे पाजमी ए, चढिये ऊठ परनात ॥ सेत्रुंजनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखंत ॥ से० ॥४॥ चढिये हिंगलाजने हमे ए, कलिकुंम नमिये पास ॥ वारीमांहे पैसीये ए, आंणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ॥६॥ वंस पोरवामे परगमो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघ वी करावियो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरचिये ए, नमतीमांहे नला बिंब ॥ पांचे पांमव पूजिये ए, अदनुत आदि प्रलंब ॥ ८ ॥ से० ॥ खरतरवसही खंतसूं ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ नेमनाथ चवरी नमूं ए, टालूं अलग उदेग ॥ से० ॥ ए॥ धरमडुवारमांहि नीसरूं ए, कुगति करूं अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ नगवंत ॥ देव जुहारुं देहरे ए, नमतीमांहे नमंत ॥११॥ से० ॥ सेत्रुंज ऊपर कीजिये ए, पांचे गाम स्नात्र ॥ कल श अगोतर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुंमरीक गणधार ॥ रायण तल पग ला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥१३॥ से० ॥ रायण तल प गला नमूं ए, चोमुख प्रतिमा च्यार ॥ बीजी नूमि बिं बावली ए, पुंमरीक गणधार ॥ १४ ॥ से० ॥ सूरजकुंम नि हालिये ए, अति नली उलकाऊोल ॥ चेलणतलाइ सिद्ध शिला ए, अंग फरसुं कल्लोल ॥ १५ ॥ से० ॥ आदिपुर पा

र्ज ऊतरूं ए, सिद्धवमनूं विसराम ॥ चैत्यप्रवाम इण पर करी ए, मी धा वंछित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुंजतणी ए, सफल कियो अवतार ॥ कुलज केनसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहू कोय ॥ घर बेगां भणे भावसुं ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजतणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गछ खरतर तणो ए, श्रीजिनचंद सूरीस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जांणिये ए, समयसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुणतां आणंद था य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

॥ वादी वीस जिनेसरु, रचस्युं रास रसाल ॥ तीरथ शिखरसमेतनी, महिमा वमी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले, प्रगट्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय ॥ भविजन भेटो भावसुं, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनंत भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी भली, तिहां जितशत्रु

नरेसर वली ॥ विजयाराणीने सुत जांण, अजितकुमर सहु गुण
नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उछव धरे॥
तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु
क्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग ॥ अवस
र दे संवत्सर दान, संजम लीनो आप सुजांण ॥४॥ कर्म खपावी
पांम्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधांन ॥ विचरे पुहवीमंडलमांहि,
भव्यजीव प्रतिबोधन ताहि ॥५॥ सिंहसेनादिक गणधर भया, पं
चाणवे संख्या सहु थया, एक लाख मुनिवर परिवरया, श्रावक
श्रावकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवी
यां जांणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठाणुं सही, दोय लाख
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी सं
ख्या सुविचार ॥ बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर
सुहाय ॥८॥ साढीच्यारसे धनुष सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गं
भीर ॥ गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण
॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आव्या निज हेत
सहस मुनिवरने परिवार, मासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥
चैत्री सुदि पूंनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे ॥ भूचर खेच
र किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उछव करी ॥ ११ ॥ थाप्यो तीरथ मोटो
भली, अठाइ महोछव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते
भवियण अक्षयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दूहा ॥

॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे
त सुहामणो, प्रगट्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल बीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावथीनगरी भली धन संपद बहु थोक, जैतारि नृप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खाण, जेहने सुत श्रीसंभव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण सरीर मनोहर प्रभुनो जांण, लंछन अश्वतणो सोहे प्रभुनो परधान ॥ साठ लाख पूरवनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्चपणै प्रभु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गणधर होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख श्रमणी वली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल विचरे प्रभु श्रीशंभव जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणुं श्रावकलोक, षट लख सहस छत्तीस श्रावकणी संख्या थोक ॥ त्रिमुखयक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार, विचरंता प्रभु सकल संघमें जयश्कार ॥४॥ सहस श्रमण परिवारे प्रभुजी सिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद देत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अभिनंदन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण ॥ शिखरसमेत सोहामणो, भेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे मन रली ॥ सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए, अभिनंदन जिन प्रगटया चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी तीनसे ॥ सुंदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंछन ते नित वसे ॥ पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए॥ तीन लाख मुनि छलाख आर्या, सहस त्रिंसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी दो लख श्राद्धनी, संख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकाण्यांरी संख्या जाण ए, नायकयक्ष कालिका वाण ए ॥ उल्लालो ॥ वाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस साधू परवरया प्रभु मुक्ति पहुंचे वेदणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमंगला, श्रीसुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥ ३ ॥ चाल ॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रौंच सोहै सुभगे हसे ॥ पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुणगण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस वीस प्रमणां ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख सोले सहस तुंबरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनगरी तात ए, धर नृप तात सुसीमा मात ए, पदम प्रभु तसु अंगज नाथ ए, लंछन कमलत णो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई से त कहो, तीन लाख पूरव थित कहावे एकसो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहतर श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पांच लाख वलि पांच हजार ए, श्रावकणयारी संख्या सार ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहे सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभूनी, सेव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई, ॥ तसु चरण पंकज बालचंदे हृदय आनंद गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमर सु सेवतां, पांमे वंछित कांम ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ श्रीसीमंधर साहिबा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ दे वी पृथवी मात जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसे देहनो, कं चनवरण सुहाय लालरे ॥२॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, सा धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस सा धवियां जोय लालरे ॥३॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्खनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी थाय लालरे ॥४॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि पर वार लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नांम लियां निस्तार ला लरे ॥५॥ श्री० ॥ नगर चंद्रपुर इण परे, राजा तात महेश लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंद्रप्रभु वेस लालरे ॥६॥ श्रीचंद्रप्रभु वंदिये, चंद्रवरण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चंद्रतणो भलो, धनुष डोढसे देह लालरे ॥७॥ श्रीचं० ॥ भविककमल प्रतिबोधता, सेवे सुर नर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरव आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ श्रीचं० ॥८॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्र मणी तीन लक्ष लालरे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्रा विका चउ लक्ष धार लालरे ॥ सहस इकाणवे ऊपरे, प्रभुजी नो परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी, स हस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥११॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥

॥ जय श्रीसुविद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समे तशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥१॥

॥ ढाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ए देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, त्राए सुविध सुजन जीव ॥ १ ॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या त्राए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दो मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्राविकणी सुविचार ॥ ५ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साधु परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥ ६ ॥ मास संलेखण कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा मन हियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥ ७ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, इव सुणज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दृढरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥ ८ ॥ लंछन सुन्न श्रीवछनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ धनुष, मान सरीर अमंद ॥९॥ एक लाख पूरब कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजाण ॥ १० ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयासी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ ११ ॥ सहस अठावन लक्ष चौ, श्राविकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सहु संघ सानिधकार ॥ १२ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधून परिवार ॥ मुक्ति गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥ धन२ संप्रति साचो राजा ॥ ए देशी ॥

॥ सिंहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभूजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो रे नमो श्रीत्रिभुवन राजा, खड्ग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असी

देहमांन चैरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर बहुत्तर सहस चेरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सह स वलि सहस गुणयासी, श्रावक पुण दो लक्ष जी ॥ ३ ॥ न० ॥ अड़तालीस सहस वलि चौ लख, श्राविका जाणो सार जी ॥ जक्ष अमर सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकार जी ॥ ४ ॥ न० ॥ सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेत जी ॥ मास संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी ॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात नृपति, श्रीकृतवर्म सुमात जी ॥ स्यामादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, साठ धनुष देहीमांन जी ॥ साठ लाख वरसनो आयु, शिष्य सतावन जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अरु सय इक लख, श्रमणी श्रावक जांण जी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका, चौ लक्ष संख्या आण जी ॥ न० ॥ ८ ॥ षणमुख सुरवर विदिता देवी, प्रभुजी शिखरसमेत जी ॥ षट हजार साधू परिवारे, मुक्ति गए सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी नाम अयोध्या नरवर, सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनंतकुमार जी ॥ न० ॥ १० ॥ लंछन स्येन सोवन सम काया, धनुष पचास प्रमांण जी ॥ तीस लाख वछरनो आयु, गणधर पचवीस आंण जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छासठ सहस मुनीसर सोहे, बासठ श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्रावकणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघके सानिध, कारी नित प्रति जोय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसे मुनिवरनै परिवारै, सिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दूहा ॥

॥ असे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिंद पर, नमो२ जगत्राण ॥१ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ जगतगुरु त्रिसलानंदन जी ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण ॥ राणी सुव्रत मातने जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥१॥ जगतपति धर्म जिनेसर सार ॥ धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी, वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस प्रमांण ॥ श्रमणी वासठ सहसस्यूं जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥ ३ ॥ ज० ॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जी, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कही जी, दस लक्ष आयु विचार ॥४॥ ज० ॥ किन्नर सुर यत्ना सुरी जी, एक सहस परिवार ॥ समेतसिखर मुगते गया जी, वांदू वार हजार ॥५॥ ज० ॥ हथ्थणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात ढदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय२कार॥जगतपति शांति जिनेसर सार ॥६॥मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥७॥ वासठ सहस मूनि छसै जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कह्या जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ ज० ॥ सहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरूड़यक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥९॥ नवसै मुनि परवार स्युं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगतिमें जी, पुहता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ असें हथ्थणापुर भलो जी, राजा सूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियां जी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पैंतीसनो जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पच्चाणव वरस

नो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपता जी, साठ सहस मुनि जांन ॥ उसे साठ सहस वली जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनो जी, श्राव क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरया जी, देवी व ला गंधर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५

॥ दुहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रो ता सुणज्यो प्रेम धर, आस्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ देसी बिछियानी ॥ हांरे लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू ॥ ए देशी ॥

॥ हांरे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुष देहीनो मांन रे लाला ॥ कंचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥ ॥ २ ॥ श्री अ० ॥ इक लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांण रे लाला ॥ सहस बहुत्तर तीनकी लक्ष श्राविका संख्या आंण रे लाला ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवी सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए उग गिर प्रभु, कर मास संलेखण सा रे रे ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिलानगर प्रभावती, मात पिता श्री कुंभ राय रे लाला ॥ लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम कायरे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥ ५ ॥ सहस पचा वन वर्षनी, थित गणधर अठावीस रे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्री म० ॥ चा लीस सहस मून सरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्र्यासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म०॥

श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला॥ सहस मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥९॥ राजेग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला ॥ श्यामव रण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वरस तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या व हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष प चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मुनि परवारसे, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी, सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो, वपु धनुष पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिने सरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इकतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ इक लख सित्तर सहसनी, तीन ल क्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूहा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि रोमणि सहसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जय९ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥

सांवरियो साहिब जगनायक, नांम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय॰ ॥ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज॰ ॥ कासी देस वणारसी नगरी, श्रीअश्वसेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय॰ ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि, देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयु इकसो वरस प्रमाणे, गणधर दस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज॰ ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अरतीस हजार जी ॥ भूमंडल विचरे भवि जनकूं, बोधबीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज॰ ॥ चोसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज॰ ॥ वीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा यइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगट्यो जग में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज॰ ॥ छहरी पाले जे नर आवै, भेटे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सुरतरुनो कंद जी ॥ ८ ॥ ज॰ ॥ बहुविध संघतणी करै भक्ति, संघपति नांम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज॰ ॥ परभव सुरनर संपद पामे, जात्रा करे गहगाट जी ॥ सावर्मी वछल मुनिभक्ति, पूजा उछव थाट जी ॥ १० ॥ ज॰ ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो भविजन भाव जी ॥ ध्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उछाव जी ॥ ११ ॥ ज॰ ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां नवनिध थाय जी ॥ तिण ए भविजन भाव धरीने, सुणज्यो मन थिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज॰ ॥ खरतर गछपति महिमाधारी, कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौभाग्य सूरीश्वर, अमृत वचन सुगात जी ॥ १३ ॥ ज॰ ॥ तासु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्रने सीस जी ॥ बालचंद निज मति अनुसारे, सोधो विबुध जगीस जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणीसें सितरोत्तर, सुदि वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, जणतां मंगल माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

ऋषभ प्रमुख जिन पायजुग प्रणमूं, सिवसुख दायक मनह उल्लास ॥ पुंडरीक श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल विकास ॥ १ ॥ प्र० सम सूधा साधु नमुं नित, जावे श्रमण सुगुरु जगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसंत ॥ २ ॥ प्र० ॥ जरत महामुनि प्रथम चक्कीसर, बाहूबल उपशम जंमार ॥ सूरयसादिक आठ मुनिसर, पांम्यो विमलाचल जवपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ ऋषभवंस जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोमी लाख असंख, श्रीसेत्रुंजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कंख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्त्ति, साधु महाबल संजम सहि ॥ अचलादिक बलदेव अष्टमुनि, राम ऋषीसर नवन अबीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख व वसुंदर, श्रीमल्लिनाथ पूरबजव मित्र ॥ पहुंता परम ऋषीसर शिवपुर, पाली श्रीजिन आंण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ वंडु विष्णुकुमार लबधि निधि, खंदक सूरीना सीस सय पंच ॥ कार्त्तिकसेठ सुसाधु कीर्त्तिधर, श्रमण सुकोसल व्रत निरवंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयडुवंस अक्षोजसु सागर, प्रमुख आठ अणगार प्रधान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव, निरमल गुणगण रयण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने उवयालो, पुरससेण वारिसेन प्रजुन्न ॥ संब अने अनिरुद्ध ऋषीसर, सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ए ॥ प्र० ॥ कुमर अनीकजसादिक षट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकमाल ॥ ढंढण ऋषि श्रीथावञ्चा

सुत, सहस साधु संजतसु कृपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ ढाल बीजी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ सहस श्रमणसुं सुक संजमधरो, पंचसयांमु सेलग मुनि वरो ॥ सिद्ध थया श्रीपुंमरगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्यां संपदकरो ॥ उल्लालो ॥ संपद करो समदम रिषीसर साधु सारण सोह ए, मं तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुध्ध प्रबुध्ध नारद मुनि प्रमुख पैंताल ए, दमदंत महारुषि कुंजवारे साधु नमुं त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिषजदत्त रतनत्रय मुणी, स, मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पांमव प्रणमुं मुनिपती, केसपएती बोधक जिनमती ॥ उल्लालो ॥ जिनमती वालक पूत्र मेइज थिवर आणंद रक्खियो, अणगार कासव धर्म जाख्यो सोधि सिवपुर स क्खियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ साधक उपसमइ, श्रीपुं मरीक महामुनीसर प्रणमिये शुज संयमी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वंड वलकलची र.केवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रली ॥ श्रीकरकंडू डुमह नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लालो ॥ श्री जुवा ए वृषजादि देखी थया वरू वइरागिया, संजमतिरि जज मो हनिज्ञ तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध थया गकण समें, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं मह समे ॥ १३ ॥ चाल ॥ खंति कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहज्जा मुनि चरणे लय ला इये ॥ काल उवाई प्रमुख महामुणी, संजम सुछ जयंता साहूणी ॥ उल्लालो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पांमिया ॥ श्रीश्रमणजड़ सुजइ सुंदर अचल आतमरामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठ सीस सुव्रत, साधु सुयत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत गोजद्द गरुछ गरि मा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ सिरि सिवराय रूषीसर वंदिये, दसारण जइ नमुं डख वंदिये ॥ अर्जुनमाली मुख संजमधरे, मुहदमरो

री सिवरमणी वरो ॥ उल्लालो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरगडू क्षमावंत प्रसिद्धव, कोमिन्न दिन्न अने सेवाली पनर सतक तिम्मोत्तरा ॥ गोतम प्रबोधल सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥ गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रथवीचंद प्रणम्यां सुख पाइये ॥ खंदकुमार सदा अभिनंदिये, नमिद जरद मित्र मन आणंदिये ॥ उल्लालो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसुं समरी करी, रुष इलापुत्र चिलापुत्र मृगापुत्र हीये धरी ॥ श्रीइंद नाम निर्ग्रंथ निर्मम धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि बोध तसु जितशत्रु मुनीसरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि २ जसतणो, श्रमण सुदंसण सील सुदामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर नर चित चमकार ए ॥ उल्लालो ॥ चमकार सार सुजात रुषिवर देवसांनिध जस घणी, गंगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पालत हित घणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥ श्रीकपिल रुषि हरिकेशव बल मुनि, नित नमुं निरलेव ए ॥ १७ ॥ ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषे जुड, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुत ॥ श्रीइखुकार नृपति कमलावती, रांणी भृगुसुं शोदित सुजमती ॥ उल्लालो ॥ सुजमती जेहनी जसाभार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए बहूं लेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ क्षत्रिय मुनिसर साधु संजम धर्मरुचि महाव्रती, निग्रंथनाथ अनाथ वंदू समुद्रपाल सुसंयती ॥ १७ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कल्पो, विषसुं शीतल सिवकमला मिल्यो ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशंस्यो तप गुण वीर ए ॥ ३० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुबाहु जड नंदकुमार ए, आदिक दसे रिष चरिय जेहना सुख विपाक उदार ए ॥ श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंदग क्षमानिधि कहिये इण कलै, कुरुदत्त सुत्त तीसग सरोरुह रिष नम्यां आस्या फले ॥ १ए ॥ चाल ॥ अंग प्र

सुख रिष च्यारे आदरी, विधिसुं संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अन्नैकुमार मुनि अन्नयंकरो, हल्ल विहल्लसु आतम हितकरो ॥ त्रुटको ॥ हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिषेण आराधियै, सुनक्षत्र नै सर्वानुन्नूति समर सिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने उदायन चरम राजरुषीसरो, श्रीसालन्नद सुधन्न मुनिवर समरंता मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वम्नवैरागी व्वर नमूं, युगवर जंबूसांमि ॥ प्रन्नव सिय्यंन्नव परगम्नो, सुजस जसोन्नद्र स्वांमि ॥ महामुनिसर नित नमूं जी, नांमे घर नवनिध्य वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २२ ॥ जग संन्नूतिविजय जयो, न्नद्रबाहु कृतन्नद्र, जग जोगीसर जागतो, मुनिवर श्रीथूलन्नद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ न्नद्रबाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य मुनीराय ॥ सीत परीषह जिणसह्या, सारया२ आतम काज ॥ म० ॥ ॥ २४ ॥ अज्जमहागिरि जांणिये, अज्जसुहस्ति विसाल ॥ संप्रति नृप पम्निबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाल ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजसांमि पसंसियो, अज्जसुन्नद मुनीस ॥ अज्जमंगु महिमा निलो, सींहगिरी समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि थिवर महामनी, श्रीवयर स्वामी मुनिराय ॥ अरहदिस मुनि अपहरयो, न्नद्रगुपति निरमाय ॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरक्षत गुरु दक्ष ॥ पुसमित्र गुण गहगह्यो, प्रन्नु डुरबलका पक्ष ॥ म० ॥ २८ ॥ विंझ साधु सुविधइ न्नरयो, श्रीठंमिल सुविदक्ष ॥ सूत्रअरथ रतने न्नरयो, क्षमाश्रमण देवर्द्धि ॥ म० ॥ २९ ॥ पंचम काल महामुनी, श्रीदुपसै सूर दयाल ॥ सुद्ध क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल ॥ म० ॥ ३० ॥ इम पन्नर कर्मन्नूमी जिके, हुआ होस्यै अणंत ॥ वर्त्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रय गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायनें, सादुणी चंदनबाल ॥ आदिक सीलवती सती, प्रके रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल छत्तीस ए, श्री विमलनाथ सुरसाल ॥ दिक्षा कल्याणक दिने, गूंथी श्रीमुनिमाल ॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरें रलियामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ सूरि विजय राजे सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री मतिनद सुगुरुतणों, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंघ वखाणीयें, सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पामे सुख नरपूर ॥ म० ॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम हासिद्ध घेर फले, सदा२ कल्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥दो०॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम प्रभु सेव री माई॥ ॥व०॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व चंद प्रभु प्रणमुं, सुविध शीतल श्रेयांस री माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंस री माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मल्लि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी पास जिनंद री माई ॥ चोवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा नंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ ॥ भइ सम सूधा साधु नमुं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चोवीसी नमियें, जेहना नांम प्रगट ए जांण ॥ केवलग्यानी ते निरवांणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥ ॥ नि० ॥ सर्वानुभूति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वा मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम ॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति सुजगीस, सिवकर स्यंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चोवीस ॥ ६ ॥ नि० ॥

॥ ढाल ३ ॥ सफल संसारनी ॥

जे नविस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहुं काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाभ प्रणमीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नांम सुपास ए, हुंसी जिन वीय सुरदेव सुप्रकास ए ॥ श्रेणिक सुत उदाइ नरिंद ए, तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो साव ए, चोथो स्वयंप्रनू नांम आराधि ए ॥ दृढायुप जीव सिद्धांतमें जाणियै, पंचम सर्वानुनूति प्रमांणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्ति इण नाम इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते छठो स्वांमि सलहीजियै ॥ संख श्रावक हुस्यै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोट्टल जिणं, सतक श्रावक शतकीर्त्ति दसमो नणूं ॥ देवकीजीव मुनिसुव्रत इग्यारमो, सत्यकीजीव ते अमम जिन वारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकषाय जिन तेरमो, वलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निरमम देव सुलसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥ समाध जिन सतरमो श्रावका रेवती, अढारमो शतालजीव संवर जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर उगणीसमो, कृष्णकोइजीव ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मल्लि इकवीसमो जीव नारदतणो, देव बावीसमो अंवड श्रावक नणुं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते नड चोवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम चोवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ परसिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कह्या, सास्त्र अनुसारथी साच कर सरदह्या ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ ॥ आजनिहेजो रे दीसे नाहलो ए देशी ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर युगमंधिर वाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु ऋषभानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंद्रानन चंद्रवाहुजी, भुजंग ईश्वर नेमि भाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महाभद्र नमुं वली, देवयसा यसोरिद्ध अढीद्वीपमे विचरे आज ए, नांम लियां नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ ॥ रे जीव जिन धर्म कीजिये ॥ ए देशी ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अभिधान ॥ ऋषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमांन ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोडि छप्पन्न लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे छयासी देहरा, त्रिहुं लोक मझार ॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोडिया, बिंब त्रेपन लाख ॥ सहस अठावीस च्यारसै, अठयासी भाख ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विभू जिणवर नांम ए, समरया सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, समकित सुद्ध थाय ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम भिण चोवीसी वीस विहरमांण चऊ जिणवर सासता, संथुण्या सतरैसे वयालै अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता मणितणी पर प्रवल वंछित पूर ए, प्रहसमै त्रिकरण शुद्ध प्रणमै सदा जिनचंद्र सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री छभूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिझाय लि० ॥

जग चूडामणिभूउ, उसभो वीरो तिलोय सिरि तिलउ ॥ एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छरमुसभ जिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जइए ओएमव माणेणं ॥ २ ॥ जइता तिलोयनाहो, विसहइ वहुचाई असरिसजण

णस्स ॥ इय जीयंतकराइं, एस खमा सवसाहूणं ॥ ॥ ३ ॥ न चइ
ॐइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्सेहिं
वि,मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ नद्दो विणीय विणउ, पढम
गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमड्डं, वि म्हिय हियउ
सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइउ तं सिरेण इच्छंति ॥
इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह
सुर गणाण इंदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जहय पयाण
नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न
पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउ काउं, विहरंति मुणी
तहा सोवि ॥ ८ ॥ पमिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को
॥ गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिउ ॥ ए ॥ अपरिस्सावी
सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य ॥ अविकत्थणो अचवलो, पसं
तहियउ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं
पहं दाउं ॥ आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥
अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं ॥ तहवि न करेइ
माणं, परिय च्छइ तं तहा नूणं १२ ॥ दिण दिक्खियस्स दमग, स्स
अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा ॥ नेच्छइ आसणगहणं, सो विणउ सव
अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिउ साहू ॥
अभिगमण वंदण नमं, सणेण विणएणसो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो
पुरिसप्पभवो, पुरिसव रदेसिउ पुरिसजिट्ठो ॥ लोएवि पहू पुरिसो,
किंपुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्ससरणो, तइया वाणा-
रसीइ नयरीए ॥ कन्ना सहस्समहियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥
तह वि य सारायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं ॥ उयरट्ठिएणं
इक्के, ण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म
ज्जाउ इह समत्त घरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो

जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा, वणाहिं वरमप्प सक्खियं सुकयं ॥ इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिढंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिउ मिअहं ॥ उम्मग्गेण पमंतं, रक्खइ राया जणवउ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहछिउ अप्पसक्खिउ धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तोन वि सीउन्ह वायविज्झमिउ ॥ संव छरमणसीउ, बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग प्पिय चिं, तिएण सच्छंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीउ गविउ निरवणा मो ॥ साहुजणस्स गरहिउ, जणेवि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु बकेइ बुझंति ॥ देहे खणपरिहाणी, जंकिर देवेहिंसे काहयं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण वासीवि परिवमंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ ॥ २८ ॥ कहतं भन्नइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमत्तिहियए ॥ जं च मरणा वसाणे, भव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह स्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुझई कोई ॥ जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारउ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए ॥ जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पमंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू णवि जीवाणं, सडुक्करा इंति पावचरियाइं ॥ भयवेजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिकण दोसे, नियए सम्मं च पायवडियाए ॥ तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति पोसह सिक्खा० ॥

॥ अथ राईसंथारा पोसह सिझाय ॥

॥ निस्सिही निस्सिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥ महामुणीणं ॥ नवकार ३, करेमिभंते ३, कहियें. अणुजाणह जिट्ठिज्जा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंमिअसरीरा ॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राईसंथारए ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुड पाय पसारण, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय संमासं, उवट्टंतेय काय पडिलेहा ॥ दव्वाई उवउगं, ऊसासनिरुंभणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ ४ ॥ आसव कसाय बंधण, कलहा ब्भरकाण परपरीवाउ ॥ अरइ रई पेसुन्नं, माया मोसं च मिछत्तं ॥ ५ ॥ वोसिरिसु इमाइंमु, रकमग्ग संसग्ग विग्घ भूआइं ॥ डुग्गइनिबंधणाइं, अठारस पावठाणाइं ॥ ६ ॥ एगो हं नछिमे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि ॥ एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणुसासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासउ अप्पा, नाणदंसणसंजुउ ॥ सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलरकणा ॥ ॥ ८ ॥ संजोग मूला जीवेण, पत्ता डुरकपरंपरा ॥ तम्हा संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ए ॥ अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥ अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया ॥ अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ३ ॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया ॥ उवज्झायां कित्तिअत्ताणं, वोसिरामित्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥५॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किके सत्त जोणि लरकाउ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लरकाउ ॥ ॥ १ ॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लरका यमणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणवि ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं ॥ तिविहेण पडिकंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झह वेर न जाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज भमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति संथारा गाथा स० ॥

॥ अथ निंदावारक सज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमा बलती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भर्यां रे, केहनां नलीयां चुए केहनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो करजो

आपणी रे, जेम लुटकवारो थाय रे, ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण मह्जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपर्रे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिझाय लिख्यते ॥

॥ जल जलती मिलती घणी रे, काली काल अपार रे ॥ सुजाण सीता ॥ जाणे केसू फूलियां रे लाल, राता खैरअङ्गार रे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल ॥ शील तणे परिमाण रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, निरखे राणोराण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे लाल, पावक पासें आय रे ॥ सु० ॥ ऊभी जाणे सुराङ्गना रे लाल, अनुपम रूप दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणां रे लाल, ऊभा करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे लाल, राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन वांछयो हुवे रे लाल, सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुक अगन प्रजालजो रे लाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेठी आगमें रे लाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलशुं जरयो रे लाल, कीले धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम वरषा करे रे लाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊतरी रे लाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रलियायत सहुको थयां रे लाल, सघले थया उछरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे लाल, सीता शीला सुरंग रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग मांहे जस जेहनो रे लाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ कहे जिन हर्ष सती तणा रे लाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ इति सीतासती सिझाय समाप्त ॥

॥ अथ अनाथी ऋषि सिझाय ॥

॥ श्रेणिक रयवामी चढयो, पेखियो मुनी एकंत ॥ वर रू पकांते मोहियो, राय पूछे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिणमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए आकणी ॥ इण कोसंबी नगरी वसे, मुज पिता परि गल धन्न ॥ परवार परें परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ क दिवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सहु जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी गुण मन उरमी, उरमी अबला नार ॥ कोरमी पीमा में सही, नहिं कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजवैद्य बुलाइया, कीधला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं सं जमन्नार ॥ इम चिंतवतां वेदन गई, व्रत लीधो रे हरष अपार ॥ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमांहे को केहनो नाहिं, ते न्नणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागनो धरम बाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे णिक समकित तिहां लहे, वांदी पहुंचे रे सरग मझार ॥ श्रे० ॥ ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावतां, कर्मनी तूटे कोमी ॥ गणि समय सुंदर तेहना, पाय वांदे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिझाय ॥

॥ कर पमिक्कमणो न्नावसुं, दोय घमी शुन्न ऊाण ॥ लाल रे ॥ परन्नव जाता जीवनें, संबल साचुं जाण ॥ लाल रे ॥ १ ॥ कर पमिक्कमणु न्नावशुं ॥ ए आकणी ॥ श्रीमुख वीर समुच्चरे, श्रे णिकराय प्रतिबोध ॥ ला० ॥ लाख खंमी सोना तणी, दीये दिन प्रति दान ॥ ला० ॥ २ ॥ कर० ॥ लाख वरस लग ते वली, एम

दीये द्रव्य अपार ॥ ला० ॥ इक सामायिकनी तुला, नावे तेह लगार ॥ ला० ॥ ३ ॥ कर० ॥ सामायिक चउविसत्थो, भलुं वंदन दोय दोय वार ॥ लाल रे ॥ व्रत संभारो रे आपणां, ते भव कर्म निवार ॥ लाल रे ॥ ४ ॥ कर० ॥ कर काउसग्ग शुभध्यानथी, पच्चखाण सूधूं विचार ॥ लाल रे दोय सघा यें ते वली, टालो टालो अतिचार ॥ लाल रे ॥५ ॥ कर० ॥ सामायिक परसादथी, लहीयें अमर विमान ॥ ला० ॥ धरमसिंह मुनिवर कहे, मुगति तणुं ए निदान ॥ ला० ॥ ६ ॥ कर० ॥ इति प्रतिक्रमणसिझाय सं० ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

॥ प्रह ऊठीने समरिजें हो ॥ भवियण मंगलिक सरणा चार ॥ आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियमें राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भाख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतां थकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुं कर्म ॥ हि० ॥ २ ॥ ए चारूं सुखकारि हो ॥ भ० ॥ ए जारू मङ्गलिक ॥ ए चारूं उत्तम कह्यां हो ॥ भ० ॥ ए चारूं तहतीक हो ॥ हि० ॥ ३ ॥ गेले घाटें चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारं वार ॥ गामें नगरें चालतां हो ॥ भ० ॥ विघन निवारणहार ॥ ॥ हि० ॥ ४ ॥ डाकण साकण भूतमां हो ॥ भ० ॥ सिंह चित्ताने सूर ॥ वैरी दुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥ हि० ॥ ॥ ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ परभव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणाको आधार ॥ हि० ॥ ६ ॥ राखो सरणाकी आसता हो ॥ भ० ॥ नेमो नहिं आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सदा हो ॥ भ० ॥ वाला तणो संयोग ॥ हि० ॥ ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कर्म नहिं कोइ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ॥ ८ ॥

मनचिंता मनोरथ फले हो ॥ ज० ॥ वरते कोम कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ ज० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ॥ ए ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ ज० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सर णाकी कीरति कही हो ॥ ज० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० ॥ ॥ १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ ज० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोउमस्स इम वीनवे हो ॥ ज० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक सरणां ॥

॥ अथ सिझाय संग्रह लिख्यते ॥

॥ ढंढण रुषीनी सझाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदना हूं वारी, उत्कृष्टो अणगार रे हूंवा री लाल, अभिग्रह लीधो एहवो हुं० ॥ लेस्युं शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ ढं० ॥ नितप्रति ऊठे गोचरी हुं० ॥ न मिलै शुद्ध आहार रे ॥ हुंवा० मूल न लै अणसूझतो हुं० ॥ पंजर कीधो गात रे हुं० ॥ २ ॥ ढं० ॥ हरि पूछे श्रीनेमने हूं०, मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं वा० ॥ उत्कृष्टो कुण एहमें हुं० ॥ मुझनें कहो विचार रे ॥ हूंवा० ॥ ३ ॥ ढं० ॥ ढंढण अधिको दाखियो हुं० ॥ श्रीमुख नेमजिणंद रे हूंवा० ॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा हुं० ॥ धन जादव कुलचंद रे हूं वा० ॥ ४ ॥ ढं० ॥ गलियारे मुनिवर मिल्या हुं०, वांद्या कृष्ण नरेस रे हूंवा० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखने हुं०, आणयो भाव वि सेसरे हुं० ॥५॥ ढं० ॥ मुझ घर आवो साधजी हुं०, ल्यो मोदक छे शुद्धरे हूं०॥ मुनिवर विहरीने पांगुरया हुं०, आया प्रभुजीने पास रे हुं० ॥ ६ ॥ ढं० ॥ मुझ लबधै मोदक मिल्या हुं०, कहोने तुम्हे किरपाल रे हुं० ॥ लबध नही वत्स ताहरी हूं०, श्रीपति लबधि निधान रे हूं० ॥ ७ ॥ ढं०॥ ए लेवा जुगतो नही हुं०, न्याल्या परठ-

न काज रे हुं० ॥ ईंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे हुं० ॥ ८ ॥ ढं०॥ आंणी चढती ज्ञावना हुं०, पांम्यो केवल नाण रे हुं० ॥ ढंढण रुषि मुगते गया हुं०, कहे जिनहर्ष सुजाण रे हुं० ॥ ए ॥ ढं० ॥ इति ढंढण रुषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिझाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अमिय समाणी मोरा नंदन, मनमै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना, धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो मनमो रे किम परचावसुं ॥ २ ॥ दस दिसी दीसे रे धन्ना, तो विन सूनी मोरा नंदन, अनुमति देतां रे जीज्ञ वहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसे नारी हो धन्ना, अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥ बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०॥ गजगति चाले रे चाल सुहावणी॥५॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो०॥ कोमै बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मांणो रे धन्ना, वय पिण जांणो मो० ॥ ज्ञोगवि लेज्यो रे ज्ञोग सुहामणो ॥ ७ ॥ व्रत अति दोहिलो रे धन्ना, नहिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही छे रे साधु कहावणो ॥ ८ ॥ घर२ ज्ञिक्षा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा मो० ॥कहाणी रे रहणी नही छे सारखी ॥ ए ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आगम ज्ञणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुक्कर जोग छे ॥ १० ॥ वनवासे रहणा हो धन्ना, परीसह सहणो मो० ॥ कोमल केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें ज्ञाख्यो हे अम्मा, कूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुक्कर मारग जननी दाखियो॥१२॥ सुख अज्ञिलापी हे अम्मा, कूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारग जननी दाखियो॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमारथि मोरी अम्मा, वीर वखाण्यो परखदा सहु सुणयो ॥ १४ ॥

में इम जाएयो हे अम्मा, वीर वखाएयो मोरी अम्मा, ए धन जोवन आयु थिर नही ॥१५॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजै मोरी अम्मा, जो खिश जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अनमति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो रे मनमां गहगही ॥ १७ ॥ छठ पारणे हे अम्मा, विगय निवारण मोरी अम्मा, वीर वखाएयो सुरनर आगलै ॥ १८ ॥ सुख संजम पाले हे अम्मा, दूषण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ रूडा भणै ॥ १९ ॥ संजम पाल्यो हे अम्मा, नव पखवाडे मोरी अम्मा, मास संथारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना ऋषि सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिझाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थंकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ करम तणे वस सुख दुख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीसरजीने करम अटारया, वरस दिवस रह्या भूखा ॥ वीरने वारे वरस दुख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूखै रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत मारया एकण दिन, जोध जुवान नर जेसा ॥ सगर हुओ महा पुत्रनो दुखियो, कर्म्मतणा फल एसा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बत्रीस सहस देसांरो साहिब, चक्री सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म्मै कीयो तनु गार रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा रांणी ॥ वारे वरस लग माथे आएयो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी वेटी, चावी चंदनवाला ॥ चौपद ज्यूं चहुटामें वेची, करमतणा ए चाला रे ॥प्रा०॥क०॥६॥ संभूम नांमे आठमो चक्री, कर्म्मैं सायर नाख्यो ॥ सोले सहस जक्ष जन्ना देखे, पिण किणही नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे

बारमो चक्री, कर्मैं कीधो आधो ॥ इम जाणीने अहो भविप्राणी, कर्म्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ८ ॥ छप्पन्न कोड जा दवरो साहिब, कृष्ण महाबल जांणी ॥ अटवी मांहि गूंढ एकलडो, विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ९ ॥ पांडव पांच महा जूआरा, हारी द्रोपदा नारी ॥ बारे बरस लग बन रडवडिया, भ मिया जेम भिखारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ बीस भुजा दस मस्तक हूंता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलडै जग सहु नर जीत्या, ते पिण कर्म्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या, वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा, बेटे बांध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥ करमसुं जोर न किसका रे ॥प्रा०॥क०॥१३॥ सतिय सिरोमणी द्रौ पदि कहिये, जिन सम अवर न कोई ॥ पांच पुरुषनी हुइ ते नारी, पूरब कर्म्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आभानगरीनो जे स्वामी, सावो राजा चंद ॥ मांइ कीधो पंखी कूकडो, कर्मैं नाख्यो ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर देव ने पारवती नारी, क रता पुरुष कहावै ॥ अहनिस महिल मसांणमे वासो, भिक्षा भो जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी, रात दिवस रहे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें, भांज्या ते पिण साजा ॥ ऋद्धिहरष कर जोडीने विनवै, नमो२ कर्म्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म्म सिझाय सं०॥

॥ अथ सात विसनकी सिझाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि वेकी ॥ सात नरकना रे भाइ सातेई, आपे दुख अपार विवेकी ॥

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन पर्म्यांयकां, पाम्व पांच प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पड्यो, खोइ सहू रा जरिद्ध वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस नक्कण अवगुण घणा, करे पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती, नरक गइ निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पांन विसन तजी, चित घरी वलि चाह वि० ॥ दीपायण रिपि दूहव्यो जा दवे, द्वारकानो थयो दाह वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने जे स्याघर वसे, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नाशेठनो गयो कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आहेडे कुविसन साचवै, प्राणी हणियें प्रहार वि० ॥ मारी मृगली श्रेणिक नृप गयो पहली नरक मझार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ छठे चोरीने विसने करी, जीव लहे दुस्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा जायें मारियो, चावो हुंम्क चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु होय वि० ॥ राणो रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥ इम जांणीने नव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण नव परनव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥ ॥ सा० ॥ ए ॥ इति सात विसनकी सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिझाय लिख्यते ॥

वीर वांदी वलतां थकां जी, चेलणा दीठो रे निग्रंथ॥राति वन मांहि काउसग्ग रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जांण ॥ चेडाराजानी साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमांण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत ठंगार सबलो पडे जी, चेलणा प्रीतम साथ ॥ चारतियो चितमें वस्यो जी ॥ सौडि बाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ झबक जागी

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण वस्यो जो ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ भगवंत सांसो भाजियो जो, चमकियो चित्त नरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वांदी वलतां थकां जी, पैसतां नगर मझार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे अभयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाली करी जी, व्रत लियो अभयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो भवत णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य सिझाय ॥

॥ भूलो मनभमरा कांइ भमै, भमियो दिवस ने रात ॥ मायारो लोभी प्राणियो, भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुंभ काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन्न ॥ विणसतां वार लागे नही, निरमल राखो रे मन्न ॥ २ ॥ भू० ॥ केहना छोरू केहना वाछरू, केहना माय नै बाप ॥ ज जीव जासी एकलो, साथे पुन्य नैं पाप ॥ ३ ॥ भू० ॥ आस्या तो डूंगर जेवडी, मरवो पगला रे हेठ ॥ धन संची संच कांइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ भू० ॥ लखपति छत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी गोखै बैठता, भए जल बल राख ॥ ५ ॥ भू० ॥ भवसायरजल डुख भरयो, तिरवो छे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अछै, करमें वाय ने मेह ॥ ६ ॥ भू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो पहिले रे पार ॥ आगल नहि हट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे लार ॥ ७ ॥ भू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो हतो न थाय ॥ वस्त्र विना जाय पोढवो, लखपति लाकरू माय ॥ ८ ॥ भू० ॥ मह मंद कहै वस्त वोरीयै, जे कुछ आवे रे साथ ॥ अपणो लाभ उवारियै, लेस्यो साहिब हाथ ॥ भू० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ बाहूबल सिझाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, भरत बाहूबल झूझै रे ॥ मूंठ उपाडी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूझै रे ॥ १ ॥ वीरा म्हारा गजथ की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी भासै रे ॥ ऋषभ जिनेसर मोकली, बाहूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढ्यां केवल न होई रे ॥ वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, वलि आयो अभिमांनो रे ॥ लघु बांधव बांदू नही, काउसग्ग रह्यो शुभ ध्यानो रे ॥ ३ ॥ वी० ॥ वरस दिवस काउसग्ग रह्यो, वेलडियां वींटाणो रे ॥ पंखी माला मांडिया, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी वचन सुण्या इसा, चमक्यो चित्त मझारो रे ॥ हय गय रथ में परिहरया, पिण नवि मूंक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन वालियो, मूंक्यो निज अभिमांनो रे ॥ पांव उपाडी वांदिवा, ऊपनो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखदा, बाहुबल ऋषिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिझाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझै सीसो जी॥ पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर० १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊभो गोखने हेठो जी ॥ खरे उपहरे रे दीठो एकलो, मोही माननी मीठो जी ॥ २ ॥ अ० ॥ वयण रंगीले रे नयणे वेधियो, ऋषि थंभ्यो तिण ठारो जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिषि तेडी आंणो जी ॥ ३ ॥ अ० पावन कीजे ऋषि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी ॥ नवजोबन रस काया कांइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ अ० ॥ चंद्रावदनी रे चारित चूकगो, सुख विलसै दिन रातो

जी ॥ इक दिन गोखे रमतो सेगठे, तव दीठो निज मातो जी ॥ ५ ॥ अ० अरणक२ करती माय फिरे, गलियें२ मझारो जी ॥ कहि किण दीठो रे माहरो अरणलो, पूछे लोक हजारो जी ॥ ६ ॥ अ० ॥ उतर तिहांथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाज्यो तिवारो जी ॥ धिग्२ पापी रे माहरा जीवने, एहमें अकारज धारयो जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखंती रे सिला उपरे, अरणक अणसण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरू, मन वंछित फल लीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिझाय लिख्यते ॥

नांम इलापुत्र जांणियें, धनदत्तसेठनो पूत॥नटवी देखी रे मोहियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न छूटे रे प्राणिया, पूरब नेह विकार ॥ निज कुल छंडी रे नट थयो, नाणी सरम लिगार ॥ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचवा, ऊंचो वंस विवेक॥ तिहां राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोय पग पहरी रे पावडी, वंस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतो, खेले नवनवा खेल ॥क०॥४॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर साद ॥ पायतल घूघर घमघमें, गाजे अंबर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥ तिहां राय चिंते रे राजियो, लुबधो नटवी रे साथ ॥ जो पडे नट वो रे नाचतो, तो नटवी मुझ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दांन न आपे रे भूपती, नट जांणे नृप वात ॥ हूं धन वंछू रे रायनो, राय वंछे मुझ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहांथी मुनिवर पेखियो, धन२ साधु नीराग ॥ धिग्२ विषया रे जीवडा, मन आणयो वैराग ॥ क० ॥ ॥ ८ ॥ संवरभावे रे केवली, ततखिण कर्म खपाय॥ केवलि महिमा रे सुर करे, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार मुनि सिझाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वैरागीयौ जी, ए संसार असार रे मायड़ी ॥ अनुमति द्यो मुझ आज ॥ संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वछ तूं केणे भोलव्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यो रे, हूं नवि द्युं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहिस भार रे जाया ॥ हूं न० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुल्यो जी, सहिया दुख अणंत ॥ सासोश्वासें भव पूरीया जी, तेह न जांणू अंत हे ॥ ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हिवणा तूं बालक अछै जी, जोवन भरथो रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, भोगवि सुख अपार रे जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, दुख न सहणौ जाय ॥ वीरजिणंद वखाणियो जी, ते मै सुणियौ कांन हे मायड़ी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वछ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस आहार ॥ भुंइ पाला नित हींडणो जी, जाणसि तुझ कुमार रे जाया॥ हूं न० ॥ ६ ॥ भमतां जीव अनंत भम्यो जी, धर्म दुहेलो होय ॥ जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायड़ो ॥ ॥ अ० ॥ ७ ॥ मृगनयणी आठे रमे जी, तोड़े नवसर हार ॥ जो बनभर ठेरू नदी जी, कांइ मूको निरधार कुमरजी ॥ हूं न० ॥ ॥ ८ ॥ हंसतूलिका सेजड़ी जी, रूप रमणि रस भोग ॥ अतहि सुंहाली देहड़ी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥ ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय विषम मदुरा कह्या जी, किम भोगविये सोय हे मायड़ी ॥ अ० ॥ १० ॥ खमिश्र माड पसाय करी जी, में दीधुं तुझ दुख ॥ दिउ आदेस जिम हुं सुखी जी, वीर चरणें ल्युं दीख हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥ तन फाटे लोयण झरे जी, दुख न सहणा जाइ ॥ वछ सुखी हुओ

तिम करो जी, मैं दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ १२ ॥ मणि मांणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी आठे रूं जी, हिव अह्म कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥ कुमर भणै सुकुली थिया जी, बहु दुख ए संसार ॥ नेह तुमारो जांणियो जी, जो ल्यो संयमभार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ सिविका तव सझी करी जी, कुंवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय उच्छव करे जी, चारित्र ल्यो रिषिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम जांणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोडी पूनो भणे जी, ते तरस्यै संसार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिगसर मास, पहिली पडवा तीन विमास ॥ चौथी पडवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिझाइ भाख ॥ १ ॥ जां लगि होली झडे वार, धुंवर पडती हुवै जिवार ॥ जां परचक्रनो भय नवि जाय, तां लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने केस पाखांण, वरसै तां लग असिझाई जांण ॥ झूझै मल्ल मांहोमांहि जांम, तां लग असिझाई तिण गांम ॥ ३ ॥ नृपति परभव पोहतो होय, जां लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली है असिझाइ, स हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जांणो सही, आठ पहोर सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पडिवा लग असिझाइ वकी ॥ पडिवा वीज तीज चांदणी, समीतांझ असिझाई गिणो ॥ ६ ॥ आद्रा नक्षत्र न लागै जांम, गाज वीज असिझाइ ताम ॥ गाज वीज जो हुवे अकाल, असिझाइ बे पुहर संभाल ॥ ७ ॥ चंद्रग्रहण असिझाई भणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारे आठ वि चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्ये बार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

सुगुरु मुखे जविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ, आठ पुहर असिझाई होय ॥९॥ वसतीअकी सातां घर मांहि, नर विहने अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पड्यो होय मृतकअनाथ, तां असिझाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, बेटी आठ दिवस विख्यात ॥ सो कर मांहि कही असिझाइ, नारी रुतु दिन तीन कहाइ ॥११॥ इंडो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पडै तिन गाइ ॥ असिझाइ सो कर मांहि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो॥१२॥ असाढे चौमासै दिने, पडिकमणा गयांथी गिणै ॥ बार पोहर असिझाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर असिझाई छे बहू, गीतारथ गुरु जांणै सहू ॥ सांजलि ए में कही संखेवि, हरखै पय प्रनू कीजे हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतक्षर जेह, च्यार मावठवीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग वीअं अक्षरै, तव कवि नांम कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिझाइ सिझाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिझाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूधी सरदहिणा धरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व ए निरता करो ॥ मिथ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरो, सहि पालो रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरो समकित शुद्ध पालौ, टालो दोष दया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणाव्रत, च्यार सिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो जवि यण मनरली ॥ दाखविए गुण परज्ञ केरा, दोष सम काढौ वली ॥ ॥ २ ॥ मम काढो रे लोजी नर कूडो करौ, जांणी सावद्य रे अ जक्ष बावीसे परिहरौ ॥ वड पींपल रे पिलखण नें कहुंबरो, ऊंबरफल रे रखे तुमें जक्षण करो ॥ ३ ॥ उल्लालो ॥ रखे तुमें जक्षण करौ मांखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा ठंडि परहा, दोष मूल माटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र

थणीभोजन, प्रथम डुरगति बारणौ ॥ मम करौ व्यालू अति अ सूरौ, रविउदय विन पारणो ॥ ४ ॥ अथाणो रे अनंतकाय सब नाम ए, काचागोरस रे मांहि कठोल न जिमिये ॥ एह वेंगण रे तुछ फला सवि ठांम ए, आपणपुं रे व्रत लीधो नविखंम ए ॥ ५ ॥ तूटक ॥ नवि खंमए व्रत नियम लेइ, बेइ फल व्रत भंगनौ ॥ अज्ञात फल बहुबीज भोजन, चलित रस होय जेहनो ॥ संवर आणी अभक्ष ग्यानी, तजो ए बावीस ए ॥ गुरु वयण विगतैं वली पूछयौ, अनंतकाय बत्तीस ए ॥ ६ ॥ अनंती रे कंद जाति जाणो सहू, जसु भक्षण रे पातिक बोल्या छै बहू ॥ कचूरौ रे हलदनीली आदूं वली ॥ वजचूरण रे कंद बहूं कुंवलीफली॥७॥तूटक ॥ कुंवलीफली कुंवली बीज पाखै, चाखै चतुर नर आंविली ॥ रतालू पिंमालू थेग थोहर, सतावरी लसण कुली ॥ गाजर मूला गिलौ रींगण विरहाली टुकवछुलौ, पल्यंक सूरण वाल वीली मैथ नीली सांभलौ ॥ ८ ॥ वंसकारेला रे कूंपल कवला तरुणा, अंकूरा रे लोटा ते जलपोयणा ॥ कुमारी रे भमरवृक्षनी छालमी, जे कहिये रे लोके अमृतवेलमी ॥ ९ ॥ वेलमी तानु ताजा खिलोमा ने खरसुआ, भूय भूंफोमा छत्रा कार जांणौ नील फल सेवे जूआ ॥ बत्तीस बोल प्रसिद्ध बोल्या लक्ष्मीरतन सूरि इम कहे, परिहरे जे नर दोष जांणी प्रांणी ते सवि सुख लहे ॥ १० ॥ इति बावीस अभक्ष सिझाय सं०॥

॥ अथ गजसुकमाल सिझाय ॥

॥ संवेगरसमें झीलता, मनसुं करे आलोच ॥ देखीने दोहग टलै, तासु साध्यो रे में करि लोच ॥ १॥ यादवराय धनश् गजसुक माल, तेहने करूं रे प्रणाम त्रिकाल ॥ या० ॥ आंकणी ॥ प्रभू पास संयम आदरयौ, तेहनो ए परिणाम ॥ मन वचन काया वसि

करी, जो हूं पामूं रे केवलज्ञान ॥ २ ॥ या० ॥ मुनि मुगति जा
यवा अलजयो, पच्चैन दिन दस वीस ॥ साहसीक इम उच्चरतो,
पिण दिन जावे रे तो छेह दीस ॥ या० ॥ ३ ॥ समसांण जाय
काउसग्ग रह्यौ, तिण सांझि प्रभुने पूछ ॥ मुनिवर अवर इम चिं
तवे, एहनैं साची रै छै मुंह मूंछ ॥ या० ॥ ४ ॥ मुझ सुता विन
अवगुण तजी, सौमिल अगनि प्रजाल ॥ सिगड़ी रचि सिर ऊपरै,
चिहुं दिसि बांधी रे माटीनी पाल ॥ या० ॥ ५ ॥ वेदना जिम अ
धिक वधै, तिम वधै मन परिणांम ॥ चवदमें गुणठाणें चढ्यो, मु
निवर पांमी रे केवलग्यांन ॥ या० ॥ ६ ॥ देवकी जांमणने थई,
ते रयण वरस हजार ॥ वांदवा आवी प्रह समें, पिण नवि देखे रे
प्रांणआधार ॥ या० ॥ ७ ॥ पूछतां प्रभु मांझी करी, रातिनी वी
तग वात ॥ हरि देखी हियड़ो फूटसी, तेणें कीधो रे ऋषिजीनो
घात ॥ या० ॥ ८ ॥ उपसम सुधारस सेवतां, पांमियो अ.वेचलरा
ज ॥ मनरंग साधु महंतना, गुण गावे रे श्रीजिनराज ॥या०॥ ९॥

॥ अथ प्रश्नचंद्र सिझाय ॥

॥ राज छंडी रलियामणो रे, जांणी अथिर संसार ॥ वैरागै
मन वालियो, कांइ लीधो संजम भार ॥ प्रश्नचंद प्रणमूं तुमारा
पाय, तुमे मोटा मुनिराय ॥ प्र० ॥ १ ॥ वनमांहे काउसग्ग रह्यो
रे, पग ऊपर पग ठाय ॥ बांह बेउं ऊंची करी, सूरज सांमी दृष्टी
लगाय ॥ २ ॥ प्र० ॥ श्रेणिक वंदन नीसरयो रे, वीरजीने वंदन
जाय ॥ देइ तीन प्रदक्षणा, त्रिविधश खमाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ दुरमु
ख दूत वचन सुणी रे, कोप चढ्यो ततकाल ॥ मनसुं संग्राम मां
झियो, जीव पड्यो जंजाल ॥ प्र० ॥ ४ ॥ श्रेणिके प्रश्न पूछियो रे,
एहनी सी गति थाय ॥ भगवंत कहे छिवणां मरे तो, सातमी नर-
के जाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ खिण इक अंते पूछियो रे, सरवारथ सिद्धि वि

मांन ॥ वाजी देवनी डुंडुभी, मुनि पांम्या केवलज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ प्रष्णचंद मुनि मुगते गया रे, श्रीमहावीरना शिष्य ॥रिद्धह रष कहे धन्य ते, जिण दीठा रे परतक्ष ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ उतपति सिझाय ॥

॥ उतपत जोय जीव आपणी, मनमांहि विमास ॥ गरभा वासे जीवडो, वसियो नव मास ॥ उ० ॥ १ ॥ नारीतणे नाभी तले, जिन वचने जोय॥ फूल तणी जिम नालिका, तिम नाडी छै दोय ॥ उ० ॥ २ ॥ तसु तल योनि कहीजिये, वर फूल समान ॥ आंवतणी मांजर जिसो, तिहां मांस प्रधान ॥ उ० ॥ ३ ॥ रुधिर श्रवे तिण मांसथी, ऋतुकाल सदीव ॥ रुधिर शुक्र योगे करी, तिहां ऊपजे जीव ॥ ४ ॥ उ० ॥ जे अपान पवने करी, वासित दुरगंध ॥ तिण थानक तूं ऊपनो, हिव हूउ अंधमंध॥ उ० ॥ ५ ॥ नाडी वांसतणी भरियै घणी, रूघाल॥ताती लोह सलाकतैं, जाले ततकाल॥ उ० ॥ ६ ॥ तिम महिलानी जोनिमें, छै नव लख जीव ॥ पुरुष प्रसंगे ते सहू, मरि जाय सदीव ॥ ७ ॥ ऊपजै नर नारी मिल्यां, पांचेंद्री जेह ॥ तेहतणी संख्या नही, तजो कारज एह ॥ उ० ॥ ८ ॥ नव लख जीव टिके तिहां, उत्कृष्टो वार ॥ जीव ज घन्यपणे टिके, एक दोय त्रिण च्यार ॥ उ० ॥ ९ ॥ जीव जघन्य तिहां रहे, महुरत परिमाण ॥ वार वरसनी थिति तिहां, उत्कृष्टी जांण ॥ १० ॥ उ० ॥ तिहां गरभे कोइ जीवडो, जंपे जग दीस ॥ फिर नर आवंतो रहै, संवत्सर चोवीस ॥ ११ ॥ उ० ॥ महिला वरस पिचावनें, कहिये नीरवीज ॥ पिचहत्तर वरसां पछै, थाये पुरुष अवीज ॥ १२ ॥ उ० ॥ जीमणी कूंखे नर वसै, तिम वांमे नारि ॥ वीच नपुंसक जांणिये, जिनवचन विचार ॥ १३ ॥ उ० ॥ हिव सामान्यपणै इहां, आयो गरभावास ॥ सात

दिना उपरि रहे, नर गत नव मास ॥ उ० ॥ १४ ॥ आठ व रस तिर्यंच रहे, उत्कृष्टे काल ॥ गरनावासै भोगव्या, इम बहु जंजाल ॥ उ० ॥ १५ ॥ कार्मण काये कर लियो, पहिलो आहार ॥ शुक्र अने स्रोणिततणो, नही छूट लिगार ॥ उ० ॥ १६ ॥ परजापत पूरी नही, तिहां विसवावीस ॥ तिण आहारे तूं थयो, उदारिक मीस ॥ उ० ॥ १७ ॥ पवन अछै उदरै तिको, उपजावै अंग ॥ अगनि करै थिर तेहने, जल सरस सुरङ्ग ॥ १८ ॥ उ० ॥ कठन पणै पृथवी रचै, अवगाह अकास ॥ पांचभूत सरीरमें, इम करै प्रकास ॥ १९ ॥ उ० ॥ बारै महुरत तां पछै, विलसै नर नारि ॥ गरभतणी उतपति तिहां, नहीं अवर प्रकार ॥ २० ॥ उ० ॥ कलल हुवै दिन सातमें, अरवुद दिन सात ॥ अरवुदथी पेसी वधै, घन मांस कहात ॥ २१ ॥ उ० ॥ मांसतणी बोटी हुवै, अम्तालीस टांक ॥ प्रथम मास जिनवर कहे, मन धरो निसंक ॥ २२ ॥ उ० ॥ सुथिर मास बीजे हुवै, हिव तीजै मास ॥ करमतणै वसि ऊपजै, माता मन आस ॥ २३ ॥ उ० ॥ चोथै मासै मातना, प्रणमै सहु अंग ॥ हाथ अने पग पांचमें, तिम सुतको संग ॥ २४ ॥ उ० ॥ पित्त रुधिर छठे पमै, सातमें इण संच ॥ नव धमणी नस सातसै, पेसी सय पंच ॥ २५ ॥ उ० ॥ रोमराय पिण सातमें, साढीतीन कोमि ॥ ऊपजे ऊणै केतलै, इम आगम जोमि ॥ २६ ॥ उ० ॥ आठमें मासें नीपनो, इम सकल सरीर ॥ ऊंधै सिर वेदन सहे, जंपै जिन वीर ॥ ॥ २७ ॥ उ० ॥ सोणित शुक्र सलेपमा, लघु ने वम्नीत ॥ वात पित्त कफ गरभथी, थायै नर नीत ॥ २८ ॥ उ० ॥ माततणी सूंटि लगै, वालकनो नाल ॥ रस आहार करे तिहां, आवे ततकाल ॥ उ० ॥ २९ ॥ जननी ल्ये आहारते, जाय नाम्नोनाम ॥ रोम इंडी नख चख वधे, तिम मीजी ने हाथ ॥ उ० ॥ ३० ॥ सबहू अंगे ऊल

स, सरवंग आहार ॥ कवल आहार करे नही, गरन्नै सुविचार ॥ ॥ ज० ॥ ३१ ॥ मास बीजे किण जीवने, थाये ज्ञान विन्नं ग ॥ अथवा अवधि कहीजिये, तिण ज्ञान प्रसंग ॥ज० ॥ ३२ ॥ कटक करे वैक्रियपणें, जूफी नरके जाय ॥ को जिनवचन सुणी करी, मरी सुर पिण थाय ॥ ज० ॥ ३३ ॥ ऊंधै मुख गोमा हिये, सहितो बहु पीम ॥ दृष्टि आगलि बेहुं हाथसुं, रहे मुठी नींच ॥ ज० ॥ ३४ ॥ नर विण वस्त्र जलादिकै, ऊपजे आ धांन ॥ अथवा विहुं नारी मिल्यां, कह्यो गरन्नविधान ॥ ज० ॥ ॥ ३५ ॥ कोइ उत्तम चिंतवे, देखी डुखावास ॥ पुन्य करी तिम नीकलूं, नाउं गरन्नावास ॥ज०॥ ३६ ॥ ऊंठ कोमि चांपे सुई, कोइ समकाल ॥ तिणथी गरन्ने अठ गुणी, सहे वेदन बाल ॥ ज० ॥ ॥ ३७ ॥ माता दूखी दूखीयो, सुखणी सुख थाय ॥ माता सूती ते सुवै, परवस दिन जाय ॥ ज० ॥ ३८ ॥ गरन्नथकी डुख लख गुणो, जांमें जिण वार ॥ जन्म थयां डुख वीसरै, धिग् २ मोह वि कार ॥ ज० ॥३९॥ ऊपज्यो अशुचिपणे जिहां, मल मूत्र कलेस ॥ पिंम अशुचि कर पूरियो, किहां शुचि लवलेस ॥ ज० ॥ ४० ॥ तु रत रुदन करतो थको, जांमें जिण वार ॥ मात पयोधर मुख ठवे, पीयै दूध तिवार ॥ ज० ॥ ४१ ॥ दिन२ दीसे दीपतो, करे रंग अपा र ॥ लाम कोम माता पिता, पूरे सुविचार ॥ ज० ॥ ४२ ॥ श्रोत्र इग्यारे नारिनें, नव नरने जांण ॥ रात दिवस वहिता रहै, चैतो चतुर सुजाण ॥ ४३ ॥ ज० ॥ सात धातु साते त्वचा, ठे सातसे ना मि ॥ नवसे नामी पिंममें, तिम तीनसे हाम ॥ ४४ ॥ ज० ॥ संधि एकसो साठ ठै, सतोत्तर सो सम ॥ तीन कोम पेसी पांचसे, ढांको ठे चरम ॥ ज० ॥ ४५ ॥ रुधिर सेर दस देहमें, पेसाब सरीष ॥ सेर पांच चरबी तिहां, दोय सेर पुरीष ॥ ज० ॥

॥ ४६ ॥ ज० ॥ पित्त टांक चोसठ अछे, वीरज बत्तीस ॥ टांक बत्तीस सलेखमां, जाणे जगदीस ॥ ४७ ॥ ज० ॥ इण परिमाणथकी यदा, उंछो अधिको थाय ॥ व्यापे रोग सरीरमें, नवि वाजे काय ॥ ॥ ४८ ॥ ज० ॥ पोख्यो पहिले दाहके, इम वधियो अंग ॥ खान पान जूषण जला, करे नवनवा अंग ॥ ४९ ॥ ज० ॥ हिव बीजे दसके जणयो, विद्या विविध प्रकार ॥ तीजे दसकै तेहने, जाग्यो कांम विकार ॥ ५० ॥ ज० ॥ जिण थांनक तूं ऊपनो, तिणमें मन जाय ॥ चोथे दसके धनतणो, करे कोमि ऊपाय ॥ ५१ ॥ ज० ॥ पहुंतो दसके पांचमें, मनमें ससनेह ॥ बेटा बेटी पोतरा, परणावे तेह ॥ ५२ ॥ ज० ॥ छठे दसके प्राणियो, बले परवस थाय ॥ जरा आइ जोवन गयो, तृष्णा तोही न जाय ॥ ५३ ॥ ज० ॥ आवे दसकै सातमें, हिव प्रांणी तेह ॥ बल जागो बूढो थयो, नारी न धरे सनेह ॥ ५४ ॥ ज० ॥ आठमें दसके फोसलो, खुलिया सहु दांत ॥ कर कंपावे सिर धुणैं, करे फोगट वात ॥ ॥ ५५ ॥ ज० ॥ नवमें दसके प्राणियो, तन सूकत जाय ॥ साले वचन बहुआंतणो, दिन झुरता जाय ॥ ५६ ॥ ज० ॥ खाटपड्यो खूंखूं करे, सहू गाली देह ॥ हाल हुकम हाले नही, दीयो परिजन छेह ॥ ५७ ॥ ज० ॥ आंख गले बे पुमि मिले, पमै मुंहमे लाल ॥ बेटा बेटी ने वहू, न करे सार संजाल ॥ ५८ ॥ ज० ॥ दस दशा ते दोहिलो, लह्यो नरजव सार ॥ श्रीजिन धरम समाचरो, पांमो जिम जव पार ॥ ५९ ॥ ज० ॥ चरणपणे जे तप तपे, पाले निरमल सील ॥ ते संसार तरी करी, लहे अविचल लील ॥ ६० ॥ ज० ॥ कोमि रतन कचमो सटै, कांइ गमे रे गिवार ॥ धरम पखे पिण जीवनें, नहि कोइ आधार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ काया माया कारमी, कारमो परिवार ॥ तन धन जोवन कारमो, साचो धरम

संसार ॥ ६१ ॥ ज० ॥ चवदे राज प्रमांण ए, छै लोक महंत ॥ जनम मरण कर फरसियो, ते बार अणंत ॥ ६३ ॥ ज० ॥ आप सवारथिया सहु, नही केहनो कोय ॥ विण स्वारथ अणपहुंचतै, सुत पिण वैरी होय ॥ ६४ ॥ ज० ॥ जरां न आवे जां लगे, जां लग सबल सरीर, धरम करो जीव तां लगै, होय साहसधीर ॥ ॥ ६५ ॥ ज० ॥ आरज देस लह्यो हिवे, लाधो गुरु संयोग ॥ अंगथकी आलस तजो, करो सुकृत संयोग ॥ ६६ ॥ ज० श्रीनमि रायतणी परैं, चेतो चितमांहि ॥ स्वारथना सहुको सगा, कोइ किणरो नांहि ॥ ६७ ॥ ज० ॥ जोग संयोग तजी सहू, थया जे अणगार ॥ धन२ तसु माता पिता, धन२ अवतार ॥ ६८ ॥ ज० ॥ सुरतरु सुरमणि सारखो, सेवो जिनधरम ॥ जिणथी सुख संपति वधे, कीजे तेहिज कर्म ॥ ६९ ॥ ज० ॥ तंडुलवेयाली अछै, एह नो अधिकार ॥ तिणथी उद्धरनें कह्यो, नही कूठ लिगार ॥ ७० ॥ ज० ॥ कलस ॥ इह जैनधर्म विचार सांभलि लिये संजमभार ए, परि सिंह केरा सदा पाले नेम निरतीचार ए ॥ संसारना सुख सकल भोगवि ते लहे भव पार ए, श्रीजिनहर्ष सुसीस रंगै इम कहे श्रीसार ए ॥ ७१ ॥ ज० ॥ इति भतपति इकहत्तरी संपूर्ण ॥

॥ अथ आत्मनिंद्या लिख्यते ॥

हे आत्मा! हे चेतन! ए कुदृष्टियां, यह कुश्रद्धाया, यह अकार्यमें प्रवृत्ति, यह रसगृद्धीपणो, यह खोटे दृष्टांत, सामायक दोय घरी मात्र कालमें तूं मत चिंतवन कर, क्यारे तूं सम्यक्तमोहनीमें, कभी तूं मिश्रमोहनीमें, कभी तूं कामरागमें, कभी तो स्नेहरागमें, क्यारे तूं दृष्टिरागमें, कभी तूं कुगुरुमें, कभी तूं कुदेवमें, कभी तुं कुधर्ममें, कभी ज्ञान विराधनामें, कभी दर्शन विराधनामें, कभी चारित्रविराधनामें, कभी मनोदंडमें, कभी व

चनदंममें, कन्नी कायदंममें, कन्नी हास्यमें, कन्नी रतिमें, कन्नी अरतिमें, कन्नी न्नयमें, कन्नी सोकमें, कन्नी डुगंगमें, कन्नी कृष्णलेस्यामें, कन्नी नीललेस्यामें, कन्नी कापोतलेस्यामें, कन्नी तुं ऋद्धिगारवमें, कन्नी तुं रसगारवमें, कन्नी तुं सातागारवमें, कन्नी तुं मायासल्यमें, कन्नी तूं नियाणासल्यमें, कन्नी तूं मिथ्यादर्शनसल्यमें, कन्नी तेरे तेरेकाठिया आय फिरता है, कन्नी तेरे बाहिर कर अगरे पापस्थानक आय फिरता है, रे तूं आत्मा महा डुष्टी, महा डुराचारी, अरे तूं हीनतिथिका जाया, अरे तूं हीणपुन्निया, अरे तूं हीणदृष्टी, अरे तूं अयोग्य कामका करणहार, रे तूं डुष्ट पापिष्ट जीव, प्रायें तो तेरे अनंतानुवंधियाक्रोध, अनंतानुवंधियामांन, अनंतानुबंधिणीमाया, अनंतानुबंधीलोन्नरी चोकमी, विचारा तेरे खपी नही, गुणठाणा तेरा पलटा नही, धैर्यगुण तेरे आया नही, तृष्णा दाह तेरे मिटी नही, आकुल व्याकुलता तेरे मिटी नही, दरियाव जेसा कल्लोल तेरे उठल रहा है, तें जो धर्मक्रिया करता है सो शून्य मनसें करता है, धीरजगुणसें करेगा सो लेखे लगेगा, सूने मनसें करी जो क्रिया सो राख पर लींपणे जेसा है, अरे चेतन ! सोगन नही लेवे सो पापी, उर लेकर न्नांगे सो महापापी, तें अनंतकाय, अन्नक्ष, शीलव्रत, जरदा, न्नांग, अमल, तमाखू, आदिकरा सोगन लेकर खोटा किया, तेरा कहां बूटकबारा होगा, रे चेतन ! तें पुजलरे वास्ते कितनी आकुल व्याकुलता कर रह्यो है, मेरे पारस पत्थर, मेरे नवनिधांन, मेरे रसकूंपा, मेरे रसायण, मेरे चित्रावेल, मेरे अमृतगुटको, वा देवताकूं वस करूं, बादस्याह हो जाउं, राजा हो जाउं, प्रधांन हाकम सेनापती हो जाउं, किसी तरे धन उपार्जन करूं, ये बाते तेरे हमेसां ऊपजै, हसमे गुणठाणेवालेकेही लोन्नका त्याग नहीं, तो तेरी गरज तो केसें सरे, हे चेतन ! तूं मनमें विचारता

है मेरा घर मेरा पिता मेरी माता मेरा पुत्र मेरा कलत्र मेरा पुद्ग ल, अरे चेतन ! चोरासी फिरते चौरासी लाख घर करता फिरा, संसारमें न किसीका तुं है, नहि कोइ तेरा है, रे चेतन ! तूं तेरा उत्पत्ति तो देख, केइ वखत मापणे, केइ वखत पूत्र पणे, केइ वखत पुत्रीपणें, किसी वखत स्त्रीपणें, जेसें वगकी बेटी नें अपणी मांसे पूछा-माताजी में जो पाप करतीहूं सो कोण भो गेगा ? मा बोली—बेटी, करेगा सो भोगेगा, तबतो उसने कहा धिक् है इस स्वारथियें संसारकूं, कोइ किसीका नही, यह मनुष्यजन्म, आर्यदेस, आर्यकुल, श्रावकके घर जन्म पाया, श्रीजिनेश्वरदेवका धर्म पुन्यानुबंधी पुन्यसे पाया, उर पायकरके तेने ब्राह्मण जेसें क उएकूं उमाणे चिंतामणिरत्न फेंककर खोया, तेसें तें चिंतामणि रत्न जेसा सत्य सनातन धर्म जैनका पायकर मंदबुद्धि क्रिया आ- ऋंवरी कुगुरुउके उपदेससें चिंतामणिरत्न जेसा शुद्ध जैनधर्म आज्ञाप्रमाण जो था सो तेनें खो दिया, अब तेरा निस्तारा केसें होय, विष्टामें कृमिपणें तें अनंती वार पेदा भया, मांनरूपी गज पर बाहूबल चढा उर संज्वलनमांन था, उर ब्राह्मी सुंदरी बहिना जैसी समझाणेवाली थी जब समझे, उर तेरे सो एसा मांन, अरे चेतन तेरा कोन हवाल होगा, देख तूं भरतमाहाराजा जिणोंके केसीक राजऋद्धि सो केसीक भावना भावतां, धिःकार राज्यनें, धिः कार पाटकूं, धिःकार चक्रवर्त्तिपदवीकूं, धिःकार मेरे विषयसुखोंकूं, धन्य श्रीतीर्थंकर माहाराजका सो देसविरती धर्म पालते है, धन्य जो सर्वविरती धर्म पालते हैं, धन्य जो दांन देते है, धन्न जो सील पालते हैं, धन्य जो तपस्या करते हैं, धन्य जो भावना भाते हैं, एसें भावना भावतें भरतादिक केवलज्ञान केवल दर्शन पाया, इस तरें रे जीव तूं उनोकी बराबरी मतकर, वहतो तेसठ

सलाका पुरुष चौथे आरेका जीव तें पंचम कालका भरतक्षेत्र-का कोमा भनोके देखते तूं किस गिणतीमें, कर्म अजीववस्तु तें जीववस्तु, जीवसें जीवतो हमेसां परिचय करे लेकिन् अजीवसे क्यों करे, कर्म सबल तें निर्बल, रे चेतन कर्म तो चौदेपूर्वधारीयोकों गिराया, इग्यारमें गुणठाणेका जीव भुवनभानु केवलीजी, कमलप्र भाचार्यजी, महाविदेहके मनुष्योकूं भिमाय दिया तो तेरी तो बिसायतही क्या, आठ करम अठावनही प्रकृती हे प्रभु केसें जीता जाय, मोहकर्म पीठे लगा सो केसें जीता जाय, हे चेतन चारित्रकी फोजमें रह सद्बोध मोहतेकी आज्ञामें रह सदागमसुं परिचय रख, संतोषगुण धार, तृष्णारूप दाहकूं पीठी मार, जेसेंतें तिर जाय, धन हे साधु मुनिराज पांचे सुमते सुमता, तीने गुप्ते गुप्ता, छकायका पीयर, सात महाभयका टालणहार, आठ मदका जपक, नवविध ब्रह्मचर्यको वाभका रखणेवाला, दसविध जतीधर्मका उजवालक, इग्यारे अंगका भणणेवाला, वारे उपांगका भणणेवाला, कुरकीसंवल मलि, मलिनगात्र, चारित्र पात्र, धन्य हे वह मुनि प्रभूकी आज्ञा मुजब धर्म पाले, रे चेतन तुझे कब उदे आवेगा, रे चेतन तेरे उदय कहांसें आवे, तेरे संसाररी बहुलताइ, धन्य देसव्रती पाले जिके प्रभुजीकी आज्ञा पाले, जिके प्रभात उठ सामायक करे, पमिकमणो करे, देवदर्शन करे, प्रभुजीकी द्वादसांगी वाणी सुणे, देववंदन, देवपूजन, गुरुवंदन, दांन, तपस्या, सील, पर्वतिथी पोसा, संध्याकूं देवसी पमिकमणा जिनाज्ञा प्रमांणे षमावश्यक कर, मुझेभी कभी उदय आयगा, रे चेतन ! तूं बुरे कर्म करता हे बुरा हवाल होगा, बुरे परणांमोसे बुरीही गती उदय आयगी, सामायक मनसुद्धे करो, निंदा विकथा मद परिहरो, पढण गुणना वांचनेकी खप करो, जेसें भवसायर लीला तरो, सामायकवंतके यह

लक्षण है, ओर तेरी सामायक तो निंदा विकथारूप है, तुझे पढणे गुणनेकी लगन नही, तेनें तो श्रुतज्ञानका विनय बहुमान नही किया. जो श्रुतज्ञानकी भक्ति करते है उनोकों ज्ञान दर्शनकी प्राप्ति होती है, केवलज्ञांन ओर केवलदर्शन पाता है वोही जीव मुक्तिरूप स्त्रीका भर्त्तार होता है. दिवस प्रते दै कोई सुजांण सोना खंम्भी लक्ष प्रमाण, उसके पुन्य होय जेतलो, सामायक कीधा तेतलो ॥ १ ॥ लेकिन् तूं इस भरोसे मत भूल, यह तेरी सामायक वो नही, वह सामायक आणंद कामदेव संख पुष्कली आदि उत्तम पुरुषोंकी, चंद्रावतंसकराजाकी, तेरी सामायक तो एसी है कांम काज घरका चिंतवै, निंदा विकथा कर खिज रहै; आरत रौद्रध्यांन मन धरै, तूं सामायक निष्फल करै ॥ १ ॥ सामायकके लक्षण एसें है अपणा पराया सरषा गिणै, कंचन पत्थर समवड़ धरै, साचो झोझो आगम भणे, ते सामायक शुद्धे करै ॥ १ ॥ रे चेतन तें पराया बुरा चाहता, अपणा भला चाहता, वो पराया बुरा था नही चाह्या वो तेनें अपणे आत्माकाही बुरा चाहा, अरे चेतन तें कंचनकी चाह रखे, पत्थरकूं दूर करै, आखिर एक दिन यही पत्थर तेरे छाती पर धरा जायगा, रे चेतन तूं मृषावाद बोल रहा है, तूं अपणे आत्माका गुण विचारे तो अवेदी है, अफरसी है, अघाती है, अलेसी है, अविनासी है, तें दिलमें विचारता है यह मेरा सज्जन, यह मेरा दुस्मन है, कोण तेरा सज्जन ओर कोण तेरा दुस्मन है, आठ कर्मरूपिया सत्रु है जिनोंकों तूं ज्ञानरूपिये इंधनसूं बाल भस्म कर जिस्से तेरी गरज सरे, अहोहो मैं भव्य हूं अभव्यहूं अथवा दुरभव्यहूं, मेरे संसार पोते बहोत दिखता है, प्रायेतो मैं अभव्यही दिखताहूं पीछे तो ज्ञानीयोंने भाव देखा सो सही, हे रे भाइ तें तो एसी सामायक करता है, खणे खाज मोमे

करमका, बंधतणा लेवे सरमका, तेरी सामायक तो ज्ञानी सिं-कारेगा जब लेखे लगेगा, दुहा—आत्मनिंद्या आपणी, ज्ञानसार मुनि कीन; जो आत्मनिंद्या करे, सो नर सुगुण प्रवीण ॥ १ ॥ इति आत्मनिंद्या संपूर्ण ॥

॥ अथ श्राद्धदिनकृत्य तथा देववंदनभाष्यादिकसें मंदिर जाणेकी पूजन द्रव्य भावसे करणेकी-विधि श्रीमहा-निसीथ सूत्रकी आज्ञा मुजब लिखते हे ॥

महाकल्पसूत्रमें एसा लिखा हे छती शक्ति साधु जिनमंदिरमें जाके दर्शन नही करे तो तेलेका डंड उर श्रावककूं बेलेका डंड ॥ प्रथम श्रावक दो च्यार घमी रात रहे पिछली तब उठके नवकारमंत्रका स्मरण करे, में कोण हूं, क्या मेरी जाति हे, क्या मेरा कृत्य हे, क्या मेरा धर्म हे, इस तरे धर्मजागरणासें दिलको सावचेत करे, पीछे मल मूत्रकी वाधाकूं दूर कर अंग शुचि करके सामायिक लेके राईप्रतिक्रमण करे, फेर घरदेरासरकी पूजा करे, पीछे यथाशक्ति अच्छा वस्त्र आभूषण पहरके घोमा हाथी रथ पालखी सिपाइ नोकर चाकर भाई बंधु परिवार समेत पूजाके लायक फल फूल प्रमुख संगमे लेकर भव्यजीवोंको मोक्षमार्ग दिखाता हुआ जिनशासनकी प्रभावना करता थका जिनमंदिरमें जावे. जिन मंदिरमें प्रवेश करके द्रोपदीकी तरे ज्ञातासूत्रमें अधिकार १० त्रिक विधि साचवन करे सो दस त्रिक लिखते हे—

पहिला त्रिक—३ वेर निस्सही कहणेका, जिसमें १ निस्सही जिनमंदिरमें प्रवेश करतेही कहे पीछे संसार घर संबंधी कुछभी कार्य विचारणा न करे १; दूसरी निस्सही प्रदक्षणा तीन दियां पीछे कहे, जिनमंदिरमें फूटा टूटा मरम्मत कराणेकी जो सार संभाल रखणीभी सोभी छोमे २; (इसमें द्रव्यपूजा करणी मोकली रही)

तीसरी निस्सही कहे पीछे निकेवल भावपूजादी करे, लेकिन् द्रव्य पूजा नही करे. यह प्रथम निस्सही त्रिक कहा. १

दूसरा त्रिक–ज्ञान त्रिककी आराधना करणेकों प्रभूके दक्षिणावर्त्तसें तीन प्रदक्षिणा देवे.

तीसरा त्रिक–मूलनायकजीके बिंवको पंचाग मिलाके तीन वेर नमस्कार करे. ३.

चोथा त्रिक–प्रभूकी अंग १ अग्र २ और भाव ३ एसे त्रिविध प्रकारसे पजा करे. अब निस्सही किये पीछे कृत्य अकृत्य तथा पूजाविधि संक्षेपसें लिखते है, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति करके युक्त रहे, पांचो इंद्रियोकूं वसमे रखे, चलणे और फिरणेमें उपयोगी रहे, गीतादिक दुसरोंका सुणके चित्तमें व्याकुलता नहि रखे, कुछभी देवकार्यकों छोडके, और कार्यकी विचारणा न करे, संपूर्ण राजकथादिक ४ है सो विकथाको छोडे, जन्म और कर्मके अनुगत वचन नहि बोले अर्थात् कोईके मातापितादिकका किया भया खोटे कार्यकों प्रगट नहि करे तथा कर्मानुगत वचन आंधेको अंधा, गोलेकूं गोला, इत्यादि वचन नहि बोले. निस्सही किये पीछे जिनमंदिरमें धर्म्मसंयुक्त आत्महितकारी प्रमाणोपेत वचन वोले, जिसनें मन वचन कायाके खोटे व्यापारोका निषेध अपणी आत्मासें किया है उस जीवके भावसे निस्सही होय, और जिसने दूषणका त्याग नहि किया है उसके फकत शब्द उच्चारणे मात्र द्रव्यनिस्सही होय इस वास्ते पूजायोग्य उत्तम वस्त्र पहरके आठ तहका उज्जल वस्त्रसें मुखकोस बांधे, धूपादिकसें अंग अपणा शुद्ध करे, भावसें दुसरी निस्सही कहते मूलगुंभारेमें प्रवेश करे, जयणा संयुक्त पूजा करे, पूजा करते शरीरमें खाज नही खुणे, खेल खंखार नहि करे, निकेवल भगवानकी स्तवनामें चित्त रखे, प्रथम सुगंध युक्त जल

पंचामृतसे स्नान करावे, सुकमाल अच्छा कोमल सुगंधयुक्त वस्त्रसें भगवानका अंग लूहे, कपूर कस्तुरी मिश्रित शुद्ध केशरचंदनसें विलेपन करे, शुभवर्ण शुभगंधयुक्त जीवादि रहित निर्दोस गुलाब चंपा चंपेली केवडा जाई जूई मोगरादिक पुष्फोसे पूजा करे, अष्टांगधूप अगरवत्ती खेवे, मंगलीक दीपक करे, अखंड उज्वल अक्षतोसें प्रभूके सन्मुख अष्ट मंगलीक लीखे–दर्पण १ भद्रासण २ वर्द्धमानसरावसंपुट ३ श्रीवत्स ४ मत्स्ययुग ५ कलश ६ स्वस्तिक ७ नंद्यावर्त्त ८ एसे अष्ट मंगलकी रचना करे. पंचरंगे फूलोंसें अष्टमंगलीककूं पूजे, अच्छे केसर चंदनके हथ्था देवे, उत्तम नैवद्य चढावे, अच्छे स्वाद्यफल चढावे, इत्यादि पूजाकी विधी आरती पर्यंत रायपसेणी ज्ञाताधर्मकथा जीवाभिगमादि सिद्धांतोमें लिखे मुजब करे. पीछे अंतरंग भक्तिसें प्रभूके सन्मुख नाटक करे, जेसें देवेंद्र दानवेंद्र नारद उदाइराजाकी राणी प्रभावती द्रौपदी रावण प्रमुख केइ जीवोने जिनेश्वर तथा जिनेश्वरकी प्रतिमा आगे अष्टापदादि तीर्थोंपर तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया तेसें शंकारहित भव्यजीव नाटक करता उत्तम फल पावे, जल चंदनादि पुष्पोसें करीजावे सो अंगपूजा १ प्रभूके सन्मुख नैवद्यादिक चढावाजावे सो अग्रपूजा २ प्रभूके सन्मुख शक्रस्तवादि गीत गान नाटकादिक करे सो भावपूजा ३. द्रव्यपूजा गर्भित चोथा त्रिक कहा. ४.

अब पांचमा त्रिक–तीन अवस्था विचारणी. पिंडस्थ १, पदस्थ २, रूपातीत ३, इसमें पिंडस्थ अवस्थाके तीन भेद है. जन्मावस्था १, राज्यावस्था २, श्रमणावस्था ३, उर केवलअवस्था को विचारणा सो पदस्थअवस्था. निरंजन निराकार सिद्धावस्था सो रूपातीत कहीजे. ५.

अब छठा त्रिक–तीन दिशा छोडके प्रभूके सामने नजर रखे.

उर्द्ध १, अध २, तिरछी ३, दहणी ३ ४ वांइ पिछाम्ही निजर नही करे.६.

अब सातमा त्रिक–तीन वेर धरती प्रमार्जके उस ठिकाणे चैत्यवंदन करे.

अब आठमा त्रिक–वर्णादिक तीन संपदाका अक्षर शुद्ध उच्चारण करे सो वर्णशुद्धि १, अक्षरोंके अर्थपर आलंबन रखे तो अर्थशुद्धि २, आलंबन एक जिनप्रतिमाका रखे सो मन शुद्धि ३.८.

अब नवमा त्रिक–तीन मुद्रा करणी. जोगमुद्रा १, जिनमुद्रा २, मुक्ताशुक्तिमुद्रा ३. कमलकोशाकार दोनुं हाथोंकी अंगुली मिलाणी सो योगमुद्रा कहीजे, इस योगमुद्रासें शक्रस्तव कहे १, काउसग्ग मुद्रा सो जिनमुद्रा २, उर दो सीपका जोडा तिस आकारसें हाथ रखणा सो मुक्तासुक्तिमुद्रा ३, इस मुद्रासें प्रणिधान जयवीयराय कहे. ए.

अब दशमा त्रिक—प्रणिधांन तीन. जिनवंदन प्रणिधान १, मुनिवंदन प्रणिधान २, प्रार्थना प्रणिधान ३. इसमें जो जावंति चेइयाइं इह संतो तत्थसंताइ तक तो जिनवंदन प्रणिधान १, जावंति केविसाहू तिविहेण तिदंड विरियाणं तक मुनिवंदन प्रणिधान २, जयवीयरायसे लेके आभवमखंडा तक प्रार्थनारूप प्रणिधांन ३. एसें दश त्रिकका पहिला द्वार कहा. १०.

अब पांच अभिगमन साचवणेका दूसरा द्वार कहते हैं. सचित्तद्रव्य जो पुष्पादिक अपणे भोगमें होय उसकूं दूर धरदेणा १, उर राजचिन्ह मुगट छत्र खड्ग चमर पाडुका अचित्तवस्तुउकाभी छोडणा आभूषण वगेरे पहरे रखणा २, मन एकाग्र करणा ३, एकपट्ट उत्तरासण करना ४, जिनबिंबकूं देखतेही नमोजिणाणं णो एसें नमस्कार करणा ५. यह दुसरा द्वार कहा.

अब तीसरा द्वार–दोदिशीका पुरुष दहिनी तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे, स्त्री वांइ तरफ बेठके भगवंतकूं वांदे.

अब चोथा द्वार तीन अभिग्रहका. अभिग्रह देववांदणामे कहा है. जघन्यसे तो नव हाथ दूर बेठके देव वांदे १, मध्यम नव हाथसें उपरांत बेठके देव वांदे २, उत्कृष्ट ६० हाथ दूर बेठके देव वांदे ३.

अब पांचमा द्वार चैत्यवंदनका. सो जघन्य १, मध्यम २, उत्कृष्ट ३, एवं तीन भेद है. णमो अरिहंताणं एसा कहके अथवा एक दोय गाथाका नमस्कार चैत्यवंदन कहके शक्रस्तव कहणा सो जघन्य चैत्यवंदन १, जिस देववंदनसें नमोत्थूणंसे लेके अरिहंतचेइयाणं इत्यादिक संपूर्ण कहके एक स्तुतिकी गाथा कहे सो मध्यम चैत्य वंदन तथा कोइ आचार्य कहते है पांचदंमक समेत थुईकी च्यार गाथा कहे सो मध्यम चैत्यवंदन कहीजे. पांच शक्रस्तवसे आठ थुईसे देववांदे सो उत्कृष्ट चैत्यवंदन कहीजे.

अब छठा द्वार पंचाग प्रणिपात करे, दो गोडे. दो हाथ, उर मस्तक, यह पांच अंग मिलाके जमीनमें लगावे.

अब सातमा द्वार. जघन्ये एक गाथासें लेकर उत्कृष्ट एकसो आठ श्लोक तथा काव्यसें प्रभुकी स्तवना करे ॥ इति ॥

॥अथ चवदे नियम दिनप्रति प्रमाण श्रावक करे सो विचार लि०॥

सच्चित्त १, दव्व २, विगई ३, पाणहि ४, तंबोल ५, वत्थ ६, कुसुमेसु ७, वाहण ८, सयण ९, विलेवण १०, बंभ ११ दिशि १२, न्हाण १३, भत्तेसु १४ ॥ अर्थ ॥ श्रावक नितप्रति नियम संभाले दिनमें जो चीज अपणे अंग खाते लगे उसका प्र माण रखे, उपरांत त्याग करे. उसमें पहिले सच्चित्त वस्तुका प्रमाण इस तरेसें करे मट्टी सर्व जाति, पाणी सर्व जाति, जल अग्नि वायु वनस्पतिका छेदन भेदन, तरकारी फल परवल भींडी तोरी केला मतीरा ककडी खरबूजा नींबु आंब नारंगी जामूण इत्यादिक जो चाहे सो रखे, बाकीका त्याग करे १.

दूसरा द्रव्य प्रमाण. तहां धातु वस्तुकी शली तेसे अपणी अंगली विगर जो चीज मुंमें मालणेमें आवे सो सब द्रव्यकी गिणतीमे आता हे. नामांतर स्वादांतर स्वरूपांतर परिणामांतर द्रव्यांतर होणेसे द्रव्य जुदा गिणणेमे आता हे. जेसें गहूं एक द्रव्य उसकी पतली रोटी फीणारोटी वेढवारोटी बाटी यह सब जुदा द्रव्य कहलाता हे. इस तरे भात दाल रोटी कढी मांभिया कट्ट तरकारी सब जात पापड खीचिया लक सब तरेके फीणी घेवर खाजा इत्यादिकमेंसे सब द्रव्यमेसे जो चहिये सो रखे बाकी नियम करे, उत्कृष्टपणे एक द्रव्यका नांम लेकर रखे सो एकही द्रव्य कहलावे. जेसेके मेवेकी खीचडी तो वह अनेक द्रव्यसे बणी भई हे तोभी एक द्रव्यही कहिये. इति द्रव्यप्रमाण दुसरा नियम २.

अब तीसरा विगय प्रमांण नियम ॥ तहां दश विगयोंमेंसें श्रावककूं च्यार महाविगयका तो त्यागही होता हे. मदिरा १ मांस २ मखण ३ उर सहतका ४ रहे. ६ विगय--घृत १ तेल २ मीठा ३ दूध ४ दही ५ कढाईकी तली चीज ६, यह धारणा प्रमांण रखे. इति विगय नियम ॥ ३.

अथ चोथा पादत्राण नियम ॥ तहां जूती खडाउ मोजा अपना इतना विराणा एसे नित्य धारणा प्रमाण मोकला रखे. ४. ॥ इति पान हि नियम ॥

अथ पांचमा तंबोल नियम ॥ पांनबीडा सुपारी लोंग इलायची गोटी उर वडी जायफल जावंत्री प्रमुख सब खादिमवस्तु क्रियाणेकी चीज धारण प्रमांण रखे. इति तंबोल नियम ॥ ५.

अथ छठा वस्त्र नियम. पोसाख २ तथा ४ छूटा वस्त्र ५ तथा ७ मोकला रखे, पोसाख १ में पघडी १ जामा २ कमरबंधा ३ धोती ४ इक पट्टा उत्तरासण ५ यह पांच वस्त्रकी एक पोसाख

कहीजे. एसें स्त्रीके स्त्रो मुजब. जो एसा नही कर सके तो ४० तथा ५० कपड़ा दिनमे मोकला रखे. पराया वस्त्र भूल चूकमें आवे तो जयणा ॥ इति वस्त्र नियम ॥ ६.

अब सातमा फूल नियम. गुलाव चंपेली बेला केवड़ा केतकी कुंद मुचकुंद सेवती चंपा मालती आदिक सब फूलका धारणा प्रमाण रखे. ॥ इति फूल नियम ॥ ७.

आठमा वाहन नियम ॥ रथ गाड़ी वहली इक्का बग्घी कोच पालखी घोड़ा हाथी ऊंट तामजांम म्याना इत्यादिक सब थलवाहन, पाणीमें चलणेवाले मोरपंखी वतक घुड़दोड़ लचकार मगर पनसोइ पलवार वजरानाव इत्यादि सब जिहाज बोट वगेरे तिरता फिरता चरता रेल वगेरे सब प्रकारके असवारीकी धारणा रखे. ॥ इति वाहन नियम ॥ ८.

अथ शय्या नियम ॥ पलंग खाट तखत चोकी पट्टा गद्दी कुरसी वनात सूजनी सेत्रूंजी डुलीचा चांदणी शीतलपट्टी चटाई सफ दरखतकी छालका चमड़ेका कामला मुखमल अतलस कारचोपी इत्यादि धारणा प्रमाणे शय्याका प्रमाण करे. इति शय्या नियम ९.

अथ दशमा विलेपन नियम. सरसूंका राईका आटेका तेल फुलेल सब जातिका केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकूं इत्यादिक शरीरके सुख वास्ते तथा रोगादि कारणे औषधादिकका विलेपन, फोड़े परमलम प्रमुख आंखोमें अंजन इत्यादि अंगोपांगमें लगाणा सो विलेपन धारणा प्रमाणे परिमाण करे. इति विलेपन नियम १०

अथ ब्रह्मचर्य निमय. रातकों तथा दिनकों सूइ डोरेके दृष्टांत भोगादिकका प्रमाण करे स्वप्नेकी मनकी वचनकी जयणा. इति ब्रह्मचर्य नियम ११.

अथ दिशि नियम. पूरब १ पश्चिम २ दक्षिण ३ उत्तर ४ अग्निकूण ५ नैरुतकूण ६ वायव्यकूण ७ ईशानकूण ८ अधोदिशि ए उर्द्धदिशि १० यह दश दिशिका अपणे जाणे आणेका प्रमाण करे, चिठि लिखणी आदमी भेजणा देशांतरकी चिठी वांचणी उसकी जयणा. इति दिशि नियम १२.

अथ तेरमा स्नान नियम, तहां आज दिनमें स्नान २ वेर अथवा ४ वेर मोकला लेकिन् पाणीका तोल रखे, घमे प्रमुख का प्रमाण करे, एक स्नानमें इतना पाणी खरच करूं ज्यादा नही गिराउं. इति स्नान नियम १३.

अथ चौदमा भात नियम. दिनमें भात २ सेर तथा २ वेर जीमूंगा अथवा च्यार वेर उपरांत डुविहार या चोविहार धारणा प्रमाणे रखे. तथा दिनमें जल पीणेमें आवे उसका प्रमाण रखे तोलसे या मापसे. इति चवदे नियम विचार संपूर्ण १४.

॥ अथ श्रावकके सम्यक्त मूल बारे व्रत ग्रहण विधि लिख्यते ॥

प्रथम जिनमंदिरमें जिनप्रतिमाके सांमने शुद्ध सपेद वस्त्र पहरके चंदनकेशरका तिलक करके चावल चढावे, पीछे अखंम तंडुल सुद्ध ३ थालमें रखे. उस पर नारेल रुपया या मोहर धरे, तीन प्रदक्षिणा देकर इरियावही पमिक्कमे इच्छाका० सम्यक्त सामाइअआरोहणार्थं चेइयाइं वंदावेह गुरु केह वंदावेमो चैत्यवंदण करे. वाये पासे चावलांको साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्यासें मंत्रकर श्रावकके मस्तक पर वासक्षेप करे, वर्द्धमान स्तुतिसें देववंदन करवावे पीछे सतरे थुइमें नवकार १ एकेकका काउसग्ग करे पीछे शासनदेवता निमित्त च्यार लोगस्स का काउसग्ग करे, पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ नवकार गुणे शक्रस्तव कहे नमोर्हत्० कहके वमा स्तवन कहे पीछे जय

वीयराय कहे इति नंदी विधिः। पीछे खमासमण देइ श्रुतसा मायक सम्यक्तसामायक आराहणार्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो सम्यक्तसामायक आरोपनार्थं करेमिकाउसग्गं. ४ लोग स्सका काउसग्ग करे पारके प्रगट लोगस्स कहे पीछे ३ वेर नव कार गुणकर गुरूके पास तीन वेर सम्यक्तदंडक उच्चरे गुरु पाठ बोले उसकी मनमें धारणा रक्खे. सूत्रं अहन्नंभंते तुह्माणं समं वे मिच्छत्ताउ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमेकप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतित्थिएवा अन्नतित्थिदेवयाणिवा अन्नतीत्थिपरिग्गहिय अरिहंत चेइयाणिवा वंदित्तएवा नमंसित्तएवा पुव्विंअणालित्तएणं आलवित्त एवा तेसिंअसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा दाउंवा अणुप्पाउंवा तेसिंगंधमल्लाइं पेसिउंवा नन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभि योगेणं बला भियोगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं तंचउव्विहं तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ भावउ तत्थदव्वउ दंसण दव्वाइं अहिगिच्च खित्तउ जाव भरहमज्झिमखंडे कालउ जावज्जीवाए भावउ जावछलेणं नछ लिज्जामि जावसन्निवाएणं नभविज्जामि जावकेणइ, उम्माइवसेणं एसो दंसण पालण परिणामो नपरिवडइ तावमे एसो दंसणाभिग्ग हो अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति यागारेणं वोसिरइ. पीछे ॐ ह्रीं श्रीं अर्हंनमः एसे अक्षर श्रीगुरूके पाससें हाथमें लिखाके जिन प्रतिमाकूं वासक्षेप चढावे, नवकार पढतोथको ३ प्रदक्षिणा देवे, देव गुरूकूं वांदे, पीछे श्रुतसामायक थिरि करणार्थ सत्तावीस उत्सास प्रमाणे एक लोगस्सका काउस ग्ग करे पीछे प्रगटलोगस्स कहे पीछे सम्यक्तरूप कल्पवृक्ष पायके अति आनंदसें एसा वचन बोले अरिहंतोमहदेवो, जावज्जीवं सुसा हुणो गुरुणो, जिनपन्नत्तंतत्तं, इयसम्मत्तंमएगहियं. १, पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्वरूप सम्यक्तके पांच अतीचार वर्जे, नित्य

चैत्यवंदन इतनी वेर करूंगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, फल केसरादिक वर्षप्रति इतना जिनमंदिरमें चढाउंगा, ज्ञान दर्शन चारित्रके नक्तिमें इतना द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतने पर्वतिथिमें पालूंगा, नित्य पच्चखाण इस मुजब करूंगा, दिनकी नवकारसी आदिक रात्रिकों उविहार तिविहार चउविहार तेर बावीस अन्नक्ष बत्तीस अनंतकाय विदल वगेरे गेडूंगा इत्यादिक अपणी धारणा प्रमांण सब वस्तूका करे नियम, गुरुके सामने बारे व्रतकी टीप सुणे अतीचार नहि लगे एसे उपयोगसे सदा वर्त्ते ॥

अथ प्राणातिपात व्रत दंमक लि० ॥ अहन्नंनंते तुम्हाणं समीवेथूलगपाणाइवायं संकप्पिउ निरवराहं पच्चरकामि जावज्जीवाए एगविहं एगविहेणं अथवा उविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं नकरेमि नकारवेमि तस्सनंते पमिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ यह पहले व्रतका दंमक तीन वेर उच्चरावे॥१॥ अहन्नंनंते तुम्हाणंसमीवे थूलगं मुसावायं जीहाछेयाइहेउअं कन्नालीयं गवालीयं नूमालीयं थापणमोसा कूटसारवीयं पंचविहं पच्चरकामि दरिकन्नाए अविसए दवउ खित्तउ कालउ नावउ सबउणं मुसावायं खित्तउणं इच्चवा अणच्चवा कालउणं जावज्जीवाए नावउणं जावगहेणंनगहिज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाइयं एसोपरिणामो नपरिवमइ तावअन्निग्गह उविहं तिविहेणं अन्नत्थणान्नोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं वोसिरई ॥ २ ॥ अहन्नंनंते तुम्हाणंसमीवे अदिन्नादाणं खत्तखणणाइयं चोरंकारकरं रायनिग्गहकारयं सचित्ताचित्त वत्थुविसयं पच्चरकामि दवउ खित्तउ कालउ नावउ दवउणं अदिन्नादाणं खित्तउणं इच्चवा अन्नच्चवा कालउणं जावज्जीवं नावउणं जावगहेणं नगहिज्जामि जावछलेणं नछलिज्जामि अन्नेणकेणवि रोगाईयं एसोपरिणामो नपरिवमई ताव अ

निग्गहं दुविहं तिविहेणं अन्नत्थ० सहस्सा० महत्त० सव्व० वोसि
रइ ॥ ३ ॥ अहन्नंनंतुम्हाणंसमीवे उदारिय वेक्रिय नेयं थूलमेहुणं
पच्चस्कामि अहागहियन्नंगएणं दिव्वंतिरिङं माणसियं एगविहं एग
विहेणं पच्चस्कामि दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं मेहुणं खि
त्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए नावउणं जावगहेणं
नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ४ ॥ अहन्नं
नंते तुम्हाणं समीवे परिग्गहं पहुच्च अपरिमिय परिग्गहं पच्चस्कामि
धणधन्नाइ नवविहवहु विसयं इच्छापरिमाणं उवसंपज्जामि अहाग
हियन्नंगएणं तंजहा दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं नवविह
परिग्गहं खित्तउणं इहवा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवं नावउणं
जावगहेणं नगहिज्जामि अन्न० सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ५ ॥
अहन्नंनंते तुम्हाणंसमीवे दिसिपरिमाणं पच्चस्कामि तंजहा दव्वउ
खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं दिसिपरिमाणं खित्तउणं धारणाप
माणं कालउणं जावज्जीवाए नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि जाव
उ० तावअन्निग्गह अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ६ ॥ अहसंन्नं
ते तुम्हाणं समीवे नोगोवन्नोगयेन्नोयणउ अनंतकायबहुवीया राइ
न्नोयणाइं परिहरामि कम्मउणं पन्नरसकम्मदाणाइं इंगालकम्माइया
इं बहुसावज्जाइं खरकम्माइयं रायान्निगोगंच परिहरामि तंजहा दव्वउ
खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं नोगाव नोगवयं खित्तउणं इहवा अन्न
त्थवा कालउणं जावज्जीवाए नावउणं जावगहेणं नगहेज्जामि अन्न०
सह० मह० सव्व० वोसिरइ ॥ ७ ॥ अहसंन्नंते तुम्हाणंसमीवे
अन्नत्थदंरुं पच्चस्कामि अववज्झाण पापोपदेश हिंसोपकरण
दांण पमायचरितं चउविहं अन्नत्थदंरुं जहासत्तीए परिहरामि तंज
हा दव्वउ खित्तउ कालउ नावउ दव्वउणं अन्नत्थदंरुं खित्तउणं इह
वा अन्नत्थवा कालउणं जावज्जीवाए नावउणं जावगहेणंनगहि०

अन्न० सह० मह० वोसिरइ ॥ ८ ॥ अहन्नंभंते तुम्हाणंसमीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगासियं अतिथिसंविभागवयं जहा स त्तीए पडिवज्जामि इच्चयं सम्मत्तमूलं पंचाणुव्वयं सत्तसिक्खावयं डुवा लसविहं सावगधम्मं उवसंपज्जत्ताणं विहरामि अन्न० सह० मह० सव्वस० वोसिरइ ॥ ए ॥ षट् साख ढ ठंडी च्यार आगार संयुक्त पालूं ॥ इति श्रावककूं संक्षेप बारे व्रत उच्चरावण विधि ॥

॥ अथ वीसथांनकका छोटा स्तवन देववांदनेमे कहणेका ॥

श्रीजिनना रे चरण कमल प्रणमी करी, वीस थांनक रे गणवुं विधि कहउ चित्त धरी ॥ पहले थानक रे नमो अरिहंताणं गणउ, सीमंधर रे जयवंत जिन पूजी थुणउ ॥ त्रूटक० ॥ थुणउ भविआं वीजइ थानकि, नमो सिद्धाणं सही ॥ सिद्धपूजा चउवी स जिननी, पूंमरीक आदिइं कही ॥ त्रीजइ थानक नमो पवयण स्स, प्रभावना संघनी करइ ॥ नमो आयरिआणं चउथइ थांनकि, आचारज भगती धरइ ॥ १ ॥ नमो थेराणं रे पांचमइ थिवर पूजा करो, नमो उवझायाणं रे छठ्ठइ थानक उचरउ ॥ वस्त्र कंवल रे वहुश्रुतनइ ते दीजिए, नमो तवस्सीणं रे सातमें तपिआ पूजिए ॥ त्रू० ॥ पूजिए आठमे नमो नाणस्स ज्ञाननी भगति करउ, नमो दंसणस्स नवमें थानक चैत्यसेवा आदरो ॥ दसमे ते नमो विनयकारीणं विनय वमानो कीजिए, इग्यारमे नमो क्रिया कारीणं पोसह पूरो लीजिये ॥ २ ॥ बारमे थानक रे नमो वंभ धारीणं सदा, वृतधारी रे मन वच क्रम पूजउ मुदा ॥ मूल वय धारीणं रे नमो तेरमे अरचिये, समाहिवरणं रे रात्रइ गीत गान वरचिये ॥ त्रू० ॥ वरचिये नमो सुपत्तदायगस्स परमान्न दांन ते पनरमे, नमो वायगस्स विगयनउ त्याग करो थांनक सोलमें ॥ सतरमे नमो वेयावच्चकारीणं, उरध गुरुनइ आपिये ॥ अढारमे

नमो नाण धराणं, नवूं ज्ञणवूं आपिये ॥ ३ ॥ नमो सुअज्ञत्तीणं रे उगणीसमे ज्ञविया सुणज, पुस्तकपूजा रे नवूं लखावीनइ सुणो ॥ वीसमे थानक रे नमो पञ्चावगाणं कही, संघज्ञगती रे यथासक्ति कीजे सही ॥ त्रू० ॥ सही कीजे वीस उली एक षठ मासि कीजीये, उपवास करिये बे सहस्स गुणिये पडिकमणे लाहो लीजिए ॥ त्रणे काले देववंदन नाहण धोअण टालिये, आरंज्ञ वरजी पुन्य गरजी सीअल सूधो पालिये ॥ ४ ॥ साधु साधवी रे श्रावक श्राविकाये सेविआं, तीर्थंकर रे तेण नामकर्म बांधिआं ॥ वीरशासन रे नव जणां ते जाणिआं, ठाणांगे रे सौधर्मसामि वखाणिआ ॥ त्रू० ॥ वखाणिआ गणधर श्रेणिकराजा सुपास उदाई नृप वलि, पोट्टिल मुनिवर अने दढायुष शंख शतक श्रावक रुली ॥ सुलसा रेवती श्राविकाये एह थानक फरसिआं, सेवकजन कल्याणकारी वयणला सफला किया ॥ ५ ॥ इति वीसथानक स्तवनं ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग केरबो ॥ चालो देखो री मधुवनको राव ॥ चा० ॥ वामानंदन पास जिनेसर, शिर पर रे वाके चमर ढोलाय ॥ चा० ॥ १ ॥ तारण तरण जिनेसर लख कें, ज्ञेटे सहु ज्ञवि चित्त सुख पाय ॥ चा० ॥ २ ॥ गंगादरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ चा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनं ॥

॥ राग घाटी ॥ मेरो मन वश कर लीनो, जिनवर प्रज्ञु पास ॥ मे० ॥ अखियां कमल पांखडिया, मुख सुंदर जास ॥ मे० ॥ १ ॥ कानें कुंमल दोय जलके, शशि सूरज सम ज्ञास ॥ मे० ॥ नील वरण तन सोहे, त्रिज्ञुवन परकाश ॥ मे० ॥ २ ॥

प्रभु तुम शरण रहीने, समरुं सासोसास ॥ मे० ॥ लालचंद अरज सुनीजें, पूरो वांछित आस ॥ मे० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ ठुमरी ॥ राग जंगलो ॥ सुणो सुजाण नेमजी, हांरे मैं खडी पुकारुं नेम तुंहीं तुंहीं तुंहीं ॥ सु० ॥ अरज करत हुं मैं पईयां परत हुं, ईतनी अरज मेरी मानो ॥ सुजा० ॥ १ ॥ बिन अवगुण क्युं तजो मेरे साहेब, नेह नजर मोपें डारो ॥ सुजा० ॥ ॥ २ ॥ हरख चंद नेमी राजेसर, हुं भव भवकी चेरी ॥ सुजा० ॥ ३ ॥

॥ अथ नेमजिन पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ नेम जिणंदजीसें आंखडली, मोरी रेन दिवस नित लग रहीरे ॥ ने० ॥ मो० ॥ १ ॥ पहेली आय उन दोस्ती कीनी, ले पीछें बिटकाय दई रे ॥ पसुअन पर प्रभु दया करीने, सिवरमणी तें वर लेइ रे ॥ ने० ॥ मो० ॥ २ ॥ केई भविक रसना कर दोस्ती, रत्नविमल पद पाय लई रे ॥ ने० मो० ॥ ३ ॥

॥ अथ पद ॥ राग भैरवी ॥

॥ आज प्रभु तोरे चरण लागि, मिथ्यात्तनिंद मैं खोई रे ॥ आ० ॥ १ ॥ दरसन कर परसन भयो मेरे, आनंद चित्त अब जोई रे ॥ आ० ॥ २ ॥ तुम विन उर न कोई मेरे, देख्यो त्रिभुवन जोई रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ दास तुमारो करत विनति, तुम प्रभु भव भव होई रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ रात गई अब प्रात होन भयो, क्या सोये जिया जागरे ॥ रा० ॥ दोय घडी तमको अब रहियो, उठ धरममें लाग रे ॥ रा० ॥ १ ॥ जिनवाणी उरबीच धार ले, उर भरम सब त्याग रे ॥ रा० ॥ २ ॥ आनंद सुगुरु वचन हित मानो, ए सूधो शिवमाग रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पदं ॥

॥ राग भैरवी ॥ तुम बिन दीनानाथ दयानिधि, कोन खबर ले मेरी रे ॥ तु० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरयो संसार जगतमें, मेटो भव की फेरी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ भव भवके प्रभु तुम जगनायक, राखो शरणें तेरी रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ उदय आशरो पकड्यो तेरो, सरण ग्रही में तेरी रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ कडखानी देशी ॥ भाव धरि धन्य दिन आज सफलो गणुं, आज में सजन आनंद पायो ॥ हर्ष धरि नजर भरि विमल गिरि निरख करि, रजतमणि कनक सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग पग उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण तिहां चलत आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह गिरि सुजस गायो ॥ भा० ॥ २ ॥ दूर दुर्गति टरी जात्र विधिशुं करी, पुण्यभंडार पोतें भरायो ॥ वंदत जिनराज मणिरंग सुरगिरि शिखर, ऋषभजिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ॥ ३ ॥

॥ अथ सीमंधर जिन स्तवनं ॥

॥ श्री सीमंधर साहिबा, वीनतडी अवधार लाल रे ॥ परमातम परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, भांगे सादि अनंत लाल रे ॥ भासक लोकालोकको, क्षायिक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ इंद चंद चक्रीसरू, सुर नर रहे कर जोड लाल रे ॥ पदपंकज सेवे सदा, अणहूते एक कोड लाल रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ चरणकमल पिंजर वस्यो, मुज मनहंस नित्यमेव लाल रे ॥ चरण सरण मोहि आसरो, भवभव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अधम उधारण गो तुमें, दूर हरो भवदुःख लाल रे ॥ कहे जिनहर्ष मया करो, देजो अविचल सुख लाल रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति सीमंधर जिन स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टापद गिरि स्तवनम् ॥

॥ मनमो अष्टापद मोह्यो माहरो जी, नाम जपूं निशि दीस जी ॥ चत्तारी अठ दस दोय वंदीया जी, चिहुं दिशि जिन चोवीश जी ॥ म० ॥ १ ॥ जोजन जोजन अंतरें जी, पावड शाला आठ जी ॥ आठ जोजन ऊंचुं देहरुं जी, दुःख दोहग जाये नाठ जी ॥ म० ॥ २ ॥ भरतें भरायां भलां देहरां जी, सो भोंयरां शून्न जी ॥ आपे मूरत सेवा करे जी, जाण जोईने कुन्न जी ॥ म० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी तिहां चढ्या जी, वली भागीरथ गंग जी ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधीयां जी, जाणे जोईं जे कुन्न जी ॥ म० ॥ ४ ॥ दैव न दीधी मुझनें पांखडी जी, आवुं केम हजूर जी ॥ समयसुंदर कहे वंदना जी, प्रह ऊगमते सूर जी ॥ म० ॥ ५ ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ सुण अरदासा सुगुण निवासा, अमची पूरो प्रभु आशा राज ॥ सु० ॥ देखि उदासा अपणा दासा, दीजें कहुक दिलासा राज ॥ सु० ॥ १ ॥ चाडी चटकी भवमांहि भटकी, नाच्यो में विध नटकी राज ॥ सु० ॥ २ ॥ हवे मन हटकी आपशुं अटकी, लागुं प्रभुपय लटकी राज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तें हम टाली मुगत संभाली, प्रीत अमेंहिज पाली राज ॥ सु० ॥ ४ ॥ एक हथाली वाजे ताली, वात अचंभा वाली राज ॥ सु० ॥ ५ ॥ परउपगारी पास तुमारी, सेवामें विध सारी राज ॥ सु० ॥ ६ ॥ तत्त्व विचारी मन शुद्ध धारी, श्रीधरमसी सुखकारी राज ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शंखेश्वर स्तवनम् ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभलीने आव्यो तुम तीरे, जनम मरण भय वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आलो ॥ ए आंकणी ॥ सहु

कोना मनवांछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एह बिरुद छे राज तुमारुं, किम राखो छो दूरो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम कहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ सेवक० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नही छे, परतक्ष दरिसण दीजें ॥ धूंवाडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्या पतीजें ॥ ॥ सेवक० ॥ ४ ॥ श्रीसंखेसर मंडण साहिब, वीनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया करी मुझने, भवसायरथी तारो ॥सेवक०॥५॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ प्राण पीयारा जी हो पास जी, किम मेलुं किरतार ॥ जिनेसर ॥ साहेब वसीया जीहो शिवपुरी, हुं इण भरत मझार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ १ ॥ आपणो अंतर जीहो अति घणो, सेंगु मिले साथ ॥ जि० ॥ लिख संदेशा जीहो लाम्बला, कागल द्युं किण हाथ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ २ ॥ रमतां थें में जीहो एकठा, दिनमें दश दश वार ॥ जि० ॥ केइक दिन लग जीहो एकठा, मिलता घणी मनुहार ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ३ ॥ आवतो मिलणो जीहो अवसरें, मिलशे सुकृत संयोग ॥ जि० ॥ पण क्षण क्षण जीहो सांभरे, वाला तणो रे विजोग ॥ जि० ॥ प्राण० ॥ ४ ॥ मिलस्यां जिण दिन जीहो मन रली, फलशे ते दिन आश ॥ ॥ जि० ॥ चंदमुनिंद कहे जीहो चित्तमें, वसजो प्रभु सुखवास ॥ ॥ जि० ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तवनम् ॥

॥ महाराज वधाई वाजे छे ॥ जिनराज, वधाई वाजे छे ॥ नगर अयोध्यामांहे, मेघ घर आज वधाई वाजे छे ॥ ए टेक ॥ मात सुमंगला जनमिया रे, सुमतिनाथ सुखकार ॥ सुमति भई सहु देशमें रे, प्रगट भयो जयकार ॥ व० ॥ १ ॥ इंद्रादिक सहु

सुर मह्यारे, मेरुशिखर पर आय ॥ मज्जन पूजन बहुविधै रे, थिर करि मन वच काय ॥ व० ॥ २ ॥ घर घर रंग वधामणा रे, घर घर मंगल चार ॥ वालचंद प्रभु जनमिया रे, सकल संघ सुख कार ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ अथ विरजिन स्तवनं ॥

॥ आज महोछव रंग रलो री ॥ ए टेक ॥ जायो सुत त्रिशलादे रानी, कामित पूरन काम कली री ॥ आ० ॥ १ ॥ सजि शणगार सकल सुरवनिता, अपने अपने मेल चली री ॥ आवत सिद्धारथजीके आंगन, पूरत मोतियन चोक पूरी री ॥ आ० ॥ २ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावत, नाटक नाचत सुरकुमरी री ॥ वाजत ताल मृदंग सुरपधनी, वेना बीन मोचंग वली री ॥ आ० ॥ ३ ॥ इंद्र हुकुम कर धरणिंद पठायो, सब वसुधा धन, धान्य भरी री ॥ कनक रजत मनि पंच वरनके, कुसुम विखेरत गलिय गली री ॥ आ० ॥ ४ ॥ जयजयकार भयो जिनशासनमें व्याधि व्यथा सवि विपत हरी री ॥ हरख चंद जनम्यो प्रभु मेरो, मनकी आशा सफलफली री ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा ॥

चउतीसय अतिसय जुत्त, वचनातिशयें जुत्त ॥ सो परमेसर देख भवि, सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिंहासण बेठा जग भाण, देखी भविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठे तुझ निम्मल झाण, लहिये परम महोदय ठाण ॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदिजिनंदा, तोरा चरणकमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोभागी चोवीस वैरागी चोवीसजिनंदा, कुसुमांजलि मेलो आदिजनंदा ॥ १ ॥ (इतना कह कुसुमांजलि चढाईने चरणोंके टीकी दीजे) ॥ गाथा ॥ जोनिअगुणपज्जयरम्यो, तसुअनुभवएगत्त ॥ सुहपुग्गलआरोवता, ज्यो

तिसुरंगनिरत्त ॥ १ ॥ ढाल ॥ जो निज आतमगुण आनंदी, पुग्गल संगेजे ह अफंदी ॥ जे परमेसर निजपद लीन, पूजो प्रणमो ज्ञव्य अदीन ॥ १ ॥ कुसुमां० सांतिजिनंदा० तोरा० (एसा कह गोडे टीकी दीजे) ॥ २ ॥ गाथा ॥ निम्मलनांणपयासकर, निम्मलगुणसंपन्न ॥ निम्मलधम्मवएसकर, सोपरमप्पहधन्न ॥ १ ॥ ढाल ॥ लोकालोक प्रकाशक नांणी, ज्ञविजन तारण जेहनी वांणी ॥ परमानंदतणी नीसाणी, तसु ज्ञगते मुऊ मति ठहरांणी ॥ १ ॥ कुसुमांजली मेलो नेम जिनंदा तोरा० ॥ (एसा कह हाथे टीकी दीजे) ३ ॥ गाथा ॥ जेसिझासिझंतिजे, सिझस्संतिअणंत ॥ तसुआलंबन ठवियमण, सोसेवोअरिहंत ॥ १ ॥ ढाल ॥ सिवसुख कारण जेह त्रिकाले, सम परिणांमे जगत निहाले ॥ उत्तम साधन मार्ग दिखाले, इंद्रादिक जसु चरण पखाले ॥ १ ॥ कुसुमांज० पासजिनंदा तोरा च० ॥ (एसा कह खांधोके टीकी दीजे)४ ॥ गाथा ॥ सम्मदिठ्ठिदेसजय, साहूसाहुणीसार ॥ आचारजउवझायमण, जोनिम्मल आधार ॥ १ ॥ ढाल ॥ चौविह संघे जे मन धार्यो, मोक्तणो कारण निरधार्यो ॥ विवह कुसमवर जात गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी ॥ १ ॥ कुसुमांजलि० वीरजिनंदा तोराच० ॥ (एसा कह मस्तक टीकी दीजे) ५ ॥ (पीछे स्नात्रिया चमर ले के प्रज्ञुजीकूं ढुलावे) ॥ वस्तु ॥ सयलजिनवर२ नमिय मनरंग, कल्लाणक त्रिहि संठविय, करिस धम्म सुपवित्त ॥ सुंदर सय इक सित्तर तित्थंकर, इक समय विहरंत महियल, चवण समय इगवीस जिण ॥ जम्म समय इगवीस, ज्ञत्तहि ज्ञावे पूजिया, करो संघ सुजगीस ॥ ढाल ॥ ज्ञव तीजे समकित गुण रम्या, जिनज्ञक्ती प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना, कर थांनक वीसनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रज्ञावता, मन ज्ञावना एहवी

भावता ॥ सब जीव करूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्ल सी ॥ २ ॥ लही परिणांम एहवूं भलूं, निपजावी जिनपद निरम लूं ॥ आजवंध विचे इक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥३॥ तिहांथी चवि लहे नरभव उदार, भरते तिम एरवतेंज सार ॥ म हाविदेह विजय प्रधान, मझखंमे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥ ॥ ढाल ॥ पुण्ये सुपना ए देखे, मनमें हरख विशेखे ॥ गजवर उज्ज्वल सुंदर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ निरभय केसरिसिंह, लख मी अतिह अबीह ॥ अनूपम फूलनी माला, निरमल शशि सुकमा ला ॥ तेज तरणि अति दीपे, इंद्रध्वजा जग जीपे ॥ पूरण कलश पमूर, पदम सरोवर पूर ॥ इग्यारमे रयणायर, देखे माताजी गुण सायर ॥ वारमें भुवन विमाण, अनुपम रत्ननिधान ॥ अगनशि खा निरधूम, देखे माताजी अनोपम ॥ हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकासे ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्ये पूत्र मनोहर ॥ इंद्रादिक जसु नमस्ये, सकल मनोरथ फलस्ये ॥ १ ॥ वस्तु ॥ पुन्य उदय २, ऊपना जिणनाह ॥ माता तव रयणी समे, देख सुपन हरखंत जागी ॥ सुपन कही निज कंतने, सुपन अर्थ सांभले सो भागी ॥ त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्ये पूत्र निधांन इंद्रा दिक जसु पाय नमी, करस्ये सिद्ध विधान ॥ १ ॥ ढाल ॥ चंद्रावलाकी ॥ सोहमपति आसन कंपियो, देइ अवधे मन आ- णंदियो ॥ मुझ आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिनराज ॥ १ ॥ भवअरुविय पारग सत्थवाह, केवलना णाइय गुण अगाह ॥ सिव साधन गुण अंकूर जेह, कारण उल- ट्यो आसाढ मेह ॥ २ ॥ हरखे विकसे तव रोमराय, वलयादिकमां निज तनु न माय ॥ सिंहासणथी ऊठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आणंद कंद ॥ ३ ॥ सग अड पय समुहा आवि तत्र, कर अंजलि

प्रणमिय मञ्ज सत्थ ॥ मुख जाषे ए कण आज सार, तिय लोय पहू दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु सखेव ॥ तसु शांतिकरण जलधर समांन, मिथ्या विष चूरण गरुम्वांन ॥ ५ ॥ ते देव जगत तारण समञ्ज, प्रगट्यो तसु प्रणमो हुउ सनत्थ ॥ इम जंपी सक्कत्थव करेवि, तब देव देवी हरखे सुणेवि ॥६॥ गावे तब रंभा गीत गांन, सुरलोक हुउ मंगलनिधान ॥ नरक्षेत्रे आरज वंस गांम, जिनराज वधे सुर हर्ष धांम ॥ ॥७॥ पिता माता घरे उत्सव अलेख, जिनशासन मंगल अति विशेष॥ सुरपति देवादिक हरष संग, संयम अरथी जनने उमंग ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्ष साथ ॥ सुख पांम्या त्रिभुवन सर्व जीव, वधाइ थई अतीव ॥ ए ॥ (एसा पढ चैत्यवंदन करणा पीछे हाथमें साथिया करणा पीछे कलस पंचामृत का लेकर खमा रहे ॥) श्रीतीर्थपतिनो कलस मज्जन गाईये सुखकार, नरखित्त मंमण डुह विहंमण भविक मन आधार ॥ तिहां राव राणा हरख उत्सव थयो जग जयकार, दिसिकुमर अवधि विशेष जांणी लह्यो हरख अपार ॥ १ ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद, जिनजननी पासे आय पहुती गहकती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो सचिव धायो रम्म, अम्ह जम्म निम्मल करण कारण करिस सूईयकम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमिसोधन दीप दर्पण वाय वींझणधार, तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि मज्जणकार ॥ वर राखरी जिन पांण बांधी दिये इम आसीस, जुग कोम्किोमी चिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥ ढाल उलालानो ॥ जिन रयणीजो दस दिसि उज्जलता धरे, शुभ लगनेजो ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिन जनम्यांजी तिण अवसर माताघरे, तिण अवसरजी इंद्रासण पिण थरहरे॥ त्रूटक ॥ थरहरे आसन इंद्र

चिंते कोन अवसर ए बन्यो, जिन जन्म उच्छवकाल जांणी अतहि आणंद ऊपनो ॥ निज सिद्धि संपत हेतु जिनवर जांण जगते ऊ मह्यो, विकशंत वदन प्रमोद वधते देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ तव सुरपतजी घंटानाद कराव ए, सुरलोकेजी घोषणा एह दिराव ए॥ नरक्षेत्रेजी जिनवर जन्म हुउ अछे, तसु जगतेजी सुरप ति मंदिरगिर गछे ॥ त्रूट० ॥ गछे मंदिर शिखर ऊपर जुवन जीवन जिनतणो, जिन जन्मउछव करण कारण आवज्यो सब सुरगणो ॥ तुम शुद्ध समकित थास्ये निरमल देव देवी निहालतां, आपणा पा तिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम सांभ लजी सुरवर कोमि वहू मिली, जिन वंदनजी मंदिर गिर सांहमी चली ॥ सोहमपतिजी जिनजननीघर आविया, जिनमाताजी वंदी स्वामि वधाविया ॥ त्रू० ॥ वधाविया जिनवर हर्प बहुले धन्य हूं कृ तपुन्य ए, त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्य ए ॥ हे जगत जननी पूत्र तुमचो मेरु मज्जनवर करी, उछंग तुमचे वलिय थापिस आतमा पुन्ये जरी ॥ ३ ॥ ढाल ॥ सुरनायकजी जिन निज करकमले ठव्या, पांच रूपेजी अतिशय महिमायें स्तव्या ॥ नाटक विधिजी तव बत्तीस आगलि वहे, सुर कोमिजी जिन दरशणने ऊ महे ॥ त्रूट० ॥ सुर कोमकोमी नाचती वलि नाथ सचि गुण गा वती, अछपरा कोमी हाथ जोमी हाव जाव दिखावती ॥ जय जयो २ तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीस ए, अम त्रांण सरण आ धार जीवन एक तूं जगदीस ए ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुरगिरवरजी पां मुकवनमें चिहुं दिसे, गिर शिल परजी सिंहासण सासय वसे ॥ तिहां आणीजी शक्रे निज खोले ग्रह्या, चोसठेजी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ त्रूट० आविया सुरपति सर्व जगते कलश श्रेणि ब णाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ औषध सर्व वस्तु अणाव ए ॥ अच्चु

यपति तिहां हुकम कीनो देव कोमाकोमने, जिन मज्जनारथ नीर ल्यावो सवे सुर करजोमने ॥ ५ ॥ ढाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोमी हसी, उल्लसीने धसी खीरसागर दिसी ॥ पद्मद्रह आदि द्रह गंग पमुहा नई, तीर्थजल अमल लेवाभणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अम कलश कर सहस अठोत्तरा, छत्त चामर सिंहासण सुभतरा ॥ उपगरण पुप्फ चंगेरी पमुहा सवे, आगमे भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थजल भरिय करि कलश कर देवता, गावता भावता धर्म उन्नति रता ॥ तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम सगति शुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज निज आत्म आरोपता, कलश पाणी मिसे भक्तिजल सींचता ॥ मेरुसिहरोवरे सर्व आव्या वही, शक्र उत्संग जिन देख मन गहगही ॥ ४ ॥ गाथा ॥ इंहोदेवा अणाइकालो अदिठ्ठपूवो, तियलोयतारणो तियलोयबंधु ॥ मिछत्तमोहविद्धंसणो आणाइतिन्नविणासणो, देवाहिदेवोदिठ्वो २ हि यकामेहिं ॥ १ ॥ ढाल ॥ एम पभणंति वण भवण जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा ॥ केविकप्पठिया केविमित्ताणुगा, केवि वररमणे वयणेण अइउछगा ॥ १ ॥ वस्तु ॥ तत्थअच्चुय२ इंद आ देस, करजोमी सब देवगण लेइ कलस आदेस पामिय ॥ अद्भुत रूप सरूप जुय कवण एह पुछंति सामिय, इंद कहे जगतारणो पा रग अम्ह परमेस ॥ नायक दायक धर्मनो करिये तसु अभिषेस ॥ ॥ २ ॥ ढाल ॥ पूर्ण कलश शुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे न्हामे ॥ आतम निरमल भाव करंता, वधते सुभ परिणामे ॥ अ च्युतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकांत ॥ सामानिक इंद्राणी पमुहा, इम अभिषेक करंति ॥ १ ॥ पूर्णक० ॥ गाहा ॥ तवईसा णसुरिंदो, सक्कपभणेइकरिसुपसाउ ॥ तुम्हअंकेमहताउ, खिणमि त्तंअम्हअप्पेह ॥ १ ॥ तासकिंदोपभणइ, साहमीयवछलम्मिवहुला

हे ॥ आणाएवंणेणं गिएहह होऊकयत्थास्रो ॥ २ ॥ (कलस ढाले) सोहन सुरपति वृषन रूप करि, न्हवण करे प्रज्जु अंगे ॥ करिय विलेपन पुष्पमाल ठवि, वर आज्जरण अज्जंग ॥ १ ॥ तव सुरवर बहु जय२ रव कर, नच्चे धरि आणंद ॥ मोक्षमारग सारथपति पाम्यो, ज्जांज सु हिव ज्जवफंद ॥ २ ॥ कोम्म बत्तीस सोवन ऊवारी, वाजंते वर नाद, सुरपति संघ अमर श्रीप्रज्जुने, जननीने सुप्रसाद ॥ ३ ॥ आणी थापे एम पयंपे, अह्म निसतरिया आज ॥ पुत्र तुह्मारो धणी अह्मारो, तारण तरण जिहाज ॥ ४ ॥ मात जतन कर राखज्यो एहने, तुम सुत अह्म आधार ॥ सुरपति ज्जगते सहित नंदीसर, करे जिन ज्जक्ति ऊदार ॥ ५ ॥ नियश कप्प गया सब निर्जर, कहता प्रज्जु गुण सार ॥ दीक्षा केवलज्ञान कल्याणक, इह्रा चित्त मऊार ॥ ६ ॥ खरतर गच्च जिनआणा रंगी, राजसार ऊवझाय ॥ ज्ञान धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरुतणे सुपसाय ॥ ७ ॥ देवचंद जिन ज्जगते गायो, जनम महोत्सव छंद ॥ बोधबीज अंकूरो ऊलस्यो, संघ सकल आणंद ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इम पूजा ज्जगते करो, आतम हित काज ॥ तजिय विज्जाव निज ज्जावमा, रमता सिव राज ॥ इ० ॥ १ ॥ काल अनंते जे हूआ, होस्ये जेह जिणंद ॥ संपइ सीमंधर प्रज्जु, केवलनाण दिणंद ॥ इ० ॥ २ ॥ जन्ममहोत्सव इण परे, श्रावक रुचिवंत ॥ विरचे जिनप्रतिमातणो ॥ अनुमोदन खंत ॥ इ० ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना, करतां ज्जव पार ॥ जिनप्रतिमा जिनसारखी, कही सुत्र मऊार ॥ इ० ॥ ४ ॥ इतिस्नात्रपूजासं०

॥ अथ देवचंदजीकृत अष्टप्रकारी पूजा ॥

प्रथम जल पूजा ॥ विमल केवल ज्जासन ज्जास्करं, जगत जंतु महोदय कारणं ॥ जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचि मनाः स्नपयामि विसुद्धये ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा

मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे ॥ १ ॥ बीजी चंदन पूजा ॥ सकल मोहतमिश्र विनाशनं, परम शीतल जाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन चंदनै, सहज तत्व विकास कृतेर्च्चये: ॥ ॥ २॥ ॐ ह्रीं० केसरचंदनं यजामहे ॥ २ ॥ त्रीजी पुष्प पूजा ॥ विकच निर्मल शुद्ध मनोरमे, विशद चेतन जाव समुद्भवेः ॥ सुपरिणाम प्रसून घनैर्नवैः, परम तत्व मयं हियजाम्यहं ॥ ॐ ह्रीं प० पुष्पं यजामहे ॥ ३ ॥ चोथी धूप पूजा ॥ सकल कर्म महेंधन दाहनं, विमल संवर जावसु धूपनं ॥ अशुभ पुद्गल संग विवर्ज्जनं, जिनपते पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं प० धूपं यजामहे ॥ ४ ॥ पांचमी दीपक पूजा ॥ जविक निर्मल बोध विकासकं, जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं ॥ सुगुण राग विशुद्ध समन्वितं, दधतु जाव विकास कृतेर्जनाः ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं प० दीपं यजामहे ॥ ॥ ५ ॥ छठी अक्षत पूजा ॥ सकल मंगल केल निकेतनं, परम मंगल जाव मयं जिनं ॥ श्रयति जव्यजना इति दर्शयन्, दधति नाथ पुरोक्षत स्वस्तिकं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० ॥ अक्षतं यजामहे ॥ सातमी नैवद्य पूजा ॥ सकल पुद्गल संग विवर्जनं, सहज चेतन जाव विलासकं ॥ सरस जोजन नव्य निवेदनात्, परम निर्वृत्ति जाव महं स्पृहे ॥ ॐ ह्रीं प० नैवेद्यं यजामहे ॥ ७ ॥ आठमी फल पूजा ॥ कटुक कर्म विपाक विनाशनं, सरस पक्वफलव्रज ढोकनं ॥ विहत मोक्ष फलस्य प्रजो पुरः, कुरुत सिद्धफलाय महाजना ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं प० फलं यजामहे । (अर्घ) इति जिनवर वृंदं जक्तितः पूजयंति, सकल गुणनिधानं देवचंद्र स्तुवंति ॥ प्रतिदिवस मनंतं तत्व मुद्भावयंति, परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० अर्घं यजामहे ॥ (वस्त्र) शक्रो यथा जिनपतेः सुर शैल चूला, सिंहासनो परिमित स्नपनावसाने ॥ दध्यक्षते कुसुम चंदन गंध

धूपैः, कृत्वार्च्चनंतु दधाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प० वस्त्रं यजामहे ॥ इति अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ सतरह भेदी पूजाकी विधी ॥

प्रथम स्नात्र करावै पीछै अष्ट प्रकारी पूजा करै फेर रकेबीमें कुंकम तथा केसरका साथिया करै पीछे शुद्ध जलका कलस केसरमिश्रित रुपया १ कलसमें डालै मुखकोस बांध उत्तरासण कर तीन नवकार गुणै तीन वेर नमस्कार कर हाथ के धूप देकर रकेबी हाथमें धरै मन सुद्धकर खडा रहे ॥

॥ अथ साधुकीरती मुनी कृत सत्तरह भेदी पुजा प्रारंभ ॥

॥ दूहा ॥ भाव भलै भगवंतनी, पूजा सतर प्रकार ॥ परसिद्ध कीधी द्रोपदी, अंग छठै अधिकार ॥१॥ राग सरपदो ॥ ज्योति सकल जग जागती, हांरे अइयो जा० सरसति समरि सुचिंद ॥ सतर सुविध पूजातणी, पभणिसु परमानंद॥१॥ गाहा॥ न्हवण १ विलेवण २ वत्थयुगं ३, गंधारुहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५॥ मालारोहण ६ वन्नयं ७ चुन्न ८, पम्भागय ए आभरणे १० ॥ २ ॥ मालकलासुय वंसुघरं ११, पुप्फं पगरंच १२ अठमंगलयं १३॥ धूव उखेवो १४ गीययं १५, नट्टं १६ वज्जं १७ तहा भणियं ॥ ३ ॥ सतर सुविध पूजा पवरं, ज्ञाताअंग मझार ॥ द्रुपदसुता द्रोपदि परै, करियै विधि विस्तार ॥ ४ ॥

॥ अथ प्रथम न्हवण पूजा ॥ राग देसाख ॥

पूर्वमुख सावनं, करि दसन पावनं, अहृत धोती धरी उचित मानी रे, अइयोन० ॥ विहत मुखकोसके क्षीर गंधोदकै, सुभृत मणिकलस कर विविध वांनो ॥ अ० ॥ १ ॥ नमवि जिन पुंगवं, लोम हस्तेनवं, मार्जनं करिअवा वारिवारि ॥ अ० ॥ भणिय कुसमांजली, कलस विधि मन रली, नवति जिन इंद्र जिम तिम अगारी ॥ अ० ॥ २ ॥ दुहा ॥ परमानंद पीयूष रस, न्हवण मुगति सोपान ॥ धरमरूप तरु सींचवा, जलधर धार समान ॥ १ ॥ पद

सौ पूजा साचवै, श्रावक शुभ परिणाम ॥ शुचि पखाल जिनतनु तणे, करइ सुकृत हितकाम ॥ २ ॥ राग सारंग ॥ पूजा सतर प्रकारी, सुण जैनकी पू० ॥ परमानन्द तिण लह्योरी सुधारस, तपत बुझिय मेरे तनकी ॥ पू० ॥ १ ॥ प्रभूकुं विलोक नमि जतन प्रमारजित, करत पखाल सुचि धारविनको ॥ पू० ॥ न्हवण प्रथम निज वृजन पुलावत, पंककु वरष जिम घनकी ॥ पू० ॥ २ ॥ तरुणि तरणि भवसिंधु तरणकी, मंजरी संपद फल वर धनकी ॥ पू० ॥ शिवपुर पंथ दिखावन दोपी, धूमरि आपदवेल मरदनकी ॥ पू० ॥ ॥ ३ ॥ सकल कुशलरंग मिल्योरी सुमति संग, जागी सुदिसा शुभ मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ कहे साधूकीरति सौ रंगभर करतां, आस फली मेरे दिनकी ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति प्रथम न्हवण पूजा ॥ १ ॥

एसा पद पंचामृतसुं न्हवण कीज । डावे पांवके अंगुठे जलधार दीजे ॥

॥ अथ द्वितीय विलेपन पूजा ॥

(सुंदर अंगलूहणेसें अंग जिनबिंबका प्रमार्जकर केसर सुगंधद्रव्य मिश्रित लेके खडा रहै)

रामगिरीमें राग ॥ गात्र लूहे जिन मनरंगसुं रे देवा, सखर सु धूपित वाससुं ॥ वाससूं हांरे देवा वा०, गंध कसायसुं मेलियै ॥ गा० ॥ १ ॥ नंदन चंदन चंद मेलिये, हांरे देवा नं० ॥ मांहे मृगमद कुंकम भेलीयै, कर लीयै हांरे दे० क०, रयण पिंगणि कचोलिये ॥ गा० ॥ २ ॥ पग जानु कर खंधै सिरै रे देवा, भाल कंठ उर उदरंत रे ॥ डख हरै हांरे देवा सुख करै, तिलक नवे अंग कीजीयै ॥ गा० ॥ ३ ॥ दूजी पूजा अनुसरै, श्रावक दूजी पू० ॥ हरि विरचै जिम सुरगिरै, तिम करै हांरे देवा ति० जिण पर जनमन रंजियै ॥ ॥ गा० ॥ ४ ॥ राग ललितमें ॥ दूहा ॥ करहु विलेपन सुखसदन, श्रीजिनचंद शरीर ॥ तिलक नवे अंग पूजतां, लहे भवोदधि तीर ॥ १ ॥ मिटे ताप तसु देहको, परम शांतिरता संग ॥ चित्त खेद सब उपसमें, सुखमें समरसीरंग ॥ २ ॥ राग वेलाउल ॥ विलेपन कीजै

जिनवर अंगै, जिनवर अंग सुगंधै ॥ वि० ॥ कुंकुम चंदन मृगमद यक्ष कर्दम, अगर मिश्रित मनरंगै ॥ वि० ॥ १ ॥ क्रम जानु कर खंधै सिर भाल कंठ, उर उदरन्तर संगैं ॥ विलुपति अघ मेरो कर त विलेपन, तपति वुझित जिम अंगै ॥ वि० ॥ २ ॥ नव अंग नव २ तिलक करतही, मिलत नवे निध चंगे ॥ कहै साधु तन शुचि करो सुललित पूजा, जैसे गंग तरंगै ॥ वि० ॥ ३ ॥ इति द्वितिय विलेपन पूजा ॥ २ ॥ एसा कह विलेपन कीजे, नव अंग पूजिये ॥

॥ अथ तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥

॥ अत्यंत नरम वस्त्र केसरका साथिया कर प्रभू आगे ले खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वसन युगल उज्वल विमल, आरोपे जिन अंग ॥ लाभ ज्ञान दर्शन लहे, पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥ राग गोडी ॥ कमल कोमल घन चंदन चरचित, सुगंध गंधै अधिवासिया ए, हांरे अऽयो० ॥ कनक मंडित हय लाल पल्लव शुचि, वसन युग कंति अधिवासिया ए ॥ हांरे अ० ॥ १ ॥ जिनप उत्तम अंगै सुविधि शक्रो यथा, करिय पहरावणी ढोइयै ए ॥ हां० ॥ पापलूहण अंगलूहणो देवनें, वस्त्रयुग पूंज मल धोइयै ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग वैराडी ॥ देवदुष्ययुग पूजा वन्यो हे जगतगुरु, देवदुष्य हर अब इतनो मांगुं ॥ तूंही हे सवहि हितु तूंही हैं मुगति दाता, तिण नमि २ प्रभुजी कै चरणे लागूं ॥ दे० ॥ १ ॥ कहे साधू तीजी पूजा केवल दंसण नाण, देवदुष्य मिस देहु उत्तम वागूं ॥ श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीतां, सब राग दुख संसय घुरम भागूं ॥ दे० ॥ २ ॥ इति तृतिय वस्त्रयुगल पूजा ॥ (एसा कह प्रभुजीकूं वस्त्र चढावे ॥)

॥ अथ चतुर्थी सुगंधचूर्णवासक्षेपपूजा ॥

॥ गोडी रागमें दूहा ॥ पूज चतुर्थी इण परे, सुमति वधारण वास ॥ कुमति कुगति दूरे हरै, दहै मोहदल पास ॥ १ ॥ राग सारंग ॥ हां हो रे देवा बावनचंदन घस कुमकुमा, चुरण विधि विरचै

वासु ए ॥ हा हो रे देवा कुसम चूरण चंदन मृगमदा, कंकोलतणो अधिवासू ए ॥ हा० ॥ १ ॥ वास दसोदिसि वासतें, पूजै जिन अंग जवगू ए ॥ हा० लाठि जवन अधिवासिया, अनुगामिक सरम अर्ज गू ए ॥ २ ॥ इति ॥ राग पूर्वीगौरमी ॥ मेरे प्रजुजीको पूजा आनंदमेलै, पू० ॥ वासजवन मोह्यो सवलो ए, संपदा जेलै ॥ पू० ॥ ॥ १ ॥ सत्तर प्रकारी पूजा, विजय देवा तत्ताथेइ ॥ अप्रमित्तगुण तोरा, चरण सेवैकि ॥ पू० ॥ २ ॥ कुंकुम चंदन वासै, पूजियै जिन राज तत्ताथेइ, चतुर गति डुख गोरी, चतुर्थी धनकि ॥ ३ ॥ पू० ॥ इति चतुर्थी वासक्षेप पूजा ॥ (एसा कह चूर्णवास चढावे)

॥ अथ पांचमी पुष्पारोहण पूजा ॥ पंचरंगे पुष्प उत्तम ले के खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ मन विकसै तिम विकसता, पुहप अनेक प्रकार ॥ प्रजु पूजा ए पंचमी, पंचमि गति दातार ॥ १ ॥ राग कामोद ॥ चंपक केतकी मालती ए, अ० ॥ कुंद किरण मचकुंद ॥ सोवन जाई जूहिका, वजलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण जवरि धरै ए, अ० ॥ मुकुलित कुशम अनेक ॥ सिवरमणीसें वर वरे, विधि जिन पूज विवेक ॥ २ ॥ वि० ॥ इति ॥ राग कानमो ॥ सोहे री माई वरणें, मन मोहे री माइ वरणें ॥ अहो वरणें, विविध कुसम जिनचरणै ॥ सो० ॥ विकसी हसीय जंपै साहिबकुं, राख प्रजु हम सरणै ॥ सो० ॥ १ ॥ पांचमी पूजा कुशम मुकलितकी, कु० ॥ पंच विपै हां० पं० डुःख हरणै ॥ सो० ॥ कहे साधुकीरति जगति जगवंतकी, जविक नरां हांरे ज० सुख करणें ॥ सो० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ छट्ठी पुष्पमालारोहण पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छठो पूजाए वती, महा सुरजि पुष्पमाल ॥ गुण गूंथी आपे गलै, जेम टलै डुख जाल ॥ १ ॥ राग रामगिरी गुजरी ॥ नाग पुन्नाग मंदार नवमालिका, मालिकासोग पारिध कली

ए ॥ भला पा० ॥ मरुक दमणक वकुल तिलक वासंतिका, लाल गुलाल पाडल भिली ए ॥ भलां पा० ॥ १ ॥ जासु मणि मोगरा वेउला मालती, पंचवरणे गूंथी मालती ए ॥ भलां गुं० ॥ दे माल जिनकंठ पीठै ठवी लहलहै, जाणि संताप सब पालनी ए ॥ भलां स०॥२॥इति॥ राग आसाउरी ॥देखी दामा कंठ जिन अधिक एधतिनंदै, चकोरकूं देखि देखि जिम चंदै ॥ दे० ॥ १ ॥ पंच विधि वरण रची कुसमांकी, जैसी रयणा हे जै० वलि सुदमंदै ॥ दे० ॥ ॥ २ ॥ छठी रे तोमरपूजा सब मार धूजै ॥ सब अरियण हांरे स० होइ तिम ढंदै ॥ दे० ॥ ३ ॥ कहै साधूकीरत सकल आस्था सुख, भविक भगत हांरे भ० जे जिन वंदै ॥ दे० ॥ ४ ॥ इति छठी तोमर पूजा ॥ ६ ॥ (एसा कह फूलमाला प्रभुकूं पहिरावे ॥)

॥ अथ सातमी अंगीरचन पूजा ॥ पांच रंगे फूल केसरसें अंगी रचै ॥

॥ दूहा ॥ केतकी चंपक केवडा, सोभै तेम सुगात ॥ चाढो जिम चढतां हुवै, सातमीयै सुख सात ॥ १ ॥ राग केदारो गौडी॥ कुंकुम चरचित विविध पंच वरणक कुसमसुं ए, हांरे अ० ॥ कुंद गुलावसुं चंपको दमणको जाससुं ए ॥ १ ॥ सातमी पूजामें अंगी अलंकीये, अंग आलंक मिस माननी मुगति आलिंगियै ए ॥ २ ॥ ॥ इति ॥ राग भैरवी ॥ पंचवरणी अंगी रची कुशम जाती, पं०॥ कुंद मचकुंद गुलाव सिरोमणि, कर करणी सोवन जाती ॥ पं० ॥ ॥ १ ॥ दमणक मरुक पाडल अरविंदो, अंस जुई वेउलवाती ॥ पारधि चरण कलार मंदारो, विण पटकूल वनी भांती ॥ पं० ॥ ॥ २ ॥ सुरनर किन्नर रमण गाती, भैरवी कुगति भत तिदाती ॥ पं० ॥ ३ ॥ इति सातमी अंगीरचन पूजा ॥

॥ अथ आठमी गंधवटी पूजा ॥ अगरबत्ती अथवा धूप लेकर खड़ा रहे ॥

॥ दूहा ॥ अगर सेल्हारस सार, सुमती पूजा आठमी ॥

गंधवटी घनसार, लावे जिन तनु भावसें ॥ १ ॥ राग सोरठ ॥ कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा, पावन घस घनसारो जी ॥ सुरभि सिखर मृग नाभिनो जी देवा, चुन्नरोहण अधिकारो जी ॥ ॥ १ ॥ वस्तु सुगंध जब मोरीयो जी देवा, अशुभ्र करम चूरीजे जी ॥ अंगण सुरतरु मोरीयो जी देवा, तब कुमतीजन खीजै जी ॥ तब सुमतीजन रीझै जी ॥ २ ॥ राग सामेरी ॥ पूजो री माई जिनवर अंग सुगंधै, जि० पू० ॥ गंधवटी घनसार ऊदारै, गोत्र तीर्थंकर वांधइ ॥ भलाश गो० पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर से-ल्हारस, लावै जिन तनु रागै ॥ धार कपूर भाव घन वरषत, सामेरी मति जागै ॥ भलां सा० पू० ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ नवमी ध्वज पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोहन ध्वज धर मस्तकै, सूहव गीत समूल ॥ दीजै तीन प्रदक्षिणा, परसिद्ध नवमी पूज ॥ १ ॥ राग मेघगौड़ी ॥ वस्तु॥ सहसजोयण२, हेममय दंड ॥ युतपताक पंचे वरण, घुमघुमत घुग्घरीय वाजै ॥ मृडु समीर लहकै गयण, ल० ॥ जाण कुमतिद ल सयल भाजै ॥ सुरपति जिम विरचै धजा ए, हां ए वि० ॥ न वमी पूज सुरंग ॥ न० ॥ तिण पर श्रावक धज वदन, ति० ॥ आपै दांन अभंग ॥ आ० ॥ १ ॥ राग नट्टनारायण ॥ जिनराज को ध्वज मोहन, ध्वज मोहना रे ध्वज मोहना ॥ जि० ॥ मोहन सुगुरु अधिवासीयो, कर पंच सबद त्रि प्रदक्षणा, क० ॥ सधववधू सिर सोहना ॥ २ ॥ जि० ॥ भांति वसन पंचवरण वन्यो री, विधि कर ध्वजको रोहणा ॥ साधू भणात नवमी पूजा नव, पाप नियाणा खोहणा ॥ जि० ॥ २ ॥ इति नवमी पूजा ॥

(॥ ए कही ध्वजा चढाईजे ॥ पहली वाजित्र वाजतां सधवस्त्री चांदीके थालमें धरकर गीत ग्यान संयुक्त तीन प्रदक्षणा देकर प्रभु सन्मुख गुंहली कर धजा पर गुरु पास वासक्षेप करा के प्रभु सन्मुख ध्वजा विस्तारें ॥)

॥ अथ दसमी आभरण पूजा ॥

(एक रुपया अथवा मुगटादिक आभरण ले के खडा रहे ॥)

॥ दूहा राग केदारेमै ॥ दसमो पूजा आभरण, रचना यथा अनेक ॥ सुरपति जिम अंगे रचे, तिम श्रावक सुविवेक ॥ १ ॥ सिर सोहे जिनवरतणै, रयण मुगट झलकंत ॥ तिलक भाल अंगद भुजा, श्रवण कुंडल अति भंति ॥ २ ॥ राग अधभास गुंडमल्हार ॥ आसावरी ॥ पाच पीरोजा नीलू लसणिया, मोती माणेक लाल रसणिया, हीरा सोहे रे ॥ धूनी चनी मुल कर केतना, जातिरूप सुभग अंक अंजना, मनमोहे रे ॥ १ ॥ मौलि मुगट रयणै जड्यो, कांने कुंडल हांरे अति जुगतै जुड्यो उर हारू रे, मन वारू रे ॥ भाल तिलक बाहे अंगदा, आभरण दशमी पूजा मुदा सुखकारू रे, डुखहारू रे ॥ २ ॥ राग केदारो ॥ प्रभु सिर सोहै मुगट मणि रयण जड्यो, रय० ॥ अंगद बाहु तिलक भालस्थल, यहुनीको कवण घड्यो ॥ ॥ प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरुण मंडल जीपे, सुरतरुसैं अलंकरयो ॥ डुखकेदार चमर सिंहासन, छत्र सिर उवरि धरयो, अलंकृत उचित वरयो ॥ प्र० ॥ २ ॥ इति ॥ रोक द्रव्याभरणादि चढावे ॥

॥ अथ इग्यारमी फूलघर पूजा ॥

॥ दूहा ॥ फूलघरो अति सोभतो, फूंदे लहके फूल ॥ महके परिमल फल महा, इग्यारमो पूज अमूल ॥ १ ॥ राग रामगिरी ॥ कोज अंकोल राय वेलि नवमालिका, कुंद मचकुंद वर विच कलू ए ॥ अईयो० तिलक दमणकदलं मोगरा परिमलं, कोमला पाडिल पाडलू ए ॥ हां० अ० ॥ प्रमुख कुसमै रचै त्रिभुवनकूं रुचै, कुश मगेहे विच तोरणूं ए ॥ हांरे अ० ॥ गुच्छ चंद्रोदयं झुंवकाभनयं, जालिका गोख चित्तचोरणुं ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग रामगिरी ॥ मेरो मन मोह्यो माई री फूलघर आणंद झिलै, फू० ॥ असत उसत दांम वघरी मनोहर, देखत तवही सब डुरित खिलै ॥ फू० ॥ १ ॥

कुसम मंमप थंन गुच्छ चंड्रोदय, कोरणी चारु विनाण सकै ॥ इग्यारमी पूजा वणी हे रामगिरी, विबुध विमान जैसें तिपुरि न्नजै ॥ ॥ ३॥फू०मे०॥ इति इग्यारमी फूलघर पूजा ॥ (फूलघर चढाईजै ॥)

॥ अथ बारमी पुष्पवर्षा पूजा ॥ पंचरंगे फूल अथवा गुलाबजल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ वरषै बारमी पूजमें, कुसम बादलिया फूल ॥ हरण ताप दुख लोकको, जानु समा बहुमूल ॥ १ ॥ राग न्नीम मल्हार कम्खेकी जाति ॥ मेघ वरसै न्नरी पुष्फ बादल करी, जानु परिमाण कर कुसम पगरं ॥ पंचवरणें वण्यो विकच अनुक्रम चिण्यो, अधोवृंते नही पीम पसरं ॥ मे० ॥ १ ॥ वास मदके मिलै न्नमर न्नमरी न्निलै, सरस रसरंग तिण दुख निवारी ॥ जिणप आगे करै सुरप जिम सुख वरै, बारमी पूज तिण पर अगारी ॥ मे० ॥ २ ॥ राग न्नीममल्हार ॥ पुष्फ बादलीया वरसै सुसमां, अहो० ॥ योजन अशुचि हर वरस गंधोदक, मनुहर जान समां ॥ पु० ॥ १ ॥ गमन आगमनकी पीर नही तसु, इह जिनको अतिसय सुगुणें ॥ गुंजत२ मधुकर इम पन्नणै, गुं० ॥ मधुर वचन जिनगुण थुणइ ॥ पु० ॥ २ ॥ कुसमसुपरि सेवा जो करइ, तसु पीम नही सुमणें, पु० ॥ समवसरण पंच वरण अधोवृंत, विबुध रचै सुमना सुसमा ॥ पु० ॥ ॥ ३ ॥ बारमी पूज न्नविक तिम करै, कुसम विकस हस उचरै ॥ तसु न्नीमबंधन अधरा हुवै, जे कराहिंजे जिन नमें ॥ पु० ॥ ४ ॥ इति बारमी पुष्फवृष्टि पूजा ॥

॥ अथ तेरमी अष्टमंगलीक पूजा ॥ रूपया चावल लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ तेरमी पूजा अवसरै, मंगल अष्ट विधान ॥ युवति रचै न्नमते सही, परमानंद निधान ॥ १ ॥ राग वसंत ॥ अतुल विमल मिल्या, अखंम गुणै न्निल्या, साल रजततणा तंदुला ए ॥ श्लख्ण समाजक विध पंच वरणाक, चंद्रकिरण जैसा ऊजला ए ॥ १ ॥ अ० ॥ मेल मंगल लिखै सयल मंगल अखै, जिनप आगे सुथानक

धैर ए ॥ तेरमी पूजा विधि तेरमी मन मेरे, अष्टमंगल अष्टमिड करे ए ॥ अ० ॥ २ ॥ राग कल्याण ॥ हां हो पूजा वणी ते रसमें, रसमें ३ हा हो ते० ॥ दर्प्पण भद्रासन नंद्यावर्त्त पुर्णकुंभ, मच्छयुग श्रीवच्छ तसुमें ॥ वर्द्धमांन स्वस्तिक पूज मंगलकी, आनंद कल्याण सुखरसमें ॥ १ ॥ पू० ॥ इति तेरमी पूजा ॥

॥ अथ चवदमी धूप पूजा धूप लेके खडा रहे ॥

॥ दूहा ॥ गंधवटी मृगमद अगर, सेल्हारस घनसार ॥ कर प्रभु आगल धूपणा, चवदमी अरचा चार ॥ १ ॥ राग वेलाउल ॥ कृष्णागर कपूर चूर, सोगंध पंचेपूर ॥ कुदरुक्क सेल्हारस सार, गंध वटी घनसार ॥ १ ॥ गंधवटी घनसार चंदन, मृगमदारस भेलिये, श्रीवास धूप दसांग अंबर, सुरभि बहु द्रव्य मेलियै ॥ वेरलिय दंड कनक मंडित धूपधांणो कर धरै, भववृत्ति धूप करंति भोगं रोग साग अशुभ हरै ॥ २ ॥ राग मालवी गोडी ॥ सब अरति मथन मुदार धूपं, करति गंध रसाल रे, देवाक० ॥ घामधूमावलिय धूसर, कलुष पातक गाल रे, देवा क० ॥ १ ॥ ऊर्ध्वगत सूचंत भविकुं, म ध्यमधे करनाल रे ॥ चवदमी वामांग पूजा, दीयै रयण विसाल रे॥ आरती मंगल माल रे, मालवीगोडी ताल रे ॥ स० ॥ २ ॥ इति चवदमी धूप पूजा ॥ (एसा पढके धूप खेवै ॥

॥ अथ पनरमी गीतज्ञान पूजा ॥

॥ दूहा ॥ कंठ भलै आलापकर, गावो जिनगुन गीत ॥ भावो अधकी भावना, पनरमी पूजा मीत ॥ १ ॥ श्रीरागमें आर्या ॥ यद्वदनंत केवलमनंत, फलमस्ति जैनगुण गानं ॥ गुण वर्ण तान वाद्यै, मात्रा भापालयैर्युक्तं ॥ १ ॥ सप्त स्वर संगीतैः, स्थानैर्जयतादि ताल करणैश्च, चंचुर चारीचारी गीतं गानं सुधीर्युपं ॥ २ ॥ राग श्रीराग ॥ जिनगुण गान श्रुत अमृतं, तार मंद्रादि अ नाहत तानं, केवल जिम तिम फल अमृतं ॥ जि० ॥ १ ॥ विबुध

कुमार कुमरी आलापै, मुरज उपंग नाद जनितं ॥ जि० ॥ पाठ प्र बंध धूयो प्रतिमानं, आयति वंद सुरति सुमतं ॥ जि० ॥ २ ॥ सब्द समान रुच्यो त्रिभुवनकुं. सुरनर गावे जिन चरितं ॥ सप्त स्वर मोन शिव श्रीगीतं, पनरमी पूज हरे डुरितं रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पू ॥

॥ अथ सोलमी नाटिक पूजा ॥ (कुमार कुमरी नाटिक करै ॥)

॥ दूहा ॥ करजोडी नाटिक करै, सज सुंदर सिणगार ॥ भवनाटिक ते नहि भमै, सोलमी पूजा सार ॥ १ ॥ राग शुद्धनट्ट काव्यं ॥ भावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चंदानना, सपिम्मा रम रूव वेस वयसो मत्तेभ कुंभत्थणा ॥ लावस्स सगुणा पिकस्स रवई रागाईआ लावणा, कुम्मारी कुमरावी जैन पुरउ नच्चंति सिं गारणा ॥ १ ॥ गद्यं ॥ तएणंते अठ्ठसयं कुमारिकुमरीउ सूरियाभे णंदेवेणं संदिठ्ठा रंगमंडवेपविठ्ठा जिणनमंता गायंता वायंता नच्चंतित्ति ॥ २ ॥ राग नट्ट त्रिगुण ॥ नाचंती कुमार कुमरी, डागडदि तत्ताथेइ ॥ अ० ॥ डागडदि२क थोंगि२न, मुखेतत्ताथेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ वे णु वीणा मुरज बाजे, सोलह्री सिणगार साजे ॥ तनन्ननन्नेईय ॥ अईयो० ॥ प्रणण प्रणण प्रणणण घुग्घरु घमके, रणससससेईय ॥ ॥ अइयो० ॥ २ ॥ ना० ॥ कसंती कंचुकि तरुणी, मंजरी झंकार क रणी ॥ सोहंती कुमरीय ॥ अइयो० हस्तकं हावादि भावे, ददन्ती भमरीय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ३ ॥ सोलमो नाटिकतणी, सूरीयाभे रावन्न कीनी ॥ सुगंध तत्तत्तेईय ॥ अ० ॥ जिनप भगते भविक लाणा, आणंद तत्तत्थेईय ॥ अ० ॥ ना० ॥ ४ ॥ इति सोलमी पूजा ॥

॥ अथ सतरमी वाजित्र पूजा ॥

॥ दूहा ॥ ततघन सुखिरै आनधे, वाजित्र चौविध वाय ॥ भगत भली भगवंतनी, सतरमियै सुखदाय ॥ १ ॥ गाहा ॥ सुर मद्दल कंसालो, मद्दुयर मद्दल सुवज्झा पणवो ॥ सुरनारि नंद तूरो, पम्मणइ तूं नंद जिणनादं ॥ २ ॥ राग मधुमाधवी ॥ तूं नन्दिअ

न्द बोलत नंदी, चरणकमल जसु जगत्रय वंदी॥ तूं० ॥ ज्ञान निर्म ल वावन मुखवेदी, तिबल बोलै रंग अतहि आन्दी ॥ तूं० ॥ १ ॥ न्नेरी गयण वाजंती कुमति ताजंती, सेवै जैन जैणावंती ॥ जैन शासन जयवंत नंदंती, उदयसिंघ प.रपरिय वदंती ॥ तूं० ॥ २ ॥ सेव न्नविक मधुमाधव फेरी, न्नवनी फेरी नप्पन्नणंती ॥ कहे साधु सतरमी पूज वाजित्र सब, मंगल मधुर धुनि कर कहंती ॥ तूं० ॥ ३ ॥ इति सतरमी पूजा ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥ राग धन्यासिरी ॥

॥ न्नवि तूं न्नण गुण जिनके सव दिन, तेज तरण मुखराजै ॥ ते० ॥ कवित शतक आठ थुणत शक्रस्तव, थुय रंगे हम गाजै ॥ न्नवि० ॥ १ ॥ अणहलपुर शांति शिवसुख दाइ, नवनिधि मि द्ध आवाजे ॥ सतर सुपूज सुविध श्रावककी, न्नणी में न्नगति हि त काजै ॥ न्नवि० ॥ २ ॥ श्रीजिनचंद सूरि खरतर पति, धरम वचन तसु राजै ॥ संवत सोल अढार श्रावण धुर, पंचमि दिवस समाजै ॥ न्न० ॥ ३ ॥ दयाकलश गुरु अमर माणिक्यवर, तासु पसायै सुविध हुय गाजै, कहै साधुकीरत करत जिन संस्तव, सत्र लीला सुख साजै ॥ न्न० ॥ ४ ॥ इति सतर न्नेदी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ आरती करण विधि तथा आरती ॥

॥ पूजा भयं पीछे वस्त्र पहरकर उत्तरासण करके तिलक करके रकेबीमें स्वस्तिक चावल सुपारी धरकर दक्षिणावर्त्तसें आरती करे ॥

॥ अथ आरती लि० ॥ जै जै आरति शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं वलिहारी ॥ जै जै० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजी केनंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जै० ॥ २ ॥ चालीस धनुष सोवनमें काया, मृग लंछन प्रन्नु चरण सुहाया ॥ जै० ॥ ३ ॥ च क्रवर्त्ति प्रन्नु पंचम सोहे, सोलम जिनवर जग सहु मोहे ॥ जै० ॥ ४ ॥ मंगल आरती न्नोरहिं कीजे, जन्मश् को लाहो लीजे ॥

जै० ॥ ५ ॥ करजोमी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमरपद पावै ॥ जै० ॥ ६ ॥ इति श्रीआरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदकी पूजामें जो अवस्य चीज चहिये उसकी याददास्ती ॥

॥ पंचामृत दूध दही घृत मिश्री जल केसर चंदन कपूर कस्तूरी कुंकुं मोली छूटेफूल फूलोकीमाला फूलोकाचंद्रुवा धूप चावल गहूं चणोकीदाल मूंग उडद नव प्रकारका नैवद्य नवतरेका फल नव प्रकारकी पक्कान्न खजली मिश्री पतासा ओला वगैरे अंगलूहणो के वास्ते स्वेतवस्त्र वासक्षेप गुलावजल अत्तर नारेल इग्यारे नवनालीककलस ॥ ९ रकेबी तसला आरसी मंगलदीपक घी अंगीसमोसरण थाप नामें रोकनाणा रु१) ज्ञानपूजा नारेल समेत ॥ विशेष विधि गुरुमुखसें जाणनी ॥

॥ अथ सिद्धचक्रजीकी वडी पूजा लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ परम मंत्र प्रणमी करी, तास धरी उर ध्यांन ॥ अरिहंतपद पूजा करो, निज२ शक्ति प्रमांण ॥१॥ काव्य ॥ उप्पन्न सन्नाण महोमयाणं, सप्पाडिहेरा सणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणंदिय सज्जणाणं, नमो२ होउ सयाजिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंत संत प्रमोद प्रदानं, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुम्मर्म चकचूर जेणें, भला भव्य नवपद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीनै, दिये देसना भव्यने हित धरीनै ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेसै नरेसै स्तव्या ब्रह्मपूता ॥ ४ ॥ कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा, भवोपग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगतपंचकल्याणके सुख पांमै, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकांमे ॥ ५ ॥ ढाल ॥ तीरथपति अरिहा नमुं, धरम धुरंधर धीरो जी ॥ देसना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरो जी ॥ ती० ॥ उल्लालो ॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन सर्व भाव प्रकासता, निज शुद्ध श्रद्धा आतम भावे चरण थिरता वास

ता ॥ जिन नांमकर्म प्रभाव अतिसय प्रातिहारज सोभता, जगजंतु करुणावंत भगवंत भविकजनने थोभता ॥ ६ ॥ ढाल ॥ श्री सीमंधर साहिब आगे ॥ ए देसी ॥ तीजे भव वर थानक तप कर, जिन बांध्युं जिननाम ॥ चउसठ इंद्रे पूजित जे जिन, कीजे तास प्रणाम रे भविका सिद्धचक्र पद वंदो रे ॥ भ० ॥ जिम चिरकालै नंदो रे ॥ भ० ॥ उपशमरसनो कंदो रे ॥ भ० ॥ रत्नत्रयीनो वृंदो रे ॥ भ० ॥ सेवै सुरनर इंदो रे ॥ भ० सि० ॥ ७ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दिवसे, नरके पिण उजवालूं ॥ सकल अधिक गुण अतिशयधारी, ते जिन नमि अघ टालूं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८ ॥ जे तिहुं नाण सम्मग्ग ऊपन्ना, भोग करम खिण जांणी ॥ लेइ दीक्षा सिक्षा दिये जगने, ते नमिये जिन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ९ ॥ महागोप महामाहण कहिये, निर्यामिक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजै, ते जिन नमिये उच्छाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ॥ १० ॥ आठ प्रातीहारज जसु छाजे, पैंत्रीस गुणयुत वांणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमियें उच्छाह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पर्यायै रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थायै रे ॥ १२ ॥ वीर जिणेसर उपदिसै, सांभलज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यांने आतमा, ऋद्धि मिले सब आई रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ परमात्मने, अनंतानंत ज्ञान शक्तये ॥ जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमत्सिद्धचक्राय अष्टद्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति प्रथम अरिहंतपद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ दूजी पूजा सिद्धकी, कीजे दिल खुसियाल ॥ अशुभ करम दूरे टले, फलै मनोरथ माल ॥ १ ॥ काव्य ॥ सिद्धाणमाणंद रमालयाणं, नमोऽणंत चउक्कयाणं ॥ सम्मग्ग कम्मक्खयका

रगाणं, जम्मंजरा दुरक निवारगाणं ॥ १४ ॥ करी आठ कर्म खय पार पांम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या ॥ निरावरण जे आत्मरूपें प्रसिद्धा, थया पार पांमी सदा सिद्धबुद्धा॥ १५ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेसा, रह्याज्ञानमयजातिवर्णादिलेसा॥सदानंत सौख्याश्रिताज्योतिरूपा, अनावाधअपुनर्भवादिस्वरूपा ॥ १६ ॥ ॥ चाल ॥ सकल कर्ममलक्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्यावाध प्रभुतामई, आतम संपत भूपो जी ॥ उल्लालो ॥ जे भूप आतम सहज संपति, शक्ति व्यक्तिपणें करी ॥ स्वद्रव्यक्षेत्र स्वकालभावै, गुण अनंता आदरी ॥ स्वस्वभाव गुणपर्याय परणति, सिद्धसाधन परभणी, मुनिराज मानसहंस समवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥ १७ ॥ ढाल ॥ समयपएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विसेस ॥ अवगाहन लही जे शिव पुहता, सिद्ध नमो ते असेस रे ॥ १८ ॥ भ० ॥ पूरव प्रयोगने गति परणामे, बंधन छेद असंग ॥ समय एक ऊरधगति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो रंग रे ॥ भ० ॥ ॥ १९ ॥ सि० ॥ निरमल सिद्धसिलाने ऊपर, जोयण एक लोकंत ॥ सादि अनंत तिहां थिति जेहनी, ते सिद्ध प्रणमो संत रे ॥ ॥२०॥भ०॥सि०॥ जाणै पिण न सकै कही पुर गुण, प्राकृत तिम गुण जास ॥ उपमा विण नांणी भवमांहे, ते सिद्ध दिउ उल्लास रे ॥ भ० ॥ २० ॥ सि० ॥ ज्योतिसुं ज्योति मिली जसु अनुपम, विरमी सकल उपाधि ॥ आतमराम रमापति समरो, ते सिद्ध सहज समाधि रे ॥ भ० ॥२१ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ रूपातीत स्वभाव जे, केवलदंसणनाणी रे ॥ ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणी रे ॥ वी० ॥ २२ ॥ ॐ॥ ह्रीँ० इति श्रीसिद्धपद पूजा ॥

॥ अथ तृतिय आचार्यपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ छत्र आचारज पदतणी, पूजा करो विशेष ॥ मो

हतिमर दूरै हरै, सूझै ज्ञाव असेष ॥ १ ॥ काव्य॥ सूरीणदूरीकय कुग्गहाणं, नमोऽस्तुसिमप्पहाणं ॥ सद्देसणा दाणसमायराणं, अखंरुबत्तीसगुणायराणं ॥ नमूं सूरिराजा सदा तत्वताजा, जिनेंद्राग में प्रौढ साम्राज्यन्नाजा॥पट्वर्गवार्गित गुणै शोन्नमाना,पंचाचारनें पालवे सावधाना॥२॥ न्नविप्राणिनें देशना देशकालै,सदाअप्रमत्ता यथा सूत्र आलै ॥ जिके सासनाधार दिग्दंतकल्पा, जगत्ते चिरंजीवज्यो शुन्जल्पा ॥ ३ ॥ ढाल ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुणबत्तीसे धामो जी ॥ चिदानंदरसस्वादता, परन्नावे निक्कामो जी नल्लालो ॥ निक्काम निरमल शुद्ध चिदघन, साध्य निज निरधारथी ॥ वर ज्ञान दरसन चरण बीरज, साधना व्यापारथी ॥ न्नविजीवबोधक तत्वसोधक, सयलगुण संपतिधरा ॥ संबर समाधी गत ऊपाधी, डुविधत पगुण आदरा ॥ २५ ॥ ढाल ॥ पांच आचार जे सूधा पालै, मारग न्नाखै साचौ ॥ ते आचारज नमिये तेहसुं, प्रेम करीने याचो रे ॥ न्न०॥ २६ ॥ सि०॥ वर बत्तीसगुणैंकरि सोन्नै, युगप्रधान जगमोहै ॥ जगमोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमूं ते जोहे रे ॥ न्न० ॥ २७ ॥ सि० ॥ नित अप्रमत्त धरम नवएसे, नहि विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमियै, अकलुस अमल अमाय रे न्न० ॥ २८ ॥ सि० ॥ जे दिये सारण वारण चोयण, पमिचोयण वलि जनने ॥ पटधारी गन्नथुंन्न आचारज, ते मान्या मुनिमनने रे ॥ न्न० ॥ २९ ॥ सि०॥ अत्थमिये जिन सूरज केवल, वंदीजे जगदीवो ॥ न्नुवन पदारथ प्रगटनपटुते, आचारज चिरंजीवो रे ॥न्न० ॥ ३० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ध्याता आचारज न्नला, महामंत्र शुन्न ध्यानी रे ॥ पंचप्रस्थाने आतमा, आचारज हुय प्राणी रे ॥ वी० ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ३

॥ अथ चोथी पाठकपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ गुण अनेक जग जेहना, सुंदर शोन्नित गात्र ॥

उवझायापद अरचियै, अनुन्नवरसनो पात्र ॥ १ ॥ काव्य ॥ सुतत्थ वित्थारणतप्पराणं, नमोऽवायगकुंजराणं ॥ गणस्ससंधारणसायराणं, सव्वप्पणावज्जियमच्छराणं ॥ १ ॥ नहीं सूरि पिण सूरिगुणने सुहाया, नमूं वाचकात्यक्त मदमोहमाया॥ वलि द्वादशांगादि सूत्रार्थदानें, जिके सावधानें निरुद्धाभिधानें ॥ २ ॥ धरे पंचनेवर्गवर्गितगुणौघा, प्रवादिद्विपोच्छेदनेतुल्यसिंघा ॥ गुणीगच्छसंधारणेस्थंन्नपूता, उपाध्यायतेवंदियेचित्प्रन्नूता ॥ ३ ॥ ढाल ॥ खंतिजुआ मुत्तीजुआ, अज्जव मद्दवजुत्ताजी॥ सच्चंसोयंआकिंचणा, तवसंयमगुणरत्ताजी ॥ भ्रल्लालो ॥ जे रम्या ब्रह्मसुगुत्तगुत्ता, सुमति सुमता शुन्नधरा॥ स्याद्वादवादे तत्वसाधक, आतमपरविन्नंजनकरा ॥ न्नवन्नीरुसाधनधीरसासन, वहनधोरीमुनिवरा ॥ सिद्धांतवायनदांनसमरथ, नमोपाठकपदधरा ॥ ३३ ॥ ढाल ॥ द्वादशअंगसिज्झाय करे जे, पारगधारग तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवझाय उल्लास रे ॥ न्न० ॥३४॥ सि० ॥ अर्थसूत्रने दांनविन्नागे, आचारज उवझाय ॥ न्नवत्रिणहे जे लहे शिवसंपद, नमियैते सुपसाय रे॥ न्न० ॥३५॥ सि० ॥ मुरखशिष्यनीपायेजेप्रन्नु, पाहणने पल्लवआणे ॥ ते उवझाय सकलजन पूजित, सूत्रअर्थ सविजांणे रे ॥ न्न० ॥३६॥ सि० ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग, ते उवझाय सदा ते नमतां, नावे न्नवन्नय सोग रे ॥ न्न० ॥ ३७ ॥ सि० ॥ बावनाचंदनरस समवयणे, अहिततापसवि टाले ॥ ते उवझाय नमिजे जे वलि, जिनशासन उजवाले रे ॥ न्न० ॥ ३८ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ तपसिज्झाये रत सदा, द्वादस अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगन्राता रे ॥ वी० ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं० श्रीपाठकपदे अष्ट द्रव्यं यजामहेस्वाहा ॥ इति चतुर्थी पूजा ॥

॥ अथ पांचमी साधुपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ मोक्षमारग साधनन्नणी, सावधान थया जेह ॥

ते मुनिवरपद वंदता, निरमल थाये देह ॥१॥ काव्य ॥ साहूणं सं साहियसंजमाणं,नमो२शुद्धदयादमाणं ॥ तिगुत्तगुत्ताणसमाहियाणं, मुणीणमाणंदपयठिआणं ॥ करेसेवनासूरिवायगगणीनी, करूंवर्णना तेहनीसीमुणीनी ॥ समेतासदापंचसमतेत्रिगुप्ता, त्रिगुप्तेनहाकाम भोगेपुलिप्ता ॥ ४१ ॥ वलीबाह्यअभ्यंतरेग्रंथटाली, हुइमुक्तिनेयो गचारित्रपाली शुभष्टांगयोगेरमैचित्तवाली, नमुं साधुने तेह निज पा प टाली ॥ ॥ ४२ ॥ ढाल ॥ सकल विषयविष वारिनें, निःका मी निस्संगी जी ॥ भवदव ताप समावता, आतम साधन रंगी जी ॥ स० ॥ जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणें देह निर्मम निर्मदा, काउसग्गमुद्रा धीर आसन ध्यांन अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपै कर्म जीपै नैव छीपै परभणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिभुवन प्र णमो हितभणी ॥ ४३॥ ढाल ॥ जिम तरुफूले भमरो बेसे, पीडा तसु न उपाय ॥ लेई रस आतम संतोषे, तिम मुनि गोचरी जाय रे ॥ भ० ॥४४॥ सि० ॥ पांच२इंद्रीनें जे नित जीपे, षट्काया बंधु प्रतिपाल ॥ संजम सतर प्रकार आराधे, वंदू दीनदयाल रे ॥ भ०॥ ॥ ४५ ॥ सि० ॥ अढारसहस सीलंगना धोरी, अचल आचार च रित्र ॥ मुनिमहंत जयणायुत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० सि० ॥ ४६ ॥ नवविध ब्रह्मगुत जे पाले, बारे विध तपसूरा ॥ ए हवा मुनि नमियै जो प्रगटै, पूरव पुन्य अंकूरा रे ॥ भ० ॥४७॥ सि०॥ सोनातणी पर परीक्षा दीसै, दिन२ चढते वानै ॥ संजम खप करता मुनि नमियै, देसकाल अनुमानें रे ॥ भ० ॥४८॥ नि० ढाल ॥ अप्रमत्त जे नित रहै, नवि हरखै नवि सोचै रे ॥ साधु सु धा ते आतमा, स्युं मुंडे स्युं लोचे रे ॥ वी० ॥ ४९ ॥ ॐ ह्रीं० साधुपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अथ छट्ठी दर्शनपद पूजा लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ जिनवर भाषित शुद्ध नय, तत्वदरशी परतीत ॥

तें सम्यग्दर्शन सदा, आदरिये शुभ रीत ॥ १ ॥ काव्य ॥ जिणु त्ततत्तेरुइलरकणस्स, नमोऽर निम्मलदंसणस्स ॥ मिछत्तनासाइसमु ग्गमस्स, मूलस्ससधम्ममहादुमस्स ॥ विपर्यासहोवासनारूपमिथ्या, टलेजेअनादीअछेजेकुपथ्या ॥ जिनोक्तेहुईसहजथीशुद्धध्यानं, कहि येदर्शनंतेहपरमंनिधानं॥५०॥विनाजेहथीज्ञानमज्ञानरूपं, चरित्रंवि चित्रंभवारण्यकूपं॥प्रकृतिसातनेउपसमेक्षयतेहहोवे, तिहांआपरूपेस दाआपजोवे॥५१॥ढाल॥सम्यग् दरसण गुण नमो, तत्व प्रतीत सरू पी जी॥जसु निरधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपी जी॥ चाल ॥ जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटै सयल पर ईहा टले, निज शुद्ध सत्ता भाव प्रग टै अनुभव करुणा उछलै॥बहुमांन परणित वस्तु तत्वे अहव सुखकारण पणै, निज साध्य दृष्टे सरव करणी तत्वता संपति गिणै॥५२॥ढाल॥शुद्ध देव गुरु धर्म परीक्षा, सद्दहणा परिणाम॥जेह पांमीजे तेह नमीजै, सम्यग्दर्शन नांम रे॥ भ० ॥ ५३ ॥ सि०॥ मल उपशम क्षय उ पशम जेहथी, जे होइ त्रिविध अभंग ॥ सम्यग्दर्शन तेह नमीजै, जिनधरमे दृढ रंग रे ॥ भ० ॥ ५४ ॥ सि० ॥ पांच वार उपश म लहीजे, क्षयउपसमीय असंख ॥ एक वार क्षायक ते सम्यक्, दर्शन नमीइं असंख रे ॥ भ० ॥ ५५ ॥ सि० ॥ जे विण नांण प्र माण न होवे, चारित्रतरु नवि फलियो ॥ सुख निरवांण न जे विण लहिये, समकित दरसन बलियो रे ॥ भ० ॥ ५६ ॥ सि० ॥ सड्सठ बोले जे अलंकरियो, ज्ञांन चारित्रनुं मूल ॥ समकितदर्शं न ते नित प्रणमूं, शिवपंथनुं अनुकूल रे ॥ भ० ॥ ५७ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ समसंवेगादिक गुणा, खयउपसम जे आवे रे ॥ दर्शन ते हिज आतमा, स्युं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ५८ ॥ ॐ ह्रीं प० दर्शनपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

॥ अथ ७ मी ज्ञानपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ सप्तम पद श्रीज्ञाननो, सिद्धचक्र तपमांह ॥ आ

राधीजै शुन्न मनें, दिन२ अधिक न्नहाद ॥ १ ॥ काव्य ॥ अन्नाण सम्मोहतमोहरस्स, नमो२ नाण दिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्सुवगारगस्स, सत्ताणसवत्थपयासगस्स ॥ होइंजेहथीज्ञानशुद्धप्रबोधे, यथा वर्णनासैविचित्राविबोधे ॥ तिणेंजाणीयेवस्तुषट्द्रव्यन्नावा, नहोवैं विकछानिजेछास्वन्नावा ॥ ५९ ॥ होइंपंचमत्यादिसुग्यानन्नेदै, गुरु पासथीयोग्यतातेहवेदइं ॥ वलीज्ञेयहेयाउपादेयरूपै, लहैचित्तमांजे मध्यानेंप्रदीपै ॥ ६० ॥ ढाल ॥ न्नव्य नमो गुण ज्ञांननें, स्वपरप्रकाशक न्नावे जी ॥ परयाय धर्म अनंतता, न्नेदान्नेद स्वन्नावे जी ॥ चाल ॥ जे मोक्ष परणति सकल ज्ञायक बोधन्नाव विलासता, मति आदि पंच प्रकार निरमल सिद्धसाधन लंछना ॥ स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम न्नेद अन्नेदता, सवि कल्प ने अविकल्प वस्तु सकल संसय छेदता ॥ ६१ ॥ ढाल ॥ न्नक्ष अन्नक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जे विन लहिये, ज्ञांन ते सकल आधार रे ॥ न्न० ॥ ६२॥ सि० ॥ प्रथम ज्ञांन नें पीछे अहिंसा, श्रीसिद्धांतै न्नाख्युं ॥ ज्ञाननें वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीये सिवसुख चाख्युं रे ॥ न्न० ॥६३॥ सि० ॥ सकल क्रियानुं मूल ते श्रध्धा, तेहनुं मूल जे कहिये ॥ तेह ज्ञांन नित२ वंदीजे, ते विन कहो किम रहिये रे ॥ न्न० ॥६४॥ सि० ॥ पांचज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपरप्रकाशक तेह ॥ दीपकपर त्रिन्नुवन उपगारी, वलि जिम रवि शशि मेह रे ॥ न्न० ॥६५॥ सि० ॥ लोक ऊरध अध तिर्यग् ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥ लोक अलोक प्रगट सब जेहथी, ते ज्ञाने मुफ शुद्धी रे ॥ न्न० ॥ ६६ ॥ सि० ॥ ढाल ॥ ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षय उपशम तसु थाये रे ॥ तो होइ एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाये रे ॥ वी० ॥ ६७ ॥ ॐ ह्रीं प० ज्ञानपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥

॥ अथ आठमी चारित्रपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ अष्टम पद चारित्रनो, पूजो धरी उमेद ॥ पूजत अनुभवरस मिले, पातिक होय उच्छेद ॥ १ ॥ काव्यं ॥ आराहिया खंडिअसक्कियस्स, नमो२संजमवीरिअस्स ॥ सप्भावणासंगविवज्जिअस्स, निव्वाणदाणाइसमुज्जयस्स ॥ वलिज्ञानफलतेधरियेसुरंगे, निरासंसताद्वाररोधेप्रसंगे ॥ भवांभोधिसंताररोयानतुल्यं, धरुंतेहचारित्रअप्राप्तमूल्यं ॥ ६७ ॥ होइंजासमहिमाथकीरंकराजा, वलिद्वादशांगीभणीहोइताजा ॥ वलिपापरूपोपिनिष्पापथाये, थईसिद्धतेकर्मनेंपारजाये ॥ ६९ ॥ ढाल ॥ चारित्रगुण वलि२ नमो, तत्वरमण जसु मूलो जी ॥ पररमणीयपणो टले, सकलसिद्धिअनुकूलो जी ॥ उल्लालो ॥ प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम तत्व थिरता दममयी, शुचि परम खंति मुनींद संपद पंच संवर उपचयी ॥ सामायकादिक भेद धरमें यथाख्याते पूर्णता, अकषाय अकुलस अमल उज्वल काम कसमल चूर्णता ॥ ७० ॥ ढाल ॥ देसविरत ने सर्वविरत जे, ग्रही यतिने अभिरांम ॥ ते चारित्र जगत जयवंतो, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ ७१ ॥ सि० ॥ तृण पर जे षट्खंड सुख छंडी, चक्रवर्त्ती पिण वरिउ, ते चारित्र अखय सुखकारण, ते में मनमांहि धरिउ रे ॥ भ० ॥ ७२ ॥ सि० ॥ हूवा रंकपणे जे आदर, पूजत इंद नरिंद ॥ असरण सरण चरण ते वारू, वरिउ ज्ञान आनंद रे ॥ भ० ॥७३॥ सि०॥ बार मास पर्याये तेहनें, अनुत्तर सुख अतिक्रमिये ॥ शुक्ल२ अभिजात्य ते उपर, ते चारित्रने नमिये रे ॥ भ० ॥ ७४ ॥ सि० ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नांम निरुक्ते भाख्यूं, ते वंदू गुणगेह रे ॥ भ० ॥ ७५ ॥ सि० ॥ ॥ ढाल ॥ जांणि चारित्र ते आतमा, निजस्वभावमांहि रमतो रे ॥ लेस्या शुद्ध अलंकर्यो, मोहवने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ ७६ ॥ ॐ ह्रीँ प० चारित्रपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे स्वाहाः ॥

॥ अथ नवमी तपपद पूजा ॥

॥ दूहा ॥ करमकाष्ट प्रति जालवा, परतिख अगनि समान ॥ ते तपपद पूजो सदा, निर्मल धरिये ध्यांन ॥ १ ॥ काव्यं ॥ कम्म दुमोन्मूलनकुंजरस्स, नमोऽत्थुतिव्वतवोवरस्स ॥ अणेगलद्धीणनिबंधण स्स, दुसज्झअत्थाणयसाहणस्स ॥७७॥ इयनवपयसिद्धलद्धि, विज्जास मिद्धं, पयमियसरवग्गंह्रींतिरेहसमग्गं ॥ दिसिवइसुरसारं खोणिपीढाव यारं, तिजयविजयचक्कं सिद्धचक्कंनमामि ॥७८॥ त्रिकालिकपणें कर्म कषाय टाले, निकाचितपणें बाधिया तेह बाले ॥ कह्यो तेह तप बाह्य अभ्यंतर दु भेदे, क्षमायुक्ति निर्हेत दुर्ध्यान छेदे ॥७९॥ होइ जास महिमाथकी लब्धि सिद्धि, अवांछकपणे कर्म आवरण शुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेतें, होई सिद्ध सीमंतनी जिम संके ते ॥ ८० ॥ इम नव पद ध्यावे परम आनंद पावै, नवभव सिव जावै देव नर भवज पावै ॥ ज्ञानविमल गुण गावे सिद्धचक्र प्रभा मै, सवि दुरित समावै विश्व जयकार पावै ॥ ८१ ॥ ढाल ॥ इच्छा रोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदै जी ॥ आतम सत्ता एकत्व ता, पर परणति उच्छेदे जी ॥ १ ॥ उल्लालो ॥ उच्छेद कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणो वरे, शुभ योग संग आहार टाली भाव अ क्रियता करै ॥ अंतरमुहूरत तत्व साधे सर्व संवरता करी, निज आ त्मसत्ता प्रगट भावे करो तपगुण आदरी ॥ ८२ ॥ ढाल ॥ इम न वपद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणें जी ॥ सात नयें जे आदरै, स म्यग्ज्ञानें जाणे जी ॥ उल्लालो ॥निरधारसेती गुणे गुणनो करइ जे बहुमांन ए, जसु करण ईहा तत्वरमणें थाये निरमल ध्यांन ए ॥ इम शुद्धसत्ता भलो चेतन सकल सिद्धि अनुसरें, अक्षय अनंत म हंत चिदघन परम आनंदता वरे ॥८३॥ कलश ॥ इम सयल सुख कर गुणपुरंदर सिद्धचक्रपदावली, सवि लब्धिविद्या सिद्धि मंदिर भ विक पूजो मन रली ॥ उवझाय वर श्रीराजसागर ज्ञानधर्मसु रा

जता, गुरु दीपचंद सुचरण सेवक देवचंद सुशोभता ॥८४॥ ढाल ॥ जाणंता त्रिहुं ज्ञाने संयुत, ते भवसुगति जिनंद॥ जेह आदरे कर्म खपेवा, ते तप सुरतरु कंद रे ॥ भ० ॥ ८५ ॥ सि० ॥ करम निकाचित पिण क्षय जाये, क्षमासहित जे करतां, ते तप नमिये तेह दीपावे, जिनशाशन उजमंता रे ॥ भ० ८६॥ सि० ॥ आमोसही पमुहा बहु लब्धि, होवे जास प्रभावे ॥ अष्ट महासिद्ध नवनिध प्रगटै, नमिये ते तप भावे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ८७ ॥ फल शिव सुख मोटुं सुरनरवर, संपति जेहनूं फूल ॥ ते तप सुरतरु सरिखो वंदू, शममकरंद अमूल रे ॥ भ० ॥ ८८ ॥ सि० ॥ सर्व मंगलमांहि पहलो मंगल, वर्णवियो जे ग्रंथै ॥ ते तपपद त्रिकरण नित नमियै, वरसहाय शिवपंथ रे ॥ भ० ॥ ८९ ॥ सि० ॥ इम नवपद थुणतो तिहांलीनो, हुउ तनमय श्रीपाल ॥ सुजस विलासै चोथे खंमै, एह इग्यारमी ढाल रे ॥ भ० ॥ ९० ॥ सि० ॥ ढाल ॥ इछारोधन संवरी, परणित समता योगे रे ॥ तप ते एहिज आतमा, वरते निजगुण भोगे रे ॥ वी० ॥ ९१ ॥ आगमनो आगमतणो, भाव ते जांणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर हूउ, परभावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ९२ ॥ अष्ट सकल समृद्धिने, घटमांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तिम नवपद ऋद्धि जाणज्यो, आतमराम छै साखी रे ॥ वी० ॥९३॥ योग असंख्य छै जिन कह्या, नवपद मुख्य ते जांणो रे ॥ ए हतणे अविलंबने, आतमध्यांन प्रमाणो रे ॥ वी० ९४ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथै खंमे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जसतणी, कोइय न रही अधूरी रे ॥ वी० ॥ ९५ ॥ ॐ ह्रीँ प० तपपदे अष्ट द्रव्यं यजामहे ॥ इति नवपद ॥ पूजा ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद पूजाकी कलसढालण विधी ॥

॥ नव साथिया केसरसें निच्कर करे, हाथंके कांकणडोरा बांधे, दहणे हाथमें

साथिया करै, अरिहंत पद्में चावल, नमो अरिहंताणं कहके पहली पंचामृतके नव कलस ढाले फेर केसरकी टीकी देकर चरणो पर वासक्षेप चढावे यथाक्रम अष्ट द्रव्य चढावें ॥ सिद्धपद्में गहूं लालरंगकी धजागोटा चढावे, आचार्यपद्में चिणोकी दाल पीले रंगकी धजागोटा, उपाध्यायपद्में मूंग, साधूपद्में उडद, बाकी च्यारपद् में चावल चंदनलेपित गोटा चढावे, श्वेतधजा चैत्रीपूनम आसोजीपूनम वगेरोंमें करे, नमो सिद्धाणं इत्यादि नवपदो के न्यारे२ कह के चढावे, गट्टे मुजव पट्टे पर नव साथिया कर वीचमें अरिहंत ऊपर सिद्ध सिद्धचक्रयंत्र मुजव यथाक्रम चढावै ॥

॥ ओली करणेवाला वासक्षेप पूजा करे तो एकेक पूजामें चालकी गाथा तथा उल्लाले तक गाय कर अरिहंतपदे वासक्षेपं यजामहे कहणा. एसें नवपदो की चाल ओर उल्लाला पद वासक्षेप चढवाणा ॥

॥ अथ दादागुरुमाहाराजकी लघु अष्टप्रकारी पूजा ॥

॥ अथ न्हवण पूजा ॥ सुरनदी जल निर्मल धारया, प्रबल दुष्कृत दाघ निवारया ॥ सकल मङ्गल वंछित दायकं, कुशल सूरि गुरोश्चरणां यजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकुशल सूरि गुरौ चरणकमलेभ्य जलं यजामहे ॥ १ ॥ अथ चंदनपूजा ॥ मलय चंदन केसर वारिणा, निखल जाड्यरुजातं पहारिणा ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजिनकु० ॥ २ ॥ अथ पुष्पपूजा ॥ कमल केतकि चंपक पुष्पकैः, परिमला हत् षट्पद वृंदकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥ अथ अक्षत पूजा ॥ सरज तंदुल कैरित निर्म्मलै, प्रवर मौक्तिक पूंज वदुज्वलैः ॥ सकल मङ्गल० ॥ ॐ ह्रीं प० अक्षतं यजामहे ॥ ४ ॥ अथ नैवद्य पूजा ॥ बहु विधैश्चरुभिर्वटकेयकैः, प्रवर मोदकपुंज सुखर्जकै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं नैवद्यं यजामहे ॥ ५ ॥ अथ दीपपूजा ॥ अति सुदीप्तमयै खलुदीपकै, विमल कंचनभाजन संस्थितै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० दीपं यजामहे ॥ ६ ॥ अथ धूपपूजा ॥ अगर चंदन धूप दशांगजे, प्रसरिताखिल दिक्सुधूम्रकः ॥ सकल मं० ॐ ह्रीं श्रीं० धूपं यजामहे ॥ ७ ॥ अथ फलपूजा ॥ पनश मोच सदाफल कर्कटै, सुमुग्धदैः

किल श्रीफल चिन्नटै ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं० फलं यजामहे स्वाहाः ॥ ८ ॥ अर्घपूजा ॥ जल सुगंध प्रसून सुतंडुलै, अरुप्रदीप क धूप फलादिभिः ॥ सकल मं० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीजि० अर्घं यजा महे स्वाहा ॥ इति श्रीदादाजीकी लघु अष्टप्रकारी पूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ दादाजीकी आरती ॥

॥ जै जै सदगुरु आरती कीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरी जै ॥ जैजै० ॥ पहली आरती दादाजीकी कीजै, दुख दोहग सब दूर हरीजे॥जै०॥१॥बीजी बीज पभंती धारा, भयवारण तूंही सुख कारा ॥ जै० ॥ २ ॥ तीजी परचा पूरक तेरी, दूर हरों सब दुर्म ति मेरी ॥ जै० ॥ ३ ॥ चोथी मुगलपूत जियदायक, सुरवर हुक म धरे ज्युं पायक॥जै०॥४॥पांचमी पांच नदी जिण तारी, संघ स कलनो संकट वारी ॥ जै० ॥ ५ ॥ छठी थांभोवज्र विदारी, विद्या पोथी परगटकारी ॥ जै० ॥ ६ ॥ सातमी चोसठ योगण साधी, सूरिमंत्र सुरने आराधी ॥ जै० ॥ ७ ॥ इण विध सात आरती कीजे, मनवंछित संपति फल लीजै ॥ जै० ॥ ८ ॥ जैनलाभ खर तर गणधारी, सदगुरु चरणकमल बलिहारी ॥ जै० ॥ ॥ ए ॥ इति श्रीगुरुदेव आरती संपूर्णम् ॥

॥ अथ सूतकविचार लिख्यते ॥

॥ पुत्र जन्म होनेसें दिन १० दस सूतक ॥ पुत्री जन्म होनेसें दिन १२ बार सूतक ॥ ऊर जो स्त्रीके पुत्र होय, उस स्त्रीके एक मासको सूतक॥पुत्र होके मरण पामे, तो दिन१एक सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ एक सूतक ॥ गाय, भेंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियावे, तो दिन १ एक सूतक ॥ मरण हूवां कले वर घर बाहिर लइ जाय, जहां तक सूतक ॥ दास दासी अपनी नश्रायें रहते पुत्र पौत्रादिकका जन्म मरण हो, तो दिन ३ तीन

सूतक ॥ और जितना महिनाको गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक ॥ अब जिनके जन्म मरणका सूतक होवे ये १२ बार दिन देवपूजा न करे. और मृतकके सूतक में घरका जो मूल कांधिया होवे सो १० दस दिन देवपूजा न करे ॥ और अन्य घरका ३ तीन दिन देवपूजा न करे. और जो मृतकको छूवा होवे, सो २४ चोवीस प्रहर पडिक्कमण न करे ॥ जो सदाका अखंड नियम होवे, तो समताभाव रख कें संवरपणामें रहे. परंतु मुखसें नवकार मंत्रका भी उच्चारण करे नहिं. स्थापना जीके हाथ लगावे नहिं. और जो मृतककों छुवा न हो तो मात्र आठ प्रहर पडिक्कमण न करे ॥

भैंसके जब बच्चा होय, तब १५ पदर दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. गायके बच्चा होय तो १७ सतरे दिन पीछें दूध पीणो कल्पे. बकरीको दूध ८ आठ दिन पीछें पीणो कल्पे ॥

१ रुतुवती स्त्री, चार दिन भांमादिकको न छुवे.२चार दिन प्रतिक्रमण न करे, ३ पांच दिन देवपूजा न करे. ४ रोगादिक कारणों तिन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहिं ॥ शुद्ध विवेकसें पवित्र हो कर दिन ५ पांच पीछें स्थापना पुस्तक छुवे, जिनदर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुकों पडिलाभे. ऋतुवंती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु रुतु दिनमें जिनपूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरीग्रंथमें कहा है. जिसके घरमें जन्म मरणका सूतक होवे, उहां १२ बार दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे. सूतकवालेका घरका जलसें तथा अग्निसें १२ बारा दिन तक देवपूजा न करे. निशीथसूत्रके शोलमा उद्देशामें जन्म मरणके सूतकवालेका घर दुर्गंछनिक कहा है.

गायके मूत्रमें २४ चोवीस प्रहर पीछें, भैंसके मूत्रमें १६ सोल प्रहर पीछें, गाडर, गधेडा, घोडीके मूत्रमें ८ आठ प्रहर पीछें, नर नारीके मूत्रमें ४ चार प्रहर पीछें, संमूर्छिम जीव उपजे. इत्यादि सूतकका संक्षेप विचार इहां लिखा हे विशेष विचार शास्त्रांतरसें जानना ॥ इति सूतकविचारः संपूर्णः ॥

॥ अथ असझायकी विगत कहते हे ॥

१ धूंआरी पडे, तासीम असझाय जाणवी.

२ सर्वदिशामां राती गाया तथा अरण्य संबंधी रज उडे, निरंतर पडे तो दिन ३ तीन उपरांत असझाय.

३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ तीन उपरांत असज्झाय.

४ नाना छंटा निरंतर, दिन ७ सात उपरांत वरसे, अने न रहे तो असझाय होय.

५ मांसवृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि, धूलिवृष्टि, ज्यांलगें होय, त्यां सीम असझाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय.

६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे तो ५ पांच दिन उपरांत असझाय होय.

७ चैत्र शुदि पांचमहुंती पडिवा लगें असझाय. तेरस, चौदस, पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रजउड्डावणत्थं काउस्सग करुं? इच्छं. अचित्त रज्ज उड्डावणत्थं करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स उज्जोयगरेना चार काउस्सग्ग करवा.

८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहरथी आरंभीने पडिवा लगें असझाय.

९ दश दिग्दाहें प्रहर १ एक असझाय.

१० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असझाय.

११ अकालें बीज उल्कापात होय तो प्रहर १ असज्झाय.

१२ अजवालीये पक्षें समी सांझ, पडवो, बीज, त्रीज, इयारी असज्झाय, परंतु दश वैकालिक गुणीजें.

१३ अकालें मेघ वरसे, तो प्रहर १ एक असज्झाय.

१४ भूमिकंपें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१५ चंद्रग्रहणें प्रहर १२ बार उत्कृष्टें, अने जघन्यें प्रहर ८ आठ असज्झाय.

१६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ सोल, अने जघन्य प्रहर १२ बार असज्झाय.

१७ आसाढ चउमासा पडिक्कमण गयाहूंती प्रहर १२ बार असज्झाय.

१८ कार्त्तिक चउमासें पण प्रतिक्रम्या पीठें पडिवा लगें प्रहर बार असज्झाय.

१९ मांहोमांहे मल्लादिक युद्ध हुवे, तावत्काल असज्झाय.

२० कलह युद्ध जां लगें हुवे, तां लगें असज्झाय.

२१ उपाश्रय नजीक स्त्रीपुरुपने कलह हुवे त्यां पर्यंत असज्झाय.

२२ फागण चउमासें रजपर्वी ज्यां लगें रज उडे, अने उपशमें नहिं, तां लगें असज्झाय.

२३ ढूंढको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी असज्झाय.

२४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगें उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र भणवुं न सूजे ॥ अयं परमार्थः ॥

२५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय;

२६ उपाश्रयथी सात घरमांहें जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहोरात्र असज्झाय.

२७ सो हाथमांहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो ता अणजळे एटले ज्यां पर्यंत मृतककूं न जळावे, त्यां सीम असझ्झाय.

२८ तिर्यचना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो मांहे अहो-रात्र असझ्झाय.

२९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो मांहे अहो-रात्र असझ्झाय.

३० मनुष्यनां अस्थि, दांत, दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सूत्र पढवुं सूजे नहिं.

३१ स्त्रीने रुतु आवे थके दिन ३ त्रण असज्झाय.

३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछें स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे, तो असज्झाय न होय.

३३ पुत्रने प्रसवे दिन ७ सात असझ्झाय. अने दीकरीने प्रसवे दिन ८ आठ असज्झाय.

३४ कालग्रहण विणाकी भणवो गुणवो नहिं. प्रहर १२ वार असज्झाय.

३५ वेशाखवदि १, श्रावणवदि १, कार्त्तिकवदि १, मागशिरवदि १. ए चार दिवसें सदेव असज्झाय अने सूत्रनी असज्झाय तो प्रहर १२ बार सूधी जाणवी.

॥ अथ साधु ओर श्रावकको कोनसी वस्तु कितने प्रहर ॥
॥ ओर दिन पीछें न खावणी सो लिख्यते ॥

॥ चावल प्रहर ८, राब प्रहर १२, घीस प्रहर २०, गर्दा प्रहर २४, दहिं प्रहर १६, दूध प्रहर ४, कांजीवडां प्रहर २४, घोळवडां प्रहर ४, तळ्यां वडा प्रहर ४, पूडी प्रहर ८, रोटी प्रहर ४, तथा ६. बाजरा कण्ण प्रहर १२, जवार कण्ण प्रहर १२, बाजरीकी खीचडी प्रहर ८, जवारकी खीचडी प्रहर ८, चावलकी

खीचड़ी प्रहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाले आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पक्वान्न सियाले दिन ३०, उन्हाले पक्वान्न दिन १५, वरसाले पक्वान्न दिन ७, उन्हाले लूण फासू ८ दिन, वरसाले लूण फासू दिन ३, सीयाले फासू लूण दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसाले फासु घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासु पाणी प्रहर ५, वरसाले फासु पाणी प्रहर ३, सर्व अनाजकी घूघरी पाणी उत्रीजोइ प्रहर ८, पाणीकी उसेइ घूघरी प्रहर १८, घी तेलकी तली घूघरी प्रहर २०, तथा २४. वड़ी प्रहर ८, कढी प्रहर ४, सर्व दाल प्रहर ४, तथा ६. रायता प्रहर ८, घीकी तली प्रहर १६. एवं सर्व वस्तु ए कीये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावककों खावे योग्य रहे नहिं ॥

॥ अथ नव ग्रह तथा दस दिग्पाल की स्थापन ओर पूजन विधि तथा आह्वान विसर्जन विधि लिख्यते॥

॥ पांच दस स्नात्रिया शुद्ध होकर गुरू के पास केसरका तिलक करै, केसर मंत्रायकै दाहिणा हाथके मौली उर कांकणडोरा मंत्राय के बांधै ॥ (ॐ नमो परमेष्टि नमस्कारं) इत्यादि स्तोत्रसें गुरु आत्मरक्षा करावै. पीछै एक थालीमें १०, एक थालीमें ९, फेर एक थालीमे फेर ९, एसें २८ नागरवेलका पांन रखै. जिसपर पुष्प अक्षत नैवेद्य फल रोकद्रव्य यथाशक्ति धरै उरन्नी पंचामृत फूल पुष्पमाला अक्षत नेवद्य तरे२ के गीले उर सूकेफल अतर गुलाबजल केसर कपूर कुंकु आदि पूजापेका सामान रखै. फेर स्नात्रपूजा की थापना रखै, स्नात्र करावे अष्ट प्रकारी पूजा करावै पीछे दसदिग्पाल के पट्टे ऊपर जलका छींटा देकर वासक्षेप करे ॥ एकेक दिग्पालके केसरकी टीकी देकर पुष्प चढाके फल नैवेद्यादि समेत नागरवेलका पान चढावै ॥

॥ अथ दस दिग्पालके पट्टेकी पूजाविधि ॥

॥ ॐइंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इंद्रअस्मिनूजंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोत्सवे आगच्छ२ बलिंगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐइंद्रायनमः इति इंद्रआह्वानपूजा ॥ (पूर्वदिसि जल चंदनादि अष्ट द्रव्य चढावै) ॥ १ ॥ अथ अग्नि दिग्पाल पूजा ॥ ॐअग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिनूजंबूद्वीपे दक्षिणभरतार्द्धक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोछवे आगच्छ२ बालगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२स्वाहाः ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ अथ यम दिग्पाल पूजा ॥ ॐयमाय सायु० सवा० सपरिछदा अस्मिनूजंबु० दक्षिण० अमुकन० अमुकचैत्यै० अमुकपूजा० आग० बलिंगृ० उदयम० स्वाहा ॐयमायनमः ॥ दक्षिण ॥ ३ ॥ अथ नैरुत दिग्पाल पूजा ॥ ॐनैरुताय सायु० सवा० सप० अस्मिनूजं० दक्षि० अमुक पूजामहोछवे आग० बलिं० उदय० स्वाहा ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ अथ वरुण दिग्पाल पूजा ॥ ॐवरुणाय सायु० सवा० सप० अस्मिनूजं० अमुकपू० आ० बलिं० उदय० स्वाहा ॐवरुणाय नमः ॥ पश्चिम० ॥५॥ अथ वायव दिग्पाल पूजा ॥ ॐवायवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकचैत्यै० अमुकपूजामहोछवे० आ० बलिं० उदयम० स्वाहा ॐवायवेनमः ॥ वायव्य ॥ ६ ॥ अथ कुबेर दिग्पाल पूजा ॥ ॐकुबेराय सायु० सवा० सप० अस्मिनूजं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपूजामहोछवे आ० बलिंगृ० उदय० स्वाहा ॐकुबेरायनमः उत्तर दिशि ॥ ७ ॥ अथ ईशान दिग्पाल पूजा ॥ ॐईशानाय सायु० सवा० सप० अस्मि० द० अमुकपू० आ० बलिं० उद० स्वाहा ॐईशानायनमः ॥ ईशानकूण ॥८॥ अथ ब्रह्म दिग्पाल पूजा ॥ ॐब्रह्मणे सायु० सवा० सप० अस्मिन्० द० अमुकन० अमुकचैत्यै

अमुक पू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐब्रह्मणेनमः ॥ ऊर्द्धदिशि० ॥ ए ॥ अथ नाग दिग्पाल पूजा ॥ ॐनागाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० दक्षि० अमुकन० अमुकचैत्यै अमुकपू० आ० वलिं० उदय० स्वाहा ॐनागायनमः ॥ १० ॥ अधोदिशि अष्टद्रव्य चढावे ॥ ऊपर कसूंमल वस्त्र बांधे मौलीसे, पीछे ॥ ॐदशदिग्पालायनमः ॥ एसा कहके यथाशक्ति रोकद्रव्य समेत नागरवेलका पांन आदि सर्व द्रव्य चढावै, पट्टेके चोतरफ दस घृतके दीपक धरे अथवा एक दीपक आगै धरै ॥ इति दस दिग्पाल पूजनविधिः॥

॥ अथ नव ग्रह पूजनविधिः ॥

॥ अथ सूर्य पूजा ॥ ॐनमोआदित्याय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षणभरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकचैत्यै अमुकपूजामहोछवे आगछ२ वलिपूजांगृहाण२ उदयमभ्युदयं कुरु२ अत्रपीठेतिष्ट२स्वाहा ॐसूर्यायनमः ॥ (एसापढकेजलचंदनादि अष्टद्रव्यचढावे) ॥१॥ अथ चंद्रपूजा ॥ ॐचंद्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि प०. उदय० अष्टपाठेति० स्वाहा ॐचंद्रायनमः ॥२॥ अथ मंगल पूजा ॥

ॐनमोभोमाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमु० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे उदय० स्वाहाः ॐभोमायनमः३॥ अथ बुधपूजा॥ ॐनमोबुधाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकनग० अमु० चै० अमुकपू० आ० वलि० उदयम० अत्रपी० स्वाहा ॐबुधायनमः ॥४॥ अथ बृहस्पति पूजा ॥ ॐनमोबृहस्पतये सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० कमुकचै० अमुकपूजाम०आ० वलि० अत्रपी०उदय० स्वाहाः ॐ बृहस्पतयेनमः॥५॥ अथ शुक्र पूजा ॥ ॐनमोशुक्राय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जंबूद्वी० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलिगृ० अत्र

पीठे उदयम० ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॥ अथ शनि पूजा ॥ ॐनमोशनिश्चराय सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचैत्ये० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२ उदयम० स्वाहा ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॥ अथ राहु पूजा ॥ ॐन मोराहवे सायु० सवा० सप० अस्मिन्जं० द० अमुकन० अमुकचै त्ये अमुकपूजा० आ० वलि० अत्रपी० उदयम० ॐराहवेनमः॥८॥ अथ केतू पूजा ॥ ॐनमोकेतवे सायु० सवा० सप० अस्मि न्जं० द० अमुकनग० अमुकचै० अमुकपू० आ० वलि० अत्रपीठे तिष्ठ२उदय० स्वाहा ए ॐ केतवेनमः॥ इति ॥(इसी मुजब ऊपर लाल वस्त्र मोलीसे बांधे पीछै नागरवेलके पान आदि अष्टद्रव्य रोकड़ द्रव्य समेत सांमने भेट धरे फेर एसा कहे॥ ॐनवग्रहायनमः॥ च्यारों तरफ नवदीपक वा एक दीपक सांमने धरे इति नवग्रह थापन पूजनविधिः ॥ वाये तरफ मंडलके नवग्रहकी थापना करे दहिणे बाजू दसदिग्पाल की थापना करे ॥जिस महोछवमें इनोकी पूजा कराणी उस महो छवका नाम लेणा विशेष विधि गुरुमुखसें सीखणी ॥ शुद्ध जल सें पवित्रपणे बणायाजवा सधवस्त्रीके या पुरषके हाथसें पांचरंग के धानके बाकला पांच रंगकी खजली गुलगुला खीर दहीका करवा मालपूवा पांचरंगकेलड्डु इत्यादि खाद्य उत्तम वस्तु मंगाकर एक परातमें सब द्रव्य एकठा करै उर घृत खांड अत्तर गुलाबजल पंचरंगेफूल यहभी बाकलोंमें मिलावे पीछै गुरु ३ तीन वार मंत्रके तीन वेर बाकुलो पर वासक्षेप डाले.) अथ वासक्षेप मंत्र ॥ ॐह्रांह्रींसर्वोप द्रवंबिंबस्यरक्ष२स्वाहा ॐणमोअरिहंताणं ॐणमोसिद्धाणं ॐणमोआ यरियाणं ॐणमोउवज्झायाणं ॐणमोलोएसव्वसाहूणं ॐणमोआगास गामीणं ॐणमोचारणलद्धीणं जेइमे किन्नर किंपुरस महोरग गरुड़ गंधर्व जक्ख रक्खस पिशाय भूय डाइणप्पभिइउ जिणघरनिवासि

णा सन्निहियाय तेसव्वेविलेवण धूवपुप्फफलवश्वसणार्दि वलिपडि च्छंता तुष्ठिकराभ्नवंतु पुष्ठिकरा संतिकराभ्नवंतु सवंजणंकुर्वंतु सव्वजि णाणं संहणप्पन्नावत्र पसन्नन्नावतणे सवत्थरखंतुकुर्वंतु सव्वदुरियाणी नासंतु सवाशिवमुवसमंतु संतितु.ष्ठपुष्ठिसिवसत्थयणकारिणोभ्नवंतु स्वाहाः ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासक्षेपकूं मंत्रके बलबाकुलोमें मालके सुद्ध करे ॥ पीछै आधा बलबाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके वास्ते वस्त्रसें ढककर रखछोडे. आधा लेकर घरकें तथा चैत्यके ऊपर इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक श्रावक चोटीके बाल खोलकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खडा रहे, २ दूसरा केसरकी कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चोथा अेता, ५ पांचमा धूपधाणा, ६ छठा दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा जलका कलश, १० दसमा बलवाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंगलवाजित्र. इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खडा रहै. जब गुरु शुष्ठमंत्र उच्चारण करचूकें तब क्रमसें जल चंदन फूल वा कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र वजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावतःसमारूढः शक्रः पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ १ ॥ (एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ बलवाकुल चढावै) (अग्निकूणके सांमनें) ॥ सदावह्निदिशोनेता पावकोमेषवाहनः संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजांप्रयच्छतु ॥ २ ॥ (एसा कह वाकुलादिद्रव्य चढावै) (दक्षिणदिशकी तरफ) ॥ दक्षिणस्यांदिशःस्वामी यमोमहिषवाहनः संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥ (बलबाकुल चढावै वाजित्र वजावै) (नैरुतकूणकी तरफ) ॥ यमापरांतरालेको नैऋतः शिववाहनः संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥ (अथ पश्चिमदिशि) ॥ यः प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० बलि० ॥ ५ ॥ (अथ वायव्यकूण) ॥ हरिणोयाहनंयस्य वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ (अथ उत्तर दिशि) ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रभुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥ (ईशान कूण) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविभुः संघस्य० वलि० ॥ ८ ॥ (अथ अधोदिशि) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ए ॥ (अथ उर्ध्वदिसि) ब्रह्मलोकविभोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दिग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीछे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ थोर बलबाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ ॐनमोइंद्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणार्द्धे अमुकनगरे अमुकचैत्ये अमुकमहोत्सवे सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ पूर्वदिशाकी तरफ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ (अग्निकूण) ॥ ॐनमोअग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन० अमुक० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ इति ॥ (दक्षिणदिशि) ॐनमोयमाय दक्षिणदिगधिष्टायकाय महिषवाहनाय दंडआयुधाय कृष्णमुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ३ ॥ इति ॥ (नैरुतकूणे) ॥ ॐनमोनैरुताय खड्गहस्ताय सायु० सवा० सप० अस्मिन० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ (पश्चिमदिशि) ॥ ॐनमोवरुणाय पश्चिमदिगधिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलिरक्ष२ गच्छ२ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ (वायवकूणे) ॥ ॐनमोवायवे वायव्याधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्रक्ष० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

(उत्तरदिशि) ॥ ॐनमोधनदाय उत्तरदिगधिष्टायकाय नरवाहनाय गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्बलि० गन्ह२ स्वाहा ॥ ७ ॥ इति ॥ (ईशाणकूणे) ॐनमोईशानाय त्रिसूलहस्ताय ईशानाधिपतये वृषभवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्ब लि० गन्ह२ स्वाहाः ॥ ८ ॥ इति ॥ (उर्द्धलोके) ॐनमोब्रह्मणे राजहंसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टायकाय सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलि० गन्ह० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ (अधोलोके) ॐनमोनागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्बलि२ गन्ह२ स्वाहा ॥ १० ॥ (इस तरे पढे बाद सर्व देवतोंके विसर्जनका श्लोक पढै ॥ यथा ॥ शक्राद्या लोकपालादिशिविदिसिगता शुद्धसद्धर्मशक्ताः, आयातास्नात्रकाले कलुषहृतिकृते तीर्थनाथस्यभक्त्या; न्यस्ताशेषापदाद्याविदितशिवसुखाः स्वास्पदंसांप्रतंते, स्नात्रेपूजामवाप्यस्वमतिकृतमुदोयांतुकल्याणभाजः ॥ १ ॥ आग्याहीनंक्रियाहीनं, मंत्रहीनंचयत्कृतं; तत्सर्वंक्षमतंदेवः, प्रशीदपरमेश्वरः ॥ २ ॥ आह्वानंनैवजानामि, नैवजानामि पूजनं; विसर्जनंनैवजानामि, त्वमेवशरणंमम ॥ ३ ॥ पीछे यथाशक्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मंडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्नात्रिया मंत्रितजलसें स्नान करे (जलमंत्र) ॐ ह्रीँ अमृतेअमृतोद्भवे अमृतवर्षणी अमृतंश्राव य२ स्वाहा (इस मंत्रसें जलमंत्रे. पीछे) ॐ ह्रीँ अमलेविमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पांपावांवाअशुचिशुचिभवामिस्वाहा (इस मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीछे ॥ ॐ ह्रीँ आँ क्राँः॥(सात वेर इस मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीछे ॥ ॐ आँ ह्रीँ क्राँ अर्हते

नमः) इस मंत्रसें सात वेर गुरू पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै. (पीछे) ॐ ह्रीं अवतर२ सोमे२ कुरु२ वग्गु२ सुमणसे सोमणसे महुमहुरे ॐकवलीकः कः स्वाहा ॥ (इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमफली मंत्रायके हाथके बांधै ओर जब मंगलजीके च्यारुं तरफ मोलीमेंढल बांधे सोभी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरूके सामने हाथ जोमके बेठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा है उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीछै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मंगलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवश्य कराणी चाहियें. पीछै मंदिरजीमें अधिष्ठायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावे अष्टद्रव्य चढावे. पीछे चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिंदूर मिलाके क्षेत्रपालजीकी पूजा करे, चांदीके वरक या मालीपाना चढावै, अत्तर चढावे, फूल धूप नेवद्य फल जल रोकद्रव्य इत्यादि सर्वद्रव्य (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा बोलता हुवा चढावै. पीछै मंगलजीके दक्षणे तरफ १० दिग्पालके पट्टेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्व द्रव्य चढावै. नागरवेलके पांन समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बांधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीछे बांयें तरफ नवग्रहके पट्टेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै.) पीछै सर्व स्नात्रिया कूं १८ स्तुतीसें देववंदावै.

अढारे स्तुतिका देववंदणेकी विधी लिखते हैं॥ पहली इरियावही पडिक्कमें च्यार नवकारका काउसग्ग कर लोगस्स कहे. नीचे बेठके दहिणा गोडा धरतीपर रखके डावा गोडा नमीभूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोत्थुणं० कहके अरिहंतचेइयाणं० वंदणवत्ति० अन्नत्थु० १ एक नवकारका काउसग्ग करै. नमोर्हत् सिद्धा० कहके यदंह्रिन मनादेव थुइकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वंदण० अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग इस थुईकी दुसरी गाथा कहे. पुक्खरवरदी० वंदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० थुईकी तीसरी गाथा कहे. सिद्धाणंबुद्धा० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका काउसग्ग थुईकी ४थी गाथा कहे. पीछे बैठके नमोत्थुणं कहके खडा होके श्रीशांतिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिभिर्दोषै रं जितायजितारये नमः श्रीशांतयेतस्मै विहितानतशांतये ५ (ततः श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्गं० १ नवकारका काउसग्ग) ॥श्रीशांतिजिनभक्ताय भव्यायसुखसंपदं श्रीशांतिदेवतादेया दशांतिमपनीयते ६ (ततः श्रीश्रुतदेवतानिमित्तं०) सुवर्णशालनीदेयात् द्वादशांगीजिनोद्भवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥(ततः श्रीभुवनदेवताआराधनार्थं०) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ (ततः क्षेत्रदेवतानिमित्तं०) यासांक्षेत्रगतास्संति १ गाथा कहे ॥ ए ॥ (ततः श्रीअंबिकादेवतानिमित्तं०) अंबानिहितडिंबामे सिद्धबुद्धसमन्विता सितेसिंहेस्थितागौरी वितनोतुसमीहितं ॥ १० ॥ (ततः श्रीपद्मावतीदेवतानिमित्तं०) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा क्षुद्रोपद्रवतःसामां पातुफुल्लत्फणावली ॥ ११ ॥ (ततः श्रीचक्रेश्वरीदेवतानि०) चंचच्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निभा चिरंचक्रेश्वरीदेवी नंदतान्निवतात्सदामां ॥ १२ ॥ (ततः श्रीअच्छुप्तादेवतानि०) खड्गखेटककोदंड वाणपाणिस्तडिद्युतिः तुरंगगमनाच्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥ १३ ॥ (ततः श्रीकुबेरदेवतानि०) मथुरापुरीसुपार्श्वे श्रीपार्श्वस्तूपरक्षका श्रीकुबेरानगरारूढा सुतांकावतुवोभयात् ॥ १४ ॥

(ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि) ब्रह्मशांतिसमांपाया दपाया हीरसेवकः श्रीमत्सत्यपुरेसत्या येनकीर्त्तिःकृतानिजः ॥ १५ ॥ (ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि०) यागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-दा श्रीगोत्रदेवतारक्षां शंकरोतुनतांगिरां ॥ १६ ॥ (ततः श्रीशक्रा दिसमस्तदेवतानिमि०) श्रीशक्रप्रमुखायक्षा जिनशासनसंस्थिताः देवादेव्यस्तदन्येपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ (ततः श्रीसिद्धावि का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको काउस्सग्गकर स्तुति कहे) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातंगसेविता सामांसिद्धायिकापातु चक्रेचापेषुधारणी ॥ १८ ॥ लोगस्स कहके बेठै चैत्यवं० नमोत्थु० जयवीयराय पर्यंत कहें ॥ इस तरें १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठा विधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मोली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दीपक करै. इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंड रखे (पीछे) सोने चांदी वगेरे के कलसमें अबोटजल भरके सोनवाणी करै, हाथमें कलस लेके सात नवकार गुणै.॥ ॐ ह्रीं जीरावलापार्श्वनाथरक्षांकुरु२ स्वाहा॥ इस मंत्रसें सात वेर जलको मंत्रके मंडलजीके च्यारों तरफ धारा देवे, ऊपर जरा छींटा देकर पवि करै. धूपखेवै (पीछे) नवतारी मोलीसूत्रका साढातीन आंटा मंडलजीके बाहर करदेवे, पूर्वोक्त मंत्रसें मंत्रके मोली तथा मेंढल मरेडाफली चारुं तरफ बांधे (पीछे) केसरकी कटोरी हाथमें लेके॥ ॐ आँ ह्रीं श्री अर्हतेनमः॥ इस मंत्रसें मंत्रके मंडलके ऊपर केसरका छींटा देवे (ऊपर) चावलोंकों साथियो करै, टीकीदेवे, मंडलके अगाडी साथिया चावलोंका वा नंद्यावर्त्त करके नालेर रुपिया ऊपर भेट धरै. (पीछे) केशरचंदन लेकर मंडलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन करै ॥ (पीछे) वासक्षेप पुष्प हाथमें लेके ॥ ॐ भूर्भुवभूतधात्रीविश्वा

घारैनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलन्नूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासक्षेप हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीँ श्रीं अर्हत्पीठायनमः ॥ इस मंत्रसें सात वेर मंत्रके मंगलपीठकी पूजा करे (पीछे) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन वेर मंगल कों वधावे. नीचे चावलोंका साथिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे (पीछे) स्नात्रिया मंदरके न्नीतरसें प्रतिमाजी लायके त्रिगमेके सिंहासण पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐनमोअर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखायपरमेष्टिने दिग्कुमरीपरिपूजिताय चतुषष्टिसुरासुरेंद्रसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेतिष्ट२ स्वाहाः ॥ इस मंत्रको ९ वेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मंगलप्रतिष्टा करके पीछे सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्केतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अक्षत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै (यथा) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायांजिनेश्वरान् आविर्न्नूतोल्लसद्बोधा नात्रतःस्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ निःशेषदोषेंधनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतून् यजेसमस्तातिशयैकहेतून् श्रीमज्जिनानांबुजकर्णिकायां ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हद्भ्योनमः स्वाहा (इस मंत्रकुं बोलके अर्हत्पदकी पुजा करै. अपने२ जगे सर्व द्रव्य चढावै. पीछे रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धान् सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् निःश्रेयसंपदंप्राप्तान निदधेन्नक्तिनिर्न्नरः ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेगतितःप्रणष्टः दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्यजेशांतिकरान्नराणां ॥४॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सिद्धेभ्योनमः स्वाहा (पूर्व जिसकी तरह सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीछे) रकेबीमें पीला गोटा, पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै (यथा) स्थापयामिततःसूरीन् दक्षिण स्मिनदलेमले चरतःपंचधाचारान् षट्त्रिंसत्गुणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सूरीसदाचारविचारसारा नाचारयंतः स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकानवारणार्थं मन्यर्च्चयाम्यक्षतगंधधूपैः॥६॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सूरीभ्योनमः स्वाहा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीछे) हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालडु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतपन्ना, सर्व द्रव्य लेके खमा रहे. उपाध्याय पद पूजा पढै (यथा) द्वादशांगश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान् पवित्रेपश्चिमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशंप्रशांत्यै पठंतियेन्यान्यपिपाठयंति अध्यापकस्तांनपराब्जपत्रे स्थितान्पवित्रान्परिपूजयामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ उपाध्यायेभ्योनमः स्वाहा (पश्चिमदिशाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछे) स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उम्दकालडु, ५ राजपट्ट, २७ अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै (यथा) व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुभ्रध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान् साधुयासीलसुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्दादशधाशरीरे येषामुदक्चवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदातान्परिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सर्वसाधुभ्योनमः स्वाहा ॥ ५॥ (उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीछे) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व द्रव्य हाथमे ले के खमा रहे काव्य पढै (यथा) जिनेंद्रोक्तमतश्रद्धा, लक्षणोदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनंशुद्धं, न्यस्तमैशानसद्दले ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्दर्शनायनमः स्वाहाः (ईशानकूणमें दर्शनपदकी

थापनापूजा करै इति ॥ पीछै) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वेतवस्त्र, चावलोकालड्डु, आदि सर्व द्रव्य ले खड़ा रहै ॥ काव्य पढै (यथा) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावभासकं ॥ ज्ञानमाग्नेयप त्रस्थं पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानायनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ (अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै॥ इति ॥) फेर) रकेबीमें ७० मोती, स्वेतगोटा, स्वेतधजा, स्वेतवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खड़ा रहे. काव्य पढै (यथा) सामायिकादिभिर्भेदै, श्चारित्रंचारुपंचधा ॥ संस्थापयामिपूजार्थं, पत्रैर्हनैरुतेक्रमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्रायनमः स्वाहा (नैरुतकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥) पीछै) रकेबीमें ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व द्रव्य लेके काव्य पढै (यथा) द्विधाद्वादशधाभिन्नं, पूतेपत्रतपस्वयं ॥ निधाययामिन्नत्त्यात्र, वायव्यांदिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यगतपसेनमः स्वाहाः (वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी थापनापूजा करै इति ॥ अथअर्घ) निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनन्श्रीजिनेंद्रान्सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्टकगुणभृदाचारसाराश्चसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुंदराण्यादिसंज्ञैस्तत्सिद्धयैपाठकानांयतिपतिसहिता नर्च्चयाम्यर्घदाने ॥ १५ ॥ इत्थं अष्टदलंपद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ॥ स्वाहांतैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं असिआउसा सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तपसेभ्यो ह्रीँ श्रीँ अर्हं परमेष्टिन परमनाथ परमदेवाधिदेव परमार्हन् परमानंतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनमः (इति मूलमंत्र) इति सिद्धचक्र प्रथम वलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय वलय पूजा ॥

पहिले वलयमें एक तो बीचमें च्यार दिशिमें च्यार विदि

शांमे एसें अष्टदल कमलके आकार नव कोठे मंगलके मध्य भाग में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै (पीछे) दूसरे वलयमें चूलीके आकार १६ कोठा होय (जिसमें) एकेक कोठाके अनंतर आठ कोठोमें अवर्गादि आठ वर्ग स्थापन करे (और) एकेक कोठा वीचमें खाली रहा है उसमें अनाहतपद ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) एसा पद स्थापन करे (पीछे) एक रकेबीमें मिश्री लवंग (तथा) एक रकेबीमें मोटी दाखां ले के खडा रहे. अनाहत पदमें मिश्री लवंग चढावे और आठ वर्गमें दाखां चढावे (यथा) (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः (ॐ ह्रीं स्वर वर्गायनमः) (इहां) १६ दाख चढावे २ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) मिश्री लोंग ३ क ख ग घ ङ (ॐ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः) १६ दाख चढावे ४ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ५ च छ ज झ ञ (ॐ ह्रीं चवर्गायनमः ॥ ६ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ७ ट ठ ड ढ ण (ॐ ह्रीं टवर्गायनमः) ८ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ९ त थ द ध न (ॐ ह्रीं तवर्गायनमः) १० (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) ११ प फ ब भ म (ॐ ह्रीं पवर्गायनमः) १२ (ॐ ह्रीं णमोअरिहंताणं) १३ य र ल व (ॐ ह्रीं यवर्गायनमः) १४ (ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं) १५ श ष स ह (ॐ ह्रीं शवर्गायनमः) १६ पहिले अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोले२ दाख चढावै सब ९६ (और) य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोमें ६४ चोसठ दाख चढावै इति ॥ दूसरा वलय पूजा ॥ २ ॥

॥ (अब तीसरा वलयमें) चार दिशा चार विदिशिमें आठ परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करे इस आठ कोठाके वीच२ में वलाका तीन२ देवे तीनुं वलाकामें २४ खाना होय एक

के खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणेसें चोवीस घरो में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्टीपदमें (ॐ ह्रीं परमेष्टिनेनमः स्वाहा) एसा ८ वेर कहके ८ बीजोरा चढावे, और लब्धिपदका नाम बोलके खारका ४८ चढावे (यथा) ॐ ह्रीं अर्हंणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोओहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोसव्वोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोकुठ्ठबुद्धीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हंणमोबीयबुद्धीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोपयाणुसारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोदिठिविसाणं ॥ ॥ १० ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसंभिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रींअर्हंणमोसयंसंबुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपत्तेयबुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोबोहिबुद्धीणं ॥ १४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउलमईणं ॥ १६ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोदसपूर्वीणं॥१७॥ ॐह्रींअर्हंणमोचउदसपूर्वीणं ॥ १८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअठंगनिमत्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोविउव्वणइढिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐह्रीं अर्हंणमोविज्जाहराणं ॥ २१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोचारणलद्धीणं ॥ २२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोपन्नासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसप्पियासवाणं ॥२६॥ ॐह्रींअर्हंणमोमहुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोसिद्धायणाणं ॥२९॥ ॐह्रींअर्हंणमोभयवयामहाइमहावीरवद्धमाणबुद्धरिसीणं ॥ ३० ॥ ॐह्रींअर्हंणमोउगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोअखीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐह्रींअर्हंणमोवड्ढमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐह्रींअर्हंण

मोदित्ततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ ह्रीं अ र्हं णमो महातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपरिक्कमाणं ॥ ३९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरबंभयारीणं ॥ ४० ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ ह्रीं अ र्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं ॥ ॥ ४४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो म णबलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचणबलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं अन्यालब्धिपदेभ्योनमः ॥ इस तरे लब्धिपदका नाम बोल२ के नीजे चोथे पांचमें वलयमें ४८ खारका चढावे ॥ (पीछे) मंडलजीके गलेमें ह्रींकारजी स्थापन किया हे (जहांसे) साढातीन लवजाका मंडलजीके चोतरफ देके नीचे (क्रों) एसा अक्षर लिखा हे (जिसके) प्रथम वलयमें आठे दि- शायें आठ गुरुपादुका स्थापन करके ८ आठ दाडिमफल चढाव (यथा) ॐ ह्रीं अर्हत्पादुकाभ्योनमः ॥ १ ॥ अनार चढावे ॥ ॐ ह्रीं सि द्धपादुकाभ्योनमः ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं आचार्यपादुकाभ्योनमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रींगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं परमगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अदृष्टगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अनंतगुरुपादु काभ्योनमः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अनंतानंतगुरुपादुकाभ्योनमः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अष्टगुरुपादुकाभ्योनमः स्वाहाः ॥ इस तरे छठे वलयमें ८ दा डम चढावे (पीछे) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८ देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावे (यथा) ॐ ह्रीं जयायैनमः स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं जंभायैनमः स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं विजयायैनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं थंभायैनमः स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं जयंत्यैनमः स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं मोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अपराजिता

यैनमः स्वाहा ॥ ७ ॥ ॐह्रींअंधायैनमः स्वाहा ॥ ८ ॥ (इसी तरे) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावै (पीछे) आठमें वलयमें १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चांदीके वर्ग लपेटी १६ सुपारी चढावै (यथा) ॐह्रींरोहण्यैनमः ॥ १॥ ॐह्रींप्रज्ञप्तैनमः॥२॥ ॐह्रींवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐह्रींवज्रांकुशायैनमः॥ ४ ॥ ॐह्रींचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐह्रींपुरुषदत्तायैनमः ॥ ६ ॥ ॐह्रीं काल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐह्रींमाहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐह्रीं गौर्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐह्रींगंधार्यैनमः ॥ १० ॥ ॐह्रींसर्वास्त्र महाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐह्रींमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐह्रींवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐह्रींअच्छुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐह्रीं मानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐह्रींमाहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इस तरे आठमा वलयकी बोलके वरक समेत सुपारी चढा के पूजा करै पीछे नवमें वलयके वायें तरफ शासनदेवीयां ॥ २४ की थापना कर पूजा करै ॥ २४ पूंगीफल चढावै (यथा) ॐचक्रेश्वर्यैनमः॥१॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकाल्यैनमः ॥४॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥५॥ ॐश्यामायैनमः ॥६॥ ॐशांतायैनमः ॥७॥ ॐभृकुटियैनमः ॥८॥ ॐसुतारकायैनमः ॥९॥ ॐअशोकायैनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायैनमः॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदर्पाययिनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाण्यैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः ॥ १७ ॥ ॐधारण्यैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १९ ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ पद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायिकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ दक्षिणे तरफ २४ यक्षराजकी स्थापना करै वरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥ (यथा) ॐब्रह्मशांतयेनमः ॥ १४ ॥ ॐपार्श्वायनमः ॥ २ ॥ ॐगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐनृकुटयैनम ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥१६॥ ॐकिन्नरायनमः ॥१५॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायमः ॥ ९ ॥ ॐविजयायैनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरुयैनमः ॥५॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥३॥ ॐमहायक्षायनमः ॥२॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीछे चार दिशामें ४ द्वारपालकी थापना कर के पीला वलवाकुल चढावे (यथा) ॐकुमुदायनमः ॥१॥ पूर्वदिशि ॥ ॐअंजनायनमः ॥२॥ दक्षिणदिशि ॥ ॐवामनायनमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ ॐपुष्पदंतायनमः ॥४॥ उत्तरदिशि ॥ पीछे चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले वलवाकुल चढावै (यथा) ॐमाणभद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपूर्णभद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐकपिलायनमः ॥ ३ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥ ४ ॥ (इस तरे दसमें वलयमें आठु दिशामें ४ द्वारपाल ४ वीर स्थापन करै पीछे पूर्ण कलसके आकार ऊपरसें कियाजैसा सिद्धचक्रजीके गलेके ठिकाणे ठिकाणे नवनिधान पढे, तब सोने चांदीके कलसादिकोमें यथाशक्ति रोकनाणा मालके स्थापन करै) (यथा) ॐनैसर्प्पकायनमः ॥ १ ॥ ॐपांडुकायनमः ॥ २ ॥ ॐपिंगलायनमः ॥३॥ ॐसर्वरत्नायनमः ॥ ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ९ ॥ (इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीछे कोठलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें नंगली का आकार किया है (यहां) ॐह्रींविमलस्वामिनेनमः १ ॥ एसा

कढ़केचढावै ॥ फेर कोद्दलाफल हाथमें ले के बांयेनेत्रके पास वंगलीमें (ॐक्षेत्रपालायनमः) एसा बोलके चढावै २ ॥ पीछे तीसरा कोद्दलाफल) हाथमें ले के नीचै पींढ़िके दक्षिणे तरफ वंगलीमें) ॐचक्रेश्वर्यैनमः (एसा बोलके चढावै ॥ ३ ॥ (पीछे) चौथा कोद्दलाफल हाथमें ले के नीचे पींदेके वांये तरफ वंगलीमें (ॐअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनमः) एसा बोलके चढावै ॥ ४ ॥ (पीछे दसूं दिशामें इंद्रादिक दस दिग्पालकी स्थापन करै. बणसकेतो अपणा२ वर्ण मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि द्रव्य चढावे अथवा सर्वकों एक द्रव्य सर्व समान चढावे (यथा) ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ कनक वर्ण चंदन केसर चंपो द्राख पीलावस्त्र पांन सुपारी रोकद्रव्य आदि सर्व द्रव्य चढावे १॥ (अग्निकूणे) ॐअग्नयेनमः ॥२॥ रक्तवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ (दक्षिणदिसि) ॐयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ (नैरुतकूणे) ॐनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे (पश्चिमदिश) ॐवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व द्रव्य चढावै ५ (वायव्यकूण) ॐवायवेनमः ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ६ ॥ (उत्तरदिसि) ॐकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ (ईशानकूण) ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ (अधोदिसि) ॐनागायनमः ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ९ ॥ (उर्ध्वदिशि) ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढावै ॥ १० ॥ इस तरे दस दिग्पालका स्थापन पूजन करे ॥ (पीछे यंत्रके पींढीके स्थानक नव कोठा किया हुवा हे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करे (यथा) ॐसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ १ ॥ ॐसोमायनमः ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ २ ॥ ॐसोमायनमः ॥ ३ ॥ ला लरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलवर्ण वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥६॥ सपेदवर्णनंदोल वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरंग का वस्त्रादिक द्रव्य चढावे ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरंग का वस्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ए ॥ छींटरंग व स्त्रादि द्रव्य चढावे ॥ ए ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा करै. पीछै स्नात्र नवपदजीकी पूजा पढावे चैत्यवंदन कर गुरु क हकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीछै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर वासक्षेप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीछै यथाशक्ति साध र्मी वात्सल्य करै ॥ इति मंगल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिये (जब) कोइ श्रीमंत उलीकी तपस्या करै तब तो छए महीने मं गल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण भये बाद उछव के साथ मंगलपूजा कराके नव२ उपगरणोंसें उ द्यापन करै. जलजात्रादि अष्टाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारे (फेर) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च ढावे, ऊपिरदिन भावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावे (उर) पंचा यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंगलपूजादिक नवपदपूजा अवश्य विधिसंयुक्त करता रहे ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ प्रथम मौन एकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जंबूद्वीपमें भरत क्षेत्रमें अतीतकाले जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयंद्रस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणाभ्रस्वामीसर्वज्ञाय नमः ॥ २ ॥ श्रीअरमीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनंतनाथसर्वज्ञा

यनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥ ॥ ८ ॥ श्रीकृष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनमः ॥ १३ ॥ श्रीवरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीचंद्रकेतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः ॥ १८ ॥ श्रीहरिहरसर्वज्ञायनमः ॥ १९ ॥ रतमेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥ श्रीशांतिकृतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र प्रभसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ ऋषभनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ सोमकांतसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ अजितचन्द्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे श्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ अथ धातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पंक्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वत्सेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पुंजकेलीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ५ ॥ खेमंकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमूर्त्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ आगमिकसर्वज्ञा० ॥१०॥ दुक्तिनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ महल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ वलंमृत सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेंद्रसर्व ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवांतिसर्वज्ञा० ॥१८ ॥ श्रीकल्पशाकसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीनलमीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥० २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीभानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रभंजणसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५॥ श्रीजलप्रभसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥ श्रीऋषिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुडंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीभूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीतीर्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ धातकीखंडे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीभूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीषेण नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रभानंदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहाघोषसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रभनाथसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्रीभूमिपालसर्वज्ञा०॥ १० ॥ श्रीसुमतिषेणसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीललितांगसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीतीर्थभूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंद्रसर्वज्ञा० ॥१५॥ श्रीसमाधिसर्वज्ञा० ॥१६॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशांकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वरसर्व० ॥ २० ॥ श्रीदेवेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीउद्योतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीकपिलनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रभाकरसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसकलनाथसर्वज्ञा० ॥ ॥ २८ ॥ श्रीशीलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥ ॥३०॥ श्रीसहस्रारसर्वज्ञा० ॥३१॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥३२॥

॥ ओली ४ ॥ पुष्करार्द्धप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेघवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजीवरक्षकसर्वज्ञा० ॥ ॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीमृगांकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीजगत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाम

हेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरनूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार चंद्रसर्वज्ञा० ॥११॥ श्रीवीरषेणसर्वज्ञायनमः ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रन्नसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलन्नद्रसर्व ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय नमः ॥ १ए ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानंदसर्वज्ञाय० ॥ २१ ॥ श्रीवृंदारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचंडातपसर्वज्ञा० ॥२३॥ श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीमहा यशसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीनमोकनाथसर्वज्ञा०॥ २६ ॥ श्रीप्रद्युम्नना थसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनमः ॥ २८ ॥ श्रीपुष्पकेतु सर्वज्ञायनमः ॥ २ए ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा०॥ ३० ॥ श्रीसमतकेतुस र्वज्ञायनमः ॥ ३१ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितियेमहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र नान्नसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्री वयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाबलसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्री वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीन्नी मनाथर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुन्नद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीन्नद्रगुप्तसर्व ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुदयसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयसर्वज्ञा० ॥ १ए ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥ ॥ २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मनूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्त्तिसर्वज्ञा० ॥२६॥

नागेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमद्धीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ कृतब्र ह्मनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पांच भरत पांच एरवत जिननामानि ॥

(जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे जिननामानि) श्रीअजितनाथसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ (धातकीखंडेप्रथमभरते०) सिद्धांतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥ (धातकीखंडे द्वितियभरतेजिननाम) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ॥ ३ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमभरतेजिननाम) प्रभासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ (पुष्करार्द्धेद्वितियभरतेजिननामः) प्रभावकनाथसर्व०॥५॥ (जं-बूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ (धात कीखंडेप्रथमएरवतेजि०) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ (धातकीखंडे द्वितियएरवते) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ (पुष्करार्द्धेप्रथमएरव तेजिनना०) आसाढिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितियएरवतेजि०) श्रीवसिन्नइनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, २८ नीला, ३६ पीला, ५० श्वेत, सर्व संख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद ॥ त-स्पद नामी इंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाग्वेंकासरदातणी, उर धरि समरण शक्ति ॥ सत्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु नि भक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाभ ॥ पूर्वापर त्रवि तेहने, विजय नामको लाभ ॥ ३ ॥ मूलविजय वत्तु प्रतिदिशा, कथनामें बुत्तीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि श्वाधीस ॥ ४ ॥ खंड धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन गिरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ अयतम पुष्कर आं

णिचे, द्वीप सकल गुणखांण ॥ अर्ध भाग जसु जत्तमें, गिरि युग जलद समांन ॥ ६ ॥ भोभवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो बत्तीस ॥ धारो गणित अनुक्रमें, षष्ट्युत्तर शत ईस ॥ ७ ॥ एह अढाइ द्वीपनी, विजयतणो परिमांण ॥ काल चतुर्थ तिहां सदा, भाष्यो श्रीजिनभाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थंकर वारके, विचरया जे जिनराय ॥ ते हूं प्रति विजये भणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ए ॥ (ढाल पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थंकर महाराज ॥ अजित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ भविकजन धरज्यो धर्म सनेह ॥ टेर ॥ १ ॥ अतिशय चौतीस संजुआ जी, वांणी गुण पैंतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥ भ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ विचरया महियल बोधता जी, विजय मझार सनंद ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच२ भरतैरवतैं जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरै जगजन तारता जी, समरयां संपति थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन वरू जी, अतुल सकल गुणखांन ॥ श्यांमवरण सोले कह्या जी, अकल कला द्युतिवांन ॥ भ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिंशत कह्या जी, नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम झलहल भाधरू जी, कनकवरण अत्तीस ॥ भ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित विमल प्रकाश ॥ भविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पचास ॥ भ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, बीस प्रमित जपमाल ॥ त्यक्त कषाय शुभातमां जी, धरिये भाव विशाल ॥ भ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुयां जी, उजमणे निज शक्ति ॥ कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी भक्ति ॥ भ० ॥ ए ॥ ए तपविधि भवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अनुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ भ० ॥ १० ॥ कलश ॥

संवत मूनि सर लोक नारद चंद ज्येष्ट पक्षुर ए, वदि सप्तमी रवि दिसे हितवल्लभ कथनधर न्नूर ए ॥ गुरु खरतरांवर तरणि सन्नि-भ जैनचंद सनूर ए, ए तवन कीधो जीमगंजे श्रमणचंद कपूर ए ॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवनं ॥

॥ अथ कम्मपयडी को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्रकृती—मतिज्ञानावरणीरहितायश्री सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायश्रीसिद्धायनमः २, अवधि ज्ञानावरणीरहितायश्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणरहितायश्रीसि द्धा० ४, केवलज्ञानावरणरहितायसि० ५, (दर्शनावरणकर्मकी नव प्रकृती ए)—चक्षुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्षुदर्शनावरण र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ए, निद्राकर्म रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच ला० १३, थीणद्धी० १४ ॥ (वेदनीकर्म की प्रकति २)—सातावे दनीरहितायश्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, (मोहनी कर्म की प्रकृती १८)—सम्यक्तमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय १८, मिथ्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २२, अनंतानुबंधिलोभर० २३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोभर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०, प्रत्याख्यानीलोभर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर० ३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोभर० ३५, हास्यमोह नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, भयमोह नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुगंछामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर० ४२, पुरुषवेदर० ४३, नपुंसकवेदर० ४४. ॥ (आयुकर्मकीप्रकृती

४)–देवायुरद्दि० ४५, नरायुर० ४६, तिर्यंचायुरद्दि० ४७, नरकायुरद्दि० ४८ ॥ (नामकर्मकी प्रकृति १०३)–देवगति ४९, नरकगति० ५१, तिर्यंचगति ५२, नरगतीरद्दिता० ५०, एकेंद्रीजातिर० ५३, बेइंद्रीजातिर० ५४, तेइंद्रीजातिर० ५५, चौरेंद्रीजातिर० ५६, पंचेंद्रीजातिर० ५७, औदारिकशरीरर० ५८, वैक्रियशरीरर० ५९, आहारकशरीरर० ६०, तेजससरीरर० ६१, कार्मणशरीरर० ६२, औदारिकआंगोपांगर० ६३, वैक्रियअंगोपांगर० ६४, आहारकअंगोपांगर० ६५, औदारिकऔदारिकबंधनर० ६६, औदारिकतेजसबंधनर० ६७, औदारिककार्मणबंधनर० ६८, वैक्रिय२बंधनर० ६९, वैक्रियतेजसबंधनर० ७०, वैक्रियकार्मणबंधनर० ७०, आहारक२बंधनर० ७२, आहारकतेजसबंधनर० ७३, आहारककार्मणबंधनर० ७४, औदारिकतेजसकार्मणबंधनर० ७५, वैक्रियतजसकार्मणबंधनर० ७६, आहारकतेजसकार्मणबंधनर० ७७, तेजसतेजसबंधनर० ७८, कार्मणकार्मणबंधनर० ७९, तेजसकार्मणबंधनर० ८०, औदारिकसंघातन० ८१, वैक्रियसंघातनर० ८२, आहारकसंघातनर० ८३, तेजससंघातनर० ८४, कार्मणसंघातनर० ८५, वज्रऋषभनाराचसंघयणर० ८६, ऋषभनाराचसंघ० ८७, नाराच ८८, अर्धनाराचसंघयणर० ८९, कीलकासंघयणर० ९०, सेवार्त्तसंघयणर० ९१, समचतुरस्रसंस्थानर० ९२, न्यग्रोधसंस्थानर० ९३, सादिसंस्थानर० ९४, वामनसंस्थानर० ९५, कुब्जसंस्थानर० ९६, हुंडकसंस्थानर० ९७, कृष्णवर्णरद्दि० ९८, नीलवर्णर० ९९, लोहितवर्णर० १००, पीतवर्णर० १०१, स्वेतवर्णर० १०२, सुरभिगंधर० १०३, दुरभिगंधर० १०४, तिक्तरसर० १०५, कटुकरसर० १०६, आम्लरसर० १०७, कषायरसर० १०८, मधुररसर० १०९, शीतफरसर० ११०, उष्णफरसर० १११, न्नारीफर

सर० ११२, हलकाफरसर० ११३, परखराफरसर० ११४, सुकमालफरसर० ११५, लूखाफरसर० ११६, चीकणाफरसरहितचा० ११७, नरकानुपूर्वीर० ११८, तिर्यंचानुपूर्वीर० ११९, नरानुपूर्वीर० १२०, देवानुपूर्वीर० १२१, शुभविहायोगति १२२, अशुभविहायोगतिर० १२३, पराघातनामकर्मर० १२४, उसासनामकर्मर० १२५, आतपनामकर्मर० १२६, उद्योतनामकर्मर० १२७, अगुरुलघुनामकर्मर० १२८, तीर्थंकरनामकर्मर० १२९, निर्माणनामकर्म १३०, उपघातनामकर्मर० १३१, त्रसनामकर्मर० १३२, बादरनामकर्मर० १३३, पर्याप्तिनामकर्मर० १३४, प्रत्येकनामकर्म १३५, थिरनामकर्म १३६, शुभनामकर्म १३७, सौभाग्यनामकर्म १३८, सुस्वरनामकर्मर० १३९, आदेयनामकर्म १४०, यशनामकर्म १४१, थावरनामकर्म १४२, सूक्ष्मनामकर्म १४३, अपर्याप्तिनामकर्मर० १४४, साधारणनामकर्मर० १४५, अथिरनामकर्मर० १४६, अशुभनामकर्मर० १४७, दौर्भाग्यनामकर्मर० १४८, दुस्वरनामकर्मर० १४९, अनादेयनामकर्मर० १५०, अयशनामकर्मर० १५१, (गोत्रकर्मकी प्रकृती २) उच्चगोत्र १५२, नीचैर्गोत्र १५३, ॥ (अंतरायकर्मकी प्रकृति ५) दानांतरायकर्मर० १५४, लाभांतरायकर्मर० १५५, भोगांतरायकर्मर० १५६, उपभोगांतरायक० १५७, वीर्यांतरायकर्मरहितायश्रीसिद्धायनमः ॥ ॥ १५८ ॥ इति श्रीकम्मपयडीरा गुणनो संपूर्ण ॥

॥ अथ कम्मपयडी स्तवन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ सेनामात जितारि सुत, श्रीसंभव जिनराज ॥ मूलकरम उत्तर पगड, हणी चंद्र शिवपाज ॥ १ ॥ अष्ट करमकूं क्षय करी, गुण अष्टक निष्पन्न ॥ सादि अनंत स्थिति लही, चिदानंद चिद्घन ॥ २ ॥ तासु चरण प्रणमी करी, कम्मपयडि लिखा

र ॥ वरणुं भविजन हितभणी, प्रवचनने अनुसार॥ ३ ॥ (ढाल ॥ ॥ रामचंदके बाग ए देशी) ॥ अष्ट कर्म तीर्थेश, नांमे भिन्न कह्या री ॥ हेयवस्तु परित्यज्य, आतमगुण ग्रह्या री ॥ १ ॥ नाण दंशण आवर्ण, वेदनी मोह वूरो री॥ आउखो नाम कर्म, कर्मांतराय चूरो री ॥२॥ ज्ञानावरणी कर्म, दर्शनावर्णतणो री ॥ वेदनीय अंतराय, तीस कोडाकोडि भणो री ॥ ३ ॥ नामकर्म गोत्रकर्म, वीस कोडाकोडि हुवे री ॥ आयु सागर तेतीस, हिव मोहनीय सुवे री ॥ ॥ ४ ॥ सत्तर कोडाकोडि सागर मान भणयो री ॥ ए उत्कृष्ट थिति जोड, केवली काल गणयो री ॥५॥ जघन्य स्थिति पंचकर्म, अंतरमुहुर्त्तपणो री ॥ नाम गोत्र दोय कर्म, आठ महुर्त्त गणो री॥ ॥ ६ ॥ अकषाय वेदनी वर्ज्य, वेदनी कर्म वदे री ॥ बारे महूरत मांन, शास्त्रानुसार मुदे री ॥ ७ ॥ नाणावरण अंतराय, पंच२ भेद जुदा री ॥ वेदनीय गोत्र कर्म, दो दो भेद उदारी ॥ ८ ॥ दर्शनावरण नव भेद, आयु च्यार विधे री॥ मोह कर्म अडवीस, सौ त्रिक नाम सधे री ॥ ९ ॥ एकसो अठावन्न, उत्तर प्रकृति कही री ॥ अष्ट करमना जांण, सबे विकल्प सही री ॥ १०॥ ढाल ॥ नण दल चुमले जोवन झिल रह्यो ॥ ए देशी ॥ पाटे सम ज्ञानावरण छे, दर्शनावरण प्रतीहार, भविण कर्म विवेचन कीजिये ॥ मधु लिप्त असिधारानी परे, वेदनी कर्म सुहार ॥ भविय० ॥ १ ॥ मदिराछाक समान छे, मोह सुभट महराण, भवि० ॥ खोडे बंदीखांन सारखो, आयुकर्म प्रमाण॥ भ०क० ॥२॥ चीतारे सम नाम कहीजे, गोत्र कुंभार समांन, भ० ॥ श्रीघर भंडारी सम दाख्यो, अंतराय कुध्यांन ॥ भवि०क० ॥ ३ ॥ अष्ट कर्म ए भावना, वीर वदे व्याख्यान, भ० ॥ कर्म संसार स्वरुप छे, अकरम सिद्धि सुथान ॥ भवि० क० ॥ ४ ॥ मिछ सासादन मिश्र तिनि, देसविरति प्रमत्त,

जि० ॥ अप्रमत्त गुण अंत सवीमें, करमबंध अठ सत्त ॥ जि० क० ॥९॥ अपूरव अनिवृत्ति गुणमें, आयु वरज सत बंध, जि० ॥ सूक्ष्म संपराय दशम ठाणें, विन मोहायु षट बंध ॥ जिवि० क०॥ ६ ॥ उपशम खीण सजोगमें, वेदनी बंध उदार, जि० ॥ अयोगी गुण चवदमें, नही बंधन कर्म द्वार ॥ जि० ॥ क० ॥ ७ ॥ कर्मबंध हेतु कह्या, मिथ्यात अविरत जोय, जि० ॥ क्रोध प्रमुख कषायथी, यो ग युगत च्यार होय ॥ जि० ॥ क० ॥ ८ ॥ पन्नवणा उपांगमें, कर्म स्थिति पद लेय; जि० ॥ कर्म वेद पणवीसमें, कर्म प्रकृति बेद जोय ॥ जिवि० क० ॥ ९ ॥ कम्मपयडी कर्मग्रंथमें, कर्मतणो निरधार, जि० ॥ बंध सत्ता उदीरणा, उदय प्रमुख परकार ॥ जिवि० ॥ क० ॥ १० ॥ इणसो अठावन अधा, चउत्थभत्त तप सार, जिवि० ॥ त प उद्यापन इम करो, पूजा अष्ट प्रकार ॥ जिवि० ॥ क० ॥ ११ ॥ अष्ट ज्ञानोपगरण भला, अष्टमंगल वृ.ध थाल, जिवि० ॥ वात्सल्य चउविह संघनी, यथाशक्ति सुविशाल ॥ जि० ॥ क० ॥ १२॥ इणी रोधन तप करे, कर्म प्रकृतिनो सार, जि० ॥ सुरनर सुख अनुक्रम लही, शिवरमणी भरतार ॥ जि० क० ॥ १३ ॥ कलश ॥ जिन-चंद सूरि मुणिंद खरतर गण ख शशि सम युगवरा, तासु वचनें स्तवन कीधो नवर श्रीवालूचरा ॥ चंद्रानुयोग निध्येक वरष विशद फाल्गुन द्वादशी, उवझाय तत्व प्रधान गणिनें अमृत गति चित नित वशी ॥ १४ ॥ इति श्री कम्मपयडी स्तवनं ॥

॥ अथ नवकार तप स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ चोवीस जिनवर नमी, पंच परमेष्ठि सार ॥ परम मंत्र नवकारनो, महिमा कहुं उदार ॥ १ ॥ ढाल १ ॥ मुनिवर आर्य सुहस्त ॥ ए देशी ॥ समरो श्री नवकार, सार पुण्यतणो, नव निधि सिद्धि आपे सदा ए ॥ महिमा मोटो जास, संकट सब

टले, मिले मनोरथ संपदा ए ॥ १ ॥ अडसठ वरण विख्यात, सात गुरु अक्षर, नव पद आठे संपदा ए ॥ सात सागरनां पाप, जाये अक्षरे, संपूरण पांचसैं मुदा ए ॥ २ ॥ पुष्करवर द्वीपार्द्ध, सिंहावट गांम, पासे परवत कंदरा ए ॥ चोमासी पच्चरकांण, करने तिहां रह्या, दमसार नांमे मुनीसरा ए ॥ ३ ॥ भील भीलणी वेश्र, मन सुध भावसुं, नवकार मुनि पासे भणी ए, बीजे भव राजसिंह, रतनवती रांणी, शिवसुख पांम्या कर्म हणी ए ॥ ४ ॥ रतनपुरी यसोभद्र, सेठतणो सुत, शिव नामा विसनी घणूं ए ॥ अति आदरसुं तात, नवकार सीखव्यो, महामंत्र गुण बहु भणूं ए ॥ ५ ॥ एकदा योगी एक, समसांने ले गयो, शिवकुमार मनमें धर्यो ए ॥ नवकारने परभाव, सबल संकट टल्यो, सोनापुरसो तिण कर्यो ए ॥ ॥ ६ ॥ ढाल २ ॥ चरणकरणधर मुनिवर वंदिये ॥ ए देशी ॥ श्री नवकार तणी महिमा सुणो, पोतनपुर सुभ ठामो जी ॥ सेठ सुभद्र तणी सुता श्रीमती, श्राविका धर्मनो कामो जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ मिथ्यामते किण एक विवहारिये, परणी मनधर रागो जी ॥ धरम न मूंके हणिये मन धरी, कलसमें मूंक्यो नागो जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ साप फीटीने फूलमाला थई, महियल महिमा एहो जी ॥ पिउने कुटंब सहू प्रतिबूझव्यो, साचो धर्म सनेहो जी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ क्षितिप्रतिष्टित बलराजा तिहां, इक दिन वूठो मेहो जी ॥ नदीपूर बीजोरो आवियो, नृपने दीधो तेहो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ स्वाद लही चिठी राजा करी, बीजोराने कांमो जी ॥ व्यंतर भक्ष करे नरने तिहां, ये बीजोरो तामो जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चिठी आवी जिनदाससेठनी, श्रावक शुद्ध विवेको जी ॥ नमस्कार भण बीजोरो ग्रह्यो, बूझव्यो व्यंतर ठेको जी ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ढाल ३ ॥ नमणी खमणी ने मन गमणी ॥ ए देशी ॥ श्री वसंतपुर जितशत्रु राया,

भद्रा नामे नारि सुहाया ॥ चंमपिंगल चोरयो नृप हारा, गणिका ने दीधो मनुहारा ॥ १ ॥ गणिका पहरयो हार ते जाणी, सूली दीधो चोर ते आणी ॥ निज प्रमाद गणिका पठतावे, चोर समीपे गानी आवे ॥ २ ॥ नमस्कार पिंगलने दीधो, तास प्रभावे वंछित सीधो, नृपने घर सुत थइ अवतरियो, पापी चोर एणे ऊधरियो ॥ ॥ ३ ॥ मथुरानगरी जिणदाससेठ, तिहां किण हुंमक पापनी हेठ ॥ एकदा चोरी करतां काढ्यो, राजा हुकमें सूली घाढ्यो ॥ ४ ॥ हुंमक चोर ते प्यासे गाढो, सेठ कने जल मांग्यो टाढो ॥ नौकार दीधो उपगार आंणी, सुर थयो ततखिण धर्म सहिनाणी ॥ ५ ॥ चंपानगरीमें जे कीधुं, सुभद्रा सती निकलंक प्रसीधुं ॥ श्रीनवकार प्रसाद ते जांणो, मनमें एहनी आसति आंणो ॥ ६ ॥ ढाल ४ ॥ भरतनृप भावसुं ॥ ए देशी ॥ अमावसि पूनिम करी ए, वीजली वांधी आकास, नमुं नवकारने ए ॥ १ ॥ वृक्ष उपाडी चलावियो ए, अनुपम महिमा जास ॥ न० ॥ २ ॥ वाठरूया एक चारतो ए, नदिय प्रवाह्यो बाल, न० ॥ नमस्कार मन चिंतव्यो ए, जल फाटो ततकाल ॥ न० ॥ ३ ॥ हत्या चार करी हवे ए, वली करया पाप अनेक, न० ॥ दुटकरवारो एहथी ए, आवे चित्त विवेक ॥ न० ॥ ॥ ४ ॥ मंत्र मांहे मोटो कह्यो ए, लाख गुणे मनरंग, न० ॥ तीर्थंकर पद ते लहे ए, श्रीनवकारने संग ॥ न० ॥ ५ ॥ दिन२ अधिकी संपदा ए, मनवंछित सुख थाय, न० ॥ दयाकुसल वाचक वरू ए, धर्ममंदिर गुण गाय ॥ न० ॥ ६ ॥ इति श्रीनवकारका चोढालिया स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकार तपविधि लिख्यते ॥

शुभदिन गुरूके पास नवकारतप ग्रहण करे. जिस पदका जितना अक्षर होय उतनाही उपवास करे ॥ उस पदका ।२०००।

गुणना करे सो लिखते हे ॥ १ ॥ णमोअरिहंताणं ॥ उपवास ७ ॥ २ । नमो सिद्धाणं ॥ उपवास ५ ॥ ३ । नमो आयरियाणं ॥ उपवा वास ७ ॥ ४ । णमोउवज्झायाणं ॥ उपवास ७ ॥ ५ । णमोलोए सव्वसाहूणं ॥ उपवास ए ॥ ६ । एसोपंचनमोक्कारो ॥ उपवास ८ ॥ ७ । सव्वपावप्पणासणो ॥ उपवास ८ ॥ ८ । मंगलाणंचसव्वेसिं ॥ उपवास ८ ॥ ए । पढमंहवइमंगलं ॥ उपवास ए ॥ एसें नवकार मंत्रका ६८ उपवास करे ॥ किंकप्पत्तरु ॥ वमानवकार अथवा ऊपर लिखा सो स्तवन सुणे. तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति नवपदका उछव करे. चवदे पूर्वका सार इस नवकारके तप प्रभावसें अनेक सुख संपदाकी प्राप्ति होय ॥ इति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक स्तवन लिख्यते ॥

नमिय पयकमल सुभभाव सवि जिनतणा, पंच कल्याण दिण भणिसु जिनवरतणा ॥ कसिण कत्तीतणें पखि पंचमि दिणें, नाण संभवतणो खयकरम चिहुं तणोः ॥ १ ॥ नेमि जिण चवण सुरभवणथी बारसें, पउमपह जम्म वलि दिख्ख तसु तेरसें ॥ वीर सिवमां वसें पखि हिव ऊजलें, नाणसिरि सुविधि अर तीज वार सि मिले ॥ २ ॥ भास ॥ मिगसर वदि रे सुविधि पंचमी जनमि यो, सोइ छठें रे संयमधर सुर पणमियो ॥ दसमी दिन रे वीरे संयम आदर्यो, इग्यारसि रे उपमप्पह सिवसिरि वर्यो ॥ सिर वर्यो मिगसर सुदि दशमी दिण रयणि अरजिन जामीयो, वलि मुगति पिण तिण दिवस पत्तो व्रत इग्यारसि पांमीयो ॥ इग्यारसें वलि मल्लिजिणने जम्म दिख्ख सुनाणीया, वलि मल्लि दिख्खा नाण छठ अंग पोसि वखाणिया ॥ ३ ॥ इहां कारण रे लिखित दोष संभा विये, कइ कोइ रे अवर हेतु पिण भाविये ॥ ते परि नवि रे गीतारथ सद्गुरु लहे, श्रुतकेवलि रे वचन सह सम सद्दहे ॥ सद्दहे

सहूये ते प्रमाणजि वलि इग्यारसि नमितणौ, श्रीनाण कल्याणक चउदसि जनम संभवनों सुणौ ॥ पूनिमें संभव दिख्क पांमी दया धरि जगजीवनी, हिव पोस वदि दसमी इग्यारस जनम दिख्का पासनी ॥ ४ ॥ बारस तिथि रे चंदप्पह जिण जाइयौ, वलि तेरसि रे संजम रंग सुणाइयौ ॥ चवदस दिन रे श्रीशीतल थयो केवली, पोसह सुदि रे छठ विमल नाणी वली ॥ नाणी वलि थयौ नवमि संती अजितनाथ इग्यारसें, चवदसें अभिनंदनें केवल पूनिमें धम्मैं वसें ॥ माहाइ छठे पउम चवियो बारसैं शीतल थयौ, वलि तासु संजम कसिण तेरसि रिसह जिण शिवपुर गयो ॥ ५ ॥ अम्मावसि रे दिवसैं नाण इग्यारमें, जिन पांमी रे माहसुदें हिव अनुक्रमें ॥ सित बीजे रे अभिनंदन वासुपूजनौं, कल्याणकरे जनम गंण अनुक्रम मनों ॥ अनुक्रमें मांनों त्रिहू त्रीजे विमल धरम सुजामिया, श्रीविमल दिख्का चउथि अठमि अजित जतपति पांमिया ॥ नवमियें दिख्का अजित पांमी बारसें अभिनंदनें, श्रीधर्मनाथैं सार संयमसिर वरि तेरसि दिनें ॥६॥ भास ॥ फागुण वदि छठे सुपास केवलसिरि पत्तो, सत्तम वलि तसु मुगति चंद्रप्रभु नाणें जुत्तो ॥ नवमि सुविह जिण चवण रिसह इग्यारसि केवल, बारस सुव्रय नाण जम्म सेयंसह निम्मल ॥ ७ ॥ तेरसि व्रत सिज्जंस तणो चवदस वसुपुज्ज, जम्म हुउ अम्मावसें ए तसु संजम रज्ज ॥ सुकल बीज चउथि अठमिथें अर मल्लि संभव, चवण सुबारसि मल्लि मुगति सुव्रय वय उच्छव ॥ ८ ॥ (ढाल फागनी) चैत्र पढम पख्कि चउथि नाण चवणं पासस्स, पंचमि ससिपह चवण जम्म अठमि रिसहस्स ॥ वलि संजम पिण रिसहसांमि अठमि आदरियो, धवल तीज हिव कुंथुनाथने केवल फुरियो ॥ ए ॥ पंचमि अजित अनंत अने संभवने मुगति, नवमि इग्यारस मुगति नांण वलि पांम्यो सुमति ॥

॥ त्रिशलादेवें वीरनाह तेरसनिसि जायो, पूनिम दिन श्रीपदमनाह केवलसिरि पायो ॥१०॥ ज्ञास ॥ हिव वैसाख वदें पम्हिवा दिन, कुंथु सिद्ध शीतल वीजे दिन, पंचमी कुंथु चरित्र ॥ छठे, श्रीशीतल अवतरियो, दशमैं नमिजिण सिवसिरि वरियो, तेरसि जनम अणंत ॥ ११ ॥ चवदस दिस्का नाण अणंतह, जनम हुउ श्रीकुंथु जिणंदह, वंदह सिवपुर सत्थ ॥ सेत चउथ अभिनंदन उत्तम, धरमनाथ चवियो वलि सत्तमि, अठमि सिद्ध चउठ ॥ १२ ॥ सुमतिनाथ अठमिये जायो, नवमें संयम सांमे पायो, गायो धरि आणंद ॥ दशमें नाण वीरजिण पामी, बारसि चव्यो विमल जगस्वामी, तेरसि अजिय जिणंद ॥ १३ ॥ ढाल ॥ जेठ कसिण पखि छठ, चवियो सेयंस, अठमी सुव्वय जनमियो ए ॥ नवमि सुमति सोपत्त, तेरस चवदसि, संति जम्म सिव वय हुउ ए ॥ धरमनाथ सिव पत्त, धवली पंचमें, नवमें वसुपुज्ज अवतर्‍यो ए ॥ श्रीसुपास जिण जम्म, बारसि तेरसि, जगगुरु संयमसिरि वर्‍यो ए ॥ १४ ॥ ज्ञास ॥ हिवै असाढ वदि चउथि रिसहेस, चवण सत्तमिहि सिरि विमल ॥ मुस्क नवमि नमि वय गहण, सेय छठे चवण ॥ वीरनो अठमि नेमि मुस्क चवदसें श्रीवसुपुज्ज जिणंद, छ सय वर साधु कर परवर्‍यो ए ॥ बहुतर वरस लख पुरि चंपापुरें, करमदहणि मुगति रमणी वर्‍यो ए ॥ १५ ॥ ढाल ॥ श्रावण वदि हिव तीज सुगति सेयंसह पामिय, सत्तमि चविउ अणंतनाह अठमि नमि जामिय ॥ नवमि कुंथुजिण चवण हुउ अइ निम्मल बीजे, सुमति चवण पंचमिह नेमिजिण जम्म ज्ञाणीजे ॥ १६ ॥ छठे मुनिवर नेमि हुय, अठमि सीधो पास ॥ मुनिसुव्वय पूनिमरयणि, चविउ गुणमणि वास ॥ १७ ॥ ज्ञाद्दव वदि सत्तमें संति मसि चवण ज्ञवस्कय, अठमि चविय सुपास नवमि सुहि सुविधि सिवंगय ॥ हिव

आसु वदि तेरसी ए ॥ श्रीवीर जिनेसर मोक्ष ॥ इणे अम्मावसो ए, नांणी नेमीसर ॥ १८ ॥ पूनिम नमि जिणवर चविय, इण पर बारह मासि ॥ श्रीआवस्यक दाखवी, जिण कल्याणक रासि ॥ १९ ॥ जिण चवण जम्म चरित्त केवल नांण शिव प्रापति दिनें, अरिहंत भत्ते सुद्ध चित्ते तप करे जे इक मनें ॥ कल्यांण नीते कोमि पांमी अनुक्रमें सिवसुख लहे, ए हेतु जांणी सुगुरु नांणी एह कल्याणक कहे ॥ २१ ॥ इम पांच भरते ऐरवत करि एक दिन जिनवरतणा, दस कल्याणक हुवे इण दिन सुर करे उच्छव घणा ॥ जिम हूआ ते तिम वली होस्ये पंच कल्याणक सदा, श्री पुन्यसागर कहे खरतर एह आराहो मुदा ॥ २१ ॥ इति श्रीपंच कल्याणक स्तवनं ॥

॥ अथ ऋषिमंडल सुणणेकी वा पूजणेकी विधि ॥

॥ प्रथम आद्यंताक्षर संलक्ष० यह ऋषिमंडल स्तोत्र धूप दीपादि विधि संयुक्त आठ महीने तक प्रभात समय सुणें. ऋषिमंडलमें जो मूल मंत्र है सो शुभ दिन शुभ घमी हाथमें फल फूल भेट शक्ति माफक लेकर गुरुके पास जावे. भेट धरके विनय संयुक्त मूलमंत्र गृहण करै. उसका ८००० आठ हजार जाप आठ महीनेमें करे. आंबिलकी शक्ति होय तो हमेस करै, नहीतो आठम चौदस दो आंबिल जरूर करे. आठ महीने बाद ऊजमणा करै. ऊजमणेके दिन एकसो आठ वेर सुणै. पीछे शक्ति होय तो विधि संयुक्त ऋषिमंमल स्थापन करायके पूजा करै. विशेप भक्ति करे तो २४ प्रकार पूजा करावै, गुरुभक्ती करे, साहमीवछल करै. विशेष विधि गुरुगमसें जाणनी ॥ ऋषिमंमल सुणणेवाले पूजणेवासे भव्यजीवके घरमें कभी उपद्रव नहि होय, सदा आनंद उच्छाह रहे ॥

॥ अथ भगवंतके नव अंग पूजन ॥

॥ दूहा ॥ जल भरी संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥

ऊपन्न चरण अंगूठडो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बले का उसग्ग रह्या, विचरया देस विदेस ॥ खमां२ केवल लह्यो, पूजो जानु नरेस ॥ २ ॥ लोकांतिक वचने करी, वरस्या वरसी दान ॥ कर कंडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमांन ॥ ३ ॥ मांन गयो दोय अंसथी, देखी वीर्य अनन्त, भुजाबले भवजल तरया, पूजो खंध म हंत ॥ ४ ॥ रत्न त्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विसरांम ॥ नाभिकमलनी पूजना, करतां अविचल धांम ॥ ५ ॥ हृदयकमल उपशम बले, बाल्यो राग ने द्वेप ॥ हेम दहे वनखंडनें, हृदयकमल संतोप ॥ ६ ॥ सोल पहर देइ देसना, कंठ विवर वरतूल, मधुर ध्वनी सुर नर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥ तीर्थंकर पद पून्यथी, त्रिभुवन जन सेवंत, त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥८॥ सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ॥ वसिया तिण कारण विभू, शिरशिखा पूजंत ॥९॥ उपदेशक नव तत्वना, तिम नव अंग जिणंद, पूजो बहु विध भावसी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति नव अंगपूजन दुहा ॥

॥ शिक्षा दोहा ॥

जीवडा जिनवर पूजिये, पूज्याना फल होय ॥ राजा नमें परजा नमें, आण न लोपे कोय ॥ १ ॥ कुंभे बांध्यो जल रहे, जल विन कुंभ न होय ॥ ज्ञांनें बांध्यो मन रहे, गुरु विन ज्ञान न होय ॥ २ ॥ गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विन घोर अंधार ॥ जे गुरुवाणी वेगला, रडवडिया संसार ॥ ३ ॥ भावे जिनवर पूजिये, भावे दीजे दांन ॥ भावें भावना भाविये, भावें केवलज्ञान ॥ ४॥ पांच कोडीनें फूलडे, पांम्या देश अढार ॥ राजा कुमारपालने, व रत्या जैजेकार ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ नव पदो के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवंदन ॥

जय२ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥१॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षय कृत मल रासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविन्यासी ॥ ॥ २ ॥ अंतरंग रिपुगण हणी ए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकजमें रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ जंकिंचिंनाम-तित्थं० नमोर्हं० ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तवनं ॥

पूजो मनरली हां हो दादा कुशल सूरिंद ॥ ए चाल ॥ श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्रीअरिहंत ॥ मन मानले ॥ अष्ट समयमें समय तीन, सर्व आहारथी होवे हीन ॥ म० ॥ १ ॥ बादरकायें मन वच जोग, तनु२सें फुन ह्ढ तनुयोग ॥ म० ॥ सुक्ष्मकायतें मन वच रोक, निज वीर्यें ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्रके मन व्यापार, बेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय रह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥ ॥ ३ ॥ एणां योगथी समयें एक, हीना संख गुणा कर छेक ॥ म० ॥ समयासंखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ चेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण समे देव, आपो सा जगकूं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहंतपद स्तवनं ॥

॥ अथ अरिहंत पद थुई ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपो जी, केवल ग्यानकी ज्योति प्रकाशक अनंत गुणे करि पूरो जी ॥ ताजें भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरो जो, बारे गुणां करि एहवा अ रिहंत आराधो गुण नूरो जी ॥ इति अरिहंत पद थुई ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिंनत जागी ॥ पुब पजयपसंग सें, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो निगुण निरागी ॥ चेतनजूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाणथी ए, रूपातीत स्वजाव ॥ सिद्ध जये तसु हीरधर्म, वंदे धरि शुज जाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवं० ॥

॥ अथ सिद्धपद स्तवनं ॥ थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली ॥ ए चाल ॥

अष्ट वरस नग मांत हीना कोमी पूर्वमें, म्हारा लाल ही० ॥ जत्कृष्टो करे वास सयोगी धाममे, म्हा० स० ॥ अजोगीके अंत तजै जवतव्यता, म्हा० त० ॥ शैलेसी लहे कर्म दलै गुण श्रेणिता, म्हा० दलै० ॥ १ ॥ ह्रस्वाक्षर पंच काल रहे ते योगमें, म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अंत करीने अंतमें, म्हा० क० ॥ गमन करे नगरऊसें अक्रिय होयनें, म्हा० अ० ॥ पुब पयोग असंग स्वजाव अबंधने, म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इक्कु गुण नव परमाण योजन लखें कही, म्हा० यो० ॥ वर्त्तुल विशदाजास निरालंबन सही, म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ट घनाकृति अंतमें, म्हा० घ० ॥ मखी पक्खथी हीन जणी सिद्धांतनें, म्हा० ज० ॥ ३ ॥ तनुपप्नारा नाम सिलासें जोयने, म्हा० सि० ॥ जुग लोचनमें जाग अलोककुं स्पर्शनें, म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहणा, म्हा० प्र० ॥ वृद्धि धनु शत पंच गुणासें हीनता, म्हा० गु० ॥ ४ ॥ मिलिया एकमेंनंत अवाधा ना लही, म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिद्धि जो सही, म्हा० सि० ॥ बीजो पद श्रीसिद्ध धरो म नगहमें, म्हा० ध० ॥ कुशल जये जगजीव मिलोगा तेहमें, म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवनं ॥

॥ अथ सिद्धपद थुई ॥

अष्ट करमकूं धमन करीनें गमन कियां शिवगामी जी, अ-

व्याबाधे सादि अनादि चिदानंद चिदरासी जी ॥ परमातमपद पूर-
ण विलासी अघ घन दाघ विनासी जी; अनंत चतुष्टमय शिव
पद ध्यावो केवलज्ञानी न्नासी जी ॥ १ ॥ इति सिद्धपद थुई ॥

॥ अथ तृतिय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिनपद कुल मुख रस अनिल; मित रस गुण धारी ॥
प्रबल सबल घन मोहकी, जिणतें चमुहारी ॥१ ॥ रुज्वादिक जि
नराज गीत, नव तन विस्तारी ॥ न्नवकूपें पापें पम्त, जगजन
निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके, आचारजपद सार ॥ तिनकुं
वंदे हीरधर्म, अठोतर सो वार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवनं ॥ नणदल वींदली ये ॥ ए चाल ॥

खंती खम्गथी जेणे, हण्यो क्रोध सुन्नट सम देणे हो, गण
पति गुण पेखी ॥टेर॥ मान महा गिरि वयरे, अति शोन्नन मद्दव वयरे
हो ॥ ग० ॥१॥ दंन्नरूप विसवेली, वर अज्जव कीलें ठेली हो ॥ ग० ॥
मुत्तीवेलथी न्नरियो, लोहसागर मुत्तें तरियो हो ॥ ग० ॥२॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण दमसम जंत्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह माहा
मल्ल ताड्यो, पुण वैराग मुगरें पाड्यो हो ॥ ग० ॥३॥ दोस गयंद
वस कीनो, धर न्नपशम अंकुस लीनो हो ॥ ग० ॥ अंतरंग रिपु न्नेद्या,
सुरवर पिण जिण णिपेद्या हो ॥ ग० ॥४॥ रस कृति गुणथी लीणो,
सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद एहवो, धरी जी
व कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद थुइ ॥

॥ पंचाचारकुं पालें न्नजवालें दोष रहित गुणधारी जी, गु
ण बत्तीसे आगमधारी द्वादस अंग विचारी जी ॥ प्रबल सबल घन
मोह हरणकुं अनिल समो गुण वाणी जी, क्षमा सहित जे संज
म पालें आचारज गुण ध्यानी जी ॥ १ ॥ इनि थुइ ॥

॥ अथ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । सठता घन भंजन । जिन वर दिसत डुवाल संग । कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद । सुय शृणि कियगंजण । कुणालंघ लोय लोयणें । जत्थय सुय मंजण॥२॥ महा प्राणमें जिन लह्यो ए।आगमसें पद तुर्य । तिनपें अहनिश हीर धर्म । वंदे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवनं ॥ सांवलिया अलगा रहोनें ॥ ए देशी ॥

॥ हुयने२ दूरी हुयने, चेतन भापें सठने, दूरी हुयने ॥ तुं मुझ पास क्यूं आवे, दू० ॥ तुझनें कुण वतलावे, दू० ॥ए आंकणी ॥ तो संगें निज पंचेंडीनो, रचना चरम भुलाणो ॥ नाणावरणी खयउपसमसें, भावेंडी मंझाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ इव्यै ते परजासें फीना, जातिनाम व्यपदेश ॥ एवंतो गो तुरग गजादिक, किण क मैं उपदेश ॥ दू० ॥२॥ इत्यादिक वहु मुझकुं संका, तेरे संगे ला गी ॥ नीलवर्णकी समता सेती, में भयो तोसुं रागी॥ दू० ॥ ३॥ उप कहिये हणियो भवियानो, अधियां लाभतआय॥ आधीनांमन पीझानामें, मायोयेंनविलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधिक्ये स्मरीयै वर आगम, सूत्रसें ते उवझाय ॥ तत् सेवातें हणि सठताकूं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवनं ॥

॥ अथ उपाध्यायपद थुइ ॥

॥ अंग इग्यारै चवदे पूरव गुण पचवीसना धारी जी, सूत्र अरथधर पाठक कहियै योग समाधि विचारी जी ॥ तपगुण सूरा आगम पूरा नय निक्षेपै तारी जी, मुनिगुण धारी वुध विस्तारी पाठक पूजो अविकारी जी ॥ १ ॥ इति उपाध्यायपद थुइ ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमसाधुपद चैत्यवंदनं ॥

॥ दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्ल शुचि चक्रसें, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्ततें,

नये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत, समदम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुति घन गुणगण भरयो ए, पंचम पद मुनिराज ॥ तत्पदपंकज नमत है, हीरधर्मके काज ॥ इति ॥

॥ अथ साधुपद स्तवनं ॥ मालनर मति कहो ॥ ए देशी ॥

॥ निकषाया जगजन कहै, धारे चउगति वसनसें रोस हो, मुनिंदजी ॥ राग हीण भय तूं करै, साहिबा शिवरमणीसें हेत हो मुणिंदजी ॥ १ ॥ सर्व प्रमाद तजी रहै, सा० छठे पूरव कोम हो मु० ॥ शत सोगम आगम करै, सा० लघु काले गुण आदि हो मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धीनिद्रा उदै, सा० पांमे कर्म निकंद हो मु० ॥ प्रचलानिद्रामें रही, सा० बारम गुणनो वास हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरै, सा० जो गुण संख्यातीत हो मु० ॥ तो पिण तिण जगमें लही, सा० त्रिक घन गुणनी ख्यात हो मु० ॥ ॥ ४ ॥ रयण त्रयसें शिवपथें, सा० साधन पर वर जीव हो मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्ममें, सा० कुशलु भवतु जगतीव हो मु० ॥ ५ ॥ इति साधुपद स्तवनं ॥

॥ अथ साधुपद थुइ ॥

॥ सुमति गुपति कर संजम पालै दोष बयालीस टालै जी, षट् काया गोकुल रखवाले नव विध ब्रह्मव्रत पाले जी ॥ पंच महाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवाले जी, क्षपकश्रेणि कर कर्म खपावै दमपद गुण उपजावै जी ॥ १ ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ दुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तव करि लहै, सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उपसम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण, नही हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्री सुदेव गुरु धर्मनी ए, रुचि लक्षन अभिरांम ॥ दरसनकुं गणि हीरधर्म, अहनिस करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोरि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध नणयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज सप्तम नरक नलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तापे तप्त, बोधही गंद लहेरी ॥ उपशम क्षायक वेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ नवसायर हे अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद नावे अप्रमाण, नाण चारित्र भलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाभे कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपन्नत्ततत्त सूधा सरधै समकित गुण उजवाले जी, नेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावे जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य नाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो नवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ नाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ नव गुण पज्जवि उहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल नांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीरधर्म, नित चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अंगि उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर नाषित आगम नणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, नविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ नक्षानक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणे जेग विचार जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुतने मति दोय छे इंद्री सारु,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ नहीं मण केवल हे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्स बलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुभ अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंदी जनित कहियै लहियै गुण गंभीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकूं वंदो पूजो भविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुगर समितेंद ॥ नमन करें शुभ भाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दे सुख अमंद ॥ २ ॥ इख कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदाभास निरसंग ॥ सुग्यानी साभलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करे, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥१॥ स्पर्ध्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव ॥ सु० ॥ करवा जोगसुधामता, लब्धा संख स्वभाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो गर्भ, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते होत जाण । सु० ॥ ३ ॥ मदकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ आमा धम्य प्रकाशना, मम एभूतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तहो धन रूपी भलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर धन मिल पद

॥ अथ दर्शनपद स्तवनं ॥ रामचंदके बाग आंबो मोरि रह्यो री ॥ ए चाल ॥

॥ देव श्री जिनराज, गुरु ते साध नएयो री ॥ धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लक्षण बोधितणो री ॥ १ ॥ बोधि लाभके काज सप्तम नरक नलो री ॥ तेण विना सुरलोक, तातें अधिक बुरो री ॥२॥ मिथ्या तपे तस, बोधही ठांद लहेरी ॥ नपशम कायक भेद, ईश्वर तीन कहे री ॥ ३ ॥ नवसायर हे अपार, फुण अस्ताघ कह्यो री ॥ जसु लाभे ते होय, गोसपद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद नावे अप्रमाण, नाण चारित्र नलारी ॥ बोधधर्ममें जीव, लाभें कुशल कला री ॥ ५ ॥ इति दर्शन पदं ॥

॥ अथ दर्शनपद थुई ॥

॥ जिनपसत्ततत्त सूधा सरधै समकित गुण नजवालै जी, नेद भेद करि आतम निरखो पशु टाली सुर पावै जी ॥ प्रत्याख्याने सम तुल्य नाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दरशनपद नित२ वंदो नवसागरको तीरा जी ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाण ॥ नाव मिलापसें जिन जनित, सुय वीस प्रमाण ॥ १ ॥ नव गुण पञ्चविजुहि दोय, मण लोचन नांण ॥ लोकालोक स्वरुप जाण, इक केवल नांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीरधर्म, नित्त चाहत अवकास ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तवनं ॥ म्हारे अति उछरंगे ॥ ए चाल ॥

जिनवर नाषित आगम नणिया, तत्व यथास्थित गमिया जी ॥ म्हारे जगजन तारू ॥ ते नत्तम वर नाण कहावे, नविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ नक्षानक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रंथा जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अजित हितधारी, जाणें जेस विचारा जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुते मनि दोय छे इंद्री तारू,

तेण परोक्ष विचारू जी ॥ म्हा० ॥ उही मण केवल हे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अयविजस्स वलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसायें, धारी शुन्न अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणकुं विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें न्नवि जन हरखे, निसदिन कुशलता निरखै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपद थुई ॥

मति श्रुति इंडी जन्नित कहियै लहियै गुण गंन्नीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादस अंग विस्तारो जी ॥ अवधि मनपर्यव केवल वलि प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकुं वंदो पूजो न्नविजनने सुखकारो जी ॥ १ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ चारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसायें साहु पाय, जुग२ समितेंद ॥ नमन करै शुन्न न्नाव लाय, फुन नरपति वृंद ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय, करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै सुरक अमंद ॥ २ ॥ इखु कृति मान कसायथी ए, रहित लेस सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकूं हीर धर्म, नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ निर्विकल्प अज निर्गुणी, चिदान्नास निस्संग ॥ सुग्यानी साञ्नलो ॥ टेर ॥ मूर्त्ति हीन चेतन करे, रूपी पुदगल रंग ॥ सु० ॥ १ ॥ स्पर्धक कारण वर्गणा, कार्य कारण न्नाव ॥ सु० ॥ रूत्वा जोगसुधामता, लब्धा संख स्वन्नाव ॥ सु० ॥ २ ॥ पर्याप्ता लघु जो गर्भे, वृद्धि लहे जगमान ॥ सु० ॥ मध्यें वसु समयें लहे, अंते हाते जाण । सु० ॥ ३ ॥ सहकारी मानसमुखा, कारण रम्य वलेण ॥ सु० ॥ मात्रा धम्म प्रकारता, सम एन्नूतका तेन ॥ सु० ॥४॥ तहो धन रूपी न्नलो, चेतन संजम धाम ॥ सु० ॥ कर यन मिल पत्र

धर्ममें, कुशल नवतु अभिराम ॥ सु ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवनं ॥

॥ अथ चारित्रपद थुई ॥

॥ कर्म अपचय दूर खपावै आतम ध्यान लगावे जी, भारे नावना सूधी नावे सागर पार उतारे जी ॥ खट खंरू राजकूं दूर तजीनें चक्री संजम धारे जी, एहवो चारित्रपद नित वंदो आतम गुण हितकारे जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीऋषनादिक तीर्थनाथ, तन्नव सिव जाण ॥ त्रिहि अं तेरपि वाह्य, मध्य द्वादस परिमाण ॥ १ ॥ वसुकर मित आमो स ही, आदिक लब्धि निदान ॥ नेदें समता युत खिणें, हणघन कर्म विमान ॥२॥ नवमो श्रीतपपद नलो ए, इछारोध सरूप ॥ वंदनसें नित हीरधर्म, दूर नवतु नवकूप ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद स्तवन ॥

॥ बारस नेद नएया जिनराजे, बाह्य मध्यतणा जग काजें रे ॥ म्हारे शिवपदश्रेणि ॥ ए आंकणी ॥ तिण नव सिद्धितणा वर ग्याता, जिनवर पिण तपना कर्त्ता रे ॥ म्हारे शि० ॥ १ ॥ स मता सहितें जिनतें नारी, नली कर्मचमु पिण हारी रे ॥ म्हारें शिवपदश्रे० ॥ जीव कनकसें कर्म कचोरा, दहे तप पावकका जोरा रे ॥ म्हारे शिव० ॥ तप तरुवरना कुसम है ऋद्धि, देव नरनी फल ते सिद्धि रे ॥ म्हारे शि० ॥ पाप सकल हे तमनी रासी, तप नानुसे जायें नासी रे ॥ म्हारे शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसायें लद्दिगे वारू, लब्धा सगली जगहितकारू रे ॥ म्हा० ॥ अति उक्कर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ इछा रोधन रूपी कहियै, तपपदही चैतन वहियै रे ॥ म्हा० ॥ पावक आहीरधर्म रूपासे, नवपद कुसलाकूं नासे रे॥ म्हारे शि० ॥५॥ इति॥

॥ अथ तप पद थुई ॥

इच्छारोधन तप ते जाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य जावसे द्वादश दाखी जोग समाधी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख जाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन स्तुति ॥

श्रीमदृषज सर्वज्ञ, वृषजांक सुवर्णरुक् ॥ जय देवाधि देव.द्दा, नाजिराजेंद्र नंदनः ॥ १ ॥ युगस्यादौ स्वयायेन, ज्ञानत्रय युते न यत् ॥ जनन्या मरुदेवायाः, पावनं जठरं कृतं ॥ २ ॥ इति ऋषज स्तुति ॥ अर्हताजितनाथेन, गज लांछन शालिना ॥ जितसत्रु महीपाल, पुत्रेण कनकत्विषा ॥ ३ ॥ विजयाकुक्षि रत्नेन, जगवं-स्त्वयका जिनः ॥ जिता रागादयोयेन, वंदेत्वां सर्वदा मुदा ॥ ४ ॥ इत्यजित स्तुति ॥ जितारिनृपतेर्वर्यात्, संजवः संजवाजिधः ॥ सेनाया नंदनो हेम, वर्णो गंधर्व लांछनः ॥ ५ ॥ सर्वसौख्यप्रदो मुख्य, ज्ञान दर्शन संयुतः ॥ मुनीनां पुंगवो देवो, नित्यं दिसतुमांजिनः ॥ ॥ ६ ॥ इति शंजव स्तुतिः ॥ सिद्धार्था नंदनं सार्वं, वीतरागं जग-त्पतिं ॥ श्रीसंवर समुत्पन्नं, प्लवगांकं हिरण्यजं ॥ ७ ॥ अजिनंदन नामानं, विशुद्ध हृदयं सदा ॥ यस्तौति परया जक्त्या, सनालोकेजि नंद्यते ॥ ८ ॥ इत्यजिनंदन स्तुति ॥ मेघाजिध धरि त्रीस, तन यो मंगलप्रदः ॥ क्रौंच लक्षण जृद्धेम, मरीचिर्मंगलांगजः ॥ ९ ॥ सत्वं सुमतिनाथेश ॥ सुमतिं ततु सत्तमां ॥ जविनां पुण्य कर्तॄणां, स्वर्ग सौख्या वलि प्रदं ॥ १० ॥ इति सुमति स्तुतिः ॥ सुसीमापुत्र सत्कोक, नवद्युति धराधर ॥ धराजिव नृपोद्भूतः, पद्म लक्षण धारकः ॥ ११ ॥ जवाब्धौ जव संकीर्णे, डुस्तरे पततां नृणां ॥ त्राणाय सततं देव, पद्मप्रज जिनेश्वर ॥ १२ ॥ इति पद्मप्रज

स्तुति ॥ श्रीसुपार्श्वोभिधोदेवः, पृथ्वीजः स्वस्तिकांकभृत् ॥ प्रतिष्ठ नृप संजात, श्चामीकर करो जिनः ॥ १३ ॥ समुद्र इव गंभीरः, कर्माणां छेदने परः ॥ यः सार्वः परमब्रह्मा, रतं नौमि सदा विभुं ॥ १४ ॥ इति सुपार्श्व स्तुतिः ॥ चंद्रप्रभ प्रभोकांत, चंद्र लक्षण संयुतः ॥ तमापतिश्च विज्ञान, तमोव्यूह विनाशनः ॥ १५ ॥ संसार जलधेर्नाथ, महसेन नृपोभव ॥ लक्ष्मणा पुत्रमां स्वामि, भव केवल बोधभृत् ॥१६॥ इति चंद्रप्रभु स्तुति ॥ (अत्राद्य श्वत्रबंधः श्लोकः) ॥ संस्तुतोवोददत्वाशु, सुरासुरनरेश्वरैः ॥ सुविधिर्वोवितशर्म्म, सुग्रीवनृपनंदनः ॥ १७ ॥ यस्यासीज्जननीरामा, माननीयादिवौकसां ॥ मानमुक्तोवदातोयो, मायौमकरलांछिनः ॥ १८ ॥ इति सुविधनाथ स्तुतिः ॥ (चामरबंधाविमौ) ॥ श्रीमच्छीतलनाथेश, नन्दादृढरथात्मजः॥भास्वत्सुवर्णवद्देह, श्रीवत्सांछांकधारक ॥ १९ ॥ त्वदीयचरणांभोज, सेवकानांवपुर्भृतां ॥ प्राकृतंवृंजनव्यूहं ॥ दुष्टंशंभोयदेविभौ ॥ २० ॥ इति शीतलनाथ स्तुतिः ॥ विष्णुर्वंशार्कवद्देवो, विष्णुपुत्रोहिरण्यभः ॥ श्रेयोवृद्धिकरोलस्त्वं, खड्गलांछिनभृज्जिनः ॥ २१ ॥ हित्वाकर्मरिपुन्सार्वं, श्रेयांसश्रेयसैः सेह ॥ परज्ञानमयेनत्वं, महानन्दपदंपरं ॥ २२ ॥ इति श्रेयांस स्तुतिः ॥ ११ ॥ वरोवार्त्तितरामीहा, भवतांश्यदि ॥ झटितिश्छेदितुंचित्ते, भोभव्याः प्राप्तुमक्षरं ॥ २३ ॥ तदाभजध्वमेनंहि, वासुपूज्यजयासुतं ॥ वसुपूज्यकुलोत्तंसं, महिषांकंचरक्तभं ॥ २४ ॥ इति वासपूज्य स्तुतिः ॥ १२ ॥ श्रीमद्विमलनाथेद्र, कृतवर्मसमुद्भवः ॥ शूकरांकधरस्यामा, पुत्रकल्याणदीधिते ॥२५॥ चंद्रवद्विमलज्ञान, त्वदाचस्मरणंविना ॥ कुर्वन्नप्येतिनोब्रह्म, प्रक्रियांनातिविस्तरां ॥ २६ ॥ इति विमल स्तुतिः ॥ १३ ॥ हेमवर्णस्यपुत्रस्य, सुयशासिंहसेनयोः ॥ देवस्यश्येनचिह्नस्य, वर्यानन्तगुणोदधेः ॥ २७ ॥ इंद्राद

योपियस्यांतं, गुणानांलेभिरेनहि ॥ अनन्तस्यगुणान्तस्य, क्रमोवक्तुं नरः कथं ॥ २८ ॥ इत्यनंत स्तुतिः ॥ १४ ॥ सुव्रतापूत्रवज्रांक, भानुवंशार्कसन्निभः ॥ कनकप्रभसर्वज्ञ, धर्मनाथाभिधेश्वरः ॥ २९ ॥ तवागोपिपुरश्चारी, भूतलेधात्यशोकतां ॥ अनुत्तरफलाः संति, सतां संगतयोपिहि ॥ ३० ॥ इति धर्मनाथ स्तुतिः ॥ विश्वसेनधराधीसं, नन्दनंमृगलक्षणं ॥ आचिरेयंसुवर्णानां, कलायामिजिनेश्वरं ॥ ॥ ३१ ॥ तंश्रीमच्छांतिनामानं, यस्याग्रेकुर्वतेमुदा ॥ प्राज्यांसुमनसां वृष्टिं, विबुधाविबुधप्रियां ॥ ३२ ॥ इति शांतिनाथ स्तुतिः ॥ श्रीसुतायाः श्रियपुत्र, श्रेयस्करहिरण्यभ ॥ सूरिभूपतिसंजात, छागलक्षणधारकः ॥ ३३ ॥ कुंथुनाथजिनेशस्य, तीर्थंकरजगत्पते ॥ मदीयं पापसंदोहं, भवांतरकृतंघनं ॥ ३४ ॥ इति कुंथुनाथ स्तुतिः सुदर्शननृपोभूतं, नंदावर्त्तांकसंयुतं ॥ अंभोजदभिरालेपं, देवीपुत्रसुवर्णाभं ॥ ३५ ॥ जगन्मुख्यागुणाः सर्वे, धुर्य्यंप्रभुतयाजिनं ॥ चरीकर्म्मिनमस्तमा, अरायपरमात्मने ॥ ३६ ॥ इत्यरनाथस्तुति ॥ १८ ॥ कुंभप्रभावतीपुत्रौ, नीलवर्णोघटांकभृत् ॥ जगन्मित्रइवध्वान्त, नाशनाहिदितःसदा ॥ ३७ ॥ यत्रत्रयस्तुतोभाति, देवयोविष्टपत्रये ॥ तस्यश्रीमल्लिनाथस्य, स्मरणेनसुदासखे ॥ ३८ ॥ इति मल्लिनाथ स्तुतिः ॥ सुमित्रनृपतेःसूनो, पद्माकुक्षिपवित्रकृत् ॥ कुर्म्मलक्षणभृत्कर्म्म, दायकस्यामलत्रये ॥ ३९ ॥ मुनिसुव्रतदेवेन, क्षीणकर्म्मारिमंस्तल ॥ देहित्वंमेव्ययीभावं, पदंतत्पुरुषोत्तमः ॥ ४० ॥ इति मुनिसुव्रत स्तुति ॥ २० ॥ श्रीमद्विजयभूपाल, कुलोत्तंसहिरण्यरुक् ॥ वप्रासुतनमिनाथ, नीलोत्पलसदंकभृत् ॥ ४१ ॥ यस्तेपंचजनोदेव, निन्दाचकुरुतेश्वयं ॥ सएतिपरमज्ञानं, कोपिनह्यत्रसंशयः ॥ ४२ ॥ इति नमिनाथ स्तुतिः ॥ २१ ॥ शिवायास्तनयेवर्ये, समुद्रविजयोभवे ॥ हरिवंसहरोशंभो, शंखांकिकमलप्रभे ॥ ४३

॥ त्यक्तराजीमतीस्नेहे, नेमनाथेजितेस्मरे ॥ सिद्धिप्रमदयामाला, प्र त्यक्षेपिजिनेश्वरे ॥ ४४॥ इति नेमनाथ स्तुतिः॥२२॥ अश्वसेना ख्यभूपाल, सुतेनपरमेष्ठिना ॥ वामेयेनहितायेन, कमठस्याभिमान ना ॥ ४५ ॥ तस्मैश्रीपार्श्वनाथाय, नमोस्तुमामकंसदा ॥ पवनास नचिन्हाय, नीलवर्णायसंभवे ॥ ४६ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः॥ श्रीमत्सिद्धार्थवंशार्क, त्रिशलेयजगत्मणे ॥ महानादध्वजार्हत, क ल्याणंकरसर्वदा ॥ ४७ ॥ चरमस्तीर्थकृद्वीर, मोहेभदननेमृगात् ॥ स्वभक्तिदत्तचित्ताय, कमलांदेहिमेजिन ॥ ४८ ॥ इति वीरप्रभुस्तुतिः ॥२४॥ इति श्रीक्षमाकल्याणोपाध्याय कृत चतुर्विंशति जिन स्तुतिः॥

अथ नवपदजीके उलीके देववंदनमें कहणेका चैत्यवंदन प हली लिखा है ॥ ॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमां, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधी, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ एहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ०॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय॥ अहो सु०॥ आचारज तीजे पदे, वंदू अधिकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ अ० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांचमे, प्रणमुं चरणभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें ओलखें, श्रुत श्रद्धा आवे रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आ-

तम शुज्ञ ज्ञावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठमें चारित्रपद नमो, परज्ञाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खंत्यादिक दस धर्मनो, जेद ठे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ए ॥ नवमे वलि तपपद नमो, वाह्याज्यंतर ज्ञेदे रे लोय ॥ अ० वा० ॥ बांध्या काल अनंतना, जे कर्म्म उछेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावे शुज्ञ ज्ञावे रे लोय ॥ अ० ध्या० ॥ नृप श्रीपालतणी परे, मन वंछित पावे रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंबिल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिवकमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥ ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे, वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० ॥ व० ॥ श्रीजिनलाज्ञ कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० ॥ अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्तवनं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनंत महागुणी जी, परमानंद सरूप ॥ ज्ञविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यो नवपद ध्यान ॥ ज्ञ० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्री आचारज गणधरू रे, गुण ठत्तीस निवास ॥ पाठक पदवर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ ज्ञ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोज्ञता जी, साधू समतावंत ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी, ज्ञान प्रकाश अनंत ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥ संवर सावना चरण ठे रे, तप उत्तम विधि होय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ समृत मम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनुज्ञव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ३ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, जविका न० ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न० ॥ १ ॥ मंत्र जमी अरु तंत्र घणे रा, इन सबकुं विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य जं मार जरो रे ॥ न० ॥ २ ॥ अष्टसिद्ध नवनिधि मंगलमाला, संपति सहज वरो रे ॥ लालचंद याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरो रे न०॥३॥

॥ अथ नवपद स्तवन ४ थुं ॥

जीया चतुरसुजाण नवपदके गुण गाय रे, जी० ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पार न पाय रे ॥ जी० ॥ १ ॥ जो अपणे आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी० ॥ करम निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इन को पुष्ट आलंबन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी० ॥ इय जिन जए आगामी होयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी० ॥३॥ इति ॥

॥ अथ नवपद स्तवन ५ मुं ॥

जिन नित नमो, नित नमो नमो नमो, जि० ॥ अरिहंत सिद्ध उर आचारज, उवझाया मन गमो२ ॥ जि० ॥ १ ॥ सर्व साधू मंगल ए पांचू, याहीसें दिल रमो२ ॥ जि० ॥ दरशन ज्ञान चरण तप उत्तम, याहीसें दिल दमो२ ॥ जि० ॥ सर्व पाप तज जज नवपदकूं, सर्व पाप उपशमो२ ॥ जि० ॥ बाल कहे यही सार जगतमे, उर हार मत जमो२ ॥ जि० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपद थुई ॥

नितप्रति हुं प्रणमुं सिद्धचक्र शुभ जाव, हिव कारज सि द्धिनो लाधो एह उपाय ॥ तुझ नाम पसायें आरति व्याधि पुलाय, इग तुझ अनुग्रहथी सुख संपति मुझ थाय ॥ १ ॥ श्रीअरिहंत न मिये सिद्ध सूरि उवझाय, मुनिवर त्रिक करनें दंसण नाण सुहाय ॥

डुग विधि चारित्रैं बुध विध तप मन लाय, ये नवपद ध्यावता नि रुपम शिवसुख थाय ॥ १ ॥ विद्यापरवादे जाणो ए अधिकार, श्री गुरु उपदेशें सिद्धचक्र उद्धार ॥ प्रवचन अनुसारे जाष्यो एह विचार, नविजन नित ध्यावो सुरतरु गुणजंमार ॥ ३ ॥ जिनधरम अनुरागी चक्केसरि सुखकार, सेवकनें आपे सुख संपति परिवार ॥ शिव निधि उदय करि चारित्रनंदी मन लाय, जिनचंद सूरीसर खरत्तरपति सुपसाय ॥ ४ ॥ इति थुई ॥

॥ अथ जेतीसंयुक्त नवपद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम दिवस विधि लिख्यते ॥

(प्रथम) आसो सुदि ७ अथवा चैत्र सुदि ७ सें उली सरू करे, कनी तिथि घटी होय तो ६ सें सरू करे, वढी होय तो ८ सें सरू करे, लेकिन आंबिल ए पूनम तक करे. प्रथम जमीन शुद्ध करके मांकणादिकसें चित्रित करे, पीछे पट्टे पर सिद्धचक्र थापके त्रिकाल पूजा करै. प्रजातसमें राईपमिक्कमणा करके पीछे वस्त्रोंकी पमिलेहणा करै. जहां सिद्धचक्रकी थापना हे उहां आयकें पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, पीछे नव चैत्योंमें अथवा नव प्रतिमा आगे नव चैत्यवंदन करै, वासक्षेप पुजा करे, पीछे केसरचंदनसें पूजा करै. गुरु पास आयके अप्पुठिमिके पाठसें राई आलोवे, आंबिलका पच्चखाण करै. प्रथम अरिहंतपदका श्वेत रंग हे इस वास्ते चावलोंसें उर गरमपाणीसें आंबिलका नियम करे. पीछे अरिहंतके बारे गुणोंको विचार कर नमस्कार करै, सो लिखते हें. सब गुणोमे इच्छामिखमासमणो वं० पाठ कहिके नमस्कार करै ॥

॥ अथ द्वादश अरिहंत गुणाः ॥

१ असोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

२ पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

३ दिव्यध्वनि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

४ चामरयुग प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

५ स्वर्णसिंहासण प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

६ भामंडल प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

७ दुंदुभि प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

८ छत्रत्रय प्रातिहार्य संयुताय श्रीअ० ॥

९ ज्ञानातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१० पूजातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

११ वचनातिशय संयुताय श्रीअ० ॥

१२ अपायापगमातिशय संयुताय श्रीअ० ॥इतिद्वादसअ० गु०

॥ इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थूससियेणं कहिके १२ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछै स्वस्थानक जा के चैत्यवंदन करै, पच्चखाण पार के आंबिल करै. पहले वखत जल पीवे तब चैत्यवंदन कर के पीवे, पीछै मध्याह्न समय पांचे शक्रस्तवे देव वांदै. गुणनो (२०००) ॥ ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥ इस पदका करै. श्रीपालचरित्र सुणे. पूण पहर दिन रहणेसें तीसरी वेर पांचे शक्रस्तवे देव वांदे. पीछे फेर चैत्यवंदन कर के तिविहार पच्चक्खाण करे पाणहारका । फेर सामायक ले के दिन रहते प्रतिक्रमण करै. आरती के वखत दीप धूप पुष्प पूजा करै अथवा पहले आरती वगैरे करके पीछै पडिक्कमणा करै. (सोणे के वखत) पहले इरियावही पडिक्कमके चैत्यवंदन करै, फेर १.८ संथारा गाथा सुणे ॥ निद्रा नहीं आवे जहां तक नव गुण स्मरण करै ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितिय दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ अब इसी मुजब दूसरे दिन प्रभात समे की सब करणी पहले मुजब करके सिद्धपदका लाल रंग है इस वास्ते गेहूंकी रो-

टीसें आंबिल करे॥ ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ॥ इस पदका दो हजार गुणना करे. सिद्धपदका ८ गुण है. ८ नमस्कार गुरु करावे सो लि०॥

॥ अथ सिद्ध अष्ट गुणाः ॥

१ अनंत ज्ञान संयुताय श्री सिद्धाय नमः ॥
२ अनंत दर्शन संयुताय श्रीसि० ॥
३ अव्यावाध गुण संयुताय श्रीसि० ॥
४ अनंत सम्यक्त चारित्र गुण संयुताय श्रीसि० ॥
५ अक्षयस्थिति गुण संयुताय श्रीसि० ॥
६ अरूपी निरंजन गुण संयुताय श्रीसि० ॥
७ अगुरु लघु गुण संयुताय श्रीसि० ॥
८ अनंतवीर्यगुण संयुताय श्रीसि० ॥ इति सिद्धाष्टौगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्थुससि० कहके आठ लोगस्सका काउसग्ग करे, एक लोगस्स प्रगट कहे. फेर पूर्वोक्त करणी करे ॥

॥ अथ तृतीय दिवस विधि लिख्यते ॥

पूर्वोक्त विधिसें प्रभात कर्त्तव्य करे. आचार्यपद पीले वर्ण है इस वास्ते चणाकी दालका आंबिल करे ॥ ॐ ह्रीं णमो आयरिआणं ॥ इस पदका दो हजार जाप करे. आचार्यके ३६ गुण है. छत्तीस नमस्कार गुरु करावे सो लिखते है ॥

॥ अथ आचार्य छत्तीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुण संयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्वी गुण संयुताय श्रीआ० ॥
३ युगप्रधानागम संयुताय श्रीआ० ॥
४ मधुर वाक्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
५ गांभीर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
६ धैर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥

७ उपदेशगुण संयुताय श्रीआ० ॥
८ अपरिश्रावीगुण संयुताय श्रीआ० ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१० शीलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
११ अविग्रहगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१२ अविकथकगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१३ अचपलगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१४ प्रसंतवदनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१५ क्षमागुण संयुताय श्रीआ० ॥
१६ मृडुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१७ सर्वसंगमुक्तिगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१८ ऋजुगुण संयुताय श्रीआ० ॥
१९ द्वादस विध तपगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२० सप्तदश विध संयमगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२१ सत्यव्रतगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२२ सौचगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२३ अकिंचनगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुण संयुताय श्रीआ० ॥
२५ अनित्य भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२६ असरण भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२७ संसार स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ०
२८ एकत्व स्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥
२९ अन्यत्व भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३० अशुचि भावना भावकाय श्रीआ० ॥
३१ आश्रव भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३२ संवर भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३३ निर्जरा भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३४ लोकस्वरूप भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३५ बोधदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥

३६ धर्मदुर्लभ भावना भावकाय श्रीआ० ॥ इतिषट्त्रिंसत् आ०

॥ यह छत्तीस नमस्कार करके अन्नत्थूससि० कहके छत्तीस ३६ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहे. पूर्वोक्त करणी क्रमसें करै. इति तृतिय दिवस विधि ॥

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं ॥ इस पदका २, हजार जाप करै. हरेमूंगका आंबिल करे. उपाध्याय पदके २५ गुण याद करके नमस्कार करै ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्रीआचारांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउपाध्याय नमः ॥

२ श्रीसुयगडांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

३ श्रीठाणांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ०

४ श्रीसमवायांगसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

५ श्रीभगवतीसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

६ श्रीज्ञातासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

७ श्रीउपासगदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

८ श्रीअंतगडदसासूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

९ श्रीअणुत्तरोववाइसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

११ श्रीविपाकसूत्र पठनगुण युक्ताय श्रीउ० ॥

१२ उत्पादपूर्व पठनगुण यु० ॥

१३ आग्रायणीपूर्व पठनगुण युः ॥
१४ वीर्यप्रवाद पठनगुण युः ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
१७ सत्यप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
१८ आत्मप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
१९ कर्मप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व पठनगुण युः
२१ विद्याप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
२२ अविंध्यप्रवादपूर्व पठनगुण युः ॥
२३ प्राणायामप्रवादपुर्व पठनगुण युः ॥
२४ क्रियाविसालपूर्व पठनगुण युः ॥
२५ लोकविंदुसार पठनगुण युः॥इति पंचाविंशत्योपाध्यायगुणाः॥

इस तरे २५ नमस्कार करे, खमा दे के अन्नत्थ० कहके २५ लोगस्सका काउसग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ अथ पंचम दिवस विधि लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं ॥ इस पदका २ हजार गुणना करे. साधुपद काले वर्ण है इस वास्ते उरूद के वाकलोंसें आंबिल करे. सर्व साधूपदके सत्ताईस गुण विचारता हुवा नमस्कार करे॥

॥ अथ साधुपदके २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रत युक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥
४ मैथुनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

५ परिग्रहविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा० ॥

६ रात्रिभोजनविरमणव्रत युक्ताय श्रीसा०॥

७ पृथ्वीकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

८ अप्पकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

९ तेउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

१० वाउकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

११ वनस्पतिकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

१२ त्रसकाय रक्षकाय श्रीसा० ॥

१३ एकेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥

१४ बेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥

१५ तेइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥

१६ चोइंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥

१७ पंचेंद्रीजीव रक्षकाय श्रीसा० ॥

१८ लोभ निग्रहकाय श्रीसा० ॥

१९ क्षमागुण युक्ताय श्रीसा० ॥

२० शुभभावना भावकाय श्रीसा० ॥

२१ प्रतिलेखनादि क्रिया शुद्धकारकाय श्रीसा० ॥

२२ संजमयोग युक्ताय श्रीसा० ॥

२३ मनोगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥

२४ वचनगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥

२५ कायगुप्त युक्ताय श्रीसा० ॥

२६ शीतादि द्वाविंशति परीसह सहण तत्पराय श्रीसा० ॥

२७ मरणांतउपसर्ग सहण तत्पराय श्रीसा० ॥ इति साधुगुण॥

इस रीते २७ नमस्कार करै, २७ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, प्रगट लोगस्स कहिके पारे, पीछे पूर्वोक्त करणी करै. यह पंच पर

मेष्टि पदके सब गुण मिलाणेसें १०८ होता हे, इस वास्ते मालामें एकसो आठ मणिये होते हे ॥ इति पंचम दिवस विधिः ॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. दर्शनपद सपेद वर्ण हे इस वास्ते चावलोंका आंबिल करे. सम्यक्तके सम्सठ गुण चिंतवकर नमस्कार करे ॥

॥ अथ सम्यक्तके सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थ संस्तवनारूप श्रीसद्दर्शनाय नमः॥
२ परमार्थ ज्ञातृसेवनारूप सद० ॥
३ व्यापन्न दर्शन वर्जनरूप सद० ॥
४ कुदर्शन वर्जनरूप सद० ॥
५ शुश्रूषारूप सद० ॥
६ धर्मरागरूप सद० ॥
७ वेयावृत्तरूप सद० ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद० ॥
९ सिद्धविनयरूप सद० ॥
१० चैत्यविनयरूप सद० ॥
११ श्रुतविनयरूप सद० ॥
१२ धर्म्मविनयरूप सद० ॥
१३ साधुवर्ग विनयरूप सद० ॥
१४ आचार्य विनयरूप सद० ॥
१५ उपाध्याय विनयरूप सद० ॥
१६ प्रवचन विनयरूप सद० ॥
१७ दर्शन विनयरूप सद० ॥
१८ संसारे जिनसारमिति चिंतवनरूप सद०॥
१९ संसारे जिनमति सारमिति चिंतवनरूपसद० ॥

२० संसारे जिनमत स्थित साध्वादि सारमिति चिं० ॥
२१ शंकादूषण रहिताय सद्द० ॥
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्द० ॥
२३ विचिकित्सारूप दूषण रहिताय सद्द० ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषण रहिताय सद्द० ॥
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय सद्द० ॥
२६ प्रवचनप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२७ धर्मकथाप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२८ वादीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
२ए नैमत्तिकप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३० तपस्वीप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३१ प्रज्ञप्त्यादिक विद्याभृत्प्रज्ञावक सद्द० ॥
३२ चूर्णअंजनादि सिद्धप्रज्ञावक सद्द० ॥
३३ कविप्रज्ञावकरूप सद्द० ॥
३४ जिनसासने कौसलता ज्ञूषण सद्द० ॥
३५ प्रज्ञावनाज्ञूषणरूप सद्द० ॥
३६ तीर्थसेवाज्ञूषणरूप सद्द० ॥
३७ स्थैर्यताज्ञूषणरूप सद्द० ॥
३८ जिनसासने ज्ञक्तिज्ञूषणरूप सद्द० ॥
३ए उपशम गुणरूप सद्द० ॥
४० संवेग गुणरूप श्रीस० ॥
४१ निर्वेद गुणरूप श्रीस० ॥
४२ अनुकंपा गुणरूप श्रीस० ॥
४३ आस्तिक्य गुणरूप सद्द० ॥
४४ परतीर्थकादि वंदनवर्जनरूप सद्द० ॥

४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्द० ॥
४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्द० ॥
४७ परतीर्थकादि संलाप वर्जनरूप स० ॥
४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥
४९ परतीर्थकादि गंधपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्रीसद्द० ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥
५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥
५६ सम्यक्तचारित्रधर्मस्य मूलमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य पुरस्यद्वारमिति चिंतन श्रीसद्द० ॥
५७ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
५८ चारित्रधर्मस्य प्रतिष्टानमिति चिंननरूप सद्द० ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्द० ॥
६० चारित्रधर्मस्य भाजनमिति चिंतनरूप स० ॥
६१ चारित्रधर्मस्य सन्निन्नमिति चिंतवनरूप स० ॥
६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्यानयु० श्रीसद्द० ॥
६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्यानयु० सद्द० ॥
६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्यानयु० स० ॥
६५ सचजीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्यान यु० स० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्यानयु० श्रीस०
६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्यानयु० श्रीस०॥ इति म०॥
॥ इस वंदे मम्मसंग नमस्कार कर खमासों के अनक्रू० कहके

६७ लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछै पूर्वोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो नाणस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. ज्ञानपद उज्वल वर्ण, तंडुलका आंबिल करै, इकावन भेद ज्ञानपद के चिंतव के नमस्कार करे ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

१ स्पर्शनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्री व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नमः ॥
४ श्रोत्रेंद्री व्यंजनावग्रह मति० ॥
५ स्पर्शनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
६ रसनेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
७ घ्राणेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
८ चक्षुरिंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
९ श्रोत्रेंद्री अर्थावग्रह मति० ॥
१० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
११ स्पर्शनेंद्रीईहा मति० ॥
१२ रसनेंद्रीईहा मति० ॥
१३ घ्राणेंद्रीईहा मति० ॥
१४ चक्षुरिंद्रीईहा मति० ॥
१५ श्रोत्रेंद्रीईहा मति० ॥
१६ मनेंद्रीईहामति० ॥
१७ स्पर्शनेंद्रीअपाय मति० ॥
१८ रसनेंद्रीअपाय मति० ॥
१९ घ्राणेंद्रीअपाय मति० ॥

२० चक्षुरिंद्रीअपाय मति० ॥
२१ श्रोतेंद्रीअपाय मति० ॥
२२ मनैनापाय मति० ॥
२३ स्पर्शनेंद्रीधारणा मति० ॥
२४ रसनेंद्रीधारणा मति० ॥
२५ घ्राणेंद्रीधारणा मति० ॥
२६ चक्षुरिंद्रीधारणा मति० ॥
२७ श्रोतेंद्रीधारणा मति० ॥
२८ मनोधारणा मति० ॥
२९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञी श्रुत० ॥
३३ सम्यक् श्रुत० ॥
३४ मिथ्या श्रुत० ॥
३५ सादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥
३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥
३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥
४० अगमिक श्रुत० ॥
४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥
४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥
४४ अणूणगामि अवधि० ॥

४५ वद्धमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः॥इति पं० ज्ञा०॥

इस तरे ५१ नमस्कार करे, खमा होके अन्नत्थ० कहके एकावन लोगस्सका काउसग्ग करे. एक लोगस्स प्रगट कहके पारे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे. इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स ॥ इस पदका २ हजार जाप करे. चारित्र पदका उज्वल वर्ण है, इसोंसे तंदुलका आंबिल करे. सत्तर भेद चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे.

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राय नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्म्मरूप चारित्रेभ्यो नमः॥

७ आर्जवधर्मरूप चारित्र० ॥

८ मृदुताधर्म्मरूप चारित्र० ॥

९ मुक्तधर्म्मरूप चारित्र० ॥

१० तपोधर्म्मरूप चारित्र० ॥

११ संयमधर्म्धरूप चारि० ॥
१२ सत्यधर्म्मरूप चारि० ॥
१३ सौचधर्मरूप चारि० ॥
१४ अकिंचनधर्मरूप चा०
१५ वंभ्रधर्मरूप चारि० ॥
१६ प्रथ्वीरक्षासंयम चारि० ॥
१७ उदगरक्षासंयम चारि०
१८ तेऊरक्षासंयम चा० ॥
१९ वाऊरक्षासंयम चारि० ॥
२० वनस्पतिरक्षासंयम चारि० ॥
२१ वेइंद्रीरक्षासंयम चारि०
२२ तेइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२३ चौइंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२४ पंचेंद्रीरक्षासंयम चारि० ॥
२५ अजीवरक्षासंयम चारि० ॥
२६ प्रेक्षासंयम चारि० ॥
२७ उपेक्षासंयम चारि० ॥
२८ अतिरक्तवस्त्रभक्तादि परठन त्यागरूप संयम चारि० ॥
२९ प्रमार्जनरूप संयम चारि० ॥
३० मनसंयम चारि० ॥
३१ वाक्संयम चारि० ॥
३२ कायासंयम चारि०
३३ आचार्य वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३४ उपाध्याय वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥
३५ तपस्वी वैयावृत्यरूप संयम चारि० ॥

३६ लघुशिष्यादि वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
३७ गिलाणसाधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३८ साधु वेयावृत्यरूप संयम चा० ॥
३९ श्रमणोपासक वेयावृत्यरूप संयम चा०॥
४० संघवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४१ कुलवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४२ गणवेयावृत्यरुप चारि० ॥
४३ पशुपंडगादिरहित वसति वसण ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४४ स्त्रीहास्यादि विकथावर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४५ स्त्रीआसनवर्जन ब्रह्मगुप्त चारि० ॥
४६ स्त्रीअंगोपांग निरीक्षण वर्जनरुप चारि०॥
४७ कुडयंतररहित स्त्रीहावभाव सुणन वर्जन ब्र०
४८ पूर्वस्त्रीसंभोग चिंतन वर्जन ब्रह्मगुप्त चा०
४९ अतिसरस आहारवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५० अतिआहार करणवर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५१ अंगविभूषावर्जन ब्रह्मगुप्त चा० ॥
५२ अणसण तपोरूप चा०
५३ उणोदरी तपोरुप चा० ॥
५४ वित्तसंखेवरुप चा० ॥
५५ रसत्याग तपोरुप चा० ॥
५६ कायकिलेस तपोरुप चा० ॥
५७ संलेखणा तपोरुप चा० ॥
५८ प्रायश्चित्त तपोरुप चा० ॥
५९ विनय तपोरुप चा० ॥
६० वेयावच्च तपोरुप चा० ॥

६१ सिज्झाय तपोरुप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरुप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरुप चा० ॥

६४ अनंत ज्ञान संयुक्त चा० ॥

६५ अनंत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसंयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रभेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै. खमा दो के अन्नत्थूससि० ७० लोगस्सका काउसग्ग करै. एक लोगस्स प्रगट कहे. पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीँ णमो तवस्स ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै. तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै. पच्चास भेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपभेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यऊणोदरी तपभेद तपसे नमः ॥

४ अभ्यंतरऊणोदरी तपभेद त० ॥

५ द्रव्यतपवृत्ती संखेप तपभेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

८ भावतप वित्ती संखेप तपभेद त० ॥

९ काय किलेस तपन्नेद तप० ॥

१० रसत्याग तपन्नेद तप० ॥

११ इंद्रीकषाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥

१२ स्त्री पशु पंडकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त०॥

१३ आलोयण प्रायछित्त तप० ॥

१४ पडिक्कमण प्रायछित्त तप० ॥

१५ मिश्र प्रायछित्त तपसे० ॥

१६ विवेक प्रायछित्त तप० ॥

१७ उपसर्ग प्रायछित्त त० ॥

१८ तप प्रायछित्त त० ॥

१९ छेद प्रायश्चित्त त० ॥

२० मूल प्रायश्चित्त त० ॥

२१ अणवस्थित प्रायछित्त त० ॥

२२ पारंचिय प्रायछित्त त० ॥

२३ ग्यान विनयरूप तप० ॥

२४ दर्शन विनयरूप तप० ॥

२५ चारित्र विनयरूप त० ॥

२६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥

२७ वचन विनयरूप त० ॥

२८ काय विनयरूप त० ॥

२९ उपचारक विनयरूप तप० ॥

३० आचार्य वेयावच्च त० ॥

३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥

३२ साधु वेयावच्च त० ॥

३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

३४ लघुशिष्यादि वेयावच्च त० ॥

३५ गिलाणसाधू वेयावच्च त० ॥

३६ श्रमणोपासक वेयावच्च त० ॥

३७ संघ वेयावच्च तप० ॥

३८ कुल वेयावच्च त० ॥

३९ गण वेयावच्च तप० ॥

४० वायणा तपसेनमः ॥

४१ पृच्छना तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तना तपसे नमः ॥

४३ अनुप्रेक्षा तपसे नमः ॥

४४ धर्म्मकथा तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत तपः ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त तप० ॥

४७ धर्म्मध्यान चिंतन त० ॥

४८ शुक्लध्यान चिंतन तप० ॥

४९ बाह्य उपसर्ग तपसे नमः ॥

५० अभ्यंतर उपसर्ग तपसे नमः ॥ इति पंचाशत तपपद भेदाः ॥

इस तरे ५० नमस्कार करे. खमा देके अन्नत्थूससि० इत्यादि कहके ५० लोगस्सका काउसग्ग करे. एक लोगस्स प्रगट कहे. पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति नवम दिवस विधिः ॥

॥ अथ तपस्या ग्रहण करणेको गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

प्रथम शुभ घमी देखके अछा वस्त्र आभूषण पहरके तिलक करके दोवसरसुं मस्तकमें धारण करके हाथेके मौली बांधके अक्षत सुपारी श्रीफल नैवद्य यथाशक्ति रोकड्द्रव्य लेके नवकार गुणता थया गुरुके पास जावे, द्वादशावर्त्त वंदना करके ग्यानपूजा करे

पीछे प्रमोदवंत होके तप ग्रहण करे, ग्रहण करणेकी विधि आगे लिखी है ॥ इति तपस्या ग्रहणार्थ गुरु पास जाणेकी विधिः ॥

॥ अथ संक्षेप उजमणाविधि उलीको लिख्यते ॥

पंचवर्णके अनाजसें सिद्धचक्रका मंमल करे. सिद्धचक्रजीके चौ तरफ तीन गढ चूडीके आकार बनावे. पहिले गढमें अष्टदल कमलके आकार नवपद स्थापन करे. पद२ के रंग मुजब गुण प्रमाणसें रत्न चढावे उर पंचवर्णके फूल, पंच वर्णके धान्य, नव नालेरका गोटा रंगके अपणे२ रंग मुजब पीतुरेसे नरके चढावे पंचरंगी ए धजा चढावे, दूसरे वलयमें सोले श्रीफल अथवा सुपारी चढावे. तीसरे वलयमें ४७ छूहारा चढावे, नव निधानोंकी जगे नव वर्म फल चढावे, नवग्रह दसदिग्पाल पदमें पक्वान्न रंगरंगके चढावे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धचक्र स्थापना घरदेरासरमें करे. उर जिनमंदिरमें बाहिरले मंमपमें ५ ॥ ७ ॥ हाथ प्रमाणें मंमल रचना करे. विस्तारसें सब विधि गुरुके हाथसें करे, नवपदजीकी पूजा पढाय कलस ढाले, धवलमंगल गीतग्यान गावे, वाजित्र बजावे, महा महोछव उदार चित्तसें करे, मंगलदीप आरती प्रमुख करे. दूसरे दिन विसर्जन करे. इति संक्षेप सिद्धचक्र मंमल विधिः ॥ अब पछमें दिन गुरु पास आयके उलीके तपकों पारे. तप पारणको विधी आगे लिखी है तथा उद्यापनमें ग्यानभक्तिके कारण ए पूंठा ए वीटांगणा ए पुस्तक ए लेखण ए उवणी नव झिलमिल ए रुमाल ए डोरा ए सिजासणा ए थापना ए चंद्रुआ ए पूंगीया ए आरती ए कलश ए जपमाला ए मंदिर करवावे, ए प्रतिमा ए तिलक ए मुगट इत्यादिक नव२ चीज बणावावे, शक्ति नही होय तो यथाशक्ति रोकनाणो चढावे. देवपदका देवमें देवे, गुरुपदका गुरुकूं देवे, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावै, इत्यादिक यथायोग्य शुभक्षेत्रमें खरच करे. इति सिद्धचक्र संक्षेप उजमणाविधिः ॥

॥७

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वारायन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे—बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोछव आते हें जिसमें चैत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते भये अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें भक्ति करे, पीछे नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं स फल मानते भये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी (१४) पीछे (४९) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोछव करे. लेकिन् यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीभी जावे, पहली पीछेभी करलेवे ॥ यह नवपदजीकी उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उध्धार करके भव्यजीवोके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली भगवान भद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते भव्यजीवोंकों यह तप प्रमाण हे, उर जो अभवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें भमेंगे. सूत्रोंमें भगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हें उर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेभी यथार्थ अर्थकूं तोडके नया कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुत्तंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अभिन्नदसपुव्विणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचा, प्रत्येकबुद्धोंका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोंका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा भयेकूं भगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना ९, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वारायन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ सें लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम हे. उत्तमताका कारण एसा हे–बारे महीनोंमें तीन अठाइ महोत्सव आते हें जिसमें चेत्र आसोजकी अठाई तो सास्वती हे. आठमसें पूनम तक इन दोनों महीनोमें च्यारुं निकायके देवता उर ६४ इंद्र एकठे होकर आठमा नंदीश्वर द्वीपमें जाते हे, (पुन्याहं२) कहते भये अष्ट द्रव्यसें पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसें अनेक तरेसें भक्ति करे, पीछे नवमें दिन अपणे२ जन्मकूं सफल मानते भये अपणे२ देवलोक जावे. इसी मुजब तीसरी अठाई आसाढ चोमासेकी (१४) पीछे (४९) दिन जाणेसें संवछरी पर्व साचवणेकूं (८) दिन तक अठाइ महोत्सव करे. लेकिन् यह अठाइ सास्वती नही कही, कोइ वखत च्यारुं निकायके देवता एकठे होकर नहीभी जावे, पहली पीछेभी करलेवे ॥ यह नवपदजीकी उली शाश्वती अठाइमेंही की जाती हे, नवपद माहात्म अधिकार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंसें उध्धार करके भव्यजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली भगवान भद्रबाहूस्वामीनें इसकों प्रसिद्ध करा, इस वास्ते भव्यजीवोंकों यह तप प्रमाण हे, उर जो अभवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंडन करते हें सो तीर्थंकरका वचन उत्थापणेसें अनंतसंसारमें भमेंगें. सूत्रोंमें भगवंत महावीरने फुरमाया हे, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ केवचन सूत्रोंमें हें उर उन सूत्रोंमेंसें एक हरफकेभी यथार्थ अर्थकूं तोडके नवा कल्पन करेगा पंचांगी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा (सूत्रनाम किसका हे) ॥ सुतंगणहररइयं, तहेवपत्तेयबुद्धरइयंच ॥ सुयकेवलिनारइयं, अभिन्नदसपुव्विणारइयं ॥ १ ॥ (अर्थ) गणधरोंका रचा, प्रत्येकबुद्धोंका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियोंका रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोंका रचा भयेकूं भगवानने सूत्र कहा हे. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धांत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक

दस नाम जगवानने अनुयोगद्वारसूत्रमें सूत्रका लिखा है, एकार्थ वाचक है इस वास्ते जद्रबाहु उमास्वातिवाचकादिकोके बनाये निर्युक्त छेद प्रशमरति आदि पांचसो ग्रंथ सूत्रवत् मानने चाहिये, एक क्रोम पुस्तक श्रुतकेवलीयोके बनाये अजी जंमारोमे मोजूद है ॥

॥ अथ अष्टापद उली करण विधि लिख्यते ॥

॥ इसी चैत्र मासमें सुदि (८) सें लेकर पूर्णमासी तक (केइयक जव्यजीव) अष्टापदजीकी उली करते हैं (जिसमें) पमिक्कमणा, देववंदन, देवपूजा, इत्यादिक सब विधि नवपदजीकी उली तुल्य करै. (इतना विशेष है) श्री अष्टापद तीर्थाय नमः (इस पदका) २००० गुणना (वा) वीस जाप करै. अरिहंतपदके १२ गुणका नमस्कार करै, १२ लोगस्सका काउसग्ग करै, आंबिल (वा) एकासणेका पच्चरकाण करै, पीछै पूणमासीके दिन अष्टापदपर्वतकी थापना करै, मंमल रचै, सो विधि लिख्यते है ॥

पूर्व

१ । २ ।

दक्षिण ।३।४।५।६।

त्रिवेदिकमध्य असोकवृक्ष जर्द्धः

उत्तर १५।१६।१७।१८।१९।२०।२१।२२।२३।२४।

७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।

पश्चिम

(चत्तारि दक्खिणाए, पच्छिमज अठ्ठ उत्तरारै ॥ दस पुवाए दो अठ, वंयमि वंदे चउवीसं ॥ १ ॥ पुवाइं उसजमजियं ॥ दक्खिणउ संजवाइ चत्तारि, पच्छिम सुपासमाइ, धम्माइ दसउत्तरउ ॥ २ ॥) इति प्रथम परिपाटी ॥ प्रथम यथाक्रमसें चोवीस कोठे मंमल में बणाणा. इहां कांकणमोरे मोली आत्मरक्षापूर्वक नवपदजीके मंमलवत् जाणना. नवग्रह दशदग्पाल थापना करे. पीछे एकर काव्य पढर के एकेक कोठेमें एकर

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाभेयजिनेशत्वं, नंद्यावत सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतीनेता, नंद्यावतसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंभक्त्या, कंदर्पानामनेकपं ॥ प्रणतोद्योतितंज्ञान, कंद र्पानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंभवप्रपन्नाये, समयंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समयं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंभवस्वामी० ॥ ३ ॥ येभिनंदनतेतीर्थ, राजपादसभाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसभाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअभि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीद्वयीमुक्तये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाद्यः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ सुदृष्टीनां, भूरिशोभातपोदयाः ॥ हन्यात्तमांसिपूर्षेव, भूरिशोभात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रभ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्व तवश्रुतंश्रुत्वा, दर्पकोपक्रमानलां ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्पकोप क्रमानलां ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ भवांश्चंद्र प्रभेंद्रेण, येरभ्राजिसमुन्नतः ॥ येरभ्राजिसमुन्नतः ॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमाद्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमाद्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्भवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूभाजां, परमोक्षगतिर्भवा न् ॥ अनंतानलत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्भवान् ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥११॥ वासुपूज्यनचस्वर्गी, नीरजारूढसत्क्रमः ॥ द स्वंदिरदंमोदं, नीरजारूढसत्क्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

जिनेश्वरके नामके चिठी उस पर वरक चढा सुपारी चढावे. एवं ॥ २४ ॥ अथ काव्य ॥ श्रीनाज्ञेयजिनेशत्वं, नंद्यावर्त सितांशुकः ॥ यथाकुमुद्वतीनेता, नंद्यावर्तसितांशुकः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीऋषभदेवस्वामी वेदिकापीठे तिष्ठ२ स्वाहा ॥ १ ॥ उपाध्वमजितंज्ञक्त्या, कंदधानामनेकपं ॥ प्रणतोद्बोधितंज्ञान, कंद धानामनेकपं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअजितस्वामी० ॥ २ ॥ श्रीशंज्ञवमपन्नाये, समर्यंतेसदादरात् ॥ तेसंसारवनान्मुक्ति, समर्यं तेसदादरात् ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसंज्ञवस्वामी० ॥ ३ ॥ येज्ञिनंदनतेतीर्थे, राजपादसज्ञाजनाः ॥ विलसंतिचिरंतेत्र, राजपा दसज्ञाजनाः ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीअज्ञि० ॥ ४ ॥ पूजि तांह्रीद्वयीमुक्त्ये, कांताराजीवमालया ॥ सुमतेतवलीनाद्दः, कांतारा जीवमालया ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ऐं श्रीसुमति० ॥ ५ ॥ पद्मप्रज्ञ सुदृष्टीनां, ज्नूरिशोज्ञातपोदयाः ॥ दन्यात्तमांसिपूपेव, ज्नूरिशोज्ञात पोदयाः ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीपद्मप्रज्ञ० ॥ ६ ॥ सुपार्श्वे तव्श्रुतंश्रुत्वा, दर्प्पकोपक्रमानलं ॥ मुंचंतिजंतवःशांता, दर्प्पकोप क्रमानलं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुपार्श्व० ॥ ७ ॥ ज्नवांश्चंद्र प्रज्नेंद्रेण, येरज्ञाजिसमुन्नतः ॥ येरज्ञाजिसमुन्नतः॥८॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीचंद्र० ॥ ८ ॥ सुविधेत्वद्विधिंप्राप्य, प्रमार्यंत समाहितः ॥ येतेश्रेयःश्रियंश्रस्त, प्रमार्यंतसमाहितः ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीसुविधि० ॥ ९ ॥ सेवतेशीतलत्वांये, देवसंपन्न केवलं ॥ अपिमुक्तिर्ज्नवेत्तेषां, देवसंपन्नकेवलं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रीशीत० ॥ १० ॥ श्रीश्रेयांसतनूज्ञाजां, परमोक्षगतिर्ज्नवा न ॥ अनंतानत्वविश्रांतं, परमोक्षगतिर्ज्नवान ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्रेयांस० ॥११॥ वासुपूज्यनवस्वर्ण, नीरजारुद्दनक्रमः ॥ दग त्वंविरहंमोदं, नीरजारुद्दनक्रमः ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं ऐं श्री

वासुपूज्य० ॥ १२ ॥ विमलत्वांप्रतिस्वंये, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ अपि दुर्जयमुच्चैस्ते, रंजयंतिमनोज्ञवं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीविमल० ॥१३॥ जग्मिवांसमनंतत्वां, नमस्यंतिमहापदं ॥ येतेविश्वत्रयीलक्ष्मी, नमस्यंतिमहापदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीअनंत० ॥ १४ ॥ नाशुतस्तवसिद्धांतो, येनावीतनयस्ततः ॥ वरंधर्मजिनद्धर्मा, येनावीतनयस्ततः ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीधर्म० ॥ ॥ १५ ॥ श्रीशांतेदेहिनांदेहि, सारंगविदधेधृतिं ॥ शर्मकर्मततेरंक, सारंगविदधेधृतिं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीशांति० ॥ १६ ॥ कुंथुनाथस्तुपंथानं, विधुतारोवृषाहतः ॥ पुंसांतन्यात्पिनाकीच, विधुतारोवृषाहतः ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीकुंथु० ॥ १७ ॥ येनत्वंनाचितःकर्म, वनवैश्वानरोपमः ॥ सोअरनाथकुधीर्जव्या, वनवैश्वानरोपमः ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्री अर०॥ १८ ॥ नांह्रिपद्मसुनःसिद्धि, पतिपन्नसुदारुणः ॥ येनतेन्नियतेमल्ले, प्रतिपन्नसुदारुणः ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीमल्लिस्वामी० ॥ १९ ॥ श्रीसुव्रतजिनाधीश, मक्षमालोपलक्षितं ॥ विरंचिमिवसेवद्ध, मक्षमालोपलक्षितं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीमुनि० ॥ २० ॥ देव्योपित्वद्गुणोज्ञाना, सदामंदरसानुगाः ॥ गायंतित्वांनमेज्ञक्त्या, सदामांदरसानुगाः ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीनमि० ॥ ॥ २१ ॥ तृष्णातापात्वयावर्षं, शमितादानवारणा ॥ श्रीनेमेजनतांराध्य, शमितादानवारणा ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीनेम० ॥ २२ ॥ पार्श्वदेवसदाकत, महाहारतरंगिताः ॥ नात्यंतिचरित्रंते, महाहारतरंगिता ॥२३॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीपार्श्व० ॥ २३ ॥ वीरोजिनपतिःपातुः, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ चिन्नमेघुनिस्सीमां, तत्वानःकांचनश्रियं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हं ऐं श्रीवीरस्वामी अत्र वेदिकापीठे तिष्ठ स्वाहाः ॥ २४ ॥ पोते

चोवीस माहाराजकी पूजा करावे, पीछे जलवाकुल देके दिग्पालों को विसर्जन करे ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चैत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक भया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरुष गुरुमुखसें समझके जल जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोच्छव करे, एसेंही ऋद्धिवंत श्रावककूं धर्मके उद्योत वास्ते सब भगवंतके कल्याणक जो जो होय उसका उच्छव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधीश्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके च्यवनकल्याणकसें लेकर निर्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महोच्छव पूजन करणा चाहिये, इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम पर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे॥

प्रथम चावलके पूंजसें सेत्रुंजयपर्वतको स्थापन करे (तिस पर) पट्टा रखके श्रीपुंडरीक गणधर (वा) श्रीऋषभदेवस्वामीका बिंब स्थापन करे, अक्षत मोतियोसें पर्वतको वधावे, केसरचंदनसें पर्वतको पूजे, सब श्रीसंघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रदक्षिणा देवे (पीछें) पूजन सरू करे (यथा) दश (१०) वीस (२०) तीस (३०) चत्ता (४०), पन्ना (५०) पुप्फदामेणलहई॥चउच्छठअठम, दसमदुवालस कलाइंच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका अधिकार लिखते हैं, एकाग्र चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके शुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्हवण करावे, पीछे श्रीसंघ खडा होके (१०) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला चढाके प्रतिमाके १० तिलक करे, यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि सब चीज उत्कृष्टसें दस२ जघन्यसें नारेल १ सुपारी १० हर फल

फूल यथासंभव चढावै. धूप खेवै, कपूरकी आरती करे, पीछै सिद्ध गिरी गुणगर्भित चैत्यवंदन करके पांचे शक्रस्तवे देव वांदे, १० खमासमण देके (श्रीसिद्धक्षेत्र पुंमरीक गणधराय नमः) इस पदका १० वेर नमस्कार करै. पीछै (श्रीसत्रुंजय पूंमरीक आराधनार्थे करेमि काउसग्गं अन्नत्थूससि०) कहके १० लोगस्सका काउसग्ग करे (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि वहुत उछव होय वखत कम रहे तब एक लोगस्सका काउसग्ग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका स्तवन कहे) पीछै अनेक प्रकारका वाजित्र वजावै ॥ इति प्रथम पूजा विधि ॥ अब इसी तरै (वीस । तीस । चालीस । पच्चास । यह चारों पूजाके भेद जाण लेणा (इतनाही विशेष हे) दूसरी पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामे १० की जगें ३० की विधि करै. चोथी पूजामे १० की जगे ४० की विधि करै. पांचमी पूजामें सब विधी ५० की करै. तथा (सिद्धक्षेत्र श्रीपूंमरीकाय नमः) इस पदका दो हजार गुणनो करै. उत्कृष्टसें पांचूं पूजामें जुदी२ धजा चढावै. जघन्यसे पांचूं पूजा किये पीछै १ धजा चढावे । यह तप गुरूके मुखसे लेके जघन्य १ वरस, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त तपस्या करै. गुरूके मुखसें उपदेस सुणे, संपूर्ण तप हुयां पीछै सिद्धगिरीकी जात्रा करे, ग्यानपूजा करे, गुरुभक्ती करै, साहमीवच्छल करै (यह) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरुषभदेवस्वामी के प्रथम गणधर श्रीपूंमरीकजी पांच कोमी साधू साथ अक्षय सुखको प्राप्तभये. (इसवास्ते) भरत प्रथम चक्रवर्त्तीनें चैत्री पूनमकों आराधन करके (यह) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध किया. यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणेसें इस भवमें अनेक सुख संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पुत्र पुत्रादिककी वांछा पूरण होय, उर

आधिव्याधि सोग संताप सब दूर होय, परभवमें देवादिक ऋद्धि प्राप्त होय, क्षीणकर्मा होणेसें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ चैत्रीपूनम स्तवन लिख्यते ॥

(ढाल) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसायलें, पुंडरगिर रे गाईस हूं सुभ भावलें ॥ मति सुरगिर रे सहस जीभ जो मुख हुवै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ (उल्लालो) किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहां मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण छै अनंता कहे जिनवर सुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण भापियै, तिरयंच नारकतणी गतिना दुःख दूरे राखियै ॥ १ ॥ (चाल) जिनराजारे पहिलो आद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति भरतेसरू ॥ तसु अंगज रे पुंडरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणे भलो ॥ (उल्लालो) गुण भलो अनुक्रम आदि जिनवर पास संजम शिवपुरी, पुंडरीक गणधर प्रथम विहरे सुमति गुपते संचरी ॥ पण कोडि साथे विमलगिरिवर मुगति पदवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंडरीक कहाव ए ॥ २ ॥ (चाल) दिन चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रुंजे रे आराध्यां फल हुवे घणो ॥ मनसुद्ध रे आपणपे थानक रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ (उल्लालो) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म्म ध्यान मने धरे, बहु भाव भक्ते त्रिविध पूजा आदि जिनवरनी करे ॥ भावना भावे तेण दिवसे पंचकोडि गुणा फले, अनुक्रमे ते नर सुगति पामी सिद्धसुंदरने मिले ॥ ३ ॥ (चाल) दस वीसा रे तीस चालीस पूजा करी, पच्चासा रे श्रावक निरती मनधरी ॥ चउथ छठ रे अठम दसम दुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम ए मुझ मन वसे ॥ (उल्लालो) मन वसे पूजकपूर्ण्ये मासखमण फल वली, सामन्न

धूपे परकनो फल जे करे मननी रली ॥ हिव पूजनी विधि जेम गुरुमुख सुणीअछै परंपरा, ते मोह माया कपट छंमी सुणो ज्ञवि थण सादरा ॥ ४ ॥ (ढाल) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु ऊपर पट्टादिक आपी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी थापी निवेरी ॥ ५ ॥ सेत्रुंजगिरिने मन चिंतीजै, करमतणा मल दूर करीजे ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचावो ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमबंध दूरे करि आठ॥ प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥ ऊन्ना थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माला पुष्फ पूंगीफल ढोवो, मेरु ज्ञरण वर धूप उखेवो ॥ ८ ॥ (ढाल) शक्रस्तव पांचे देव वांदे, जघंन्यना वंदण पाप छेदे ॥ दसे नमस्कार करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेंद्र सेती ॥ ए ॥ आराधिवा काजे काउसग्ग, जिणे किये ज्ञांजे कर्मवग्ग ॥ लोगस्सउज्जोय दसे वखाणु, वेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज एह, इसी परे बीजा च्यार तेह ॥ दसांतणी वृद्धि तिहां गिणीजै, एक चित्त सूधै शुन्न पून्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करीजै, एकेक पूछे अथवा गिणिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्छा प्रन्नु आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ (कलश) इम करिय पूजा यथा योगे संघपूजा आदरो, साहमीवच्छल करो न्नविका न्नवलमुइ ला लावरो ॥ संपदा सोहग तेह मानव ऋद्धि वृद्धि बहु लहै, श्रीअमर माणिक सीस सुपरे साधुकीरति इम कहै॥ १३॥ इति श्री चै०स्त०॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहलो बेरू स्तवनोंमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुन्न धर्मी शुन्नदिन गुरूके पास नंदीश्वरतप ग्रहण करे. नंदीश्वरद्वीपके च्यारुं दिशि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें अमावस२ (५२) बावन उपवास

करै. जिस दिन जो महाराजके नामका उपवास होय उसही नामका २००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीऋषभाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचंद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिषेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥४ श्रीवर्द्धमानज्जी सर्वज्ञाय नमः ॥ (यह) च्यार नामकूं ४ वेर उलटा, ४ वेर सुलटा गिणे ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसें एक उली होय. ४ उली करणेसें यह तप संपूर्ण होय ॥ पीछे शक्ति मुजब ऊजमणा करै. नंदीश्वरद्वीपका मंडल वणावे, पूजा करावे. इत्यादि महोत्सव करके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साहमीवच्छल करै, मंडलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे२ पहाडकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमें अंजनगिरी, च्यारुं दिसामें च्यार श्वेतपर्वत, दोय२ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय२ रतिकर पर्वत, एवं ८ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेल, ५२ पान नागरवेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ बावन लेवे. क्रमसें एकेक काव्य पढके जल चंदनादि अष्ट द्रव्यसें अंगपूजा तथा अग्रपूजा करे॥इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महीनेमें मिती वैसाख सुदि ३ है सो अक्षय तृतिया नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीऋषभदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण कियां पीछें बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयांसकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती हुया. उस वखत उत्तम दानके प्रभावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोंकी वर्षा २, साढीबारे कोडि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान२ एसी उद्घोषणा ४, देवदुंदुभी वाजित्र ५, एमे पांच द्रव्य प्रगट किये. श्रेयांसकुमरका जस तीन भुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबकों मालम भई. इस दानके प्रभावसें श्रेयांसकुमार अक्षयसुखकों प्राप्त भया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणेसें वस्त्र आभूषण पहरके भगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसें पूजन करै, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह भेदी, आदि पूजा करावै. पीछै गुरुके मुखसें एकासणादिकेक पच्चख्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरूको वहिरायके सब कुटंब समेत जीमैं, उर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वकों जो भव्यजीव सेवन करते रहेंगे उणोका तपतेज हमेसां वढता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ट मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ट कृष्णात्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशांतिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिसंयुक्त शांतिपूजाका महोत्सव करावै. शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें छांटे. इस शांतिपूजाके कराणेसें मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कभी श्रीसंघमें प्राप्त न होय (अथवा) किसी श्रावकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) वहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उच्छव कराणा चाहिये. (इससें) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीडा सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ट मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आषाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥आषाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसें पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है.॥ यथा॥ सामायकावस्यकपोषधानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, भव्याश्चतुर्मासकमंडनानि ॥१॥ (अर्थ) भोभव्याएतानि सामायकादि धर्मकृत्यानि चतुर्मासकस्यं

मंगलानि अलंकारभूतानि विद्यंते ॥ अहो भव्य प्राणी जीवो यह सामायककों आद लेके जो धर्मकृत्य हे सो चोमासेके मंगण हे, अर्थात् अलंकार समान हे. यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव सामायक पमिक्कमणा पोसा करे, कोइ भगवानके मंदिरमें नाना-प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पाले, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अपणी शक्तिसें वण आवै सो करै, इसमें विरोध नही. लेकिन् कोईभी प्रकारसें धर्मका उद्योत करणा चाहिये. जिससें सब श्रीसंघमें कल्याणमाला प्रगट होय, उर चोमासी (१४) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेकों जाणा, पांच शक्रस्तवसें देववांदै, पीछे गुरुके पास जाके चोमासे पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरांतका सोगन लेवै, सांझकूं चोमासी पमिक्कमणा करे. इस मुजब काती चोमासै फागुण चोमासे कोंभी सेवन करैं ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ भव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे२ की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते हें, इस माफक सब जगे तरे२ की पूजा कराणी चाहिये. उर देस देसमें श्रावकणयां इन महीनेमें केइ२ तरेकी तपस्यायें करती हे. जिसमें उत्तमफलकों देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रंथमें उद्धरण करके संक्षेपविधिसें इहां लिखते हें ॥

॥ अथ कुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमड्ढ १, एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, (यह १ ओली) इस तरे पांच ओली करे. तपोदिन २५. कुजमणें २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इस तरे

उली च्यार करै. तपोदिन १६. ऊजमणें १६ लडू चढावै ॥ इति कषायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंबिल १, उपवास १, इसी तरे उली ३ करै. तपोदिन ए. ऊजमणें ए लाडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकंदर उपवास ३. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतप ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, छठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दत्ति १, नीवी १, आंबिल १, यह एक उली. इसी तरे उली आठ करै. तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृक्ष, सोनेका कुहाडा करायके ग्यानखाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूडणतपः ॥ ७ ॥

भाद्वा वदि चउथसें लेके पनरे दिन पर्यंत इकसार एकासणा अथवा बिआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे भरै, संवत्सरीके दिन कलस ऊपर नारेल रख के महोत्सवपूर्वक मंदरमें जाके देव आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै॥इति अक्षयनिधि तपः ८॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा नीवी, आंबिल सात वरस सात मास करै (श्रीवासुपूज्यस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्तवन सुणे. (सो स्तवन आगे लिखेंगे) ऊजमणें ज्ञानके उपगरणसें ज्ञानभक्ति गुरुभक्ति करै. इति रोहणीतपः ॥ ए ॥

सुदिपक्षके पांचमके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच

एकासणादिक तप करे. अंबिकादेवीकूं वस्त्र चढावै॥इति अंबिकातपः॥

सुदिपक्षके इग्यारसके दिन सिद्धांतपूजापूर्वक मौनसंयुक्त उपवास करै. इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पक्षमें एकांतर उपवास ८। पारणें आंबिल ८, एवं दिन १६. उजमणें ज्ञानपूजा करै. इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकांतर उपवास १५, एवं दिन ३०. उजमणें सोनेका अथवा रुपेका वृक्ष अनेक फल सहित चढावै ॥ इति सौभाग्यकल्पवृक्षतपः ॥ १३ ॥

पडिवा, बीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उपवास करे. जो तिथि भूले सो तिथि उर करै. उजमणे एकसो वीस लडू मंदिर चढावे, स्नात्र करावे ॥ इति सर्वसुखसंपतितपः॥ १४॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह षट मास टालके छोटी पांचमतप सरु करे. अंधारी उजवाली पांचम मास ५ लग एकासणादि तप करै. उजमणे ज्ञानपूजा करे ॥ इति छोटी पांचमतप ॥ १५ ॥

सुद पांचमकूं पांच वरस पांच मास उपवास करै. उपवास के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै. उजमणें पुस्तकादिक ज्ञानोपगरण पकान फल कलशादिक पांच ५ चढावे, सत्तरभेदी पूजा करावे, साह्मी वच्छल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आषाढ सुदि पडिवा, बीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाशणादि तप करे. अशोगवृक्ष पूजापूर्वक देव आगे नैवेद्य चढावे. इस तरे वरस १ तप करै. उजमणें चावलोंसें असोगवृक्ष लिखके पूजा करे ॥ इति अशोगवृक्षतपः ॥ १७ ॥

आषाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण वदि ७ श्रीअनंतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीशां

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलोंसे लोकनाल वणाके सात राज सात पावडी करके उसपर सिद्धक्षेत्र (उसकों) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावडी, इस तरे आठे वरसे आठ पावडी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिय. ऊजमणें अष्टापदपूजा करावे, पकवान फल सर्व चोवीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावडीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आंविल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लड्डु देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितपः २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन दस उपवास अथवा वीस एकासणा करै. ऊजमणें अखंडित घी धारपूर्वक तीए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखंडितदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आंविल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अंगकी पूजा करै ॥ इति श्रीइग्यारअंगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके पकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै (प्रथम तेले) सिखरणसें पारणा (दूसरे तेले) सारेका पारणा (तीसरे तेले) द्राक्षोंका पारणा (चोथे तेले) लड्डूसें पारणा (पांचमें तेले) खीरसे पारणा. पारणे प्रथम साधुको वहिराके पारणा करै ॥ इति पंचामृततेलातपः ॥ २४ ॥

करै १, लोच करावे २, तेलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें भगवंत की भावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावै ५. यह पांच कारण के वास्ते श्रीतीर्थंकर गणधरोंनें पर्यूषणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब शुद्धश्रावक संवछरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महोछव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते है ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी भक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसंयुक्त अपने घर लेजाके रात्रीजागरण करावै, प्रभातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकूं निमंत्रण कर यथा योग्य सत्कार सन्मान करै, पीछै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र आभूषण पहरकै मुगट छत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रमहाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मंगलीक रचित थालमें पुस्तक धरके अपने दोनुं हाथसें थाल धरके दोनुं तरफ पुरुष अछा वस्त्र आभूषण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वाजित्र वाजते भये, दान देते भये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन करते भये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु विण खड़ा होके विनयसंयुक्त पुस्तककों नमस्कार करकै आगे रखै. श्रीसंघके आज्ञासें वाचनापूर्वक वांचे १, नगरमें सब जगे अमारिपमह वजावै, दूसरा वचनसें तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी भडभूंजा इत्यादिक सबका आरंभ छोडावे २, सुपात्रदान देवे ३, बिदाम सुपारी नालेरादिक की प्रभावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार भक्तिसें पूजा करै, चौदसके दिन संवछरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकठे होकर सर्व मंदिर दरसण करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउछ, छठ, अठमादिक तप करै ८, अपने वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उछव करै ९, अठपहरी पोसा करै १०, संवछरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघसें खमावै १२, पारणेके दिन पोसह पडिक्कमणेवाले सायर्मीभाइ-

योंकी भक्ति करे १३, गुरुभक्ति करे १४, संवत्सरी दान देवै, साहमी वच्छल करे १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसें आराधन करनेसें आठ भवमें मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे (ओर) केइएक भव्यजीव अत्यंत शुभ भाव धरतेभये अठमादि तप करके युक्त कल्पसूत्रजीकों वांचते हे ओर सुणनेवाले प्रमाद निद्रा विकथा छोडके अठमादि तप करके एक चित्तसें शुद्धभाव रखके इकवीस वेर सुणते हे, सो भव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे भव सिद्धिस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूषणपर्वका महोच्छव जो भव्य जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रभावीक हे, अपणी लक्ष्मीसें धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे ओर नमस्कार करते हे॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते हे॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसें उद्धरस कियाभया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्ययन हे. सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीभद्रबाहु स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसें सर्व नदीके वालू के कण होय उससे भी एक सूत्रके अनंते विषय हे. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हजार जीभ करके कहे तोभी महात्मका एक अंस भी कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाण जो भव्यजीव शुद्ध भावसें सेवन करेंगे सो अनेक तरेसें ऋद्धि वृद्धी सुख सौभाग्य कों प्राप्त होंगे. ओर परभवमें देवादिक ऋद्धि पायके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूषणपर्वाधिकारः ६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिती आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की ओली तथा अष्टापदजीकी ओली विधिसंयुक्त करे. सो तप विधि पहली लिखी हे उसी माफक करे॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिती कार्तिक वदि अमावस हे सो दी-

पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. यह दीपमालिकापर्व कबसें नया सो लिखते हे. चोवीसमें तीर्थंकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते थके अंतकी चोमासी मध्यमपावापुरीमें आयके रहे, उहां आगामीकालकी सर्व वात नव्यजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तिपालराजाके शुक्कशालामें आयके रहे. अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत स्नेह देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देणेकूं नेजा. पिठामी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंम देसना देते नये बहुत्तर वरसका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पिछली दो घमी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त नये. जिस समय नगवंतका निर्वाणकल्याणक नया उस समय चोसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वमा उद्योत नया, उर जो राजा पोषधमें बैठे नयेथे सो नावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके द्रव्यउद्योत किया. एकमके प्रनात समें देवतोका आणा जाणा उर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न नया. दूजके दिन सुदर्शना बहिन अपणे नाई नंदिवर्द्धनराजाकूं घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें नाईबीज प्रवर्त्तन हुई. इससें यह दीवाली पर्व वमा उत्तम हे. इस दिवालीकी रातकूं जो गुणना करते हे सो लिखते हे ॥ ॥ श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारंगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको २००० गुणनो करै, उपवास करै, रात्रीजागरण करै, निर्वाणकल्याणककी आरती करै ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणैं । गोतमरास सुणैं, इत्यादिक उदार चित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उत्सव करणा चाहिये ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा हे सो पढै ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा कात्ती महीनेमें कार्त्तिक सुदि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन सर्व नव्यजीवोंकों ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ जी नही हे. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोइ तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोइ उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्कर्म नाश होय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, ओर कोढादिक रोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके क्षय होणेसें पांचो ज्ञान प्रगट होय. जेसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण नये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चोकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करें, उसके आगे पांच साथिया करें, फल फूल प्रमुख चढावे, पांच वत्तीका दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढके वासक्षेप कपूरसें ज्ञानपूजा करे, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावे तथा पूग विटांगणादि चढावे. (ज्ञानपूजा लिखते हे) नमंतिसामंतमहीवनाइं, देवायपूयंसुविदेयपुव्विं ॥ नत्तीयचित्तंमणिदामएहिं, मंदारपुप्फेपसवेहि नाणं ॥ १ ॥ तहेवसद्धासणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसएहिं ॥ पूयंतिवंदंतिनमंतिनाणं, नाणस्सनत्तानायत्नवरक्खयाय ॥२॥ यह गाथा पढके ज्ञानपूजा करे. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीछे नावपूजा करे सो लिखते हें) खमासमण दे के । इरियावही पडिक्कमें । लोगस्स कहे । बेठके । मुंडपत्ती पडिलेहे । अणुजाणह मेमिउग्गहं (इत्यादिक) से वांदणा देवे, पीछे पांच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहे ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिनासक नानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु भवजलनिधि तारण ॥ संयमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचंड ताप तापित जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति परिशोहण, साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रभुता परगासण ॥ ॥ २ ॥ मति श्रुति अवधि विशुद्ध नाण मणपज्जव केवल, भेद पचास क्षायोपसमिक एक क्षायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहां दुग परतक्ष दीसत, सकल प्रतक्ष प्रकाश भास ध्रुव केवल अपरमित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन भाशै, बाहिर अंग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति भाष्य परिशाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प संशय सब जीपै ॥ ४ ॥ पंचांगी सार बोध कह्यो जिन पंचम अंगे, नंदी अनुयोगद्वार शास्त्र मानो मनरंगे ॥ वीर परंपर जीत अनुभव उपगारी, अभ्यासो आगम अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपंक हर नीर सम सिद्धांत अबाधे, देवचंद्र आणा सहित नयभंग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोहामणो सकल मोक्ष सुखकंद, भगते सेवो भविकजन पामो परमानंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । णमोत्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविसाहू० नमोर्हत् सिद्धा० । कहके ॥ प्रणमुं श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोलै, जयवीयराय० कहै, वंदणव० अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिख्यते ॥ देविंदवंदियपएहिंपरूवियाणि, नाणाणिकेवलमणोहिमईसुयाणि ॥ पंचाविपंचमगईसियपंचमोए, पूयातवोगुणरयाणजियाणदिंतु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके (ज्ञान आराधवा निमित्तं करेमि काउसग्गं) तस्सुत्तरी० अन्नत्थू० कहके १ लोगस्सका काउस्सग्ग करै, (पारके) बोधागाधं० (इत्या-

दिगाथापढके) पीछे ॥ आभिणिबोहियनाणं । सुयनाणंचेवओहिना णंच ॥ तहमणपज्जवनाणं । केवलनाणंचपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा कहके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४, समस्त लोकालोकप्रकाशकश्रीकेवलज्ञानायनमः ५. इस तरे पांच नमस्कार करे, थिरता होय तो (५१) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार करे, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करे ॥ पीछे (ॐ ह्रीँ णमोनाणस्स) इस पदका २००० गुणना करे. कम थिरता होय तो इग्यारे अंगकी सिझायों पढे वा सुणें, सो लिखते हे॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ चारांग रे ॥ सुगणनर॥ वीर जिनंदे भाषियो रे लाल, उववाई जास उवंग रे ॥ सु०१॥ बलिहारी ए अंगनी रे, हुं जाउं वारंवार रे॥सु०॥ विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु० ब०॥२॥ सुयखंध दोय छे जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु० ॥उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगीस रे॥ सु० ब०३॥ हेतु जुगत कर सोभता रे, पद अढार हजार रे ॥ सु० ॥ अक्षरप वले तेहरू रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु०ब०४ ॥ गमा अनंता जेहमां रे, वलिलि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ त्रस परित्तो छे इहां रे लाल, थावर अनंत कहाय रे ॥ सु० ब० ५ ॥ निबद्ध निकाचित सासता रे, जिनप्रणीत ए भाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे रे लाल, प्रगटे सहज स्वभाव रे ॥ सु० ब० ६ ॥ सुगुण श्रावक वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उल्लास रे ॥सु०॥ विधिपूर्वक तुमे सां भलो रे लाल, गीतारथ गुरु पास रे ॥ सु० ब० ७ ॥ ए सिद्धांत महिमानिलो रे, उतारे भव पार रे॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे माहरे

रे लाल, एहिज अंग आधार रे ॥ सु० ब० ८ ॥ इति आचारांग सि० ॥

॥ अथ २ सुयगडांगसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल रसियानी ॥ बीजो रे अंग तुमे सांभलो, मनोहर श्रीसुगडांग ॥मोरालाजन॥ त्रिणसे तेसठ पाखंडीतणो, मत खंड्यो धर रंग ॥ मो० १ ॥ मीठी रे लागे वाणी जिनतणी, जागे जे हथी रे ग्यान ॥ मो० ॥ ए वाणी मन माणी माहरै, मानु सुधा रे समान ॥ मो० मी० २ ॥ रायपसेणी उपांग छे जेहनो, ए तो सूत्र गंभीर ॥ मो० ॥ बहूश्रुत अरथ जाणे सहू, क्षीर नीर धनु तीर ॥ मो० मी० ३ ॥ एहना रे सुयखंध दोय छै, वलि अध्ययन तेवीस ॥ मो०॥ उद्देसा समुद्देसा जिहां भला, संख्याये रे तेत्रीस ॥ मो० मीठो० ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाण भरया, पद छत्तीस हजार ॥मो०॥ संख्याता अक्षर पदमांहे, कुण लहे तेहनो रे पार ॥मो०मी०५॥ गमा अनंता पर्याय वली, भेद अनंत जिण मांहि ॥ मो० ॥ गुण अनंत त्रस परित्त कह्या, थावर अनंत जे मांहि ॥ मो० मी० ६ ॥ निबद्ध निकाचित्त जे सासय कह्या, जिन पणन्ता रे भाव ॥ मो०॥ भाषी रे सुंदर एह प्ररूपणा, चरण करणनो रे जाव ॥ मो० मीठी० ७ ॥ करिये भगत जुगत ए सूत्रनी, निश्चे लहिये रे मुक्ति ॥ मो० ॥ विनयचंद्र कहे प्रगटे एहथी, आतमगुणनी रे शक्ति ॥ मो० मी० ॥ ८ ॥ इति सूयगडांग सिझाय ॥ २ ॥

॥ अथ ३ ठाणांगसूत्रसिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आठ टके कंकण लियोरी॥ ए चाल॥ त्रीजो अंग भलो कह्यो रे जिनजी, नामे श्रीठाणांग ॥ मोरो मन मगन थयो॥ हां रे देखी२ भाव, हां रे जीवाजीव स्वभाव ॥मो०॥ सकल जगत करी छाजतो रे जि०, जीवाभिगम उपांग ॥ मो० ॥ १ ॥ एह अंग मुझ मन वस्यो रे जिनजी, जिम कोकिल दल अंब ॥ मो०॥

शुद्दिर नाव करे जागतो रे जि०, आज तो एह आलंब ॥ मो० २ ॥ कूट शैल सिखरी शिला रे जि०, काननमें बलि कुंम ॥ मो० ॥ गव्हर आगर इह नदी रे जि०, जेहमेंअछे रे नदंम ॥ मो० ॥ ३ ॥ दस गाणा अति दीपता रे जि०, गुणपर्याय प्रयोग ॥ मो० ॥ परित्त जेहनी वाचना रे जि०, संख्याता अनुयोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ वेष्ट सिलोक निजुत्तसुं रे जि०, संगहणी परिचित्त ॥ मो० ॥ ए सहु संख्यातां जिहां रे जि०, सुणतां नलसे चित्त ॥ मो० ॥ ५ ॥ सुय खंध इक राजतोरे जि०, दश अध्ययन नदार ॥ मो० ॥ नद्देशादिक वीस छे रे जि०, पद बहुत्तर हजार ॥ मो० ॥ ६ ॥ रागी जिनशांसन तणो रे जि०, सुणे सिद्धांत वखाण ॥ मो० ॥ विनयचंद कहे ते हुवे रे जि०, परमारथरा जाण ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति श्री० ठा० सं० ॥

॥ अथ ४ ॥ समवायांगसूत्र सिझाय ॥

॥ ढाल ॥ थारा महिलां ऊपर मेह ऊरोखे वीजली ॥ एचाल ॥

चोथो समवायांग सुणो श्रोता गुणी, हो लाल सुणो श्रो०, पन्नवणा नपांग करो सोन्ना वणी, हो लाल करो सो० ॥ अरध मागधी नाषा साखा सुरतणी, हो लाल साखा सु०, समकित नाव कुसुम परिमल व्यापो घणो, हो लाल परि० ॥ १ ॥ जीव अजीवने जीवाजीव समासथी, हो लाल जी०, लहीये एहथी नाव विरोध कांइ नथी, हो लाल वि० ॥ नांगा तीन स्व समयादिकना जाणीये, हो लाल यादि०, लोक अलोक ने लोकालोक वखाणीये, हो लाल लो० ॥ २ ॥ एकथकी छे सत समवाय परूपणा, हो लाल सम०, कोमाकोमि प्रमाणक जीव निरूपणा, हो लाल जी० ॥ वारसविह गणी पिटकतणो संख्या कही, हो लाल त०, सासता अरथ अनंत कि छे एहना सही, हो लाल छे० ॥ ३ ॥ सुयखंध अध्ययन नदेसादिके नला, हो लाल न०, संख्यायें एक एक प्रत्येके गुण निला, हो० प्रत्ये० ॥ पद

एक लाख चौमाल सहस तेउत्तरा, हो० स०, पदनें अग्रउदग्र सं-ख्याता अक्षरा, हो० सं० ॥४॥ न्नाष्य चूर्णि निर्युक्ती करी सोहे सदा, हो० करी०, सुणतां न्नेद गंन्नीर त्रिपत न होय कदा, हो० त्रि० ॥ जेह नमावै अंगकि अन्तरगत हसी, हो० अन्त०, जल वरसंते जोर कुण न हुवे खुसी, हो० कु० ॥ ५ ॥ जाग्यो धरम सनेह जिणंदसुं माहरो, हो० जि०, तजिया शास्त्रमिथ्यात सुत्र जाण्यो खरो, हो० सू० ॥ जिम मालती लहे न्नृंग करीनेनविरहे, हो० क०, इश्वर शिर सुरगंग तन्नी परि नवि वहे, हो० त० ॥ ६ ॥ ए प्रवचन नि-ग्रंथतणो जुगते वम्यो, हो० त०, साकर सेलम्री शख थकी पिण मीठम्यो, हो० थ० ॥ स्युं कहिये बहु वात विनयचंद्र इम कहै, हो, वि०, एहना सुणने न्नाव श्रोता अति गहगहै, हो० श्रो० ॥ ७ ॥

॥ अथ ५ ॥ भगवतीसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल पंथीम्रानी ॥ पंचम अंग न्नगवती जाणियें रे, जिहा जिन वरना वचन अथाह रे ॥ हिमवंत परवत सेती निकल्या रे, मानुं पर तिख गंग प्रवाह रे ॥ पं० १ ॥ सूरपन्नत्ती नामे परगम्री रे, जेहनी है उद्दाम उवांग रे ॥ सूत्रतणी रचना दरिया जिसी रे, मांहिला अरथ ते सजल तरंग रे ॥ पं० २ ॥ इहां तो सुयखंध एक अति न्नलो रे, एकसो एक अध्ययन उदार रे ॥ दश हजार उद्देसा जेह ना रे, जिहां किण प्रश्न छत्तीस हजार रे ॥ पं० ३ ॥ पद तो दोय लाख अरथे न्नरया रे, ऊपर सहस अठ्यासी जाण रे ॥ लोकालो क स्वरूपनी वर्णना रे, विवाहपन्नत्ती अधिक प्रमाण रे ॥ पं० ४ ॥ करिये पूजा अने परन्नावना रे, धरिये सदगुरु ऊपर राग रे ॥ सुणिये सूत्र न्नगवती रागसूं रे, तो होय न्नवसागरनो त्याग रे ॥ पं० ५ ॥ गोतम नामे इव्य चढाइये रे, सम्यक् ज्ञान उदय होय जेम रे ॥ कीजे साधु तथा साहमीतणी रे, न्नगति युगति मन आणी

प्रेम रे ॥ पं० ६ ॥ इण विधसुं ए सूत्र आराधतां रे, इण भव सीझे वंछित काज रे ॥ परभव विनयचंद कहे ते लहे रे, मोहन मुगतिपूरीनो राज रे ॥ पंच० ७॥ इति श्रीभगवतीसूत्र सिझाय सं०॥

॥ अथ ६ ॥ ज्ञातासूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ कितलख लागा राजाजीरै मालियै ॥ ए देशी ॥

छठो अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियै जी, जेहना छै अरथ अनेक उदार हो ॥ म्हारा सुणज्यो धरि नेह सिद्धांतनी वातडी जी ॥ श्रवणे सुणतां गाढो रस ऊपजे जी, मधुरता तर्जित जिम मधुखंड हो ॥ म्हा० १ ॥ जंबुद्दीवपन्नत्ती उपांग छै जेहनो जी, इण मांहे जिन पूजानी विधि जोरहो ॥ म्हा० ॥ अर्चिक सुण परम शांतिरस अनुभवे जी, चर्चिक सुण करै सम सोर हो ॥ म्हा० २ ॥ नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणो जी, समवसरण राजानो मात ने तात हो ॥ म्हा० ॥ धरमाचारज धर्मकथा तिहां दाखवी जी, इह लोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ॥ म्हा० ३ ॥ भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी, सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ॥ म्हा० ॥ संलेहण पच्चक्खाण पादपोपगमनता जी, स्वर्गगमन शुभ कुल उतपत्तान हो ॥ म्हा० ४ ॥ बोधिलाभ वलि तंत ते अंतक्रया कही जी, धर्मकथाना दोय छै खंध हो ॥ म्हा० ॥ पहिलाना उगणीस अध्ययन ते आज छै जी, बीजाना दस वर्ग महा अनुबंध हो ॥ म्हा० ५ ॥ उंठकोडि तिहां सकल कथानक भाखिया जी, भाख्या वलि उगणीस उद्देस हो ॥ म्हा०॥ संख्याता हजार भला पद एहना जी, एह थकी जायै कुमति कलेश हो ॥ म्हा० ६ ॥ विनय करे जे गुरुनो बहु परे जी, तेहने श्रुत सुणतां बहु फल होय हो ॥म्हा०॥ ते रसिया मन वसिया विनयचंदने जी, सो मांहे मिलै जोया एककै दोय हो ॥ म्हा० ७ ॥ इति ज्ञाताधर्मकथांग सि०॥

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्देस विचार रे ॥ दस२ संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नहीं, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाषिया, पिण सूत्र भण्यो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथनी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड केवली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भाखता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी लछिपका जी, कछिपका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुन्नव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ श्रा० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुण्यां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ श्रा० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, तुरत लहै अन्निप्राय ॥ श्रा० ७ ॥ इति श्रीअंतगरूदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुऊने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सूणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामे, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम २ अंतरगति न्नीजै हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ ॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक न्नाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहनें हो ॥ श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहु को राचो हो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्नव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आधा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

॥ अथ ७ ॥ उपासकदशा सूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल विछियानी ॥ हिवै सातमो अंग ते सांभलो, उपासगदशा नामे चंग रे ॥ श्रमणोपासकनी वर्णना, जसु चंदपन्नत्ती उपाग रे ॥ १ ॥ मन लागो मोरो सूत्रथी, एतो भव वैराग तरंग रे ॥ रस राता ज्ञाता गुण लहै, परमारथ सुविहित संग रे ॥ म० २ ॥ इण अंगे सुयखंध एक छै, अध्ययन उद्देस विचार रे ॥ दस२ संख्यायें दाखव्या, पद पिण संख्यात हजार रे ॥ म० ३ ॥ आनंदादिक श्रावकतणो, सुणतां अधिकार रसाल रे ॥ रस लागे जागे मोहनी, श्रोताजनने ततकाल रे ॥म० ४ ॥ श्रोता आगल तो वांचतां, गीतारथ पामे रीझ रे ॥ जे अर्द्धदग्ध समझै नहीं, तेहसुं तो करवी धीज रे ॥ म० ५ ॥ दस श्रावक तो इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यो नही कोय रे ॥ ते माटे शुद्ध श्रावक भणी, एक अरथ नी धारणा होय रे ॥ म० ६ ॥ साचो होय ते प्ररूपियै, निस्संक पणें सुजगीस रे ॥ कवि विनयचंद्र कहै स्युं थयो, जो कुमती करस्यै रीस रे ॥ म० ७ ॥ इति उपाशकदशांग सिझायः ॥

॥ अथ ८ ॥ अंतगडदशांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ वीर वखाणी राणी चेलणा जी ॥ ए देशी ॥ आठमो अंग अंतगडदशा जी, सुणी करो कान पवित्र ॥ अंतगड केवली जे थया जी, तेहना रे इहां चरित्र ॥ आठ० ॥ १ ॥ कर्म कठिन दल चूरतां जी, पूरता जगतनी आस ॥ जिनवरदेव इहां भासता जी, सासता अर्थ सुविलास ॥ आठ० २ ॥ सकल निक्षेप नय भंगथी जी, अंगना भाव अभंग ॥ सहिज सुख रंगनी तल्पिका जी, कल्पिका जास उवाग ॥ आ० ३ ॥ एक सुयखंध इण अंगनो जी, वर्ग छै आठ अभिराम ॥ आठ उद्देसा छे वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥ आ० ४ ॥ आठमा

अंगना पाठमें जी, एहवोअ छे रे मीठास ॥ सरस अनुभव रस ऊपजै जी, संपजै पुण्यनी रास ॥ आ० ५ ॥ विषयलंपट नर जे हुवे जी, निरविषयी सुणयां थाय, जिम माहा विष विषधरतणो जी, नागमंत्रे सुण्या जाय ॥ आ० ६ ॥ अमृतवचन मुख वरसती जी, सरस्वती करो रे पसाय ॥ जिम विनयचंद इण सुत्रना जी, तुरत लहै अभिप्राय ॥ आ० ७ ॥ इति श्रीअंतगरूदशा सूत्र सि० ॥

॥ अथ ए ॥ अणुत्तरोवाई अंग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ नणदल विंदली लै ॥ ए चाल ॥ नवमो अंग अणुत्तरोवाई, एहनी रुच मुझने आई हो ॥ श्रायक सूत्र सुणो ॥ सूत्र सूणो हित आणी, एतो वीतरागनी वाणी हो ॥ श्रा० १ ॥ जसु कल्याणवतंसिका नामै, सोहे उपांग प्रकामे हो ॥ श्रा० ॥ ए तो आगमने अनुकूला, मानु मेरुसिखरनी चूला हो ॥ श्रा० २ ॥ ए तो सूत्रनो नाम सुणीजै, तिम २ अंतरगति भीजै हो ॥ श्रा० ॥ प्रगटै नवल सनेहा, एहथी उलसे मोरी देहा हो ॥ ॥ श्रा० ३ ॥ अणुत्तर सुरपद पाया, तेहना गुण इणमें गाया हो ॥ श्रा० ॥ नगरादिक भाव वखाण्या, ते तो छठै अंगे आण्या हो ॥ श्रा० ४ ॥ इहां एक सुयखंध वारू, त्रिण वर्ग वली मनोहारू रे ॥ श्रा० ॥ उद्देसा त्रिण सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ॥ श्रा० ५ ॥ सूत्र सुणावूं अमे तेहनें, साची श्रद्धा हुय जेहने हो ॥ श्रा० ॥ श्रोताथी प्रीत लगावूं, निंदकने मुंह न लगाउं हो ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ जे सुणतां करै बकोर, ते तो माणस नही पिण ढोर हो ॥ श्रा० ॥ कवि विनयचंद कहे साचो, श्रुत रंगे सहुको राचो हो ॥ श्रा० ॥ ७ ॥ इति श्रीअणुत्तरोवाई सिझायः ॥

॥ अथ १० ॥ प्रश्णव्याकरण सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ आघा आम पधारो पूज ॥ ए देसी ॥ दशमो अंग

सुरंग सुहावै, प्रष्णव्याकरण नामें, सूत्र कल्पतरु सेवे ते तो, चिदानंद फल पामे ॥ आवो॰१ गुणना जाण तुमने सूत्र सुणाउं ॥ पुष्फकली ज्यूं परिमल महकै, गुरु परागने रागै ॥ तिम उपांग पुष्पिका एहनो, जोर जुगति करि जागै ॥ आवो॰ २ ॥ अंगुष्ठादिक जिहां प्रकास्या, प्रष्णादिक अति रूमा ॥ ते छै अष्टोत्तर सत ए तो, सूत्र मध्य मणिचूमा ॥ आ॰ ३ ॥ आश्रव द्वार पांच इहां आण्या, पांचे संबर द्वारा ॥ माहामंत्र वाणीमां लहियै, लबधि ज्नेद सुखकारा ॥ आ॰ ४ ॥ सुयखंध एक छै दसमे अंगे, पणयालीस अज्ञयणा ॥ पणयालीस उद्देस वली पद, सहस संख्यातनी रयणा ॥ आ॰ ५ ॥ जे नर सूत्र सुणै नही कानै, केवल पोषे काया ॥ माया मांहि रहै लपटाणा, ते नर इमहिज आया ॥ आ॰ ६ ॥ सूत्र मांहि तो मारग दोय छै, निश्चय नय व्यवहारा ॥ विनयचंद्र कहै ते आदरियै, तज मन मदन विकारा ॥ आवो॰ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ ॥ विपाकसूत्र सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल करूखानी ॥ सुणो रे विपाकश्रुत अंग इग्यारमो, तजो विकथा वृथा जे अनेरी ॥ ललित उपांग जसु प्रवर पुष्फचूलिका, मूलिका पाप आतंक केरी ॥ सु॰ १ ॥ अशुज्न किंपाक सम डुकृतफल ज्नोगवी, नरकमें गरक थया जेह प्राणी ॥ सुकृतफल ज्नोगवी स्वर्गमां जे गया, तास वक्तव्यता इहां आणी ॥ सु॰२॥ दोय श्रुत खंधने वीश अध्ययन वलि, वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजे ॥ सहस संख्यात पद कुंद मचकुंद जिम, बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजे॥ सु॰॥३॥ सरस चंपकलता सुरज्नि सहुने रुचै, अन्य उपगारनी बुद्धि माटै ॥ सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियै, जेहथी पुरुष सुख अचल खाटै ॥ सु॰ ४ ॥ बंध ने मोक्षना बेउं कारणअछै, डुकृतने सुकृत जोवो विचारी ॥ डुकृतने परिहरी सुकृतने आदरी, जिनव-

घन धारिये गुण संज्ञारी ॥ सु० ५ ॥ म कर रे म कर निंद्या नि-गुण पारकी, नारकी तणी गति कांइ बांधे ॥ नारकी प्रकृत तज सहज संतोष ज्ञज, लाग श्रुत सांज्ञली धरमधंधे ॥ सु० ६ ॥ सुरक ने डुःख विपाक फल दाखव्या, अंग इग्यारमें वीतरागे ॥ चिरजयो वीर शासन जिहां सूत्रथी, कवि विनयचंदगुण ज्योति जागे ॥ सु० ७॥

॥ अथ इग्यारे अंगकी वर्णना लिख्यते ॥

॥ ढाल वधावाकी ॥ अंग इग्यारे में सुएया, सहेली ए ॥ आज थया रंगरोल कि ॥ स० ॥ नंदीसूत्र मांहि एहनो, स० ॥ ज्ञाष्यो सर्व निचोल कि ॥ १ ॥ सहेली ए आज वधामणा ॥ आंक-णी॥ पसरी अंग इग्यारनी, स०॥ मुझ मन मंरुप वेल कि ॥ सींचू ते हरखे करी, स० ॥ अनुज्ञव रसनी रेल कि ॥ स० २ ॥ हेज धरी जे सांज्ञलै, स० ॥ कुण बूढा कुण बाल कि॥ तो ते फल लहे फू टरा, स० ॥ स्वादें अतहि रसाल कि ॥ स० ३ ॥ हरख अपार धरी हियै, स० ॥ अहम्मदावाद मझार कि ॥ ज्ञास करी ए अंगनी, स० ॥ वरत्या जय२कार कि ॥ स० ४ ॥ संवत सतर पचावनें, स० ॥ वरषाऋतु नज्ञज्ञास कि ॥ दसमी दिन सुदि पक्षमां, स० ॥ पूरण थई मन आस कि ॥ स० ५ ॥ श्रीजिनधर्म सूरी पाटवी, स० ॥ श्रीजिनचंद सूरीस कि ॥ खरतरगछना राजिया, स० ॥ तसु राजै सुजगीस कि ॥ स० ६ ॥ पाठक रह्रखनिधान जो, स० ॥ ज्ञानतिलक सुपसाय कि ॥ विनयचंद्र कहे में करी, स० ॥ अंग इग्यार सिझाय कि ॥ स० ७ ॥ इति श्रीइग्यारे अंग सिझाय ॥

॥ अथ ज्ञानका पुनः स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग ठुमरी ॥ मेरे रे मन मानी ज्ञान जरी, मे० ॥ पर ज्ञप गारी सुगुरु वताई, पांचु ज्ञेदें करी ॥ मति श्रुति अवधि अवर मन पर्यव, केवल बोध वरी ॥ मे० १ ॥ तप करि अग्नि मूंस दंसनकी,

करमेंधनल करी ॥ सक्रिय संजम करतासुं मिल, सिद्धि रसान धरी ॥ मे०२॥ पूरब पुन्य मिली मोहि सजनी, सकलानन्द दरी, बाल कहै अब विसरत नांही, पल छिन एक घरी ॥मे०३॥ इति पद॥

॥ पुनः आगम स्तवन ॥ २ ॥

श्रुत अतहि भलो, संघ सकल आधार नमूं त्रीभुवन तिलो ॥ आंकणी ॥ अरथें श्रीवीरजिनंद आख्यो, सूत्रें श्रीगणधरगुरु भाख्यो, तउभयथी जे मुनिवर राख्यो ॥ श्रु० १ ॥ जेहथी जग भाव सकल जाणे, नय एकांत मुनिजन नवि ताणे, निश्चय विवहार ते मन आणे ॥ श्रु० २ ॥ जिहां अंग उपांग छै अति रूडा, छ छेद पयन्ना नहि कूडा, मूलसुत्र नंदी अनुयोग चूडा ॥ श्रु० ३ ॥ जिहां निरयुक्ती सूत्रे संगी, वलि भाष्य चूरण टीका चंगी, पंचम अंगे कही पंचांगी ॥ श्रु० ४ ॥ जिहां साधु श्रावक मारग लहियै, संवेगपखी वलि सरदहियै, ए त्रिण विन भवमारग कहियै ॥ श्रु० ५ ॥ जेहनी अनुपेहा नित करियै, उपचारे दूषण परिहरियै, आराध्यां निज अनुभव तरियै ॥ श्रुत० ६ ॥ जिन आगमना जे गुण गावे, शुद्धाशय जे मनमें ध्यावे, ते क्षमाकल्याण सदा पावै ॥ श्रु० ७ ॥ इति ज्ञान स्तवनं ॥

॥ अथ कार्त्तिक चोमासाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्त्तिक महीनेमें मिति कार्त्तिक सुदि १४ के दिन सब मंदरमें दर्शन करणेंको जाणा, व्याख्यान सुणना, सामायकादिक धर्मकृत्य करणा। इत्यादिक सब अधिकार आसाढ चोमासे मुजब जाणना ॥ इति कार्त्तिकचोमासा सेवनविधिः ॥

॥ अथ कार्त्तिक पूर्णमासीका अधिकार लिख्यते ॥

प्रथम कार्त्तिक वदि १ सें सेत्रुंजरास सुणें, निवी वा एकासणा व्यासणादि तप करै, दोनुं टंक पडिकमणा करै, देववंद-

नादि करै, (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनंतसिद्धायनमः ॥) इस मंत्रका जाप करे १०८ वेर ॥ शक्ति होय तो सिद्धगिरी जात्रा करणेंको जावै. कातिपूनमके दिन विस्तारसंयुक्त सिद्धगिरीकी पूजा करावै, अठाई महोछव करै, विस्तारसें देववंदनादिक विधि करै, (२१) वेर सेत्रुजरास सुणे (ॐ ह्रीं श्रीसिद्धक्षेत्र अनन्तसिद्धाय नमः) इस पदसें २१ जेती देवै. (कदास) सिद्धिगिरी जाणेकी शक्ति नही होय तो जहां सिद्धगिरीका पट्ट मंम्रा होय उहां महोछव संयुक्त दर्शन करणेकूं जावै, पूजादिक सब विधि करै, उपवास कर के वा चउत्थभत्त करके इस पर्वकूं आराधन करै, गुरुभक्ति करै, साहमीवछल करे. इत्यादिक विधि संयुक्त सिद्धगिरीकी सेवना करणेसें सर्व अशुभकर्म विध्वंस होय, मंगलमाला प्रवर्त्तन होय ॥ इस दिन श्रीद्राविड वारखिल्ल प्रमुख दस कोडि साधु सिद्धिस्थानक प्राप्त भए, जिससें इस दिन जो धर्मकृत्य करणेमें आता हे उसका निश्चे दशकोडि गुणा फल होता है ॥ इस भरतक्षेत्रमें सिद्धगिरीके समान दुसरा तीर्थ नही. संवत १९३२ की सालमें मेरा चतुर्मास मुंबईमें था. उहांसें कार्त्तिकमें यात्रा गया, तब सर्व बिंबोंके दरसण करके गिणती देखणेमें आई सो बारे हजार तीनसें अठावनकी संख्या मिली, उर बहुत जगे चरणोंकी स्थापना हे, अनन्त साधू अणसण लेके परमपद पाए हे, इस वास्ते जो तुरत भव्यी जीव होंगें सो शुद्धभावसें इस तीर्थकों सेवेंगें, जो सेवते हे सो धन्य हे. गुर्जरदेस वासियोंकी बहुलता तीर्थआसातनाकारी देवद्रव्यभक्षक जतीसाधू जो संवेगपक्षी गीतार्थोंके द्वेषी एसी वक वृत्तिसें जीर्णोद्धार तथा नोकारसी प्रमुखके बाहनेसें अन्य देसांतरी जात्रार्थी भव्यजीवोंका धन ठगणेकी वृत्तिसें तीर्थ सेवन अनंत संसारका भवभ्रमण समझके वर्जना, एसें दुरबुद्धियोंकी पूजाव्रतपच्च-

खाणादि द्रव्यकरणी श्रावकाचारवृत्तिरूप जाणके उनोका संगभ्नी न करणा. शुद्धभ्नावसें सिद्धगिरी सेवे ताकूं नमस्कार हे ॥

॥ अथ सिद्धगिरी स्तवनं ॥ १ ॥

॥ देशी गरबानी ॥ ते दिन क्यारे आवसी हे, जो रे बहिनी ॥ जासुं सिद्धाचलनी जात्र, मोरी सहियां हे ॥ पाजै चढतां प्रेमसुं हे, जो रे वहिनी ॥ गाइयै गुण अखियात, मोरी सहियां हे ॥ ते दि० १ ॥ अदभ्नुत ऊंचो देहरो ए, जो रे बहिनी ॥ मूलनायक आदिनाथ, मोरी सहियां हे ॥ भ्नोली भ्नगत भ्नली परे हे, जो रे ब० ॥ निरख्यां होय सनाथ ॥ मो० ते० २ ॥ नाही निरमल नीरसुं हे, जो रे० ॥ पहिर खीरोदक चीर, मो० ॥ केसर भ्नरिय कचोलमी हे, जो रे० ॥ पूजसुं सुगुण सुधीर ॥ मो० ते० ३ ॥ रूमी रायणछांहमी हे, जो रे० ॥ आदिजिनंद ऊदार, मो० ॥ तिहां जगनाथ समोसख्या हे, जो० ॥ पूरव निनाणू वार ॥ मो० ४ ॥ इण गिरवरियै ऊपरा हे, जो रे० ॥ सीधा साधु अनंत, मो० ॥ चोमासे रह्या दोय जिनवरा हे, जो रे० । अजित जिनेसर शांती ॥ मो० ५ ॥ चेलणातलाइ सिद्धसिला हे, जो रे० ॥ अदभ्नुत उलकाझोल, मो० ॥ सिद्धवम् सेत्रुंजेनदी वहे हे, जो रे० ॥ करिये नित रंगरोल ॥ मो० ६ । इण मुंगर दीठा थकां हे, जो रे० ॥ ऊपजे परमानंद, मो० ॥ गहिरी गिरवर छांहमी हे, जो रे० ॥ कहे नित जिणचंद ॥ मो० ते० ॥ ७ ॥ इति सिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ २ ॥

श्रीचंद्रप्रभ्नु प्राहुणो रे । ए देशी ॥ नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी रे, त्रिकरण शुद्ध त्रिकाल रे ॥ पापपमल दूरै टलै रे, तूटे करमजंजाल रे ॥ नमो० १ ॥ पूरव निनाणू समोसख्या रे, प्रथम जिनंद जगदीस रे ॥ बावीसम जिनवर विना रे, समवसख्या

तेवीस रे ॥ नमो० २ ॥ साधु अनंत अनसण ग्रही रे, सीधा ए-हिज ठाम रे। काल अनंत वलि सीऊस्यै रें, साधू अनंती कोड़ि रे॥ नमो० ३ ॥ अनंत कल्याणक भूमिका रे, महिमावंत महंत रे॥ सास्वतो तीरथ ए सही रे, अतिशय जास अनंत रे॥ नमो० ४ ॥ कोड़ि भवांतर जे किया रे, पातिक विविध ऊपाय रे॥ से-त्रुंजे सनमुख चालतां रे, पग२ ते सहू जाय रे ॥ नमो० ५ ॥ धन दिन तेहिज जाणसूं रे, वहिस्युं सेत्रुंजे केरी वाट रे ॥ छहरी यथाविध पालस्युं रे, संघ सहित गहगाट रे ॥ नमो० ६ ॥ पग२ उछव अतिघणा रे ॥ पग२ याचकदान रे ॥ प्रेम भगत साहमीतणी रे, जीर्णोद्धार प्रधान रे ॥ न० ७ ॥ धन ते गिरिराय निरखसुं रे, व-धती मंगलमाल रे ॥ मणि मोतीयड़े वधावस्युं रे, रजत सोवन भर थाल रे ॥ नमो० ८ ॥ धन दिन ते गिर फरसस्युं रे, करस्युं पाव-न मोरी काय रे, भगति जुगति जुहारस्युं रे, नाभिनंदन जिनराय रे ॥ नमो० ९ ॥ द्रव्य भाव करसुं मुदा रे, पूजा विविध प्रकार रे॥ भावै भावना भावसुं रे, करसुं सफल अवतार रे ॥ नमो० १० ॥ रत्नत्रयी भमती भली रे, देसुं ते धर बुद्धि रे ॥ भवभव भ्रमण निवारसुं रे, लहिसुं आतमसुद्धि रे ॥ नमो० ११ ॥ विध फरसन मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिनरात रे ॥ पुन्य प्रबलथी पामियो रे, उज्जलगिरि केरी जात रे ॥ नमो० १२ ॥ नाथ धूलेवा सुपसा-यथी रे, कारज सगला सिद्ध रे ॥ कहै जिनहरष सूरीसरू रे, हो-यजो मंगल बुद्ध रे ॥ नमो० १३ ॥ इति सिद्धाचल स्त० ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥ ३ ॥

॥ देशी पंथीड़ानी ॥ अंग ऊमाहो मोने अतिघणो, भेटवा विमलगिरिंद रे पंथीड़ा ॥ नाभिराया कुल चंदलो, जिहां वसै मरु-देवानंद रे पंथीड़ा ॥ वहिलुं वोले रे पंथी म्हारा वहिलुं वोले रे ॥

सेत्रुंजो है कितनी दूर रे पंथीड़ा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नगर सोहामणो, रूडी ललतासरनी पाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां अंबला रे वड़ला घणा, झुक रही चंपलारी डाल रे पंथीड़ा ॥ वहि० २ ॥ धन ते पंखी पारेवड़ा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीड़ा ॥ ऊभा हो करीने जे घर रहे, माणस नही ते ढोर रे पंथीड़ा ॥ वहि० ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, झीणी२ ऊड़े खेह रे पंथीड़ा ॥ मैला थावे संघना कापड़ा, निरमल थायै देह रे पंथीड़ा ॥ वहि० ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीड़ा ॥ वहि० ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीड़ा ॥ फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथीड़ा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद रे पंथीड़ा ॥ मोने भेटणरो जी कोड़ है, प्रेम घणे जिनचंद रे पंथीड़ा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निनाणूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा०॥ कोड़िसहस भव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे डग भरेये ॥ विम० जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढियै गिरवरियै ॥ विम० जा० ॥ पूंडरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै ॥ वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधरिये ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परहरियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० जा० ॥ पड़िक्कमणा दोय विधसुं कीजै, पापपड़ल विप हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकालै ए तीरथ मोटो, प्रवहण

सम भवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै भव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥राग प्रभाती॥ भाव धर धन्य दिन आज सफलो गिणयो, आज मैं सजन आनंद पायो ॥ भा० ॥ हर्ष धर निजर भर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य दोय चरण जिहां चलत आयो॥ भा० ॥आज धन दोह जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह मैं सुजस गायो ॥ भा० २ ॥ डर डुरगति टरो जात्र विधसुं करी, पुन्यभंडार पोते भरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, रुषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन डेढसें कल्याणक भये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के भये, श्री अरअनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान भया. एसें इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक भये. इस तरे पांच भरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पच्चास कल्याणक भये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें डेढसे कल्याणक भये. इस वास्ते यह दिन बडा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणाना करै. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इच्छा होय तो महीनेंमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

सेत्रुंजो छै कितनी दूर रे पंथीड़ा ॥ वहि० १ ॥ पालीताणो नग सोहामणो, रूडी ललतासरनी पाल रे पंथीड़ा ॥ जिहां अंबला वड़ला घणा, झुक रही चंपलारी झाल रे पंथीड़ा ॥ वहि० २ धन ते पंखी पारेवड़ा, सेत्रुंज वसिया जे मोर रे पंथीड़ा ॥ कम हो करीने जे घर रहे, माणस नहीं ते ढोर रे पंथीड़ा ॥ वहि० ३ ॥ सेत्रुंज वाटे जी चालतां, झीणी२ ऊड़े खेह रे पंथीड़ा मैला थावे संघना कापड़ा, निरमल थायै देह रे पंथीड़ा ॥ वहि ४ ॥ ऊंचो देहरो आदिनाथनो, आगल चोक विसाल रे पंथीड़ा जिहां मिल२ घणा मानवी, गावै प्रभुगुण माल रे पंथीड़ा ॥ वहि ५ ॥ घस केसर भर वाटका, पूजेवा जिनवर अंग रे पंथीड़ा फूलाहंदो सोहे प्रभु सिर सेहरो, दिवलांरी ज्योति अभंग रे पंथ ड़ा ॥ वहि० ६ ॥ ए गिरवर दीठां माहरै, ऊपजै परम आनंद पंथीड़ा ॥ मोने भेटणरो जी कोड़ छै, प्रेम घणो जिनचंद रे पंथ ड़ा ॥ वहि० ७ ॥ इति श्रीसिद्धाचलजी स्तवनं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरी स्तवन ॥ ४ ॥

॥ जात्रा निनाणूं करिये विमलगिर, जात्रा० ॥ पूरव निन णूं वार सेत्रुंज गिर, ऋषभ जिनंद समोसरियै, सेत्रुंजगिर यात्रा० कोड़िसहस भव पातक तूटै, सैत्रुंज सामे डग भरेये ॥ विम जात्रा० १ ॥ चोथ छठ दोय अठम तपस्या, कर चढिये गिरवरिये विम० जा० ॥ पूंडरीक पद जपियै हरषै, अध्यवसाय शुभ धरियै वि० जा० २ ॥ पापी अभवी निजर न देखै, हिंसक पिण ऊधा यै ॥ वि० जा० ॥ भूमिसंथारी ने नारितणो संग, दूरथकी परह रियै ॥ वि० जा० ३ ॥ एकल आहारी ने सचित्त परिहारी, गुरु सा पद चरियै ॥ वि० जा० ॥ पड़िकमणा दोय विधसुं कीजै, पापपड़ ल विष हरियै वि० जा० ४ ॥ कलिकाले ए तीरथ मोटो, प्रवहर

सम भवदरियै ॥ वि० जा० ॥ उत्तम ए गिरवर सेवंता, पदम कहै भव तरियै ॥ वि० जा० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः सिद्धगिरो स्तवन ॥ ५ ॥

॥राग प्रभाती॥ भाव धर धन्य दिन आज सफलो गिणयो, आज में सजन आनंद पायो ॥ भा० ॥ हर्ष धर निजर भर विमलगिरि निरख कर, रजत मणि कनक मोतियन वधायो ॥ भा० ॥ १ ॥ पग२ उमंग धर पंथ नित पूछतां, धन्य होय चरण जिहां चलत आयो॥ भा० ॥आज धन दोइ जागी सुकृतकी दिशा, आज धन दीह में सुजस गायो ॥ भा० २ ॥ दुर दुरगति टरी जात्र विधसुं करी, पुन्यभंडार पोते भरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिरसिखर, रुषभ जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ भा० ३ ॥ इति पदं॥

॥ अथ मार्गशीर्ष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ मिगसर महीनेमें मिती मिगसर सुद ११ सो मोनइग्यारस नामसें पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन डेढसें कल्याणक भये हें सो लिखते हे. जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान, यह तीन कल्याणक श्रीमल्लिनाथस्वामी के भये, श्री अरथनाथ स्वामीनें दीक्षा अंगीकार करी. श्री नमिनाथस्वामीकों केवलज्ञान भया. एसें इस भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चोवीसीके पांचकल्याणक भये. इस तरे पांच भरत, पांच एरवत में, चोवीसीके पांच२ कल्याणक मिलाणेसें पच्चास कल्याणक भये. अतीत, अनागत, वर्त्तमानकालकी अपेक्षासें डेढसे कल्याणक भये. इस वास्ते यह दिन वडा उत्तम है. इस दिन मौन संयुक्त उपवास करै, अठ पहरी पोसा करकै मौनइग्यारसका गुणना करै. पोसह की शक्ति नही होय तो देसावगासि लेके गुणना करे. एसे इग्यारे वरसमें इग्यारे उपवास करे. अगर जो इग्यारस करणे की इच्छा होय तो महीनेंमें दोनों पक्षकी दो एकादसीकों इ-

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै. यह तपस्या करतां इग्यारे अंग ज्ञा-वसें सुणें, इग्यारे अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. (समवसरण बैठा ज्ञगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै उद्यापनमें पेंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवछल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥
॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुज्नूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुज्नूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुज्नूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ चिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१९ श्रमल्लिनाथायनमः
१९ श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रज्ञुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥
॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुज्नंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुज्नंकरनाथायनमः
६ श्रीशुज्नंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीगुणनाथनाथायनमः
१९ श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृडुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिन पंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनमः
१९ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१९ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१९ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिन पंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत २४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिचन्द्रनाथायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४पंचकल्यालकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीअक्षोभअर्हतेनमः
१९ श्रीअक्षोभनाथायनमः
१९ श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

ग्यारे वरस इग्यारे महीना करै, यह तपस्या करतां इग्यारै अंग न्ना-वसें सुणें, इग्यारै अंग लिखायके देवै, पढणेवालोंकों सहाय देवै, तपस्या ग्रहण करणेकी तथा पारणेकी विधि करै, सो गुरुमुखसें करै. (समवसरण बैठा न्नगवंत) इत्यादि इग्यारसका स्तवन पूर्वे लिख्या है सो पढे वा सुणै. पीछै न्नद्यापनमें पैंतालीस आगमकी पूजा करै. यथाशक्ति साहमीवच्छल करै, गुरुपूजा करै ॥ इति विधिः॥

॥ अथ मोनएकादशीको गुणनो लिख्यते ॥

॥ जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रे अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥

॥ प्रथम ॥

४ श्रीमहायशसर्वज्ञायनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिअर्हतेनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिनाथायनमः
६ श्रीसर्वानुन्नूतिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीश्रीधरनाथायनमः

जंबुद्वीपे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणक ॥२॥

२१ श्रीनमिसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीमल्लिअर्हतेनमः
१ए श्रमल्लिनाथायनमः
१ए श्रीमल्लिसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअरिनाथायनमः

जंबुद्वीपेभरतक्षेत्रेअनागत २४ जिनपंचकल्याणक० ॥३॥

४ श्रीस्वयंप्रन्नुसर्वज्ञायनमः

॥ धातकीखंडेपूर्वभरते अतीत २४ जिन पंच कल्याणक नमः ॥ ४ ॥

॥ द्वितीयः ॥

४ श्रीअकलंकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुन्नंकरअर्हतेनमः
६ श्रीशुन्नंकरनाथायनमः
६ श्रीशुन्नंकरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीसप्तनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेवर्त्तमान २४ जिन पंच कल्याणकनाम ॥५॥

२१ श्रीब्रह्मेंद्रसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीगुणनाथअर्हतेनमः
१ए श्रीगुणनाथनाथायनमः
१ए श्रीगुणनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीगांगीलनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वभरतेअनागत२४ जिनपंचक०नाम ।६।

४ श्रीसांप्रतिसर्वज्ञायनमः

६ श्रीदेवश्रुतअर्हतेनमः
६ श्रीदेवश्रुतनाथायनमः
६ श्रीदेवश्रुतसर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअतीते २४ जिनपंचकल्याणक० प्रथ॥७॥

४ श्रीमृदुसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्यक्तअर्हतेनमः
६ श्रीव्यक्तनाथायनमः
६ श्रीव्यक्तसर्वज्ञायनमः
७ श्रीकलाशतनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेवर्त्तमान२४जिनपंचकल्याणक । ८ ।

२१ श्रीअरण्यवासरसर्वज्ञायनमः
१७ श्रीयोगनाथअर्हतेनमः
१७ श्रीयोगनाथनाथायनमः
१७ श्रीयोगनाथसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअयोगनाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वभरतेअनागत२४जिनपंचकल्याणकनामः ९

४ श्रीपरमसर्वज्ञायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिअर्हतेनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिनाथायनमः
६ श्रीशुद्धार्त्तिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिष्केशनाथायनमः

६ श्रीमुनिनाथअर्हतेनमः
६ श्रीमुनिनाथनाथायनमः
६ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविशिष्टनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअतीत २४जिनपं०ना०द्वितिय॥१०॥

४ श्रीसर्वार्थसर्वज्ञायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रअर्हतेनमः
६ श्रीहरिचन्द्रनाथायनमः
६ श्रीहरिचन्द्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीमगधाधिनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेवर्त्तमान २४पंचकल्यालकना० ॥११॥

२१ श्रीप्रयच्छसर्वज्ञायनमः
१७ श्रीअक्षोभअर्हतेनमः
१७ श्रीअक्षोभनाथायनमः
१७ श्रीअक्षोभसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीमल्लिसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमभरतेअनागत २४ जि०पं०क० १२

४ श्रीआदिकरसर्वज्ञायनमः
६ श्रीधनदअर्हतेनमः
६ श्रीधनदनाथायनमः
६ श्रीधनदसर्वज्ञायनमः
७ श्रीपौषनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीविपरीतअर्हतेनमः
१ए श्रीवीपरीतनाथायनमः
१ए श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः
६ श्रीअभिनंदननाथायनमः
६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४
जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
१ए श्रीमरुदेवनाथायनमः
१ए श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जि
नपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४
जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः
६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः
६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीविपरीतअर्हतेनमः
१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः
१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत
२४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः
६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन
पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४
जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः
६ श्रीअभिनंदननाथायनमः
६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः
७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४
जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः
१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः
१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जि
नपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः
६ श्रीव्रतधरनाथायनमः
६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४
जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाहिकसर्वज्ञायनमः
६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वेएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वेएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वेएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वेएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअतीत२४जिन पंचकल्याणक ॥१३॥

४ श्रीप्रलंबसर्वज्ञायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिअर्हतेनमः

६ श्रीचारित्रनिधिनाथायनमः

६ श्रीचारित्रनिधिसर्वज्ञायनमः

७ श्रीप्रशमजितनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणक ॥१४॥

२१ श्रीस्वामिसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीविपरीतअर्हतेनमः

१९ श्रीवीपरीतनाथायनमः

१९ श्रीवीपरीतसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीप्रसादनाथायनमः

॥ पुष्करार्द्धपश्चिमभरतेअनागत २४जिनपंचकल्याणक॥१५॥

४ श्रीअघटितसर्वज्ञायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रअर्हतेनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रनाथायनमः

६ श्रीभ्रमणेंद्रसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरिषभचंद्रनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअतीत२४जिन पंचकल्याणकनाम॥१९॥

४ श्रीसौदयसर्वज्ञायनमः

६ श्रीत्रिविक्रमअर्हतेनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअतीत २४ जि०पंचक० ।१६

४ श्रीदयांतसर्वज्ञायनमः

६ श्रीअभिनंदनअर्हतेनमः

६ श्रीअभिनंदननाथायनमः

६ श्रीअभिनंदनसर्वज्ञायनमः

७ श्रीरत्नेशनाथायनमः

जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेवर्त्त०२४ जिनपंचक० नाम।१७

२१ श्रीशामकाष्टसर्वज्ञायनमः

१९ श्रीमरुदेवअर्हतेनमः

१९ श्रीमरुदेवनाथायनमः

१९ श्रीमरुदेवसर्वज्ञायनमः

१८ श्रीअतिपार्श्वनाथायनमः

॥जंबूद्वीपेएरवतक्षेत्रेअना०२४जि नपंचकल्याणकनाम॥१८॥

४ श्रीनंदिषेणसर्वज्ञायनमः

६ श्रीव्रतधरअर्हतेनमः

६ श्रीव्रतधरनाथायनमः

६ श्रीव्रतधरसर्वज्ञायनमः

७ श्रीनिर्वाणनाथायनमः

॥पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअतीत२४ जिनपंचक०ना०॥२२॥

४ श्रीअष्टाह्निकसर्वज्ञायनमः

६ श्रीवणिक्अर्हतेनमः

६ श्रीत्रिविक्रमनाथायनमः
६ श्रीत्रिविक्रमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीनारसिंहनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२०॥

२१ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसंतोषितअर्हतेनमः
१९ श्रीसंतोषितनाथायनमः
१९ श्रीसंतोषितसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीकामनाथायनमः

धातकीखंडेपूर्वएरवतेअनागत२४
जिनपंचकल्याणकनाम॥२१॥

४ श्रीमुनिनाथसर्वज्ञायनमः
६ श्रीचंद्रदाहअर्हतेनमः
६ श्रीचंद्रदाहनाथायनमः
६ श्रीचंद्रदाहसर्वज्ञायनमः
७ श्रीदिलादित्यनाथायनमः

धातकीखंडे पश्चिमएरवतेअतीत२४
जिनपं०क० नाम ॥ २५ ॥

४ श्रीपुरुरवसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअवबोधअर्हतेनमः
६ श्रीअवबोधनाथायनमः
६ श्रीअवबोधसर्वज्ञायनमः
७ श्रीविक्रमेंद्रनाथायनमः

६ श्रीवणिक्नाथायनमः
६ श्रीवणिक्सर्वज्ञायनमः
७ श्रीउदयज्ञाननाथायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेवर्त्तमान२४
जिनपंचक०नाम ॥ २३ ॥

२१ श्रीतमोकंदनसर्वज्ञायनमः
१९ श्रीसायकाक्षअर्हतेनमः
१९ श्रीसायकाक्षनाथायनमः
१९ श्रीसायकाक्षसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीखेमंतसर्वज्ञायनमः

पुष्करार्द्धपूर्वएरवतेअना० २४
जिनपंचक०नाम ॥ २४ ॥

४ श्रीनिर्वाणसर्वज्ञायनमः
६ श्रीरविराजअर्हतेनमः
६ श्रीरविराजनाथायनमः
६ श्रीरविराजसर्वज्ञायनमः
७ श्रीप्रथमनाथायनमः

पुष्करार्द्धपश्चिमए०अतीत२४
जिनपं०क०ना०॥२८॥

४ श्रीअश्ववृंदसर्वज्ञायनमः
६ श्रीकुटिलअर्हतेनमः
६ श्रीकुटिलनाथायनमः
६ श्रीकुटिलसर्वज्ञायनमः
७ श्रीवर्द्धमाननाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेवर्त्तमान२४ जिनपंचकल्याणकनाम॥२६॥

२१ श्रीसुशान्तसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीहरअर्हतेनमः
१ए श्रीहरनाथायनमः
१ए श्रीहरसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीनंदिकेशनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएरवतेवर्त्त० २४जिनपंचक०ना०२९

२१ श्रीनंदिकसर्वज्ञायनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रअर्हतेनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रनाथायनमः
१ए श्रीधर्मचंद्रसर्वज्ञायनमः
१८ श्रीविवेकनाथायनमः

धातकीखंडेपश्चिमएरवतेअना०२४ जिनपंचकल्याणकनाम ॥२७॥

४ श्रीमहामृगेंद्रसर्वज्ञायनमः
६ श्रीअसौचितअर्हतेनमः
६ श्रीअसौचितनाथायनमः
६ श्रीअसौचितसर्वज्ञायनमः
७ श्रीधर्मेंद्रनाथायनमः

पुष्करार्द्धेपश्चिमएर०अना० २४जिनपं०क० ॥३०॥

४ श्रीकलापसर्वज्ञायनमः
६ श्रीविसोमअर्हतेनमः
६ श्रीविसोमनाथायनमः
६ श्रीविसोमसर्वज्ञायनमः
७ श्रीआरणनाथायनमः

इति मौनएकादशी गुणना संपूर्ण ॥

॥ अथ विधि ॥ ॥ एकेक कल्याणककी एकेक माला गुणनेसें १५०से माला होती हे. जो जव्यजीव शुद्धचित्तसें गुणेंगे सो थोमे जवोंमें अनंतसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति मार्गशीर्ष मास मध्ये प० ॥

॥ अथ पोष मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ पोष महीनेमें मिती पोष वद १०, सो पोषदसमी नामसे पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका जन्मकल्याणक है, इसीसें यह दिन श्रीसंघमें परम आनंदकारी है, इस दिन श्रीपार्श्वनाथस्वामीका अधिकार सुणे, एकासणादिकका पच्चरकाण करे, जहां श्रीपार्श्वनाथस्वामीका नामसें तीर्थ प्रसिद्ध होय तहां जात्रा करणेंको जावे, जो कन्नी यात्रा करणेको नही जा सके तो जहां

श्रीपार्श्वनाथस्वामीका मंदिर होय उहां महोछव संयुक्त दरसण करणेकों जावै, जलयात्रादि महोछव करकै अष्टोत्तरीस्नात्र करावै अथवा पंचकल्याणकजीकी वा सत्तरभेदी पूजा करावै, तोरण बांधै, गीतगान नाटकादिकसें अनेक तरेके उछव करै, और (पास जिणेसर जगतिलो ए) वा (वाणी ब्रह्मा वादिनी०आदिक) पार्श्वनाथस्वामिके गुणगर्भित स्तवन पढे वा सुणे. इस पर्वका सेवन करणेसें आधिव्याधि सोग संताप सर्व दूर होंगे, अनेक तरेसें रुद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकों प्राप्त होंगे ॥ (स्तवन पासजिनेसर जगतिलो) सुणे वा पढे सो उर (वाणी ब्रह्मा०) पहली लिखा हे॥इति॥

॥ अथ माघ मास पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ माघ महीनेमें मिती माघ वदि १३, सो मेरुतेरस नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन श्रीरुषभदेवस्वामीका निर्वाणकल्याणक हे, इस वास्ते भगवंतमहाराज इस दिनकों उत्तम कहा है. इस दिन चोविहार उपवास करै, रत्नमई पांच मेरु भगवानके आगै चढावै, वीचमें १ बमा मेरु, च्यारुंदिस गेटा च्यार मेरु, एसें पांच मेरु चढावै. एसी शक्ति नही होय तो सोनेके, चांदीके, वा घृतके मेरु करके चढावै । आगे च्यारुं दिश तरफ च्यार नंद्यावर्त्त करै, अष्टप्रकारी, सत्तरहभेदी पूजा पढायके अष्ट द्रव्य चढावै. पीछै श्रीरुषभदेवस्वामी (पारंगतायनमः) इस पदका दो हजार गुणना करै, उर जो कोइ तेरसके दिन पोसह करे तो पूजादिक सब विधि पारणेके दिन करै. अतिथिसंविभाग करकै पारणा करै. इस तरे १३ वरस अथवा तेरे महीना तप करै. पीछै शक्ति मुजब उछवसें उजमणा करै, तीर्थोंकी यात्रा करै, साधर्मीवछल करै ॥ इहां दृष्टांत कहते हैं ॥ जेसें अयोध्यानगरीमें अनंतवीर्यराजाका पूत्र पिंगलरायकुमर गांगिलमुनीके पास इस पर्वका अधिकार सुणके

तपस्या करी. तपस्याके करणेसे पांगलापणेका रोग मिटा. तब तपस्या पूर्ण भयां पीछै तेरे मंदिर बनवाया, १३ रत्नमई, १३ स्वर्णमई, १३ रूपैमई प्रतिमा स्थापन करी. १३ वेर संघसमेत तीर्थोकी यात्रा करी. तेरे वेर साधर्मी वात्सल्य किया, बहोत तरेसें ज्ञान भक्ति करी, अंतमें महसेनकुमरकों राज्य देकै श्रीसुव्रताचार्यजीके पास दीक्षा ग्रहण करी, अनुक्रमें चवदे पूर्वकों पढके सर्व कर्मोका क्षय करके अनंतसुखकों प्राप्त भया. जो भव्यजीव इस पर्वकों विधी संयुक्त सेवन करेगा सो इस भव और पर भवमें अनेक सुखकों प्राप्त होगा. इति माघ मास पर्वाधिकार: ॥

॥ अथ फाल्गुणमास मध्ये पर्वाधिकारः लिख्यते ॥

॥ फाल्गुनमहीनेसें मिती फाल्गुन सुद १४, सो तीसरे चोमासेकी चौदश नामसें पर्व प्रसिद्ध हे । इस दिनको सर्व कर्त्तव्य आषाढचोमासे तुल्य करै, सो पहली लिखा हे ॥

अब इहां विशेष होलीका अधिकार लिखते हें ॥ ॥ श्रमणभगवंत श्रीमहावीरस्वामी बारे महीनोंमें ६ वडे पर्व कहा हे. ३ तीन चोमासे, २ ओली, १ पर्यूषण. जिसमें ओली २ का और पर्यूषण का एवं ३ अठाईका महोछव तो प्रायें सर्वत्र होता हे. जिसमें भी जेसा बीकानेरमें खरतर गछवालोका पोथा अर्थात् पुस्तकका उछव हाथीके होदे वडे आडंबरसें होता हे वा बरघोडा पुस्तकका मुंबइमें भी होता हे. लेकिन् हस्त्यारूढ नही. और कार्त्तिक महोछव अन्यत्र भी बहोत जगे होता हे लेकिन् कलकत्ते जेसा महोछव स्वमतमें तथा परमतमें कहांइ भी भारतवर्षमें हमने देखा नही. दक्षणमें मलेबार तक हम गये, पूरबमें दिल्ली लखनेउ आगरा कासी पटणा तकमें नही देखा. उगणीसें बावनके वर्षमें हमनें यह उछव कलकत्तेमें देखा था, और फागुणमहोछव मकसूदाबादका बहोत अछा होता

हे. ज्ञगणीसर्से सुम्तालीसमें देखा था. दुसरी जगे नही कहांइ ज्ञी देखा, लेकिन् किसीज्ञी धर्ममहोछवमें आज्ञा विरुद्द जो काम होय सो अछा नही. एक तो ज्ञगवंतके समवसरणके संग आजकलके ज्ञाग्यवानलोक धूपके मरसें रेतीके मरसें आप तो जाते नही फकत बेसमऊ अदम्योंको ज्ञेजदेतेहें, वो लोक कूदते नाचते ज्ञागते समवसरणकों उछालादेते लेजातेहें उसमें कितनी आसतना होती हे, कितना कर्म बंधताहे, उसकूं सम्यक्तीजीव विचारके आप विवेक विनय संयुक्त शुद्धज्ञावसें धर्मकाममें उद्योग करतेहें उनका दोनुं ज्ञव सफल हे. वोही महोछव लायकतारीफके हे इस वास्ते आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष हे सो शेसका चोमासापर्वजाणके सर्व जगें ज्ञगवंतके धर्मका उद्योत करतेज्ञये शुज्ञध्यानरूप अग्निसें अष्ट कर्मरूपी काष्टको जलाके होली करते हें, पीछे सुबोधजलसें स्नान करके अत्यंत सुंदरताकूं प्राप्त होते हें. अब यह होलीपर्व दो प्रकारसें हें. इव्यें उर ज्ञावे. सो प्रथम इव्य होलीका अधिकार लिखते हें ॥

॥ इस फाल्गुनमहीनेमें चौदश पूर्णमाशी के दिन केइयक अज्ञानीजीव विवेकविकल ज्ञयेथके नीचजातिके परंपराको प्राप्त ज्ञये थके लकम गणे जलायके द्रव्यमई होलिका करते हें, उत्तम चोमासा धर्मपर्वका विराधना करते हें. दूसरे दिन मलसूत्र रेतीसें क्रीमा करते हें, खोटे वचन बोलते हें, गधे पर चढते हे, अनेक जीवोंकों डुःख देते हें, एसे जीव वीतरागकी आज्ञा गेमके ज्ञांम ज्ञरमोंकी कुलमर्याद करते हे, मिष्टान्न त्याग विष्टा खाते हें, दूध गेम पेसाव पीते हें, एसे पुरुष निकेवल कर्मका सघन बंधन करके डुर्गतिकों उपार्जन करते हें, अनर्थदंमसें अनंत ज्ञव संसारको स्थिती वांधते हें. इसवास्ते आत्मार्थी ज्ञव्यजीवोकों ज्ञावहोली करणा चाहिये. सो इस मुजब—प्रज्ञुके गुणग्राम वसंतके स्तवन बोले, रात्रीजागर-

ण करावै, मंदिरोंमें पूजा करावै, महोछव निकालै, नानाप्रकारका नाटिक करै, साहमीवछल करै, साधर्मीभाई आपसमें नानातरेकी क्रीमा करै ॥ आगे राजालोक भी वसंतऋतु आणेसें मदन महोछव करणेकों जाते थे, नानातरेके जल चंदन केसर अवीर गुलालसे सहरके लोक बगीचोमें क्रीमा करते थे, इत्यादि लेख तो शास्त्रोंमें वहोत जगे वांचणेमें आया हे, लेकिन् मलमूत्र राख धूमसें खेलणा, होली जलाणा, पादत्राण खाणा, भंम चेष्टा करणी, कुल मर्याद गेमणा, वमेरोकी लज्या गेमणी, एसा कृत्य उत्तम पुरुषोंके करणे लायक नही. यह क्रीमा वाममार्गीयोकी चलाइ भई हे. इसकों प्रवृत्त भयें प्राये दो हज्जार वर्ष करीव भया. पीछै स्वामी शंकराचार्यकूं यह वात सम्मत भई तवसें धीरे२ अज्ञानी जीव एककी देखादेख वहोत लोक करणे लगगये, लेकिन् एसी कर्त्तव्यता किसी भी शास्त्रमें नहीं देखणेमें आई. देखो केसी आश्चर्यकी वात हे, जब मंदिरजीमें पूजादिक महोछवका काम होता हे उस वखत तो जाणें को फुरसत नही मिलती हे, उर होलीके दिनोंमें मातापिता भाई वहिन सवोंकी लज्या गेमके वहोत दिलमें खुसवखती मानताभया पागलके माफक भांमोंकी तरे वकते फिरता हे. कोइ वैस्याउंका नाच होता होय उहां तो हज्जारुं रुपे खरच कर देतेहे. मनमें फूलते हें हमने वमा नाम किया. तत्व नजरसे देखे उर विचारे तो नाम क्या निकला, वलके अशुभगतीके पाये पूरे मजबूत वंध करणेमें आये. एसी लज्जाया गेमके जिनमंदिरका महोछव करो, रात्रीजागरण, नाटकादिक धर्मका उद्योत करो, एसी होली खेलो सो तुमारा दोनोंही जन्म सुधरे. यह द्रव्ये उर भावे होलीका स्वरूप वांचके आत्मार्थी धर्मज्ञ पुरुष तो प्रसन्न होयगें, उर जो महामूर्ख अज्ञानीजीव होंगे सो तो रोष धारण करेंगें उर

सच्ची वातकूं कुयुक्तियोंसें झूठी ठहरावेंगें, ओर मध्यस्थ विचारवंत तो एसा कहेंगे यह वात सच्च हे. किसका पर्व किसका खेल, निकेवल इसमें अनर्थ दंम लगता हे, लेकिन हम इकेला क्या करें, भाइवंधोंकों एसा करते देख हमभी करते हें, हमसें रहा जाता नही. परंतु यह प्रथा वंध हो जाय तो अछी हे. इस वास्ते हे भव्यजीवो इसमें समुदाणी कर्म वंधता हे. ठोडे सो धन्य हे. नरकके जाते का संग नही करणा. जेसें सरकारकी एनके जाणकार चोरी करणेवालेका तथा खूनी केदीकी संगत ओर वात तक नही करते उस मुजव एकका अनर्थ खेल देख दुसरेकों वचना चाहिये. काम वो करणा जिस्में दोनों भवमें लाभ होय. इस द्रव्यहोलीके खेलमें वडी२ लडाइयां होजाती हे. मेडता सहर होलीके ख्यालसें पुष्करणे ओर भोजकोंकी लडाइमें तमाम उजाड होगया. ओर परभवमें अेरगैर बोलणेके फल सव धर्मोंमें बुरा लिखा हे. इस वावत जो जो कठोर लवज लिखा हे उसकूं वांच विवेकी मेरे पर गुस्सा नही लावेंगें. जो कुछ लिखा हे सो पूर्वाचार्योंके वचनानुसार लिखा हे. हितोपदेस समझके ठोडणेका प्रयत्न करेंगें. मेरे तो नवकारमंत्रके अडसठ अक्षर शुद्ध गुणनेवाले धर्मवंधु हे. जिसमें भी सर्व जीवायोनिसें मित्रता हे. कम या ज्यादा जो कुछ अपशव्द लिखा होय तो मिछामिडुक्कडं ॥१॥ इति फा० ॥ प० ॥

॥ अथ भावहोरी खेलनेके स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग धमाल ॥ होरी खेलीयै नर वहुरन एसो दाव ॥ हो० ॥ दयामिठाई अति भली रे, तप मेवा पकवान ॥ सील अशणो अति भलो, वारी संजम नागरपान ॥ हो० १॥ लेस्या मादल भाव डफ रे, क्रोध मान दोय ताल॥ पांच सुमतिकों अरगजो, वारी नवतत्व लेहुं गुलाल ॥ हो० २॥ सुमताकेसर घोलियें रे, दमवाको

सावलो रूठो, कित गयो मो चित चोरी—अरज नहीं लीनी मोरी ॥ ने० १ ॥ व्याहन आए मेरे मन भाए, लाये बल दल जोरी ॥ तोरणसें रथ फेर चले हो, चढ गए गिरकी डूंरी—मदन महा रिपु तोरी ॥ ने० २ ॥ व्याकुल भईहुं दरस विन देखे, रहि हे मुख कुं मोरी ॥ कमलनयन राजमती सखियनसें, विनती करे करजोरी-लगी है मुक्तिकी मोरी ॥ ने० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ होरी खेलो रे भविक मन थिर करकै, हो० ॥ सुमति सुरंग गुलाल मंगावो, अबीर जमावो झोली भरभरकै ॥ हो० १ ॥ ग्यान ध्यान डफ ताल बजावो, गुण गावो प्रभु हित धरके ॥ हो० २ ॥ अनुभव अतर फूलेल मंगावो, वास दिसोदिस महम हकै ॥ हो० ३ ॥ क्रोध मान रज धूड भगावो, ज्यूं तेरा पाप सबल थरके ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ होरीके खेलईया, तूं तो प्रभू भज विलंब न कर रे ॥ हो० १ ॥ विनय संभारी भर पिचकारी, हांरे तूं तो शिवरामा वर वर रे ॥ हो० २ ॥ आगम लाल गुलाल भर झोरी, हांरे तूं तो खेल वसंत घरघर रे ॥ हो० ३ ॥ सील सुरंग आभूषण अंगै, हांरे तूं तो भावना वागा पहिर रे ॥ हो० ४ ॥ नीरंजन प्रभुना गुण गावो, हांरे तूं तो आतम अनुभव वर रे ॥ हो० ५ ॥ ग्यान विज्ञान फूली फुलवारी, हांरे तूं तो गूंजत मन मधुकर रे ॥ हो० ६ ॥ वामानंदन पास जिनेसर, हांरे तूं तो जगनायक जगगुरु रे ॥ हो० ७ ॥ श्रीजिनलाभ कहै प्रभु संगै, हांरे तूं तो अनुपम भव निसतर रे ॥ हो० ८ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी ॥ वाके ममतानें धूम मचाई, आज सुमता संग खेलैंगे होरी ॥ वा० ॥ जिन शासन व्रतरंगमहिलमें, दीपक बोध बनाई ॥आ० वा० १॥ सरधासखी क्षमा मृडुता मिल, ऋजुता मुक्ति सुहाई ॥

जर अनेक सुमति सखी व्रजमें, अनुभव रंग रंगाई ॥आ० वा०१॥ भाव सौच तप दान शील सब, निज गुण बंधु सहाई ॥ जिन गुण गान संगीत निरत धुनि, भक्ति जिणंद वढाई ॥ आ० वा० २ ॥ खेलत संजम फाग मिलै सब, बाल आणंद बधाई ॥ अब कुमता संग रंग करे तो, मेरे चित न सुहाई ॥ आ० वा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ समकित बिन जीव जगत भटक्यो, स० ॥ चउरासी भव भमतां२, नरभव पायो सो दिल खटक्यो ॥ स०१॥ गरभावास नव मासे नीकौ, ओऊकी संगत तूं लटक्यो ॥ स० २ ॥ पुन्य संजोग मिल्यौ कुल श्रावक, ग्यान प्रकाश भयो घटको ॥ स० ३ ॥ विषय विकार रम्यो तरुणी संग, मायासें तेरो मन अटक्यो ॥ स० ४ ॥ सुरत संभाल तूं जाग रे मानवी, सूधो शिवपुरकुं सटको ॥ स० ५ ॥ रूपचंद कहे प्रभु गुण गावो, स्वर्गपुरीमें नहि अटको ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ विसरे मत नाम प्रभूजीको, वि० ॥ प्रभुजीको नाम चिंतामणि सरिखो, निरमल नीर सदा निको ॥ वि० १॥ नाभ कुमर मरुदेवीको नंदन, तीन भुवन सिर है टीको ॥ वि० २ ॥ चतुर कुशल चित चोलसुं राच्यो, कुण लहै रंग पतंग फीको वि० ३ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः॥ नेम निरंजन ध्यावो रे, वनमें तप कीनो ॥ ने०॥ वहुत हगासुं व्याह रचायो, जीव देख दया आणी रे ॥व० ने०१ ॥ सब यादव मिल व्याह रचायो, पहिर जराव जरीनो रे ॥ व० ने० २ ॥ कंकण मुगट हारसुं तोरे, पसुवन पर चित दीनो रे ॥ व० ने० ३ ॥ जनवरभूषण कहे भविजननें, सहु जगमें जस लीनो रे व० ने० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः फाग ॥ गढ गिरनारकी तलहटी, फाग खेले खेले ने-

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल भरयौ, दिशि दूजी गिरवर गिरनार ॥ विच सहसावन सोभतो, तिण माहे खेले नेमकुमार ॥ ग० १॥ फूल्या केवड़ा केतकी, विच फूल्या मरुआ मचकुंद ॥ वासै मोगरा मालती, तिण मांहे खेले नेमजिणंद ॥ ग० २ ॥ आंवा मोरया बागमें, तिण ऊपर कोयल करे टहुकार ॥ वाजै पवन दक्षिणतणी, स्यामभमरा कर रह्या रे गुंजार ॥ ग० ३॥ आंव पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमर अजूं नहीं, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४॥ हरि हलधर गोपि मिली, विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलभरी, मुख ऊपर छांटे यदुनार ॥ ग० ५॥ नेम हठी हठ ना तजै, समझायो जोरें यदुनाथ ॥ रिद्धहरष वाचक कहै, वात सांभलो शिवादेवी मात॥ग०६

॥ पुनः होरी ॥ धन राजुल तेरो भाग री, नेमनाथ वर पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजूं ऋषभजिणंदा, जिण मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको छत्र धरयो सिर ऊपर, गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चंपा चंपेली दोनुं मरुआ, फूल चढाउं गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख बोलो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमंदिरकी एहि वीनती, भवर दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चंपानगरमें, फागणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मंडपमें, होय रही हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी भरेय कचोरी, प्रभुजीके अंगियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चंदन अवर अरगजा, लाल गुलाल उडाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध भांतिकी पूजा रचाए, रत्नसुंदर चित लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हुं विमलाचल गिरकी, व० ॥

निविड दुरित नर शिखर भि दुरकी, नवसागर तारण तरकी ॥ व० १ ॥ तीन भुवन तीरथ तारागण, सोभा लहिय निशाकरकी ॥ व० ॥ सुंदर अनुपम अतिसय करिकै, महिमा जीती सुरगिरकी ॥ व० २ ॥ परमातम पद प्रतिबिंब ननको, वंछित पूरण सुरतरुकी ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरूल मंमनकी, सकल करम रज जलधरकी ॥ व० ॥ वलि वलिहारी वारंवारी, श्रीनानेय जिनेसरकी ॥ व० ३ ॥ ए गिरि नदयाचल परि जिनकी, दुति दीपै जेम दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित करुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन भुवन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृषभ लंछन सोभाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुंदर प्रभुकी मोहनमूरति, देखत परमानंद नरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रभुकी निरंतर, पदतल नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, नवश एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसै प्रभु नेमनाथ, मेरे दिल वसिया ॥ ऐ० ॥ त्रिगडमें विराजमान, दुंदुभि सुणत कान ॥ अपछर मिल करत गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिंघासण विराजे साम, जीत लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥ ऐ० २ ॥ तीन छत्र चमर सार, पंच वर्ण पुष्फ धार ॥ गहिर असोक सार, भामंमल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चंग, द्वादश वखाणै अंग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसल चित्त वसिया॥ऐ०४॥

॥ रागवसंत ॥ संभवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥ हांरे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला ॥ सं० ॥ त्राता तीन भुवनके जगगुरु, दाता विरुद विचारी॥ साता दीजै साहिब मोकूं, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं०१॥

सेनामात नयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज लंगन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे डुरितारी, सावत्थी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा० ॥ सोरठ देसमें नीके दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसि या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ भवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४ ॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाभनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे भव हारो रे ॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त न कर हियरा हरख भरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरभव सफल जमारो ॥ भवि जन मन भमरा रंग भरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ भवदुख भंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम ता संग भेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, सुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी हिव सरणा ग्रही, भवसायर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सूंदर रूप बणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोरी, कोन चूक मोपै काढी भामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत बणी जेसी इंदु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहुंची प्रीतमसेती, बाल कहै भई सुगति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १॥ पर मंदिर तज अविचल लीजे, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहै अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमे, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, वंछित पावै दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग बजे तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाउ, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत छांडी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

सेनामात उयर अवतारी, जयवंत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज लंगन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाला ॥ सं० २ ॥ साठ पूरव लख आयु अवगाहन, धनुष च्यारसे धारी ॥ सोवन वरण सेवे डुरितारी, सावछी नगरी सारी हो लाला ॥ सं० ३ ॥ समेत सिखर पर मुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इंद्रादिक मिल मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाला ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण सुद्धसें त्रिभुवन पतिकुं, वंदना होज्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा चित चाहत; सुगुण सदा हितकारी होलाला ॥ सं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ रागवसंत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया, सा०॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सैत्रुंजगिरिया ॥ सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिख्या ग्यानकेवल रसिया ॥ सा० २॥ राजुलनारी नेमीसर हाथै, संजम लेइ जवोदधि तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुंजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं समोसरिया ॥ सा० ४॥ इहां अणगार अनंत अपारा, अणसण कर सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकूं करुं जुहारा, सा० ६॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया ॥ सा०॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ जिनराज जुहारो, क्या वैठे जव हारो रे ॥ जि० ॥ रथ पाउधारे चंदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि तन कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या० १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥ जवडुख जंजन नाथ निरंजन, नाम लीये निसतारो॥ ममता तज समता संग जेली, निज आतम काज सुधारो॥ जि० ३॥ आज नगरमें रंग वधाई, घर२ मंगलाचारो ॥ रथ महोछव रचना रची हद, सुख

जयर सबद उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद विचारी, सेवक सुगुण संभारो ॥ प्रभु पंकजकी दिव सरणा ग्रही, भवसा यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सूंदर रूप बणाय सखी सब, शिखर सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रभुको व्याह मनायो, मोसें प्रीत लगाइ भामनी ॥ आ० ॥ तोरण आय चले मोहि छोरी, कोन चूक मोपै काढी भामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तजूंगी नव भव केरी, प्रीत बणी जेसी इंदु यामिनी ॥ आ० ॥ राजुल पहली प्रीतमसेती, बाल कहै भई सुमति गामिनी ॥ आ० म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लग्यो गुरु ज्ञान, होरी चेतन खेले ॥ रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, पहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १॥ पर मंदिर तज अविचल लीजे, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥ हिल मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो० रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागे, सोहै अदभुत वान ॥ हो० रं० ४ ॥ सुमति अबीर उमाय जगतमै, बैठे शिवपुर थान ॥ हो० रं० ५ ॥ अनुभव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर थान ॥ हो० रं० ६ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, वंछित पावै दान ॥ हो० रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥ मनमृदंग वजे तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित केसर चीर रंगाव, पहिरो मनवैराग॥ हो० २॥ लाख चोरासी रामत छोडी, च्यारुं गतिसें भाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एसा खेल भविकजन धारै, पावै भवजल थाग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें, समकितके रंग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धाय२, दुरजनकी लाज मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अबीर भरावो, क्षमा करो रंग लाय २ ॥ दु० हो० १ ॥ शील संजम व्रत पान मिठाई, ध्यान धरूंगी मैं गाय गाय२ ॥ दु० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह भरावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ दु० हो० ३ ॥ जगतचंदकी अरज वीनती, सरण गही मैं तेरी आय२ ॥ दु० हो० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे भरी, शिवपुरकी बात पूछूं कबकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर, परमातम निज ध्यान धरी ॥ मे० १॥ मोहन रंग भरयो रंग शीवपुर, अजर अमर पद सुख करी ॥ मे० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रुषभ बेठे अलबेसर, मारो गुलाल मुठी भरकै ॥ बावो० ॥ मुठी भरकै पसली भरकै, बावो० ॥ चूआ२ चंदन और अगरजा, केसरका मटका भरके ॥ बावो० १ ॥ रतनजडित शिर छत्र बिराजै, अंगी जडाव जडी जरकै ॥ बावो० २ ॥ बांहै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा० ३ ॥ नाभिराया मरुदेवीको नंदन, रमिये भवि आदीसरसें ॥ बा० ४॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६॥

॥ पुनः होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वंदना रे, जिनराजकुं हमारी वंदना रे ॥ भवःदुख वारण शिवसुख कारण, देखत भवनही फंदना रे ॥ जि० १ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, प्रणमुं रुषभ जिनंदना रे ॥ गि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान तुमारो, जिम चातक दिल चंदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥ देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे है अति नीको ॥ द०१ ॥ बीस कोसथी दरसन दीजे, जागो भरम सकल जियको ॥ द० २ ॥ वीसे टूंके वीस गोमटरूी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो सुगतिपदको ॥ द० ४ ॥इ०

॥ पुनःहोरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसण करलै, संघयात्रा–संघयात्रा करणसें पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि सीधा, ताकूं शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ ऋषभ जिनेश्वरजीको दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, भवश्का दुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिब आदि जिनंद चंद ॥ मोहे० ॥ रंग तूंही रंग रे ज तूंही है, संजम रंग मोहि रंगदे ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अनादिको, सो अब इनकूं खिनदे ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी ऋद्धि तेरी मैं देखी, सो अब मुझकुं सझदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, वा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो०४॥ भूधरदास कहे समकित दे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो०५॥

॥ पुनःहोरी ॥ मेरे पारसप्रभुजीके रंगमंडपमें, खेलत संत वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अबीर विलसंत ॥ ॥ मे० १ ॥ प्रभुगुण प्रेम पिचरकी छूटत, समता सखिय मिलंत ॥ आगम लहर फूली फुलवाडी, मुनिवर भ्रमर गुंजंत ॥ मे० २ अंग आभूषण पंचेंद्रिय वस, गुरुसेवास लहंत, वार भावना गहिर कसूंबा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अद्भूत पंच महाव्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचंद प्रभुकी कृपामें, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ रंग मच्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी, रं० ॥ पास प्रभु दरबार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा० कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥ कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥ लाल गुलाल अबीर उमावत, पासजीके दरबार रे ॥ चा० ३ ॥ भर पिचकारी गुलावकी छिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥ ताल मृदंग वीण मफ बाजै, भेरी भुंगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥ सब सखियन मिल नाटक करके, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥ रत्नसागर प्रभु भावना भावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ नेमजीसें कहियो मोरी, सामरेसें कहियो मोरी ॥ तोरण आए किण भरमाए, छोम चलै अभिमानी ॥ हां रे लाला छो० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोमी प्रीत पुरानी-दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पमीसो मुंहसें कहियो, ना करिये सोधाणी ॥ आठ भवोकी प्रीत वंधाणी, नवमे चले क्युं ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिछाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें मेह लागी, राजुल गुलकी वामी ॥ वीनती सुणके अमर पद दीजै, रंग विजय सुख दानी—आवा उर गमन छिदानी ॥ सा० ३ ॥ इ०॥

॥ पुनःहोरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमें वरसै रंग, जिन० ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अबीर अरगजा, सुमता चीर सुचंग ॥ श्रीचिं० तोरे० १ ॥ अनुभव लहर फुली फुलवामी, दिन२ वढते रंग ॥ श्रीचिं० तोरे० २ ॥ उपशम वागा अंग अनोपम, शुक्ल ध्यानके संग ॥ श्रीचिं० तो० ३ ॥ अमरचंद चिंतामणि चित धर, तुमसुं अविहम रंग ॥ श्रीचिं० तो० ४ इ०॥

॥ पुनः होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरंग, श्रीचिंतामणि

पास प्रनूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आये, आणी नाव अनंग ॥ श्रीचिं० तोरी० १ ॥ मह्वंधीकी नांत नली हे, वुंटिया नवश् रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब वन्यो हे, कोर केवमा संग ॥ श्रीचिं० २ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, बाजूबंध सुचंग ॥ श्रीचिं० ॥ फूलनकी गल माल सोनत है, सौरंग वास सुगंध ॥ श्रीचिं० ३॥ त्रिनुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग ॥ श्रीचिं० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥ श्रीचिं० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग ॥ श्रीचिं० ॥ नावना नावो जिनगुण गावो, अमर घणै उठरंग ॥ श्रीचिं० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिंतामणि चित ध्यावो रे, वंछित फल पावो ॥ चिं० ॥ सकल नविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण गावो रे ॥ वंछित० १ ॥ अबीर गुलाल लाल संग लावो, नर२ मुठियां नमावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ कुंकुम केसरकुं छिमकावो, नाव शुरू नल नावो रे ॥ वंछि० चिं० २ ॥ अंगी चंगी पुहप बनावो, दीपक ज्योति दीपावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ दरस सरस करके सुख पावो, पुण्य नंमार नरावो रे ॥ वंछित० चिं० ३ ॥ वाजित्र बाजा विविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंछित० चिं० ॥ अमरसिंधुर आनंद दवावो, जिनजीसें लय लावो रे ॥ वं० चिं० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी नीज गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमांहि, गावत आगम राग ॥ लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति सोहाग ॥ लाल में० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगाउं, पहिरुं मन वैराग ॥ लाल में० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोमुं, च्यारों गति सोहाग ॥ पिया में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै, इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ नेम मिले तो वातां कीजिये, हो प्यारे जिनजी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥ हो० ने० १॥ हम हे केतकी तुम हो २ भमरा, फिर वासना लीजीयै ॥ हो० ने० २ ॥ में हूं धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना कीजीयै ॥ हो० ने० ३॥ नेम राजुल मिल मुगति सिधाए, रूपचंद पद दीजीयै ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटै ज्युं शुक्ल ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिछाएयो, ममता मिट गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार सम, नास भयो सब ज्ञानभानसें ॥ कर्म क० आ० २॥ परमातम पद पावत सोई, विनय भजत पद अचल थानसें॥ कर्म० आ० ३॥

॥ पुनः होरी॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपसमरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे, नयन भये अविकारी ॥ निद्रा सुपनदशा नहिं यामें, दर्शनावरण निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ ओर नयनमें काम क्रोध हे, वहोत भरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे हुसियारी ॥ लाल ते० २ ॥एसा लछन हे नयनोंमें, क्युं पामे भव पारी, योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें न्यारी॥ लाल ते० ३ ॥ धर्म विना कोई सरणा नही हे, एसो निश्चै धारी ॥ विनय कहे प्रभु भजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दर्शन विन जीवसंसार भम्यो, द० ॥ चोरासी लख योनिमें भटकत, लहि मानवभव शुद्धी गम्यो ॥ द० १ ॥पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, घटमें ज्ञान उद्योत भयो ॥ द०

३॥ माया ममतामें निश दिन तूं, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो॥ द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चेतन, भटकत भवमें क्युं भरम्यो ॥ द० ४ ॥ कहत क्षमाकल्याण निरंतर, भज भगवंत तेरो पाप शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत छेडो मोने यूंही रे, कोइ चूक बतावो ॥ म० । अबीर गुलाल भावसें रमतां, हमसुं कहिय न खेलो रे ॥ कोइ० म० १॥ रथ फेरी प्रभुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हगासुं व्याह मनायो, जीव देख दया आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल कन्नी अरज करत हे, एक वार फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए, पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनःहोरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिब, जिनवर प्राण आधारो री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्यारो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवच्छ लंछन जनम भद्दिलपुर, कुल इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेउ धनुष शरीर सुसोभित, कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूरव आयु कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५॥ दीनदयाल जगत प्रतिपालक, अब मोहे पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके साहिब सच्चे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥ ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल पाठक, सब तपसी बिच सार ॥ ने० २ ॥ मंगल धन धन्नामुनि नायक, मंगल सब अणगार ॥ ने० ३ ॥ जय२ खेमकुसल गुरु जंपे, आनंदघन अवतार ॥ ने० ४ ॥ इति पदं॥

॥ इम मास द्वादश तप सुसंग्रह विधिप्रपासें संग्रही, अति सुगम भाष प्रकाश करतां भव्यजन मन गहगही ॥ निधि बाण नंद सुचंद विक्रम माघ सुदि पूनम सही, श्रीवृहत्खरतर गछ पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन भगवंतके कल्याणकके है सो सर्व भव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य है, लेकिन् कोण तिथिकूं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नहो (ओर विशेषमें) पंच कल्याणककी तपस्या करणेवाले भव्यजीवोंके अवस्य पंचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासें पंच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पंच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

५ श्रीसंभवनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनमः
१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०
१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनमः
३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः
६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०
१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनमः
११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनमः

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनमः

कार्त्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ९ ॥

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनमः
१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०
११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीअर्हतेनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीनाथायनमः
११ श्रीमल्लिनाथजीसर्वज्ञायन०
११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०
१४ श्रीसंभवनाथजीअर्हतेनमः
१५ श्रीसंभवनाथजीनाथायन०

११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः
१२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः
१३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः
१४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय०

माघकृष्णपक्षे ॥ ५ ।

६ श्रीपद्मप्रभूजीपरमेष्टिने०
१२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह०
१२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः
१२ श्रीऋषभदेवजीपारंगता०
३० श्रीश्रेयांसजीसर्वज्ञायन०

फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १०

६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता०
७ श्री चंद्रप्रभूजीसर्वज्ञायन०
९ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्टिने०
११ श्रीऋषभदेवजीसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीअर्हतेनमः
१२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः
१२ श्रीश्रेयांसजीनाथायनमः
१४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः
३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः

चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५

४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्टिने०
२ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय०
५ श्रीचंद्राप्रभूजीपरमेष्टिने०

पोषशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥

६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
९ श्रीशांतिनाथजीसर्वज्ञा०
११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
१४ श्रीअभिनंदनजीसर्वज्ञा०
१५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०

माघशुक्लपक्षे ॥ ९

२ श्रीअभिनंदनजीअर्ह०
२ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
४ श्रीविमलनाथजीना०न०
८ श्रीअजितनाजीअर्ह०
९ श्रीअजितनाथजीनाथा०
१२ श्रीअभिनंदनजीनाथा०
१३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०

फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५

२ श्रीअरनाथजीपरमेष्टिने०
४ श्रीमल्लिनाथजीपरमेष्टि०
८ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्टि०
१२ श्रीमल्लिनाथजीपारंग०
१२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०

चैत्रशुक्लपक्षे । ८

३ श्रीकुंथुनाथजीसर्वज्ञा०
५ श्रीअजितनाथजीपारं०

८ श्रीआदिनाथअर्हतेनमः
८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०
वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९
१ श्रीकुंथुनाथपारंगतायनमः
२ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०
५ श्रीकुंथुनाथजीनाथायनमः
६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०
१० श्रीनमिनाथजीपारंगताय०
१२ श्रीअनंतनाथजीअर्हतेन०
१४ श्रीअनंतनाथजीनाथायन०
१४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०
१४ श्री कुंथुनाथजीअर्हतेन०
ज्येष्टकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥
८ श्रीमुनिसुव्रतजीअर्हते०
९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०
१३ श्रीशांतिनाथजीअर्ह०
१३ श्रीशांतिनाथजीपारंग०
१४ श्रीशांतिनाथजीनाथा०
आपाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥
४ श्रीआदिनाथजीपरमे०
७ श्रीविमलनाथजीपार०
९ श्रीनमिनाथजीनाथा०
श्रावणकृष्णपक्षे । ४
३ श्रीश्रेयांसजीपारंग०
७ श्री अनंतनाथजीपर०

५ श्रीसंभवनाथजीपारंग०
५ श्रीअनंतनाथजीपारंग०
९ श्रीसुमतिनाथजीपारं०
११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०
१३ श्रीवर्द्धमानजीअर्हतेनमः
१५ श्रीपद्मप्रभूजीसर्वज्ञाय०
वैशाखशुक्लपक्षे ८
४ श्रीअभिनंदनजीपरमे०
७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०
८ श्रीअभिनंदनजीपारंग०
८ श्रीसुमतिनाथजीअर्हते०
१० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०
१२ श्रीविमलनाथजीपारंग०
ज्येष्टशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥
५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०
९ श्रीवासुपूज्यजीपरमेष्टि०
१२ श्रीसुपार्श्वनाथजीअर्ह०
१३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०
आपाढशुक्लपक्षे ३
६ श्रीवर्धमानजीपरमेष्टि०
८ श्रीनेमनाथजीपारंगता०
१४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०
श्रावणशुक्लपक्षे ५
२ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०
५ श्रीनेमनाथजीअर्हते०

८ श्रीनमिनाथजीअर्ह०
ए श्रीकुंथुनाथजीपरमे०

भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

७ श्रीचंद्रप्रभूजीपारंग०
७ श्रीशांतिनाथजीपरमे०
८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०

आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २

१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०
३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०

६ श्रीनेमिनाथजीनाथ।य०
८ श्रीपार्श्वनाथजीपारंग०
१५ श्रीमुनिसुव्रतपरमेष्टि०

भाद्रपदशुक्लपक्षे १

ए श्रीसुविधनाथजीपारं०

आश्विनशुक्लपक्षे १

१५ श्रीसुविधिनाथपरमेष्टि०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार षष्ठमप्यस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घमी गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंबील एकासणादिकका पच्चरकाण करे, तीन टंक देववंदन करे, पमिक्कमणा करै. जिस दिन जो माहाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करे, उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुणै या पढै. जहां भगवंतकी कल्याणक भूमि होय उहां बमे महोत्वसें संघ समेत यात्रा करणेकों जावे. उहां विधी संयुक्त सर्व भगवंतोके पंच कल्याणकका उच्छव करे. जो शक्ति नाहिं होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके षट् कल्याणकका उछव करे ॥ अब २३ भगवंतकी अपेक्षायें पांच, श्रीवीरप्रभूके अपेक्षायें षट् कल्याणक संक्षेप उछव विधि लिख्यते ॥ च्यवन कल्याणककों (परमेष्टिनेनमः) कहियै. इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उछव करे, हीरा चढावे ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककूं (अर्हतेनमः) कहणा. इस दिन जलजात्रादिकका महोछव करके अष्टो-

त्तरी स्नात्रादिक करावै, वस्त्र चढावै ॥ २ ॥ दिक्षा कल्याणककों (नाथायनमः) कहणा. इस दिन समवसरण निकालै, अशोक वृक्षादिकके नीचै स्थापन करकै दिक्षाका उच्छव करै, घृत गुम वस्त्रादिक चढावै, शक्ति मुजब दान देवै ॥ ३ ॥ केवलज्ञान कल्याणककों (सर्वज्ञायनमः) कहणा. इस दिन समोसरणमें ज्ञगवंतकों विराजमान करकै आठ प्रातिहार्य प्रगट करै, तरे२ के उच्छव करै, वस्त्र आज्ञूषण चढावै, सुपेदचंदन चर्चित गोला चढावै ॥ ४ ॥ निर्वाण कल्याणककों (पारंगतायनमः) कहियै. इस दिन निर्वाण कल्याणकके ज्ञावगर्भित उच्छव करै, लडू चढावै ॥ ५ ॥ और ठठा गर्भापहार कल्याणकका उच्छव करणा होय तो च्यवनकल्याणकके उच्छव समान करै ॥ ६ ॥ इस मुजब सर्व कल्याणकका उच्छव करै. तपस्या पूर्ण होणेसैं पंच कल्याणकजीकी पूजा करावै, गुरुज्ञक्ति करै, साहमीवच्छल करै. इत्यादिक विधि संयुक्त यह तपस्या जो ज्ञव्यजीव करेंगें सो अनंत सुखकों प्राप्त होंगें ॥ इति पंचकल्याणक तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ पखवासेको स्तवन लिख्यते ॥

॥ सीमंधर करजो मया ॥ ए देशी ॥ जंबुद्वीप सोहामणो, दक्षिणज्ञरत उदार ॥ राजग्रही नगरी ज्ञली, अलिकापुर अवतार ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिजी, समरंता सुख थाय ॥ मनवंछित फल पामियै, दोहग दूर पुलाय ॥ श्री० २ ॥ राज करै तिहां राजियो, सुमित्र नरेसर नाम ॥ पटराणी पद्मावती, शील-गुणें अज्ञिराम ॥ श्री० ३॥ श्रावण उज्वल पूनमें, श्रीजिनवर हरिवंश ॥ माताकुक्षि सरोवरै, अवतरियो राय हंस ॥ श्री० ४॥ जेठ पढम पक्ष अठमी, जायो श्रीजिनराज ॥ जन्ममहोछव सुर करै, त्रिज्ञुवन हरख न माय ॥ श्री० ५ ॥ शामल वरण सोहामणो, निरूपम

रूप निधान॥ जिनवर लंछन काछवो, वीस धनुष तनु मान ॥ श्री० ६ ॥ परणी नार प्रभावती, भोग पुरंदर साम ॥ राजलीला सुख भोगवै, पूरे वंछित काम ॥ श्री० ७ ॥ तब लोगांतिक देवता, आवि जंपै जयकार ॥ प्रभु फागुण वदि बारसै, लीधो संजम भार ॥ श्री० ८ ॥ शुभ फागुण वदि बारसै, मनधर निरमल ध्यान ॥ च्यार करम प्रभु चूरिया, पाम्यो केवलज्ञान ॥ श्री० ९॥ (ढाल २ ॥ सुख कारण भवियण ॥ ए देशी ॥ ततखिण तिहां मिलिया चलिया सुरनर कोडि, प्रभुना पदपंकज प्रणमैं बे कर जोडि ॥ बे कर जोडी मछर छोडी समवसरण विरतंत, माणक हेम रूपमय त्रिगडो छत्रत्रय झलकंत ॥ सिंहासण बैठा तिहां स्वामी चोविह धर्म प्रकासै, बारै परखदा बैठी आगलि सुणै मन उल्हासै ॥ १० ॥ तपने अधिकारै परखवासो तप सार, पडवाथी कीजै पनरह तिथी उदार ॥ पनरह तिथी कीजै गुरु मुख लीजै जिस दिन हुवै उपशम, श्रीमुनिसुव्रत नाम जपीजै वांदी देव उल्लास ॥ तप उजमणैं रजत पालणो सोवन पूतलो चंग, मोदकथाल देहरै मूंकी जिनवर स्नात्र सुरंग ॥ ११ ॥ तप करियै निरंतर छहुरव दर्शनो जेम, मनवंछित केरा सुख पामीजै तेम ॥ पुत्र मित्र परिवार परं अति वछल भरतार, जस कीरत सोभाग वधाई महियल महिमा जाण ॥ परभव सुगति फल लहियै, ए तपनें प्रमाण ॥ १२ ॥ थिर थापी चतुर्विध संघतणो अधिकार, भरुयछ प्रमुख नगरादिक करिया विहार ॥ विहार करी प्रतिबोधे खंदक पंच सयां परिवार, कार्त्तिकसेठ जितशत्रु तुरंगम सुव्रत नाम कुमार ॥ तीस सहस वरष आउखो पाले जग दया सार, श्रीसम्मेतशिखर परमेसर पुहता सुगति मझार ॥ १३ ॥ इम पंच कल्याणक थुणिया त्रिभुवन ताय, मुनिसुव्रतस्वामी वीसमो जिनवर राय ॥ वीसमो जिनवर राय

जगतगुरु जयजंजण जगवंत, निराकार निरंजन निरूपम अजरामर अरिहंत ॥ श्रीजिनचंद विनय शिरोमणि सकलचंद गणि सीस, वाचक समयसुंदर इम पजणै पूरो मनह जगीस ॥ ॥१४॥ इति ॥

॥ अथ पखवासा तप विधि लिख्यते ॥

प्रथम शुजदिन गुरूके पास तप ग्रहण करकै सुद (१) पडिवासैं पूर्णमासी तक इकसार १५ उपवास करै. जो शक्ति नहीं होयतो प्रथम सुदि पक्षकी पडिवा १, दूसरे सुदि पक्षकी दूज, एसें अनुक्रमसें पनरे सुद पक्षमें तपस्या पूर्ण करै. श्रीमुनिसुव्रतस्वामी के पांच कल्याणक जावगर्जित स्तवन पढै. गुरूका संयोग होय तो गुरूके पास सुणै. (श्रीमुनिसुव्रतस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० दो हजार गुणना करै. और तप ग्रहण करणेकी तथा देववंदनादिककी विधि पहले लिखी है उस मुजब विवेकी जीव सब तपस्याकी विधि करै. विधि संयुक्त करणेसें उत्तम फल मिलता है ॥ इति पखवासाविधि ॥

॥ अथ दश पच्चरकाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमूं, महावीर जगवंत ॥ त्रिगडै बैठा जिनवरू, परपद बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिण समे, पूछै श्रीजिनराय ॥ दस पच्चरकाण किसा कह्या, कीयां कवण फल थाय ॥ २ ॥ (ढाल १ ॥ सीमंधर करज्यो मया ॥ ए देशी) ॥ श्रीजिनवर इम उपदिसै, सांजल गोयम ताम ॥ दस पच्चरकाण कियां थकां, लहिये अविचल ठाम ॥ श्री० ३ ॥ नवकारसी बीजी पोरसी २, साढपोरसी पुरिमढ्ढ ४॥ एकासण नीवी कही ६, एकलठाण देवढ्ढि॥ श्री० ४ ॥ दात ७ आंबिल ए उपवास १० ही, एहिज दस पच्चरकाण ॥ एहना फल सुण गोयमा, जूजूवा करूं वखाण ॥ श्री० ५ ॥ रतनप्रजा १ सर्करप्रजा २, वालुक तीजी जाण ॥ पंकप्रजा

४ तिम धूमप्रभा ५, तमप्रभा ६ तमतम ७ नाम ॥ श्री० ६ ॥ नरक सात कह्यो ए सही, करम कठिन कर जोर ॥ जीव करम वस ते सही, ऊपजे तिणहीज ठोर ॥ श्री० ७ ॥ छेदन भेदन ताडना, भूख तृषा वलि त्रास, रोम२ पीडा करे, परमाहम्मी तास ॥ श्री० ८ ॥ रात दिवस क्षेत्रदेवता, तिल भर नहीं जिहां सुख ॥ किया करम जे भोगवे, पामे जीव बहु दुःख ॥ श्री०९॥ इक दिनरी नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूर करे ज्ञानबुद्धि ॥ श्री० १० ॥ नित्य करे नवकारसी, ते नर नरक न जाय ॥ न रहे पाप वलि पावला, निरमल होवे जी काय ॥ श्री० ११ ॥ (ढाल २ ॥ श्रीविमलाचल सिर तिलो ॥ ए चाल) ॥ सुण गोतम पोरसी कियां, महा मोटो फल होय ॥ भावसुं जे पोरसी करे, दुरगति छेदे सोय ॥ सु० १२ ॥ नरक मांहि जे नारकी, वरसें एक हजार ॥ करम खपावे नरकमें, करता बहुत पुकार ॥ सु० १३ ॥ एक दिवसनी पोरसी, जीव करे इकतार ॥ करम हणे सहस एकना, निहचेसुं गणधार ॥ सु० १४॥ दुरगति मांहे नारकी, दस हजार प्रमाण ॥ नरक आयु खिण एकमें, साढपोरसी करे हाण ॥ सु० १५ ॥ पुरिमड्ढ करे नित जीव जे, नरके ते नवि जाय ॥ लाख वरस करमनें दहे, पुरिमड्ढ करम खपाय ॥ ॥ सु० १६ ॥ लाख वरस दस नारकी, पामें दुःख अनंत ॥ इतरा करम एकासणें, दूर करे मन खंत ॥ सु० १७ ॥ एक कोडि वरसां लगें, करम खपावे जीव ॥ नीवीय करतां भावसुं, दुरगति हणे सदीव ॥ सु० १८ ॥ दस कोडि जीव नरकमें, जितरो करे करम दूर ॥ तीतरो एकलठाणही, करे सही चकचूर ॥ सु० १९ ॥ दात करंता प्राणियो, सो कोडी परिमाण ॥ इतरा वरस दुरगति तणा, छेदे चतुरसुजाण ॥ सु० २० ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोडी

एक हजार ॥ करम खपावै इणपरै, जाव आंबिल अधिकार ॥ सु० २१॥ कोमि सहस दस वरसही, सहे दुःख नरक मझार ॥ उपवास करै इक जावसुं, तो पामे मुगति मझार ॥ सु० २२ ॥ (ढाल ३॥ केकेइ वर लाधो ॥ ए देशी) ॥ लाख कोमि वरसां लगे, नरके करता रीव रे ॥ गोतम गणधारी ॥ छठम तप करतां थकां, सही नरक निवारे जीव रे ॥ गो० २३ ॥ नरके वरस कोमि लाखही, जीव लहे तिहां डुख रे ॥ ते डुख अठम तपहुंती, दूर करी पामे सुख रे ॥ गो० २४ ॥ छेदन जेदन नारकी, कोमाकोमि वरसोइ रे ॥ कुगति कुमतिनें परिहरो, दसमें एतो फल होइ रे ॥ गो० २५ ॥ नित फासू जल पीवतां, कोमाकोमि वरसनो पाप रे ॥ दूर करै खिण एकमें, निश्चै होय निःपाप रे ॥ गो० २६ ॥ वलिय विशेष फल कह्यो, पांचम करै उपवास रे ॥ पामे ग्यान पांचे जला, करता त्रिजुवन परकास रे ॥ गो० २७ ॥ चवदस तप विधिसुं करै, चवदह पूरव होय धार रे ॥ इम अनेक फल तपतणा, कहतां वलि नावै पार रे ॥ गो० २८ ॥ मन वचनें काया करी, तप करै जे नर नार रे ॥ इग्यारे वरस एकादशी, करतां लहै जव पार रे ॥ गो० २९ ॥ आठम तप आराधतां, जीव न फिरै संसार रे ॥ अनंत जवाना पापथी, छूटै जीव निरधार रे ॥ गो० ३० ॥ तपहुंती पापी तस्या, निसतरियो अरजुनमाल रे ॥ तपहुंती दिन एकमें, शिव पाम्यो गजसुकमाल रे ॥ गो० ३१॥ तपना फल सूत्रे कह्या, पच्चरकाणतणा दस जेद रे ॥ अवर जेद पिण छै घणा, करतां छेदे त्रय वेद रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥ (कलशः) ॥ पच्चरकाण दस विध फल परुप्या महावीर जिणदेवए, जे करै जविअण तप अखंमित तासु सुर पय सेव ए ॥ संवत्त निधि गुण अश्व शशि वलि पोस सुदि दशमी दिने, पदमरंग वाचक शीस गणिवर रामचंद तप विधि

नणे ॥ ३३ ॥ इति दस पच्चरकाण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ दस पच्चरकाण तप विधिः ॥

॥ यह दस पच्चखाणके स्तवनमें खुलासा दस पच्चरकाणके नेद नर बेला तेला पांचम आठम इग्यारस चौदश इत्यादिक तपस्या करणेके फल नगवंत श्रीमहावीरस्वामीके वचन मुजव उत्तम पुरुषोने रचना करीहै. इस वास्ते धर्मरागी पुरुष इस स्तवनकों पढके तपस्या करणेमें आदरवंत होता है, नर किसीके दश पच्चरकाण तप करणेकी इच्छा होय तो पहिले दिन नवकारसी, फुसरे दिन पोरसी, इस तरै स्तवन मुजब १० पच्चरकाण दस दिवसे सेवन करै, सदा स्तवन सुणें पढै, अंतमें पूजा करावै, शक्ति माफक उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रन्नावसें फुरगतिवंध दूर करके अच्छी गती पावे, महा एश्वर्यवंत होय, न्नाग्यवंत होय ॥ इति ॥

॥ अथ वीश स्थानक स्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धाचल न्नेटिये ॥ ए देशी ॥ वीस थानक तप सेवियें, धर कर शुन्न परिणाम लाल रे ॥ तीजे न्नव सेव्यो थको, बांधे तीर्थंकर नाम लाल रे ॥ वी० १ ॥ तप रचना अधिकी कही, ज्ञाताअंग मझार लाल रे ॥ सुणजो न्नवि तुमे न्नावसुं, चित्तसें करिय उच्चार लाल रे ॥ वी० २ ॥ सुविहित गुरु पासे ग्रहै, वीस थानक तप एह लाल रे ॥ निरदूषण शुन्न महुरते, उचरीजे ससनेह लाल रे ॥ वी०३॥ अरिहंत १ सिद्ध २ प्रवचन नमूं ३, सूरि ४ थिवर ५ उवज्झाय ६ लाल रे ॥ साधु ७ नाण ८ दंसण ९ अरु, विनय १० नमूं उलसाय लाल रे ॥ वी० ४ ॥ चारित्र ११ वंन्न १२ क्रियापदे १३, तप १४ गोयम १५ जिण १६ ईस लाल रे ॥ चारित्र १७ ज्ञानने १८ श्रुत न्नणी १९, नमूं तीर्थ २० पद वीश लाल रे ॥ वी० ५ ॥ वीस दिवसमें ए कही, पद गुणनो कर भेव लाल रे ॥

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण भेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक ऊली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पड़ै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखी शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदै निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ए ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पडिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक ऊली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम ऋतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरै, मुखसुं वोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए पट मासे मांहिनें, व्रत ग्रहिये वडभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारीनें, उछव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीसर गिणती तणा, पुस्तक पूठा आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजे हवबाद

लाल रे ॥ वी० १ए ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा नणी, उद्दिज मोक्ष नपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मऊार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गछ खरतर नणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुज्ञ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नही कर सके तो वो उली गिणतीमें नही. उर फेर नइ करणी पमती है. एक उलीके वीस पद है (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते है, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरै वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधे. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठममें आराधे. और उससें कम शक्ति होय तो ठठ्ठेसें आराधे. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करकै आराधे, उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करकै आराधे. उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करकै आराधै. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधूपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात स्थानक पद तो पोसह करकेही आराधै, जो इतनी

अथवा दिन विसा लगै, वीसे पद गुण मेव लाल रे ॥ वी० ६ ॥ एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर नवी करणी पमै, पिछली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥ छठ अठम उपवाससुं, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर आराधियै, देव वांदे निज भक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपूरण पद सेवतां, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पदे सही, पोसह करियै संजोग लाल रे ॥ वी० ए ॥ सूरी थिवर पाठक पदे, साधु चारित्र सुजाण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही, सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै सदा, दोय२ जाप हजार लाल रे ॥ पमिकमणो दोय टंकही, करियै पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति मुजब तप कीजियै, एक उली करो वीस लाल रे ॥ वीसावीसी च्यारसै, तप संख्या कही एम लाल रे ॥ वी० १२ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित धार लाल रे ॥ काउसग्गने परदक्षणा, मुख भणियै नवकारलाल रे ॥ वी० १३ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणै, कीजै जिनपद भक्ति लाल रे ॥ पूजन शुद्ध मन साचवै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे ॥ वी० १४॥ मृतक जनम रुतुकालमें, कदि धारयो उपवास लाल रे ॥ सो लेखे नांहिं लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी० १५ ॥ सावद्य त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील आभूषण आदरे, मुखसुं बोले सत्य लाल रे ॥ वी० १६ ॥ जेठ आसाढ वैशाखमें, मिगसर फागुण मांह लाल रे ॥ ए पट् मासे मांहिनें, व्रत ग्रहिये वमभाग लाल रे ॥ वी० १७ ॥ तप पूरण हुवां थकां, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजे शक्ति विचारीनें, उछव विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १८ ॥ वीस२ गिणती तणा, पुस्तक पूग आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी पूजा करै, मुंकीजै दुवाद

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवधी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा भणी, उद्दिज मोक्ष उपाय लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आज्ञा धार चित्त मझार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंद वरसै चैत्र मास सुहंकरू, मुनि केशरी शशि गच्छ खरतर भणी स्तवना मनहरू ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम शुभ महुर्त्तके दिन नंदी स्थापनापूर्वक सुविहित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दो महीनेसे लेकर ७ महीने पूरी करै. कदास ७ महीनेमें पूरी नहीं कर सके तो वो उली गिणतीमें नहीं. उर फेर नइ करणी पडती है. एक उलीके वीस पद है (तहां) कोइ वीस दिनमें वीस पद जुदा२ गिणते है, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हैं, दूसरे वीशों दिनमें दूसरा पद, एसें वीशों पदकी वीश उली करै. तिहां पदाराधनके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिकै आराधै. वीश अठमसें एक उली होय (एसें) वीस उली ४०० सें अठमसें आराधै. और उससें कम शक्ति होय तो छठ्ठसें आराधै. उससें कम शक्ति होय तो चोविहार उपवास करकै आराधै. उससें हीन शक्ति होय तो तिविहार उपवास करके आराधै, उससें हीणशक्ति आंबिल (तथा) तिविहार एकाशणा करकै आराधै. उसमें जो शक्तिवान होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरी पोसह करै. हीनशक्ति दिनपोसह करै. वीसों पद पोसहसेती आराधै. जो पोसह शक्ति सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, थिवर पदमें ३, साधुपदमें ४, चारित्रपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपदमें ७, यह सात थानक पद तो पोसह करकेही आराधै, जो इतनी

भी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार वर्जै, सो शक्ति भी नही होय तो यथाशक्ति तप करकै आराधै. अपणी हीणता भावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवासादि तप नही गिणै जावै, स्त्रियां भी ऋतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो सके तो तपके दिन उभय टंक पडिक्कमण करै, तीन टंक देववंदन करै, दो हजार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, भूमि शयन करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोलै, सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे तो पारणेके दिन जिनभक्ति करकै पारणा करै, जो तपके दिन पोसह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनभक्ति करै करावै, भावना भावै तथा तपके दिन तप पदके गुण भेद प्रमाण संख्यासें काउसग्ग करै. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै. उस पदका गुण याद करकै उदात्त स्वरसें स्तवना करै, हर्षित रहै॥

॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

(णमो अरिहंताण) १००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमोसिद्धाणं) २००० गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) १००० गुणना लोगस्स ७ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो लोए सव्व साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ॥ ८ ॥ (णमो दंसणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का

काउसग्ग ॥ ए ॥ (णमो विणयसंपन्नाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ ११ ॥ (णमो बंभवय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ए का काउसग्ग ॥ १२ ॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १३ ॥ (णमो तवस्सीणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो गोयमस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो चरणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १८ ॥ (णमो सुअनाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १ए ॥ (णमो तित्थस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करै ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उत्सव महोत्सव प्रभावना उजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उली तो विशेष उत्सवादिक संयुक्त करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसें वीश स्थानक सेवनविधि संक्षेप मात्रसें लिखी है. जो गुरुका संयोग होय तब तो विस्तारसें वीशों पदकी जुदी२ विधि गुरुके मुखसें समझके करै. जो गुरुका संयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्थानक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढै, वीस स्थानकजीकी पूजा करावे, अपणी शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोपकरण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते लगावे, गुरुपदका गुरुखाते लगावे, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,

साहमी वच्छल करै, इत्यादिक उच्छव करे भावे विधि संयुक्त शुद्ध भावसें जो भव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे सो जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरे भव अनंत सुखकों प्राप्त होंगे. इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप उलो विधि सं० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

णमोणंतविन्नाणसहंसणाणं, सहाणंदियासेसजंतूगणाणं ॥ भवाभोजविच्छयणेवारणाणं, णमोभोह्वियाणंवराणंजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हद्भ्योनमः ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेंद्रपूजा ॥ अथ सिद्धपूजा ॥ लोगग्गभागोपरिसंठियाणं, बुद्धाणसिद्धाणमणिं-दियाणं ॥ निस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमोसयामंगलधारगाणं ॥ ॥२॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेभ्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥ अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुरकंधयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-णदयागिहस्स, णमो२ संघचक्कविहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूसिंधुराणं, सुरीसराणं-मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्झियमंदराणं, णमोसयामंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनमः ॥ ४ ॥ अथ पंचम पद ॥ सम्म-त्तसंयमपतितभविजन अतिद्दथिरकरताभला ॥ अवगुणअदुषित गुणविभूषित चंद्रकिरणसमोज्ज्वला ॥ अष्टाधिकादससहससीलांगरथ रुचिरधाराधरा, भवसिंधुतारणप्रवरकारणनमोथिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स्थविरायनमः ॥ अथ छठा पद ॥ सव्वोद्दिबीजंकुरुकार-णाणं, णमोश्वायगावारणाणं ॥ कुवोद्दिदंतीहरिणेसराणं ॥ मिग्वो-घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः ॥६॥ अथ सातमा पद ॥ संतज्झियसेसपरीसहाणं, निस्सेसजीवाणदयागिहा-णं ॥ सन्नाण पज्जायतरूवयाणं, णमो२लोडतवोधणाणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यक्साधुभ्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ छदवपज्जा

यगुणाकरस्स, सयापयासीकरणोधुरस्स ॥ मिच्छत्तअन्नाणतमोहरस्स, णमो२ नाणदिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ॥ अणंतकम्मावलिधंसणस्स, णमो२निम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीँ श्री सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-पद ॥ आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ॥ सुधम्मजुत्तस्सदयासयस्स, णमो२श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्विनयैनमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ कम्मोघकंतारदवानलस्स, महोदयानंदलयाजलस्स ॥ विन्नाणपंकेरुह कारणस्स, णमोचरित्तस्सगुणापणस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्चारित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशम चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्गसुहप्पयस्स, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्स ॥ सव्ववयानूपणानूपणस्स, नमोदिशीलस्सअदूसणस्स ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्ब्रह्मचर्यैनमः ॥ १२ ॥ अथ तेरमें क्रिया पद ॥ विशुद्धसद्धाणविसूपणस्स, सुलद्धिसंपत्तिसुपोषणस्स ॥ णमोसदाणंतगुणप्पदस्स, नमो२सुद्धक्रियापदस्स ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥ लद्धीसरोजावलितावणस्स, सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ॥ अमंगलानोकुहउद्धवस्स, नमो२निम्मलसत्तवस्स ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ सम्यग्तवसे नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौतम पद ॥ अणंतविन्नाणविन्नाकरस्स, इत्तालसंगाकमलाकरस्स ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्स, नमोगणाधीस्सगोयमस्स ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ गौतमायनमः ॥ अथ सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुस्सच्चातिसयालयाणं, सुरा२धी सरवंदियाणं ॥ रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाघणाणं२नमोजिणाणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ जिनेभ्योनमः ॥ अथ सतरमें चारित्रचारीपद ॥ सविंदियापारविकारदारी, अकारणालेसजणोवगारी ॥ महान्न-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्तधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अगारमें ज्ञानपदपूजा ॥ शुद्धक्रियामंगलमंगणस्स, संदेहसंदोहविखंभणस्स ॥ मुत्तीनपासा नसुकारणस्स, नमोहिनाणस्सजसोधणस्स ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव ल्लीवनवारणस्स, सुबोहिबीजांकुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्धगुणाल-यस्स, नमोदयामंदिरसत्वयस्स ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्श्रुतयै नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुभ्यंनमःसकलविश्ववशीं कराय, तुभ्यंनमःस्त्रिजगतीजनशंकराय ॥ तुभ्यंनमःभुवनमंगल मंगनाय, तुभ्यंनमोस्तुजिनपंकविखंभनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥२०॥ ध्वजासमेत अष्ट द्रव्य चढावे (पीछे) ६४ इंद्रपूजा अखरोट चढावे ॥ ॐसौधर्मेंद्रायनमः १ ॥ ॐ ईशानें द्रायनमः २ ॥ ॐसनत्कुमारेंद्रायनमः ३ ॥ ॐमाहेंद्रायनमः ४ ॥ ॐब्रह्मेंद्रायनमः ॥ ५ ॥ ॐलांतकेंद्रायनमः ६ ॥ ॐशुक्रेंद्रायनमः ॥ ७ ॥ ॐसहस्रारेंद्रायनमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंद्रायनमः ॥ ९ ॥ ॐअ-च्युतेंद्रायनमः ॥१०॥ ॐचंद्रेंद्रायनमः ॥११॥ ॐसूर्येंद्रायनमः॥१२॥ ॐचमरेंद्रायनमः ॥ १३ ॥ ॐवलींद्रायनमः ॥ १४ ॥ ॐधरेणद्राय नमः॥१५॥ ॐभूतानेंद्रायनमः ॥१६॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनमः॥ १७ ॥ ॐवेणुदालींद्रायनमः ॥१८॥ ॐहरिकांतेंद्रायनमः ॥१९॥ ॐहरिस्स हेंद्रायनमः ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनमः ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण वेंद्रायनमः ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेंद्रायनमः ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः ॥ २४ ॥ ॐजलकांतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रभेंद्रायनमः ॥ २६ ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनमः ॥ २८ ॥ ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रभंजनेंद्रायनमः ॥ ३० ॥ ॐघोषें द्रायनमः ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनमः ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनमः

॥ ३३ ॥ ॐमहाकालेंद्रायनमः ॥ ३४ ॥ ॐसरूपेंद्रायनमः ॥ ३५ ॥ ॐप्रतिरूपेंद्रायनमः ॥३६॥ ॐपूर्णभद्रेंद्रायनमः ३७॥ ॐमाणभद्रेंद्राय नमः ॥ ३८ ॥ ॐभीमेंद्रायनमः ॥ ३९ ॥ ॐमहाभीमेंद्रायनमः ॥ ४०॥ ॐकिन्नरेंद्रायनमः ॥४१॥ ॐकिंपुरुषेंद्रायनमः ॥४२॥ ॐसत्पुरुषेंद्रायनमः॥४३॥ॐमहापुरुषेंद्रायनमः॥४४॥ ॐअमितकायेंद्रायनमः ॥ ४५॥ ॐमहाकायेंद्रायनमः ॥४६॥ ॐगीतरतींद्रायनमः ॥४७॥ ॐगीतयशेंद्रायनमः ॥ ४८ ॥ ॐसन्निहितेंद्रायनमः ॥ ४९ ॥ ॐसामानिकेंद्रायनमः ॥ ५० ॥ ॐधात्रेंद्रायनमः ॥ ५१ ॥ ॐविधात्रेंद्रायनमः ॥ ५२ ॥ ॐऋषिंद्रायनमः ॥ ५३ ॥ ॐऋषिपालतेंद्रायनमः ॥ ५४ ॥ ॐइश्वरेंद्रायनमः ॥ ५५ ॥ ॐमहेश्वरेंद्रायनमः ॥ ५६ ॥ ॐवत्सेंद्रायनमः ॥ ५७ ॥ ॐविसालेंद्रायनमः ॥ ५८ ॥ ॐहास्येंद्रायनमः ॥ ५९ ॥ ॐश्रेयइंद्रायनमः ॥ ६० ॥ ॐहास्यस्तेंद्रायनमः ॥ ६१ ॥ ॐपदगेंद्रायनमः ॥ ६२ ॥ ॐपदगपतेंद्रायनमः ॥ ६३ ॥ ॐमहाश्रेयेंद्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ वियादेवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ ॐरोहिण्यैनमः ॥ १ ॥ ॐप्रज्ञप्तैनमः ॥ २ ॥ ॐवज्रशृंखलायैनमः ॥ ३ ॥ ॐवज्रांकुशायैनमः ॥ ४ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐपुरुषदत्रायैनमः ॥ ६ ॥ ॐकाल्यैनमः ॥ ७ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ८ ॥ ॐगौर्य्यैनमः ॥ ९ ॥ ॐ गंधार्य्यैनमः ॥ १० ॥ ॐमहाज्वालायैनमः ॥ ११ ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ १२ ॥ ॐवैरोट्यायनमः ॥ १३ ॥ ॐअछुप्तायैनमः ॥ १४ ॥ ॐमानस्यैनमः ॥ १५ ॥ ॐमहामानस्यैनमः ॥ १६ ॥ इति षोडश वियादेवी नाम पूजाः ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सोपारी चढावै ॥ ॥ ॐब्रह्मशांतियैनमः ॥ २४ ॥ ॐपार्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ ॐगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ ॐभृकुटयैनमः ॥ २१ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ २० ॥ ॐकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ ॐय-

ॐक्षायनमः ॥ १८ ॥ ॐगंधर्वायनमः ॥ १७ ॥ ॐगरुडायनमः ॥ १६ ॥ ॐकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥ ॐपातालायनमः ॥ १४ ॥ ॐषण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ ॐकुमारायनमः ॥ १२ ॥ ॐयक्षराजायनमः ॥ ११ ॥ ॐब्रह्मणेयेनमः ॥ १० ॥ ॐअजितायनमः ॥ ए ॥ ॐविजयायनमः ॥ ८ ॥ ॐमातंगायनमः ॥ ७ ॥ ॐकुसमायनमः ॥ ६ ॥ ॐतुंबुरयैनमः ॥ ५ ॥ ॐयक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ ॐत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ ॐमहायक्षायनमः ॥ २ ॥ ॐगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति २४ यक्ष नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षणी नाम लि० ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ १ ॥ ॐअजितबलायैनमः ॥ २ ॥ ॐदुरितायैनमः ॥ ३ ॥ ॐकालिकायैनमः ॥ ४ ॥ ॐमहाकाल्यैनमः ॥ ५ ॥ ॐश्यामायैनमः ॥ ६ ॥ ॐशांतायैनमः ॥ ७ ॥ ॐभृकुटयेनमः ॥ ८ ॥ ॐसुतारकायैनमः ॥ ए ॥ ॐअशोकायनमः ॥ १० ॥ ॐमानव्यैनमः ॥ ११ ॥ ॐचंडायनमः ॥ १२ ॥ ॐविदितायैनमः ॥ १३ ॥ ॐअंकुशायैनमः ॥ १४ ॥ ॐकंदपार्यनमः ॥ १५ ॥ ॐनिर्वाणयैनमः ॥ १६ ॥ ॐबलायैनमः १७ ॥ ॐधारिणयैनमः ॥ १८ ॥ ॐधरणप्रियायैनमः ॥ १ए ॥ ॐनरदत्तायैनमः ॥ २० ॥ ॐगांधार्यैनमः ॥ २१ ॥ ॐअंबिकायैनमः ॥ २२ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ २३ ॥ ॐसिद्धायकायैनमः ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ ॐनैसर्प्पकायनमः १ ॥ ॐपांडुकायनमः २ ॥ ॐपिंगलायनमः ३ ॥ ॐसर्वरत्नायनमः ४ ॥ ॐमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ ॐकालायनमः ॥ ६ ॥ ॐमहाकालायनमः ॥ ७ ॥ ॐमाणवायनमः ॥ ८ ॥ ॐशंखायनमः ॥ ए ॥ इति नव निधान पदे ए कलश चढावे ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥ ॐविजयस्वामिनेनमः ॥ १ ॥ ॐक्षेत्रपालायनमः ॥ २ ॥ ॐचक्रेश्वर्यैनमः ॥ ३ ॥ ॐधरणेंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐपद्मावत्यैनमः ॥ १ ॥ ॐइंद्रायनमः ॥ १ ॥ ॐअग्नयेनमः ॥ २ ॥ ॐयमायनमः ॥ ३ ॥

ॐनैऋतायनमः ॥ ४ ॥ ॐवरुणायनमः ॥ ५ ॥ ॐवायव्येनमः ॥६॥ ॐकुबेरायनमः ॥ ७ ॥ ॐईशानायनमः ॥ ८ ॥ ॐनागायनमः ॥९॥ ॐब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐसूर्यायनमः ॥ १ ॥ ॐचंद्रायनमः ॥ २ ॥ ॐभोमायनमः ॥ ३ ॥ ॐबुधायनमः ॥ ४ ॥ ॐबृहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ ॐशुक्रायनमः ॥ ६ ॥ ॐशनैश्चरायनमः ॥ ७ ॥ ॐराहवेनमः ॥ ८ ॥ ॐकेतवेनमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह नाम ॥ इहां वीस स्थानक मंम्ल पूजनकी विधि विशेष लिखी है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी है, इस उपरांत मंम्ल प्रतिष्ठा बलबाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंम्ल पूजामें लिखआए है उस मुजबही करणी । फेर विशेष विधी कराणी होय तो वि॰ ज्ञज्ञान गुरूकों पूछके करणी ॥ इति वीशस्थानक मंम्ल पूजा वि०सं॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुज सानिध कीजे, जुलो अक्षर जगति जणी समजाई दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणो ए जिणरा गुण गाउं, जिम सुख सोहग संपदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण जरत अंगदेस छै चंपानयरी, मघवा राजा राज्य करे तिण जीता वयरी ॥ पाटतणी राणी रूवमी ए लखमी इण नामे, आठ पूत्र जाया जिणे ए मनमें सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुखकारी, आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागै प्यारी ॥ वाधे चंदतणी कला ए जिम पख ऊजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवमी ए घर अंगण बैठी, दीठी राजा खेलती ए तिण चिंता पैठी ॥ तीन जुवन विच एहवी ए नही दूजी नारी, रंजा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीषे कोइ इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल वधे तिण चयन न पाउं ॥ देशरना राजवी ए ततखिण तेमाया,

सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक राजातणो ए है कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखड़ी ए तिणसेती लागी ॥ कन्या देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपै जैजेकार, रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोड़ी कहै लोक व खत कन्यारो जाड़ो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाड़ो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पुत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस लीधो ॥ ८ ॥ (ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए देशी) ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पुत्र हूवा भला, चढते पख रे चंद्र जिसी चढती कला ॥ (उल्लालो) चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी भूमी कंतसेती करै क्री ड़ा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो, पुत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ए ॥ (चाल) इक कामण रे गोख चढी इष्टे पड़ी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खड़ी ॥ वूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकेरो दुख हुओ ॥ (उल्लालो) दुख हुवो देखी रोहिणी हिव कहै इम प्रीतम भणी, ए नार नाचे अने कूदे कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइं में कदे देख्यो नही, मुझने त- मासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ (चाल) इण वचनें रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीड़ा नवि लहै ॥ ए दुखणी रे पुत्र मुओ तड़पड़ करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥ (उल्लालो) जाणे तरै तूं वात दुखनी गरबगहली कामनी, इम

कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालकभणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै करी, थयो मुरछित रे रोवै अति आंख्या भरी ॥ पडतो सुत रे सासणदेवत झालियो, कंचनमय रे सिंहासण बैसारियो ॥ (उल्लालो) बैसारियो कर जोड आगे करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ हसावै पायपंकज सेवता ॥ इसनो भूपतने अचंभो देख ए कारण किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पधारै पूछियै सांसो इसो ॥ १२ ॥ (चाल) चिंतवतां रे चारतिया आया जिसै, राजा पिण रे पुहतो वंदणने तिसे ॥ सुण देशना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बालकतणो ॥ (उल्लालो) बालकतणो भव भूप पूछै कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो भवांतर अने राजानो वली ॥ श्रीगुरु पासे पाछलै भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे सगते साधुभगते तुम्म भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ (चाल) कहै राजा रे रोहणितप किम कीजियै, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजीयै ॥ तब मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन राजाभणी ॥ (उल्लालो) राजाभणी विधि एह जंपै चंद रोहणतप आवियै, उपवास कीजे लाभ लीजै भली भावना भावियै ॥ बारमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरंगसुं, इम सात वरसा लगे कीजै तजी आलस अंगसुं ॥१४॥ (ढाल—वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करियै हो उजमणो एम ॥ तप करतां पातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त० ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजै आगे हो आठे मंगलीक ॥

विधसुं पुस्तक पूजियै, तें पामे हो शिवपुर तहतीक ॥ त० १७ ॥ सेवा कीजै साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ संतोषीजे सादमी, मनरंगे हो करश पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पूंछना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरै, तें पामे हो आनंद अनेक ॥ त० २० ॥ (ढाल—धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी) ॥ इम महिमा रोहणतणी, श्रीग्यानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपूज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरी, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, मन सूधै संजम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठै पूत्रे आदरी, दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै, धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधना, लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हियै, प्रभु चरणां चित लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, मैं तवियो शिवपुरगामी रे ॥ मन मान्या साहिबतणी, हिव पुन्यैं सेवा पामी रे ॥ इ० २५ (कलश) ॥ इम गगन जुग मुनि चंद्र वरसे (१७२०) चोथ श्रावण सुदि भली ॥ मैं कही रोहणतणी महिमा सुगुरु मुख जिम सांभली ॥ वासुपूज्य प्रमने थया सुप्रशन चित्तनी चिंता टली, श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन आस्या फली ॥ २८ ॥ इति रोहणीतप स्तवन संपुर्ण ॥

॥ अथ रोहणीतप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास रोहणीतप ग्रहण करे, रोहणी नक्षत्रके दिन उपवास करै, बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीका पूजन करै, आगे अष्ट मंगलीक रचना करै, अष्ट द्रव्य चढावे, देव वंदना-

दिक करकै धर्मोपदेश सुणे (श्रीवासुपूज्य स्वामी सर्वज्ञायनमः) इसका दो हजार गुणना करै. एसें सात वरस तप करणेंसें सुख सौभाग्य वधेगा, पुत्रादिकका शोक संताप न होगा. विशेष अधिकार स्तवनसें जाणना ॥ इति रोहण तप विधिः ॥

॥ अथ छम्मासी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ गौतमस्वामी रे बुध दो निरमली, आपो करिय पसाय ॥ महावीरस्वामी जै जै तप किया, तेहनो कहिसुं विचर ॥ वलिश वांडु वीरजी सुहामणा ॥ १ ॥ भावठ भंजण सेव्यां सुख करै, गातां नव निधि थाय ॥ बारे वरसां वीरजी तप कियो, दूर करै सहु पाप ॥ व० २ ॥ बे कर जोमी ए हूं वीनवूं, श्रीजिनशासन राय ॥ नाम लियांथी नव निधि संपजै, दरिशण डुरित पुलाय ॥ व० ३॥ नव चोमासा जिनजीरा जाणिये, एक कीयो बम्माश ॥ पांचे ऊणा ब वलि जाणियै, बारकेकोजीमाश ॥ व० ४ ॥ बहुत्तर माशखमण जग जीपता, ब दो मासी रे जाण ॥ तीन अढाई दो दो कीया, दो दोढ माशी वखाण ॥ व० ५ ॥ भद्द महाभद्द शिवगति जाणियें, उत्तम एहना प्रकार ॥ विचमें पारणो स्वामी नहि कियो, नहि कीयो चोथो आहार ॥ व० ६ ॥ तिहुं उपवासे प्रतिमा बारमी, कीधा बारे जी माश ॥ दोयसें वेला जिनजीरा जाणियै, इण गुणतीस विलास ॥ व० ७ ॥ तीनसे पारणा जिनजीरा जाणियै, तीन गुणतीस पचास ॥ एहमें स्वामी केवल पामिया, पाम्या मुगति आवास ॥ व० ८ ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर अतहि डुक्कर तप करी, संयमसु पाली कर्म टाली स्वामी शिव रमणी वरी ॥ सेवक पभणें वीर जिनवर चरण वंदित तुमतणा, संसार कूप पर्मत राखो आपो स्वामी सुख घणा ॥ ७ ॥ इति बम्मासी स्तवन ॥

॥ अथ छम्मासी तप विधिः ॥

॥ शासनके अधिपती श्रीमहावीरस्वामी सर्वसें उत्कृष्ट छम्मासी तप किया. इस वास्ते इस वखतमें संघयण बल पराक्रमके हीनपणेंसें इकसार छम्मासी तप नहिं कर सकतेहें तोजी छम्मासीके १८० उपवास करणेसें जघन्य छम्मासी तपके फलकों जीव प्राप्त होता है. उर देव वंदनादि क्रिया करै, स्तवन छम्मासीतपका सुणै, इस स्तवनमें वीरप्रजूके सर्व तपस्याकी संख्या कही है. (श्रीमहावीरस्वामीनाथायनमः) इसका २००० गुणना करै. वीर प्रजूके नामका तीर्थ होय उहां यात्रा करणेकों जावै, शुद्ध जावना जावै, शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्याके प्रजाव लघुकर्मी जीव होकर अनंतसुखकों प्राप्त होय ॥ इति छम्मासी तप विधि ॥

॥ अथ बारेमाशी तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ दान उल्लट धरी दीजीयै ॥ ए देशी ॥ त्रिजुवन नायक तूं धणी, आदि जिनेसर देव रे ॥ चौसठ इंद्र करै सदा, तुझ पदपंकज सेव रे ॥ त्रिजु० १ ॥ प्रथम जूपाल प्रजु तूं थयो, इण अवसरपणी काल रे ॥ तुझ सम अवर न को प्रजु, तूं प्रजु दीनदयाल र ॥ त्रि० २ ॥ प्रथम तर्थिकर तूं सही, केवलज्ञान दिणंद रे ॥ धर्म प्रज्ञापक प्रथम तूं, तूंही है प्रथम जिनंद रे ॥ त्रि० ३ ॥ अंतर अरि जे आतमतणा, काल अनादि थिति जेह रे ॥ ते तप शक्तियें तें हण्या, आत्म वीरज गुण गेह रे ॥ त्रि० ४ ॥ ताहरी शक्ति कुण कह सकै, जेहनो अंत न पार रे ॥ द्वादश माशनो तप कर्यो, तेह अपानक सार रे ॥ त्रि० ५ ॥ एह उत्कृष्ट तप वरणव्यो, आगममें जिनराज रे ॥ ते करवूं अति आकरुं, तप विना किम सरे काज रे ॥ त्रि० ६ ॥ तीनसै साठ उपवास ते, ते इण पंचम काल रे ॥ अवसर आदरै क्रम विना, ते पिण जवि सुविसाल रे ॥

त्रि० ७ ॥ ए तप गुरुमुख आदरै, शास्त्रतणे अनुसार रे ॥ पक्किम मणादिक ज्ञावथी, शुद्ध क्रिया मन धार रे ॥ त्रि० ८ ॥ चित्त समाधि शुज्ञ ज्ञावथी, धरे तादृशो ध्यान रे ॥ ते नर उत्तम फल लहै, कवि लहै उत्तम ग्यान रे ॥ त्रि० ए ॥ काल अनादि संसारमें, जन्म मरणतणा दुःख रे ॥ ते लहे धर्म पाया विना, तप विना किम हुवै सुख रे ॥ त्रि० १० ॥ हिव लह्यो नरज्ञव पुन्यथी, वलि लह्यो श्रीजिन धर्म रे ॥ तत्वनी रुचि थइ हे मुफे, हिव मिट्यो मनतणो ज्ञर्म रे ॥ त्रि० ११ ॥ ज्ञव२ एक जिनराजनो, सरण होज्यो सुखकार रे ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, में कियो हिवै परिहार रे ॥ त्रि० १२ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, मोक्षमारग सुविशाल रे ॥ ज्ञव२ जे मुफ संपजै, तो फलै मंगलमाल रे ॥ त्रि० १३ ॥ श्रीजिनशाशन तप कह्यो, ते तप सुरतरू कंद रे ॥ धन२ जे नर आदरै, काटै ते करमनो फंद रे ॥ त्रि० १४ ॥ कलश ॥ इम नाज्ञिनंदन जगत वंदन सकल जन आनंदनो, में थुण्यो धन दिन आजनो मुफ मात मरुदेवी नंदनो॥ संवत सुनेत्राकास निधि शशि नयर श्रीवालूचरै, श्रीजिनसौज्ञाग्य सुरिंद के सुपशाय विजय विमल वरै ॥ १५ ॥ इति श्री बारे माशी तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ बारे माशी तप विधिः ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर श्रीऋषज्ञदेवस्वामी उत्कृष्ट बारै मासी तपस्या करी. इस वास्तै ज्ञव्यजीव बारैमाशी तपस्याका ज्ञाव लायकै (३६०) तीनसेसाठ उपवास करै. जिस दिन व्रत होय उस दिन देववंदनादि क्रिया करै, बारे माशी तपका स्तवन सुणै ॥ (श्री ऋषज्ञदेवस्वामीनाथायनमः ॥) इसका २००० गुणना करै. तपस्या पूर्ण होनेसें सिद्धगिरी यात्रा करणेकों जावै. शक्ति माफक उद्यापन उच्छव करै. इस तपस्याके प्रशाद ज्ञव्यजीवोके कज्ञी दुख

सौभाग्यकी प्राप्ति न होय, सदा तपतेज वढता रहै ॥ इति चारैमासी तपस्या विधिः ॥

॥ अथ अठाईस लब्धि स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिनेसरू, शुद्ध मने सुखकार ॥ लवधि अठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रश्नव्याकरणें प्रगट, भगवतीसूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवस्यके, वारू लवधि विचार ॥ २ ॥ आंविल तप कर ऊपजै, लवधी अठावीस ॥ ए हिव परगट अरथसुं, सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल ॥ सफल संसारनी ॥) अनुक्रमें हेव अधिकार गाथातणे, लवधिना नाम परिणाम सरिषा भणे ॥ रोग सहु जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लवधि छै नाम आमोसही ॥ ४ ॥ जासु मल मूत्र ऊषध समा जाणियै, वीय वप्पोसही लवधि वखाणियै ॥ श्लेष्म ऊषध सारिखो जेहनो, तीजी खेल्लोसहो नाम छै तेहनो ॥ ५ ॥ देहना मैलथी कोढ दूरे हुवै, चोथो जल्लोसहो नाम तेहनो भवै ॥ केश नख रोम सहू अंग फरस्यां सही, रहै नहीं रोग सव्वोसही ते कही ॥ ६ ॥ एक इंद्रिय करी पांच इंद्रियतणा, भेद जाणे तिणि नाम संभिसना ॥ वस्तु रूपी सहू जाणियै जिण करी, सातमी लवधि ते अवधिग्याने करी ॥ ७ ॥ (ढाल ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ए चाल ॥) हिव आठुल अढियै ऊणो मानुषक्षेत्र, संज्ञा पंचेंद्रि तिहां जे वसय विचित्र ॥ तसु मननो चिंतित जाणे मूल प्रकार, ते ऋजुमति नामे अठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ संपूरण मानुषक्षेत्रे संज्ञावंत, पंचेंद्रिय जे छै तसु मन वातां तंत ॥ सूखम परजायें जाणे सहू परिणाम, ए नवमी कहियै विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रभावें ऊडी जाय आकाश ॥ ते विद्याचारण लवधि प्रकाश ॥ जसु वचन सरापे खिणमें खेरु थाय, ए लवधि

इग्यारमी आसी विस कहिवाय ॥ १० ॥ सहु सूखम बादर देखै लोकालोक, ते केवल लबधी बारमियै सहू थाक ॥ गणधर पद ल हियै तेरम लबधि प्रमाण, चवदम लबधे करी चवदै पूरब जाण ॥११॥ तीर्थंकर पदवी पामे पनरमी लबधि, सोलम सुखदाई चक्र वर्त्तिपद रिद्ध॥बलदेवतणो पद लहियै सतरमी सार, अढारमी आखा वासुदेव विस्तार ॥१२॥ मिसरी घृत क्षीरै मेल्या जेह सवाद, एहवी लहै वाणी उगणीशम परसाद ॥ जणियो नवि जूलै सूत्र अरथ सुविचा र, ते कुष्ट कबुद्धी वीसम लबधि विचार॥१३॥ एके पद जणियां आ वै पद लख कोम, इकवीसमी लबधी पयाणुसारणी जोम ॥ एके अरथे करी ऊपजै अरथ अनेक, बावीसम कहियै बीजबुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ (ढाल ॥ कपुर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए चाल ॥) सो लह देशतणी सही रे, दाहक सगति वखाण ॥ तेह लबधि तेवीस मी रे, तेजोलेस्या जाण ॥ चतुर नर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगमने अधिकार, च० ॥ वारू लबधि विचार ॥ च० ॥ए आंकणी ॥१५॥ चवद पूरबधर मुनिवरू रे, ऊपजंता संदेह॥ रूप नवो रचि मोकले रे, लबध आहारक एह ॥ च० १६ ॥ तेजोलेश्या अगननी रे, ऊपशमवा जलधार ॥ मोटी लबधि पचवीसमी रे, शीतोले श्या सार ॥ च० १७ ॥ जेण सगतिसुं विकुरवै रे, विविध प्रकारै रूप ॥ सदगुरु कहै छावीसमी रे, वैक्रिय लबधि अनूप॥ च० १८ ॥ एकण पात्रे आदमी रे, जीजौम केइ लाख ॥ तेह अखीणम हानसी रे, सत्तावीसमी साख ॥ च० १९ ॥ चूरै सेन चक्रीसनी रे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लबधी कही रे, अठावीशमी नाम ॥ च० २० ॥ तेज शीत लेश्या बिहुं रे, तेम पुलाक विचार ॥ जगवतीसूत्रमें जाषियो रे, ए त्रिहुनो अधिकार ॥ च० २१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे, कलपसूत्र गणधार॥ तीनश इकर मिली रे,

वारू आठ विचार ॥ च० २२ ॥ प्रश्नव्याकरणे सही रे, बाकी उ वधां वीश ॥ सांभलतां सुख ऊपजै रे, दोलत हुवै निशदीस ॥ च० २३ ॥ (कलश) संवत सत्तरैसे ववीसे मेरुतेरस दिन भले, श्रीनगर सुखकर लूणकरणसर आदिजिन सुपसाउलै ॥ वाचना चारज सुगुरु सानिध विजय हरख विलासए, श्रीधर्मवर्द्धन स्तवन भणतां प्रगट ग्यान प्रकास ए ॥ २४ ॥ इति २८ लब्धि स्तवनं ॥

॥ अथ अठाइस लब्धि तप विधिः ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास २८ लब्धि तप ग्रहण करै, अन क्रमसें २८ उपवास करै, स्तवन सुणे. जिस दिन जो लब्धिका उ पवास होय उसही नामका गुणना करै. तप पूर्ण होणेसें शक्ति मुजब उद्यापन करै. इस तपस्यासें निर्मल बुद्धि उत्पन्न होय, सदा आनंद रहै. इति २८ लब्धितप विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूर्व स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए देशी ॥ जिनवर श्री वर्द्धमान, चरम तीर्थंकर, प्रह ऊठी प्रणमुं मुदा ए ॥ श्रुतधर श्री गणधार, सूरि शिरोमणी, नमतां नव निधि संपदा ए ॥ १ ॥ चवदे पूर व नाम, सूत्रे जूजूवा, वीरजिनंदे भाषिया ए ॥ ते हिव सुगुरु पसा य, वरणविस्युं इहां, आगममें जिम उपदिस्याए ॥ २ ॥ पहिला पूर्व उत्पाद १, दूजो अग्रायणी २, वीर्यवाद ३ तीजो नमूं ए ॥ अस्ति नास्तिप्रवाद ४, सत्ता जाणिये, नारग रयण पंचम ५ गिणुं ए ॥ ॥ ३ ॥ छठो सत्यप्रवाद ६, सत्तम आतम ७, कर्मप्रवाद अठम गिणो ए ८ ॥ प्रत्याख्यानप्रवाद ए, नामे नवम, विद्याप्रवाद दशमो कह्यो ए १० ॥ ४ ॥ इग्यारम नाम कल्याण ११, प्राणायु बारमो १२, क्रियाविशाल तेरम भणो ए १३ ॥ बिंदुसार १४ इण नाम, चवदे ए कह्या, सास्त्र थकी में संग्रह्या ए ॥ ५ ॥ (ढाल २ ॥ श्री

विमलाचल शिर तिलो ॥ ए देशी ॥) उत्पाद पूर्व सोहामणो, कोटी पद परिमाण ॥ षट जाव प्रगट छे ते जिहां, त्रिपदी जाव विनाण ॥ १ ॥ सर्व द्रव्यपर्ययतणो, जीव विशेष प्रमाण ॥ दूजो पूर्व अग्रायणी, छिन्नुं लख पद जाण ॥ २ ॥ पद लख सत्तर जेहनी, संख्या परगट एह ॥ वीर्य प्रबलता जीवनी, जाषी तीजे तेह ॥ ३ ॥ चोथे पूर्वे जे कह्यो, अस्ति नास्ति प्रवाद ॥ पद संख्या साठ लाखनी, सप्तजंगी स्याद्वाद ॥ ४ ॥ ग्यान प्रवाद पद पंचमो, सूत्रे आण्यो जोम ॥ मत्यादिक पण जेदसुं, पद संख्या इक कोमि ॥ ५ ॥ सत्यप्रवाद छठो कहुं, जाषुं सत्य स्वरूप ॥ संख्या पद इक कोमनी, जाषी अगम अनूप ॥ ६ ॥ नित्यानित्यपणो इहां, आतम द्रव्य सुजाव ॥ छवीस पद कोम जेहना, सूत्रे आण्या जाव ॥ ७ ॥ कर्म प्रवादतणो हिवै, प्रगटपणे अधिकार ॥ लाख असी पद जेहना, कोमी इग निरधार ॥ ८ ॥ नवमो पूर्व कहुं हिवे, नामे प्रत्याख्यान ॥ लाख चोरासी जेहना, पद संख्या चित आन ॥ ए ॥ अतिशय गुण संयुत जणी, साधन साध्य निदान ॥ विद्या अनुपम सातसै, कोमी वरस लख जान ॥ १० ॥ कल्याण नाम इग्यारमो, छवीस कोम प्रमाण ॥ ज्योतिषशास्त्र विचारणा, चोविह देव कल्याण ॥ ११ ॥ प्राणायु पद बारमो, छप्पन्न लख इग कोमि, प्राण निरोधन जे क्रिया, शास्त्रे आण्यो जोम ॥ १२ ॥ ख्यायिक्यादिक जे क्रिया, छंद क्रिया सुविसाल ॥ पद संख्या नव कोमनी, तेरमी क्रिया विशाल ॥ १३ ॥ लोकसारबिंदु चवदमो, नामे अरथ निहाल ॥ पद संख्या इग कोमनी, लाख पचवीस संजाल ॥ १४ ॥ लोकप्रत्यय देखण जणी, संख्या गज परिमाण ॥ सोले सहस अरु तीनसै, उपर तयासी जाण ॥ १५ ॥ पूरब संख्या ए कही, गुणमालाथी देख ॥ आगे बुधजन सोधज्यो, बाकी देश विशेष ॥ १६ ॥

(ढाल ॥ वीर जिनेसर उपदिसै ॥ ए चाल) सूत्रे गुंथे गणधरा, अर्थे अरिहंत जाखै रे ॥ ते श्रुतज्ञान नमूं सदा, पाप तिमर जिम नासै रे ॥१॥ वाणी रे जिणंदनी, सुणज्यो चित हित आणी रे, तत्व रमणता अनुसरै, संपूरण गुण खाणी रे ॥ वा० २ ॥ विषय कषाय तजी करी, ग्यान जगत उर धारी रे ॥ विधि संयुत जिनमंदिरै, प्रजु मुख पाश जुहारी रे ॥ वा० ३ ॥ तप जप संजम आदरी, श्री श्रुतज्ञान निधानो रे ॥ सदगुरु चरण नमी करी, संवरजोग प्रधानो रे ॥ वा० ४ ॥ अक्षत लेइ ऊजला, गुंहली सुंदर कीजै रे ॥ नाण दंसण चारित्रनी, ढिगली तीन धरीजै रे ॥ वा० ५ ॥ चवद पूर्व व्रत इण परै, सुगुरु संजोगे लेई रे ॥ विधिसुं पुस्तक पूजीयै, चित अति आदर देई रे ॥ वा० ६ ॥ इम तप संपूरण थयां, ऊज-मणो हिव कीजे रे ॥ घर सारू धन खरचने, नरजव लाहो लीजे रे ॥ वा० ७ ॥ पूठा परत विटांगणा, पूरव नाम प्रमाणो रे ॥ नव-करवाली कोथली, लेखण ठवणी जाणो रे ॥ वा० ८ ॥ देहरै देव जुहारने, आरती मंगल कीजे रे ॥ सनात्रपूजा वलि साचवी, तत्व सुधारस पीजे रे ॥ वा० ९ ॥ इण पर तप आराधतां, डुरगति का-रया बेदे रे ॥ चवदह रज्जु सिरोमणी, जीव अक्षयगति वेदे रे ॥ ॥ वा० १० ॥ तप आराधन विधि जणी, आगम वचने जोइ रे ॥ जवियण पिण तुमे आदरो, ज्युं जवभ्रमण न होई रे ॥ वा० ११ ॥ (कलश) इम सयल सुखकर गह खरतर तपे रवि जिम क्रांत ए, सौजाग्यसूरि मुणिंद इण पर कह्यो पूर्व वृतंत ए ॥ संवत अठारे बरस विंशूं नयर श्रीवालूचरै, ए स्तवन जणतां श्रवण सुणतां स-फल मनवंछित फलै ॥ १२ ॥ इति चवद पूर्व स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ १४ पूरव तप विधि लिख्यते ॥

॥ चवदे पूर्वकी तपस्याके १४ उपवास करे, जिस दिन जो

पूर्वका उपवास होय उसी पूर्वका नामसे (२०००) गुणना करै, स्तवन सुणे, इस स्तवनमें १४ पूर्वके नाम और विधि सर्व लिखी है इस मुजब विवेकी जीव गुरूसें समझकें करै. यह तपस्याके करणेसें ज्ञानावरणादि कर्मका क्षयोपशम होय, शुभ ज्ञानका उदय होय ॥ इति १४ पूर्व तप विधिः ॥

॥ अथ तिलक तपस्या स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सासण देवी सारदा, वाणी सुधारस वेल ॥ बालक हित भणी बगसिये, सुबुधि सुरंगी रेल ॥ १ ॥ नवम अंग जिन पूजतां, मन लहि शुभ परिणाम ॥ तप तिलके फल पामिये, दवदंती गुणधाम ॥ २ ॥ (ढाल ॥ वीर जिणेसर उपदिसै ॥ ए देशी) कमला जिम कुंभणपुरे, भुजबल नरपति भीमो रे ॥ पदमनी पदम सुवासना, श्वेतगज स्वप्ने नीमो रे ॥ पदम० १ ॥ परतख्य फल ए पुन्यना, प्रसवी सुता पूरे माशे रे ॥ दवदंती नाम दीपतो, गुणमणि बुद्धि प्रकाशे रे ॥ पद० २ ॥ चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुणे करी रंभा रे ॥ देवगुरु धर्म दीपावती, व्रतधारी दृढ बंभा रे ॥ प० ३॥ प्रतिमा पूजै शांतनी, देवे दीधी त्रिकालो रे ॥ मात पिता प्रमोदसुं, स्वयंवर वरमालो रे ॥ प० ४ ॥ अवझायाधिप श्रीनिषदनो, नल लिखियो निलाडै रे ॥ आनंदसु पंथ आवतां, पूरब पून्य उघाडै रे ॥ प० ५ ॥ मझम रयणी तम भरी, मधुरवकुंत इहां वनमें रे ॥ मणि भाले तेज दिनमणी, जाग्रत देखी अहो मनमें रे ॥ प० ६ ॥ ध्यानधारी गुरु कोइ मिलै, पूछै एह प्रसन्नो रे ॥ कर्म बलै मुनि आविया, परीसह जीत मदन्नो रे ॥ प० ७ ॥ पंच जीत पंच पालता, टालता दुस्सह सबला रे ॥ संजम शुद्ध संभालतां, उद्यम शिवसुख कमला रे ॥ प० ८ ॥ दुहा ॥ मणि तेजें मुनि तरुवये, रथ थकी स्त्री भरतार ॥

दवै तीन प्रदक्षणा, विधिसुं चरण जुहार ॥ ए ॥ देशना सुण पावन थया, ज्ञान सुधारस पाय ॥ को तप परभव तिलक है, कहिये श्रीमुनिराय ॥ १० (ढाल–भरत नृप भावसुं ए ॥ ए देशी)॥ मधुर स्वरै मुनिवर कहे ए, नाणी गुरु सुपसाय, दीपक सहू लोकना ए ॥ कर्म शुभाशुभ परभवै ए, इह भव फल निपजाय, करम गति वंकड़ी ए ॥ ११ ॥ उद्दिनाण भव प्रागनो ए, नृप सुणे निरमल भाव, समकित साहीयो ए ॥ धर्मवती को नृपवधू ए, जाणयो दे तत्व प्रस्ताव, साची जिन वाचना ए ॥ १२॥ चोथ प्रमुख नृप चूंपसूं ए, किरिया शुद्ध करी एह, भलै चित भावसुं ए ॥ ॥ नवांग पूजे तिलकसुं ए, चाढै जिन चोवोस, रयण कंचण जड्या ए॥ १३॥ तिलकरसें पामियो ए, समकित एह सतीस, जनम सफलो गिणे ए ॥ भगवन तप विधि भाषिये ए, नल कहै बोध वरीस, पीहर षट्कायना ए ॥ १४ ॥ आदिनाथ अरिहंतना ए, षट् उपवास कहीस, त्री चोवीहारस्युं ए॥ चोथ दोय जिन वीरना ए, अजितादिक बावीस, आण गुरु शिर वही ए ॥ १५॥ पोषध त्रीस तीने थया ए, पूजन तिलक चढाय, तारक जगदीसने ए ॥ उद्यापन संघ भक्तिसुं ए, जन्म सफल नरराय, सूधै मन साधिये ए॥ १६॥ सुण वाणी समकित ग्रहे ए, पय प्रणमी गुरु वीर, चित्त क्षमाहीयो ए ॥ इण पर जे भवि आदरे ए, पावै चरम शरीर, मूल सुख शासतोए ॥ १७॥ (कलश) श्रीशांति दाता त्रि जगत्राता भविक ध्याता सुखकरा, इम सतीय साध्यो तप आराध्यो सुजस वाध्यो शिवघरां ॥ आगमे आखै सूरीय साखै सुगुरु भापै सुण थया, शुद्ध ध्यावै भविक भावे विजय विमल जिनवर कया ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ तिलकतपस्या विधि ॥

॥ शुभ दिन गुरुके पास तिलकतपस्या ग्रहण करके तीस

उपवास करे. प्रथम श्रीऋषभदेवस्वामीके ७ उपवास करे, जब (श्री ऋषभदेवस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करे. फेर श्री महावीरस्वामीके २ उपवास करे, तब (श्रीमहावीरस्वामी सर्वज्ञायनमः) इस पदका २००० गुणना करे. और श्री अजितनाथस्वामीकों आद लेके (२२) बाईस भगवंतोका बाईस उपवास करे. जब उन२ भगवंतोंके नामसे दो दो हजार गुणना करे, उर सर्व विधि स्तवन मुजब करे ॥ इति तिलकतपस्या विधिः ॥

॥ अथ शोलिये तपका स्तवन ॥

वीर जिनेसर भाषियो रे लाल, सहु व्रतमें सिरताज, भवि प्राणी रे ॥ कषायगंजन तप आदरो रे लाल, इणथी पातिक जाय ॥ भ० वी० १ ॥ कोम वरष तप आदरे रे लाल, क्रोध गमावे फल तास ॥ भ० ॥ मान करे जे प्राणिया रे लाल, ते जगमें न सुहाय ॥ भ० वी० २ ॥ व्रतमें माया आदरी रे लाल, स्त्रीपणो पायो मल्लिनाथ ॥ भ० ॥ रूप पराव्रत कीया घणा रे लाल, आषाढभूति गणिका साथ ॥ भ० वी० ३ ॥ च्यार कषाय छे मूलगा रे लाल, उत्तम सोले भेद ॥ भ० ॥ इम भव२ भमतो थको रे लाल, जीव पामे बहु खेद ॥ भ० वी० ४ ॥ एकासण व्रत जे करे रे लाल, लाख वरस दुख हाण ॥ भ० ॥ नीवी व्रत दूजो कह्यो रे लाल, ए धारो जिनवर वाण ॥ भ० वी० ५ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो रे लाल, उपजे लबधि अपार ॥ भ० ॥ उपवास करतां भावसुं रे लाल, पामे भवनो पार ॥ भ० वी० ६ ॥ इम दिन शोले तप करो रे लाल, पूरण व्रत ए थाय ॥ भ० ॥ देव गुरु पूजा करे रे लाल, मन वंछित फल थाय ॥ भ० ॥ नर सुर रिद्धि पिण भोगवे रे लाल, निश्चै मुगति जाय ॥ भ० वी० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ शोलिये तपकी विधि लिख्यते ॥

॥ क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, यह च्यार कषायमें

अनंतानुबंधी १, अप्रत्याख्यानी २, प्रत्याख्यानी ३, संज्वलन ४, इस मुजब एकेक कषायके च्यार४ भेद करणेसें १६ होते हे, इनोंको दूर करणेको प्रथम एकासणा १, निवि २, आंबिल ३, उपवास ४, इस अनुक्रमसें १६ दिन तप करै, स्तवन सुणे, तप पूर्ण होणेसें यथाशक्ति उद्यापन करै ॥ इति शोलिया तप विधिः ॥

अथ पैतालीस आगम तप विधि ॥

गुरुके पास शुभ दिन पैंतालीस आगमतप ग्रहण करै, २ दूज, ५ पांचम, ११ इग्यारस, इत्यादिक ज्ञानतिथिके दिन अनुक्रमसें उपवास वा एकाशणा करै, जिस दिन जो आगमका तप होय उसी आगमका गुणना करै, सिद्धांत लिखावै, सिद्धांत सुणै, पढनेवालोंको साहाय करै, अपणी शक्ति मुजब सर्व ठिकाणे ज्ञानकी वृद्धि करै (प्रणमुं श्रीगुरु पाय) इत्यादि ज्ञानके स्तवन सुणे, सो आगे लिखा है, एसें तपस्याके ४५ दिन पूर्ण होणेसें पैंतालीस आगमकी पूजा करावै, मंदिर उपाश्रयमें ज्ञानोपगरण चढावै. इस तपस्याके करणेसें मुर्खपणा दूर हो के शुद्ध आत्मज्ञानकी प्राप्ती होय ॥

अब ४५ आगमका गुणना लिख्यते ॥

॥ प्रथम इग्यारे अंग ॥

१ श्रीआचारांगजीसूत्रायनमः
२ श्रीसुयगडांगजीसूत्रायनमः
३ श्रीठाणांगजीसूत्रायनमः
४ श्रीसमवायांगजीसूत्राय०
५ श्रीभगवतीजीसूत्रायनमः
६ श्रीज्ञाताधर्मकथाजीसूत्रा०
७ श्रीउपासगदशाजीसूत्रा०
८ श्रीअंतगडदशाजीसूत्रा०
९ श्रीअणुत्तरोववाइजीसूत्रा०
१० श्रीप्रश्नव्याकरणजीसूत्रा०
११ श्रीविपाकजीसूत्रायनमः॥

॥ अथ बारे उपांग नाम ॥

१ श्रीउववाईजीसूत्रायनमः
२ श्रीरायपसेणीजीसूत्रायन०

३ श्रीजीवाभिगमजीसूत्राय० ४ श्रीपन्नवणाजीसूत्रायनमः
५ श्रीजंबूद्वीपपन्नत्तीसूत्राय० ६ श्रीचंदपन्नत्तीसूत्रायनमः
७ श्रीसूरपन्नत्तीजीसूत्राय० ८ श्रीकप्पियाजीसूत्रायनमः
९ श्रीकप्पवडिंसियाजीसूत्रा० १० श्रीपुप्फियाजीसूत्रायनमः
११ श्रीपुप्फचूलियाजीसूत्राय० १२ श्रीवन्हिदसाजीसूत्रायनमः

॥ अथ छै छेदका नाम गुणना ॥

१ श्रीव्यवहारछेदसूत्रायनमः २ श्रीवृहत्कल्पजीसूत्रायनमः
३ श्रीदसाश्रुतस्कंधजीसूत्राय० ४ श्रीनिशीथजीसूत्रायनमः
५ श्रीमहानिशीथजीसूत्राय० ६ श्रीजीतकल्पजीसूत्रायनमः

॥ अथ दस पयन्ना नाम गुणनो ॥

१ चोसरणपयन्नाजीसूत्रायन० २ संथारपयन्नाजीसूत्रायनमः
३ श्रीतंदुलपयन्नाजीसूत्रायन० ४ श्रीचंदाविज्झियासूत्रायनमः
५ श्रीगणिविज्झियासूत्रायनम० ६ श्रीदेवविज्झियासूत्रायनमः
७ श्रीवीरथुवोजीसूत्रायनमः ८ श्रीगछाचारजीसूत्रायनमः
९ श्रीज्योतिष्करंडजीसूत्राय० १० श्रीमहापचखाणजीसूत्रा०

॥ मूल सूत्रके नामका गुणना ॥

१ श्रीआवस्यकजीसूत्रायनमः २ श्रीउत्तराध्ययनजीसूत्राय०
३ श्रीउघनिर्युक्तीजीसूत्रायन० ४ श्रीदशमीकालिकजीसूत्रा०
१ श्रीअनुयोगद्वारजीसूत्राय० २ श्रीनंदीसूत्रजीसूत्रायनमः

॥ अथ पैंतालीस आगम स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ चोवीसे श्रीतीर्थपति, नमूं देव अरिहंत ॥ अर्थ प्रकाशै गणपपुर, द्वादश अंग महंत ॥ १ ॥ त्रिपदी लहि गणपति रचै, सूत्र अर्थ संजोग ॥ अक्षररूपे सारदा, प्रणमूं त्रिकरण योग ॥ ॥ २ ॥ टीका कर्त्ता जगतगुरु, सूत्र करै गणधार ॥ पंचागी युत विस्तरै, नय निक्षेप विचार ॥ ३ ॥ दुषम काल दुर्भिक्षसें, भूले बारम अंग ॥ कंठ पाठसें लिखत कर, रचना रची अभंग ॥ ४ ॥

खंदिल अरु देवर्द्धि गणि, आचारज सय पंच ॥ चोरासी आगम लिखै, कोटि ग्रंथ तज खंच ॥ ५ ॥ काल दोषसें अब मिलै, आगम पैंतालीस ॥ ताको मुनि विवरण करै, माने विसवावीस ॥ ६ ॥ (ढाल ॥ जगतगुरु त्रिसला नंदनजी ॥ ए देशी)॥ आचारांग पहिलो कह्यो जी, मुनि आचार विचार ॥ सुयगडांग दूजोअछै जी, पापंडी निरधार ॥ जगतगुरु भाखै वीर जिनंद ॥ १ ॥ दस ठाणा ठाणांगमे जी, समवायांग संख्यात ॥ सहस छत्तीस भल प्रश्नो जी, भगवई अंग विख्यात ॥ ज० २ ॥ धर्मकथा ज्ञाता भणी जी, दस श्रावक व्रतधार ॥ दसानुपासक सातमो जी, अंग कह्यो निरधार ॥ ज० ३ ॥ अंतगड केवली जे थया जी, वरणन अष्टम अंग ॥ पंचानुत्तर जे गया जी, अणुत्तरोवाई चंग ॥ ज० ४ ॥ अंगुष्टादिक प्रश्नो जी, प्रश्नव्याकरण नाम ॥ सुख दुःखना फल भापिया जी, सूत्र विपाके ताम ॥ ज० ५ ॥ अढार सहस आचारांगमें जी, पद संख्या परिमाण ॥ वर्ण संख्याते पद हुवे जी, ठाण दुगुण सब जाण ॥ ज० ६ ॥ उववाई उपांगमे जी, कोणिक अंबड रूप ॥ वर्णन नगरी आदि दे जी, सांभल भविजन चूंप ॥ ज० ७ ॥ सूरियाभ पूजा करी जी, जिन प्रतिमा नवरंग ॥ द्रव्य भाव विहुं भेदसूं जी, रायप्रश्नी चित चंग ॥ ज० ८ ॥ जीवतणो अभिगम सही जी, विजयदेव प्रस्ताव ॥ जीवाभिगम तीजो कह्यो जी, सुर कृत बहु विध भाव ॥ ज० ९ ॥ पन्नवणामें जाणज्यो जी, जीवाजीव विचार ॥ जंबूद्वीपनी वर्णना जी, नाम थकी गुण धार ॥ ज० १० ॥ सूर चंद्र विग्रह गती जी, पन्नत्ती विहुं जाण ॥ कप्पिया कप्पवडिंसियाजी, पुप्फिया नाम वखाण ॥ ज० ११ ॥ पुप्फचूलिया जाणीये जी, वन्हिदशा इण नाम ॥ नामथी अर्थ पिछाणज्यो जी, सांभलता सुख धाम ॥ ज० १२ ॥ (ढाल २ ॥ ख्याली लाल

अणवट रंग लागो ॥ ए देशी) ॥ छेदतणा प्रायश्चितना जी, भेद कए ए जाण ॥ वृहत्कल्प विवहारमें जी, भाष्यो भगवंत ज्ञान ॥ सुज्ञानी लाल इणसुं नित राचो ॥ राचो२ रे भविक दिलदार, इणसुं नित राचो ॥ सुज्ञा० १ ॥ महानिशीथे भाषियो जी, जिनपूजा विहुं भेद ॥ श्रावक द्रव्ये भावसूं जी, मुनिवर भाव अभेद ॥ सुज्ञा० २ ॥ जीतकल्प वलि निसीत छे जी, छर दशाश्रुतस्कंध ॥ दश पयन्ना जाणिये जी, चौसरण संथार प्रबंध ॥ सु० ३ ॥ तंडुलवयाली चंदाविज्झया, गणविद्या अभिधान ॥ देवविज्झया वीरथुंवो जी, गछाचार निधान ॥ सु० ४ ॥ ज्योतिकरंक महा पच्चख्काण जी, च्यार सूत्र छे मूल ॥ आवश्यक दशमीकालिक जी, उत्तरध्ययन अमूल ॥ सु० ५ ॥ च्यारे अनुयोगे करी जी, रचना सूत्रे जाण ॥ तेह न्याय निक्षेपथी जी, अनुयोगद्वार प्रधान ॥ सू० ६ ॥ द्रव्यानुजोग कए द्रव्यनी जी, चर्चा त्रिधि विस्तार ॥ चरण करण अनुयोगमें जी, मुनि श्रावक आचार ॥ सू० ७ ॥ गणतानुयोग गणना करी जी, पृथ्वी गिरी विमाण ॥ वर्गमूल घनमूलथी जी, जाणो चतुरसुजाण ॥ सु० ८ ॥ धर्मकथा अनुयोगमें जी, धर्मकथा दृष्टांत ॥ ए च्यारों विस्तारीया जी, पैंतालीस सिद्धांत ॥ सु० ९॥ (ढाल तीसरी ॥ सांगानेर विराजै ॥ ए देशी) ॥ सुण२ गोतमवाणी, इम वीर वदे गुणखाणी रे, भवियां आगमसुं मन लावो ॥ मन कल्पित वात म गावो रे ॥ भ० आ० १॥ नंदीसूत्र चिरनंदो, यामें पंचज्ञानने वंदो रे ॥ भ० आ० ॥ ज्ञानना भेद वखाण्या, मति अगवीसे आण्या रे ॥ भ० आ० २॥ श्रुत चवदे वीसां भेदे, ए मिथ्यामतने छेदे रे ॥ भ० आ० ॥ अवधिछ असंख्य प्रकारे, मनपर्यव दुय भेद धारे रे ॥ भ० आ० ३ ॥ केवल एक प्रकासै, ए सब विधि नंदी भासे रे ॥ भ० आ० ॥ एतो सहु आगमनी नूंव, स्या-

हाद गंगनी बूंद रे ॥ न० आ० ४ ॥ अंग उपांगनी टीका, कर्त्ताने नमूं निरजीका रे ॥ न० आ० ॥ प्रथम शीलांगाचारी, श्रीअजय देव बलिहारी रे ॥ न० आ० ५ ॥मलयगिरी गुरुस्वामी, इत्यादिकने सिर नामी रे ॥न०आ०॥ सामान्य विशेषे जाखी, निश्चय विवहार है साखी रे ॥ न० आ० ६॥ उत्सर्ग वचन है केइ, अपवाद वचनने लेइ रे ॥ न० आ० ॥ इक मनसुं आराधो, मन वंछित सगला साधो रे ॥ न० आ० ७ ॥ (ढाल ४॥ मंगल कमला कंद ए ॥ ए देशी) ॥ पैंतालीस आगमतणी ए, हिव तप विध सुणज्यो छित जणी ए ॥ दूज पांचम एकादसी ए, ज्ञानतिथि तपथी कर्म जाय खसी ए ॥ १ ॥ शक्ति छते उपवास ए, आंबिल निविथी उल्लास ए ॥ एकासण अथवा करै ए, इम पैंतालीस दिन आचरे ए ॥ २ ॥ जाप करै दो हजार ए, देववंदन पूजन सार ए ॥ प्रतिक्रमण करै दोनुं टंक ए, आगम सुणै अर्थ निसंक ए ॥ ३॥ उजमणो हित चित करे ए, गुरु जक्ति चित्तसुं आदरे ए ॥ जक्ति करै साहमीतणी ए, जे पढय पढावै ते जणी ए ॥४॥ अन्न वस्त्र पुस्तक करै दान ए, तिण मनुष्य जनम परिमाण ए ॥ ते पामे श्रुतज्ञान ए, क्रमथी लहै पद निरवाण ए ॥ ५ ॥ (कलश) शुज नंद सर निधि चंद्र वरषे माघ सुदि पंचमी दिने, वर नयर बीकानेर सुंदर वृहत्खरतर गण घणे ॥ गणधार कीर्ति सुरिंद पाठक रामगणि ऋद्धिसार ए, इम करिय स्तवना सुय महोदय सदा जयश्कार ए ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ ११ गणधर तपस्या विधिः ॥

॥ शुज दिन गुरुके पास ११ गणधर तप ग्रहण करै. ११ दिन उपवास वा एकासणा करै. जिस दिन जो गणधर माहाराजका तप होय उसी नामका २००० गुणना करै ॥

॥ अथ इग्यारे गणधरोंका नाम गुणनो ॥

१ श्रीइंद्रजूतिगणधरायनमः २ श्रीअग्निजूतीगणधरायनमः

३ श्रीवायुभूतिगणधरायनमः ४ श्रीव्यक्तभूतिगणधरायनमः
५ श्रीसुधर्मास्वामीगणधराय० ६ श्रीमंडितस्वामीगणधराय०
७ श्रीमोर्यपुत्रजीगणधरायनमः ८ श्रीअकंपितजीगणधराय०
९ श्रीअचलजीगणधरायनमः १० श्रीमेतार्यजीगणधरायनमः
११ श्रीप्रभवजीगणधरायनमः

॥ यह ११ गणधर भगवंत श्री महावीरस्वामीके शिष्य जातिके ब्राह्मण थे, विद्यमान द्वादसांगीके रचना करणेवाले भये. इस वास्ते मंगल जाणके यह तपस्या करै. गणधरपदकी आराधना करै, गोतमरास सुणे, पूर्ण होयेसें गणधरोकी पूजा करावै, आचार्य उपाध्यायादिककी भक्ति करै, यथाशक्ति परमान्न भोजनसे साहमी वच्छल करै ॥ इति एकादश गणधर तपविधिः ॥

॥ अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरुके पास ग्रहण करै सो विधि ॥

प्रथम ५ साथिया करै (नमंतसामंत) यह गाथा पढके शक्ति मुजब ज्ञान पूजा करै, इरियावही पडिक्कमे, एक लोगस्सका काउसग्ग करै, पार के प्रगट लोगस्स कहै, नीचा बैठके मुंहपत्ती पडिलेहै, दो वांदणा देवै, स्थापनाजीको खमासमण देई (भगवान अमुक तप गहणत्थं चेइयं वंदावेहं) एसा कह चैत्यवंदन करै, णमोत्थुणं इत्यादि अरिहंतचेइयाणं अन्नत्थु० कह ४ थुई कहै, चोथी गाथा कहके नीचा बैठके णमोत्थुणं कहै, फेर खडा होके (श्रीशांतिनाथस्वामी आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं अन्नत्थू०) कहके १ लोगस्सका काउसग्ग करै, पार कै नमोर्हतसिद्धा० कहके (श्रीमतेशांतिनाथाय, नमःशांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीस, मुकुटाभ्युर्च्चितांह्रये ॥ १ ॥ यह थुई कहकै (शांतिदेवताआराधनार्थंकरेमिकाउसग्गं अन्नत्थु०) कहे, एकेक नवकाराका काउसग्ग करै, थुई पढे. (शांतिःशांतिकरःश्रीमान, शांतिदिशतुमेगुरुः ॥ शांतिरेवसदातेषा,

येषांशांतिर्गृहे२ ॥१॥) पीछे श्रुतदेवताकी क्षेत्रदेवताकी भुवनदेवता-की स्तुति काउसग्ग एकेक नवकारका करके अनुक्रमसें करे. पीछे शासनदेवताका काउसग्ग एक नवकारका करे (यापातिशासनंजैनं, सद्यप्रत्यूहनाशनी ॥ साभिप्रेतसमृध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥) पीछे समस्त वैयावृत्ति कर आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० एक नवकारका काउसग्ग करे, पार के (श्रीशक्रप्रमुखायक्षा, जिन-शासनसंस्थिताः ॥ देवान्देव्यस्तदन्येपि, संघरक्षंत्वपायतः) यह थुई कहके नीचा बैठके नमोत्थुणं कहै, जयविराय पर्यंत चैत्यवंदन करे. फेर खमासमण देके (भगवन् अमुक तप ग्रहणार्थं करेमि काउसग्गं) एक लोगस्सका काउसग्ग करे, पार के प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देके ३ नवकार गुणे. फेर खमासमण देके (इच्छकार भगवन् अमुक तप ग्रहण दंडक उच्चरावो जी) गुरु कहै (उच्चरावेमो) पीछे (अहणंभंतेतुह्माणंसमीवे अमुकतवंउवसंपज्जा-माणंविहरामि ॥ तंजहा दव्वउ कालउ भावउ दव्वउणं अमुकतवं खित्तउणंइत्थवा अन्नत्थवा कालउणं जावपरिमाणं भावउणं जाव-गहेणंनगहिज्जामि जावछलेणंनछलिज्जामि सन्निवाएणंनभविज्जामि जावअन्नेणवा केणइरोगायंकादिपरिणामवसेण एसोमेपरिणामोनप-रिवडइ तावमेएसतवो अन्नत्थरायाभियोगेणं गणाभियोगेणं बलाभि-योगेणं देवाभियोगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि॥) जो तप ग्रहण करे उसी तपका नाम लेके गुरुके पास ३ वेर यह पाठ सुणे, गुरु नहीं होय तो थापनाचार्यजी समक्ष तीन वार यह पाठ पढे, पीछे गुरु कहे (इत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं सम्मं-धारणीयं गुरुगुणेहिंवुड्ढाहि नित्थारगपारगाहोहि) एसो गुरु कहे. पीछे खमासमण देके गुरुमुखे पच्चखाण करे अथवा गुरु नहि होय

तो आप मुखे करै. इति सर्व तपस्या ग्रहण विधिः संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तप पारणविधिः लिख्यते ॥

प्रथम ज्ञानपूजा करके इरियावही पमिकमे, अमुक तवपा० मुहपत्ती पमिलेहै २ वांदणा देवै (इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तुम्हेअम्हं अमुक तप पारावेह) गुरु कहे (पारावेमो) इच्छामिख-मासमणो० इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निरकमणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके १ नवकारका काउसग्ग करे, स्तु-तिकी गाथा कहै, पीछे णमोत्थूणं कहै, बेठके भगवन् अमुक तप करतां अविधि आशातनायें करी जो कोइ दूषण लागो होय सो मन वचन कायायें कर मिच्छामिदुक्कडं. और ज्ञानभक्ति द्रव्यसें भावसें किया होय सो प्रमाण फल दायक होणा. गुरु कहे (नि-त्थारगपारगाहोह) पीछे पच्चरकाण करै, अमुक तप आलोयण नि-मित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके ४ लोगस्सका काउसग्ग करै, प्रगट लोगस्स कहै, पीछे उपगरण पात्र भक्त पानादिकसें साधुभ-क्ति करै. अपनी शक्ति मुजब जैनशास्त्रके पढणेवाले तथा पढा-णेवाले विद्यागुरुको भक्ति करै, साहमी वच्छल करै, पहरावणी करै, पीछे याचकोंका दान सन्मान करै ॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि ॥

॥ अथ उपधान तप स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्रीमहावीर धरम परगासै, बैठी परखद बारजी ॥ अमृ-त वचन सुणी अति मीठा, पामे हरख अपार जी ॥ १ ॥ सुणो२ रे श्रावक उपधान वह्या विन, किम सुझै नवकार जी ॥ उत्त-राध्ययन बहुश्रुत अध्ययने, एह भण्यो अधिकार जी ॥ सु० ॥ २॥ महानिशीत सिद्धांत मांहे पिण, उपधान तप विस्तार जी, अनु-क्रम सुद्ध परंपर दीसे, सुविहित गच्छ आचार जी ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप उपधान वह्यां विन किरिया, तुच्छ अलप फल जाण जी, जे

उपधानें वह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-नी आण विराधै, भमस्ये भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघड्या घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करतां आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरने खांड भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहे तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो तप पहिलो वीसङ जाण, इरियावहीनो तप बीजो बीस ऊ आण ॥ इण विहुं उपधाने निश्चै नाण मंडाण, बारे उपवासै गुरु मुख बे बे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसङ त्रीजो णमोत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चोथो चोकङ एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९ ॥ पांचमो लोगस्स तप अठावीसङ नाम ॥ साढापनरह उपवास वायणं त्रिण ठाम ॥ पुक्खरवरदी तप छठो छक्कङ सार, साढात्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान मा ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि गुरुमुख सरस रसाल, गच्छनायक पासै पहरै माल विशाल ॥ ११ ॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन बहु भंग ॥ अति उच्छव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा वे पावे अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान, विधिसों जे वहे, ते सूधो किरिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद, जीव जतन करइ, पूंजि२ पगलां भरे ए ॥ १३ ॥ न करे क्रोध कषाय, हस२ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥ नाणे घरनो मोह, उलटो करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुर तीन सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचे स्वर बोले नही ए ॥

मन मांहे भावै एम, धन२ ए दिन, नरभव माहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे साते उपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अति-घणी ए ॥ १६ ॥ परभव पामे ऋद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पमें ए ॥ लाभै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर भुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, उपधानना फल कहै उत्तम भवि-य जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनी सरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर भणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात उपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहुर्त्तके पहिले दिन मध्यान्ह समैं सु-हागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करके ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसें सिर पर धरै, पीछै सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंहली करै, भर स्त्रियां गहुंली गावै, पीछै गुरु ऊर्ध्व सासर्से वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्टित करै, यथा ॥ ॐह्रींणमोअरिहंताणं । ॐह्रींणमोसिद्धाणं । ॐह्रींणमोआयरियाणं । ॐह्रींणमोउवज्झायाणं । ॐह्रींणमोलोएसव्वसाहूणं । ॐह्रींणमोअरहउ भगवउ वद्धमाणसा-मिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछै वाजित्र वाजते स्वस्थानके आवै, बाजोट पर थाल रक्खै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै, श्रीफलादिककी प्रभावना करै, पीछै मालामाहेक प्रभात समैं प्रति-क्रमण करके पडिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करै. पीछै

उपधाने वह्यां नर नारी, तेहनो जनम प्रमाण जी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तप उपधान कह्यो सिद्धांते, जो नवि माने जेह जी ॥ अरिहंतदेव-नी आण विराधे, भमस्यै भव२ तेह जी ॥ सु० ॥ ५ ॥ अघड्या घाट समा नर नारी, विन उपधाने होय जी ॥ किरिया करता आदेश निरदेश, काम सरै नहि कोय जी ॥ सु० ६ ॥ इक घेवरने खांडे भरियो, अतिघणो मीठो थाय जी ॥ एक श्रावक उपधान वहे तो, धन२ ते कहिवाय जी ॥ सु० ७ ॥ (ढाल २) ॥ नवकारतणो तप पहिलो वीसम्ह जाण, इरियावहीनो तप वीजो वीसम्ह आण ॥ इण विहुं उपधाने निश्चै नाण मंम्हाण, वारे उपवासे गुरु मुख वे वे वाण ॥ ८ ॥ पैंत्रीसम्ह त्रीजो णमोत्थुणं उपधान, त्रिण वायण उगणीस तप उपवास प्रधान ॥ अरिहंतचेई तप चोथो चोकम्ह एह, उपवास अढाई वाण एक गुण गेह ॥ ९॥ पांचमो लोगस्स तप अठावीसम्ह नाम ॥ साढापनरह उपवास वायण त्रिण ठाम ॥ पुस्करवरदी तप छठो छक्कम्ह सार, साढात्रण उपवासे वाण एक सुविचार ॥ १० ॥ सिद्धाणंबुद्धाणं सातमो उपधान म, ल, उपवास करै इक चोविहार ततकाल ॥ एक वाणि करै वलि गुरुमुख सरस रसाल, गछनायक पासै पहरै माल विशाल ॥११॥ माल पहरण अवसर आणी मन उछरंग, घर सारू वारू खरचै धन वहु भंग ॥ अति उछव कीजै रातीजोगो दिल खोल, गीत गान गवा वे पावे अति रंगरोल ॥ १२ ॥ (ढाल ३ ॥) ए साते उपधान, विधिसों जे वहे, ते सूधो क्रिया करै ए ॥ खिण न करै परमाद, जीव जतन करउ, पूंजि२ पगलां भरै ए ॥ १३ ॥ न करै क्रोध कषाय, हम२ हसै नही, मरम केहनो नवि कहै ए ॥ नाणे घरनो मोह, उत्कृष्टी करै, साधुतणी रहणी रहै ए ॥ १४ ॥ पहुर मौन सिझाय, करि पोरसि भणी, ऊंचे स्वर बोलै नही ए॥

मन मांहे जावे एम, धन२ ए दिन, नरजव माहि सफल सही ए ॥ १५ ॥ जे लाते जपधान, विध सेती वहै, पहिरै माल सोहामणी ए ॥ तेहनी किरिया शुद्ध, बहु फल दायक, करम निर्जरा अतिघणी ए ॥ १६ ॥ परजव पामे ऋद्धि, देवतणां सुख, बत्तीसबद्ध नाटक पमे ए ॥ लाजै लील विलास, अनुक्रम शिवसुख, चढती पदवी जे चढै ए ॥ १७ ॥ (कलश) इम वीर जिनवर जुवन दिनयर माता त्रिसला नंदणो, जपधानना फल कहै उत्तम जविय जन आनंदणो ॥ जिनचंद युगपरधान सदगुरु सकलचंद मुनीसरो, तसु सीस वाचक समयसुंदर जणै वंछित सुखकरो ॥ १८ ॥ इति सात जपधान गर्भित स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ संघ मालारोपण विधि लिख्यते ॥

प्रथम मालारोपणके मुहूर्त्तके पहिले दिन मध्यान्ह समैं सुहागणस्त्री चांदी आदिके थालके अंदर कुंकुमका साथिया करके ऊपर चावलोंका करै, पांच सुपारी १ नालेर धरकै माला पधराके सुहागणस्त्री अपणें हाथसैं सिर पर धरै, पीछै सब संघ समेत गीत गाते वाजित्र वाजते गुरु पास आवै, सधवस्त्री गुंहली करै, उर स्त्रियां गहुंली गावै, पीछै गुरु ऊर्ध्व सासर्सैं वर्द्धमान विद्यासे मंत्रकर वासक्षेपसें माला प्रतिष्ठित करै. यथा ॥ ॐह्रींणमोअरिहंताणं । ॐह्रींणमोसिद्धाणं । ॐह्रींणमोआयरियाणं । ॐह्रींणमोउवज्झायाणं । ॐह्रींणमोलोएसव्वसाहूणं । ॐह्रींणमोअरहउ जगवउ वद्धमाणसामिस्स ॥ जएविजये जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धिए ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहाः ॥ इति वर्द्धमानविद्याः ॥ पीछै वाजित्र वाजते स्वस्थानके आवै, बाजोट पर थाल रक्खै, धूप दीप संयुक्त रात्रीजागरण करै, श्रीफलादिककी प्रजावना करै, पीछै मालाग्राहक प्रजात समैं प्रतिक्रमण करके पमिलेहण देववंदनादि करके जिनपूजा करै. पीछै

मुहुर्त्तकी वखत वाजित्रादि उत्सव संघ समेत गुरु पास आवै, पाव श्रीफल रोक द्रव्य हाथमें लेके पहले जो नांदकी थापना करी है. नांद कहीये समोसरणका चित्रपट सो वम्नी ववली पर मोलीसे लपेटके थापे सो उस नांदके च्यारों खूणो पर च्यार साथिया कुंकु उर चावलोका करके नारेल उर रोक मोहर वगेरे भेट करै. साथियों पर अछे विदामादि फल चढावे. पीछे मालाग्राहक चरवला मुहपत्ती हाथमें लेके गुरुके संग इरियावही पडिक्कमे. पीछे श्रावक खमासमण देके श्रावकमुहपत्ती पडिलेहै, फेर खमासमण देके इच्छकारभगवन् तुह्मे अम्हं संघपति मालाआरोहावणि देववंदा मणि वासनिक्षेप करो. तब गुरु वासक्षेप करै. पीछै फेर खमास मण देई तुह्मे अह्मं संघपति माला आरोहावणी देववंदावो, गुरु कहे वंदेह, श्रावक इच्छं कही गुरुके साथ देववंदन करै ॥

॥ अथ देववंदन विधिः ॥

॥प्रथम खमासण देके इच्छा० भगवन् चैत्यवंदन करुं. गुरु कहे करेह. पीछै गुरु चैत्यवंदन बोलै. श्रावक णमोत्थुणं कहै अरिहंत चेइयाणंक० कहके एक नवकारका काउस्सग्ग करै, नमोर्हत्सिद्धा० कहके गुरु स्तुति कहै. यथा ॥ अर्हंतनोतुसश्रेय। श्रियंयध्याननोनरैः । अप्यैंद्रीसकला त्रेहि । रहंसासहसोच्यते ॥ १ ॥ पीछै लोगस्सउज्जो० सव्वलोए० वंदणव० अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. उमितिमंतायं । शासनस्यनतासदायदंह्रीच । आश्रियंतेश्रियांते । भवतोऽजिनापातु ॥ २ ॥ पीछै पुक्खरवर० वंदन० कहके १ नवकारका० स्तुति कहै. नवतत्वयुतात्रिपदी । मिश्रेतारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता, वरधर्मकीर्तिविद्या । नद्यास्याज्जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ पीछै सिद्धाणंबुद्धाणं० तत्तः श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणव० अन्नत्थु० कहके एक लोगस्सका काउसग्ग करै, नमोर्हत्० स्तुति कहै ॥ श्री

शांतिश्रुतशांति । प्रशांतिकोवशांतिमुपशांति । नयतुसदायस्यपदा । सुशांतिदाःशांतिजिने ॥ ४ ॥ ततः द्वादशांगीआराधनार्थं क० वं० एक नवकारका० पारके नमोर्हत्सि० ॥ सकलार्थसिद्धिसाधन । बीजो पांगासदास्फुरडुपांगा । भवतादनुपहतमहा । नमोपहाद्वादसांगीव ॥ ५ ॥ ततः सुयदेवयाए आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ नवकारका० नमोर्हत्सि० ॥ वदवदतीवागवादनी । भगवतिकःश्रु तगमेत्तु । रंगतरंगमितिवर । तरणीस्तुभ्यंनमइतिदः ॥ ६ ॥ ततः शासनदेवता निमित्तं करेमि का० अन्नत्थु० १ नवकारका० स्तुति॥ उपसर्गविलयविघन । निरत्तीजिनशासनावनैकरता । द्रुतमिहसमिहीतत्कृते । स्युशासनेंदेवताभवतु ॥ ७ ॥ पीछे समस्त वेयावच्चकराणं शंतिकराणं सम्मदिट्ठिसमाहिकराणं अन्नत्थू० १ नवकारका काउसग्ग स्तुति०॥ संघत्रयेगुरुगुणोधनिधेसुवैया । वृत्यादिकृत्यकरणैक निबद्धकक्षा । तेशांतयेसहभवंतुसुरासुरीभिः । सदृष्टयोनिखिलविघ्न विघातदक्षा ॥ ८ ॥ प्रगटपणे एक नवकार नमोत्थुणं जावंतिचे० नमोर्हत्सि० कहके स्तवन कहे ॥ ॐमितिनमो भगवउ । अरिहंत सिद्धाचारियउवज्झाए । वरसव्वसाहूमुणिसंघ । धम्मतित्थपवयण स्स ॥ १ ॥ सप्पणवनमोतहभगवइ । सुयदेवयाइसुहयाए । सिव संतिदेवयाय । सिपवयणदेवयाणंच ॥ २ ॥ इंदागणीयमनेरइया । वरुणोवायुकुवेरईसाणा । वंभोनागुत्तिदशम । मवियसुदिसाणपाला ण ॥ ३ ॥ सोमयमवरुणवेसमण । वासवाणंतहयपंचण्हं । तहलोगपालयाणं । सुराई गहाणयनवन्हं ॥ ४ ॥ साहंतस्ससमरकं । मज्झमिणंचेवधम्मणुभाणं । सिद्धिमविग्घंगच्छउ । जिणाणंनवकारउभणियं ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ जयवीराय कहे पीछे भगवान आगे पमदा करके मालाग्राहक गुरुकूं द्वादशावर्त्त वंदनार्थे वांदे, पीछे खमा होके कहे इच्छकार भ० तुह्मे अह्मं संघपति मालाआरोहावणी उद्देसावणी नंदीसूत्र

संज्ञलावणी काउसग्ग करावो. गुरु कहे करेह. इच्छं. संघपतिमाला आरो० उद्दे० करेमि काउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सका का० प्रगट लोगस्स कहे, गुरुजी काउसग्ग करै. पीछै मालाग्राहक खमासमण देइ इच्छाकार भगवन् नंदीसूत्र संज्ञलावो, तब गुरु खमा होकर हाथमें वासक्षेप लेके तीन नवकार सुणावै, नित्थारगपारगाहोह कहके मस्तक पर वासक्षेप करै, पीछै श्रावक खमासमण देके इच्छा० संघपति माला उद्देसउं, गुरु कहे उद्देसउं. फेर श्रावक इच्छामि० इच्छाका० किंभणामी, गुरु कहे वंदित्तापवेह. खमासमण देके इच्छं तुझे अह्मं संघपति मालाउद्दिठ इच्छामो अणुसठिं उदिढि२ खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभयेणं जोगकरीजाहि गुरुगुणवुढ्ढीजाहि नित्थारगपारगाहोह. फेर खमासमण देई तुझाणं पवेइए संदिसह साहुणंपवेमी, गुरु कहे पवेह. पीछै खमासमण देके तीन नवकार गुणाता भया नांदकूं तीन प्रदक्षिणा देवे वासक्षेप महावै. गुरु १ प्रदक्षिणा देवे. पीछै मालाग्राहक मूहपत्ती पडिलेहै, खमासमण देकै इच्छाका० तुझाणंपवेइयं संदिसहभगवन् काउसग्गं करेमी इच्छामी० इच्छाका० भगवन् तुझे अह्मं संघपति माला उद्दे सामणी आरोहावणी करेमिकाउसग्गं अन्नत्थु० कहके १ लोगस्सको काउसग्ग प्रगट लोगस्स कहै पीछै खमासमण देकै वेसणो संदिसाउं, दूजे खमासणे वेसणो ठाउं, पीछै खमासमण देके जो विधि करतां अविधि आसातना लागी होय ते सहु मन वचन कायायें करी मि० इति नांदकी क्रिया॥ पीछै मालाग्राहक भगवानके नव अंग नव रुपिया मोहर वगेरे चढाके नमस्कार करै, मुहुर्तकी वखत मंदरजीके बाहिर जमीन खुली होय तो भगवानके सनमुख सर्व संघ आयके खमा रहे, पीछै मालाग्राहक गुरुके पास आके नव अंग पूजा करे, नव रूपिया मोहर आदि ज्ञान निमित्ते भेट धरै, पीछै गुरू उर्ध्वस्वासे माला

हाथमें लेके ७ नवकार गुणै, पीछै जो माला पहिरावै जिसकों माला पहिरणेवाला यथाशक्ति पहरामणी करै. माला पहिराणेवाला ऊर्ध्व- श्वासें करी संघपतिकों माला पहिरावै, दोनुं जणें ८ दिन तक सचित्त कुशीलादिकका गुरु पासे पच्चखाण करै, पीछै मंदरजी पर चढाणे- की धजा सो संघपति थालमें लेके मंदिरजीके बाहिरकर तीन प्र- दक्षणा देकर गुरु पास वासक्षेप पूजन कराके मंदिरजीके ऊपर चढावै, पीछै सर्व संघके सामने गुरु धर्मोपदेस देवै, साधर्मी वात्स- ल्य करै ॥ इति संघपति मालारोपण विधिः ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लि० ॥ नित्यकर्त्तव्यता यथा ॥

॥ नित्यकर्त्तव्यता कुछ तो शास्त्रोंके लिखतसें कुछएक दे- देखणेमें आई जो परंपरा सो लिखते हैं ॥ उपधानवाला श्रावक विगयोंमेंसें एक घीहीज लेता है उर विकृती नहीं लेता १, उप- धानमें तीस विगयोंकी नीवीतोंमेंसें एकही नीवीता लेणा का- रणयोगसें खांम वगेरे लेणेकी जयणा २, उत्कट द्रव्यादिक नहीं लेणा ३, घी तेलका वघारया साग भी नहीं लेणा धूंगारया हुवा लेणा ४, हरासाग नीलोती नहि लेणा ५, तलाहुवा पापम सीरा वम वगेरे नहि लेणा ६, अन्न पुरषणेवाली रात्री प्रायश्चित्त करणेसें स्त्री शुद्ध होती है अन्यथा नही ७, अन्न पुरषणेवाली स्त्री फटावस्त्र अथवा कारीलगावस्त्र नहि पहरे ८, भोजन करणेकी जगा झामू वगेरे देणेवाली व्रत प्रायश्चित करै अखंमित वस्त्र रखे तो शुद्ध ९, जितने वस्त्रादि उपकरण तप प्रवेशके प्रथम दिन पासमें रक्खे हैं वो सब भोगाभोगकी दोनों वखत पमिलेहणा करणी १०, जीमणके ठिकाणे जो जो थाली कटोरा वगेरे रक्खेहै वो सब भोजन करे जिस दिन पादोनपोरसीमें पमिलेहणाकी वखतही पमिलेहणा दुसरी वखत अन्यदा नही ११, कदाचित् हार कुंमलादिक गहणा अपणे

शरीरसें उतारके अपणे घरादिकमें रखा होय तब विना उपधानवाली जो स्त्री अठपहरी पोसा लिया हुवा होय तिसके हाथसें रातका दिनका नही वह उपधानवाहीकूं देवै उर वोही स्त्री प्रजात समें उनके कहे मुजब ठिकाणे धरदेवै १२, उपधानमें सर्व वस्त्र आप अथवा मालकणके हाथसें पडिलेह्यां शुद्ध होय १३, सब क्रिया अनुष्ठानादिक आदेस निर्देसादिक मालकणके आदेससें शुद्ध होय १४, क्रिया अनुष्ठानकी कराणेवाली मालकण जी दोनुं वखत पडिकमण करै रात्री प्रायश्चित्त करै सात वेर देव वांदे तब शुद्ध होय अन्यथा नही १५, रजस्वलाके तीन दिन तपमें नहीं गिणे जाय १६, महास्वध्याय संबंधी आसोज सुदिकी तथा चैत्र सुदिकी सातम आठम नवम दिन तीन तपस्यामें नहीं गिणे जाय १७, प्रतिक्रमणमें प्रजात समें नवकारसीकाही पच्चख्काण करै पीछे क्रिया करती वखत गुरूके पास उपवास १ अथवा आंबिल २ नीवी ३ अथवा एकासणेका ४ करै १८, पच्चख्काण पारती वखत पहली नवकारसी पारै पीछे उपवासादिक पारै १९, पहले दो उपधान तप ग्रहण करणेके दोनों दिन नंदीके आडंबरसें देरी हो जाती है इस वास्ते अठपहरी पोसा बण नहि आता इस वास्ते तीसरे पहरकी पडिलेहण किये बाद सर्वोपगरणोकूं पडिलेहके रातकूं निश्चे पोसा लेणा २०, प्रजातसमें उपधानवाही गुरुके पास आयके इरियावही पडिलेहके पोषध वपुन सामायक लेके वस्त्र पडिलेहणा उर अंग पडिलेहणा करै, पीछे मुहपत्ती पडिलेहके (उहीपडिलेहणसंदिस्साउं उहीपडिलेहणकरूं) एसे खमासण दोय देवे पीछे ठव वंदन दिये बाद खमासमण दश देवै उसका क्रम एसे हे वहुवेलंसंदिस्साउं १ वहुवेलंकरूं वैसणोसंदि० वैसणोठाउं० सिझायसं० सिझायक० पांगरणोसं० पांगरणोपडिगहुं

कठासणोसं० कठासणोपमिग्गहूं) एवं१० ॥ २१, पीछै वंदन दिया बाद सुख तप पूछा २२, सांऊकूं ज्ञी यही क्रिया करणी लेकिन इतना विशेष हे पट पमिलेहणा उर अंग पमिलेहणा तो करै परंतु उपधि पमिलेहणा नही करै, पीछे गुरुवंदन बव दिये बाद खमासमण दस देवै (उहीपमिलेहणसंदिस्सा० उहीपमिलेहणकरूं सिझायसं० सिझायक० वेसणोसंदिस्सा० वेसणोठाउं) बाकी पहलीकी तरै २२, न्यारा पमिक्कमणा होणेसें पाछीवंदना सुखतपपूछना पर्यंत क्रिया सब करदेना २३, माला पहरणेमें सांऊकूं माला मंत्रायके अपने घर रात्रीजागरण करके प्रज्ञातसमें आचार्य पास माला पहरणी तिसके बाद दिन दश तक दशाहिका करणी उहां पोसा नही लिया हुआ ज्ञी हे तो ज्ञी तिविहार एकासणा करताज्ञया निरारंज्ञी होकर रहे २४, सज्ञी उपधान उत्कृष्ट विधिसें वहना, उसके अज्ञावमें श्रावक एकांतर उपवास उर साधुओंने उपवास आमल निवी एकासणा करके उतनेही उपवासकी संख्या पूर देणी लेकिन दिन संख्याका नियम नहीं हे ॥ इति नित्यकर्त्तव्यता समयसुंदरोपाध्याय कृत संस्कृतोपरिअस्मद् कृत ज्ञाषा संपूर्ण ॥

॥ अथ उपधान तप विधि लिख्यते ॥

पंच मंगल श्रुत नवकार जिसका उपधान वहणेवाला बारे उपवाश अथवा चोवीस आंबिल ३५ नीवी अमतालीस एकासणा करके १२ उपवासकी पैठ पूर कर पीछे पांच अध्ययनकी वाचना नमो अरिहंताणंसें लेके नमो लोएसवसाहूणं तककी १ वाचना एक दिनमें लेवे, तिसके बाद तीन अध्ययनकी वाचना एसोपंचनमोक्कारो १, सबपावप्पणासणो २, मंगलाणंचसबेसिं पढमंहवइमंगलं ॥ एवं ३, अध्ययनकी दूसरे दिन एक वाचना करै, फेर इस नवकारके आठ अध्ययनोंकी एकही वाचना एक दिनमें लेवे तो ववतो आंबिल करै,

फेर तेला करे, तेलेके पारणे आंबिल करै, फेर तेला करै, फेर आंबिल करे, फेर तेला कर पारणा करके आठ अध्ययनोकी एकही दिनमें वाचना लेवे. आठ आंबिल ३ तीन तेला मिलाणेसे उपवास १२ भये. यह पंच मंगल नवकारका पहिला उपधान अविधिसें करे तो पोसा २० वीस करै उपवास १२ करै, विधिसुं वहे तो १६ पोसा उपवास १२॥ यह पहिला वीसम तप २०॥ अब दूसरा इरियावहीका उपधानमें आठ अध्ययन तीन अंतकी चूला उसमें भी अगलेकी तरेही १२ उपवासादिक पीछे इच्छाकारेणसंदिस्सहसुं लेकर जेमे जीवा विराहिया तक एक वाचना लेणी, एगेंदियासें लेकर गमिकाउसग्गं तक दूसरी वाचना देणी, उर एकही वाचना लेणी होय तो पहली तरे आठ आंबिल ३ तेला करके लेवै ॥ इरियावहिया श्रुतस्कंधका तप वीसम नामका अविधिसें पोसा २० उपवास १२, विधिसुं वहे तो पोसा १६ उपवास १२॥ ॥ अब तीसरा भावारिहंतका तीसरा उपधान उगणीस उपवासकी पैठपूरकर वाचना ३ लेवे सो इस मुजब. पहली १ तेला करै पीछे नमोत्थुणंसे लेकर गंधहत्थीणं तक पहिली वाचना लेवे, फेर १६ आंबिल करै, लोगुत्तमाणंसें लेकर धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं तक दूसरी वाचना लेवै २, पीछे सोले आंबिल करके अप्पडिहयवरणाणसें लेकर सवेतिविहेणवंदामि तक तीसरी वाचना लेवै ३. यह तीसरा उपधान नमोत्थुणका पैंत्रीसम नामका जिसमें उपवास १ए विधिसुं वहे तो पोसा ३५, अविधिसुं करता पोसा उपवास ॥ ॥ अथ चोथा स्थापना अरिहंत श्रुतस्कंधका उपधान अध्ययन तीन. जिसमें पहली १ उपवास कर ३ आंबिल तीन करै. अरिहंतचेइयाणं इहांसें लेकर वंदणवत्तियाए अन्नत्थउससीएणं अप्पाणंवोसिरामि तक १ वाचना लैणी. यह थापनारिहंतका

चोथा उपधान चउक्कम नामका जिसमें पोसा ४ उपवास ४॥ अढाई ॥ ॥ नामारिहंत चउवीसत्थेका पहले तेला करै, पीछे लोगस्सउज्जोयगरे इहांसे लेके चउवीसंपिकेवली तक पहली वाचना लेवै, फेर बारे आंबिल करके उसभमजियंचवंदे इहांसे लेकर पासं-तहवद्धमाणंच तक दूसरी वाचना देणी, फेर तेरे आंबिल करके एवमः-एअभित्थुआसे लेकर सिद्धासिद्धिंममदिसंतु तक तीसरी वाचना लेवै. ए नामारिहंत चउवीसत्थेका अठावीसक्कनाम तप विधिसुं व-हतां दिन २८ पोसा २८ उपवास साढापनरे एकांतर करै, अवि-धि करता दिन अठाईस पोसा २८ उपवास साढासतरै ॥ ५॥ सुत्रार्थश्रुतस्कंध पहली १ उपवास पीछे ५ आंबिल पीछे पुक्खर-वरदीवड्ढेसें लेकर सुयस्सभगवउकरेमिकाउसग्गं तक एक वाचना देणी. यह छट्ठा उपधान श्रुत्रार्थक नाम छक्कम पोसा ६ उपवास साढातीन ॥६ ॥ ॥ अथ सिद्धार्थकश्रुतस्कंध सातमा उपधान पोसह समेत चोविहार उपवास १ करै, पीछे सिद्धाणंबुद्धाणंसें ले-के तारेइनरंवनारिंवा तक एक वाचना देणी. यह सातमा उपधान मालाका तप ॥ ७ ॥

॥ अथ उपधान तप प्रवेश विधि लिख्यते ॥

॥ जब वहोत श्रावक अथवा वहोत श्रावकएया उपधान वहे तब तो संघके नामसे चंद्रमा अछा देखणा, संघकी कुंभरासी है. अगर एक श्रावक अथवा एकही श्रावकणी उपधान वहे तो अपणे नामसें चंद्रबल लेवै तथा उपधानवाही सांझकूं वाचनाचार्य-के पास आयके इरियावही पडिक्कमके खमासमण देके कहे (अमुक उपधान तपे पवेसह) गुरु कहे (पवेसामो, नवकारसी करणा अंग पडिलेहण संदिस्साणा) तब उपधानवाही कहे (तहत्ति) इहां खमा-श्रमण दिये बाद चोवीहार करै, चाहेपाणी पीवे वा अथवा भोजन

करो व्यवस्था नही है, अथ किसी भी कारण करके सांऊकूं खमासण नही दिया होय तो तब पमिक्कमणेके वखतसे पहली पिछली रातकूं भी खमासण देणा काल वखत पमिक्कमणा करणा नवकारसीका पच्चख्काण मालकण पास करणा पीछे सूर्य उदय भये वाद वाचनाचार्य पास आणा. तहां पहले दो उपधानमें (नवकारके उर इरियावहीके) तो प्रारंभमें अवस्य नंदीकी स्थापना करणी उर उत्क्षेप भी इन दोनों उपधानोंका नंदीमेंही करणा. इस उपरांत बाकी उपधानोंमें नंदीका नियम नही हे. तिसके बाद प्रभातसमें पहले उत्क्षेप करणा, तिसके वाद पोसा सामायक लेणा, पीछे दो वांदणा देके पच्चख्काण करणा, फेर मुहपत्तीपूर्वक सुखतप पूछा वांदणा दोय देवै ॥ इति उपधान तप प्रवेश विधि ॥

॥ अथ उपधान तप उत्क्षेप विधिः लिख्यते ॥

॥ पहले इरियावही पमिक्कमके मूहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देवे, खमासण देके उपधानवाही कहे (पहले उपधानमें पंच मंगल महासुयखंध तवं उखिवह) गुरु कहै (उखिवामो) पहले पंच मंगलउपधान महाश्रुतकंध उखेवावणियं नंदीपवेसावणियं काउसग्गं करावेह, गुरु कहै करावेमो. पहले उपधान पंच मंगल महासुयस्कंध उखेवावणियं नंदिपेवसावणियं करेमिकाउसग्गं अन्नछउससिएणं इत्यादि काउसगमें चंदेसुनिम्मलयरा तक चिंतवै, पार के प्रगट लोगस्स कहे, पीछे खमासण देके पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंध उखेवावणियं चेइयाइंवंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो, वासक्षेपंकरावेह, गुरु कहे करेमो. पीछे वासक्षेपपूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदन करै. एसें सर्व उपधानोंमें उत्क्षेप जाणना. इतना विशेष हे पहले दो उपधानोंका उत्क्षेप नंदीमेंही करणा बाकी उपधानोंके विषे सो जब नंदी होय जब तो नंदीमें करे जो नंदी नही थापे तो प्रातसमे प्रवेश

के दिन उत्क्षेप करणा, लेकिन् जो जो उपधान वहे उस२ का नामोच्चारण करणा ॥ इति उत्क्षेप विधिः ॥

॥ अथ वाचना विधिः ॥

॥ सांझकूं पहिले चोविहारका पच्चख्काण कर इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै पहले उपधान पंच मंगल महा श्रुतस्कंधका प्रथम वाचना प्रतिग्रहण निमित्तं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके काउसग्ग सागरवरगंभीरा तक लोगस्स विचारे, पार के प्रगट लोगस्स कहे, दोय खमासमण देके इच्छाकारेणसंदिस्सह पहिले उपधान पंचमंगल० प्रथम वाचना प्रतिग्रहणार्थं चेइयाइ वंदावेह, गुरु कहे वंदावेमो. वासक्षेपकरावेह, करावेमो. पीछै गुरु वासक्षेप करै, पीछै चैत्यवंदन करै, पीछै खमासण देके उपधानवाही दोनुं हाथोंमें मुहपत्ती लेके मुखकूं ढांककर अर्द्धावनतगात्री होयके वार तीन पांचों अध्ययनोंकी वाचना देवे, वाचनामें मिच्छामिडुक्कडं एसें सब जगे वाचनाभिलाप जाणना ॥ १ ॥ इति वाचना विधिः ॥

॥ अथ तपः संपूर्ण क्रिया निक्षेप विधिः ॥

॥ अथ तपस्या पूर्ण होय उस आखरी दिनकों सांझकूं चोविहार करके अथवा प्रभातसमें इरियावही पडिकमके मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देके उपधानतपवाही कहै—इच्छाकारेण तुभ्रे अम्हं अमुक तवंनिक्खिवह, गुरु कहे निक्खिवामो. फेर खमासण देके कहे—इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् अमुक तप निक्खिवणत्थं काउसग्गं करावेह, गुरु कहे करावेमो. इच्छामि० अमुक तप निक्खिवणत्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थू० कहके एक नवकारका काउसग्ग करकैं खमासण देवै, अमुक तप निक्खिवणत्थं चेइयाइं वंदावेह. वंदावेमो गुरु कहै. पीछै संपूर्ण चैत्यवंदन करै ॥ इति निक्षेप विधि ॥

॥ अथ पडिपुन्ना विगय पारण विधि लिख्यते ॥

प्रभातसमें गुरुके पास आयके न्यारा प्रतिक्रमण किया इस

वास्ते मुहपत्ती पडिलेहके वंदन दव देवे (दो वांदणा देवै इसकूं दव वंदन कहते हे) गुरूके साथ पडिक्कमणा कीया होय तो वांदिणा दोयही देवै. पीछै गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे पडुपुसोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीछै अपणी इछानुसार पच्चख्काण करे पीछै गुरूके सामने कहे उपधानमें अवत्ति आसातना करी होय तस्स मिछामिदुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रभातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पडिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासणपूर्वक पडिलेहणा उर अंगपडिलेहणा करे, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके पहिले खमासणसें उहीपडिलेहणसंदिस्साएमि, दूसरी खमासण देके उहीपडिलेहणकरूं, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके गुरूकूं दव वंदन देवे पीछै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहे. इछा० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धंवातवंकरावेह. गुरु कहे उपधासे आंबले निरुवेति एकाशणे, एसा कहे. पीछै दश खमासणसें अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, बइसणं संदिसावेमि ३, बइसणं ठाएमि ४, सझायंसंदिस्साएमि ५, सझायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपडिग्गहूं ८, कट्ठासणोसंदिस्साउं ए, कट्ठासणोपडिग्गहूं १०. पीछै मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रभात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पडिलेहणा उये बाद स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पडिकमके पहले खमासणसें पडिलेहण करूं १, दूसरी खमासणसें पोसहसाला प्रमार्जुं २, एसा कहके मुहपत्ती पडिलेहे, एसें दो खमासण देणेपूर्वक अंग पडिलेहणा उर मुहपत्ती पडिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पडिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पडिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकभी वस्त्र नहीं पडिलेहे. पीछे गुरु पास आयके इरियावही पडिक्कमके पडिलेहणा १, अंगपडिलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीछे सिझायसंदिस्साएमि सिझायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके छव वांदणा देवै. पीछे त्रिविहार अथवा चोविहारका पच्चखाण कर दस खमासण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपडिलेहणसंदिस्साउं १, उहीपडिलेहणाकरुं २, सिझायसंदिस्साउं ३, सिझायकरुं ४, बइसणोसंदिस्साउं ५, वैसणोठाउं ६, कठासणोसंदिस्साउं ७, कठासणोपडिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ९, पांगरणोपडिग्गहुं १०. पीछे मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछे, पीछे सर्वोपगरण पडिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पडिलेहे, तथा जिस दिन भोजन करे उस दिन पूण पहरकी पडिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पडिलेहे, उपवासके दिन नहीं पडिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपडिकमणामें असिझाइका काउसग्ग नही करे तो आवती पक्खी तक सर्व सिद्धांतकी असिझाई होय, इरियावहीका पाठ भी गुणया नही सूझे. इस वास्ते असिझाईमें भी असिझाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिकूं पूछा तब एसाही जबाब दिया योगारंभकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंभमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृदुध्रुवचरक्षिपेः । वारेभोमंशनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंद्या । लोचनादिसुभं२ ॥ १ ॥ इति

वास्ते मुहपत्ती पडिलेहके वंदन दव देवे (दो वांदणा देवे इसकूं दव वंदन कहते हे) गुरूके साथ पडिकमणा कीया होय तो वांदिणा दोयही देवै. पीछे गुरु कहे पवेयणंपवेह एसा कहके कहे प डुपुणोविगयपारणयंकरेहत्ति, पीछे अपणी इछानुसार पच्चख्काण करे पीछै गुरूके सामने कहे उपधानमें अन्नक्ति आसातना करी होय तस्स मिछामिडुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ क्षमाश्रमण विधि लिख्यते ॥

॥ उपधान वहणेवाला प्रन्नातसमें गुरू पास आयके गुरूकी आज्ञासें इरियावही पडिकमके आगमन आलोचकर पोसा सामायक लेके दोय खमासणपूर्वक पडिलेहणा उर अंगपडिलेहणा करै, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके पहिले खमासणासें उहीपडिलेहणासंदिस्साएमि, दूसरी खमासण देके उहीपडिलेहणाकरूं, पीछै मुहपत्ती पडिलेहके गुरुकूं दव वंदन देवे पीछै गुरु कहे—पवेयणं पवेयह. उपधानवाही कहे. इछा० अमुक उपधान निमित्तं निरुद्धंवातवंकरावेह. गुरु कहे उपघासे आंबले निरुद्देति एकाशणे, एसा कहे. पीछै दश खमासणसें अनुक्रमसें कहे—बहुवेलंसंदिस्सावेमि १, बहुवेलंकरेमि २, बइसणं संदिसावेमि ३, बइसणं ठाएमि ४, सझायंसंदिस्साएमि ५, सझायंकरेमि ६, पांगरणोसंदिसाउं ७, पांगरणोपडिग्गहूं ८, कठासणोसंदिस्साउं ९, कठासणोपडिग्गहूं १०. पीछै मुहपत्ती पडिलेहके दो वांदणा देवै. गुरु कहे सुखतप. उपधानवाही कहे, तुमारे प्रसाद ॥ इति प्रन्नात विधि ॥ अब तीसरे पहरकी पडिलेहणा न्नये वाद स्थापनाके आगे मालकणीके हुकमसें इरियावही पडिक्कमके पहले खमासणासें पडिलेहणा करूं १, दूसरी खमासणासें पोसहसाला प्रमार्जु २, एसा कहके मुहपत्ती पडिलेहे, एसें दो खमासण देणेपूर्वक अंग पडिलेहणा उर मुहपत्ती पडिलेहे. इहां अंग शब्द करके

कटिपट्ट (अर्थात् कणदोरा जाणना) एसा गीतार्थ कहते हैं. पीछे वसति प्रमार्जकर तहां जो उसही दिन भोजन कीया होय तब तो पहरे वस्त्र पमिलेहे, बाकीके अवशेष वस्त्र नहीं पमिलेहे, जो उस दिन उपवास होय तब तो एकभी वस्त्र नहीं पमिलेहे. पीछे गुरु पास आयके इरियावही पमिक्कमके पमिलेहणा १, अंगपमिलेहणा २, फेर गुरुके सामने करे. पीछे सिज्झायसंदिस्साएमि सिज्झायंकरेमि आठ नवकार गुणे. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके छव वांदणा देवै. पीछे त्रिविहार अथवा चोविहारका पच्चख्काण कर दस खमासण अनुक्रमसें इस मुजब देवे—उहीपमिलेहणसंदिस्साउं १, उही पमिलेहणकरुं २, सिज्झायसंदिस्साउं ३, सिज्झायकरुं ४, बइसणो संदिस्साउं ५, वैसणोगाउं ६, कठासणोसंदिस्साउं ७, कठासणोपमिग्गहुं ८, पांगरणोसंदिस्साउं ए, पांगरणोपमिग्गहुं १०. पीछे मुहपत्ती पमिलेहके दो वांदणा देकर सुखतप पूछै, पीछै सर्वोपगरण पमिलेहे, मातृका (पालसिया) प्रमुख पमिलेहै, तथा जिस दिन भोजन करै उस दिन पूण पहरकी पमिलेहणकी वखत थाली कटोरादिक सर्व उपभोगके पात्रादिक पमिलेहै, उपवासके दिन नहीं पमिलेहे ॥ इति तीसरे प्रहर क्रिया विधि ॥ तथा पाखीपमिकमणमें असिज्झाइका काउसग्ग नही करे तो आवती पख्की तक सर्व सिद्धांतकी असिज्झाई होय, इरियावहीका पाठ भी गुणया नही सूझै. इस वास्ते असिज्झाईमें भी असिज्झाईका काउसग्ग करणा. युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरजी महाराजनें महोपाध्याय श्रीसागरचंद्रगणिकूं पूछा तब एसाही जबाब दिया योगारंभकी यह विधी है ॥ इहां चउमासीमें योगारंभमें वर्षकी महीनेकी शुद्धिका मुहुर्त्त नहि देखणा, दिन शुद्ध देखणा ॥ मृडधुवचरक्षिपेः । वारेभोमं शनिंविना ॥ आद्याटनंतपोनंद्या । लोचनादिशुभं२ ॥ १ ॥ इति

आचारदिन करे ॥

॥ अथ उपधान तप विवरन गाथा ॥

॥ श्रीमुहपत्तीपन्नासं । अठारसआसणम्मिपम्मिलेहा ॥ दंमे पत्तेसोलस । कप्पेपणवीसगोअभा ॥ १ ॥ पणवीसचोलपट्टे । गुरु कंवलतहयचेवसंथारे ॥ छठासणेअठारस।जपेदंमेअपंचेव॥२॥ इति॥ प्रतिलेखणा विचारः ॥ पणनववासायाम । अठयंकुणइअठमंअंते ॥ नवकारनवहाणं । इत्तियमित्तंइरियाए ॥ १ ॥ सक्कत्थयंमितइएगं । अठमंअंबिलाणवत्तीसं ॥ अरिहंतचेइयत्थए । चनत्थमायामतियगं च ॥ २ ॥ चनवीसत्थएमठम । मेगंपणवीसहुंतिआयामा ॥ नाण त्थयंमिचनत्थं । आयामापंचनवहाणं ॥ ३ ॥ चनवीसंनववासा । एगासीअंबिलाणसव्वंगं ॥ पंचोत्तरंचपोसहसय । मुवहाणेसुजाणेसु ॥ ४ ॥ बारसबारसएगो, पणवीसअढाइपाणपन्नरस ॥ अठयनववासा । सव्वंगंसठचनसठी ॥५॥ नवकारसहियपोरसी । पुरमठअवठएगठु न्नंतेहिं ॥ इगठाणयनिविगई । विलेहिंअठ्ठंविलेणंच ॥ ६ ॥ पणयाला चनवीसं । सोलसचनशहिअठहिकमेणं ॥ चनइठुहियणेगेणय । आयरणाहोइनववासे ॥७॥ इति उपधान तपोगाथाविधि संपूर्ण ॥

॥ अथ रुषिमंडल मंडल पूजा लिख्यते ॥

॥ प्रथम २४ तीर्थंकरोंके नामकी चिठियां लिखके वीच मंडलमें २४ कोठेमें धरे. इति चतुर्विंशति तीर्थंकराः ह्रँ नमः १ क्रों-नमः ववववववववववववववव १, ववववववववववववव २, ववववववववववववव ३, वववववववववववववव ४, ॐ ह्रीं अर्हद्भ्योनमः ॐ ह्रीं सिद्धेभ्योनमः ॐ ह्रीं आचार्येभ्योनमः ॐ ह्रूँ उपाध्यायेभ्योनमः ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्योनमः ॐ ह्रीं ज्ञानेभ्योनमः ॐ ह्रीं दर्शनेभ्योनमः ॐ ह्रः चारित्रेभ्योनमः ॥ इति प्रथम वलय १॥ दूसरी वलयमें दश दिगपालोंके नामकी दस चिठी दश कोठेमें धरे॥इति द्वितिय वलय २॥

तीसरी वलयमें नव ग्रहोंके नामकी नव कोठेमें नव चिठियां ॥ इति तृतिय वलय ॥ इसके उपरांत अकारादिक सोले स्वर उकारादिक तेतीस वर्ण इंद्रभूति आदि इग्यारे गणधरोंके नाम ॐह्रीं युक्त लिखे. पीछे अमतालीश लब्धिपद ॐह्रींअर्हं एसा आदिमें देकर लिखे ॥ अमतालीश लब्धिपदोंके नाम नवपद मंगलपूजामें लिखे हे उस मुजब लिखे. पीछे चोवीस तीर्थंकरोंके पिता ॐनाभयेनमः १ इत्यादि लिखे. पीछे ॐमरुदेवायैनमः इत्यादि चोवीस तीर्थंकरोंके माताका नाम लिखे ॥ पीछे ॐह्रियैनमः १, ॐश्रियैनमः २, ॐधृत्यैनमः ३, ॐलक्ष्म्यैनमः ४, ॐगौर्य्यैनमः ५, ॐचंड्यैनमः ६, ॐसरस्वत्यैनमः ७, ॐजयायैनमः ८, ॐअंबायैनमः ९, ॐविजयायैनमः १०, ॐक्लिन्नायैनमः ११, ॐअजितायैनमः १२, ॐनित्यायैनमः १३, ॐमदद्रवायैनमः १४, ॐकामांगायनमः १५, ॐकामबाणायैनमः १६. ॐसानंदायनमः १७, ॐनंदमालियेनमः १८, ॐमायात्यैनमः १९, ॐमायावित्यैनमः २०, ॐरौद्र्यैनमः २१, ॐकालायैनमः २२, ॐकाल्यैनमः २३, ॐकालप्रियायैनमः २४. एसें श्रीदेव्यादि चोवीसोके २४ कोठेमें नाम लिखे. इसके बाद २४ यक्ष उर २४ यक्षणीका नाम लिखे. १६ विद्यादेवीका नामकी स्थापना लिखे, पीछे नव निधानोके नाम लिखे, फेर चोसठ इंद्रोके नाम लिखे. पहली वीशस्थानक मंगलपूजामें लिखा हे उस मुजब. इस मुजब लिखके अष्ट सिद्धिका नाम लिखे ॐअणिमसिद्धयेनमः १, ॐगरिमसिद्ध्ये नमः २, ॐलघिमसिद्धियैनमः ३, ॐप्राकाम्यसिद्धयेनमः ४, ॐमहिमसिद्धियैनमः ५, ॐईसित्वसिद्ध्येनमः ६, ॐविसित्वसिद्ध्येनमः ७, ॐप्राप्तसिद्धयैनमः ८, इति अष्ट सिद्धिः नामानि ॥ ॐश्रीधरणेंद्ररक्षतु: १, श्रीपद्मावतीरक्षतु २, श्रीगौतमस्वामिनेनमः ३, श्रीवैरोट्यारक्षतु ४. इति श्रीऋषिमंगल पूजन विधि संपूर्ण. इण पदोंमें

द्रव्य नवपदमंम्मल वीस स्थानक मंम्मलपूजा मुजब चढावै ॥

॥ अथ शांतिक पूजाविधि सर्व उपद्रव शांत्यर्थ लिख्यते ॥

॥ शुन्न दिन शुन्न मुहुर्त्तमें जिनमंदिरमें समवसरण पर जिनप्रतिमा स्थापन करावें, आगे पंचपरमेष्ठीपट्ट स्थापन करै तथा न्नगवन्नाके दहिणे पासे दश दिग्पालपट्ट जर वांये पासे नव ग्रह का पट्ट स्थापन करै. पीछै एक वम्मा एक गेटा मट्टीआदिकका हंम्मा ऊपर खम्मी सपेदमट्टी पोतके चार२ केसर कुंकूका साथिया करै. पीछै ऊंची नीची दोय टिवची काठकी धरावै, नीची टिवची पर मोटा हंम्मा धरै, ऊंची पर गेटा हंम्मा धरै, गेटे हंम्मेके तले एक छि द्र करै, दोनुं मटकाके अंदर साथिया करै, वम्मे मटकेकी टिवची नीचे चावलका साथिया करै, ऊपर नालेर रुपिया थापनाका धरै, दोनुं मटका ऊपर मोलीसूत्र वटके पंचरंगी खजली एकेक खूणे २१ इक्कीस२ पोकर च्यारों कोणोंमें ८४ खजली पोके तणी बां धे, नालेरके आकार मोलीसूत्रको दम्मो नीचला मोटा हंम्मामें लटकतो रखके ऊपरकी मोली गेटा हंम्माके छिद्रमें पोकर ऊपर जो चौं खूणी तणी वांधीहै जिसके बीचमें गांठ देवे, पीछे जो संघ समुदायकी तरफसें शांतिक पूजा होय तो मंदिरजीका कलश लेवै जर एक जणेकी तरफसें होय तो शांति कराणेवालेके घरसे- ती सधवस्त्री जिसका माता पिता सासू सासरा चारों मावित्र जीता होय, जिस स्त्रीकुं अछा वस्त्र आन्नूषण पहिरायके कलसके अंदर कुंकूमकेसरका साथिया करके चावल सुपारी पंचरत्न की पोटली धरके मुख पर नारेल ढकणे माफक खम्मा धरके ऊपर लाल कसुंमल वस्त्र मोलीसें बांधे, ऊपर कलशके च्यारों तर फ च्यार साथिया कर स्त्रीके मस्तक पर रखके गीत गानपूर्वक वा जित्रादि अनेक उत्सव समेत जिनमंदिरमें लावे, समवसरणके स-

मुख चावलोंका साथिया करके ऊपर कलश स्थापन करै, पीछै पाच दश जणा द्रव्ये भर नावे अपणा अंग शुद्ध करै, गुरुके पास से केसर मंगायके तिलक करै. इत्यादि सर्व विधी इहांसें आगे नव ग्रह दश दिग्पालका आह्वान अगारे स्तुतिसे देववंदन वगेरे करे सो सब विधि पूर्वं लिखी हे, सो सब करके बलबाकुल सब देके पीछै सुंदर अंगोपांगवाले सुशील स्त्रीपुत्रादि संयुक्त विवेकगुणधारक आठ स्नात्रिया मुखकोश बांधके तीन२ नवकार गुणे, जिसमें दो स्नात्रिया दो नालीवाला कलश हाथमें लेके मटकाके दोनुं तरफ खमा रहै, एक स्नात्रिया धूप खेवता रहै, १ स्नात्रिया फूल चंदन वासक्षेप चढाता रहै, दो स्नात्रिया लोटोंमें जल भरके दोनुं तरफ धारा देणेवाले कलशोंको पूरता रहै, दो जणे दोनुं तरफ चमर ढुलता रहै. प्रथम गुरु आदि सकल संघ सात२ नवकार गुणे, स्नात्रिया एकेक नवकार गुणके एकेक धारा देवै, एसैं सात धारा दे चूके तव गुरु मधुरस्वरें स्पष्ट अक्षरोंसें नमोर्हत्सिद्धाचा० कहके अजितशांति प्रमुख साते स्मरण गुणें. पीछैं भक्तामर वमीशांति छोटीशांति गुणें, तथा सकल संघमें जिसको साते स्मरण वृद्धशांती आती होय तब तो गुरुके संग अपणे मनमें गुणता रहै, भर नहि आवे तो संघ सर्व नवकारमंत्र गुणता रहै, जहां तक साते स्मरण शांति गुणे तहां तक अखंम ऊपरले छोटे कलशोंसे धारा देता रहै, छींक कोई नही करै, आपसमें दुसरी संसारी विकथा न करे, साते स्मरणादि सर्व गुणे पीछै तीन नवकार गुणके कलस धरे, पीछे नीचेके हंरूमेसे जिनप्रतिमाकूं निकालके अच्छी तरे अंगलूहणा करके केशर पुष्पादिकसें पूजा करै, भगवानकी अच्छी तरे अंगी रचना करै, नानाप्रकारका नैवद्य फल चढाके आरती ऊतारे, मंगलदीपक करै. पीछे शांतिजल सर्व संघ लगावे,

अपणे घरोंमें २ गटे, शांतिपूजाकी मोली गुरूके पाससे लेके राखमी बांधे. इससें संपूर्ण संघमें नगरमें देशमें मरी आदिक सर्व रोग दोष दूर होके शांतिक होय, अनेक प्रकारसें ऋद्धि वृद्धि सुख सौभाग्यकी प्राप्ति होय. पीछे आधा बलबाकुल परातमें रक्खा था सो लेके गुरु पूर्वोक्त स्नात्रियोंसें दश दिग्पाल विसर्जन विधि पूर्वे लिखी है उस मंत्रोंसें विसर्जन करे॥ इति शांतिक पूजा विधि सं०

॥ अथ पंच तीर्थ आरती लिख्यते ॥

॥ पहली आरती प्रथम जिणंदा, सत्रुंजय मंमण ऋषभ जिणंदा ॥ जय२ आरती आदि जिनंदकी ॥ डुसरी आरती मरुदेवीनंदा, जुगला धरम निवार करंदा ॥ ज० १ ॥ तीसरी आरती त्रिभुवन मोहे, रत्नसिंघासण म्हारा प्रभुजीने सोहे ॥ ज० ॥ चोथी आरती नित्य नई पूजा, देव ऋषभदेव अवर न दूजा ॥ ज० २ ॥ पंचमी आरती प्रभुजीने भावे, प्रभुजीना गुण सेवक इम गावे ॥ ॥ ज० ३ ॥ आरति कीजे प्रभु शांतिजिनंदकी, मृग लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ जय२ आरति शांति तुमारी ॥ विश्वशेन अचिराजीको नंदा, शांतिजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ ज० ४ ॥ आरति कीजै प्रभु नेमजिनंदकी, शंख लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० समुद्रविजय शिवादेवीकों नंदा, नेमिजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ५ ॥ आरति कीजे प्रभु पाशजिणंदकी, फणिंद लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ अश्वशेन वामाजीके नंदा, पाशजिनंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ६ ॥ आरति कीजे महावीर जिनंदकी, सिंह लंछनकी में जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ सिद्धारथ त्रिसलाकों नंदा, वीरजिणंद मुख पूनमचंदा॥ आ० ७॥ आरति कीजे चोवीश जिनंदकी, चोवीस जिणंदकीमें जाउं बलिहारी ॥ आ० ॥ चरण कमल नित सेवित इंदा, चोवीश जिणंद मुख पूनमचंदा ॥ आ० ८॥

करजोमी सेवक इम बोले, नहि कोइ माहरा प्रनुजीने तोले ॥ इति॥

॥ अथ चक्रेश्वरीदेवी आरती लिख्यते ॥

॥ जय२ आरती देवी तुमारी, नित्य प्रणमुं हुं तुम चरणारी ॥ ज० १ ॥ श्रीसिद्धाचल गिरि रखवाली, नाम चक्केसरी जग सौ-ख्याली ॥ ज० २ ॥ सुविहित गछनी शासनदेवी, सकल संघने सुख करेवी ॥ ज० ३ ॥ निलवट टीलमी रत्न विराजै, काने कुंम्ल दोय रवि शसि बाजे ॥ ज० ४ ॥ बांहे बाजूबंध बोरखा सोहे, नीलवर्ण सहु जनमन मोहे ॥ ज० ५ ॥ सोवनमय नित्य चूमी खलके, पाये घूघरमा घमघमघमके ॥ ज० ६ ॥ वाहन गरुम चढ्या बहु प्रेमे, तुऊ गुण पार न पामु केमे ॥ ज० ७ ॥ चूनमी जमामां देह अति दीपे, नवसरा हारे जग सहू जीपे ॥ ज० ८ ॥ नित२ मानी आरती ऊतारे, रोग सोग नय दूर निवारे ॥ ज० ९ ॥ तसु घर पूत्र पुत्रादिक बाजै, मन वंछित सुख संपद राजे ॥ ज० १०॥ देवचंद मुनि आरति गावे, जय२ मंगल नित्य वधावै॥ज० ११॥इति।

॥ अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ॥

॥ राग सोरठी ॥ अरे माहरा प्राणीया, चतुरनर, चोपम इण विध खेल रे ॥ अशुन्न करम मल ऊरकै च० ॥ जाजम कर वैराग रे, वमीय त्रिगायत वैस जो च० ॥ जहां नहीं कुमतिको लाग रे॥ अरे० १ ॥ दान शील तप न्नावना च०, चोपम एह पसार रे ॥ आठ दाव इक बोलमें च०, आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं न्नला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, ऊजल लेश्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरसण ज्ञान चारित्र न्नला च०, तीनुंइ गुपती विचार रे ॥ नव तत्त्व सात हिरदे धरो च०, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ४ ॥ पम्या अगारे रहण दे च०, पोवारा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम दे च०, हित

कर हियै विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया उकसी पसी च०, हिरदे दया विचार रे ॥ पुन्य उदय पंजसी पसी च०, पंच महाव्रत धार रे ॥ अ० ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्या च०, सातुंइ विसन निवार रे ॥ जे दुरगति दायक सही च०, बाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, दुख सह्या जरपूर रे ॥ करम कटै सुख ऊपजै च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ०८॥इति

॥ अथ सेत्रुंज खेलन विचार स्तवन लिख्यते ॥

॥ सेत्रुंज खेल खिलारी, सब समझ देख सेत्रुंजकी घात, लख दोनं दल अपणे परायैकी जात ॥ कान विध कर मोह बादस्याकों मात, जब जाणु तोय चतुर खेल खिलार ॥ हे से० १ ॥ आठुं कर्म पियादे आगे झुकतेही आवै, काम क्रोध गज चलत थंभ्त नहीं थंभे ॥ लोभ ऊंठ चारुं खूटकी मरोम चल ध्यावै, मान माया के तुरंग चाल चपल दिखावै ॥ मिथ्यामत सो वजीर वीर वाके ढंग गाम्हो, वाके मारवैकों दल अपणो संभार ॥ हे से० २ ॥ तेरे ग्यान सो वजीर वीर तेरे ढंग गाम्हो, आगों अंग समकित के पियादे हलकारो ॥ त्याग सांढिया सवार पर सांढियाको मारो, सत्य वचन तुरंगसुं तुरंग निवारो ॥ क्षमा शील दोय फील राखो दलकै अगाम्ही, पर दल कर मारो छिनमें संहार ॥ हे से० ३॥ जप तप सत व्रत याके घेरे चिहुं उर, जब वाके चलनेकी काइ रहै नही ठोर ॥ जब तेरी होगी जीत दूजो हारेगो खिलारी, जब सुजशको तेरै शिर बंधेगो मोम्ह, गाम्हे इंद्र धरणेंद्र तेरे ढोलेंगे चवर, तेरो जजन जजेगो गुण अगाह ॥ हे से० ४ ॥ इति सेत्रुंज खेलन ज्ञान संपूर्ण ॥

॥ अथ प्राचीन राग रागणी स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग कल्याण ॥ टक निजर महरकी करणा हो, ट० ॥ मैं

हुं अधम पापकी मूरत, मेरा दोस न धरणा हो ॥ टु० १ ॥ अ-ष्ट जवनको प्रीत हमारी, नवमे जव निरवाहना हो ॥ टु० ॥२ ॥ रूपचंद जगतनकी वीनती, आवागमन निवारणा हो ॥ टु० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ लोक चवदके पार किनारे, पूरण ब्रह्म-का वासा हे ॥ लो० ॥ पैंतालीस लाख जोजनकी शिला, फिटक रतन उजासा हे ॥ लो० ॥ निरमल जोत विराजे साहिब, ग्यान ध्यान परकासा हे ॥ लो० १ पंच वरणकी धजा फरूके, क्या कहूं अजब तमासा है ॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, उरनकी क्या आसा हे ॥ लो० २ ॥ चोसठ इंद्र ख-ड़े वाके द्वारे, खिजमत वंदा खासा हे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरणकमलका दासा हे ॥ लो० ३॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ सखि सब बनठन, सखी० ठाढे नाभि नृपतजूके द्वारे आगे ॥ स० ॥ रिषजकुमरको जनम जयो हे, मंगल मुख उच्चारे री ॥ स० १ ॥ ताल मृदंग रबाब मधुरी धुनि, वीणा वाजे सुर तारे ॥ नाचत हाव जाव करी राजत, तान लेत सुर तारे री ॥ स० २॥ सुरवनिता मिल गाई वधाई, मोतियन चोक सवारे ॥ जगबंधव जगपतिकुं निरखत, आनंद हर्ख अपारे री ॥ स० ३ ॥ इति पदम् ॥ पुनः हो जिन तेंड़े दरस पर वारीया, हो जि० ॥ तुम विन जव२में जटकंदा, अब मैंड़ी उर निहारिया ॥ हो० १ ॥ अष्ट करम मैंड़े लार लगे है, उनकूं वेग विमारियां ॥ चरण सरण गहे आणा तुसादे, रूपचंद गुणगारियां ॥ हो० २ ॥ इति पदम् ॥ पुनः ॥ म्हारा रिषज जिनंदने गजरो चढाऊं रे, म्हा० ॥ चंवेली चंपा गुलाव लाउं रे ॥ जाइ जूई मोगरो मालती, विध गुंथाऊं रे ॥ म्हा० १ ॥ अगर चंदन अक्षत नैवेद्य लाऊं रे ॥ धूप दीप फल सुगंध पुण्य पाउं रे ॥ म्हा० २ ॥ इष्ट दरव आदिनाथ जाव जावुं रे ॥

ऋषज्ञदास पूरो आस गुण गाउं रे ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥
पुनः ॥ मन लीनो हमारो जिनचरणा रे, पोत जलधि ज्ञवतरणा रे ॥ म० ॥ आदि पुरुष जगतारण निसुणयो, कर्म विकट धन हरणा रे ॥ म० १ ॥ नाज्नि तात मरुदेवी माता, नंद ऋषज्ञ सुखकरणा रे ॥ म० २ ॥ सिद्धपादिक प्रगटन जग तत्पर, कुमतांगन दल टरनां रे ॥ म० ३ ॥ सारंग दृग शशि वदन मनोहर, अंग कनक सम वरणा रे ॥ म० ४ ॥ श्रीजिनहंस सूरीश्वर जंपै, जिन समरण दिल धरणा रे ॥ म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग झिंझोटी ॥ २ ॥ ॥ अजित अजित जिन ध्यान, म्हारे मन रे अ० ॥ जितशत्रु विजयाको नंदन रे, वंदन त्रय युत ज्ञान ॥ म्हारे० १ ॥ त्रिहुं जगतारन टारन अघको रे, वारुं तन धन ज्यान ॥ म्हा० अ० २ ॥ जिन वचनामृत पान करीजै रे, केवल निरमल ग्यान ॥ म्हा० अ० ३ ॥ श्रीजिनहंस सूरि प्रज्ञु पाए रे, निवृत्ति पुरंदर म्यान ॥ म्हा० अ० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यह अरजी मोरी सहियां, मोहे तारलो गहवहिया ॥ य० ॥ में नांहि जाणूं सहियां, य० ॥ मैं तारण तरण सुणयो छै, मैं यातें शरणो गहियां, इनतें ज्रवार लहियां ॥ य० मो० १ ॥ इन करमनके वश हुयकै, मैं ज्रटक्यो चिहुं गति महियां ॥ य० मो० २ ॥ हित करकैं दाश निहारे, करजोमि पमि हुं पइयां, शिव देति क्युं न सहियां ॥ य० मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ रागकाफी ॥ मुजरो मानी लीजै, हो गोमीराय अरज सुणीने, म्हारो मु० ॥ किरपा काज करी सेवगने, दिलज्ञर दरशण दीजै ॥ हो गो० १ ॥ गुणनिध गवमी दरसण दीजै, सकल करम दल छीजै ॥ हो गो० २ ॥ रूपविज्ञुधको मोहन पज्ञणे, प्रहछठी प्रणमीजे ॥ हो गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तु मेंमा प्रज्ञु इण दिल

वसणावे, तेंभा तो गुण सुर गावंदा हो ॥ प्र० १ ॥ संतके सागर गुणके आगर, जोही ध्यावे सो पावंदा हो ॥ प्र० २ ॥ तुमहो त त्वज्ञानके दाता, भविजन ताप मिटावंदा हो ॥ प्र० ३ ॥ कहै जिनचंद एसे प्रभु मेरे, चरणकमल चित्त ध्यावंदा हो ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हम जाणतहैं तुम तारोगे, हम० ॥ नाभिराय मरुदेवीकों नंदन, मेरी उर निहारोगे ॥ हम० १ ॥ आदि जिनेसर अंतरजामी, स्वामी कबु न विचारोगे ॥ हम० २ ॥ जगजीवन जगतारक तुमहो, एही विरुद संभारोगे ॥ हम० ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिंदके साहिब, भवजल पार उतारोगे ॥ ह० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ पंथीभा पंथ चलेगो, प्रभु भजले दिन चार ॥ पं० ॥ झूठी काया झूठी माया, झूठो सब परवार ॥ पं० १ ॥ बालपणेमें खेल गमायो, जोवन मायाजाल ॥ पं० २ ॥ वूढापण आयो धरम न पायो, पीछै करत पुकार ॥ पं० ३ ॥ क्या ले आयो क्या ले जायगो, पाप पुण्य दोय लार ॥ पं० ४ ॥ दया मया कर पासएवंती, अब तेरोही आधार ॥ पं० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ तेवीशमा जिनराज, जोभे थांरे कोण जुभेगो ॥ ते० ॥ अश्वशेन तात वामादेवी माता, तूं तारण संसार ॥ जो० १ ॥ कमठ विभारण नागकूं तारण, संभलायो नवकार ॥ जो० २ ॥ विबुद्ध कुशल करजोभीने वीनवै, भव२ देज्यो दीदार ॥ जो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खंभायची ॥ कैसें काज सरै, महाराजा विन, केसें० ॥ भ्रमत२ लख चौरासीमें, सुख दुःखसें जीया रुलत फिरै ॥ म० केसें० १ ॥ ए रिपु कर्म वैरी भटकावत, जाहीसें मेरो प्राण भरै ॥ म० केसें० २ ॥ जो जीव सुखकी वांछा चाहै, प्रभु सेव्यांसें काज सरै ॥ म० केसें० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः राजरी वधाई बाजै छै, महा० ॥ सरणाई सिरै नोवत वाजै, घन ज्यूं अंबर गाजै

है ॥ म्हा० १ ॥ इंद्राणी मिल मंगल गावै, मोतियन चोक पुरावै है ॥ म्हा० २ ॥ सेवग प्रभुजीसें अरज करै है, चरणांरी सेवा प्यारी लागे है ॥ म्हा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अडाणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे, मोति० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, कुंडल लागत वाला ॥ ॥ जि० १ ॥ भजोरी भजो तुम लोक सहरके, नहिय भजै सो काला, माणक पर प्रभु महिर करो तो, अपणा विरुद संभाला ॥ जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्यूं जीवन छुराय, रहे० ॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारी हा हा खाय ॥ र० १ ॥ अविरत घूंघट पट उघारी, अनुभव मुख निरखाय ॥ र० २ ॥ भव परणित परिपाक इते पर, आई धाई माय ॥ र० ३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकूं, जीवन कंठ लगाय ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः हे माय वांकडी करमगति जाय ना कही, चिंतत और वनत कछु औरे, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय वां० १ ॥ सकल साज सजियौं व्याहनकूं, राजुलकों तव चाह भई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरझाय रही ॥ हे माय वां० २ ॥ सीता सती योंही पतिभगता, जानत सकल मही ॥ झूठो दोस दियो जब रुघपति, पावक कुंडमें धीज दही ॥ हे माय वां० ३ ॥ क्षायक सुद्दष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक वंध गई ॥ सुध बुध विसर गई नरपतकी, आपणकी अपघात लही ॥ हे० वां० ४ ॥ छिनमें रंक छिनकमें राजा, अकल कथा किम जाण कही ॥ उलट पलट बाजी नटसीकी, नवल सरवमें व्याप रही ॥ हे० वां० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हांनु प्यारो लागे है जी थांरो उपदेस, म्हांनु० ॥ ग्यान जगावण उगुण

मेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर दुखं दूर करणकूं, जगत वढावत हेत ॥ चंद फते नित एही चाहै, समकित सुखको खेत ॥ म्हां० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मेरो पिया पर संग रमत हे, मैं केसे मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत सखी पइयां परत हूं, कोइ पिया मिलावे री ॥ विरहानल अति दुसह पिया विन, कोन वुझावे री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अनुभव आयो, सव परठ सुणावे री ॥ ग्यानसार प्यारी दोनं हिलमिल, सोरठ गावे री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठमलार ॥ वरषित वचन झरी, हो सुगुरु मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतें झमटी, ग्यानघटा गहरी ॥ हो सुगु० १ ॥ स्याद्वादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति डरी ॥ हो सुगु० ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सुगु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुभाव धरी ॥ सुभरभरयो सुमतारससागर, समकित भूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥ प्रगटे पुन्य अंकुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पपइया भविजन, बोलत भक्तिभरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत संजम खेती, भविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी, सहज सभाव फली ॥ हो सुगु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या घरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयानिध भेटे, हरख भयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध भव२ मांहे मिलियो, धर्मप्रसाद अभंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अव घरर घरर घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रभु गिरनार सिधाए, देखणकूं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दादुर मोर सोर सुण श्रवणों, नयन भए घन जरसै ॥ चि० २ ॥ ढूंढत ढुंढ सकल वन२में, कबहुं पिया ना दरसै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेगें सजनी, दिवस घरी जिन फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ मोरवा पपइया बोले पीउ२ घनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि अंधियारी कारी विजुरी झरावै, दूजी विरह व्याकुल भई तनमें ॥ मो० १॥ झिरमिर वरषित गरजत दादुर, सोर करत रहे नदियां रनमें ॥ मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहे, राजुल भई विरागण छिनमें ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥

॥राग विहाग॥ समझ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो ॥स०॥ पल२ आयु घटत छिन२ही, गलत जात जेसें उरो ॥स० १॥ या तनको कहो कोन भरोसो, छिन मासो छिन तोरो ॥ जो कछु करे सो अवही करलै, पुनपरहो जिम झोरो ॥ स० २ ॥ तन धन आदि सकल सामग्री, गरज२ घनघोरो ॥ रूपचंद भ्रसनाको बांध्यो, जानबूझ भयो भोरो ॥ स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मान गुमान, योवन धन ठगहे ॥ म०॥ वेलूकी भीत उसको मोती, कोइ घमी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदियां गहरी नाव पुराणी, तारणहारा जिनहे ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, आखर जंगल घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटमी, घर आवोनी ढोला ॥ नि० ॥ मुझ सरिखा तुझ लाख है, मेरे तूंही अमोला ॥ नि० १ ॥ जोंहरी मोल करै लालनका, मेरा लाल अमोला ॥ जिसके पटंतर को नही, उसका क्या मोला नि० २ ॥ कोन सुणे किसपें कहूं, किसपें मांडू खोला ॥ तेरे मुख दीठे टलै, मेरे मनका झोला ॥ नि० ३ ॥ मित्त विवेक कहे हितकर तुं, सुमतासु न बो

ला ॥ आणंदघन प्रभु आवसी, सेजमी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम्॥

॥ राग जैवंती ॥ आज तो हमारे भाग, वीरप्रभु आए हें ॥ आ० ॥ चंदना खमी डुवार, चितसें करै विचार ॥ देखत ही हार हीया, हरख भराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली, अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥ आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म फेरो॥ सुकृत बहु तेरो, भगवान दिल भाए हे ॥ आ० ३॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥आ० ४॥ इति॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥ आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ०, १ ॥ आप न आवै वारी न लिख भेजै, प्रीत करणकूं उतावरो रे॥ आ० २॥ आनंदघन पिया निज घर आवै, मिट गयो मोह संतावरो रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ ऋषभ विहारी, थांरी तो छवि न्यारी हो ॥ ऋ०॥ प्रथम तीर्थंकर प्रथम जिनेसर, प्रथम यती व्रतधारी हो ॥ ऋ० १ ॥ धनुष पांचसैं मान मनोहर, काया कंचन वानी हो ॥ ऋ० २ ॥ नाभिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी हो० ॥ऋ० ३॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु छो पर उपगारी हो॥ ऋ० ४॥ केवल पाय प्रभु मुगति सिधाए, आवागमन निवारी हो ॥ ऋ० ५ ॥ आनंदघन प्रभु एती वीनती, तुम पर जाउं बलि हारी हो ॥ ऋ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार न टरै रे, सु० ॥ चित कछु उर विचारत है नर, उरही उर बने रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचे, चिमिया केसें बचे रे ॥ सु० २॥ होणहार वश मस्यो हे पारधी, सर सींचाण मरे रे॥ सु० ३ ॥ होत पदारथ भावी भइया, क्यूं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥उदय करम गत देख जगतकी, जिनवर क्युं न जजै रे ॥ सु० ५ इति पदं ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच आप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक नृप चेलणाराणी, भक्ति करत हे आज ॥ स० २॥ निज२ द्रव्य लिये पुर के जन, उमंग२ शुभ साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दीन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ भव २में तोकूं सुखदाई, आनंद वंछित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर दुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, भेटै सहु भवि चित सुख पाय ॥ च० २॥ गंगा दरस उमाहो लागो, कब फरसुं वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखूं रे ह० ॥ जाके प्रभाव मेरा, अज्ञानका अंधेरा, भागा भया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विभाव त्यागै, अध्यातमरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, उपभे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनहर्ष सूरि भाखै, दिल मांझ याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग ठुमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी श्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं क्षार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

अब केसें विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कहै धन२ राजुल, प्रञ्जु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थारे मुखमारी हो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ था० ॥ शीस मुगट सोहै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ था० १ ॥ मोहनगारी सूरत थांरी, देख्या म्हारो मनमो लोन्नाय ॥ थां० २ ॥ ञरऊत नेण न्नए दोऊं निरखत, थांसु प्रञ्जु प्रीतमी लगाय ॥ था० ३ ॥ न्नव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्हारे दिलमेमें चाव ॥ थां० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रञ्जु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय ॥ थां० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कछु करनी करजा ॥ ए० ॥ ञत्तम नरन्नव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सुखदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ ऊठ पर तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥ तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुहाई रे, न्नवजल निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रञ्जुजी मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥ ए रिपु कर्म पम्यो मुऊ केमे, किस विध वूटै पानो ॥ कुमति कदाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं न्नववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो साम संन्नारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ न्नक्ति सदाई शिवसुख दाता, संन्नवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौन्नाग्य सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागन्नैरवी ॥ वीर प्रञ्जु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखी।

मेहरवान नई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवै बोधा पगवै, तेरी सूरत कुरवान नई रे ॥ वी० १ ॥ साशणनायक एही अरज है, दीजै दरस वको वैर नई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विन्नास ॥ नोर नयो अब जाग बावरे, नो० ॥ कोन पुन्य तें नरन्नव पायो, क्यूं सूतो अब पाय दाव रे ॥ नो० १ ॥ धन वनिता सुत तात नातकों, मोह मगन ए विकल नाव रे ॥ नो० २ ॥ कोइ न तेरो तूं नही का को, इह संजोग अनाद सुन्नाव रे ॥ नो० ३॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रन्नाव रे ॥ नो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यूं मूबै अब पाय नाव रे ॥ नो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा०॥ उदयो उदयाचल रविमंमल, पुन्यकाल क्यूं सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंम वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी हग उघराणी ॥ जा० २ ॥ चेतन धर्म अनादि तुमारो, जम संगतसें सुध विसराणी ॥ जा० ३ ॥ तुम कुल दोय अवस्था पइयें, नींद सुपन ए जम नीसाणी ॥ जा० ४ आतम रूप संन्नार आपणो, कव तुमरे घर कुमति घराणी ॥ जा० ५ ॥ सुध बुध नूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी ॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जधानी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग वेलाउल ॥ सांवरो सलूणो सखी मेरे मन नावनो, रूप देखाय मेरो मन ललचावणो ॥ सां० ॥ तोरणसें रथ फेर चले पिया, ना जानुं ए काहेको रुसावनो ॥ सां० १॥ नव नव नेह निन्नाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल याकी प्रीत कपटकी, नयो पीया मुगतसखीको पावनो ॥ सां० २इति

राग ललित ॥ आज ऋषभ घर आवै, देखो माई आ० ॥ रूप मनोहर जगदानंदन, सबहीके मन भावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-कुमर दानेसर, इक्षुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल, साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कलप फल्यो री, हमारे माई अं० ॥ रुद्धि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशांतिनाथ मिल्यो री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे बरास मिल्यो री ॥ पूजत श्रीशांतिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-ल्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख कृपा कर साहिब, ज्युं पारे वो पल्यो री ॥ समयसुंदर कहै तुमारी कृपासें, ढुंरहिसुं सुहलो री ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगोने मोरा आतमराम, जिनमुख जोवा जइये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण छै अति दोहलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवभव एहवो, जुभवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ च्यार दिवशनो चटको म-टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जातां वार न लागे, कायाघ-ट छै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें भरियो है जिनवर, पूरव पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणे मत गमजो रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित रमज्यो रे ॥ ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुकृत कमाई रे ॥ लाभकहै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति

राग केदारो ॥ भज मन नाभिनंदन देव, भ० ॥ ध्यान मुनिजन अलग धारे, सुरनर करत है सेव ॥ भ० १ ॥ चक्री भू-

पति वंदे सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष मणिधर सेव ॥ ज० २ ॥ असरण शरण हे विरुद जाको, भक्ति वच्छल भेव ॥ राजसिंह प्रभु रुषभ सिर पर, नाथ हे नितमेव ॥ भ० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आवो नेम रहजावो सदन, हमकों न सं तावो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सझके सजन, पशुवनको सुन देख रुदन ॥ गिरनारी चले निज गमी वतन, तकसीर वतावो रे ॥ आ० १ ॥ पूनम जेसे चंदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥ मेरी नीकी लगी नव भवकी लगन, मत छेह दिखावो रे ॥ आ० २ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके ब्रमन ॥ सब जूठे परमेगे कोलवचन, रथ फेरी न जावो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर कहे प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेनं दोनुं नेम जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वतावो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः कीरतीबाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥ की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशि वंदन ॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अंब कदंब मालती निरमल, चंपक वेल सघन तरु परिमल ॥ वीच भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सांवली सूरत अधिक विराजै, वासुपूज्यकी महिमा गाजे ॥ प्रभु अतिशय तन मकरंद जरै, पदकज वलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुभग दरसकूं आवै, निरखश प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जमी मन प्रेम धरै, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम भये अगीवान, हे ना निकला मुखसें कभी भगवान ॥ यार नही देखा समोसरणा, किया भवदधिमें ऊदर भरणा ॥ दोनु जो लेते प्रभु सरणा, दूर

दुख होते जनम मरणा ॥ बैठ भववरमें लगाया नही ध्यान, राज शिवपुरमें हुवा अपमान, फरो अब देख काल भगवान, ना नि० १ ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठुं मद तुमसें दूर रेते ॥ यार जो तिनके चरण सेते, शषी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो सूर, वरे वो भव भव सुख भरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखगां जिन नूर हुवे दुखदूर, करो भवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रभु तेरी सूरतिया लागे भली, नेणां हमारी प्रभु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुभव रंग मगन तेरी अखियां, खुल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम प्रभु आनन, मुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम अगोचर तेरी महिमा, आप विसंभर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥ मुझकूं आश दीनपति तेरी, उर न चाहूं देव छली ॥ ने० प्र० ४ ॥ लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर चली ॥ कर सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र० ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जम्मी रुद्दसार फली ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलु ॥ आयो सही अब जाउं कहां, शरणागतकों शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिल्यो नही कोई, ढूंढ फिरयो धरती सब हेरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रभुजी अब, आन भई तुमसें भट भेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करे वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घम्मी२ पल२ छिन२ निशदिन, प्रभुकों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रभु समरण सब पाप कटत है, अशुभ करम सब हरले रे ॥ घ० १ ॥ मन वच काय लगी चरणन नित ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दोलतराम प्रभु गुण गावै, मन

वंछित फल वरलै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ सुमतानैं क्या कर मारा रे, जिन मोह्या स्याम हमारा ॥ जि० सु०॥ शखी दोस नही सुमतामें हे, आली अपना नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण नई हे हमारी, वस किया प्राण पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम, छोम चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० २ ॥ जादव जात कठिन निर मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम तो नेम तजे हो हमकूं, मैं न तजू पद थांरा रे ॥ जि० सु० ४ ॥ लगन हमारी तोरी नही तूटे, कर बांधी इक तारा रे ॥ जि० सु० ५॥ सब जग जो तुमसे हो जइयै, तो क्यूं चलत संसारा रे ॥ जि० सु० ६ ॥ रूढसार राजुल प्रभुजीसैं, पोहची मुगति मझारा रे ॥ जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो भले विराजो जी, सांवलिया महाराज शिखर पर भले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, श्रावक जाण न पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बांह पकर ले जावै ॥ तु० १ ॥ ऊंचा नीचा परवत सोहे, तलै भीलनका वासा ॥ पेंम२ पर सींह दरूकै, जिहां लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंक२ पर धजा विराजै, झालररे झणकारै ॥ झालररे झणकार सेती, वाजा अविचल वाजै ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण रचावै ॥ अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वंछित फल पावै ॥ तु० ४ ॥ सुरनर मुनिवर वंदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चंद खुसाल चरणको सेवक, हरख२ गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर निवारो रे ॥ भवियां शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, मैं देखा सहु

जग जोई रे ॥ भ० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहां मुक्तिपुरी सुख पाया रे ॥ भ० ॥ कोमाकोमी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद लीधा रे ॥ भ० २॥ वीश चरण जिन सोहै, भविजन चात्रक मन मोहे रे ॥ भ० ॥ भुवमठ मंदिर गाजै, जिहां पाशप्रभु महाराजै रे ॥ भ० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो रे ॥ भ० ॥ तीर्थ आसातन टालो, भविजन ब्रह्मरी व्रत पालो रे॥ भ० ४ ॥ नरभव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ भ० सय उगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी दीसे रे ॥ भ० ५ ॥ दूगम गोत्र सुहावै, भवि चंदगोविंद गुण गावे रे ॥ भ० ॥ जात्रा करी मन रंगे, चंद शिखर भणै अति चंगे रे ॥ भ० ६ इति पदं॥

पुनः ॥ (सांवरियां जेसैं वणे जेसे तारो, सां० ॥ इस चालमैं) सांवरियामैं दीठो दरस तिहारो, मेरी भव भय वाधा टारो॥ सां० ॥ अश्वशेननंदन जगवंदन, जगबंधव जग प्यारो॥ नीलवरण द्युति श्री जिनवरकी, वामा उदर अवतारो ॥सां० १॥ कमठ विमारण शिव सुख कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी, निर्यामक सत्थवारो ॥ सां० २॥ शिखर गिरी मंमण जिनवरजी, अदभुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह अरजी धारो ॥ सां० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

(श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल) ॥ त्रिभुवन नायक वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रभुजी ॥ थारी मोहनी मूरती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख छवि चंदनें निरखवा, लगन चकोर अभंग ॥ वधा० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज झलामल भाण ॥ व०॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व० धा० २ ॥ आस धरी जिनचरणनी, आयो हुं त्रीभुवन नाथ, म-

हिर लहिर कर वगसीयै, आनंद निज गुण साथ ॥ व ० था० ३ ॥ धन२ वेला जी आजनी, सँमुख मिलिया हो आप ॥ व० ॥ हूं स घणी कहिवा तणी, वीतक दुख्क संताप ॥ व० था० ४ ॥ जो नही सुणसो नाथजी, तो तुम विरुद न थाय ॥ व० ॥ भगतवछल जग सहु कहै, ते निरफल किम जाय॥ व० था० ५॥ किरिया जोगे जे तारवुं, तेहमां स्यो उपगार ॥ व० ॥ तो वलिहारी श्री नाथजी, विन आयास उधार ॥ व० था० ६॥ गुनही तारया जी बहु विधे, विबुध कहे तुम नाम ॥व०॥ हूं तो जी अनुचर चरणनो, किम नवि सारो जी काम ॥ व० था० ७॥ अतिशय ज्ञानी जी इण अरै, नहि कोइ लब्धि निधान ॥ व० ॥ मोहन मुद्रासुं मन रमें, के तुम वचन प्रमाण ॥ व० था० ८ ॥ मुझ तन मन मंजूसमें, जतन करूं जगनाथ॥ व०॥ तुम गुणरतननी मूंधमी, प्रेम जमो निज हाथ ॥ व० था० ए ॥ आस फली जात्रा करी, कंचन वरण सुवास ॥ व० ॥ सरवर वीच सुहामणो, भुवन रमण केलास ॥ व० था० १० ॥ पावापुर उगणीशमें, अमृतालीश उदार ॥ व० ॥ कार्त्तिक दिन निरवाणनो, कुशल निधि रुद्धिसार॥ व० था० ११ इति॥

॥ अथ चंपापुरी स्तवनं ॥

(नैणा सफल भयें, प्रभु दरसण पायो आज ॥ ए चालमें)

निरख हिया हरख भरे, प्रभू वासपूज्य महाराज ॥ नि० ॥ अभिलाषा दरशणतणी रे, परम पदारथ काज ॥ कारण कारज नीपजै रे, आप गरीवनिवाज ॥ नि० १ ॥ मेरु महीतल तोलवा रे, समरथ को नहि हाल ॥ अतुल गुणाकर उपमा रे, भक्त सुधारण काज ॥ नि० २॥ दुखभंजन दाता सुण्यो रे, जस कीरत मुख संत॥ अंतर राख्यां नवि बनेरे, तार२ भगवंत ॥ नि० ३ ॥ कल्पवृक्ष पुन्ये लह्यो रे, वंछित पूरण नाथ ॥ भाग्योदय अब माहरो रे, शि

वपुर दायक साथ ॥ नि० ४ ॥ कमल नयण रतना जमी रे, अनु भव आतम तेज ॥ दीजै निजपद दासकूं रे, पलक न कीजै जेज ॥ नि० ५ ॥ नगणिसे अमृतालमें रे, कार्त्तिक सुदि निधि सार ॥ चंपापुर अधिपति मिल्यो रे, सकल संघ जयकार ॥ नि० ६ ॥ कुशल निधान विबुधतणो रे, कली अली जिम लीन ॥ रूद्धसार जिन ध्यानमें रे, अंतरंग गुण चिन ॥ नि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ गोडी पार्श्वनाथ स्तवनं ॥

॥ राग केरवो ॥ मैं मुख देख्यो गोमी पारसको, मेरो ज नम सफल भयो आज ॥ मैं० ॥ अन्य देवकूं बहुत मैं ध्यायो, तो य न सर्योजी मेरो काज ॥ आजरे मैं० १॥ भव२ भटकत शरणे हुं आयो, अबतो रखोजी मेरी लाज ॥ आज रे मैं० २॥ कमठ हरा वण नागकूं तारण, संभलाव्यो नवकार ॥ आजरे मैं० ३ ॥ रूप चंद कहै नाथ निरंजन, तारण तरण जिहाज ॥ आजरे मैं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ किरपा करो रे गोमी पाश जिनेसर, तुम स्वामी अंतरजामी ॥ कि० ॥ ऊंचे२ गढपर पाश विराजै, चारो तरफ ज्ञानी ध्यानी ॥ कि० ॥ नीलवरण तेरा अंग विराजै, वदनोंकी जाउं वलिहारी ॥ कि० २॥ बांहे बाजुबंध वेरखा विराजै, कुंमलकी छवि है न्यारी ॥ कि० ३॥ ढूंढत२ मैं प्रभु पायो, पूरण पदवी अब पाई ॥ कि० ४॥ नाथ निरंजन नाम तुमारो, रूपचंद पदवी पाई ॥ कि० इति॥

मुजरा साहिब मुजरा साहिब, साहिब मुजरा मेरा रे ॥ मु० ॥ साहिब सुविध जिनेसर स्वामी, चरण पखालूं तेरा रे ॥ मु० १ ॥ केशर चंदन चरचूं अंगे, फूल चढाउं सेहरा रे ॥ घंट वजाउं अगर उखेवुं, करुं प्रदक्षणा फेरा रे ॥ मु० २ ॥ पंचशब्द वाजित्र वजाउं । नृत्य करुं अधिकेरा रे ॥ रूपचंद गुण गावत हरखित, दास निरंजन तेरा रे ॥ मु० ३ ॥ इति पदं ॥

घंट वाजै घननननन, इंद्रलोक हरख नयो ॥ जनमे वर्द्धमानकुंवर, वीतराग तननननन ॥ घं० १ ॥ मृदंग ताल गुण विसाल, झलरी नाद झननननन ॥ घं० २ ॥ रूपचंद राग रंग, होत ध्यान मगननननन ॥ घं० ३ ॥ इति पदं ॥ निरंजन सांइआं रे, सांइ मेरा टुकसा मुजरा लै ॥ तुम तीरथके देवता जी, हम केशरदा गोल ॥ कनककचोली हाथमें जी, पूजा करुं रंगरोल ॥ नि० १ ॥ तुम अंबरदा मेहला प्रभु, हम गिरवरदा मोर ॥ रुमझुम२ मेहला वरसे, ठमर२ नाचै मोर ॥ नि० २ ॥ हमगुण काली कोयली जी, प्रभुगुण आंबा मोर ॥ मांजरके परतापसे कांइ, करवा लागी सोर ॥ नी० ३ ॥ तुम हो मोतीयनकी लरी रे, हमगुण झीणा डोर ॥ रूपचंद दिलदार मयाकर, तुम विन देव न उर ॥ नि० ४ ॥ इति॥

राग कल्याण ॥ एसे सहर विच कोनसा दिवान है ॥ पानीके कोट पवनके कांगरे, दस दरवाजे मंमान है ॥ एसे० १ ॥ पांच इंद्रीके तेवीस तस्कर, नगरकूंकरत हेरान हे ॥ एसे० २॥ प्रजा पुकार सुणी जब जाग्यो, चेतनराय सुजाण हे ॥ एसे० ३ ॥ ज्ञान को बाण वचनरस जोड़े, हाथमें लाल कबाण हे ॥ एसे० ४ ॥ रूपचंद कहे तेने वारो, दुसमन मान गुमान हे ॥ एसे० ५ ॥ इति पदं ॥ आय रहो दिल वागमें, सुण प्यारे जिनजी, आ०॥ चुन२ कलिया तोरे चरण चढाउं, गुण अनंता तोरा रागमें ॥ सु० १ ॥ मरुदेवी नंदन आद जिनेश्वर ॥ खेल अनंता तोरा वागमें ॥ सु० २ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, जाउं विकसित वन फागमें ॥ सु० ३ ॥ इति पदं॥ रहो२ रे यादव दोय घडियां, दोय घडियां रे अब च्यार घडियां ॥ र० ॥ प्रेमका प्याला वहोत मसाला, पीवत मधुरी सेलडियां ॥ र० १ ॥ हाथसुं हाथ मिलाय दियो सांइ, फुलडा विछाउं सेजडियां ॥ र० २ ॥ राजुल छोडि चले

गिरनारी, दीपत मोहन वेलमियां ॥ र० ३॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, मुक्तिवधू गुण वेलमियां ॥ र० ४॥ इति पदं ॥ विराजो वंगलामें, विराजो मंदिरमें, प्रभु गोमीचा पारसनाथ ॥ वि० ॥ चुवा२ चंदन ओर अरगजा, केशरमें गरकाव ॥ वी० १ ॥ शिर सोनेको छत्र विराजे, मोतियमें तपे रे निलाम ॥ वी० २ ॥ भव सागरमें आण पमाहुं, बांह पकम मुऊ तार ॥ वी० ३ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, आवागमन निवार ॥ वी० ४ इति पदं ॥

किण देखा हमारा स्वामी, स्वामी अंतरजामी रे ॥ कि० ॥ आठ भवकी प्रीत प्रकाशी, नवमें गया शिवगामी रे ॥ कि० १ ॥ सहसावनकी कुंजगलीनमें, मिले मोहे अंतरजामी रे ॥ कि० २ ॥ आप चले गिरनारके ऊपर, नारी तारी केवल पामी रे ॥ कि० ३॥ कहे नथू प्रभु नेमनगीनो, कहुंछू आज शिरनामी रे ॥ कि० ४ ॥

राग आसाउरी ॥ अबधू सो जोगी गुरु मेरा, उस पदका करे रे निवेमा ॥ अ० ॥ तरुवर एक मूल विन छाया, विन फूलें फल लागा ॥ शाखा पत्र नहीं कर उनकूं, अमृत गगने लागा ॥ अ० १ ॥ तरुवर एक पंछी दोउं बेठे, एक गुरु एक चेला ॥ चेलेने जुग चुण२ खाया, गुरु निरंतर खेला ॥ अ० २ ॥ गगनमंमलमें अधविच कूआ, उहां हे अमीका वासा ॥ सुगरा होय सो भर२ पीये, निगुरा जात पियासा ॥ अ० ३ ॥ गगनमंमलमें गउआ वि आणी, धरती दूध जमाया ॥ माखण था सो विरला पाया, छाछ जगत भरमाया ॥ अ० ४॥ थम विन पत्र पत्र विन तूंबा, विन जीभ्या गुण गाया ॥ गावनवालेका रूप न रेखा, सुगुरु सोही वताया ॥ अ० ५ ॥ आतम अनुभव विन नहीं जाणे, अंतर ज्योति जगावे ॥ घट अंतर परखे सोही मूरत, आनंघन पद पावे ॥ अ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अबधू एसो ज्ञान विचारी, वामें कोण

पुरुष कोण नारी ॥ अ० ॥ ब्रह्मनके घर नाती धोती, जोगीके घर चेली ॥ कलमा पढ२ भई रे तुरकणी, आपही आप इकेली ॥ अ० १ ॥ सुसरो हमारो बालोभोलो, सासू बालकुंवारी ॥ पिऊजी हमारो पोढे पालणे, मैंहुं झुलावनहारी ॥ अ० २ ॥ नहि हुं परणी नही हूं कुंवारी, पूत्र जणावणहारी ॥ कालोदाढीको में कोइ नही छोड्यो, अजुए हूं बालकुंवारी ॥ अ० ३ ॥ अढीद्वीपमें खाट खुटली, गगन उसीकूं तलाई ॥ धरतीको छेडो आभकी पिछोडी, तोय न सोड भराणी ॥ अ० ४ ॥ गगनमंडलमे गाय वियाणी, वसुधा दूध जमाई ॥ सऊरे सुणो भाई विलोवणा विलोवै, कोइयक अमृत पाई ॥ अ० ५ ॥ नाहिं जाउं सासरीये नहि जाउं पीहरियै, पीयुजीकी सेज विछाई ॥ आनंदघन कहै सुणो भाई साधो, ज्योतसें ज्योत मिलाई रे ॥ अ० ६॥ इति पदं॥ पुनः॥ हंसा तूं मानसरोवर वासी, वामे भूलो रंग विलासी रे ॥ हं० ॥ नीर अगाध भर्‌यो थो करदम, पसरो वेल जरासी ॥ आंकी वांकी कवहू न सीधी, सब जगकी हे मासी रे ॥ हं० १ ॥ आयो चंडाल भूपके घरमें, रतन गयो ले नासी ॥ नृप पछतावै पर आंगणमें, भटके गया ऊर काशी रे ॥ हं० २ ॥ हाथी झूठो फैल मचावै, भागो माहावत जासी, दुनियां चढ२ नीचै गिरती, फंदते ही डालै फासी रे ॥ हं० ३ ॥ बाप आप बेटाके प्यारी, परणावें इक दासी ॥ रुद्धसार इनकूं जब देखै, तबही प्यासी२ रे ॥ हं० ॥ ४ ॥ इतिपदं ॥ पुनः ॥ वेर वेर नहीं आवै, अवसर वेर२ नहीं आवै ॥ ज्युं जाणे त्युं करले भलाई, जनम२ सुख पावै ॥ अ० १ ॥ तन धन जोवन सबही झूठो, प्राण पलकमें जावै ॥ अ० २ ॥ तन छूटे धन कोण कामको, काहेकूं कृपण कहावै ॥ अ० ३॥ जाके दिलमें साच वसत हे, ताकूं झूठ न भावै ॥ अ० ॥ ४ ॥

आनंदघन प्रभु चलत पंथमे, समर समर गुण गावे ॥ अ० ५ ॥ इति पदं॥ पुनः॥ ये जिनजी के पाये लाग रे, तोने कहिये केतो ॥ ये० ॥ आठोंइ जाम फिरै मदमातो, मोह निंदरियासुं जाग रे॥ तोने० ये० १ ॥ प्रभुजी प्रीतम विन कोइ नही प्रीतम, प्रभुजीनी पूजा घणी माग रे ॥ तो० ये० २ ॥ भवका फेरा वारी करो जिनचंदा, आनंदघन पाये लाग रे ॥ तो० ये० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चितमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो, एती शीख हमारी प्यारे चित्तमें धरो ॥ थोफासा जीवन काज अरे नर, काहेकूं छल परपंच करौ ॥ एती० १ ॥ कूड कपट पर द्रोह करो तुम, अरे नर परभवथी न डरो ॥ एती० २ ॥ चिदानंद जो ए नही मानो तो, जनम मरणके दुःखमें परो ॥ एती० ३ ॥ इति पदं ॥ अवधू निरपक्ष विरला कोई, देख्या जग सब जोई ॥ अ०॥ समरस भाव भला चित्त जाके, थाप उत्थाप न होइ ॥ अविनाशीके घरकी वातां, जाणेगे नर सोइ ॥ अ० १ ॥ राव रंकमें भेद न जाणे, कनक उपल सम लेखे, नारी नागणको नहिं परिचय, तो शिवमंदिर देखे ॥ अ० २ ॥ निंदा स्तुति श्रवणे सुणने, हर्ष शोक नवि आणे ॥ ते जगमे जोगीसर पूरा, नित चढ़ने गुणठाणे ॥ अ० ३ ॥ चंद्र समान सौम्यता जाकी, सायर जेम गंभीरा ॥ अप्रमत्त भारंड परे नित्या, सुरगिरि सम शुचि धीरा ॥ अ० ४॥ पंकज नाम धराय पंकसुं, रहत कमल जिम न्यारा, चिदानंद एसा जन उत्तम, सो साहबका प्यारा ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

राग प्रभाती ॥ चलणा जरूर जाकूं ताकूं केसा सोवणा ॥ च० ॥ भया जब प्रातकाल, माता धवरावे बाल ॥ जगजन करत, सकल मुख धोवणा ॥ च० १ ॥ सुरभीके बंध छुटे, घूघफ भये अपूठे ॥ ग्वालबाल मिलके, विलोवत विलोवणा ॥ च० २ ॥ तज

परमाद जाग, तूं जी तेरे काज लाग ॥ चिदानंद साथ पाय, वृथा नही खोवणा ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥

केरवा राग ॥ समक परी, मोहे समक परी, जगमाया अब जुटी ॥ मोहे समक० ॥ काल२ तूं क्या करे मूरख, नही जरोसा पल एक घरी ॥ ज० स० १ ॥ गाफिल छिनजर नांही रहो तुम, शिर पर घूमें तेरे काल अरी ॥ ज० स० २ ॥ चिदानंद ए वात हमारी प्यारे, जाणो तुम चित मांहे खरी ॥ ज० स० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

जलांजी मेरो नेम चढ्यो गिरनार, इकेली जानसें मेरो ने० ॥ राजुल कन्नी अरज करे है, जलांजी मेरी अरज सुणो महाराज ॥ इके० १ ॥ तोरण आय चले रथ फेरी, जलांजी वांतो पशुवनकी सुणी है पुकार ॥ इ० २ ॥ सहसावनकी कूंजगलनमें, जलांजी वांतो महाव्रत धार ॥ इ० ३ ॥ हरखचंद प्रजु राजुल विनवे, जलांजी मेरो होजो मुक्तिमें वास ॥ इ० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः

रसना सफल जई, मेंतो गुण गाये महाराज ॥ रसना० ॥ परम आनंद प्रगट जयो मेरो, जव देखे जिनराज ॥ र० १ ॥ अति उज्वल जस सुण जिनजीको, संच्यो सुकृत समाज ॥ र० २ ॥ नाक नमन करतां प्रजुजीकूं, सारथा आतमकाज ॥ र० ३ ॥ पदपंकज प्रजुके फरसतही, दूर गई छुख दाक ॥ कहत क्षमाकल्याण सुपाठक, अव मोहि अविचल राज ॥ र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग गजल ॥ राजुल पुकारे नेम पिया, एसी क्या करी ॥ मुफें छोमके चले हो चूक, हमसें क्या परी ॥ रा० १ ॥ हुई आशकी निराश, उदाशीनता धरी ॥ प्यारा वश नही हमारा, प्रीतम पीरमें परी ॥ रा० २ ॥ हमसें रह्यो न जाय, प्रीतम तुम विना घरी, संयम लीजियें दयाल, दयाधर्म आदरी रा० ३ ॥ निशदिन तुमारा नाम, हेते ज्ञानकी करी ॥ मुनि चंद विजय चरण

कमल, चित्तमें धरी ॥ रा० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ कोन किसीको मित्त, जगतमें कोन किसीको मित्त ॥ ज० ॥ मात तात भ्रर जात सजनसें, कांइ रहत निचिंत ॥ ज० १ ॥ सबही अपणे स्वारथके है, परमारथ नहि प्रीत ॥ स्वारथ विणसे सगो न होसी, मित्ता मनमें चिंत ॥ ज० २ ॥ ऊठ चलेगो आप इकेलो, तुंहीसुं सुविदीत ॥ज० ॥ को नहीं तेरो तूं नही किसको, एह अनादी रीत ॥ ज० ३ ॥ ताते एक भगवान भजनको, राखो मनमें नीत ॥ ज० ॥ ग्यानसार कहै एह धन्याश्री, गायो आतमगीत ॥ ज० ४ ॥ इति पदं ॥ आदीसर जिनराज, त्रिभुवनके महाराज, आज हो आयो रे, मैं शरणें प्रभुजी तुम तणे जी ॥ १ ॥ उल्लस्यो ज्ञान अंकूर, प्रगट्यो पुण्य पडूर ॥ आज हो जागी रे, मुझ मनमें तुम सेवना जी ॥ २ ॥ लगन लगी भरपूर, दोष गये सब दूर ॥ आज हो गेरूं रे, नहीं तुम पद सेवा सुखकरू जी ॥ ३ ॥ नाभिराय कुलचंद, मरुदेवीके नंद ॥ आज हो राखो रे, प्रभु मुझकूं निज चरणे सदा जी ॥ ४ अमृत धर्म सुजाण ॥ शीश क्षमाकल्याण ॥ आज हो रागे रे, प्रभु आगे आ विनती करे जी ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग केदारो ॥ गोझी गाइयै मन रंग, गो० ॥एक ध्याने एक ताने, कर केशरो संग ॥ गो० १ जात्र कीजे अमृत पीजै, नीर वहेरी गंग ॥ रोग शोग कलेश नासै, आलस नावे अंग ॥ गो० २ ॥ पोढतां प्रभु नाम लीजै, आणी मन उछरंग ॥ अभय तेहने उंघ मांहै, कदिय न होवे चित्त भंग ॥ गो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हांरे हूं तो मोह्यो रे लाल, जिन मुखमानें मटकै ॥ नयण रसाला ने वयण सुखाला, चित्तडुं लीधुं चटकै ॥ प्रभुजी केरी भक्ति करंता, करमतणी झस तटके ॥ हां० हूं० १ ॥ मुझ मन

लोनी भमरतणी पर, जिनगुण कमले अटके ॥ रत्नचिंतामणि मूं की राचै, कहो कुण काचतणे कटके ॥ हारे हूं० २ ॥ ए जिन गुण तां क्रोधादिक सहु, आसपासथी हटके ॥ केवलनाणी बहु सुख दाणी ॥ कुमति कुगतिने पटके ॥ हारे हूं० ३ ॥ ए जिनने जे दिलमां न आणे, ते तो भूला भटके ॥ भाव भक्तिसुं भलग करतां वंछित सुखकुं सटके ॥ हारे हूं० ४ ॥ मूरत संभव जिनेश्वर केरी, जोतां हियकुं हटके, नित्यलाभ कहे प्रभु ए मोटो, गुण गाउं हूं लटके ॥ हारे हूं० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी ॥ प्रभुजीसे लागो मेरो नेह सखीरी, अब कैसें कर छूटे री ॥ प्र० ॥ धिग२ जगमें वाको जीयो, अपणा प्रभुजीसें रूसे री ॥ प्र० १ ॥ जो कोई प्रभुजीसें नेह करेगो, शिवपुरना सुख लहस्ये री ॥ प्र० २॥ सेवाराम प्रभु गांठ रेसमकी, लगो प्रीत नही तूटे री ॥ प्र० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ खतरा दुर करना, दु०॥ एक ध्यान प्रभुका धरणा, खतरा दूर करना० दू०॥ जब लग पांचो निर्मल करणा, तब लग जिन अणुसरणा ॥ खतरा० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया परिहरना, सुमति गुपति चित्त धरना ॥ खत० २ ॥ संवर भाव सदा मन धरना, आतम दुरगति हरना ॥ ख० ३ ॥ धण कण कंचनकुं क्या करणा, आखिर इक दिन मरणा ॥ खत० ४ ॥ ज्ञानउद्योत प्रभु पाये परना, शिवसुंदरी सुख वरना ॥ खत० ५ ॥ इति पदं ॥

राग रामग्री ॥ रे जीव जिनधर्म कीजीये, धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप भावना, जगमे ए तंत सार ॥ रे० १ ॥ वरस दिवसने पारणे, आदीशर सुखकार ॥ इक्षुरस दान वहराविये, श्रीश्रेयांस कुमार ॥ रे० २ ॥ चंपा बार उघाडिया, चलणी काढ्यो नीर ॥ शतीय सुभद्रा जस थयो, शीले सुरगिर धीर ॥

रे० ३ ॥ तप कर काया सोपवी, अरस निरस आहार ॥ वीरजिनंद वखाणियो, धन धन्नो अणगार ॥ रे० ४ ॥ अनित्य ज्ञावना ज्ञावतो, धरतो निरमल ध्यान ॥ ज्ञरत आरीसा ज्ञुवनमें, पाम्यो केवलज्ञान ॥ रे० ५ ॥ ए जिनधर्म सुरतरु शमो, जेहनी शीतल गंह ॥ समयसुंदर कहे सेवतां, मुगतितणा फल त्यांह ॥ रे० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सोइ२ सारी रैन गमाई, वैरन निद्रा तूं कहांसें आई ॥ सो० ॥ निद्रा कहे मैंतो बाली रे ज्ञोली, वरे२ मुनिजनकूं नाखूं रे ढोली ॥ सो० १ ॥ निद्रा कहे मैंतो जनमकी दासी, एक हाथमें मूंकी डुसरे हाथमें फासी ॥ सो० २॥ समयसुंदर कहे सुनो ज्ञाइ वनिया, आप मूबे सारी रूब गई डुनिया ॥ सो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चंदाप्रज्ञुजीसें ध्यान रे, मोरी लागी लगनवा॥ चं० ॥ लागी लगनवा गेरुी नहि टूटै, जब लग घटमें प्राण रे ॥ मो० १ ॥ दान शीयल तप ज्ञावना ज्ञावो, जैनधर्म प्रतिपाल रे ॥ मो० २ ॥ हाथ जोमके अरज करत है, वंदत सेठ खुस्याल रे ॥ मो० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ते शिवपुर गये रहे रे, वारी सकल करम दल खयकर ॥ शि० ॥ अविनाशी अविकार विराजित, परमातम शिवधाम रे ॥ समाधान सरवंग सरूपी, मेरे मन वसे२ रे ॥ शि० १ ॥ शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध हे, वहे अनादि अनंत रे ॥ वीरप्रज्ञुके आगे गौतम, अमृत पद लहे लहे रे ॥ वा० शि० २ ॥ इति पदं ॥

गरवाकी चाल ॥ म्हारे ज्ञले रे ऊगो जैयामो आजनो रे, मैंतो मुखमो दीगे जिनराजनो रे ॥ म्हारे ज्ञ० ॥ म्हारे सुत सिद्धारथ महाराजनो रे ॥ जिन लंछन सोहे मृगराजनो रे ॥ म्हा० १ ॥ म्हाने पाणी मिल्यो शिवपाजनो रे, मोने साधन मिल्यो शुज्ञ काजनो रे ॥ म्हा० २ ॥ मारे कल्पवृक्ष फल्यो काजनो रे, म्हारो

मदीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाळी म्हारे आजनीरे, मैंतो भवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलौकिक जातनी रे, मांहे बूटी दीसे भांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगटमा जड्या बहु रे, काने कुंडलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुझ सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सोहामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आजथी रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरबे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्युं रे ॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं॥ पुनः॥ म्हारे आज आनंद वधामणा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आथडता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेवमें रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरू रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा मनमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घडी, स० ॥ ए संसार जेसा सांझेला, घडपण आया घोडे चढी॥ मांगी तूंगीनें वत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कडी ॥ स० १ ॥ साधो भाई

जिनने संज्ञारो, जन्मदशा जिम आवी चढी ॥ कहे जींबो ज्ञज तूं ज्ञगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ आवो३नी प्यारा नेम अम घर आवो रे, तुम ज्ञगत वछल ज्ञगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रज्ञु केहवी थइ तकसीर कही ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूंकी न जावो रे ॥ आ० १ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रूठो बही लो कंत कोइ तो मनावो रे ॥ आ० २ ॥ केतो मोती चुगता हंस के लंघन राचे रे, सषी आंबातणी जे रुहाम, आंबलिये न माचे रे, आ० ३ ॥ हूं तो मोही तुऊ दीदार नहीं तुऊ जोमे रे, इण जग में जोतां कंत कहूं हूं थोमे रे ॥ आ० ४ ॥ जगमें छीलरिया मिंत ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रंगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥ आ० ५ ॥ बीजा जादव केइ लाल मनमें न ज्ञावे रे, जो माहरो साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ आ० ६॥ इम करतां बांधीप्रीत राजुल साची रे, जे नेहनो नावे छेह इक चित राची रे ॥ आ० ७ ॥ इम शुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रज्ञु नेम राजुल सी प्रीत मुगति पद वरज्यो रे ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ ऊज्ञो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमोहन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन हंदा वागमें रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल छिन घमी रे, मत मन प्रज्ञुकुं ज्ञूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोज्ञता रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन अज्ञंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥ श्रीफलवधीपुर तिलक ज्यूं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दास पर साहिबा रे ॥ हित कर दीजे हाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

मदीयल वाध्यो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाभ सूरिंद महाराजनो रे, फळ्यो वंछित अनुपम राजनो रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाळी म्हारे आजनीरे, मेंतो भवि निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी रे, मांहे बूटी दीसे भांत२नी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-मा जड़्या बहु रे, काने कुंडलनी शोभा शी कहुं रे ॥ धन०२॥ मुने किरपा करी ते कहूं कसी रे, मारे वाहले मुझ सामो जोयुं हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रभु शांति जिनंद हृदये वस्या रे, थई सूर शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आजूनो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो ऊग्यो सो-हामणो रे॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रभुने चरणे नम्यो रे, जिनराज ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आजथी रे, वळी दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोतां ते दुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमां रह्यूं रे॥ ध० ३॥ आपी सेवा ते शुद्ध मनथी खरी रे, सूरशशी ऊपेर करुणा करी रे ॥ ध० ४॥ इति पदं॥ पुनः॥ म्हारे आज आनंद वधामणा रे, हुंतो लेउं रे वाहलाजीना भामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुंने दास पोतानो जाणियो रे, आथड़ता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १॥ आप्युं दरशन ते दुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव में रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो भरोसो साचा गुरू रे, प्रभु विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा मनमां रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सवा लाख टकानी जाये एक घड़ी, स० ॥ ए संसार जेसा सांभलो, घड़पण आया घोड़े चढी ॥ मांगी तूंगीनें छत्र धरायो, केहनो कंदोरो केहनी कड़ी ॥ स० १ ॥ साधो भाई

शेकर रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता वारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववामी सुंदर गा जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसें प्रेम लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अभिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसे उग णपचासे, सुदि पांचम यतन विलासै, प्रभु माधव माश हुलासै ॥ सां० ए ॥ हितवल्लभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववामी सुमतेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे गोरू चला विणजारा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋषभ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकभर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंदरपदर्प विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पीयूप सहज सुखभीने ॥ माया गया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूपा त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरे अनुरागी ॥ शेलेसी करणकूं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम वंदा, प्रभु सुख संपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपें कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजे आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

नचंद्र शुद्धातमा रे, नंद योग मधुमाश ॥ निधि इंदु शित सप्तमी रे, ऋद्धिसार सुख रास रे ॥ चि० ५ ॥ इति पदं ॥ मेरे मन भाव नकी, छवि नीकी जी ॥ मेरे० ॥ चरण कमल चित हितकर चाहुं, लागी लगन गुण गावणकी ॥ छ० १ ॥ सांमली सूरत लटक चटक पर, वरसे घटा जेसें सावणकी॥ छ० २ ॥ बालपणे प्रभु हम संग खेले, अब तो भइ विसरावणकी ॥ छ० ३ ॥ याद करो जिन पूरब प्रीती, वखत वनी हे दिल लावणकी ॥ छ० ४ ॥ मोहे भरोसो हे बहुतेरो, आप कहो ललचावनकी ॥ छ० ५ ॥ सहजानंदी एक लहरमें, दीजै सुख दुख जावनकी ॥ छ० ६॥ पारस भेट रहे जो लोहा, होवै लोक हसावणकी ॥ छ० ७ ॥ राम निवास आश प्रभुजोसें, ऋद्धसार पद पावनकी ॥ छ० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेम जिनंदजीसें आंखमली ॥ ए चाल ॥ साहिब सुगुण सुपारससें, मेरी अजब अनोपम प्रीत भइ रे ॥ सा० ॥ जिन मुख चंद्र चंद्रिका निरमल, चंचल नेण चकोरमई रे ॥ सा० १ दुर न कीजे निज चरणनसें, सुरतरुकी छांह गही रे ॥ सा० ॥ दिलभर प्रभुसें अरस परस अब, वतिया दुखकी आण कही रे ॥ सा० २॥ विक्रमधारी जग उपगारी, मेरी सूध क्युं विसार दई रे ॥ सा० ३ ॥ शांति सुधारश नाथ दयानिध, ऋद्धसार लय लाग रही रे ॥ सा० ४ ॥ इति पदं ॥

कृपानिध वीनती अवधारो ॥ ए चाल ॥ सांवरिया पास जी सुख दीजे, प्रभु अरजी दिलभर लीजै ॥ सां० ॥ मनमोहन मूरति थांरी, आतम अनुभव उपगारी, सुध लीज्यो नाथ हमारी॥ सां० १ ॥ करुणारस अमृत कूंपी, लयलीन सुधानंद रूपी ॥ तन मन पद पंकज सूंपी ॥ सां० २ ॥ जब पारस नाम उचारयो, रघुपति को कारज सारयो, प्रभु धरणीधर निसतारयो ॥ सां० ३ ॥ शिव-

शंकर रमणविहारी, प्रभु महिमा अगणित धारी, श्रीपतिकी चिंता चारी ॥ सां० ४॥ डुंगर सिंघ विक्रमराजा, उपदेश सुमति दिये ताजा, जिनभुवन करावण काजा ॥ सां० ५॥ शिववाम्ही सुंदर ग जै, जिनमंदिर शरस विराजै, हरिहर मंदिर विच गाजै, सां० ६ ॥ नरनारी दरशन आवै, शुभ पूजन युगति रचावै, प्रभुजीसें प्रे म लय लावै ॥ सां० ७ ॥ अभिनव श्रीनवल जिनंदा, जगजीवन वामानंदा, प्रभु दीज्यो परम आनंदा ॥ सां० ८ ॥ उगणीसें उग णपचासे, सुदि पांचम यतन विलासें, प्रभु माधव माश हुलासें ॥ सां० ए ॥ इतिवल्लभ प्रभु गुण संगी, निधि कुशलसु अमृत रंगी, ऋद्धसार कहे नवरंगी ॥ सां० १० ॥ इति शिववाम्ही सुम तेश्वरपार्श्वनाथ स्तवनं ॥ अथ ऋषभदेव स्तवनं ॥

॥ मोहे गोरू चला विणजारा ॥ ए चाल ॥ तुम जो ऋष भ प्रभु प्यारा, जगजीवन नाथ हमारा ॥ नहीं करूं पलकभर न्यारा, लग रही लगन इकतारा ॥ ज० ॥ प्रभू मोहन सूरतिधारी, कंद रपदर्प विषयारी ॥ लयलीन योग आधारी, सुर असुर नमत नरनारी, प्रभु भए जगतसें न्यारा ॥ ज० १ ॥ केवलकमला संग लीने, पी यूष सहज सुखभीने ॥ माया गया तज दीने, आगम गम अंतर चीने, भया तीन लोक उजियारा ॥ ज० २ ॥ क्या बाह्य विभूषा त्यागी, अध्यातम रटना जागी ॥ प्रभु उपादान शिवपागी, वर ध्यान धरे अनुरागी ॥ शेलेसी करणकूं धारा ॥ ज० ३ ॥ वीक्रम धर नयर जिणंदा, प्रभु आनन सुरतरु कंदा ॥ तुम जगत उजागर चंदा, दील रंजनमें तुम वंदा, प्रभु सुख संपति दातारा ॥ ज० तु० ४ ॥ चिंतामणि कलप समाना, जिन रूपे कुशलनिधाना ॥ ऋद्धसार करत गुण गाना, प्रभु कीजे आप समाना ॥ अब झिगमिग ज्योतिस तारा ॥ ज० तु० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी.

॥ अगमडुंश वाजै चोघमा, सवाइ मंका सादेबका ॥ गननं२ अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ नामका, नित२ वाजै चोघमा ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिब, पार्श्वनाथ अवतार वमा ॥ १ ॥ वणारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोज्ने, जैसा सरद पूनमचंदा ॥ स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोम देवता मिलकर, ओछव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंद सूरज करता सेवा ॥ केइ सुरनर सादेबके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको पार न पावें, जिनका गुण हे सबसें वमा ॥ ३ ॥ दूर देससें आया जोगी, वमे जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वमे२ झोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रज्नुकी, गेटेपनमें वहोत कला ॥ बरोबरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥४॥ ज्ञान देख के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कूं करता, उ जोगी तेरे वमे लकमेमें, वमा नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता, तोवी जोगी नहिं सुणता, लकमे दिये फेंक जंगलमें, लोक तमासा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, वमा नागकूं जला दिया, दिया सार नवकार नागकूं, धरणीधर पदवी पाया ॥ वमी उमेदसें आया साहिब, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज गेमके चले जंगलमें, जुगतीसें काउसग्ग किया ॥ वमे धीर गंज्नीर प्रज्नूने, तीन लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वमी धूपमें, नीरंजन निराकार खमा, कमठासुरने किया कमाका, नज्नमंमल बादल चमा ॥ ७

॥ उसी दिनको कमठासुरने, पिछला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी सेना लेकर, जलकूं जलदी बुलवाया ॥ वर्षा किया घनघोर जोरसें, पवन चलाया मतवाला ॥ कमकम२ कर हुआ कर्षाका, चमक बीजका उजवाला ॥ ८ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता चौताला ॥ सात खूटकी वर्षा ऊर्षामें, प्रन्नु खमा है मतवाला ॥ नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वर्षा, पराजय नहिं होय जिनूंका, एसा प्रन्नुका ध्यान चढा ॥ ए ॥ संकटसें सिंहासण मोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाव२ धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया, पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने छत्र किया ॥ १० ॥ क्रोम ऊपाय तो किया कमठनें, कुछबी इलाज नहीं चलता ॥ तर णेवाला साहिब उनकूं, छलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज हारके, कमठ हाथ दो जोम खमा ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी करता खमा२ ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुन्न मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वमे देवलमें इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वर्षा जुगतसें सिंहासण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगो२ पर शिखर चढाया, दरवाजा शुन्न केवलका ॥ न्नामंमलके आगे शोन्नता, मूल गुंन्नारा आरसका ॥ पीछे पच्चीस देरिया सोन्नित, सिरे काम सिंघासणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रन्नु पारसका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, वहू काम है सारसका ॥ अढारसे पैंसठ सवाई, मुहुर्त फागण मास न्नला ॥ सुदी तीजकूं तखते वेठे, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ वहु मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वर्षा

तेरी अकलमाया ॥ धर्मचंद जोमता सवाईने, वमा साहमी वात्सल्य किया ॥ सकल संघकी आज्ञा लेकर, वमा शिखर निशान दीया ॥ १५ ॥ करमचंद ने देवचंद ने, खेमचंदने खुब किया ॥ पारसनाथकूं तखत वैठाकर, जगो२ पर नाम किया ॥ कीर्त्तिविजय गुरुराजकूं प्रणमूं, पाय गुरुका राज वमा ॥ गुलाबचंद साहेब के आगे, जिनसासनका काम वमा ॥ १६ ॥ तेजा गाता चंग रंगमें, ग्यान ध्यानसें खमा२, हाथ जोमकै अरजी करता, पारसनाथ जी तूंही वमा ॥ वमा काम तेरे है साहिब, मुखसें नहि कहणे आता ॥ शिवरमणीकुं वरी है जिनजी, भविजनकुं सुखके दाता ॥ १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आखातीजकी लावणी ॥

ऋषभ तेरी सूरतका प्यासा, लगी मोहे दरशनकी आसा ॥ वंश इक्ष्वाकू नभचंदा, भूमिपति नाभीके नंदा ॥ मात मरुदेवा सुखकंदा, प्रगट भये जगजन आनंदा ॥ (दुहा—साखी) रेणु पूंज पर आपकै, गये मिथुन जल लैन ॥ आसन कंप भयो सचिपतिको, आयो तिलक पद दैन ॥ नाथ भये वसुधर सुखरासा ॥ ल० १ ॥ मौलि पर कनक मुगट राजै, माल गल मोतियनकी ग़ाजै ॥ श्रवण युग कुंमल अति साजै, निरख छवि कोटि भान लाजै ॥ (दुहा—साखी) हीर वीर सोभावणी, आप ताप झलकंत ॥ युगल अलंकृत देख प्रभूकूं, चरण नीर वरसंत ॥ विनीता धनदपुरी वासा ॥ ल० २ ॥ सुनंदा सुमंगला राणी, भोगसें योग प्रीत ठानी ॥ भये शत पूत्र सुगुण खाणी, प्रभूने दिया राजधानी ॥ (दुहा—साखी) चौसठ विद्या नारकी, पुरुष बहोत्तर ग्यान ॥ जग विवहार चलाया प्रभूनें, प्रजापती अभिधान ॥ मुनि हुय तजै जगत फासा ॥ ल० ३ ॥ लाभ अंतराय उदै आया ॥ वरसदिन भोजन नहि पाया, भेट मणिकंचन

सब जाया ॥ प्रभु निरममती गतमाया ॥ (दुहा—साखी) हस्तिनागपुर नगरमें, श्रीश्रेयांशकुमार ॥ इक्षुरस प्रभुकुं वहिराया, देव करत जयकार ॥ अक्षयतृतिया भई परकासा ॥ ल० ४ ॥ करम हन केवल चिदरासी, नाथ भये अविचलअविनासी ॥ शिखर केलाश आप वाशी, नाम शिव ब्रह्मा विष्णु भासी ॥ (दुहा—साखी)॥ कुंदण काया सोहनी, परम धरम जिनचंद ॥ जगी धगी मनमोहन सुरति, लखमी धरत आनंद ॥ फूल रही मीना उजियासा ॥ ल० ५ ॥ कृश्न घनस्याम मूरति नीकी, सजल घन घटा प्रभुजीकी ॥ नयण अरिविंद भमरकीकी, भक्तिरस कुंभल पुर सीखी ॥ (दुहा—साखी) ॥ उगणीशय अरुतालमें, ज्ञानपंचमी रंग ॥ कूरु कपटतज भेट भई जिन, सुंदर कमला संग ॥ कुशल ऋद्धसार चरण दासा ॥ ल० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दीवाली लावणी ॥

प्रभु वीर धीर मणि हीर दरस बलिहारी, प्रभु पावापुर निर्वाण संघ सुखकारी ॥ प्रभु केवल भान प्रकाश तत्व दरसाये, प्रभू चन्द सहस मुनिराज संघ सुखदाये ॥ प्रभु चरम समय निज देख पावापुर आये, तब सुरवर सुखकर समवसरण विरचाये ॥ क्या सघन तरुगत शोक रमण छवि वाये, भामंडल धजवर दुंदुभि नाद सुणाये, मणि कनक रतनका वीच सिंहासण भारी ॥ प्रभु पावा० १ ॥ तव हस्तपाल नरपति सुरपतिके आगे, प्रभु शोले पहर धुनि अमृत उपम लागे ॥ पंचम आरेके भाव प्रगट गत रागे ॥ भाषै सिद्धारथनंद सुणत भ्रमभागे ॥ तिहां नरपति सुरपति खगपति सेवा मागे, जय२ श्रीजगपति नाथ सरत रस जागै ॥ गौतमकूं भेजा प्रतिवोधन उपगारी॥ प्रभुपा० २॥ अम्मावश पिछली रैन सुगतिपद लीने, इंद्रादिक मिलकर अधिक महोछव कीने ॥ गौ

तमने सुणकर वीतरागपद चीने, तव जगत प्रकाशन ग्यान सुधा रस पीने ॥ मेरी धन्य घमी दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हियरा हरष न माय फरकता सीने ॥ नई दीवाली जग वीच तन्नीसे जारी ॥ प्र० ३॥ तहां देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज कुग लिया नरानरी ॥ तहां न्नया सरोवर महिमा अपरंपारी, नंदीवरधनने किया न्नुवन विस्तारी ॥ प्रन्नु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रन्नु दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल उवि न्नविकूं लागत प्यारी ॥ प्रन्नु० ४ ॥ प्रन्नु घरमचंद हो आप आप जस राजा ॥ क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसें जमाव अंगिया साजा, प्रन्नु मुन्नी चुन्नी अविचल वाजत वाजा ॥ सन उगणीसे अमताल कृष्ण पख गाजा, न्नये कार्तिक दिन निर्वाण न्नेट माहाराजा ॥ प्रन्नु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुहसारी ॥ प्रन्नु पा० ५ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीमंधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजें, प्रन्नु रहम नजर कर दिलन्नर दरसण दीजे ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ तुम दूर वसे नमन्नागी ॥ नहि पोंहचत पतिया पास तुमारे पागी ॥ नहि इस उनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक ध्यान न्नया अनुरागी ॥ जो पल न्नर पाउं संग अमृतरस पीजे ॥ प्रन्नु रह० १ ॥ में न्नररयणीके वीच सुपन पन्नु पाया, पन्नु अरस परस जिनराज दरस दिखलाया, मेरे रोम२ आनंद हरख न्नर आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कंचन काया ॥ जो परतिख देखूं नाथ चरणकी ठाया, मेरा जनम सफल हो जाय करुं दिल चाया ॥ तुम जाणत हो घट वात ढील नहि कीजे ॥ पन्नु र० २॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर अर नार सुण-त धुन साजै ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आउं जिन तुम पाश देख दुख भाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरत चढा शिव पाजै ॥ तुम वचनं मालती फूल भमर मन रीझै ॥ प्रभु र० ३ ॥ क्या समवसरण सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥ प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निधान सदा सुविशाला, मैं चाहुं संग अभंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन भक्ति जमी रुद्धसार नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगंजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद हरख धन वरसण, श्रीसांवरिया म-हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गाजै, जहां अश्वशेन वरशैल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै, प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद भाजै ॥ प्रभु कमठ दीन नप देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज भोग अचलपद साजै ॥ पा रसके संगत लोह कनक भयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि प्रकाशी ॥ श्रीअभयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंद्र सेतु वर पाज सराशी, श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम मूरत निरखण लग रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुथिर सुविलासी, नित आनंद उछव होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग विच भुवन वण्यो केलासी, क्या अद्भुत महिमा चंद्रकिरण परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु दुरजन

फंदा तोम मोहकी फासी ॥ जिनचंद सूरीश्वर विजयराजके सर सन ॥ श्री सां० ३ ॥ पाठक हितवल्लन्न चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री संघ सदा कल्याण न्नक्ति बुध दीनी ॥ सन् नगणी सय अमताल माघ सुद लीनी, सुन्न वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल क्ष्मी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्धसार कहे सुखकार न्नक्ति रस पीनी ॥ न्नइ कंचन काया प्रन्नु चरणनके फरसन ॥ श्रीसां० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजै, मेहुं दासी चरणोकी, तोरण आये फेर मत जाउ, तुमकूं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ उप्पन्न कोम जादव मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-वरकुं सिधाए, हमकुं गंमी नव न्नवकी ॥ मेरे सामरे स्याम सलू णे, मैं इहां नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी मैं तो-कुं कहतहुं, देखूं शोन्ना गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब गंमी॥ जासुं संगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जोरके वीनवै राजुल, वात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकुं गोम चले निरधारी, अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-ण हो राजुल, विषयारस हे विप सरपी ॥ यह संसार असार निरं-तर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह न्नव पार ऊतरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहलां राजुल नारी, पो-हता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोन्ना हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनमें काया उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहे, फिर फेरा नाहिं फिरनेकी ॥ ने० ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० घन तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे भव पार ॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपनो अवतार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण दुख की ए है संसार ॥ करो प्रभु निहाल अभो जिनदास, रखो प्रभु मुज चरणोके पास॥ १ ॥नरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली॥सोवत समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली॥अनंत भव वीतगया खाली, वेदना निगोदकी झाली॥अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्रभुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाभिनंदन, चरण पर चढै केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक वंदन, कटत है कर्मोका फंदन ॥ साध्यो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमावै ॥ ३ ॥ बोलत है हिया मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्ममें धसकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर, हटाया कर्मोंका लसकर॥श्रीजिनराज जिहाज खासा,शरण जिनदास लिया वासा ॥४॥ समज मन मेरा मतवाला, तुजे नहिं कोइ हटकणवाला ॥ बस्या तेरे हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ताला ॥ फेर तो ममताकी माला, वाल तो भगवंत पर भाला ॥ हयासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में गणधर प्रेमपती, मुजे वरदायक है सरसती ॥ करी निर्मल निर्ध्यमती ॥ पूठ पर खमे जागता जती॥मुजे बलवंत भई शील सती, मिटी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल पद भक्तिसें पावे ॥ ६ ॥ विकट घट दुर्गतिका भारी, नीर ज्यां भरनी कुमति नारी ॥ बरछी उन नेणोंकी मारी, कुठ्या केइ कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहिये खुआरी, जीता कोइ सत्य

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आया ॥ ७ ॥ चेत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हांसी ॥ कुमतिकी पड़ी गले फांसी, सुमतिसुं रही हे उदासी ॥ कुमतिकी वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकूं मासो ॥ हियो खोल अरिहंतकूं परखो, करो जिनदास आप सरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया नही गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊतरं गया पानी, गती तेरी दुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तोरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ९ ॥ सफल नर तेरी जिंदगानी, शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निर्ग्रंथज्ञानी, कानसें लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढयो पाणी, गती तेरी सुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी॥चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये॥ कीसीकी भूंडी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी का भेटो रे च०, भव२ संचित पाप करम सब तन मनका मेटो ॥ सुकृत कीजे–महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण भज लीजै, समकित अमृतरस पीजै ॥ लाभ जिनभक्तीका लहिये रे–लाभ० ॥ चल०१॥ करो मत मुखसे बडाई, करो०, तज तामस तन मनका सुमति कर घर रहणा भाई ॥ रीतसे बोलो–मेरी जान री० ॥ आतम समतामें तोलो, मत भरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन मनसें रहियेरे–मो० ॥ च० २ ॥ जोबन दिन च्यारतणा संगी रे, जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाल्यो, काया पडी नंगी ॥ प्रीत सब तूटी–मेरी ज्या० प्री० ॥ आवखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया रूठी ॥ सुख दुःख आप किया सहियैरे–सुख दुः० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा–मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख पूनमचंदा, जिनदास तुमारा बंदा ॥ मेरे एक जिन दर्शन चहिये रे–मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे–मु० ॥ अब अचल अखंमित ज्योति सदा सुखदाईरे ॥ मैं रुल्यो चोरासी मांहि जूल्यो में जरम, जूल्यो०॥ महारे उदय अनंता डुख वांध्या जब कर्म ॥ मैं कदियक हूवो रंक फिरचो तज शरम, फि०॥ अरु कदियक राजा जयो गरथको गरम ॥ जब गरब आणकर वोल्यो पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनुष्य जनममें चेत धर्म शुज आई रे, ध० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर ध्याया, जला० ॥ में उलऱ्यो अनादि अज्ञान विषय जोग जाया ॥ मैं पम्ऱ्या लोजके फंद जोम्तो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म० अ० २ ॥ अब डुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥ अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट पाप परिहर रे, पा०॥अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं निर्मल नयणे देख जगतसें मर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान वेन अर जाई रे ॥ वे० ॥ अ० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन जायो सदा गुण गाउं, सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ मैं मन वच काया करी चरण नित ध्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए

चोरासी के माहि फेर नही आवं॥ यूं अरज करै जिनदास, कीरत ए गाई रे॥ की० अब० ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सुमति कुमतिकी लावणी॥ हांरे तूं कुमति कलेसण नार, लगी क्यूं केमे, ल०॥ चल सरक खमी रह दूर तुझें कुण छेमे॥हांरे तुं सुमतीको नरमायो, मुझे क्युं छोमी, मुझे०॥मेरी सदा शाश्वती प्रीत छिन कर्मे तोमी॥तुझ विन सूनी मेरी सेज, कहुं करजोमी, क०॥ अब चलो हमारी संग सुखे रहो पोढी॥ युं झुरइ कुमति आंसुआंखसे रेमे, आं० च०१॥ हां रे तेरी नरक निगोदकी सेज, सेति में रुवो, सेति० ॥पकमयो साचो जिनराज, संग तेरो छूटो॥ तेरी मूरख माने वात, हियाको फूटो, हिया०॥ में सहज हुवो हुं दूर तार तेरो टूटो॥ तुम करो दूरसे वात आव मत नेमे, आ० च० २॥ मेरी अनंतकालकी प्रीत पलक नहिं पाली, पल०॥ सुमती के लागो संग मुझें क्यों टाली॥ तुं सुमतीको सिरदार, सुणावे गाली, सु०॥ तेरी हम दोनूं हे नार गोरी उर काली॥ तूं हम कूं ठेले दूर सुमतिकुं तेमे, सु० च०॥ ३॥ अब कुमतीको लल धायो, रती नहिं मिगियो, र०॥ सुणकर सूत्रनकी शीख, साच होय लगियो॥ चेतन कुमतीकी सेज, दूरसुं भगियो, दू०॥ जिनराज वचनको ग्यान, हिये में जगियो॥ जिनदास कुमति तुं वात खोटी मन खेमे, खो०॥ च० ४॥ इति पदं॥

॥ पुनः॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गाना, इस० तेरी अलप ऊमर खूट जाय, नरक उठ जाणा॥ तें दिना चार जुग वीच लिया हे वासा, लि०॥ तेरे सिर पर वैरी काल, करे हे हासा॥ में बोलूं साची वात, झूठ नहीं मासा, झू०॥ तूं सूता हे कुण निंद, किसी कर आसा॥ अब सेव देव जिनराज खलक में खासा, खल०॥ तेरे जोवन पतंगका रंग, झूव सब

आसा॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समझ रे दिवाना, स० तु० ॥ १ ॥ अब बुरी भली सब बात, मोन कर रीजे, मो० ॥ ए मुख मी ठा संसार भेद नहीं दीजे ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजै, हिये०॥ पण नीच नारका संग मांहे मत भीजै ॥ अब सात विसनको संग, प्रीत मत कीजै, प्री० ॥ तोहे डुरगति दे पोहचाय तेरो तन छीजै ॥ तुं सुख डुखका सिरदार, रंक नह राना, रं० तुं०२ ॥ तुं विसरगया जुग वीच, नाम जिनवरका, ना० ॥ पच रह्या कुटंबके काज, किया फंद घरका ॥ तें दया धरम विन खोया, जनम सब नरका, ज० ॥ तेरे पल्ले बांध्या पाप, कसाई सरखा, अब लिया नहीं तें लाभ, वखत पर करका, व०॥तेरी वीती वात सब जाय जनम युं खरका ॥ अब सुणो शीख सूतरकी सुलट रे स्याना, सु० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरण सेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया, आ० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास सुधारस पाया ॥ मेरे सिर पर तुम शिरदार, जिनेसर राया, जि० ॥ मैं चाहुं चरणकी सेव सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसणकी, मेरे एहि माया, मे०॥ यूं अरज करे जिनदास अलख गुण गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश सुणो मत काना, सु० तुम० ४॥इति पदं ॥

॥ पुनः नेमनाथजी की लावणी ॥ दे गया दगा दिलदार, सुणो मेरी माई, सु० ॥ जग रही नेम दरसनकी, सरस असनाइ ॥ अब अजब अली जो नेम, मेरे शिर छाजे ॥ ॥ मे० ॥ जादवकी देखी ज्यान, जगत सब लाजै ॥ एसो नेम नवल इक बींद, अनोखो वाजै, अ०॥ सुरनर सब गावे गीत, गगन में गाजे ॥ अब दोम२ सब डुनियां, देखण आई, दे० ॥ दे० १ ॥ अब चढा नेम तोरणकूं, आनंद दिल भरकर, आ० ॥ सज आंय सुरंगा साज, किलोलां करकर ॥ मैं पायो परमानंद, हरख

दिया नरकर, इ० ॥ ले गयो पती नेमनाथ, मेरो मन हरकर ॥ सखी सुख संपत अंगणमें, आज चल आई, आ० दे० २ ॥ अब इण अवसरमें सूरत, स्यामकी लागी, स्या० ॥ पशुअनकी सुणी पुकार, दया दिल जागी ॥ जिन ली परवतकी वाट, तृष्णाकूं त्यागी, शिवरमणीके शिर वींद, वण्यो वैरागी ॥ अब महल चढी राजुलकूं, खमी झिटकाई, ख० दे० ३ ॥ अब रेतीके सरवरमें, टिके नही पाणी, टि० ॥ जिनगुण गाया नहीं जाय, अलप जिंदगानी ॥ अब कठन जीव दुरगतको, बन्यो मेंदानी, ब० ॥ जिनदास करो नव पार, दया दिल आणी ॥ अब शरण सतीके बैठ लावणी गाई ॥ ला० ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ मगसी पार्श्वनाथकी लावणी ॥

मुलक वीच मगसी पारसका बाज रह्या मंका, मुगति गढ जीत लिया वंका रे, मु०॥ मुल०॥ करमदल बलकूं क्षय कीया रे, क० ॥मुगतिमहलमें केलि करै, अनुनव अमृत पीया ॥ शाशता जीया, माहाराज शा० ॥ कल्याणक कारज कीया, अमरापुर पदवी लीया, कमठ जसका करगये फंका रे, क० ॥मुल० १ ॥ प्रनु पारस नजले नाई रे, प्रनु पा०॥नाव नमरका मेट जोत तेरी जगमें सवाई॥ टेककूं टालो, महाराज टे०॥चंचल चितसे मत चालो, गुमान गरवकूं गालो, गरवसे धूम मिली लंका रे, ग० ॥ मु० २ ॥ मेरे शुन नाग्य नदय आया रे, मेरे० ॥ इण पंचम आरा मांहि प्रनु मगसी पाया, पापसे मरता, महाराज पाप० ॥ नवि जीव ध्यान दिल धरता, श्रावक नित समरण करता, मरण दुख मिट्या मेरे अंगका रे, म० ॥ मु० ३ ॥ महिमा मगसीकी अब जाणी रे, म० ॥ नहि कधमी मेरी आंख विलोया परव विना पाणी ॥ में जिनवर जाच्या, महाराज में जि० ॥ जिनदास जिनंदसें राच्या, म-

गसीपारश हे साचा, करो मत मनमें कोइ संका रे ॥क० मु० ४ ॥

॥ उपदेश लावणी ॥ सुकृतकी वात तेरे हाथ रती ना रही रे, पुदगलमें मान्यो सुख कलपना कही रे ॥ सु० ॥ जग मांहे जैन निस सार संघाते आवै, संघा० ॥ इसकुं तजकर क्युं वेगो, विषय गुण गावै ॥ अमृतकूं अलगो ढोल, विसन विष खावै, वि०॥ मुगतीको मारग मेट, उवटमें जावै॥ थारी तुछ जिंदगानी मांहि, विकल बुध भई रे॥ पु० १ ॥थारे धन दोलत भंमार भरया हे मोती, भ-रया० ॥ सत्रु सज्जन सब बने, जगत हुय गोती॥ कोइ मसले तेल फूलेल, धोवे कोइ धोती, धो० ॥ सन्मुख उठ आवै, अबला तेरो मुख जोती ॥ एसी संपत छिन मांहि सरव क्षय भई रे, स० ॥ पुद० ॥ २ ॥ तें खटरस खाया खूब, खजाना खोया, ख० ॥ निसदिन सुखभर सुंदरकी, सेजमें सोया ॥ सझिया शोले सणगार, नारिसें मोह्या, ना०॥ तें अंतरघटका मैल रती ना धोया॥ या नरक निगोदकी वाट, पकम कर लही रे, प० ॥ पु० ३ ॥ मन मातो आठ मद मांहि, गरवसें बोले, ग० ॥ में सुख संपतको नाथ, मेरे कुण तोले । दुर्बल करता पोकार, पलक नही खोले, प० ॥ चाकर हुय रह्या हजूर चमर सिर ढोले, अब अवसर आयो हाथ, चेत तूं सही रे, चे० ॥पु०४॥ कायासें कीयो लाम बनाइ चंगी, ब० ॥ पलभर परवारयो पुन्यतणो तिहां भंगी ॥ पकमी परभवकी वाट, होय कुण संगी, हो० ॥ तेरो हंस गयो आकाश काया पमी नंगी॥ जिनदास कहे करमोंसें जोर तेरा नही रे, जो० ॥ पु० ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ नेमजिन लावणी ॥

तुम तजकर राजुल नार, तजा सब घर रे, तजा० ॥ में नमुं नेमके पाय गया गिरवर रे ॥ में प्रीत पियाकी कर कर पछे लागी, तुम त्याग चले वनखंम भये वैरागी ॥ अब राजुलसी

सत्तवंती भावसें त्यागी, भा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण भर२ रे, नें०॥ मैं० १ ॥ मैं अरज करुं करजोम, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिर पर तुम सिरदार, देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित वरसन ॥ मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ मैं० २ ॥ मैं नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठै, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे, जो० ॥ मैं चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं भर, जगतमें वर रे, ज० ॥ मैं० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, मुगतमें मेली, मु० ॥ पीछै नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परभात, नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं भर जगतमें बेली ॥ यूं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ मैं० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समझका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समझावै ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवै ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आंय लगे, इंद्रीका परवसमें पमियो, ग्यानकला कहो केसें जगें ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो है, कपट करी परधनकुं ठगै ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करै चूंअणी, चरचासें चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नहो देखै, दूजाका अवगुण भाखै ॥ हिंसाहीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसें नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखै ॥ तीनूंही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखै ॥ ठग फासीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकुं ध्यावै ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजे ॥

नही गाममे रुंख अंबको, एरंम् अंब सरिखो सूझै ॥ पारख नहीं हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझै, गाम्र देख कहै मुझ घरमें, कामधेनु इतनी दूझै ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥क्रोध मान मायामें माती, लोभ्र मांहि लपट्यो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीम् पारकी नहिं सहतो ॥ भगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन वचन मुखसें कहतो, अंतर आंट न खुलै हियाकी, पूठ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुलग्र ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी हे॥ कनक कामनीके नही भोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर केवल पावै, ज्ञानगरथ गुण भारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रद्धासें सुमती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै, उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी हे ॥ सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, भविजनके उपगारी हे ॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सप्त भंग नय, देश काल आचारी हे ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २॥ सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्हव अरु पाखंम् खंमते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधै, कहे पाठक ऋद्धसारी हे॥ करूं२ में० ४॥ इतिपदं ॥

सगवंती जावसें त्यागी, जा० ॥ थारे अंतरघटमें ज्योत ज्ञानकी जागी ॥ यूं रोती राजुल नार नेण जर२ रे, नें०॥मैं० १ ॥ मैं अरज करुं करजोम, करो मन परसन, करो०॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार, देजो मोहे दरसन ॥ अब सुख सखियनका देख, लग्यो मन तरसन, ल० ॥ मेरे आवै नयणमें नीर लग्यो नित वरसन॥मेरे नेम मिलनकी आस, मिलूं क्यूं कर रे, मि० ॥ मैं० २ ॥ मैं नहि कीनी तकसीर, चले क्यूं रूठे, च० ॥ मेरे घरमें कुटुंब परिवार चार दिस चूंटे ॥ मैं रहूं जो घरके मांहि, जोवन जम लूंटे, जो० ॥ मैं चलुं पियाके संग, प्रीत क्यूं तूटे ॥ मेरे नेम विना नहीं जर, जगतमें वर रे, ज० ॥ मैं० ३ ॥ तुम तारी राजुल नार, सुगतमें मेली, मु० ॥ पीछे नेम गये निरवाण, करम सब ठेली ॥ मैं नित ऊठे परजात, नमुं पद पहेली, न० ॥ मेरे नेम विना नहिं जर जगतमें वेली ॥ युं अरज करे जिनदास सुणो जिनवर रे, सु० ॥ मैं० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ उपदेशकी ॥ आप समजका घर नहिं पाया, दूजेकुं क्या समजावे ॥ वंका फिरे जिनदास जगतमें, हीयो हाथमें नहि आवै ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आंय लगे, इंद्रीका परवसमें पमियो, ग्यानकला कहो केसें जगे ॥ तृष्णाने जग लूंट लियो हे, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खाय२ लोही मांस वधायो, प्राणी किस विध चले पगे ॥ विषय विपतकी करे चूंथणी, चरचासें चित नही लावै ॥ वं० ही० आ० १ ॥ अपने अवगुणकूं नही देखै, दूजाका अवगुण जाखै ॥ हिंसादीमे हूओ हजूरी, दया दूर दिलसें नाखै ॥ गुणवंतका गुण लोप मेरो मन, अवगुणके रसकूं चाखै ॥ तीनूंही प्रणमें राग धरामें, सरणे जिनवर किम राखै ॥ ठग फासीगर चोर अन्याई, धनके मिस इनकूं ध्यावे ॥ वं० ही० आ० ॥ २ ॥ अवगुणकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहि पूजे ॥

नही गाममे रुंख अंबको, एरंम अंब सरिखो सूझै ॥ पारख नहीं हे हीये ग्यानकी, गुण अवगुण कूं कुण बुझै, गाम्र देख कहै मुझ घरमें, कामधेनु इतनी दूझै ॥ एसी मेरी अविनीत आतमा, अवगुण किम गाया जावै ॥ वं० ही० आप० ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो, लोन्न मांहे लपट्यो रहतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीम पारकी नहिं सहतो ॥ न्नगति नहीं गुरु देव धरमकी, कठन वचन मुखसें कहतो, अंतर आंट न खुले हियाकी, पूठ परमपदकूं देतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावै ॥ वं० ही० आप ४ ॥ इति पदं ॥

अथ सुगुरुकी लावणी ॥ नमूं२ में गुरु निर्ग्रंथकूं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुलक ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० १ ॥ गरब गालकर गुपति गोपवे, गत निर्ग्रंथकी न्यारी हे॥ कनक कामनीके नही न्नोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० २ ॥ ठ कायके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काटकर केवल पावै, ज्ञानगरथ गुण न्नारी हे ॥ न० ३ ॥ शुध्ध श्रद्धासें सुमती सेवी, निज आतमकूं तारी हे ॥ जिनवरकूं जिनदास वीनवै, उनके चरण बलिहारी हे ॥ न० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः॥ करूं२ में एसे सदगुरु, थिवर कल्प जिन धारी हे ॥ सरधा शुद्ध सदा उपदेशी, न्नविजनके उपगारी हे ॥ करूं२ में० १ ॥ च्यार निक्षेपे सप्त न्नंग नय, देश काल आचारी हे ॥ विरताविरती सर्व विरतके, धार धरावणहारी हे ॥ करूं२ में० २॥ सत्य सनातन कुल अरु गणके, परंपराके धारी हे ॥ निन्नव अरु पाखंम खंमते, जैनधर्म जयकारी हे ॥ करूं२ में० ३ ॥ संवेगी अरु संवेगपक्षी, मुनी जती गुणकारी हे ॥ ग्यान ध्यानसें शिवपद साधे, कहे पाठक रुद्धसारी हे॥ करूं२ में० ४॥ इति पदं ॥

॥ अथ कुगुरूकी लावणी ॥ तजुंश मैं उन कुगुरुकुं, कनक कामनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी वात न जाणे, अष्ट करमसें न्यारी हे ॥ तजूं० १ ॥ करी कपाल वभूत लपेटी, शिर पर जटा वधारी हे ॥ कान फाम्कर मुद्रा पहरे, उसके घरमें नारी हे ॥ तजूं० २ ॥ जोग लेइ जग जीव विणासै, वे मद मांस आहारी हे ॥ कूमा पंथ जगतकूं करतां, मुखसें कहे आचारी हे ॥ तजूं० ३ ॥ कहूं उगुण कुगुरूका कब लग, साध नही संसारी हे ॥ आप डुबे उरनकूं मूबावे, डुर्गतिका अधिकारी हे ॥ तजूं० ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहीं कुगुरूकूं प्यारीरे, जिनवरकुं जिनदास वीनवै, कुगुरू संग खुआरी हे ॥ तजूं० ५ ॥ इति ॥

आत्मलघुता लिख्यते ॥ यो जिनदास फूठो रे फूठो, येने लेइ लाकमी कूटो ॥ यो० ॥ सुकृत सामो पग नहीं भरतो, ग्यान हियाको खूटो ॥ सुधारयो सुधरे नही धमतां, जैसो लकमको ठुंठो ॥ यो० १ ॥ जणवा गुणवाका गुण नाहिं आया, कोरोही पकमयो पूठो ॥ गपोमा सुणकर लोक पूजता, ए अलग मालको ठुंठो ॥ यो० २ ॥ पंमित गुरुकी सोबत पाई, चेत्यो ना हीयाको फूटो, साचा नरको संग न करतो, कूम कपट नहीं वूटो ॥ यो० ३ ॥ फूठोही बोले फूठोही चाले, कपट करे एक मूठो ॥ साचो एह असार देखके, जिनदास सबसुं रूठो ॥ यो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वैराग्य लावणी लि० ॥ जब तन दोस्ती है इह मस्ती, काया मंगलकी ॥ सासोस्वास समर ले साहिब, आउ घटे तनकी ॥ खबर नही हे जुगमें पलकी, सुकृत करणा होय सो करले, कुण जाणे कलकी ॥ ख० १ ॥ तारामंमल रवी चंइमा, सम्नी चलाचलकी ॥ दिवस च्यारका चमत्कारहे, बीजलियां झलकी ॥ ख० ॥ सु० ॥ २ ॥ यो जग हे सुपणेकी माया, उस

बूंद जलकी ॥ विणस जावता वार न लागे, दुनिया जाय खलकी ॥ ख० ३ ॥ हंसा या देहीमें जब लग, खुसी हे मंगलकी ॥ हंसा छांम चले जब देही, मिटिया जंगलकी ॥ ख० ४ ॥ मनभावत तन चंचलहस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सदगुरु अंकुश दीया आनके, वार्ता नई भलकी ॥ ख० ५ ॥ मात पिता सुत बंधव भाई, सब अन मुतलबकी ॥ काया माया सबे कारमी ॥ ए तेरे कबकी ॥ ख० ६ ॥ झूठ कपट कर माया जोमी, कर वार्ता छलकी ॥ बोझकी गांठ बंधी सिर तेरे, केसे होय हलकी ॥ ख० ७ ॥ देव धरम साहिबका समरण, ए वाता सलकी ॥ राग द्वेष ऊपजै नही भिनकूं, वीनती अखेमलकी ॥ ख० ८ ॥ इति पदं ॥

पुनः। अरज हमारी सुणो, दीनपति, कोन भांत तिरणा॥ हम दुखी फिरत संसार चतुर गति, सो तुमसें निरणा, दीनपति को० ह० १ ॥ घोराघोर नरकके भीतर, नानादुख भरना ॥ मारन तामन छेदन भेदन, डर देह धरणा ॥ दीनप० २ ॥ कबहुक तिरयंच जोनि पायकै, गलै फास परना ॥ क्षुधा तृषा अरु शीत उष्णाता, मार मार करना ॥ दी० ३ ॥ देव विभूति पायके सुंदर, देख२ झूरना ॥ जब माला मुरझावण लागी, सोच किये मरणा॥ दीनप० ४ ॥ मनुष्या जनम पायके भक्यो, कहुं नांही थिरना ॥ साहिब तुम सरणागत राखो, जनम मरण हरना ॥ दीनप० ५ ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून प्ररुप्या हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या मुगति मझार ॥ २ ॥ चवदे सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखा श्रावक श्राविका, पाया भवजल पार ॥३॥ (चाल—हीर

रंजेके ख्यालकी) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीयै ॥ जिनसासन नायक, मुगती जाणेकी डिगरी दीजियै ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुद्दई बनाहे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसता मुगति मारगका, धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १॥ तप कागद इष्टांम लिया, तक्षपाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून वणाकर, अरजी आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमारगमें, करमोंने आ घेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूंट लिया सब मेरा जी ॥ जि० ३ ॥ बहोत खराब किया करमोने, चौरासीके मांही ॥ दुःख अनंता पाया मेने, अंत पार कछु नांही जी ॥ जि० ४॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना, तब में अरजी मारी जी ॥ जि० ५ ॥ पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर बम्रा चौधरी, उसकूं पूछ मंगावो जी॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी॥ हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥ जि० ७ ॥ आठुं मुदा लै हाजर आये, मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषायरु आठे मदकूं, साथ गवाहीमें लाये जी ॥ जि० ८ ॥ (टेर मुदायलेकी) ॥ जिनशासन नायक, झूठा दावा है चेतन जीवका, जि० ॥ हमनें नही वहकाया इसकूं, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, एसा फरेब मचाया जी ॥ जि० ९ ॥ विषयभोगमें रमिया चेतन, घाटा नफा न जाणा ॥ करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्ताना जी ॥ जि० १० ॥ हाजर खडे गवाह हमारे, पूछियै हाल जु सारा ॥ विना लियां करजा चेतनसें, केसें करे किनारा जी ॥ जि० ११ ॥ (टेर मुद्दीकी) ॥ चेतन कहै सतावी मांही, सुण शासन सिरदार ॥ इमानदार है गवाह मोरे, जाणे सब संसार जी ॥

जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभूजी, करम फरेबी भारी ॥ जीव अनंते राह चलतकूं, लूंट चोरासीमें मारी जी ॥ जि० मे० १३ ॥ वर्म२ पंडित इन लूंटे, एसा दम वतलाया ॥ धरम कहा उर पाप कराया, एसा करज चढाया जी ॥ जि० मे० १४ ॥ असल एन सरकारी सूत्रमें, मन मत अर्थ धसाया ॥ धर्म एनमें हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ भेद अर्थसें वेद पढाया, हिंसक यज्ञ वताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर, एसा मुझे सतायाजी, जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म बताया, तपस्या सेती भिगाया, इंद्रिय सुखमें मगन करीनै, झूठा जाल फेलाया जी॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इनसाफ प्रभूजी, अपील होण न पावे ॥ इकरसी चेतनकी होवे, जन्म मरण मिट जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी, दोनोकों समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी, करमूंका करज वताया जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मोंका, चेतन सेती दिलाया, जि०॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन डिगरी पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई जी, जि० मे० २० ॥ इति ॥

॥ अथ अनुभव पद डिगरी ॥

साहब अदालत पर वैठ, श्रीपारस प्रवीण एन उत्तम चलाए है ॥ शील हे सिरदार और दान हे दरोगा जाके, दयारूपी वारण सत्त श्रावगण पर आए है ॥ ग्यान हे चपरासी ताको लग्यो हे मोहोसल ताकी, माल जासनीमें श्रीजिनवरजी लिखाए है ॥ रोसकी रसूम उर कमीसन लगे कर्मनकुं, मोहकों म्याद इसत्यार लटकाये हे ॥ १ ॥ वैठके लिखेगा जब जीवकी जुवानबंधी, तबके कुछ स्वाल जवाब सतगुरुने वताए हैं ॥ ठोमकार सा-

श्री पायो पकऱ्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी भिगरी कराय लाये है ॥ अबतो दरकास मेंने करी है तुमारे पास, साहब जिनराज अरज मेरी सुण लीजीयें ॥ अष्ट करम आठुं जाम करत हे कार साजी, साहिब बुलाय इसें पिसेमान कीजीयें ॥ २ ॥ मेंतो हूं गरीब मेरी करेगा वकीली कोन, पारस प्रवीण मेरी मिसल आज कीजीयें ॥ हारुं तो हाजर हजूरीमें रह्या करुं, जीतूं तो लगाय जुगल चरणनमें लीजीयें ॥ अब तो फरियाद नाथ करी हे तुमारे पास, मेरी दाद दीजीयें तो रावरी वमाई हे ॥ मुनसबकी बात ओर मामलत अदालतकी, अब तो अफील मान अरजी लगाई हे ॥ झूठमूठकार साजी करत हे पांच तीन, साचो मत जैन जाकी श्रेन अधिकाइहे ॥ मेरेही पांच लोक मोहीकों झूगावत हे, जाते ग्वाही श्रीजिनराजकी लिखाई हे ॥ ठोमकार साजी पायो पकड्यो अरिहंतजीको, अनुभव पद पायवेकी भिगरी कराय लाए है ॥ ४ ॥ इति भिगरी संपूर्ण ॥

॥ नेमनाथजीकी लावणी ॥

नेमकी जान बणी भारी, देखनकूं आवे नर नारी ॥ अनंता घोमा रथ हाथी, मिनखकी गिणती नही आती ॥ ठंठ पर धजा जो फरराती, धमकसें धरती थरराती (छुहा—साखी) समुद्रविजयजीका लाफला, नेम बनोका नाम ॥ राजुलदेकूं आया परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन भई नगरी जब सारी ॥ नेमकी० १ ॥ कसुंबल वागा अति भारी, काने कुंफल छवि हे न्यारी ॥ किलंगी तुररा सुखकारी, माल गलमोतियनकी भारी ॥ (छुहा—साखी) कानें कुंफल झगमगे, शीश मुगट झलकार ॥ कोमि जानुकी करुं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ वाज रह्या वाजा टंकसारी ॥ नेम० २ ॥ वूट रही जनकी ठरराई, व्याहमें आये वमे भाई ॥ झरोखे

राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ (दुहा–साखी) उग्रसेनजी देखके, मनमें करे विचार ॥ बहोत जीव करि एकठा, वामो भ-रयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाए ॥ नेमजी वचन फुर-माये, पशुजीव काहेकूं लाये ॥ (दुहा–साखी) याको भोजक होवसी, जान वासते एह ॥ एह वचन सुणी नेमजी, थरहर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ४॥ पीछेसें राजुलदे आई, हाथ जब पकड्यो छिन मांही ॥ कहां तूं जावे मेरी जाई, और वर देरू मुकताई ॥ (दुहा–साखी) मेरे तो वर एकही, हो गया नेमकुमार ॥ और भुवनमें वर नहीं, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलनें धारी ॥ नेम ० ५ ॥ सहेल्यां सबही समझावे, हिये राजुलके न-हि आवै ॥ जगत सब झूठो दरसावे, मेरे मन नेमकुमर भावे ॥ (दुहा–साखी) तोड्या कांकण दोरडा, तोड्या नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब सिणगार ॥ सहेल्यां सबही विल-खाणी ॥ नेम० ६ ॥ तज्या सब शोले सिणगारा, आभूषण रत्न-जडित सारा ॥ लगे मोहे सबही सुख खारा, छोडकर चाली निर धारा ॥ (दुहा–साखी) मात पिता परवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ वियोग करके चली आपसुं, जाय चढि गिरनार ॥ झूरति छोडि मा प्यारी ॥ नेम० ७ ॥ दया दिल पशुवनकि आई, त्याग जब किनो छिन मांहि ॥ नेमि जिन गिरनारे जाई, पशुवनके बंधन छुडवाई (दुहा–साखि) नेम राजुल गिरनारपें, लिनो संजमदान ॥ नवलराम यह करि लावणी, ऊपन्यो केवलग्यान ॥ जिनोकि किरिया वुध सारी ॥ नेम० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ नेमनाथजीका चोमासा लिख्यते ॥

छाई घटा गगनमें कारि, राजुलकुं विरह दुख भारि

॥ रा० ॥ चोमासा लग्या रस भिना, अलि अषाढ रंग महिना ॥ च्यारुं तरफसें वादल पिना, बिजलिने चमकणा किना ॥ दिल होत धरूकता सिना, में अबला सखी पति हीना ॥ (जमाना) सररररर चलत समीर, थरररर करत सरीर ॥ मररररर मरत समीर ॥ अलि केसी करुं तदबीर, बुरी तकदीर, पीया विन प्यारी ॥ राजुलकूं वि० १ ॥ श्रावणमें श्याम घनघोर, जरजोर बोलते मोर ॥ दादुर मिल करते दोर, पिउ२ पपइया सोर ॥ झरू लग्यो वूंद झमझोर, बिच चमके दामनी कोर ॥ (जमावनी) खरूरूरूरू खघनमाला, तरूरूरूरू जल परनाला, अरूरूरूरू नाला खाला, में दुखी हुई बेहाल, हीयेमें साल, हुई जलधारी ॥ राजु० २ ॥ भाद्रवमें पवन प्राचीना, वादलमें धनुष रंगीना ॥ जंगलमें नदी स्वर झीणा, ज्युं बाजे मनोहर बीणा ॥ अब एसें कहो क्या जीना, प्रीतमनें मुझे दुख दीना ॥ (जमाना) युं विलपत मुख मुरझाई, सखियन मिल दौरू जगाई, यूं विलखत वचन सुनाई ॥ सखी देखो पीयाकी रीत, तोरूके प्रीत, गये गिरनारी ॥ रा० ३ ॥ आश्विनमें जरा नहीं धीर, यादुचंद भये वे पीर ॥ उठ चली नेमके तीर, काटनकूं कर्म जंजीर । प्रीतमसें लीयो अकसीर, व्रत संजम समकित हीर ॥ (जमाना) शिव राजुल नेम सिधाए, इंद्रादिक जसु गुण गाये, भविजन मिल शीश नमाए ॥ मुनि कहे कपूरचंद, प्रेमसे वंद, जाऊं बलिहारि ॥ राजु० ४ ॥

॥ सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी ॥

चिदानंद महाराज राज हे, प्रितम दोनुं प्यारीका ॥ जगमां दिल धरकर सुण लेणा, सुमति कुमति दोऊं नारीका० ॥ चि० ॥ कहति सुमता सुणरी शोकन मोह लिया प्रितम प्यारा, अविरत उर कषाय इस्कमें भूल गया सुधबुध सारा ॥ तूं वैरण हे जनम२की

तेरा संग लगे खारा, तेरे वसमें हो गया प्रीतम पलक नहीं होती न्यारा ॥ कहुं खराबी कब लग तेरी तेरा चरत ठेदगारीका ॥ ऊगमा दि० १ ॥ कहती कुमता सुणरी सुमता मेरा संग अनादीका, वो मेरा प्रीतम इस्क अमर हे, इंद्री पांच सवादीका ॥ कर सिणगार कसाय सोलेके राग रंग उनमादीका, मैंहुं मोहरायकी ललनी वो प्रीतम सहजादीका ॥ तेरे पाश नही आवेगा वालम वो हे फूल हजारीका ॥ ऊ० २ ॥ सुण रे वैरन वात हमारी तेरे संग दुख पावेगा, तेरा महल पाताललोकमें जहां वो वास वसावेगा ॥ संगतके फल उसकूं लगेगा फिर पीछे पछतावेगा, आखिर छेह देवेगी वैरण केसें प्रीत निभावेगा ॥ मैं समझाउंगी प्रीतम मेरा जो मानें दिलदारीका ॥ ऊ० ३ ॥ कुमता बोली वात सुमतसें तेरे संग क्या होणा हे, नही जहां वस्ती सूना मंदिर सुख दुख दोउं खोणा हे ॥ खाणा पीणा नही जहां पर राग रंग नही सोणा हे, नही उजाला नही अंधेरा शिल्ला सहज विछोना हे ॥ एसा मेरा भोग छोडके सहे न दुख अणगारीका ॥ ऊ० ४ ॥ कहती सुमता सुण मेरे प्रीतम इसकी संगत नही करणा, टुंक इक सोच करो दिल भीतर मेरी अरज दिलमें धरना ॥ निगोद इसकी बोत कठिन हे समझके बूझके नहि पडना, पहली सुखसें फिर दुख उपजे वो सुखसें चातुर मरणा ॥ रतन तीनका तूं हे भोगी मुगति महल सिणगारीका ॥ ऊ० ५ ॥ एसे बोल सुणे सुमताके चिदानंद उठके चल्ला, नेणोमें आंसु भर रोती प्रीतमका पकड्या पल्ला ॥ मत ना छेह दिखावो साजन सोकणकी सुणके सल्ला, में अबलासें दगा करोगे केसें होय तुमरा भल्ला ॥ मैंहुं दासी जनम२की मानो वचन करारीका ॥ ऊ० ६ ॥ तजके संग कुमतनारीका सुमता प्रेम जगाया हे, संजमसे सिणगार बणाकर

शील सुगंध लगाया है ॥ प्रीत रीतसे सदा मगन हुय मुगतिमहल जब पाया है, सीख सुरंगी मानो भविजन अपणां दिल सम झाया है ॥ कहे रामरुद्धिसार प्यारसें तजो ख्याल संसारीका ॥ ऊ० ७ ॥ इति पदं ॥ नेमप्रभूकी लावणी ॥ सज शोले सिणगार हुई हुसीयार सहेल्या सारी, चली राजुल गिरनारी रे०॥ कर केसरिया वेस छिटक रह्या केश, अजब नखराली, खुली तो जेसे केसर क्यारी रे ॥ गल मोतियनको हार, वणी तो दिलदार हंस जेसी चाली, मधुर मुख वैण उच्चारी रे॥ (उठावणी) नेणनेमे कजरा हद नीका, सिर सोहै रतनोका टीका ॥ चंदवदन सा हुसन परीका, लगी पियासें लगन, मगन दिल सघन घटा जेसें कारी ॥ चलीतो रा० १ ॥ करे पियासें अरज गरज मेरी सुण वालम दिल वाते, शुने विन क्युं छिटकाते रे ॥ मैं चरणनकी दाश रहो मेरे पाश जोवन मदमाते, जोड कर शीश नमाते रे ॥ (उठावणी) आठ भवनकी प्रीत हमारी, आप पिया में प्रीतम प्यारी ॥ साजन प्रीत निभा इकतारी, तेरे विना नहीं चैन, नींद नहीं रैन, सभी तो लगे खारी ॥ च० २ ॥ सजके खुब वरात साथ लियै राम कृष्णसे भाई, पहली तो क्यों लगन लगाई रे ॥ अब क्या देखी खोट लगा दिल चोट चला मुरझाई, कहो मुझकूं समझाई रे ॥ (उठावणी) तुमसे प्रीतम नहीं कोइ स्याणा, दिलमें अरज हमरी लाणा, सुखसें रंगभर चैन उठाणा ॥ नेणा वरसे मेह लग्या तुमसे नेह, विरहकी मारी ॥ च० ३ ॥ नेम प्रभु दे ज्ञान एक धर ध्यान सदा निभ जाणी, प्रीतका अंत न आवे रे ॥ विजली जेसी चमक दमक जेसें उस बूंदका पाणी, अंत मोती खिर जावे रे॥ (उठावणी) ज्योतिरूपका भज ले सरणा, नितश प्रेम उसीसे करणा, उर किसीके फंद नही परणा, मेरा वचन ले

मान, ज्यान धोखेकी समझले सारी ॥ च० ४ ॥ गुणवंतोका संग रहे नित रंग समझले स्याणी, जगत थोमी जिंदगानी रे ॥ चली जाय सब खलक पलकका नहीं भरोसा जाणी, करो सुकृतकी निसाणी रे ॥ (भमावणी) इतना कह्या जब दिल समझाया, अविचल राजुल नेह लगाया, सदा मुगतिमें वास वसाया, कहे राम झद्दसार, करो तो एसा प्यार, नाम रहे जारी ॥ चली० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चंदावदनी मुखसे केती गिरनारीकूं जावोगे, राजुल कन्नी अरज करत हे प्रीतम कब घर आवोगे ॥ डुष भर गाती मनमें चिंता नेणामें आसुं झरते, हाथ जोमके राजुल कन्नी वार वार विनती करते ॥ ज्यान वणाई व्याहन आए घर२में आनंद वरते, किस विध गांम चले गिरनारी मेरी दया नहिं दिल धरते ॥ में चरणाकी खासी जो दासी तुम विन मेरे नही सरते, ज्यूं सागरमें जल विन मछली प्राण घमी पलमें हरते ॥ (भमावणी) हे तुं महिर निजर कर आव फेर रथला रे, तूं चंदवदन दीदार मुझे दिखला रे ॥ हे तूं दिलकी घुंमी खोल चूक वतला रे, हे तुं मोहनगारा प्यारे हे जो मुझकूं साथ निभावोगे ॥ रा० १ ॥ डुखसुं भरी वातां मत वोलो राजुल मन धीरज धारो, एकर थांसु मिलणे कारण मुगतीमहलमें मन मारो ॥ नर नार नही दाय हमारे शिवनारीसुं मन प्यारो, पांच सखी ले साथ सिधावो मुगतिमहलकूं शिणगारो ॥ कवल वचन थांसुंमें कीनो राखो मनमें पतियारो, मुगतिमहलमें आसां हे सुंदर सोच फिकरकूं विसारो ॥ (भमावणी) हे तुं चंपकली सी नार जोवन मतवाली, हे तुं मिरगानेणी मुख चंद मधुरधुनिवाली ॥ हे तूं शील सलूणी भमशेनकी लाली, हे तूं लागे सवकों प्यारी हे जी मुझकूं कदि न भुलावोगे ॥ रा० २ ॥ कपटी साजन हसकर वोले मनकी गुंढी

नहि खोलै, या दुनिया मुतलबकी गरजी विन मुतलब मुख नहिं बोलै ॥ सहज प्रीतकी रीत लगाणी फिर निभणी मुसकल होलै, धन मानव जो प्रीत निभावै तरर अधकी रंगरोलै ॥ अरज वीनती करकै राजुल वचन रसीला अणमोलै, जलदी आयजो नेमकुमरजी मुगतिमहलमें रमफोलै ॥ (उमावणी) हेवा चंदकपूर अपूरव ख्याल वणावै, हेवा नरनारी मन रंग रागसुं गावै ॥ हेवा भांफ ताल रूफ ढोल मृदंग वजावै, हेवा आनंद हर्ष वधावै हे जी मन वंछितफल पावेगे ॥ रा० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ कोइ देखया रे, हो सांवलिया साहिब प्यारा लागे रे० ॥ अश्वशेन घर जनम लियो अवतारी रे, वामानंदन नीलवरण सुखकारी रे, चंद वदन मनमोहन मूरति प्यारी रे॥ हां रे० मु० कोइ० १ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ग्यान सवाई रे, कमठ महा शठ मान हरयो दुखदाई रे, मंत्र दियो हितकारी नाग सहाई रे ॥ हां० नाग० को० २॥ सिर पर मुगट श्रवण कुंडल दुति भारी रे, कर श्रीफल भुजबंध झलक छिव न्यारी रे, गल मोतियनको हार वण्यो गुलझारी रे ॥ हांरे गु० को० ३ ॥ पतित उधारण तारण विरुद वमाई रे, पारस२ नाम जपो वरदाई रे, चंद कपूरा प्रणमें प्रेम वधाई रे॥ हांरे प्रे० को० ४॥

॥ अथ केसरियानाथ लावणी ॥

सुणजो वातां राव सदाशिव, मत चढ जाणा धूलेवा ॥ गढपति उनका वमा अरुंगा, मत छेमो तुम उन देवा ॥ सु० १ ॥ सकतावत चंमावत बोले, हमही नोकर उनहीका ॥ ढींडपति वाकूं हाथ जोमे, तीन भुवन शिर दे टीका ॥ सु० २ ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल सेवही, सुरनर वाकूं ध्यावत हे ॥ इंद्र चंद्र मुनि दर्शन आवे, मनकी मोजां पावत हे ॥ सु० ३ ॥ गया राज उनहीसें आवे, निर्धनियाकुं धन देवे ॥ वांफ खिलावे सुंदर लमका, सदा

सुखी जो प्रभु सेवे ॥ सु० ४ ॥ तारे जिहाज समुद्रमें जाके, रोग निवारे भवशका ॥ भूप भुजंग मद्दरि करि नदियां, चोरन बंधन अरिदवका ॥ सु० ५ ॥ धौं धौं धौं धौं धोंसा वाजे, दशो दिशामें हे मंका ॥ भाव तातिया नहीं भलाइ मत वतलाओ गढ वंका ॥ ॥ सु० ६ ॥ राणाजीके ऊमरावकी, मानत नहिं हे ये वातां ॥ थांरा कीया थेहीज पावो, म्हे नहिं आवां थां साथां ॥ सु० ७ ॥ मूंछ मरोम चढा अभिमाने, जहर भरा हैं निजरूंमें ॥ रुषभदेव हे साहिब सच्चा, देख तमासा फजरूंमें ॥ सु० ८ ॥ मयाराम सुत भणे मूलचंद, वम्हे सितंबर तुम देवा ॥ फोज विखरगई घर२ घोमा, लज्जा राखो तुम देवा ॥ सु० ९ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ केसरियानाथ महात्म लावणी ॥

॥ दूहा ॥ आदि करण आदिम जगत, आदि जिनंद जिनराज ॥ धूलेवनाथ जाचो धणी, वरणुं श्रीमहाराज ॥ १ ॥ (चाल लावणी) कास्यपगोत इक्ष्वाकु वंशमें, मरुदेवा जननी जायो ॥ नाभि नरेसर वंश उजालन, आदि धर्म जस प्रगटायो ॥ १ ॥ चोसठ सुरपति देव देवी मिल, मंदिर गिरपें न्हवरायो ॥ इसो रुषभ निधि प्रगट कल्पतरु, सुरनर मुनिजन नित ध्यायो ॥ २ ॥ खमगदेशमें नगर धुलेवे, जास ददामा घुरता हे ॥ जाकी महिमा अपरंपारा, कविजन कीरत करता है ॥ ३ ॥ आदौ मुरत काल असंख्यकी, पूजी सुरगण असुरिंदा ॥ सुरपति नरपति वंदित पद युग, वलि पूजत सूरज चंदा ॥ ४ ॥ लाख इग्यार हजार पंचासी, वरस पांचसे पचासा ॥ इतने वरस पर लंकागढमें, पूजित रावण गुणरासा ॥ ५ ॥ रामचंद्र शीता अरु लछमन, ए मुरत पूजन लाए ॥ नयरी अयोध्या जाते अधविच, नयर उज्जेणी ठहराए ॥ ६ ॥ प्रजापाल नरपतिकी तनया, सुंदरि मयणा धरमनकी, भा-

पकरम अरु आपकरमकी, नई लराई मरमनकी ॥ ७ ॥ आपकरमके ऊपर नृपनें कुष्टी वरपें परणाई ॥ मयणा चिंते कांई नवाई, करम लिखी सो बन आई ॥ ८ ॥ इक दिन जिनपूजन गुरुवंदन, आई श्रीजिनमंदिरपें ॥ वंदन पूजन करके इक चित, ध्यान धरै मनकंदरपें ॥ ए ॥ (मोतीदाम छंद) तूंहि अरिहंत तूंहि भगवंत, तूंहि जिनराज तूंही जग संत ॥ तूंहि जगनाथ तूंहि प्रतिपाल, तूंही मनमोहन तूंही दयाल ॥ १ ॥ तुंहि भवभंजन भाव सरूप, तूंहि अरिगंजन रंजन भूप, तुंही अविनासी तूंही वीतराग, तूंही माहाराज तूंही वरुभाग ॥ २ ॥ तूंही गुणधाम तूंहि विसराम, तूंहि नवनिद्ध तूंहि वरु नाम ॥ तूंही अघनाश तंहि अविनाश, तूंही मतिवंत तूंही मतिवास ॥ ३ ॥ तूंही गुण केवलरूप अनंत, तूंही जगतारन तारण संत ॥ तूंही जग ध्येय तूंही जग ध्यान, तूंही चिदरूप तूंही भगवान ॥ ४ ॥ तूंही मम तात तूंही मम मात, तूंही मम भ्रात तूंही मम गात ॥ तूंही सरणागत राखणहार, तूंही दुख दोहग टालणहार ॥ ५ ॥ (चाल लावणी) ॥ करूं अरज एक तोपें जिनपति, कंत कुष्टसें नही मरते ॥ पूरब करमके लिखत लेख जे, किसके टारे नहीं टरते ॥ १ ॥ पण तुऊ शासन जगत हेलना, जगत ढंढेरा वाजत हे ॥ आपकर्म अरु जैनधर्मके, फल पाई यों लाजत हे ॥ २ ॥ यो दुख मोसें सह्यो जात नही, आदिनाथ जग रखपाला ॥ करुणाकरके रोग निवारण, गुण कीजै जग प्रतिपाला ॥ ३ ॥ यक्ष प्रसन्न हुय फल बीजोरो, हाथतणो फल तब दीनो ॥ मयणा तब उल्लास भई मन, चिंते सब कारज सीनो ॥ ४ ॥ नौ दिन नमण नीर तनु फरसें, कुष्टरोग सब नासत हे ॥ कामदेव अरु अमर समोवरु, नृप श्रीपाल सोहावत हे ॥ ५ ॥ या कीरत प्रभु तिहारी भूतल,

प्रगट प्रबल है जस सेरो ॥ आसू चैत्र मासमें महिमा, देश२में प्रभु तेरो ॥ ६ ॥ फिर वागड़देश वड़ोद नगरमें, जग पर प्रभु करुणा कीनी ॥ कितने वरस लग महीमें महिमा, अविचल भूतल रुद्धि दीनी ॥ ७ ॥ दिल्ली पर तुरकान भयो तब, पातस्याह लड़वा आयो ॥ बूत भूत पत्थरकी मूरत, जड़मुल्लासें उखरायो ॥ ॥ ८ ॥ बहुत दीनां लग की विलराइ, आको यों वाचा बोले ॥ देव हिंदको बड़ो जागतो, यूं बोलत फिर२ मोले ॥ ९ ॥ सुनो वात काजी मुल्लां तुम, एक वातसें त्रासेगा ॥ गौ ब्राह्मण प्रतिपाल कहाई, गो वधसें ये नासेगा ॥ १० ॥ गो वध करण लगे जब निजरे, देख सके क्यों प्रतिपाला ॥ करण युद्ध जब भये महाबल, शस्त्र झड़ोझड़ विकराला ॥ ११ ॥ (दूहा) महा युद्ध करणे लगे, घाव चोरासी अंग ॥ करी मलोखा गाड़ली, आये धुलेव सुरंग ॥ १ ॥ (चाल लावणी ॥) गांव धूलेवा वंशजालमें, गुप्त रहे हैं प्रभु धरती ॥ गाय एक कोड़ी वनियनकी, आइ वाहां चरती२ ॥ स्रवे तिहां पयधारा शिर पर, सांझ समें फिर नही दूजै ॥ रीस करी तब गोपालन पर, गौपाल थरहर धूजै ॥ दूजे दिन गौ लारे आयो, लह्यो भेद कह्यो वनियनपें ॥ शेठ आय जब नजरे देख्यो, चकित भयो है तन मनपें ॥ ३ ॥ मध्यरातमें सुपनो दीनो, रुषभनाथकी मूरत है ॥ बहिर निकासो करो लापसी, भीतर मूरत पूरत है ॥ ४ ॥ नव दिनमें सब घाव मिलासी, मत काढे तूं नव दिनमें ॥ कियो सेठने हुकम प्रमाणे, आये संघ बहु छ दिनमें ॥ ५ ॥ केइ उपवासी केइ व्रतधारी, केइ अलुआणे पांव चलै ॥ केइ लोककूं उक्कर वाधा, कब प्रभुको दरशन मिले ॥ ६ ॥ यूं सब लोकां दरस तरसकी, कहे लोक मूरति काढो ॥ लाओ२ महाराजकी मूरत, संघ सबे लीनो आड़ो ॥ ७ ॥ जबरदस्तसें दिवस सातमें, लापसी

बाहिर तब कीने, अंसर२ ज्जर व्रण रहाए, संघ लोक दर्शन दीने ॥ ॥ ० ॥ फिर सुपनेमें इव्य दिखायो, संघे मिल केवल कीनो ॥ मध्य विराजे ऋषज्ज तखतपर, कलियुगमें यो जस लीनो ॥ ए ॥ (दूहा) संवत अढारे तेसठे, ज्ञान सदाशिव राय ॥ कियो धंगानो डुष्टने, ज्ञाखूं वरण वनाय ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद ॥) सदाशिव राय चिंते मन एह, लूंटे बहु धाम जमी पर जेह ॥ ज्झिहां पति नाथ धूलेव कहाय, लखो लग इव्य ज्जंमार सुणाय ॥ १ ॥ जावां अब लूंटण गाम धुलेव, म्हुं सब माल जई ततखेव ॥ आयो निज फोज लेई दल गाज, तोपां दोय साथ लियां बहु साज ॥ २॥ कंपु दोय लार लिये फिरंगाण, छंगा ज्जर साथ लिया कोकवाण ॥ तवां बहु लोक कहे माहाराज, नही इह कारण कृत्य अकाज ॥ ॥ ३ ॥ एतो वह जाजल देव कहाय, रहे नहीं लाज ति हारिय काय ॥ तवां फिर वोले शदाशिव ज्जूप, यहां सब माल अवां चढी चूप ॥ ४ ॥ इसो कहि आवत डुष्ट करूर, कीयो नज राणह नाथ हजूर ॥ राख्यो नही नाथ तवे नजराण, ज्जयो मन चक्कितमान गिलाण ॥ ५ ॥ तवां मन चिंत ज्जंमारी बुलाय, मीठे वच वोल सबे ललचाय ॥ लई संग आय मुकाम मझार, कियो तब्र कूच लई सब लार ॥ ६ ॥ करे तव गाम पुकार२, ज्जंमारी सबे इ पुकार२ ॥ करो अब वाहर नाथ दयाल ॥ गयो किहां आज गरीब निवाज ॥ चढो अब वाहर राखण लाज ॥ ७ ॥ (दुहा) उण समें कोउ सेठको, वाहण तारण काज ॥ गये अधिष्टायक नाग्रजी, जैरूं गये वहागाज ॥ १ ॥ सुणो अरज पृथ्वीनाथजी सहेर धुलेव मझार ॥ कियो अकारज डुष्टने, शीघ्र चलो जन तार ॥ २ ॥ आए तुरत महाराजजी, करवा जन संज्जाल ॥ दो घोडे दोनुं चढे, जैरुं अरु प्रतिपाल ॥ ३ ॥ ज्झिन्न कोप आपे कियो, द-

शि दिशि फौज हजार ॥ मार२ चौ तरफतें, नई लमाई त्यार ॥ ४ ॥ (भुजंग प्रयात छंद) कूकू कुकू कुकू वदे कोकवाणं, सण- सं सणसं तीर तरकस्स वाणं ॥ धुवाके धमाके वहे नाल गोला, जिसा कर्कसा जम्मरा नथनमोला ॥ १ ॥ किते अंगपें शस्त्ररा घाव लागे, किते मारतें कंपते दूर भागे ॥ किते दंतपें तिरण लेवे वराका, कितें थरथरे त्रास होवे तिराका ॥ २ ॥ किते रसुल्लाइ- लल्ला पुकारे, किते दीन होके खुदापें संभारे ॥ किते नाथपें केस- रा खून माणे, किते नाथकूं जागती ज्योत जाणे ॥ ३ ॥ सदाशि वनें घाव लागो अठारो, पुनी भाउ जसवंत दोनुं संहारो ॥ वमो कोप जाणी सबे फौज भाजी, हुई केशरीनाथकी जीत वाजी॥४॥ सदाशिवने आखमी अटक लीनो, सवापांचसें रकमरो खून कीनो ॥ इसो नाथ धूलेवरो मर्दगाजी, सदा केशरानाथरी जीत वाजी ॥५॥ (दूहा) या विध कलियुग जग जणा, तारया केई जिनराज ॥ दीपविजय कविराजकूं, महेर करो महाराज ॥ १ ॥ (मोतीदाम छंद) तूंही नवनिद्ध तूंही अमसिद्ध, तूंही मनवंछित वंछित रूद्ध॥ तूंही सिरदार तूंही किरतार, तूंही सरणागत दीनदयाल ॥ २ ॥ तूंही कामकुंभ तूंही कामधेन, तूंही सुरवृक्ष तूंही मम शेन ॥ तूंही दक्षिणावर्त्त दायक देव, तूंही विसराम तूंही वमु सेव ॥ ३ ॥ तूंही मम प्राण आधार जरूर, तूंही मम इछित दायक नूर ॥ तूंही मम भूप तूंही पतसाह, तूंही मम रूद्ध भंमार अगाह ॥ ४ ॥ तूंहि मम मंत्र तूंहि मम यंत्र, तूंही मम सत्य तूंही मम तंत्र ॥ तूंही गच्छनायक तूंही श्रीपूज्य, तूंही मम पूज्य तूंही जग- पूज्य ॥ ५ ॥ (लावणी चाल) नाथ धुलेवा कीरत सुणके, देश२ नृप आवत हे, केशरमें गरकाव रहते, केशरनाथ कहावत हे ॥ १ ॥ सहर परगणे देश दिशान्तर, फिरे दुहाई नाथनकी ॥ हिंछ

मूसल ब्रम राणा हाज़र, पूरे इछित सब मनकी ॥ २ ॥ जलवट थलवट चाढ़घाटमें, रण रावल दुख दूर हरै, इक चित्त ध्याने जे नित समरे, अखय खजाना अन्नर भरे ॥ ३ ॥ धिधिमप धिधिमप धपमप धपमप, ताल पखावत राजत हे ॥ गम्मगम दौ गमगम दौ गम-गम, धों धों नोवत वाजत हे ॥ ४ ॥ हिंदूपति पतशाह ऊदेपुर, भीम-सिंहके राजनमें ॥ एह लावणी खूब वणाई, सकल संघके सागनमें ॥ ५ ॥ संवत अढार पच्चोत्तर वरषे, फागुण सुदि तेरश दिवसै ॥ मंगलके दिन दीपविजयकूं, दरशन परशन हो उलसे ॥ ६ ॥ (कलश—छप्पय छंद) समवशरण जग शरन, तीन लोक कलिमल हरन ॥ धुनि वरसत जलधरन, भरण पोष पावन करन ॥ जुगलधर्म नीती हरन, सब करम बंध घनजरन ॥ मोहमल्ल अरि हरन, सुकनु वरन शुद्ध चरन, इंद चंद पदजुगल सेवन, जगत विरुद तारनतरन ॥ दीपविजय कविराज बहादुर, ऋषभनाथ असरनशरन ॥ १ ॥ ऋषभनाथ महाराज, सबे दुख दालिद भंजन ॥ ऋषभनाथ महाराज, सबे भूप मनरंजन ॥ ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, समरथो बाहर धाये, ऋषभनाथ पृथ्वीनाथ, मंगल नाम गवाये ॥ दीपविजय कविराज बहादुर ॥ खलक मुलक हाज़र रहै, कलिजुग जयो देव तुं, सुरनर सब कीरत कहै ॥ २ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ आरती लावणी ॥

आरति करुं श्रीपार्श्वप्रभूकी, जन्म वनारशी हे जिनका, घननं घननं वाजे घंटघण, एसा ध्यान धरुं जिनवरका ॥ आ० १ ॥ जब कमठासुर कोप कियो तब, स्यामघटा विजुरी चमका ॥ गिरुआ गाज़ जल मूसलधारा, धरू धरू काजन शंका ॥ आ० २ ॥ थररर आशन कंपे सुरको, तब धरणीधर चित्त चमका ॥ फण विस्तार हजार किया तब, झमक जाय प्रभु तन ढंका ॥ आ० ३ ॥

जब पद्मावती सब सिणगारे, ताथेइ नाचत ले फिरका ॥ धमकश धौं मादल वाजत, घननं घुग्घरके घरका ॥ आ० ४ ॥ धी धी धी कट नौवत बाजे, धौं धौंकट डुंडुभि धौंका ॥ या विध गीत संगीत बजन सब, गंधर्व गान करै जिनका ॥ आ० ५ ॥ तननं तररर तंल ताल सब, झफ झौं झौं करते झंका, भेरण फेरणके झनकारे, झागझदी झालरके झंका ॥ आ० ६॥ सुरनर इंद्र सब जै जै करते, जीवत सफल भया जिनका ॥ अमृत उदय तिण वेर भयो सुख, को विस्तार कहै तिनका ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ आदि जिनेशर पारणो ॥

आदि जिनेशर कियो पारणो, आ रस सेलडी ॥ आ० ॥ घडा एकसो आठ शेलडी, रस भरिया है नीका ॥ उलटभाव श्रेयांश वहिरावे, मांड दिवीआठूकारे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव दुंदुभी बाज रही है, सोनइयारी वरखा ॥ बारे माससूं कियो पारणो, गई भूष सब तिरखा रे ॥ आ० २ ॥ ऋद्धि सिद्धि कारज मनोकामना ॥ घर२ मंगलाचार ॥ दुनिया हरख वधामणा सिरे, आखा त्रीज तिवार रे ॥ आ० ३ ॥ श्रीसेत्रूंजा सिद्धक्षेत्र हे, मोटो कहिये धाम ॥ श्रीसंघका मनोरथ पूरे, पूरे मोटा स्वामि रे ॥ आ० ४ ॥ संकट काटो विघन निवारो, राखो मेरी लाज ॥ बे करजोडी नानु कहता, ऋषभदेव महाराज रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अजितनाथजीकी लावणी ॥

श्रीअजीतनाथ महाराज, गरीब निवाज, जरूर जिनवर जी ॥ सेवक शिरनामे, तने उच्चारे अरजी ॥ कर माफी मारा वांक, रजलियो रांक, अनंता भवमें ॥ अ० ॥ आव्यो हुं तारा शरण, वली दुख दवमें ॥ क्रोधाधिक धुकता चार, खरेखर खार, लग्या मुज केडे ॥ ल० ॥ वली पापी म्हारो नाथ, छेक वंछेडे

स्या नरने नार ॥ जि० ५ ॥ चोवीशमा जिनेसरू रे, मुकतितणा दातार रे ॥ करजोमी कवियण एम भणे, मारो भवनो फेरो टाल ॥ जिन मु० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रूषभदेव स्तवनं ॥

॥ पोढो२ जी रुषभ विहारी, निद्रा वश नयण तिहारे ॥ पो० ॥ प्रभु आलस अंग हुलसाई, पूछे मरूदेवा माई ॥ पो० १॥ प्रभु नंदा सुमंगला राणी, भन रुच२ सेज बिछाणी ॥ पो० २ ॥ प्रभु नवलसु नेह सनेहा, प्रभु मनवंछित फल देहा ॥ पो० ३ ॥ प्यारे सेवक हितकर गावे, मनवंछित फल पावे ॥ पो० ४ ॥ अजर अमर पद पावे, करजोमी शीश नमावे ॥ पो० ५ ॥ इति ॥

॥ मंगल स्तवन ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजे मंगल च्यार, आज घरे नाथ पधारया ॥ कीजै० ॥ पहिले मंगल प्रभुजीकूं पूजूं, घसी केसर घनसार ॥ आ० १ ॥ बीजुं मंगल अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूलहार ॥ आ० २ ॥ त्रीजे मंगल आरती ऊतारूं, घंट वजाउं रणकार ॥ आ० ३ ॥ चोथे मंगल प्रभुगुण गाउं, नाचू थै थैकार ॥ आ० ४ ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, चरण कमल जाउं वार ॥ आ० ५ इति पदं ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ सिद्धाचल गिरि भेटो रे, भविजन सुखकारा ॥ सि० ॥ प्रथम जिनंदे ए गिरिना गुण, भाख्या विविध प्रकारा ॥ इण गिरि साधु अनंता सीधा, एहनी हुं बलिहारा रे ॥ भ० सि० १ ॥ रुषभ जिनेश्वर पूर्व निनाणूं, समवसरया सुखकारा ॥ रायण तल पगला प्रभु भेट्या, पाप पंक मल हारा रे ॥ भ० सि० २ ॥ चोमुख बिंब मनोहर अदभुत, दरशण अतही उदारा ॥ मूलनायक श्रीआदजिनेश्वर, पूजत उख सहु वारा रे ॥ भ० सि० ३ ॥

मात चक्रेसरी गिरवर ऊपर, चक्र हस्त विच धारा ॥ उप्ट निवारण सुमति वधारण, राजत संघ रखवाला रे ॥ ज० सि० ॥ ४ ॥ खरतर गछ नायक सुख दायक, कीरत जग विसतारा ॥ गुण आगर राजत अति सुंदर, हंस सूरि गुणधारा रे । ज० सि० ५ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्तिक, शुक्ल पक्ष मनुहारा ॥ पंचमी दिन मन हर्ष धरीने, जात्र करी जयकारा रे ॥ ज०सि०६॥धर्मशील पदपंकज सेवक, कुशल निधान उदारा ॥ तास पशाये गिरवरना गुण, पन्नणे मुनि रूद्धसारा रे ॥ ज० सि० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ नवपदजीकी लावणी ॥

जगतमें नवपद जयकारी, पूजतां रोग टले न्नारी ॥ प्रथम पद तीर्थपती राजें, दोष अष्टादशकूं त्याजें ॥ आठ प्रातीहारज गाजे, जगत प्रन्नु गुण बारे साजे ॥ (दोहा—साखी) अष्ट करम-दल जीतके, सकल सिद्ध ते थाय ॥ सिद्ध अनंता न्नजो बीजे पद, एक समय शिव जाय ॥ प्रगट न्नयो निज स्वरूप न्नारी ॥ ज० १ ॥ सूरिपदमें गौतम केशी, उपमा चंद सूरज जेशी ॥ उमास्यो राजा परदेशी, एक न्नव मांहे शिव लेशी ॥ (दोहा—साखी) चोथे पद पाठक नमूं, श्रुतधारी उवझाय ॥ सब साहु पंचम पदे, धन धन्नो मुनिराय ॥ वखाण्यो वीरजिणंद न्नारी ॥ ज० २ ॥ द्रव्य षट्की श्रद्धा आवे, सम संवेगादिक पावे ॥ विना यह ग्यान नही किरिया, जैनदरशनसें सब तिरिया ॥ (दुहा—साखी) ज्ञान पदारथ सातमें, पदमें आतमराम ॥ रमता रम्य अध्यातमें, निजपद साधे काम ॥ देखता वस्तु जगत सारी ॥ ज० ३ ॥ जोगकी महिमा बहु जाणी, चक्रधर गोमी सब राणी ॥ यती दश धरम करी सोहे, मुनि श्रावक सब मन मोहे ॥ (दुहा—साखी) करम निकाचित कापवा, तप कुठार कर ध्याय ॥ क्षमा युत नव-

मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ ज्ञजो तुम नवपद सुखकारी ॥ ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र ज्ञजो ज्ञाई, अचामल तप विधिसें थाई ॥ पाप त्रिहुं जोगे परिहरजो, ज्ञाव श्रीपाल परे करजो ॥ (दूहा-साखी) संवत उगणीस सतरा समें, जेपुर श्रीजिन पाश ॥ चैत्र धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद ज्ञवि प्यारो ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंडसज्ञाकी॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जेसा जगसें तारण, मिलणा नही अेसान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत, इनका कौनकथान ॥ २ ॥ कुष्ठ ज्ञगंदर राजरोग सब, ज्ञूत प्रेत ज्ञल नाश ॥ नवपद जैसा निरज्ञय शरणा, फेर करो क्या आश ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोहं, अर्हं पद अरिहंत॥ सिद्ध सूरि उवझाय मुनीश्वर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव पदके विच, सब जगका अवतार ॥ जिन अनंत हो गये फिर होंगें, कोइय न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहां लग वरणूं, मेंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आंबिल व्रत उजमाल ॥ सुरनर ज्ञूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीविमलेश्वर यक्ष सदाई, वरचक्केसरि मात ॥ उठव विविध करै मन शुद्धसें, त्रिज्ञुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन जिनंदसें, में पाया आधार ॥ कुशल निधान कृपासें आनंद, जय२ श्रीरुद्धसार ॥ ए॥ इति पदं ॥ पुनः॥ (रथ चढ जडुनंदन आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शखी जिनमंदिरमें, जग नवपद महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तम्तिकांति प्रज्ञ, मदन चंद छवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र पुर तीन तरासें, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि कर गाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंछित दायक, अतुल सुजश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश, ज्योति अरुज सब भाजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसें, जग दानंद निवाजत हे रे ॥ चं० ४ ॥ शंभव भुवन पुरी वालूचर, अंतरंग अरि दाझत हे ॥ शंकर बृह्मदेव तुम ध्यावे, गोविंद चरण माजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति उपम काजत हे ॥ मंत्र मणी तुम जपो नामकी, लखमी लील पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजै कुशल निधान भक्तिभर, रुद्धसार सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्श्वनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सां० ॥ अश्वशेन अंगज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणतें प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि भक्तकूं तारो ॥ सां० १ ॥ चंद चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज दीदारो ॥ लगन तिहारे दरश शरसकी, केसें नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥ सां० २ ॥ सुंदर रूप चंद वदनामृत, नयणकमल उजिआरो ॥ धन२ आज दिवशकी महिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग सरस हजारो ॥ सां० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंघ, करत सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रभुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो, बन्यो अति सुख दानारो ॥ सां० ४ ॥ उगणीसें अडतालीश शुभ दिन, वसतपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ बहु विधसें, चैत्य प्रतिष्टा सारो, कुशल निधी कहै रुद्धसारो ॥ सां० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ (हमकूं गांम चले ॥ इस चालमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत वाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविलास रे ॥ श्याम मनोहर तन छवि दमकत, चमकत दामनी भास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु आनन अमृतरश धारा, झरी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत वचन मन मेरो, प्राण प्रभूकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कबाण इंद्रधनुपनकी, हिलमिल भमर उजास रे ॥ अपछर गान करत सुर वनिता, कोयल वचन उल्लाश रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अविर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत भरी पिचकारी, षेलूं प्रभूसें कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गुलाब फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान भरो छतियनपें, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका बारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रुषभ गया क्युं वनमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरषणकी आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें भई उदासा, प्रभु रुषभ गये वनवासा ॥ (दूहा–साखी) रुषभ प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥ भरतादिक सो पूत्रकूं, वांट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी झिरमिर मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ भरतादिक जी सौ पूत्रनके झरसें, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ (दूहा–साखी) नगर अयोध्या युं झुरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंभा भरतकूं, मेरा पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी छिनमें ॥ मे० २ ॥ भादू महिना जी तज धन दोलत माया, वो गया इकेली काया ॥ भरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये विना कमाये पाया ॥ (दूहा–साखी) नित नव नाटक होत हे,

कर रहे भोगविलाश ॥ सब माया था ऋषभकी, छोड गया वनवास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३॥ आसू महीने जी सूरतकी छिव लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके सब लोभी जी पूत्र भये नीरागी, कभी खबर न लो बडभागी ॥ (दूहा—साखी) भरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रभु आप ॥ इंद्र पद सेवे जी नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महिना जी कब वो ऋषभ घर आवें, मोहे नेणा आण बतावै ॥ नहो कागद जी मुझकूं पूत्र पठावे, मेरा जीव वहोत दुख पावै ॥ (दूहा—साखी) झुरती निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उडकर मिलती ऋषभसें, जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥ मे० ५ ॥ मिगसर महीना जी भरत बाहुबल भाई, आपसमें करे लडाई ॥ भरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढकर आई ॥ (दूहा—साखी) बारा वरस लडते भये, इंद्र दिये समझाय ॥ चक्रवर्ति बनता गये, भये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप कारण जी खडे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी पडे ठंडका पाला, रुत आया कठिन सियाला ॥ कहां होगा जी ऋषभ जगत प्रतिपाला, मैं रटुं ऋषभकी माला ॥ (दूहा—साखी) कोइ परवतकी छंदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंड तापकी विपतमें, सहै वहोत दुख धंद ॥ भरत मेरे सुतका जी नही फिकर तेरे मनमें ॥ मे० ७॥ माहका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे ऋषभका वेरा ॥ (दूहा—साखी) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥ राज रमणकी संपदा, वो गया छिनकमें छोड ॥ एसा निरमोही जी पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

भरतो, सूने मन घरमें फिरती ॥ भरत यूं केता जी सोच फिकर क्यूं करती, रहे निशदिन मुझसें लरती॥ (दूहा–साखी) भरत विविध तर भांतसों, कहता वात बनाय ॥ वनपालक त्यानेक, दीवी वधाइ आय ॥ प्रभू पधारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए॥ चैतका महीना जी हय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥ भरत कर जोरे जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥ (दोहा–साखी) इंद्रध्वज आगे चले, भामंडल हे लार ॥ चोसठ चमर सुरपति करै, डुंडुभी गगन मझार ॥ एसो सुत तेरो जी विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश वैशाखां जी मरुदेवा मन हरखै, जब ऋषभप्रभू मुख निरखै॥ नैणपट त्वरूया जी वीत राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा–साखी) गज ऊपर मुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें ऋ-षभ सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रभु मगनमें ॥ मे० ११ ॥ जेठका महीना जी रुत गरमीकी आई, मैं ऋषभ चरण लई छाई, दरस नित तेरो जी मुझकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम सदा मन भाई ॥ (दूहा–साखी) धरम शील आधारसें, कुशल सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसें, हरे डुरित डुख धंद ॥ हे जी तो मन सुथ कर जी राखौ जिन चरणनमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अथ नेमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूंवरी वो मथुरावाली एचाल) ॥ सावण महीने नेम पिया मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन घर वटत वधाई सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण भाई, तोरणसें रथ फेर सि-धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी–मोह लियो शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ भादू महीने गगन बीच पीया इंदर चढ आयो, वैरग बीज खीज रही मोपें जोबन

गरणायो ॥ सखी मोकूं विरहा संतायो, मोर पपइया बोले पापी, मदन सदन गायो ॥ तीज विन प्रीतम यूं जासी ॥ मोह लि०२॥ आसू महीने आश पीयाको मिलणेकी लागी, तेल चढी मोकूं छिटकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने तकशीर कंत मोहे, केसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी म्हारी गले फांसी–मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी, उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी॥ पशुनकी दयापें चित दीनी, रूस चले माहाराज गुने विन, अंतरंग छीनी॥स्याम तोकुं मति ये क्या न्हासी–मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग भोगी सो कामण, लगी तुमें प्यारी॥ पीया मैं चरणनकी दासी–मोह लि० ५ ॥ पोश पीया उलंभा देती हिये नहीं धारो, नहीं छोडूंगी संग नाथ अब चाहे सो कर म्हारो॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समझासी–मो० ६ ॥ माह महीने रुत सरदीकी ठंड वहोत वाजै, सेज लगे नागण सी मुझकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण भांजै, नहीं बम्हन कूं गैरत किसकी, तुमकूं यह छाजै ॥ पिया विन करुं मैं गति काशी–मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणे, मैं अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानें ॥ कौन संग मैं खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥ कंत मैं दरशनकी प्यासी–मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई कोयल सोर करै, एसे निरमोहीसे करके कहो कुण फंद पडै ॥ प्रीत जिन नव भवकी तोरी, राजुल तज सिणगार हार कूं मदन मान मोडी ॥ नेम विन हो रही उदासी–मो० ९ ॥ माश

वैशाख आंख यूं जलकै प्रीतमकी मनमें, उग्रशेन महाराज दुलाः री गइ सहसावनमें ॥ देखण शिवादेवीके नंदा, इंद चंद शेवित पदपंकज मुख पूनमचंदा ॥ आज शखी प्रीतम घर आसी-मो० १० ॥ जेठ माश गरमी रुत लूआं बाजे कंत बुरी, नही रैण सुख चैन शखीरी चल रही प्रेमछुरी ॥ पाप कोइ पूरब उदे आया, छोरू चले घनस्याम आज में दरशण सुख पाया ॥ तजी में सब घरकी फासी-मो० ११ ॥ माश असाढ सखी संग राजुल नेम चरण जेट्या, धर करणी जव तिरणी होकर धंद सजी मेट्या ॥ प्रीत तुम अजर अमर राखी, रूद्दसार आधार तुमारो प्रेम शिवा शाखी ॥ जगत जन गुण तेरा गासी-मो० १२ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ छुटकर स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ अथ श्री शीतलाजिन स्तोत्र ॥

सकल मंगल केलि निवेशिनं, सहृदयं हृदयं गम देशनं ॥ अजिन तोत्तम जक्ति सुरेश्वरं, नमत शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहज सुंदर सद्गुणमंदिरं, विमल केवल बोध विकश्वरं ॥ अति सुवर्ण सुवर्ण समद्युतं, प्रवर वंधुर लक्षण संयुतं ॥ २ ॥ युग्मं ॥ यदिय जक्तिर्जविनां जवेजवे, जवेदजीष्टार्थ निदानमजुतं ॥ सएव नंदा-दम समुजवो जिनः, समर्च्चनीयः खलु शीतलः प्रजु ॥ ३ ॥ कर्मा जितप्तान् जवितः सुशीतलान्, कुर्वन्मुदा वाक् सुधया दयापरः ॥ सदेव देवो जवतात् सदैवमे, सदिष्ट सिद्धयै जिनराज शीतलः ॥ ४ ॥ अधिगत शिवशर्मा वीत मोहादि कर्मा, दृढरथ तनुं जन्मा सर्वतः साध धर्मा ॥ त्रिदश महित मूर्त्तिः स्फुर्त्तिमत् पुण्यकीर्त्तिः, जयतु गत जवार्त्तिः शीतलः सौम्यमूर्त्तिः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ श्री पार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ विशदगुण विचित्रं सच्चरित्रं दधानो, दलित दुरित राशि

र्विश्व विश्वावदातः ॥ प्रकट महिमरम्यो दुर्मती नाम गम्यो, जय तु जिनपतिः श्रीपार्श्वचिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतिवल्ली मूल मुन्मूल यन्ती, पदम कृत पदाब्जेयस्य भृंगीव पद्मा ॥ अवि कृतमति कायोत्सर्ग मुद्रान्वितोसौ, जगति बहुमतोस्मान् पातु वामांग जन्मा ॥ २ ॥ अविचल मणि बिभ्रत् सत्फणानां सहस्रं, बहुल विमल भास्वद्भूषणोभासि गात्रः ॥ गुरुतर वर भक्त्या सक्त चित्ताङ्गभाजां, भवतु शिव समृद्ध्यै चाश्वसे निर्जिनेंद्रः ॥ ३ ॥ कुपित करि मृगेश व्याल दावानलाब्धि, प्रहरणगदगुह्यातंक शंका प्रहर्त्ता ॥ विकशित्त मुख पद्मः सत्पुरेसूरताख्ये, जयतु भुजग लक्ष्मी भ्राजमानो जिनेंद्रः ॥ ४ ॥

॥ अथ समस्यामयी शंखेश्वर पार्श्व जिन स्तुतिः ॥

यस्य ज्ञान दया सिंधो, र्दर्शनं श्रेय से ध्रुवं ॥ सश्रीमान्पार्श्व तीर्थेशो, निषेव्यः सततं सतां ॥ १ ॥ वामा सूनोर्यशः पुंजै, श्लाघस्या नघा गुणाः ॥ स्मर्यंते येन सस्मार्यो, भवेत् प्राचीन बर्हिषां ॥ २ ॥ विहाय विषयाशक्तान्, संसारिक सुरासुरान् ॥ सेव्यता मक्षयो धीराः, पार्श्वदेवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥ जिनाः सवार्थ दानेन, येन कल्पद्रुमा अपि ॥ भवेदभ्यर्चितो लोके, स श्रिये चामृताय च ॥ ४ ॥ संस्तुतो मधुर श्लोकैः, जैन लाभ प्रदायकः ॥ कल्याण कारको भूयात्, श्रीमान् शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥ इति

॥ अथ विविध यमक युक्त श्रीपार्श्व जिन स्तुतिः ॥

लक्ष्मी निदानं गुरु कर्मदानं, सद्धर्म दानं जगते ददानं ॥ यक्षेश पार्श्वं शित पाद पार्श्वं॥ नुवामी पार्श्वं भवभेद पार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेरातसी सून सम प्रभावा, सम प्रभावा भवदीय मूर्त्तिः ॥ विभाति वामां प्रभव त्रिलोके, भव त्रिलोकेन समर्चनीयः ॥ २ ॥ तवेश पत्पंकज मादरेण, हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्ता भवेदेक

पदे पराया, निर्वेश वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष भूत्रर्पित दान वारि, यन्मानसेत्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारो, प्रोच्चारितोदाम यशाः सदेवः ॥ ४ ॥ देवाधिदेवाधि हरस्त्वमेव, सुज्ञान सुज्ञानभिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णभूथः, कल्याण कल्याण कृद् गभाजां ॥ ५ ॥ येरर्च्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोभिरा- मैः सुमनोभिरामै ॥ कर्माभिधे रुझित भूघनास्ते, विसारि लोकेश विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्थंते जिन पुंगवस्य भगवन् प्रोद्दाम धामा न्वितं, पादाब्जं परभाग भृत् त्रिभुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्म विपक्ष पक्ष दलने भव्या भवंतु क्षमाः, कल्याणाश्रय मुक्ति माप्नु मखिलंतीर्त्वा भवाम्भोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शंखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी छंदः ॥ गौफीग्रामे स्तंभने चारु तीर्थे, जीराव- ल्या पत्तने लोद्रवाख्ये ॥ वाणारस्यां चापि विख्यात कीर्तिं, श्रीपा- र्श्वेशं नौमि शंखेश्वरस्थं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं, वामा देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे भूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥ २ ॥ भित्वा भेद्यं कर्म जालं विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं चिरत्नं ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्वे० ३ ॥ विश्वाधी शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४॥ वर्षे रम्यं खंग दोर्नाग चंद्र, संख्ये मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा० ५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन सोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजितं, घनघना घननाद विभाजि- तं ॥ भजत भक्ति भरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्व जिनेश मनेश्वरं ॥१॥ विविध वर्ण विभूषित विग्रहाः, विदित दुर्द्दम दर्पक निग्रहाः॥

वसु युगार्क मिताः सुकृताकराः, जिनवराः प्रभवंतु शिवंकराः ॥२॥ रुचिरवर्ण निबद्ध मनिन्दितं, सुमनसां प्रकरै रभिवंदितं ॥ निखिल साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल भव्य सरोज विकाशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिनवरानन पद्म गतोन्मुदा, भवतु वाग्जिनलाभ शुभार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रः ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्ज्ञानामृतांभोनिधेः, सद्भावेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुपः ॥ सद्भुत प्रतिबिंब तस्तु सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः, सोल्लासंप्रणिपत्य सत्यमनसां तत्रैवनित्यं स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो भव्याव्रजंतोध्वनि, स्पृश्यंतेनहि दुष्टजंतुनिवहै वैन्यैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्वालदवानलै र्जलचराकीर्णैर्जलैर्जातुनो, सःश्रीपार्श्वविभुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्योनकेपांभवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणाभृतं कुटिलतां मोहादिनोद्भावितां, धृत्वानिर्मलभावनांचविधिनायद्भक्तिमातन्विता ॥ लभ्यन्ते नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा संसेव्यतांविश्वयाः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवनं ॥

॥ आद्यः श्रीऋषभस्ततोजितजिनः, श्रीशंभवस्तीर्थकृत् ॥ सुश्रीमानभिनंदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रभः ॥ पृथ्वीकुक्षिभवसुपार्श्वे, जिनपस्तीर्थेशचंद्रप्रभः ॥ सर्वज्ञःसुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्रीशीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयांशप्रभुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः, शांतिःकुंथुररस्ततोजितरिपुर्मल्लिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्हंतोनमिनेमिशुद्ध मुनिपौविश्वत्रयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिनःप्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान प्रभुः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्रिद्रूपाश्चतुर्विंशति, निःशेषोत्तमभव्यजंतुहृदयांभोजप्रबोधोद्यताः ॥ वंद्यन्तेसुरवृंदवंद्यविशदश्चो

कव्रजानिर्न्नय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नम्रसुरासुरेंद्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रभा, भास्वत्पादनखेंदव-प्रवचनांभोधींथ्यवस्थायिनः ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्चपंचगुरवःकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यगद्र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावनं, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्वर्गापवर्गप्रदः ॥ धर्म्मःसूक्तिसुधाश्चचैत्यमखिलं जैनालयंश्चालयं प्रोक्तंतत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमंगलं ॥ २ ॥ नाभेयादिजिनाधिपा स्त्रिभुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोभरतेश्वरप्रभृतयोयेच क्रिणो द्वादश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्ताधिकाविंशती, त्रैलोक्येभयदा त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाशेवृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेर्हतां ॥ शेषाणामपिचोर्ज्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो, निर्वाणा विनयःप्रसिद्धविभवाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरभावनाम रगृहे मेरौकुलाद्रौस्थिता, जंबुशाल्मलिचैत्यशाखिपुतथावक्काररूप्यादिषु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंमलनगेद्वीपेचनंदीश्वरे, शैलेयेमनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगर्भवितरोजयत्यर्हतांजन्माभिषेकोत्सवे, योजातः परिनिक्रमेवचभवो यःकेवलज्ञानभाक् ॥ यःकैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः, कल्याणानिचतानिपंच सततंकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥६ ॥ येपंचोपधिऋद्धयः श्रुततपोरुद्धिंगतापंचये, येचाष्टांगमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्चयेपि वलिनोयेवुद्धीऋद्धीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्चतेगणभृताकुर्वंतुमेमंगलं ॥७॥ देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थंकरमातृकाश्चजनकायक्षाश्चयक्षीश्वराः द्वात्रिंशत्त्रिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणाः कुर्वंतुमेमंङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदंकल्याणकालेर्हतां, पूर्वाण्हेपिमहोत्सवेपिसततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येशृण्वंतिपठंतितैश्चमनुजै र्धर्मार्थकामान्विता, लक्ष्मीराश्रयतेविपायरहिताः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ए ॥ इति मंगलाष्टकं संपूर्ण ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबंधु नेकर्म नकर्ता ॥ न अंगं नसंगं नइच्छा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ नबंधो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नेशोकं ॥ नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णौ नवक्रं ननिद्रा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्यु नमोहं नचिंता, नक्षुद्रं नभीतं नकृष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नभृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि०४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्यापं, हृषीकेश विध्वंस कर्म्मारिजालं ॥ नपुण्यं नपापं नअक्षानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं नवृद्धं नविद्धि नमूढा, नछेद्यं नभेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नभव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआयो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्ववेदी, नपूर्णं नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्योभिन्निसं नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिश्चैतन्यरत्नाकरं, सर्वेभूतगतागते सुख दुख ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायंति योगेश्वराः, वंदेतं हरिवंश हर्ष हृदयं श्रीमानभूदच्युतः ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्य, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वंदनेनच ॥

नतिष्ठति चिरंपापं, छिद्र हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्य स्य, संसार ध्वांतनाशनं ॥ बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्म्मामृत वर्षणं ॥ जन्मदाव विनाशाय, वृंद्दणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ति२, जिनेभक्ति दिने२ ॥ सदामेस्तु२, सदामेस्तु भवे२ ॥ ५ ॥ नहित्राता२, नहित्राता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नभूतो नभविष्यति ॥ ६ ॥ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्व प्रयत्नेन, रक्ष२ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतराग मुखंदृष्ट्वा, पद्मराग सम प्रभं ॥ नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नित्यं, सिद्धा जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुक्तं, धर्म्मः सर्वत्र मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्हंतः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोकोत्तमो यतीशानां, धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्वदार्हंतः, शिद्धा शरण मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्म्म शरण मर्हतां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्र संपुर्ण ॥

॥ अथ तपगछ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोयण वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपति त्रिसलातणो, नंदन गुण गंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान महावीर ॥ २ ॥ इक दिन वीर जिनंदनें, चरणें करी परिणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ मुगति मारग आराधियै, कहो किण पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन रस, भाखे श्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोइयें, व्रत धरीये गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वलि वोसराविये, पाप स्थानक अढार ॥ च्यार शरण नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुन्न करणी अनुमोदियै, न्नाँ व न्नलो मन आणि ॥ अणशण अवसर आदरी, नवपद जपो सु जाण ॥ ७ ॥ शुन्नगति आराधनतणा, ए बे दश अधिकार ॥ चि त्त आणीने आदरो, जिम पामो न्नव पार ॥ ८ ॥ (ढाल ॥ १ ॥ ए छिंडी किहां राखी ॥ इस चालमें) ज्ञान दरिशण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह न्नव पर न्नवना, आलोइये अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान न्नणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी रे ॥ प्रा० ज्ञा० १॥ गुरु उलवियें नही गुरु विनयें, कालै धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तडुन्नय करी सूधा, न्नणिये वही उपधान रे ॥ प्रा० ज्ञा० २॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥एह तणी कीधी आशातना, ज्ञान न्नक्ति न संन्नाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ न्नव प र न्नव वलिय न्नवोन्नव, मिछाडुक्कम तेहरे ॥ प्रा० समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत अन्निलाष ॥ साधुतणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥ प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं छंमो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा हमीने धर्में करि थिरता, न्नगति प्रन्नावना करिये रे ॥ प्रा० स० ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे वको ने विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ न्नव प०, मि० ॥ प्रा० चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे धरमे प्रमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ए ॥ श्रावकने धर्में सामायक, पो सहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचनमाय न पाली रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र मोह्यो

जेह ॥ आनव०, मिछा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ बारे नेदे तप नवि कीधो, उते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविनं नगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर, विविध विराध्या जेह ॥ आनव०, मिछामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥ वलिय विशेषे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर व चन सुणीनें, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (ढाल२) पृथ्वी पाणी तेन, वान वनस्पती, ए पांचे थावर कह्या ए ॥ करी करसण आरंन, खेत्र जे खेमीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥ घर आरंन अनेक, टांका नोयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥ लींपण गूंपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अप्पकाय, उेती धोती कर दू हव्या ए ॥ नाठीगर कुंनार, लोह सोवनगरा, नामनूंजा लिहालागरा ए ॥ ३॥ तापण सेकण काजे, वस्त्र निखारण, रंगण रांधण रसवती ए॥ इ णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेन वान विराधियाए॥ ४॥ वामी वन आराम, वावी वनस्पती, पान फूल फल चूंटीया ए ॥ पौंहक पापमि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या नूंद्या आथिया ए ॥ ५॥ अल शीने एरंम, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीया ए॥ घाली कोलू मांहि, पीली सेलमी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें- द्री जीव, हएया हणाविया, हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह, वलिय नवोनव, ते मुज मिछामिडुक्कमं ए ॥ ७ ॥ कमी सरमिया कीमा, गामर गंमोला, इअल पूरा अलशीआ ए ॥ वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥ ८ ॥ इम वेइंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुज मि० ॥ उद्देही जूं लीख, मांकम मंकोमा, चांचम कीमी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहिया घीमेल, कानखजुरमा, गींमोला धनेरीयां ए ॥ इम तेइंद्री जीव,

जे में दूहव्या, ते मुज मिच्छा० ॥ १० ॥ माखी मच्छर मांस, मसा पतंगिया, कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकण विछु तीड, ज्ञमरा ज्ञमरीय, कौंता बग खडमांकडी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव, जे में दूहव्या, ते मुज० ॥ जलमां नांखी जाल, जलचर दूहव्या, वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पासमां, पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंद्री जीव, जे में दू०, ते मुज० ॥ १३ ॥ (ढाल ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए चाल) क्रोध लोज्ञ ज्ञय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारका जी, लीधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी मिच्छामि डुक्कड आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥ देई सारू काज रे ॥ जिनजी मि० ॥१॥ देव मनुज तिर्यंचना जी, मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, ज्ञव२ मेली आथि ॥ जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोइय न आवे साथ रे ॥ जि० ३ ॥ रयणी ज्ञोजन जे कर्या जी, कीधा ज्ञक्ष अज्ञक्ष ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कर्या परतक्ष रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई वीसारीया जी, वलि ज्ञांग्या पच्चक्खाण ॥ कपट हेतु किरिया करी जी, कीधा आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी, आलोया अतीचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहिलो अधिकार रे ॥ जि० ६ ॥ (ढाल ४ ॥ साहिलडीनी देशी ॥) पंच महाव्रत आदरो, साहिलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १॥ व्रत लिया संज्ञारीयें, सा० ॥ हीयडे धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावियें सा० ॥ योनि चोरासी लाख तो ॥ मनशुद्धे करो खामणा, सा०॥

कोईसुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो, सा० ॥ कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी संघ खमाविये, सा० ॥ जे उप नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमाविये, सा० ॥ एहीज धर्म नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्छा मैथुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥७॥ निंदा कलह न कीजीये, सा० ॥ कूडा न दीजे आल तो ॥ रती अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-विध२ वोसराविये, सा० ॥ पाप स्थान अढार तो ॥ शिवगति आ राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ (ढाल ५ मी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए चाल ॥) जनम जरा मर-णे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्या कर्म सहु अनुभवे ए, कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्धभगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे कर्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदिये ए, पडिक्कमियें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत वर्त्ताविआ ए, जे भाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वसे ए, वलि उत्थाप्या सूत्र तो ॥ ५॥ घड्या घडाव्या जे घणा ए, घरटी हल हथियार तो ॥ भव२ मेली मूंकीया ए, करतां जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जनम२ परिवार तो ॥ जन-मांतर पोहतां पछी ए, कोइय न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव

परजव जे कस्या ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोसि रावियें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ७ ॥ दुःकृत निंदा इम करी ए, पाप कस्या परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए उठो अधिकार तो ॥ ए ॥ (ढाल ठठी ॥ आवि तुं जोइने आपणी ॥ ए चाल ॥) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां डुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थ नी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, वलि पोष्यां पात्र ॥ ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखावियां, जिणहर जिन चैत्य ॥ संघ चतु र्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पमिक्कमणा सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवज्ञायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदियें, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयें, चित्त आ णी ठाम ॥ समता जावें जावियें, ए आतमराम ॥ ध० ६ ॥ सुख डुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचस्यां, जोगवियें सोय ॥ ध० ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुन्यं काम ॥ ठारि ऊपर ते लीपणुं, ऊखर चित्राम ॥ ध० ७ ॥ जाव जली परें जावियें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, आठमो अधिकार ॥ ध० ए ॥ (ढाल ७ मी ॥ रैवत गिरि ऊपरें ॥ ए चाल) हवे अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणसण आदरियें पञ्चखी च्यार आहार ॥ ललुता सवि मूंकी ठांमी ममता अंग, ए आतम खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति च्यारें कीधा आ हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव लालचीउ रंक ॥ डुलहो ए वली२ अणशणनो परिणाम, एहथी पामीजे शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिजइ खंधो मेघकुमार, अणशण आराधी पाम्या जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्यें करी एक अवतार, आराधन केरो

ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारे महा मंत्र नवकार, मनथी नवि मूंको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये दुर्गति दोष विकार, सुपरे ए समरो चउद पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह नव ने परनव सुख संपति दातार ॥ ५ ॥ जुर्ज नील नीलणी राजा राणी थाय, नवपद महिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुं पाम्या छे सुर नोग, इक नवथी लेस्ये सिद्धवधू संजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली मंत्र फल्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥ शिवकुमरे योगी सोवनपुरसो कीध, इम एणे मंत्रे काज घणाना सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर नाख्यो, आराधनकेरो विधि जिणे चित्तमां राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली नवनय दूरे नांख्यो, जिन विनय करंता सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ (ढाल ७ मी ॥ नमो नवि नावसुं ए ॥ ए चाल) सिद्धारथराय कुल तिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनी तले तुमे अवतस्या ए, करवा अम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में अपराध कस्या घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आव्या नणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम रहस्ये लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूजण आकरा ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं छुं एहथी उनग्यो ए, छोडव देवदयाल ॥ ज० ४ ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठा दुःख दंदोल तो, तूठो जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ नवन विनय तुम्हारमो ए, नाव नगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि दीजीये ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ (कलश) इय

तरण तारण सुगति कारण, डुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर जिणवर चरण थुणतां, अधिक मन उल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगछपति श्रीविजयप्र भसूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरी शिष्य वाचक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय विजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीसे, रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण अन्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील विलास ए ॥ निर्जरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिझाय लिख्यते ॥

भरहेसर बाहुबली, अनयकुमारोअ ढंढणकुमारो ॥ सिरिअ अणियाउत्तो ॥ अयमत्तो नागदत्तोअ ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिभद्दो, वयर रिसि नंदिसेण सीहगिरी ॥ कयवन्नोअ सुकोसल, पुंमरिओ केसि करकंमू ॥ २ ॥ हल्ल विहल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिभद्दोअ ॥ भद्दोअ दसन्नभद्दो, पसन्नचंदोअ जसभद्दो ॥ ३ ॥ जंबूपहू वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तोअ बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरक्खिय, अज्जसुहत्थी उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबे, पज्जुन्नो मूलदेवोय ॥ ५ ॥ पभवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढपहारोअ ॥ सिज्जंस कूरगडुअ, सिज्जंभव मेहकुमारोअ ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥ सुलसा चंदणबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि सीया, नंदा भद्दा सुभद्दाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पउमावई अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावई, पभावई चिल्लणादेवी

॥ ए ॥ बंभी सुंदरी रुप्पिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई दोवई धारणी, कलावई पुप्फचूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी, गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सच्चभामा, रुप्पिणी कन्हट महिसीउ ॥ ११ ॥ जरकाय जरकदिन्ना, भूआतह चेव भूअ दिन्नाय ॥ सेणा वेणा रेणा, भइणीओ थूलभद्दस्स ॥१२॥ इच्चाइ महासईओ, जयंती अकलंक शील कलिआउ ॥ अज्ज विवज्जई जासिं, जस पमहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीउनो सिझाय

॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणंआणं, मिच्छंपरिहरहधरसम्मत्तं ॥ छविहआवस्सयंमि, उज्जुत्तोहोइपयदिवसं ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवयं, दाणंशीलं तवोअभावोअ ॥ सझायनमुक्कारो, परोवयारोअजयणाअ ॥ २ ॥ जिणपूआजिणथुणिणं, गुरुथुअसाहम्मिआणवच्छलं ॥ ववहारस्सयसुद्धी, रहयत्तातित्थयत्ताय ॥ ३ ॥ उवशमविवेकसंवर, भासासमिईछजीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोचरणपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिबहुमाणो, पुत्थयलिहणंपभावणा तित्थे ॥ सड्ढाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोड, जिनवर नामे मंगल कोड ॥ पहेले स्वर्गे लाख बत्तीस, जिनवर चैत्य नमुं निशदीश ॥१॥ बीजे लाख अठावीश कह्या, त्रीजे बार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अड लख धार, पांचमें वांदूं लाखज च्यार ॥ २ ॥ छट्ठे स्वर्गे सहस पचास, सातमें चालीस सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गे छ हजार, नव दशमें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमें त्रणसे सार, नव ग्रैवेयके त्रणसे अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली, लाख चोराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रेवीस सार, जिनवरभुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पच्चास ऊंचा बहोत्तर धार ॥ ५॥ एकसो असी बिंब परिमाण, सन्ना सहित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोड बावन कोड संन्नाल, लाख चोराणुं सहस चोंआल ॥ ६ ॥ सातसे ऊपर साठ विसाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोमने बहोत्तर लाख, नुवनपतीमां देवल नाख ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण, इक२ चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोडि निव्याशी कोडि, साठ लाख वंदू करजोड ॥ ८ ॥ बत्रीशे ने ओगणसाठ, तिर्छा-लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते बिंब जुहार ॥ ए ॥ व्यंतर ज्योतषीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर वंदू तेह ॥ रुषन्ना चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-शेण ॥ १०॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥ विमलाचल ने गढगिरनार, आबू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-काणो पाश, जीरावलो ने थंन्नणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अण-गार, अढार सहस शीलांगना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अन्यंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नित२ ऊठी कीर्त्ति करूं, जीव कहे नव-सायर तरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हत्प्रतिष्टान, मधिष्टानंशिवश्रियः ॥ नूर्नुवःस्वस्त्रयी-शान, मार्हन्त्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यन्नावैः, पुनतस्त्रिज-गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-मंपृथ्वीनाथ, मादिमंनिःपरिग्रह ॥ मादिमंतीर्थनाथंच, रुषन्नस्वा-

मिनंस्तुमः ॥ ३ ॥ अर्हंतमजितंविश्व, कमलाकरभास्करं ॥ अम्लान-
केवलादर्शे, संक्रांतजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वभव्यजनाराम, कुल्या-
तुल्याजयंतुताः ॥ देशनासमयेवाचः, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥
अनेकांतमतांभोधि, समुल्लाशनचंद्रमाः ॥ दद्यादमंदमानंदं, भगवान
भिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्किरीटशाणाग्रो, त्तेजितांघ्रिनखावलिः ॥
भगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वभिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रभप्रभोर्देह,
भासःपुष्णंतुवः श्रियं ॥ अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥
श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांह्रये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगना-
भोगभास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-
र्मुर्त्तिसितध्यान, निर्मितेवश्रियेस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं, कल-
यन्केवलश्रियां ॥ अचिंत्यमहात्म्यनिधिः, सुविधिर्वोधयेस्तुवः॥११॥
सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः
पातुवोजिन ॥ १२ ॥ भवरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निः-
श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांसः श्रेयसेस्तुवः ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीभूत,
तीर्थकृत्कर्मनिर्मितिः ॥ सुरासुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यःपुनातुवः॥१४॥
विमलस्वामिनोवाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥ जयंतित्रिजगच्चेतो,
जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रियां ॥ १६ ॥ कल्पद्रुमसधर्म्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धाधर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥
सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्म्मलीकृतदिग्मुखः ॥ मृगलक्ष्मातमःशांत्यै,
शांतिनाथजिनोस्तुवः॥१८॥श्रीकुंथुनाथोभगवान्, सनाथोतिशयर्द्धि-
भिः ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥१९॥ अरनाथस्तुभ
गवां, श्चतुर्थारनभोरविः॥चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥
सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं॥कर्म्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमल्लिमभि
ष्टुमः॥२१॥जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूषसमयोपमं॥मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ कुर्वतोनमतांमूर्ध्नि, निर्मलीकारकारिणं ॥ वारिप्लवाइवनमेः, पांतुपादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्म्मकक्षहुताशनः ॥ अरिष्टनेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ ॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितंकर्म्मकुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथःश्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायार्हतेनमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेपिजने, कृपामंथरतारयोः ॥ ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्र, श्रीवीरजिननेत्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितःश्रीमान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, स्त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान् ॥ २८ ॥ वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो, वीरंबुधाःसंश्रिता ॥ वीरेणाभिहतःस्वकर्मनिचयो, वीरायनित्यंनमः ॥ वीरात्तीर्थमिदंप्रवृत्तमतुलं, वीरस्यघोरंतपो ॥ वीरेश्रीधृतिकीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रंदिशः ॥ ॥ २९ ॥ अवनितलगतानांकृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानांदिव्यवैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानांदेवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानांभावतोहंनमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्तपालग, निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥ १ ॥ ॐसनमो विप्पोसहिपत्ताणं, संतिसामि पायाणं ॥ झ्रौंस्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सौंह्रींनमो सव्वोसहि, पत्ताणंचदेइसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवीजक्खरायगणिपिडगा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरक्खंतुजिणभत्ते ॥ ४ ॥ रक्खंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ वज्जंकुसिचक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगंधारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्छुत्तामाणसिआ, महा-

माणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥ जरकागोमुहमहाजरका, तिमुहजरके सुतुंबरूकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिउ, बंभोमणुउसुरकुमारो ॥७॥ छम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगंधवतहयजरिकदो ॥ कुबेरवरुणोभिउडी गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआदुरिआरि कालीमहाकाली ॥ अच्चुअसंताजाला, सुतारयासोअसिरिवछा ॥९॥ चंडाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निव्वाणिअच्चुआधरणी ॥ वइरुट्टछु- त्तगंधारी, अंबपउमावईसिध्धा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्कणरया, अन्नेविसुरासुरीचउहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कंसयाअ म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिट्ठिसुरगण, सहिओसंघस्ससंतिजिणचंदो ॥ मज्झविकरेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना हसम्मदिट्ठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ सव्वोवद्दवरहिओ, सलहइसुह संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगछगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरू णं ॥ सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिंभणइसीसो ॥ १४ ॥ इति॥

॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमातमा, शिवसुखना दाता ॥ पुरकलवई विज यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंडरीगणी, नयरी यें सोहे ॥ श्रीश्रेयांश राजा तिहां, भवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंथु अर जिन अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रभु जनमिया, वली योवन पावे ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावे ॥ ४ ॥ भोगवी सुख संसारना, संजम मन लावे, मुनिसुव्रत नमी अंतरे, दीक्षा प्रभु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नांण ॥ वृषभ लंछने शोभता, सर्व भावना जाण॥६॥चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकसो कोडी ॥ त्रण भुवनमां जोअतां, नहि कोई एहनी जोडी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रभुजीनो

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणै सर्व विचार ॥ ८ ॥ छवंथ पेढाल जिनांतरे ए, थाशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु प्रणमतां, शुभ वंछित फल लीध ॥ ९॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः ॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ भरते आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल भक्त तुमे धणी ए, जो होवे अम नाथ ॥ भवोभव हूं छूं ताहरो, नहीं मेलूं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग छंडी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने, शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुझनें घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहांथकी हूं वीनवूं, अवधारो मुझ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन दिनकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडण, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमें अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधी, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वर्या रंगै, नमो० ॥ ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक मांही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याईये ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थे, परम ज्योतिनेंपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ॥ भाव धरीनें जे चढे, तेने भव पार

छतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रण भुवन ना नायक छे, जस चोसठ इंदर पायक छे, नाण दरशण जेहना क्षायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छे, जश धोरी लंछन पाया छे, पुंडरीगणी नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदा मांहि विराजे छे, जश चोत्रीश अतिशय गाजे छे, गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छे, रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो हुं, पण भरतमां दूरे वसिओ हुं, महा मोहराय कर फसियो हुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे, तब कांइक मुझथी डरियो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखडिये रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाडो रे, लागे मुंनें मीठो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा हो, वालामारा, भवनो संशय भाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीनें लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवभवनो लाहो लीधो, वाला० देहडी पावन कीधी रे ॥ सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनंता सीधा रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाभिराया सुत नयणे जोतां, वा० मेह अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुनः ॥ विमलाचल नित वंदिये, कीजै एहनी सेवा ॥ मानूं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उज्जल जिन गृहमंडली, तिहां दीपै उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें ॥ आई अंबर गंगा ॥ वि० २ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ करया, जात्राफल लहिये, तेहथी ए गिरि भेटतां, शतगणुं फल लहिये ॥ वि० ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पदं ॥

उतारे ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥ पूर्व नवाणूं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंड सोहामणो, कवडयक्ष अभिराम ॥ नाभिराया कुलमंडणो, जिनवर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवंदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा रश सिंधु ॥ जगती जन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमंधर जिन स्तवन ॥

सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासे जावजो ॥ मुझ वीनतडी, प्रेम धरीनें इण पर तुमे संभलावजो ॥ जे त्रणय भुवन ना नायक छे, जस चोसठ इंदर पायक छे, नाण दरशण जेहना क्षायक छे ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया छे, जश धोरी लंछन पाया छे, पुंडरीगणी नगरीनो राया छे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ वार पर्षदा मांहि विराजे छे, जश चोत्रीश अतिशय छाजे छे, गुण पेंत्रीस वाणीयें गाजे छे ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ भविजनने ते पडिबोहे छे, तुम अधिक शीतलगुण सोहे छे, रूप देखी भविजन मोहे छे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो छुं, पण भरतमां दूरे वसिओ छुं, महा मोहराय कर फसियो छुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरियो छे, तुम आणा खडग कर ग्रहियो छे, तब कांइक मुझथी डरियो छे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाऊं शूरो, तो वाधे मुझ मन अति नूरो ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आंखडियें रे में आज सेत्रुंजो दीठो रे, सवालाख टकानो दिहाडो रे, लागे मुंनें मीठो रे॥ सफल थयो म्हारा मननो उमा हो, वालामारा, ज्ञवनो संशय ज्ञाग्यो रे॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रज्जुजीनें लाग्यो रे॥ शेत्रुं० १॥ मानवज्ञवनो लाहो लीधो, वाला० देहडी पावन कीधी रे॥ सोना रूपानें फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षणा दीधी रे॥ शेत्रुं० २॥ दूधडे पखालीनें केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे॥ श्रीसिद्धाचल नयणे जोतां, पापमेवासी ध्रुज्या रे॥ शेत्रुं० ३॥ स्वयमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वा० वीरजिनंद इम बोले रे॥ त्रण ज्जुवनमां तीरथ मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे॥ शेत्रुं० ४॥ इंड सरीखा ए तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे॥ कायानी तो कासल टाले, सूरजकुंडमां नाहे रे॥ शेत्रुं० ५॥ कांकरे२ श्रीसिद्धक्षेत्रे, वा० साधु अनंता सीधा रे॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे॥ शेत्रुं० ६॥ नाज्जिराया सुत नयणे जोतां, वा० मेह अमीरस वूठ्या रे॥ उदयरतन कहे आज म्हारे पोते, श्री आदीश्वर तूठ्या रे॥ शेत्रुं० ७॥ इति॥

पुनः॥ विमलाचल नित वंदियें, कीजें एहनी सेवा॥ मानूं हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा॥ वि० १॥ उज्ज्वल जिन गृहमंडली, तिहां दीपे उत्तंगा, मानुं हिमगिरि विभ्रमें॥ आई अंबर गंगा॥ वि० २॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले॥ इम श्रीमुख हरि आगलें, श्रीसीमंधर बोले॥ वि० ३॥ जे सगला तीरथ करया, जात्राफल लहियें, तेहथी ए गिरि ज्ञेटतां, शतगणुं फल लहियें॥ वि० ४॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे॥ सुजश विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे॥ वि० ५॥ इति पदं॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलकं श्रीनाभिराजांगजं, वंदेरैवतशैलमौलिमुकुटं श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेअजितंजिनं भृगुपुरे श्रीसुव्रतंस्थंभने, श्रीपार्श्वंप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्द्धमानंत्रिधा ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प भुवनेग्रैवेयकेव्यंतरे, ज्योतिष्कामरमंदराद्रिवसतो स्तीर्थंकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे कुंडले, येचान्येपिजिनानमामिसततं तान्कृत्रिमाऽकृत्रिमान् ॥२॥ श्रीमद्वीरजिनास्यपद्मह्रदतो निर्गम्यतेगौतम, गंगावर्त्तनमेत्ययाप्रविभवे मिथ्यात्ववैताढ्यकं ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहृति त्रिपथगा ज्ञानांबुधावृद्धिगा, सामेकर्ममलंहरत्व विकलं श्रीद्वादशांगीनदी ॥ ३ ॥ शक्रश्चंद्ररविग्रहाश्चधरण ब्रह्मेंद्रशांत्यंबिका, दिग्पालाः सकपर्दिगो मुखगण श्चक्रेश्वरीभारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविधिः श्रीतीर्थयात्रादिषु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसंतुभद्रंकराः ॥ इति श्रीपंचतीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिझाय ॥

(नदी यमुनाके तीर उडे दोय पंखीया ॥ ए देशी) पिउजी पिउजी रे नाम जपुं दिन रातियां, पिउजी चल्या परदेश तपे मोरी छातियां, ॥ पगपग जोती वाट वालेसर कब मिले, नीर विछोह्या मीन के ते ज्युं टलवले ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिब विण नवि गमे, जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन भमें ॥ जो होव सज्जन दूर तोही पासे वसै, किहां सायर किहा चंद देखी मन उल्लसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै देह दीपक मनमें नही ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहनें, साले रे साल समान हियामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड जोवनवय अति दहै, जेहनो पिउ परदेश ते माणस दुःख सहै ॥

फुरी२ पंजर कीध काया कमला जिसी, हजुअ न आव्यो नेम मिली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहसु रंग टाल्यो ते नवि टलै, चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आंबा केरो स्वाद निंबू ते नवि करै, जे नाह्या गंगा नीर ते छीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या मालतीफूल धतुरे किम रमे, जेहने घीसुं प्रेम ते तेले किम जमे ॥ जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वांद्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनें ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती मनरली, रूपविजय प्रभु नेम भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिझाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सांधो को नही रे, तिण कारण म करो जीव प्रमाद रे ॥ जरा आव्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा गेम्हाने ह्या पाव रे ॥ आ० १ ॥ कुटंब कबीला नारी कारणे रे, मूरख संच्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठंभी झूरसे रे, सहीसे इह लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ ऊंचा चिणाव्या मंदिर मालिया रे, दे दे धरतीमें ऊंडी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्युं ऊठी चालवूं रे, सुख दुःख सहसे आपणो जीव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्रवर्त्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो वली इंद्र सुरानो नाथ रे ॥ कर्मी२ने उवेही आथम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अथिर संसार तजी मुनि नीसरचा रे, करता मुनि नवला तेह विहार रे ॥ भारंडपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे ममता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पाले रूडी रीतसुं रे, देवे मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोक्षने रे, जश लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता धरो रे, म करो मुनि जाणपणानुं अभिमान रे, कही चोथमल सूत्र

देखीने रे, जोम करी जालोर मझार रे ॥ आन० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमूं, समरूं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शेत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमूं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आबू ऋषभ जूहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरे, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानसुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेतशिखर तीरथ वरूं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैभारकगिरि ऊपरे, श्रीवीर जिनेश्वरराय ॥ ४ ॥ मांडवगढनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पोहचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवंदन ॥

दु विध धर्म जिन उपदिस्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजे जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दु विध ध्यान तुम्हे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया वीज दिन ॥ २ ॥ दोय वंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजिये ॥ मुझ परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजिये ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहिये ॥ अरजिन बीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥ ॥ ५ वर्त्तमान चोवीशीये, एम जिनकल्याण ॥ बीज दिने केइ पामिया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीये, हुआ वहुत कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपंचमीको चैत्यवंदन ॥

त्रिगडे वैठा वीरजिन, भाखे भविजन आगे ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरागे ॥ १ ॥ आराहो नवि नावसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासोसासमें, करै कर्मनो खेद ॥ पूर्व कोडी वरसा लगे, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पांचमे नगवान ॥ ६ ॥ पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच माशनी, पंचमी करो शुन्न दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउसग्ग लोगस्स केरो, ऊजमणूं करो नावशुं ए, टाले नव फेरो ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणो नाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी वरे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥ इति पंचमी चैत्य-वंदन सपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण वदि आठमें, संनव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या ऋषनजिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कस्या दूर ॥ अनिनंदन चोथा प्रनू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-रावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥ नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमें, नमि जन्म्या जगनाण ॥ तिम श्रावण सुदि आठमें, पासजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठम दिने, चविया

स्वामी सुपास ॥ जिनें उत्तम पद पद्मने, सेव्यांथी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभु केवल पायो, संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सित एकादशी, सोमल द्विज यज्ञ ॥ इंद्रभुति आदे मिल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसें चतु गुणाँ, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करै, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक शंसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलाशी ॥ रुषभ अजित सुमती नमी, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभ शिव वाश पास, भवभवना तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश क्षेत्रें त्रिहु कालनां, देढसें कल्याण ॥ वरश इग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अंग लखावियें, एकादश पाठा ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी ॥ मसी कागल काठा ॥८॥ अग्यार अव्रत छांमवा ए, वहो पमिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अवतार ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमंधर जिनवर सुखकर साहिब देव, अरिहंत सकलनी भाव धरी करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर भाषित वाणी, जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ (यह थुई च्यार वखते पण कहवाय छे)

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु अरजिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परसंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रभु, जासे शिववहु पासे जी ॥ १ ॥ वत्रीस चउसठि

चउसठि महिया, इगसय सठि उक्किठा जी ॥ चउ अड अड मिली मध्यम काले, वीश जिनेसर दिठा जी ॥ दो चउ च्यार जघन्य दश जंबू, धायई पुरकर मझारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारांगे, प्रवचनसार उद्धारेजी ॥ २ ॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी ॥ द्वादश अंग पूरब श्रुत रचिया, गणधर लब्धि विकसिया जी ॥ अपज्जवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसिया जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित संगी, विविध भंग व्रतधारी जी ॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हरनारीजी ॥ पंचांगुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश ऋद्धी जी ॥ श्रीशुभ वीर कहै शिवसाधन, कार्य सकलमां सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्रणमें चंद्रतणी जिहां रेख ॥ तिहां चंद विमानें शाश्वत जिनवर जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अभिनंदन चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें दिन प्रणमुं ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकास्यो बीजे द्विविध धर्म भगवंत, जेम विमला कमला विउल नयण विकसंत ॥ आगम अति अनुपम जिहां निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजे पातिकनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्केसरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोडीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय, इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज थुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंद तो ॥ स्यामव-

रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रभु आउखो ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए, पोहता मुक्ति मझार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या मुक्ति मझार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार तो ॥ पावापुरी नगरीमां वली ए, श्रीवीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत-शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, भाखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजै तास जतन्न तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर इम कहे ए, परहरिये परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यक्ष भलो ए, देवी श्रीअंबिका नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥ तपगच्छ नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिषभदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, भाव धरी सुरराजाजी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिनेश्वर जन्म महोत्वस, करतां शिवसुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापद परें बलीया जी ॥ आठसें आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुंता जिनवर, फरस आठ नहि अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य २ वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवसरण जिन राजे जी ॥ आठमे आठ सो आगम भाखी, भवि मन संशय भांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पालै निरतीचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारे, जीव दया चित धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा करीने, मानवभव फल लीजे जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे, निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहे, तपथी, कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्व मोटुं, कहो मुझसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणा, एकशो ने पच्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकतणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश जिनवर सयल सुखकर, जैसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखावियें, अगियार पाठां सार ॥ अगियार कवली विंटणा, ठवणी पूंजणी सार ॥ चावखी चंगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी इम ऊजमो, जेम पामिये भव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहनें, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शीश, शासनदेवी विघन निवारो, संघतणा निशदीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शच्याविभोः शैशवे ॥ रूपालोकनविस्मया, हृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टंनयनप्रभाधवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्त्रंयस्यपुनःपुनःसजयति, श्रीवर्द्धमानोजिनः ॥ १ ॥ हंसांसाहतपद्मरेणुकपिश, क्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसांपयोधरभर, प्रस्पर्धिभिःकांचनैः ॥ येषांमंदररत्नशैल-

शिखरे जन्माभिषकेःकृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणै, स्तेपांनतोहं क्रमात् ॥ २ ॥ अर्हद्वक्त्रप्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशालं ॥ चित्रंबव्हर्थयुक्तंमुनिगणवृषभै, र्धारितंबुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभूतंव्रतचरणफलं, ज्ञेयभावप्रदीपं ॥ भक्त्यानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिलं, सर्वलोकैकसारं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचंद्राभदंष्ट्रं ॥ मत्तंघंटारवेणप्रसृतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-दिव्यनागंविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यक्षःसर्वानुभूति र्दिश-तुममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकंद सर्वदिन स्तुति ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतितओ नेमजिणं मुणिंदं ॥ पासं पयासं सुगणिक्कठाणं, भत्तीइवंदे सिरिवद्धमाणं ॥ १ ॥ अपार संसार समुद्दपारं, पत्ताशिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सव्वे जिणंदा सुर-विंद विंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निव्वाणमग्गे वरजा ण कप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं ॥ नमामि निच्चंतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींदु गोखीर तुसारवन्ना, सरोज हत्था कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थयवग्ग हत्था ॥ सुहा यसा अम्ह सयापसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥श्रीशत्रुंजयगिरि तीरथ सार, गिरवरमांहे जिम मेरु उदार, ठाकुर राम अपार ॥ मंत्रमांहे नवकारज जाणुं, तारामांहे जिम चंद वखाणुं, जलधर मांहे जल जाणुं ॥ पंखीमांहे जिम उत्तम हंस, कुलमांहे जिम रुषभनो वंश, नाभितणो जे अंश ॥ क्षमा वंतमांहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महंता, शत्रुंजयगिरि गु णवंता ॥ १ ॥ रुषभ अजित संभव अभिनंदा, सुमतिनाथ मुख पद्मप्रभ सुखकंदा ॥ श्रीसुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधी, शीतल

श्रेयांस सेवो बहु बुद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत जिन धर्म ए शांती, कुंथु अर मल्लि नमुं एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध पंथी ॥ नमी पास ने वीर चोवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश, सिद्धगिरि आव्या ईश ॥ २ ॥ भरतराय जिन साथे वोलै, स्वामी शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ ऋषभ कहे सुणो भरतराय, छहरी पालंता जे नर जाय, पातिक भूको थाय ॥ पशु पंखी जे इण गिरि आवै,, भवत्रीजे ते सिद्ध ज थावै, अजरामर पद पावै ॥ जिनमतमें सेत्रुंजो वखाण्यो, ते में आगम दिलमांहे आण्यो, सुणता सुख भर आण्यो ॥ ३ ॥ संघपति भरत नरेसर आवे, सोवनतणां प्रासाद करावे, मणिमय मूरति गावै, नाभिराय मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी बहिन विख्याता, मूर्त्ति नवाणुं भ्राता ॥ गोमुख नें चक्केसरीदेवी, शेत्रुंजय सार करै नित्यमेवी, तपगछ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव सूरी प्रणामी पाया, ऋषभदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुतिः ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी, रूपाना कोशीला विराजै रत्नना दीवा दीपे जी ॥ कुंकुमवर्णी गहूंली विराजै मोतीना अक्षत सार जी, त्यां बेठा सीमंधरस्वामी बोले मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचंदन भरी रे कचोली क स्तूरी वरास जी, पहला रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमतें परभात जी॥

॥ अथ पंचिंदिय संवरणो ॥

॥ पंचेंदिय संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्तिधरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इय अठारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समत्थो ॥ पंच समईतिगुत्तो, छत्तीस गुणेहिं गुरुमज्झ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाइयवयजुत्तो, जावमणेहोइनियमसंजुत्तो ॥ छिन्नइअ सुहंकम्मं, सामाइयजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाइअंमिउकए, समणो इवसावउहवइजह्मा ॥ एएणकारणेणं, वहुसोसामाइयंकुज्जा ॥ २ ॥ सामायक विधें लीधु विधें पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ होइ ते सवे हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ दश मनना दश वचनना वारे कायाना एवं वत्तीस दूषणमांहे जे कोइ दूषण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चंदवडिंसोसुदंसणोधन्नो ॥ जेसिंपोसह पडिमा, अखंडिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासलाहणिज्जा, सुलसा आणंदकामदेवाय ॥ जेसिंपसंसइभयवं, दढवयंतंमहावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधे लीधुं विधें पारियुं विधि करतां जो कोइ अविधि हुउ होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सह भगवन् चैत्यवंदन करूं, इछं ॥ जग चिंतामणि जगनाह जगगुरु जगरखण ॥ जगवंधव जगसत्थवाह, जगभाव वियखण ॥ अठावय संठविअरूव, कम्मठ विणासण ॥ चउवीसं पि जिणवर जयंतु, अप्पडिहय शासण ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं२ पढम संघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरंत लप्भई ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडि सहस्स नव साहू गम्मई ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणहकोडी सहस दोअ, थुणि अभ निच्च विहाणि ॥ २ ॥ जयउसामी२ रिसहसंत्तुंजि उज्जिंत पहू नेमजिण ॥ जयउ वीर सच्च उरमंडण, भरुअछहि मुणिसुव्वय ॥ महुरिपास

छुइ छुरिय खंमण, अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंदु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छपन्न अठ कोमीउ, बत्तीसय बासीआइ, तिय लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी बायाल लक्ख अमवन्ना ॥ छत्तीस सहस असियाइं, सासय बिंबाइ पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा जणिउ ॥ १ ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुजय, अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निकंखिअ, निवि त्ति गिछा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वछल पजावणे अठ ॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिंसमईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥ एस चरित्ता यारो, अठविहो होइनायव्वो ॥४॥ बारसविहंमिवि तवे, अब्भिंतर बाहिरे कुशल दिठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वा सो तवायारो ॥ ५ ॥ अणसण मुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसचाउ काय किलेसो संली ण याय, वज्ञो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायछित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्ञाउ ॥ झाणं उस्सग्गोविय, अब्भिंतर उ तवो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिक्कमइ जो जहुत्त माउत्तो ॥ जुंजइअ जहाथामं, नायव्वो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेशरं ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मंपुनातुवः ॥ १ ॥ येषामभिषेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षभरात् सुखं सुरेंद्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते जिनेंद्राः ॥२॥ कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदोदयं॥

अपूर्वचंद्रं जिनचंद्रजाषितं, दिनागमे नौमिबुधैर्नमस्कृतं ॥४॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवतानी स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसग्गं० सुअ देवया जगवई, ना णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जोसिं सुअसायरे जत्ती १

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहएहिं ॥ साहं ति मुख्कमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने श्रा वक श्राविका कटासणुं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वस्त्र पहरी ज ग्या पूंजी कटासण ऊपर वैशी मुंहपत्ती मावा हाथमां मुख पासे राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवकार गणी (पंचिंदिअ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी अन्नथ्थऊससिएणं कहे, १ लोगस्सको अथवा च्यार नवकारनो काउ सग्ग करै (पारी) प्रगट लोगस्स कहै, खमासमण देई इच्छाका रेण संदिस्सह जगवन् सामायक मुंहपत्ती पमिलेहुं इच्छं । इम कही मुंहपत्ती तथा अंगनी पमिलेहणाना पचास बोल कही मुंहपत्ती प मिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामा यक संदिस्साउं इच्छं । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं इच्छं । एम कही बे हाथ जोमी एक नवकार गणी इच्छाकार जग वन् पसाय करी सामायकदंमक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व मेल करेमिजंते कहे, पठी खमासमण देई इच्छा० वेसणो संदिसा उं । खमा० इच्छा० वेसणेठाउं, खमा० इच्छा० सिझाय, संदिस्साउं खमा० इच्छा० सिझाय करुं इच्छं, एम कही त्रण नवकार गणवा । पठी बे घमी सज्झाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानी विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देइ इरियावही पडिकम्याथी (यावत्) लोगस्स सूधी कहो खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति, वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपार्युं तहत्ती कही पछी जमणो हाथ चरवला ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी सामाइयवयजुत्तो० कहिए, पछी जमणो हाथ आपना सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पारवानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पछी पाणी वावर्युं होय तो मुंहपत्ती पडिलेहवी अने आहार वावर्यो होय तो वांदणा बे देवा, तिहां बीजा वांदणामां आवस्सियाए ए पाठ नही कहिवो. पछी यथाशक्ति पच्चख्काण करवुं, पछी खमासमण देई इच्छा० कही वडेरायें अथवा पोते चैत्यवंदन कहवुं, पछी जंकिंचि० नमोत्थुणं० कही ऊभा थईने अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोर्हत्० कहीनें प्रथम थुई कहवी, पछी लोगस्स० सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीनें बीजी थुई कहवी, पछी पुख्करवरदी० कहो सुअस्सभगवओ करेमिकाउसग्गं वंदण० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी त्रीजी थुई कहवी पछी सिद्धाणंबुद्धाणं० कही वेयावच्चगराणं० करेमि काउसग्गं अनत्थ० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही चोथी थुई कहवी पछी बेसीनें नमोत्थुणं कहे, पछी चार खमासमण देवापूर्वक भगवान् आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यः प्रते थोभवंदन करीये. पछी इच्छाकारेण० देवसिक प्रतिक्रमणठाउं एम कही जमणोहाथ चवला अथवा कटा-

सणा ऊपर थापीने इच्छं सव्वस्सवि देवसिय० कहेवुं, पछी ऊभा थई करेमिभंते इच्छामिठामिकाउसग्गं जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कहीने अतीचारनी आठ गाथानो काउसग्ग करवो, आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो. ते काउसग्ग पारीनें लोगस्स कहेवुं, पछी बेसीनै त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवा, पछी ऊभा थईने इच्छाकारेण० देवसियं आलोउं इच्छं आलो एमि जोमेदेवसिउ० कहीने सातलाख कहवा. पछी अढार पाप स्थानक आलोइये, सव्वस्सविदेवसिअ कहीने बेसवुं, बेसीनें एक नव कार गणी करेमिभंते इच्छामिठामिपडिक्कमिउं कहीने वंदित्तु कहेवुं पछी वांदणा बे देवा, पछी अब्भुट्ठिओमिअब्भिंतर देवसिअं खामीनें वांदणा बे देवा, पछी ऊभा थई आयरियउवज्झाए कहीने करेमि भंते० इच्छामिठामि० जोमेदेवसिउ० तस्सउत्तरी० कही बे लोगस्स अथवा आठ नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स कही सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं वंदणवत्ति० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने पुक्खरवरदी० सुअस्सभ गवओ करेमिकाउसग्गं० वंदण० कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं० कही सुय देवयाए करेमिकाउसग्गं अनत्थु० कही एक नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहेली थुई कहवी अने स्त्रिये कमलदलनी पहली थुई कहवी. पछी खेत्रदेवतानी बीजी थुई स्त्रिये तथा पुरुषे बन्नेए एकज कहवी. पछी १ नवकार प्रगट गुणी बेसीने छठ्ठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेहीनें बे वांदणा दीजै, पछी सामायक चउवीसत्थो वंदनक पडिकमणुं काउ- सग्ग अने पच्चक्खाण करूंछुंजी एम ए छए आवश्यक संभारवा. पछी इच्छामो अणुसट्ठिं नमोखमासमणाणं० कही नमोर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संसारदावानी त्रण थुई कहे पछी नमोत्थुणं कही स्तवन कहवुं, पछी वरकनक कही जगवान आदे वांदवा, पछे जमणो हाथ उपधी ऊपर थापी अढाइज्जेसु कहेवुं, पछी देवसिअपायच्छित्तनो काउसग्ग च्यार लोगस्स अथवा शोलनवकारनो करवो, काउसग्ग पारी प्रगट लोगस्स कही बेसीने खमासमण देई इच्छा० सिज्झायसंदिस्साउं, बीजुं खमासमण देई इच्छा० सिज्झायउणूं एम सिज्झायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिज्झाय कहवी, पछी एक नवकार गणी खमासमण देई दुःखक्खउकम्मक्खउनो काउसग्ग च्यार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वडेरे अथवा पोते पारीने नमोऽर्हत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्स कहे, पछी इरियावही० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी चउक्कसाय० नमोत्थुणं० कही जावंति बे कहीने उवसग्गहरं० जयवीयराय कही मुंहपत्ती पडिलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० सामायकपारुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० सामायकपार्युं तहत्ति कही पछी जमणो हाथ उपधि ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाइयवयजुत्तो० कहेवुं, पछी थापेली थापना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाथी समजवो ॥ इति देवशी प्रतिक्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम पूर्वली रीते सामायक लेवुं पछी इच्छामि० इच्छाका० कही कुसमिणनो दुसमिणनो च्यार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करी पारी प्रगट लोगस्स कहवो, पछी खमासमण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सूधी कहेवुं, पछी

च्यार खमासमणपूर्वक भगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसाधु प्रत्येके वांदवा, पछी खमासमण बे देई सच्चायनो आदेश मांगी एक नवकार भणीने भरदेसरनी सच्चाय कहीने फरी १ नवकार गणवो, पछी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहवो, पछी इच्छाका० राईपडिक्कमणेठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपीने पछी इच्छं सव्वस्सविराईय डुच्चिंतिय० कही नमोत्थुणं तथा करेमिभंते कही इच्छामिठामिकाउसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सव्वलोएअरिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो, पछी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदणव० कही अतीचारनी आठ गाथानो अथवा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी सिद्धाणंबुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा तिहांथी लेने अब्भुठ्ठिउमिखामी बादणा बे दीजे तिहां सूधी देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवे ते ठिकाणे राईयं कहेवुं, पछी आयरियउवज्झाए० करेमिभंते० इच्छामिठामि० तस्सउत्तरी कही तपचिंतामणी करतां न आवडे तो च्यार लोगस्स अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स कही छट्ठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पडिलेही वांदणा बे देवा, पछी सकल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तियें पच्चक्खाण करवुं, पछी इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामायकचउवीसत्थो वंदनक पडिक्कमण काउसग्ग पच्चक्खाण करयुं छेजी, एम छ आवश्यक संभारवा, पछी पच्चक्खाण करवुं होयतो करवुं छेजी अने धारवुं होयतो धारवुं छेजी, एम कहवुं, पछी इच्छामोअणुसट्ठिं० नमोखमासमणाणं० नमोर्हत्० कहीने विशाललोचन० नमोत्थुणं० अरिहंतचेइयाणं० कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी नमोर्हत्कही कल्याणकंदनी प्रथम थोय

कहवी, पछी लोगस्स० पुक्खरवरदी० सिद्धाणंबुद्धाणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पछी नमोत्थुणं कही भगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पछी जमणो हाथ उपधि उपर थापी अ-ड्ढाइज्जेसु कहेवुं पछी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवी-राय० काउसग्ग० थोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पछी खमा-सणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय काउ-सग्ग० अने थोय कहवी, पछी सामायक पारवानी विधियें सामा-यक पारवुं इति ॥

॥ अथ पख्की प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कही रहियै तिहांसूधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नात-स्यानी कहेवी, पछी खमासमण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह भग-वान् देवसियं आलोइयंपडिक्कंता इच्छा० पक्खियमुंहपत्ती पडिलेहुं एम कही मुंहपत्ती पडिलेहीये, पछी बांदणा बे दीजै, पछी इच्छा-कारेण० संबुद्धाखामणेणं अब्भुठ्ठिउहं अभिंतर पक्खियंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइयाणं जंकिंचिअप्पत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पक्खिअंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपक्खि-उअइयारोकउ कही इच्छा० पख्की अतीचार आलोऊं, एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पछी एवंकारे श्रावकतणें धर्मे श्रीसमकितमू-लबारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमांहे जे कोई अतीचार पक्षदि-वसमांहे सूक्ष्म बादर जाणतां अजांणतां हुउ होय ते सवे हुं मनकर वचनकर कायायेंकरी मिच्छामिदुक्कडं ॥ सवस्सविपक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिय दुच्चिठ्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् तस्स मिच्छामिदुक्कडं ॥ इच्छाकारिभगवन् पसाउ करी पख्की तपप्रशाद कराउ जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चउत्थेणं एकउ-

पवाश बेआंबिल त्रणनीवि च्यारएकाशणा आठबेआसणा बेहजार सज्झाय करी यथाशक्ति तप प्रवेश कर्यो होयतो पइठी कहीए, करवो होयतो तहत्ति कहीये, न करवो होयतो अणबोल्या रहीये पछी वांदणा बे दीजै, पछी इच्छाकारे० पत्तेयखामणेणं अब्जुठिउहं अभिंन्तर पक्खिअं खामेउं इच्छं खामेमिपक्खियं पन्नरसदिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचिअप्पत्तियं० पछी वांदणा बे दीजे पछी देवसियआलोइयपडिक्कंता इच्छाका० जगवन् पक्खियंपडिक्कमुं सम्मपडिक्कमामि इच्छं एम कही करेमिजंतेसामाइयं० कही इच्छामिपडिक्कमिउं जोमेपक्खिउ० कहवो पछी खमासमण देई इच्छाका० पक्खीसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु न होयतो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तु कहे, पछी सुयदेवयानी थोय कहवी पछी हेठा बेसी जमणोढींचण ऊन्नो राखी एक नवकार गणी करेमिजंते० इच्छामिपडि० कही वंदित्तु कहेवुं०, पछी करेमिजंते इच्छामिठामिकाउसग्गं जोमेपक्खिउ० तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कहीने (१२) बार लोगस्सनो काउसग्ग करवो, ते लोगस्स चंदेसुनिम्मलयरा सूधी कहवा अथवा अडतालीस नवकारनो काउसग्ग करी पारवो, पारीने प्रगट लोगस्स कही मुंहपत्ती पडिलेहीने बांदणा बे दीजे, पछी इच्छाका० समातिखामणेणं अब्जुठिउहं अभिंतर० पक्खिअंखामेउं इच्छं खामेमिपक्खिअं पन्नरसदि० कही पछी खमासमण देई इच्छाका० कही पक्खीखामणाखामूं एम कही खामणा च्यार खामवा पछी देवसीप्रतिक्रमणामां वंदितु कह्या पछी बे बांदणा देईने तिहांथी ते सामायक पारीये तिहांसूधी सर्व देवसीनी पेठे जाणवु, पण सुयदेवयानी थुईने ठिकाणे ज्ञानादि थोयो कहवी स्तवन अजितशांतिनुं कहवुं, सज्झायने ठिकाणे उवसग्गहरं तथा संसारदावानी थुई च्यार कहेवी अने लघुशांतिने ठिकाणे मोहटी

शांति कहेवी ॥ इति पक्खी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कह्या प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो विशेष, बार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउसग्ग करवो अने पक्खीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहवा, यथातपने ठेकाणे छठ्ठ्णं बे उपवास च्यार आंबिल छनीवी आठ एकाशणा शोल बेआसणा च्यारहज्जारसज्झाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजब एटलो विशेष पण पक्खीना बार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठ्ठमभत्त एटले त्रणउपवाश छआंबिल नवनीवी बारएकाशण चोवीश बेआसणा अने छहज्जार सिज्झाय ए रीते कहवुं अने पक्खीना आगारने ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधो ॥

नवकार पंचिंदिय कही इरियावही पडिक्कमवी. थापना होयं तो नवकार पंचिंदिय न कहवुं, पछी उस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही उभे पगे वेसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीउं कंदोरो आदिनुं पडिलेहण करवुं, पछी काजो काढी जीव कलेवर सच्चित्त आदि जोवुं, पछी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उभो रही इरियावही पडिक्कमे पछी काजो परठववा जग्या सोधी त्रणवार अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधी ॥

॥ अथ पच्चख्काण पारवानो विधि ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमिये, पछी जगचिंतामणीनुं चैत्य वंदन जयवीयराय सूधी करवुं पछी मन्हजिणाणंनी सिज्झाय कह वी, मुहपत्ती पमिलेही इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारूं यथाश क्ति० इच्छामि० इच्छाका० पच्चख्काणपारयुं तहत्ति एम कही जमणो हाथ चरवला अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नवकार गणी प चख्काण करयुं होय ते कहेवुं, ते लखिये छिये ॥ उग्गए सूरे नमोका रसहियं पोरसिं साढपोरसिं गंठिसहियं मुठिसहियं पच्चख्काणकरयुं चउविहार आंबिल नीवी एकासणुं बेआसणुं करयुं तिविहार पच्च ख्काण फासियं पालियं सोहियं तीरिअं कीट्टिअं आराहिअं जंचन आराहियं तस्समिच्छामिदुक्कडं ॥ एम कही १ नवकार गणवो ॥इति॥

॥ अथ श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥

पुख्कलवइ विजयें जयो रे, नयर पुंमरीगणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, राय श्रेयांसकुमार ॥ जिणंदराय धरज्यो धर्म सनेह ॥ (आंकणी)। मोहोटा नाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिशण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० २॥ गाम कुगाम न लेखवे रे, जग वरसत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वा सियो रे, छाया सवि आधार ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवि दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमे छो माहाराज ॥ मुझसुं अंतर किम करो रे, बांह ग्रह्यांनी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवितणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषभलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचक जश इम वीनवे रे, भयभंजण भगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ बीजनुं स्तवन ॥

(॥ फतमल पाणीमाने जाय ए देशी ॥) ॥ प्रणमी शारदमाय, शासन वीर सुहकरू जी ॥ बीज तिथी गुणगेह, आदरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह जिन पंच कल्याण, विवरीनें कहूं ते सुणो जी ॥ माहा सुदि बीजे जाण, जन्म अनिनंदनतणो जी ॥ २ ॥ श्रावण सुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुर थोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुन्न गाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्वल मासनी जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तब पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवलनाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित बीज रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड़ समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित गेड़ प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड़, पच्चख्काण व्रत चोकी सोवे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुन्नवरूप, उतरें चारित्र फल जिहां जी ॥ ९ ॥ शांति सुधारश वारी, पान करी सुख लीजीये जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीये जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीस मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासती जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीये जी ॥ देववंदन त्रिण काल, मन वच कायायें कीजीये जी ॥ १२ ॥ ऊजमणुं शुन्न चित्त, करी थरीयें संजोगथी जी ॥ जिनवाणी रस एम, पीजीये श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज,

राग ने द्वेष दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुजक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, जक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

(॥ पुण्य प्रशंसीये ॥ ए देशी ॥) सुत सिद्धारथ जूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, जाखे श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान जक्ति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतमतणारे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दंसण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवज्झाय रे ॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वह्नि जेम इंधन दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥ प्रथम ज्ञान पछे दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुणठाणांग पगथालीये रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ज० ५ ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावे साचवैरे, धर्मी धरी अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, जणतां करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुल थाय रे ॥ ज० ८ ॥ जणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लज चीज ॥ गुणमंजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ए ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधिकार पसायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

(॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥)

जंबुद्वीपना भरतमां रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरें भणवा मूंकिउ रे, आठ वरस जब हुंतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंम्ति यत्न करे घणो रे, गत्र भणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवमे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढें व्यापी देहमी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोभित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटमी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल वरसनी सा थई रे, पामी यौवनवेश ॥ डुर्भग पण परणे नही रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे, विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक भूपालने रे, दीध वधाइ जाम ॥ चतुरंगी सेना सजी रे, वंदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्मदेशना सांभले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ए ॥ ज्ञान विराधन परभवे रे, मूरख पर आधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसै डुःखीया दीन रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥ ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्त्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, भाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुऊ अंगजा रे, कवण कर्म विरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

(ढाल ३ ॥ सूरतो महिनानी देशीमां)

धातकीखंमना भरतमां, खेटक नयर सुठाम ॥ व्यवहारी

जिनदेव छै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चार ॥ पंमित पासे सीखवा, तातें मुक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वभावें रामतें, करतां दहाका जाय ॥ पंमित मारे जाहरे, मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवे, जणवानुं नही काम ॥ पांम्यो आवे तेम्वा, तो तस हणजो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खमिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने झाख ॥ ५ ॥ पाम्या परे मोहोटा थया, कन्या न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जाखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छै सहु कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे तादृशो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी जपनी, ज्ञान विराधन हेव ॥ ९ ॥ मुर्छांगत गुणमंजरी, जातीसमरण पामि ॥ ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ जज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार जपवास ॥ १२ ॥ पूरब जत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य फलादि जदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटतणो, साथियो मंगल गेह ॥ पोसहमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्यपंचमी, जज्वल कार्तिक मास ॥ जावज्जीव लगे सेविये, ऊजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

(॥ ढाल चोथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥)

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटांगणा ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कांबी खमिया लेखणी ॥

कवली फावली रे, चंद्रुआ ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ (त्रूटक) प्रासाद प्रतिमा तास नूषण, केसर चंदन फावली ॥ वासकूंपी वाला कूंची, अंगलूहणा गावफी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें धूपणा ॥ चरवला मुंहपत्ती साहमी वछल, नोकरवाली थापना ॥ ॥ २ ॥ (ढाल) ज्ञान दरिसण रे, चरणना साधन जे कह्या, तप संयुत रे, गुणमंजरीयें सद्दह्या ॥ नृप पूछे रे; वरदत्त कुंवरनें अंग रे ॥ रोग जपनो रे, कवण करमना नंग रे ॥ ३ ॥ (त्रूटक) मुनिराज नासै जंबुद्वीपें, नरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मल्या ॥ वैराग्य पामी नोग वामी, धर्म धामी संवरया ॥ ४ ॥ (ढाल) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी लहे, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे, अशुन्न जदय थयो अन्यदा, संथारे रे, पोरसी नणी पोढ्यो यदा ॥ ५ ॥ (त्रूटक) सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मांगे वायणा ॥ ऊंघमां अंतराय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या नूतफो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, नरथो पापतणो घफो ॥६ (ढाल) मन चिंतवे रे, कां मुऊ लाग्युं पाप रे ॥ श्रुत अन्यासो रे, तो एवफो संताप रे ॥ मुऊ बांधव रे, नोयण खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुणो मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ (त्रूटक) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुन्न ध्याने आयु पूरी, नूप तुऊ नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जफपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ नव दीठो रे, गुरु प्रणमी कहे शुन्न मनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञान जगत्त्रय दीवफो ॥ गुण अवगुण रे, नासन जे जग परवफो ॥ ए ॥ (त्रूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कह्यो किम आवरू ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासै, टाढ जेम घन तावरू ॥ नृप पभणे पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवरू ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधो, संपदा ल्यो बेवरू ॥ १० ॥ इति ॥

(ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥)

सद्गुरु वयण सुधारसे रे, भेदी साते धात ॥ तपसुं रंग लागो, गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस सयंवरा रे, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ नृपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भोग कांत गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें२ उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थई साधवी रे, वैजयंते दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे रे, गुणवंत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्षण लक्षित रायने रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या भरतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥ तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित भूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य उदार ॥ त० ॥ ए ॥ चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि मुक्ते गयो रे, सादिअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शुभापुरी रे, जंबुविदेह मझार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी च्यवी रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानससर जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३॥ पंचमी तप महिमा विषे रे, जाषे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४॥ इति ॥

(ढाल छठो ॥ करकंडुने करुं वंदना ॥ ए देशी)

चोवीश दंमक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे, हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गथी, हुं० ॥ त्रिसला उर सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे, हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे, हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधर्यो, हुं० ॥ चंमकोसियो साप रे, हुं० ॥ यज्ञ करंता बांह्मणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिषनदत्त वली विप्ररे, हुं० ॥ व्यासी दिवश संबंधथी, हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि ओषधनो जाण रे, हुं० ॥ आदर्यो में आसा धरी, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आणि रे, ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयसिंह सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पंचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ (कलश) इय वीर लायक विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोमर गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तर ज्ञाणुं संवत्सरे, श्रीपार्श्व जन्मकल्याण दिवसें सकल नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे ठाम धरमना साढापचवीश देश जो, दीपे रे त्या देस मगध सहुमां शिरे रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥१॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां आवी वीर समोसरया रे लो ॥ हां० चउद सहस मुनिवरना साथे साथ जो, सूधा रे तप संयम शियले अलंकरया रे लो ॥ २ ॥ हां० फूल्या रसभर फूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतुर्विध आवे कोमाकोम जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे होमाहोम जो, आगे रे रस लागे इंद्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण बेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जड्या रे लो ॥ हां० सुणतां दुंदुभि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानू अड्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे घन जेम लूंब जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी हरखी आवे जन मन लूंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे भर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो, आव्यो रे परवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० दइ प्रदक्षिणा वंदी बेठो ठाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे भायगे रे लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तब भगवंत जो, आणी रंजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमां गहगहे रे लो॥ ८ ॥ इति ॥ (॥ ढाल बीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपदिसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥ मोहनी नींदमां कां पमो, उलखो धर्मनां गण रे ॥ १ ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो, (ए आंकणी) परिहरो विषय कषाय रे ॥ बापमा पंच परमादथी, कां पमो कुगतमां धाय रे ॥ वि० २ ॥ करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले करी नवि सको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जूजूआ पर्व खटना कह्या, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आराधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराधतां, प्राणिउ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीरप्रज्ञु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ पमिहारनो, आठ पवयण फल होय रे ॥ नाश आठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजवतणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्ति दिन जाण रे ॥ पासजिन एह तिथें सिद्धा, सातमा जिन च्यवन माण रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंमवीरज लह्यो मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कल्याण रे ॥ एह तिथें वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारी जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

न्नांखियो वीरे आगमतणो, न्नविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे न्नवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोम रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोम रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ (कलश) एम त्रिजग न्नासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी संथुण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे न्नण्यो रंगे स्तवन ए आगमतणो, जे न्नविक न्नावे सुणे गावै कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरया ॥ जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोमिसुं परिवरया ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, न्नक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछै कृष्ण, क्षायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन्न परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार, कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय वताय, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्जल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पच्चाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥ ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥ नरपती वर्त्तमान चोवीशी, मांहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरपति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

न्निधान, साचो नृप प्रजापालणी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार जूषण चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति (ढाल बीजी) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ विनयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुऊ दिन एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वमबीज, शुन्न अनुबंधी थयो री ॥ २ ॥ मुनि न्नाषे महान्नाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शुन्गे री ॥ ४ ॥ सांन्नलि सफुऽ वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥ तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांन्नल केशवराय, आगलि जेह थसे री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समुद्रदत्त वसे री ॥ प्रीतिमती प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कूखें अवतार, सूचित्त शुन्न स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥ नाल निक्षेप निधान, नूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्न्न दोहद अनुन्नाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ वुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक न्नण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परण्यो री ॥ ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगियार कंचन कोम, नायक पुण्य न्नरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार, तिथि अधिकार कहे री ॥ सांन्नलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे री ॥ १२ ॥ जिन भन्यथ मुनि साख, न्नक्ते तप उच्चरे री ॥ एक

दशी दिन आठ, पहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ (ढालत्री जी) पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासनभ क्ते देवी शक्तें, थंभाणा ते बापमा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धरया रांकमा जी ॥२॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ भेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूंकावी, शेठे कीधा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवश विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, नगरी सहू प्रशंसा करै जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥ ॥ ५ ॥ पुत्रनें घरनो भार भलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउ नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय छठसो अठम करे जी ॥ बीजा तप पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत धरे जी ॥ ७॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवना सुव्रतसाधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८॥ कर्मे नमियो पापे जमियो, सुर कहै जाउ औषधभणी जी॥ साधु न जाये रोष भराये, पाटु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥९॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी. जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे श्यामनें जी ॥ १०॥ (ढाल चोथी) कान पयंपे नेमने ए, धन्य२ यादव वंश, जिहां प्रभु अवतरया ए ॥ मुझ मन मानस हंस, जयो जिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावडी ए, समुद्रविजय धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी अवदात ॥ ज० २ ॥ चरण विराधी रूपनो ए, हुं नवमो वासुदेव ॥ जयो०॥ तिणे मन नवि उल्लसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गळ्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज० ॥ तोपण हुं न करी सकुं ए, दुष्ट कर्मना जेय ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजै सीझै काज ॥ ज० ॥ एहवा वचनने सांभ ली ए, बांह ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए, समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थाईस जिनवर बारमो ए, आवी चोवीशीयें साध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य पुरंदर रेवताचल मंमणो, बाण नंद मुनि चंद वरसे रा जनगेरे संथुएयो ॥ संवेग रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय गुरु अनुसरी, कपूरविजय कवि क्षमाविजय गणि, जिनविजय ज यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीनुं हालरिऊं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणें, गावे हालो हालो हाल रुवानां गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जम्यिुं पालणुं, रेसम दोरी घूघरी वागे घुमघुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रभुथी वरस अढीशें अंतरे, होसे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभली, साची साची हुइ ते मारे अमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने होवै चक्री के जिनराज, बीता बारे चक्री नहि हुवे चक्रीराज ॥ जिनजी पास प्रभुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चो- वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कूखें आव्या त्रण्य भुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी थई आज ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुझनें मोहलो उपन्यो जे बेसुं गजअंबाडीयें, सिंहासण पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुझने नंदन ताहरा ते- जनां, ते दिन संभारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंगें लंछन सिंह विराजतो, में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकमाल, ह ससें भोजाइयो कहो देवर माहरा लाडका, हसशे रमशे नें वली चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली ठुंसा देसे गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडाराजाना भाणेज छो, नंदन नवला पांचसें मामीना भाणेज छो, नंदन मामलिआना भाणेजा सुकमाल ॥ हशशे हाथे उछाली कहीने नाहना भाणेजा, आंख्युं आंजीनें वली टबकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडिया झालर मोती कशबीकोर ॥ नीला पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकिशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली सहु लावशे नंदन गजुवे भरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखडा जोईने लेशे मामी भामणा, नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपूर ॥ हा० ॥ ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी भत्रीजी ने बैन तमारी नंद ॥ ते पण गूंझे भरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाखटकानो घूघरो, वली शूडा मेंना पोपट नें गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तर नें वलि मोरजी, मामी लावशें रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांहि ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंडले, बहु चिरंजीवो आशीष दीधी तुमने त्यांहि ॥ हा० १२॥ तमनें मेरुगिरिवर सुरपतिये नवराविआ, निरखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥ हा० १३ ॥ नंदन नवला न्हणवा नीशाले पण मूकशुं, गज पर अंबाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसलो नरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडलो लेशुं नीशाळीआने काज ॥ हा० १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूंने पधरावशुं, वर वहू पोंखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर सासर मा-रा बेउं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-हरे आंगण वूठा अमृत दुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ बिलीमोरा नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जय२ मंगल होजो दीपविजय कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिझाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना बोल्या महा पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे मायबाप रे ॥ निं १ ॥ दुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां ब लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगडां रे, कहो केम ऊजला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप संभालो सहुको आपणो रे, नींदानी मूंको परी टेव रे, ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भरया रे, के-हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-जो आपणी रे, जेम छूटकवारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-जो सहुको तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख पामशो रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पमिक्कमवाथी मांमीने यावत् लोगस्स कही पछी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्थुणं कही अरूधुं जयवी राय आजवमखंमा सूधी हाथ जोमी कहे, वली चैत्यवंदन कहीने नमोत्थुणं कही यावत् चार थोयो कहीये छीये तिहां सूधी बधू कहेवुं, पछी नमोत्थुणं कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी बधूं कहेवुं, पछी नमोत्थुणं तथा बे जावंती कही स्तवन कही अरूधुं जयवीअराय आजवमखंमा सूधी कही पछी चैत्यवंदन कही नमोत्थुणं कही आखो जयवीअराय कहेवो. इहां सवारे देववांदवा तेमां मन्ह जिणाणंनी सझाय कहेवी, अने मध्यान्हें तथा सांजें देववांदवामां सझाय न कहेवी ॥ इति देववांदवानो विधिः ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजी कृत चउमाशी देववंदन विधिः ॥

॥ प्रथम इरियावही पमिक्कमी काउसग्ग करी लोगस्स० कही एक खमासमण देइ इछाकाo श्रीरुषजजिन आराधनार्थं चैत्य वंदन करुं, एम कही चैत्यवंदन करे ॥ (श्री आदिजिन चैत्यवंदन लिख्यते) ॥ प्रथम जिनेसर रुषजदेव, सवछथी चविया ॥ वदि चजथें आषाढनी, शक्रे संस्तविया ॥ अछमी चैत्रह वदितणी, दिवसे प्रजु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया ॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि तेरशे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥ इहां नमोत्थुणं० अरिहंत चेइयाणं० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनो काउसग्ग पारी थुइ क्रमथी कहिये ते लखिये छीये ॥ (॥ अथ थोय जोमो प्रारंज ॥) रुषजजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषज लंछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय धणु गायां ते प्रजु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

त्रेवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरया निरधार ॥ गिरि कमणें आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रीपूनम दिनें ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे अंतगड सूत्र मझार, सिद्धाचले सीधा बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ सिरदार, जिन त्रेटे थावे सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी शासननी रखवाल, ए तीरथ केरी सांनिध करे संजाल ॥ गिरुओ जस महिमा संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरी नामें लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोत्थुणं जावंती बे कही नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जो, जगगुरु अवधार ललना ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीयें, वंछित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ० ॥ १ ॥ उपगारी अवनीतले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहनें, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें लहे, ए जुगतुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्षाग छे जेहनो, चढतो रश सुविशेप ललना ॥ जरतादिक थया केवली, अनुजव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुलमंमणो, मरुदेवी सर हंस ललना ॥ रुषजदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुषजजिन स्तवनं ॥ पछी जयवीअराय अर्धा कहेवुं, एक खमासमण देई इछा० श्री अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी तेरशें, चवीया विजयंत ॥ माह सुदि आठमें जनमिया, बीजा श्री अजित ॥ माह शुदि नवमें मुनि थया,

पोषी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, थया अक्षय कृपारस ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल कविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ ३ ॥ इति ॥ पछी नमोत्थुणं अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्ग करके थुईनी गाथा कहै. इसी तरै सर्वत्र विधि करवी॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ अजित जिनपतीनो, देह कंचन जरीनो ॥ भविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुझ पद लीनो, जेम जल मांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति अजित थोय ॥ ॥ अथ श्री शंभवनाथ चैत्यवंदन ॥

सत्तम ग्रैवेयक थकी, चविया श्री शंभव ॥ फागुण सुदि आठम दिनें, शुदि चवदशी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासें जनमीया, तणी पूनम संजम ॥ कार्त्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरूपम ॥ २ ॥ पंचमी चैत्रनी ऊजलो ए, शिव पोहता जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीझै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथथोयप्रारभ्यते ॥ जिन शंभव वारू, लंछने अश्व धारू ॥ भवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र दारू ॥ सुर तरुपरी वारू, दुसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अभिनंदनराया ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारशे ग्रहिय दिक्ख, पोष सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणनो नही पार ॥ २ ॥

॥ अथ स्तुति प्रारभ्यते ॥ ॥ अभिनंदन वंदो, साम्यमाकंद कंदो ॥ नृप संवरनंदो, घर्षितमशेषकंदो ॥ तमतिमिरदिणंदो, लंछने

वानरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥ श्रावण सुदि बीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम संजम ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चैत्र इग्यारश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें, नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजन व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापे ॥ अविचलपद आपे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नावें, जो प्रभुध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति थोय ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रभु चैत्यवंदन ॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठदिवसें ॥ कातो वदि बारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ सुगति वधू मनावे, रक्त तनुं कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतती सौख्य पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे ॥ १ ॥ अथ श्री सुपार्श्वजिन चैत्यवंदन ॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥ भादरवा वदि आठमें, अवतरिया खास ॥ जेठ शुक्ल बारसी जण्या, तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नाशे ॥ म

हिम मद्दि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपार्से ॥ सुरनर जस दास, संप दानो निवाश ॥ गाय न्नवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रन्न जिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रन्न जिन आठमा, चंद्रप्रन्न शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रेह ॥ पोष वदि बारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण वदनी सातमैं, केवल निराबाध ॥ न्नाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजे, नय कहे जिनअन्निधान ॥ २

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ ॥ शुन्न नरगति पामी, उद्यमें धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रन्न नाम स्वामी ॥ मुज अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति हरगामी, रेहन पुण्यें पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्फदंत ॥ फागुण वदि नवमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठें दिक्षा ॥ काती शुदि त्रीजें केवली, दिये बहु परें शिक्षा ॥ शुदि नवमी न्नाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद होय ॥ धीर विमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥ सुविधि जिन न्नदंत, नाम वलि पुष्फदंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म डुरंत, लब्धि लीला वरंत ॥ न्नव जलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथचैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पथकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दिख्या, तस बारसें लीध ॥ वदि पोष चवदश दिने, केवली पर सिद्ध ॥ वदि बीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय

प्रारम्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वालही तुझ सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तूंही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम छै नित्य मेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु दुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांश जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी चव्या, श्रेयांश जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठ, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि वारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माह अमावशि, देशन चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अक्षय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ सवि जिन अवतंस, जास इक्षागवंश ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हंश ॥ कृतभय विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांश ॥ वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश ॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतथी इहां आविया, ज्येष्ट सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥ माह शुदि बीजे केवली, चौदशि आषाढी ॥ शुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुमरंगे काय ॥ श्रीनयविमल कहे इसुं, जिन नमतां सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ वासुदेव नृप तात, श्रीजयादेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यावतां दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अष्टम कल्पथकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ शुदि महा त्रीजें जण्या, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोष छठें लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातमि आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदिये ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दिये, पुण्य परिघल वित्त ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ

थोय प्रारम्यते ॥ विमल२ आवे, वंदतां दुख जावे ॥ नव निधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुघर लंछन कावे, जोमि आरस्वेद थावे॥ मनु विनति जणावे, स्वामिनुं ध्यान ध्यावे ॥१ इति॥

॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥ वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमाए, कीधा दुष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ १४॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते॥अनंत जिन नमीजे, कर्मनी कोटि छीजे॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज मोह दीजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुझ मन अति रीझे, स्वामिनुं कार्य सीझे ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ धर्मनाथ जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि सातमें, चविया श्रीधर्म ॥ विजयथकी माहमाशनी, शुदि त्रीजें जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये संजमभार ॥ पोषिपूनमें केवली, गुणना भंडार ॥ जेठी पांचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांह भीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो, नवि होय ते दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥ ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥ भाद्रवा वदि सातम दिने, सव्वठ्थी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जणया, दुःखदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥ केवल ऊजलपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवडा ए शोलमा श्री जिनराज॥जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥ जिनपति

जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सस भय इति वारी ॥ सहस चउसहि नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गंध धूली ॥ भरी पुष्प पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें भाव भोली ॥ २ ॥ शुभ अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वलि मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य माकंदकंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्रा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ मोतीभानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरुकंदा, शांतिकरण श्री शांतिजिणंदा ॥ साहिबा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुझ विलगो, पलक मात्र न रहुं हिव अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, छंड्यो पण तुम्हें नवि छंडाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशुं नेह न लावो, वीतराग कही सवि समझावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर कहे एम समझे, पण गैरु दीघाथी रीझे ॥ सा० ॥ बालकना हठथी नवि चाले, जे मांगे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ भक्ति खांची मनमांहे आण्यो, सहज स्वभावें पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहरे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो छूटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥ सा० ॥ अभेदपणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रभु तो नीकलशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अरकयभाव निधी तुम पाश, आपी दासनें पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रभुताई, दीधी साहब एह व

काई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंथुनाथ चैत्य-वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिनें, सव्वथ्थी चवियो ॥ वदि चवदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणाया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, लीये संजमभार ॥ शुदि त्रीजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ पमिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल गण ॥ छहा चक्री जय करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥१७॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन कुंथु दयाला, छाग लंछन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला, कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति भवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला ॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथथी आविया, फागुण शुदि बीजें ॥ मृगशिर शुदि दशमी जण्या, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरियो ॥ काती उज्ज्वल बारसें, केवलगुण वरियो ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सातमचक्रीनें नमूं, नय कहे जोमी हाथ ॥१८॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संभारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत जयजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥ चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथे ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, जनम्या निग्रंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिनें, कल्याणक तीन ॥ फागुण शुदि बारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर नीलमा ए, नगरीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, भवजल तरण जिहाज ॥ १ए ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ जिन मल्ली महिला, वान छे जेह नीला, ए अचरज लीला, स्त्री पणें नाम पीला ॥ डुस्मन सवि पील्या, स्वामि जो छे वसीला ॥

अविचल सुखलीला, दीजिये सुण रंगीला ॥ १७ ॥ इति मल्लि स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपराजितथी आविया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारडी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि बारसें व्रत, वदि बारसें ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णें निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उजला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनराजना, सुरनरनायक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ मुनिसुव्रतस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुज अंतरजामी कामदाता अकामी ॥ दुःखदोहग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचैत्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसें, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अक्षय अनंता सुख ॥ नय कहे श्रीजिन नामथी, नाशे दोहग दुःख ॥१॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते॥ नमी जिनवर मानो, जेह नही विश्व छानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्यकेरो खजानो ॥ कनककमल वानो, कुंभ छे जे कृपानो ॥ स वि भुवन प्रमानो, तेहशुं एक तानो ॥ २१ ॥ ॥ अथ श्रीनेमीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि बारस ॥ श्रावण शुदि पंचमी जणया, यादव अवतंस ॥ श्राव सुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आषाढनी आठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिष्टनेमी अणपरणीया ए, राजमतीना कंत ॥ ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥२२॥ ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ गया शास्त्रागारे, शंख निज हाथ धारे ॥ कियो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥

संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंरु, सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज्ञवजलनिधिने तारे ॥कोहादिक मोटा, मच्छतणा ज्ञय बारे ॥ जिहां जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ ज्ञवि ज्ञाव धरीनें चित्त करीनें चाख्यो ॥३॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विरुारे ॥ समकित दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज्ञव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंज्ञ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घरुीयां, दो घरुीयां दो चार घरुीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमें गे आधार अरुवरुियां ॥ रहो० १ ॥ नाह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चरुियां ॥ रहो० २॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, गेरु दीए पशु पंखी चिरुियां ॥ रहो० ३ ॥ गोद विगाउं में बली जाउं, करुं वीनती चरणे परुियां ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे स्वपनमें सेजरुियां ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन, वारुी वन घर सेररुियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट ज्ञवांतर नेह निज्ञावत, नवमें ज्ञव ते वीगरुीयां ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमांहे स्वामी सुणीने, राजुल रेवतगिर चरुियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलरुियां ॥ रहो० ९ ॥ जादव वंश विज्ञुषण नेमजी, राजुल मीठी वेलरुियां ॥ रहो० १० ज्ञान विमल गुणे दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखरुीयां ॥ रहो० ११ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोष वदिदशमी ज-

नम; त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसैं, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमठासुर उपसर्गनो, टाल्यो पलीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथद्द दिनें ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल सुख भरपूर ॥२३॥ इति ॥ ॥अथ थोय प्रारम्भ्यते ॥ जलधर अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विमा रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोड्ि वारे ॥ मुझ प्राणाधारे, मात वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावें ॥ अ नुभव लय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ षट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाणे ॥ सवि जिनवर भाण, श्रीनिवासादि गण ॥ २ ॥ दशवि धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्त प्रकार, पच्चक्खा णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे भया जिहा उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि मल विशाला, ज्ञान लच्छी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ थारे मा थे पंचरंगी पाग सोनानो छेगलो मारूजी ॥ प्रभु पास जिनेसर भुवन दिनेसर संकरो, साहिबजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो, सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुछवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥ तूं अकय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमां, सा० ॥ ध्याये जे जोगी तुम गुण भोगी ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी निजमतें, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अभेसी नयमतें ॥ सा० २ ॥ षट् दर्शन भासे युक्ति निरासें शासनें, सा० ॥ स्याद- वाद विशालें सहज समाजे भावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानें ज्ञानें आतमध्यानें आतमा, सा० ॥ परमागम वेदी भेद अभेद नही त-

मा ॥ सा० ३ ॥ एक अनेके बहुत विवेके देखियें, सा० ॥ आत म ततकामी अगुण अकामी लेखिये ॥ सा० ॥ सवि गुण आरा मी छो बहुनामी ध्यानमां, सा० ॥ आपे गतनामी अंतरजामी ज्ञा नमा ॥ सा० ४ ॥ तूं अनियतचारी नियत विचारी योगमां, सा० ॥ अध्यातम सेली एम बहु फेली आगमें ॥ सा० ॥ तूं धर्म सन्या सी सहज विलासी समगुणें, सा० मोहारि विनाशी तूं जितका शी कवि भणे ॥ सा० ५ ॥ ज्ञानदर्शनक्षायक गुणमणी लायक नाथ छै, सा० ॥ दुर्गति दुःखघायक गुणनिधि दायक हाथ छै ॥ सा० ॥ जित मनमथ सायक त्रिभुवन नायक रंजणो, सा० ॥ अ नेकांती एकांती तूं वेदांती अगंजणो ॥ सा० ६ ॥ ध्यानानल योगें पुदगल भोगें ते दह्या, सा० ॥ अंतररिपु हणिया मूलथी खणिया न वि रह्या ॥ सा० ॥ तूं हेतू समीयो सुरवर नमीयो सहु कहे, सा० ॥ ए जगथी न्यारो चरित्र तुमारो कुण लहे ॥ सा० ७ ॥ इम तुम गुण थुणियें कर्मने हणिये पलकमां, सा० ॥ पण नवि अवगणियें सेवक गणिये ललकमां ॥ सा० ॥ वामाचे नंदा त्रिभुवन इंदा संथुणे, सा० ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा तुम पय वंदा गुण भणे ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीवर्द्धमान जिनचैत्यवंदन ॥ शुदि आषाढ छठ दिवसें, प्राणतथी चवि या ॥ तेरस चैत्रह शुदि दिने, त्रिसलायें जणिया ॥ मृगशिर वदि दशमी दिने, आपे संजम आराधे ॥ शुदि दशमी वैशाखनी, वर केवल साधे ॥ काती कृष्ण अमावशी ए, शिवगति करे उद्योत ॥ ज्ञानविमल गौतम लहे, पर्व दीपोत्सव होत ॥ २४ ॥ इति ॥ ॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ लह्यो भवजल तीर, धर्म कोटीर हीर ॥ दुरति रज समीर, मोह मूलार सीर ॥ दुरित दहन नीर, माण ॥ कप्पें सग्ग कर पणसय घणु माणुं. सासय असासर्य

मेरुथी अधिक धीर ॥ चरम श्रीजिनवीर, चरण कल्पद्रु कीर ॥ ॥ १ ॥ इम जिनवर माला, पुण्य नीर प्रवाला ॥ जगजंतु दयाला, धर्मनी शास्त्रशाला ॥ कृत सुकृत सुगाला, ज्ञानलीला विशाला ॥ सुरनर महिपाला, वंदता है त्रिकाला ॥ २ ॥ श्रीजिनवर वाणी, द्वादशांगी रचाणी ॥ सुगुण रयणखाणी, पुण्य पीयूष पाणी ॥ नवम रस रंगाणी, सिद्धि सुखनी नीसाणी ॥ दुह पीलण घाणी, सांभलो भाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगलमाला, टालीने मोहढाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजै विशाला ॥ ॥ ४ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ आज गइ थी हुं समवसरणमें ॥ ए चाल ॥ वंदो वीर जिनेसरराया, त्रिशलामाता जाया जी ॥ हरि लंछन कंचन सम काया, मुझ मनमंदिर आया जी ॥ वंदो वी० ॥ १ ॥ दूषम समये शासन जेहना, शीतल चंदन गाया जी ॥ जे सेवंता भविजन मधुकर, दिन२ होत सवाया जी ॥ वंदो० २ ॥ ते धन्य प्राणी सदगति जाणी, जस मनमां जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया जी ॥ वंदो० ३ ॥ कर्म कठिन भेदन बलवत्तर, वीर विरुद जिन पाया जी ॥ एकलमल अतुलीबल अरिहा, दुसमन दुर गमाया जी ॥ वंदो० ४ ॥ वंछित पूरण, संकट चूरण, मातपिता तूं सहाया जी ॥ सिंहपरे चारित्र आराधी, सुजस निशान वजाया जी ॥ वंदो० ५ ॥ गुण अनंत भगवंत विराजे, वर्द्धमान जिनराया जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, शुद्ध समकित गुणदाया जी ॥ वंदो० ६ ॥ इति ॥ इहां पूरण जयवीयराय कहेवो ॥

॥अथ श्री शाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पय ठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही,

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणाणं) २ (ए आकणी) विहुंतेर लक्ख सगशकोमि नवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशें नव्याशी कोमी, सगसठ बिंबह परिमाणं ॥ सही० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वरकारा कंचन, यमक कुंरु इह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगणयासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, च्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुचक कुंरुल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अरू शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चन सय लेवीस परिमाणं ॥ साठ चैवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंरू नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशें साठ ऊपर उर्द्धलोकें, जिन पमिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ९ ॥ त्रिजुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लक्ख बसें ब्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सुणजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश कोमी, तेम अठावन्न लक्खा ॥ उत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रतिमा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सन्ना तिहां साठ वधारो, एकशत अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ ऋषन्न चंडानन नें वर्द्धमान, वारिखेण चन नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमिमा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर नावना नावे, समकितगुण दीपावै ॥ परित्त संसार करी शिव जावै ॥ कुमति ते मन नावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाए ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोमि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सगला सीऊै, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ भयहर भगवंताणं जयधुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउसग्ग पारी पढी चार थोयो कहेवी ते लखिये बिये ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ रुषभदवे नमुं गुण निर्मला, डुधमांहे जिम भेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार बे, भवर मुऊने चित्त रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पमिमा प्रणमुं नित ऊगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ भविक देह सदा पावन करे, डुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन भासन कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुतावे दीपता, डुरित डुष्टतणा भय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहा एक जण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांभले ॥ पढी सर्वे जण काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥ पढी बेसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पढी सर्वे जण मुखथकी आवी रीते कहे--श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंमरीकायनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

अध्यातम गुणठाण ॥ १ ॥ (सही ए नमो जिणाणं) २ (ए आकणी) विहुंतेर लख्क सगकोमि नवणवई, सासय जिण हर माणं ॥ तेरशैं नव्याशी कोमी, सगसठ बिंबह परिमाणं ॥ सही० ॥३॥ मेरु वैताढ्य वख्कारा कंचन, यमक कुंम इह जाणुं ॥ एकत्रीश ओगण्यासी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिलख इक्याशी सहस चारसो, ख्यासी अधिक बिंब जाणुं ॥ रुच क कुंमल नंदीसर प्रमुखें, सुंदर अशी चेइयाणुं ॥ स० ॥५॥ अम शत सय सहस चालीसा, बिंबतणुं परिमाणं ॥ सरवाले बत्तीससें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ स० ॥ ६ ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चन सय तेवीस परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंम नंदी ठाणं ॥ स० ॥ ७ ॥ बार देवलोकें नव ग्रैवेयकें, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रे वीश चेइ जाणुं ॥ स० ॥ ८ ॥ एकसो बावन कोमि लख चोराणुं, सहस चमालीस आणुं ॥ सातशैं साठ ऊपर उर्द्धलोकें, जिन प मिमा मन आणुं ॥ स० ॥ ए ॥ त्रिभुवनमांहे सासय जिनहर, सगवन्न लख्क बसें ब्यासी ॥ आठ कोमि अथ प्रतिमा संख्या, सु णजो समकितवासी ॥ स० ॥ १० ॥ पन्नरशें कोमी बेंतालीश कोमी, तेम अठावन्न लख्का ॥ छत्रीश सहस अशी वलि साधिक, सासयबिंबनी संख्या ॥ स० ॥ ११ ॥ एकसो वीश त्रिवारे प्रति मा, चोमुखें शत चौवीश ॥ पांच सन्ना तिहां साठ वधारो, एकश त अशी जगीश ॥ स० ॥ १२ ॥ रुषभ चंडानन नें वर्द्धमान, वा रिखेण चन नामे ॥ व्यंतर ज्योतिषी मांहे असंख्या, जिनघर पमि मा माने ॥ स० ॥ १३ ॥ सकल सुरासुर नावना नावे, समकि तगुण दीपावे ॥ परित्त संसार करी शिव जावे ॥ कुमति ते मन नावे ॥ स० ॥ १४ ॥ पाताले ने तिर्यक्लोके, पणसय धणु परि

जाण ॥ स० ॥ १५ ॥ तीर्थ विशेष वली शासय विणु, सेत्रुंजादिक बहुला ॥ ते सविहूनें त्रिविधे नमतां, पातक जाये सगला ॥ स० ॥ १६ ॥ ज्ञानविमल प्रभु नाम जपंता, लहिये कोडि कल्याण ॥ मनह मनोरथ सगला सीझे, जनम सफल सुविहाण ॥ स० ॥ १७ ॥ भयहर भगवंताणं जयतुर, नमो जिणाणं सही ए ॥ नमो अविचल आदिगराणं, सही ए नमो अरिहंताणं ॥ सही० ॥ ॥ १८ ॥ इति श्री सर्व जिन नमस्कारः ॥ इहां एक लोगस्सको काउसग्ग चंदेसुनिम्मलयरा सूधी एक जण करे, ते काउसग्ग पारी पछी चार थोयो कहेवी ते लखिये छिये ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥ ऋषभदेव नमुं गुण निर्मला, दुध-मांहे जिम भेली सीतोपला ॥ विमल शीलतणा सिणगार छे, भव२ मुझने चित्त रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जिन केवली, जेह हसे विचरंता जे वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पडिमा प्रणमुं नित झगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम क्षीर महोदधी, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ भविक देह सदा पावन करे, दुरित तापर जोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनपशासन भासन कारिका, सुर सुरी जिनआणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुताये दीपता, दुरित दुष्टतणा भय जीपता ॥ ४ ॥ इति शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ ॥ अथ विधिः ॥ इहा एक जण मोटी शांति कहे (अने) बीजा सर्व काउसग्गमां सांभले ॥ पछी सर्वे जणा काउसग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कहे ॥ पछी बेसीनें एकवीश नवकार प्रगटपणें सर्व जण गणे, पछी सर्वे जण मुखथकी आवी रीते कहे--श्रीशेत्रुंजायनमः १ श्री पुंडरीकायनमः २ श्रीसिद्धक्षेत्रायनमः ३ श्रीविमलाचलायनमः ४ श्री सुरगिरयेनमः ५ श्रीमहागिरयेनमः ६ श्रीपुण्यराशयेनमः ७ श्री

पर्वतायनमः ८ श्रीपर्वतेंद्रायनमः ए श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री शाश्वतायनमः ११ श्रीदृढशक्तयेनमः १२ श्रीमुक्तिनिलायनमः १३ श्रीपुष्पदंतायनमः १४ श्रीमहापद्मायनमः १५ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः १६ श्रीसूरनगिरयेनमः १७ श्रीकैलाशगिरयेनमः १८ श्री पातालमूलायनमः १ए श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा यनमः २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने, पछे पांचतीर्थना पांच स्तवन कहवा ते लखिये छिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलमी रायणतरूतले, साहेलमियां ॥ पीलमा प्रजुजीना पाय, गुणमंजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याइयें, सा० ॥ एहीज मुग ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतमी छायाये बेसीये, सा० ॥ रातमो करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलमे, सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे शिव लहे, सा० ॥ थाये निर्म ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षणा, सा० ॥ दीए एहने जे सार ॥ गु० ॥ अजंग प्रीति होए जेहनें, सा० ॥ जव२ तुम आ धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे, सा० ॥ शाखा थम ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाछे, सा० ॥ तीरथनें अनुकूल ॥ ॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मनें, सा० ॥ सेवो एहने उछाह ॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु जाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम मांहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीसत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होला० कामें० ॥ ए चाल ॥ नेम निरंजन देव के सेव सदा करुं, हो लाल के ॥ सेव० ॥

अहनिश ताहरूं ध्यान के दिल मांहे धरूं हो लाल, दि० ॥ शंख लंछन गुणखाण के अंजन वान छे हो लाल के अं० ॥ राजिमतीना कंत के परण्या विणुअ छे हो० प० ॥ १ ॥ तूंहीज जीवन प्राण के आतमराम छे हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के ताहरूं नाम छे हो० ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन नितु नितु वंदता हो० नि० ॥ कीजीये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथ राज रही गढ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील सन्नाह उदास एसी धरे हो० ऊदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि तुह्ले अधिकुं करयुं हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धोर महाव्रत आचरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे तेह उवेखीनें हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवां देखीने हो० पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत वली निज नारने हो० व० ॥ आपी संजमभार पहोचारी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणशुं जे प्रीत करे ते जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के ते विरला सुण्या हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥ तुह्ले तो दीधा छेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ करो मुझनें सदा हो० क० ॥ दिउ मुझ शिर हाथ होवे जस संपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नहीं हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोडो दोडे सही हो० घो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत निबलनें नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी जे ओडी किहां जाओ वही हो० कि० ॥ जे सज्जनसुं होय ते भीड न भंजीये हो० भी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्म न गंजीये हो० क० ॥ ७ ॥ तो दुसमन होय दूर कोणे नवि गंजीये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो० द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मलीनें कीजीये हो लाल म० ॥

॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीआबूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥

॥ आवो आवोनें राज श्रीअर्बुद गिरिवर जइयै ॥ श्रीजिनवरनी भक्ति करीनें, आतम निर्मल थइये ॥ आवो० ॥ विमलवसीना प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसमवर, कंठे टोडर ठवियें ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें पासे लूणग वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखी, दुःख दो हग सवि गमियें ॥ आ० ॥ २॥ सिद्धाचल श्रीऋषभ जिनेसर, रैवत नेम समरियें ॥ अे दो वसीनी यात्रा करतां, बिहुं तीरथ चित्त धरियें ॥ आ० ३ ॥ मंडप मंडप विविधि कोरणी, निरखो हियमैं ठरियै ॥ श्रीजिनवरना बिंब निहाली, नरभव सफलो करियें ॥ आ० ४ ॥ अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभकरम सब हरियें ॥ पाश शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्यो डुंगरीयें ॥ आ० ५ ॥ पाजे चढतां भजम वाधे, जेम घोडे पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी केशर, पापपडल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रभुनें ध्यातां, मनमांहे नवि डरियें, ज्ञानविमल कहै प्रभु सुपशायें, सकल संघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरी आया ॥ पुष्पक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १॥ श्रीजिन पूजियें लाल, समकित निर्मल कीजे ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ हीयमैं हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ (आंकणी) चउमुख चउगति हरण प्रशादें, चउवीशें जिन बैठा ॥ चउदिशि सिंहासन सम नाशा, पूरब दिशि दोय जिठा ॥ श्री० २

॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तरदिशि जाणो, एवं जिन चउवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वेगा सिंहतणे आकारे, जिनहर भरते कीधा ॥ रयणबिंब मूरत थापीनें, जग जशवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत वजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठमठमकावे ॥ श्री० ५ ॥ भक्तिभावें एम नाटक करतां, तूटी तंत विचाले ॥ सांधी आप नसा निजकरनी, लघुकलासुं ततकालें ॥ श्री० ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंमी, तो अक्षयपद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीनें, तीर्थंकर पद लाध्युं ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें भविजन जे जिन आगें, वहुपरे भावनाभावें ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुरनर नायक गावे ॥ श्री० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि भेटीये रे, मेटवा भवना पास ॥ आतमसुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ भवियां सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे॥ भवि० से० १॥ (आंकणी) समेतसिखर कलपें कह्यो रे, वीश टुंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शिव वस्या रे, वहु मुनिने परिवार रे ॥ भ० से० २ ॥ सिद्धक्षेत्र मांहि वस्या रे, भाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूपमां रे, दोय नय प्रभुजीना सार रे॥ भ० से० ३॥ आगमवचन विचारता रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ भ० से० ४ ॥ जयरथरायतणी परे, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदुःखने देइ अंजली रे, थायें सिद्धवधूनो संग रे ॥ भ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भवहेतु किरिया त्यागथी रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ भ० से० ६ ॥ जेह समें समकित थयो रे, तेह समये होय नाश ॥ ज्ञान

विमल गुरु भाखियो रे, आवश्यकभाष्यनी वाण रे ॥ भ० से० ॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववंदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणपर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरभेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्छव कीजै जी ॥ ढोल दमामा भेरी नफेरी, झल्लरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन आगल भावना भावी, मानवभव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण पूरव पुन्यें, आव्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वली दशम दुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय करीनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वडाकल्पनो छठ करीनें, वीरवखाण सुणीजै जी ॥ पडवानें दिन जन्म महोच्छव, धवल मंगल वरतीजै जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहियै, जो शुभ भावें रहियै जी ॥ तेलाधर दिन त्रणय कल्याणक, गणधरवाद वदीजै जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, ऋषभ चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥ वारशैं सूत्र नें समाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिसुं कीजै, सकल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणानें दिन सामीवच्छल, कीजै अधिक वडाई जी ॥ मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको बारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू भली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोरणथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पदमणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रंगीला नेम सुण माहरी अरदाश ॥ १ ॥ सहीवांसुं राजुल कहे हो लाल, मगसिर नायो पीउ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न धरै जीव ॥ हो० २ ॥ पोस महीनो आवियो हो लाल, आयो मो दुख देण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३ ॥ माहमहीने सी पडे हो लाल, प्रीउ संग पोढै नारी ॥ प्रीतम वि ण हूं एकली रे लाल, केम रहूं निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हुं किणसुं खेलूं हिवे हो लाल, पाश नही भरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चादणी रे ला ल, संजोगण सुख देण ॥ विरहणनें वालम विना रे लाल, रोवत जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमें रे लाल, मांजर रही महकाय ॥ अरज सुणो अबला तणी हो लाल, तपत मिटावो आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाझै कोम लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूछै मुझ वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे काली घटा हो लाल, झलमि आयो मेह ॥ कंत मिल्या निज नारसुं रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥ हो० ॥ ९ ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे झरला-इ ॥ इण रुत सूनां एकली हो लाल, क्यूं कर रैण विहाई ॥ हो० ॥ १० ॥ काली कालाहण मिली हो लाल, भाद्रवडै वर खंत ॥ अरज सुणीनें साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खंत ॥ हो० ॥ ११ ॥ आसोजे आंसू झरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न पूछी साहिबे हो लाल. राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥ काती हठ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥ संयम ले पिउ संहथे हो लाल, पामे भवनो पार ॥ इण पर पाले प्रीतमी हो लाल, धन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो तेच ॥ चंद भणी यों करे दया हो लाल, प्रभु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम राजुल बारेमासो संपूर्ण ॥

॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपछरा करती आरती जिन आगै, हांरे जिन आगे रे जिन आगे, हांरे ए तो अविचल सुखड़ा मागै, हांरे नाभीनंदन पास ॥ ॥ अप० ॥ १ ॥ तायेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हांरे दोय चरणे झांझर झमकै ॥ हांरे सोवनना घूघरी घमके, हांरे लेती फूदड़ी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंग ने वांसली डफ वीणा, हांरे रूड़ा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां, हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रभु जाया, हांरे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हांरे मे तो पूरब पून्यें पाया, हांरे तोरो देख्यो दीदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो, हांरे प्रभु सेवक हूं हुं तारो, हांरे भवोभवना दुखड़ा वारो, हांरे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो, हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखिउ करजो, हांरे जाणी पोतानुं बाल ॥ अ० ॥६॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिझाय ॥ देशी उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समरूं हो सिद्ध बुद्धरी दाता सारदा, लागुं गुरां रे पाय ॥ प्रभुगुण गास्यां हो नेमीसर साहिब जिनतणा, सुभमत आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरीपुरहुंती हो नेमीसर साहिब थे चढ्या, जान करी याडुाय ॥ हसती तो सिणगारया हो नेमीसर साहिब थे भला, घोड़लांरी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अधिका हो नेमीसर साहिब वाजता, आया तोरण वार ॥ महिल चढीने हो राजुल जोवे हरखसुं, मनमांहे हरख अपार ॥ ३ ॥ आंख फरूके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ दीसे छै भरतार ॥ वाड़ो तो भरीयो हो नेमीसर साहिब जीवनो, पशुवाणी पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊभो तो रथनें हो नेमीसर साहिब राखी-

थो, ए पशु बांध्या है किण काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर साहिब तुमतणो, सारथी कहे है महाराज ॥ ५ ॥ थोभा तो सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥ जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिब छोभिया, जीव सवे तिण वार ॥ ६ ॥ अणपरणी राजुल हो नेमीसर साहिब छोमने, जाय चढ्या गिरनार ॥ आठे तो करमांसुं हो नेमीसर साहिब जीतवा, लीधो संजमन्नार ॥ ७ ॥ राजुल तो फूरे हो नेमीसर साहिब एकली. जल विन मछली जेम ॥ नव न्नवारो हो नेमीसर साहि-ब छोमनें, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समफावे हो राजुल दुःख मत करो, एतो कालो है न्नरतार ॥ पाछे तो राजुल न्नापें हो सहेली मारी थे सुणो, इण न्नव ए न्नरतार ॥ ए ॥ रा-जुल तो चाली हो नेमीसर साहिब वांदवा, साथे तो घणुं रे परि-वार ॥ गिरनारे चढतां हो सब आगे पाछे नीकल्या, एकली रही है राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिब अ-तिघणा, न्नाज्या है सवि सिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल नारी अति न्नली, चीर निचोवे राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो वाज्या हो राजुलनारीरे अंगना, घूघरना ऊणकार ॥ ऊणका तो सुणिया हो रहनेमी वेठे ध्यानमें, खोली है पलक तिणवार ॥१२॥ रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वेठो ध्यानमें, कहे सुंदर करो मोसुं प्यार ॥ वोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढांकियो, मांनें छोमी हे नेमन्नरतार ॥ १३ ॥ न्नोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखांमनो, उलटी करे नांखे तेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पाछो नहीं न्नखे, न्नखसी काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हूं तो माता हो रहनेम थारे सारखी, हुं वमा न्नाईनी नार ॥ पाय तो धरस्यो हो रहनेम माहरे फागां, तो पमस्यो थे नरक मफार ॥ १५ ॥ एहवा तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपमा तो पहरया हो राजुलनारी आपणा, पुहती छै प्रनु दरबार ॥ १६ ॥ राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिब वांदिया, वांदीनें लीधो संजमन्नार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिब निरमलो, पुहती छै मुगति मकार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिब आगलै, मिलिया छै मुगति मकार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिब गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिझाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूछा करे, विनय करी शीस नमाय प्रनूजी॥ अविचल थानक में सुण्यो, कृपा करी मोय बताय प्रनूजी ॥ शिवपुरनगर सोहामणुं ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया आतम काज प्रनूजी ॥ छूटा संसारना कुख थकी, रहवानो किहां ठाम प्रनूजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उर्द्ध लोकमां, सिद्धशिलातणो गम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे, तेहना बारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस जोजना, लांबी पोहली जाण हो गोतम ॥ आठ जोजन जाम्मी विचै, वेरूे माखीपंख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ ऊजला हार मोतीतणा, गोडुग्ध संख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी ऊजली अतिघणी, उलटो छत्र संठाण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजनस्वर्ण शम दापती, पगारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन थकी निरमली, सुंआली अत्यंत वखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥ सिद्धशिला उलंघी गया, अधर रह्या सिद्धराज हो गोतम ॥ अलोकसुं जाई अऱ्या, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि० ॥ ७ ॥ जनम नही मरणो नही, नही जरा नही रोग हो गोतम ॥ वैरी नहीं मित्रो नही, नही संजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ भूख नहीं तिरखा नही, हरख नहीं नहीं सोक हो गो- तम ॥ करम नहीं काया नहीं, विषयारस नहीं योग हो गोतम ॥ शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नही, फरस नहीं नही वेद हो गोतम ॥ बोले नही चाले नही, मोनपणूं नही खेद हो गोतम ॥ ॥शि० १०॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नही उजाड़ हो गोतम ॥ काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गोतम॥ शि० ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नही ठाकुर नहीं दास हो गोतम ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वड़ाई वास हो गोतम ॥ शि० १२ ॥ अनंता सुखमें झिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो गोतम ॥ सहुकोईनें सुख सारिखा, सगलानें अविचल राज हो गोतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय हो गोतम ॥ अवर जग्या रूंधे नही, जोतमां जोत समाय हो गो तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित छे, केवलदर्शन खास हो गोतम, क्षायकसमकित दीपता, कदय न होवे उदाश हो गोतम ॥ शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उलखे, आणी मन वैराग हो गोतम ॥ शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गोतम ॥ शि० १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिझाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो द्यो अविरल वाणी ॥ कहुं सिलोको नेमिनाथकेरो, जादववंस मांहे वडेरो॥१॥ नगरी सोरीपुर पृथ्वीमें दीपे, रिद्धि समृद्धि अलकानें जीपे॥ राजा समुद्र विजे शिवादे राणी ॥ सीले रूपे कर अधिकी वखाणी ॥ २ ॥ तेहनोजी अंगज नेमजीनाथो, मुगतरमणसुं घाले छे बाथो ॥ आणंद घणों वसंत आयो, कुली बत्तीसे फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजा सारू चलिया गोपालो ॥ डफ चंग वाजे रंगे गुलालो ॥ रुखमण

राणी राधा सतभामा, बीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-नाथजीरो व्याह मंमायो, कुमरी राजुलनो सगपण करायो ॥ राजानें परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधाई, जादवरायरी जानज आई ॥ ढोलनें वरघू सखरी सरणाई, भुंगलनें भेरी सखरी सभाई ॥ ६ ॥ ताल कंसाल कुहके करनाला, गोरीजी गावे गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजे घूघरमाला, मदभरता मेंगल भाकभमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुंवरी परणन आयो, लाभी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती मांग भराई ॥ सीस फूलांरी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले भालै टीकोजी सोहै, अणियाली आंख्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जभावकेरा, नकवेसर मोती भलके भलेरा ॥९॥ दाभिमकुलियां दांत बत्तीसे, वदनी बोलै सार बत्तीसै ॥ डुलभी तिलभी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर कसिया कुंच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रूपैकर गोरी जीपे इंद्राणी ॥ भांभरनें नेवर घूघर घमकंती, हंसा तो जीपै सुंदर हालंती ॥११॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुधामे देही गरकाब कीधी ॥ फाबंते कपभै सखियां वणाई, राजूल राखी नार न काई ॥ १२ ॥ मृगानैणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखियां तिण विचालो ॥ इण विधसुं पदमण परणन आयो, मदसिरी रूपें मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोभजी ग्यानें जादव थाटो ॥ घणुं मछराला महा अभिमानी ॥ केसरिये वागे मिलिया है जानी ॥ १४ ॥ दुरदंत कुंवर हरिवंस केरा, वीजाही जानी नृपति भलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजाभै, जातां कालनें भाल पभ़ै ॥ १५ ॥ तिहां मांहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनंता सुरपतिसुं जुर अनंतो ॥ तारागणमांहे शोभे जु चंदो, तिण विध मांहे नेमजिणंदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पसुअ हुभाशा, अण-

परण्या नेमजी पाछाजी आया ॥ धिग् २ संसार मायाजंजालो, जामणाने मरण महा विकरालो ॥ १७ ॥ इण अनुक्रम नेमजी चारित लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल बाल ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १८ ॥ इति श्रीनेम नाथजीरो सिलोको संपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेठाणीका चोढालिया लिख्यते ॥ प्रह ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित नमूं ॥ धुर तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणिये, आचारज रे उपाध्याय मन आणिये ॥ (उल्लालो) आणिये निज मन भाव सुद्धै, उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमभूमिमांहे, साधु प्रणमुं ते वली ॥ जिम कृष्णपक्ष नें शुक्ल पक्ष वलि शील पाल्यो ते सुणो, भरतारने स्त्री बिन्हे तेहनो चरित भाविसुं भणो ॥ १ ॥ (ढाल) भरतक्षेत्र रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कच्छदेसै रे विजयसेठ श्रावक वसै, शीलव्रत रे अंधारापक्षनो लियो, बालापणै रे एहवो निश्चै मन कियो ॥ (उल्लालो) मन कियो एहवो तेण निश्चै पक्ष अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टालस्युं ॥ इकअठे सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्ल पक्षनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ (ढाल) कर्मजोगे रे मांहोमांहे बिहुंतणो, शुभ दिवसे रे हुवो विवाह सुहामणो ॥ तव विजया रे सोले शृंगार भला करी, पिउ मंदर रे पोहती मन उल्लट धरी ॥ (उल्लालो) मन धरी उल्लट अधिक पहुती पिया पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोलै शील निश्चो संभरी ॥ मुझ शील निश्चो पक्षअंधारे तेहना दिन तीन छै, ते नेम पाली शुक्ल पक्षे हुं भोग भोगविस्युं पछै ॥ ३ ॥ (ढाल) इ॰ मांभल रे वि-

जया मन विलखी थई, पिउ पूछे रे किम चिंता तुझने नई ॥ तब विजया रे कहे शुक्लपक्ष व्रतमें लियो, व्रत चोथे रे बालापण निश्चो कियो ॥ (उल्लालो) बालपणेंमें कियो निश्चो शुक्लपक्ष व्रत पालस्युं, तो उभय पक्ष हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥ तुह्मे अवर नारी परणने हिव शुक्लपक्ष सुख भोगवो, कृष्णपक्ष निज नियम पाली अभिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ (ढाल) तब वलतो रे तसु भरतार कहे इसो, विषयारस रे कालकुटविष हे तिसो ॥ ते बंन्नी रे शीलव्रत दोनुं पालस्यां, एह वार्त्तारे माता पिता न जणावस्यां ॥ (उल्लालो) मातपिता जब जाणस्ये तब दिख्य लेस्यां धर दया, इम अभिग्रह लेईनें ते भावचारित्रिया थया ॥ एकत्र सय्या सयन करतां खड्गधारा व्रत धरे, मन वचन काया करी सूधो शील बेउं आचरे ॥ ५ ॥ (ढाल २) विमल केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥ आणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहे विनयगुण परिवरयो ए ॥६॥ सहस चोरासी साधु, मुझ घर पारणो, करे मनोरथ तो फले ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहे श्रावक सुणो, एह वात तो नवि मिले ए ॥ ७ ॥ किहां एतला अणगार, किहां वलि सूझतो, भातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवे तेतलो ए ॥ ८ ॥ अछे हिवे कच्छदेश, सेठ विजय वली, विजया भार्या तसु घरे ए ॥ भावयती ग्रहवास, तेहनें भोजन, दीधां फल हुवे तेतलो ए ॥ ए ॥ जिण दास कहे भगवंत, ते मांहे एतला, कुण गुण कुण व्रत छे घणा ए ॥ केवली कहे अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपक्ष व्रतत णा ए ॥१०॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहे जग हूं वडो ए ॥ देशी ॥ केवलीनें मुख सांभली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कच्छदेसें हिव

आवियो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो, शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथी शिव सुख होई रे ॥ ध० ॥१२॥ सेठ विजय विजयाजणो, जगतसुं जो-जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥ ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूछै तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥ केवलीने मुख जिम सुण्यो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥ ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुनें, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥ कृष्ण शुक्लपक्ष दंपती, जोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ मातपिता जब जाणियो, प्रगट हूउ संबंध रे ॥ सेठ विजय विज-या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥ केवलीनें पाले, चारित्र लेइ उदार ॥ मनममता मूंकी, पालै निर-तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मु गते पहुंता, दंपत्ती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै, जावै जे नर नार ॥ ते वंछित सुख लहै, पहुंचै जवनें पार ॥१९॥ ॥ कलश ॥ इम कृष्णपक्ष नें शुक्लपक्षें शील पाल्यो निरमलो, ते दंपतीना जाव शुद्धें सदा शुजगुण सांजलो ॥ जिम डुरिय दो-हग दूर जायै सुख थायै बहु परै, वलि सकल मंगल मनह वंछित कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलांमे बेठी राणी कमलावती, कीणी तो उपजै मारग खेद ॥ जोवे तमासो इखुकार नगरमें, कौतक उपनो मनमें एह ॥ सांजल रे दासी आज नगरमें वददो किम घणो ॥ १ ॥ कांतो परधान सखी कंमीया, कां केइ लूंट्या राजा गांव ॥ कां कोइ गा-म्यो धन नीसर्यो, गाम रह्या है गामो गाम ॥ सां० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी कंमिया, ना कोई राजा लूंट्या

गांव ॥ भृग्गूपुरोहित धन तज नीसरयो, राजारै धन लेवा चाव ॥ सांभल हे राणी हुकम करो तो कोइ गाम्हो इहां धरां ॥ ३ ॥ बेटां तो तिणरा संजम लियो, वरज्यो घणयोंही पितामात ॥ ते पिण चारित्र लेवा ऊमह्या, भृग्गू जसा तियें मोह ललचात ॥ सांभल हे रा० ॥ ४ ॥ इम सुण कमलावतीराणी इम कहै, इहां तो कमी नहीं काय ॥ सांभलनें राणी माथो धूणीयो, राजारी म मता नही गाय ॥ सा० दासी राजानें ए वाता जुगती नही ॥ ५ ॥ महिलांसूं राणी कमलावती, आई छै राजारे हजूर ॥ वचन कहै राजानें आकरा, जाणे पोरस चढियो बोलै सूर ॥ सां० हो राजा ब्राह्मण छोम्ही ऋद्धि क्यूं आदरो ॥ ६ ॥ करजोम्ही कमला कहै, सां भल कंत सुजान ॥ ब्राह्मण जे ऋद्धि परिहरि, ते तो घर मांहे म त आण ॥ सांभल हो राजा० ७॥ ए ऋद्धिसुं अपणे कांइ घणो हुसी, राजारा मोटा छै भाग ॥ वमियें आहाररी वांछा कुण करै, कै कुतरा कै काग ॥ सांभल हो रा० ८ ॥ वमियो आहार पीछो नर भखै, नही परसंसवा जोग ॥ भृग्गूप्रोहित ऋद्धि तज नीसरयो, थे जाणयो छै असी म्हारे भोग ॥ सां० राजा० ॥ ए ॥ संकलपियोम्हो पाछो किम लियै, सांभल हो महाराज ॥ दान दियो थे पहिलां हाथसुं, ते पूछो लेतां नावै थांने लाज ॥ सांभल रा० १० ॥ निहचे तो मरणो राजाइक दिने, छोम्हीनें काम विशेष ॥बीजो तो जगमें सरणो को नही, तारै जिनजीरो धर्म एक ॥ सांभलहो रा० ११ ॥ सगलै जगतरो धन भेलो करी, थे घालो भंम्हारारे मांहि ॥ तोपिण त्रसना राजा पापणी, त्रिपत न मनम्हो थाय ॥ सान्भल हो राजा० १२ ॥ सांभलनें इखुकारराजा बोलीयो, तूं भाषैनी वचन संभाल ॥ का तनें राणी फोलो वाजियो, का काई कीधी मतवाल ॥ सांभल हो राणी राजानें करम्हा वचन

न बोलीयै ॥ १३ ॥ नातो राजाजी ऊोलो वाजीयो, ना कोइ कीधी मतवाल ॥ ब्राह्मणरो वमियो धन थे आदरो, वरजण आई हो नूपाल ॥ सान्नल हो रा० १४ ॥ वलतो राजा राणीने इम कहै, इसमी वैरागण थाय ॥ अजूं तो निजरां आवै नही, तूं बैठी छै वर मांय ॥ सांन्नल हे राणी० १५ ॥ ऊलरवाली तो दीसे नही, इसमी आई छै मतवाल ॥ हुंतो घर छोमीने नीसरी, थे पिण छोमो हो नूपाल ॥ सांन्नल हो राजा आग्या देवो तो संजम आदरुं ॥१६॥ रतन जमतरो राजा पिंजरो, तिणमें सुवटियो पमियो फंद ॥ इण रीते हूं थांरे राजमें, रहिने पांमु आणंद ॥ सांन्नल हो राजा आग्या० १७ ॥ सनेहरूपीया तांतण तोमनें, आरंन्न धनसुं रहस्यां दूर ॥ विरकत थई मौनपणें रह्या, थे पिण होयज्यो सूर ॥ सां० रा० आ० १८ ॥ दव तो लागी हो राजा वन मऊै, हिरण ससा बले मांय ॥ गिरधपंखी ज्युं आमिष देखनें, मनमांहे हरखित थाय ॥ सां० रा० राग द्वेषरा नांगा लग रह्या १९ ॥ मांहोमांहि खेधोईसको, दश प्राण रहित कीधो काल ॥ डुस्मन तो मनमें हरख पाम्यो घणो, जाणे ते माहरो मिटियो साल ॥ सां० राजा राग द्वे० २० ॥ इण दृष्टांते लोन्नी मूरख थका, मुरऊ रह्या न्नोगमांहि ॥ पहिलांने डुखियो देखी चेते नही, लागी राग द्वेषरी लाय ॥ सांन्नल हो राजा रा० २१ ॥ मांसरी बोटी पंखीरी चांचमें, नर पासै पंखी पमियो आय ॥ आमिष सम न्नोग छोमनें, चारित्र लेस्यां चित लाय ॥ सांन्नल रे प्राणी संयमथी सुख पामिये २२ ॥ महल पिलंगादिक अथिर छै, ते पाम्या छै आपणे हाथ ॥ कामन्नोगमें रकत होय रह्या, ते तज होय सांनाथ ॥ सांन्नलरे प्रा० २३ ॥ पांचे इंद्रीयारा न्नोग छोमने, द्रव्य न्नावे हलक थाय ॥ महन्न वायु पंखीनी परें, विचरस्यां आपणी दाय ॥

सांभल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपंखी ज्युं भोग जाणज्यो, ए काम बधारै संसार ॥ साप ज्युं मोर थकी डरतो रहै, ज्युं पापसुं संकस्यां इण वार ॥ सांभल रे प्रा० २५॥ शोक तजी संतोषसुं, लेस्यां संयमभार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार॥ सांभल रे प्रा० २६॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण२ खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांभल रे प्रा० २७॥ हस्ती ज्युं बंधण तोडनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमबंध तूटै संयम लियां, सुणो कहुं छुं महाराय ॥ सांभल हो रा० सं० २८ ॥ इम सुणनें इखुकारराजा चेतियो, छोडीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो ए तजतां दोहिलो, विप्र सहित सार्‍यां काज ॥ सांभल हो राणी सं० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह छोडकै, पायो जिनधरम सुजाण ॥ तपस्या सगलांही आदरी, उत्कृष्टो पराक्रम आण ॥ ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति दयाल ॥ भमरानी परै करै गोचरी, रिषि टालै दोष बयाल ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज छै, भव्यजीवनें उतारै पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समझनें, निरमल भावना भाव ॥ छए जणा थोडा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ सां० प्रा० सं० ॥ ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, भृगुपुरोहित जसा नार ॥ भृगुप्रोहितना दोय दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० स० ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा भृगुप्रोहित अधिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥दुहा॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ॥ दान शील तप भावना, बोलिस बहु संवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसर्‍या राजगृही उद्यान ॥ समवसरण देवें रच्यो, बैठा श्रीवर्द्धमान ॥ २ ॥

बेठी बारे परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रनु हुं वमो, मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण छै मुज समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोई नाम ॥ दीधांरी देवल चढै, सीधै वंछित काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरनें पारणे, कुण करस्ये मुज होम ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीबारे कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग सगलो वस करूं, मुज मोटी छै वात ॥ कुण२ दानथकी तिरचा, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥ धनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थंकर पद में दियो, तिणें मुजनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वमो, मुज सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा, दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती, पमिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुबाहू सुख लहे, ते तो मुज उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पमिलाज्यो ऋषिराय ललना ॥ शालिनद्र सुख नोगवै, दानतणें सुपसाय ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पांचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण ललना ॥ नरत थयो चक्रवर्त्ति नलो, ते पण मुज फल जाण ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उमदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलमी-रस वहरावियो, पाम्यो नवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पमिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव नव पारेवडूं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्तिपणें, प्रगट्यो पुन्य पमूर ललना ॥ दा० ए ॥ गजनव शशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ वतर्यो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में ऊधर्या, कहतां नावे पार ललना ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, मुझ पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दान तुं, किस्यो करै अहंकार ॥ आडंबर आठै पहुर, याचकसुं विवहार ॥ १ ॥ अंतराय वलि ताहरै, भोगकरम संसार ॥ जिनवर कर नीचो करै, तुझने पड्यो धिक्कार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान तूं, मुझ पूठै लक्ष कोय ॥ चाकर चालै आगले, तो स्युं राजा होय ॥३॥ जिनमंदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी दानदिये, शीयल समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले संकट सहु टले, शीले जश शोभाग ॥ शीले सुर सानिध करै, शील वड्यो वैराग ॥५॥ शीलै सर्प न आभडै, शीले शीतल आग॥ शीलै अरि करी केसरी, भय जावै सब भाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना भय थकी, में छोड्या अनेक ॥ नाम कहूं हिव तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहै जग हूं वड्यो, मुझ वात सुणो अति मीठी रे ॥ लालच लावै लोकनें, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग जाणीयें, वलि विरती नही पण कांई रे ॥ ते नारद में सीझव्या, मुझ जुओ ए अधिकाई रे ॥ शी० २ ॥ बांहे पहिर्या बैरखा, शंखराजा दूषण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीता रही, तो रामचंदै घर आणी रे ॥ शीतानो कलंक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी० ४ ॥ चंपाबार उघाडिया, वली चालणियें काढ्युं नीरो रे ॥ सतीय सुभद्रा जस थयो, में तसु कीधी भीरो रे ॥ शी० ५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयायें दूषण दाख्या रे ॥ शूली सिंहासण

मैं कियो, मैं शेठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरें, अवतां अरिदल थंभ्यो रे ॥ तिहां पिण सानिध मैं करी, वली धरम काज आरंभ्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट किया, मैं अठोत्तरसो वारो रे ॥ पांमवनारी द्रोपदी, मैं राखी माम उदारो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनबालिका, वलि शीलवती दवदंती रे ॥ चेमानी साते सुता, राजीमती सुंदर कुंती रे ॥ शी० ए ॥ इत्यादिक मैं उधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुंदर प्रनु वीरजी, पहिले मुऊ आनंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥ तप बोल्यो त्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुऊ आगल तुं किसुं, सांन्नल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा भोजन तें तज्या, जगमैं मीठा नाद ॥ देहतणी शोना तजी, तुऊमां किस्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्युं वखाण, कूम कपट बहु केलवी, जिम तिम राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुऊ आदरे, जंम. सहु संसार ॥ आप एक तूं नांजतो, बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ करम निकाचित तोमवा, नांजु जवनय नीम ॥ अरिहंत मुऊ आदरें, वरस बम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर ऊपरें, मुऊ लबधे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वता, आनंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायकतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुऊ कर फरसे उपशमें, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस ऊपजै, उत्तम तप संजोग ॥ ८ ॥ जे मैं तारया ते कहूं, सुणजो मन उल्लास ॥ चमत्कार चित्त पामसो, देशो मुऊ साबास ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलनी देशी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, हत्या कीधी चार हो सुंदर ॥ ते पिण तिण नव उधरयो, मूक्यो मुगति मऊार हो सुंदर ॥ १ ॥ तप सरखो जग को नही, तप करे कर्मनूं सूम हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कूम हो सुंदर ॥ त० २ ॥ सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन माली में ऊधरयो, छेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नंदिषेण नें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुत्तर सहस अतेउरी, सुख भोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घणो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लबधे कियुं, लाख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिबूऊव्यो, तिण मुऊ अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सहस अणगारमां, श्रीधन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, डुक्करकारक एह हो सुंदर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सत्रि तेह हो सुंदर ॥ त० ए ॥ नंदिषेण विहरण गयो, गणिका कीती [illegible] हो सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवनतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम बलभद्र प्रमुख बहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी, पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ भाव कहे तप तूं किसुं, छेमथुं करै कषाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कणमां खेरू थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज प्रतें, तें वाल्यो सवि देश ॥ अशुभ नियाणो तूं करै, क्षमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन ऋषि दूहव्या, सांब प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तव क्रोध करी तिहां, किधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांभलो, म करो कूठ गुमान ॥ लोक सहूको साख दे, धर्मे भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक छो त्रिण्हे, द्ये व्याकरणी साख ॥ काम सरै नहि कोइ तुं, भाव भणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तरुअर वृद्ध ॥ रसवति रस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फलै नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विध२कह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो भाव न हुंतती, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तारया बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥ (ढाल चौथी ॥ कपूर हुवे अति उजलो रे, एदेशी) ॥ काननमें काउसग्ग रह्यो रे, प्रसन्नचंद ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवली रे, ततखिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर, भाव वडो संसार ॥ एतो बीजो मुज परिवार, सो० ॥ दानादिक विण एकलो रे, पोहचाडूं भवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एलापूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो० ३ ॥ भूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाभथी लोभ वाधे घणो रे, आण्यो मन वैराग ॥ कपिल थयो मुनि केवली रे, ते मुजनें सोभाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गच्छनो धणी रे, खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगड केवली रे, गंगाजल गुण खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसें तापसभणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥ ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांनी सीख ॥ सो० ७ ॥ पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी छोडव्या रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंडरुद्रने चालतां रे, दीधो दंड प्रहार ॥ नवदीक्षित थयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पडिलाभ्यो उलास ॥ मृगलो भावना भावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥ निज अपराध खमावती रे, मूंक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें

में दियुं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मरुदेवी गज ऊपरे रे, देखी पूत्रनी ऋद्धि ॥ मुझनें मनमांहे धस्योरे, ततखिण पामी सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वंदन चाल्यो मारगे रे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामें देवता रे, तेह थयो मुझ संग ॥ सो० ॥ १३॥ प्रभु पाय पूजन नीसरी रे, डुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमां करी रे, पोहती स्वर्ग मझार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा कारमी रे, रूप किसुं अभिमान ॥ भरत आरीलाभुवनमां रे ॥ पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढभूति कलानिलो रे, प्रगट्यो भरतसरूप ॥ नाटक करतां पामियो रे, केवल ज्ञान अनूप ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन काउसग्ग रह्यो रे, गजसुकमाल मसाण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुभ झाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवली रे, सांभल पृथ्वीचंद ॥ पोते केवल पामियो रे, सेव करे सुर इंद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक में ऊधस्या रे, मूंक्या शिवपुरवास ॥ समयसुंदर प्रभु वीरजी रे, मुझने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर कहे तुमें सांभलो, दान शील तप भाव ॥ निंदा छे अति पापणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पिंड भराय ॥ वेढ राड वाधे घणी, डुर्गति प्राणी जाय ॥ २ ॥ निंदक सरिखो पापीयो, भूंडो कोइय न दिठ ॥ वलि चंडाल समो कह्यो, निंदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशंसा आपणी, करतो इंद नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निजगुण वृंद ॥ ४ ॥ को केहनी म करो तुम्हे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणें ठामे रहो, सहुको भलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधको भाव छे, एकाकी समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें भला, पण भाव विना अकयत्थ ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजता, अधिको आणो रेख ॥ रजमांहे

तज काढतां, अधिको न्नाव विशेष ॥ ७ ॥ न्नगवंत इग न्नंजण न्नणी, चारे सम्मान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चन्न विध धर्म न्नणंत ॥ ० ॥ ॥ ढाल ५ मी ॥ वीर जिणेसर इम न्नणे रे, वैठी परखदा बार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम पामो न्नव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे, न्नवियण सांन्नलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ डुर्गति पमतां प्राणिया रे, राखै श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति न्नूलो न्नवि न्नर्म रे ॥ ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे बै जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथी रे, मत कोई करो संदेह रे ॥ घर्म० ॥ ४ ॥ सोलेसे गसठ समे रे, सांगानेर मऊार, प्रद्मप्रन्नु सुपसानले रे, एह न्नणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे, खरतर गन्न कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मुनींद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महंत रे ॥ध०॥ ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचंद तस शीस ॥ समयसुंदर वाचक न्नणे रे, संघ सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ० ॥ दान शीयल तप न्नावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ न्नणतां गुणतां न्नावसुं रे, रुद्धि समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ए ॥ इति दान शील तप न्नाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्नथी दूर वारो ॥ संतोषवृत्ती धरो चित्तमांही, राग द्वेषथी दूर थाउ नन्नाही ॥ ॥ १ ॥ पड्या मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्धतत्वनी वात तेणे न

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंमी जुला कां जमो छो ॥ २ ॥ अलोजी अमानी निरागी तजो छो, सलोजी समानी सरागी जजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदीगंग मुकी गलीमां पमो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव उत्संगे राखेछे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांस जक्की महा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मांगे, केइ रुद्रणी छागनो जोग मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥६॥ जदा लोजना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो विंछुउ मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणी आस राखे, तेह पिंमने मन्नसुं लेश्र चाखे ॥ दीन हीननी जीम ते केम जाजे, फूटो ढोल होवे कहो केम वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता जजो मोक्षदाता, अलोजी प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ र-त्नचिंतामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंमसुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि जेह प्राणी कहेछे, सवि धर्म एकत्व जूलो जमेछे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शूरवीरं ॥ ए ॥ किहां स्वर्णथालं किहां कुंमखंमं ॥ किहां कोड्वान किहां क्षीरमंमं ॥ किहां क्षीरसिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूमवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देवजोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ किहां कर्म घाती किहां कर्म धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धी धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न माचे, जना मूढमां श्रेष्ठसुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंज रोसी, सजो पुण्य पोसी जजो ते अरोसी

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आस धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तूंही२ तुंही प्रभु पर्मरागी, भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी छै एक अर्ज मेरी, दीजै दासकूं सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुओ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ वंछित पूरे विविधपर, श्रीजिनसासन सार ॥ निश्चे श्रीनवकार नित, जपतां जैजैकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सैंमुख वदे, पंच परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरयां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र सिर मुकटमणि, सदगुरु भाषित सार, सोभवियां मन शुद्धसें, नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ (छंद हाटकी) नवकार थकी श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिव नाम कुमरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपंता नरक निवारै, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भक्ते चोखे चित्ते नित जपियै नवकार ॥५॥ बांधी वडसाखा छींके वैसी हेठल कुंड हुताश, तस्करने वलि मंत्र समप्यों श्रावक उड्यो तेह आकाश ॥ विधि रीते जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृतधार ॥ सो० ६॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर दुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टाली पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंता थाये जिनवर एहवो छै अधिकार ॥ सो० ७ ॥ पल्लीपति सीख्यो मुनिवर पासें महामंत्र मन शुद्ध, परभव ते राजसिंह पृथ्वीपति पाम्यो परघल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पुहुतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ८ ॥ सन्यासी कासी तप साधंतो पंचाग्नि परजाले, दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग अधबलतां

ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रजुवन अवतार ॥ सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण ध्याने कुष्ट टल्युं उंबरनुं रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपतां नवनिधि थाये धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमांहे कृष्णजुजंगम घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रजावे हारफूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतियें पिंगल कीधो पापतणो परिहार ॥ सो० ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहणी पामी बाण प्रहार, पद पंच सुणंतां पांमुपतघर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख महिमा मंदिर जवदुख जंजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संबल कादव काढ्या सकट पांचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामां लही विलसै जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार अनंत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम जाखै जगवंत ॥ पूरवदिसि चारे आदि प्रपंचे समरयां संपति सार ॥ सो० १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंमरगिरि ऊपर प्रत्यक्ष पेख्यो मणिधर नें इक मोर ॥ सद्गुरु सन्मुख विधियें समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहां सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी ऋद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्ठी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच सिझाय महाव्रत पंचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ (कलश ॥ छप्पय) नित्य जपियै नवकार सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपै जगनायक ॥ श्रीअरिहंत सुसिद्ध सुद्ध आचार्य जणीजें, श्रीउवझाय सुसाधु पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार

है कुशल लाभ वाचक कहै, एक चित्ते आराधता ऋद्धिसिद्धि वंछित लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणी लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥ जाकी छवि कांति अनोपम ओपित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-ज्योति झिगामिग झिगमग२, पूरण पूनमचंदा हे ॥ सत्र रूप सरूप वखाणहि भूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर लोक सबे मिल, जाका जस्स गुणंदा हे ॥ तेरी खिजमत्त करे इकचित्तसुं तो सेवक धरणिंदा हे ॥ तें जलता आग निकाल्या नाग, किया वड्भाग सुरिंदा हे ॥ तो चरणां आय रह्या लपटाय, कला अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन्न वन पंचागनि, ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी छुद्धाधारी, अल्प अहार लियंदा हे ॥ सब भेष सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा हे ॥ दिसि च्यारां दिठी बले अंगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥ महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्तां पास जिनंदा हे ॥ वामादे अरके कुण तो परके, मेरा हूंस पूरंदा हे ॥ तिहां चालो पुत्तां जिहां अवधुत्तां, जो गारंभ जगंदा हे ॥४॥ जननी मन आसा पूरण पासा, ऐरापत्ति सझंदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला उपंदा हे ॥ वर वीर घंटाला मद मतवाला, झोलाली झलकंदा हे ॥ ५ ॥ पंचरंगी पक्खर सझी सक्कर, ढालांसु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता अंकुस, मावत शीस दियंदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रभु ज्ञानी आखंदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अभिमानी तप अज्ञानी, पावक जीव जलंदा हे ॥ तिहां फाड उफाड दिखाले लक्कड, वड फणधर नागंदा हे ॥ नवकार सुणाया सुरपद पाया, तापस जस घटंदा हे ॥

तिण किया नियाणा तप खजाणा, कोमी सट्टे वेचिंदा है ॥ ७ ॥ हुयके क्रोधातुर आतुर सो कमठासुर धुर उपजंदा है ॥ अश्वसेन सुतन महाराज विषय दुख, जाणत आप तजंदा है ॥ पंचमुठी लोच किया आलोच, मनासुं सोच अफंदा है ॥ प्रभु अप्रतिबंध विहार कियो तब, रनबन वास वसंदा है ॥ ८ ॥ उपशम अणगारे काउसग्ग मझारे, कमठासुर दाव लहंदा है ॥ वमा असुराणा बली हेराणा, पिछाण विलोक धुखंदा है ॥ करि आतस क्रोध विचार विरोध, महा अभिमान धरंदा है ॥ वाउल मतवाली नीली काली, वायु महा वाजिंदा है ॥ ए ॥ रवि किरणा कोट रही रज ओट, दिवाकर तेज छिपंदा है ॥ कर घोर घटा चिकटा उमटी, अरु वाजू गाजंदा है ॥ गरमाटा वाटा सुणिया थाटा, ऐरापति लाजंदा है ॥ हुआ अकाला धुर वरसाला, बीजलिया पोवंदा है ॥ १० ॥ मोटी धारांसुं आरावांसुं, यों अंबू वरसंदा है ॥ चल्ले जल खाला नदियां नाला, हेमाला हालंदा है ॥ दरियाव उलट्टां केतो फुट्टां, पाणी नहि मावंदा है ॥ दिगपाल दहल्लां धरिय उत्थल्लां, खोणीपत्ति खिसंदा है ॥ ११ ॥ वम्मे पाहाम्मां ऊंगी झाम्मां, सझाम्मां ढाहंदा है ॥ सम दाहंदी रेल वहंदी, जाणक जग रेलंदा है ॥ वहु वासर वूठा जाण कि रुठा, ऊठा मन असुरेंदा है ॥ तेवीशम राया वनमें पाया, काउसग्ग कहा करंदा है ॥ १२ ॥ उवसग्गादंदी केल करंदी, पाछा नांहि मुरंदा है ॥ धरि मनमें ध्याना क्रोध न माना, निश्चल ध्यान धरंदा है ॥ प्रभु नासा तांइ नद्दी आई, तोही नांहि खुभंदा है ॥ देवारज जेसा धीर पएसा, पावस पीम सहंदा है ॥ १३ ॥ तिण अवसर वरदां धरणी धरदां, आसण वेग चलंदा है ॥ तिण अवधि प्रयुंजी दीठे प्रभुजी, तन मन अति उलसंदा है ॥ तिहां पदमावची देव सकत्ती, सुं मिल वेग वहंदा है ॥ हुयके हेराना वैठ वि

माना, पांवां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फणनाग हजारां कर विस तारा, छत्तर ज्यूं गावंदा हे ॥ ले आपण खंधे प्रेम निबंधे, पूरब प्रीत सुखंदा हे ॥ इंड्राणीनारी सब सिणगारी, जोबन अंग फिल कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणी, सूंदर रूप सो हंदा हे ॥ अणियाला कज्जल झलके विज्जल, खूब वणाव वणंदा हे ॥ नकवेसर नत्थां लाल सुकत्थां, विच मोती झलकंदा हे ॥ ढ्ढण पाटंबर झीणी अंबर, आन्नूषण झलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क सिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कम्भियां सोने जम्भि यां, हीरा वीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूघरियां पाए धरियां, पग नेवर रणकंदा हे ॥ ले झांझर ताला ताल कंसाला, पख्कावज वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला वीच रसाला, जंगी ढोल घुरंदा हे ॥ वाजे सरणाई सखरी घाई, नगारा रोम्मंदा हे ॥ १८ ॥ पनमा वैं रुट्टा आण उलट्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त म्भ्मा, रस न्नेद रमंदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा वस जल पसरंदा हे ॥ १ए ॥ धरणीधर जाणया ग्यान पिछाणया, कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आख्या रत्ती, कित्ती रीस आवंदा हे ॥ रे मुढ धिठ चित्त विणठ, क्यूं नांही समझंदा हे ॥ साहिव बलवंता जोर अनंता, तूं तो नहि जाणंदा हे ॥ २० ॥ ए क्षमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमंदा हे ॥ असमांन खमाई रीस न्नराई, हिक्काइ बजरंदा हे ॥ कित्ती बहु गल्लां पम्भै दहल्लां, धम्भहम्भ देह धूजंदा हे ॥ धरणेंद्र म्भराया तव ते आया, पावां आय लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोम्भि खमाया सीस नमाया, जगनायक जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा हे ॥ तें रीस न धरियां किणही विरियां, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किती बहु विनती, निज अपराध खमंदा है ॥ २२ ॥ सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रभुके गुण समरंदा है ॥ सुध संजम पाले दोष निहाले, तब केवल उपजंदा है॥ सम्मेतशिखर पर चढ़कै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचंदा है ॥ तेरी कीरत्ती जग ऊपत्ती, पार न को पावंदा है ॥ २३ ॥ तूं सच्चा रखके भेद परखके, गुमानी मोरूंदा है ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा है ॥ तूं दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा है ॥ तूं अल्ला पीर फकीर मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा है ॥ २४ ॥ तूं काज़ी मुल्लां मरद अटल्लां, तूंही शेष फरींदा है ॥ तेंही ऊपाया धंदे लाया, मश्यामें मुलकंदा है ॥ तूं बूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा है ॥ तूं कच्चा कवला सबतें सबला, सच्चा मऊ रहंदा है ॥ २५ ॥ बाबागोसांई भेद न पाई, भीरू पच्यां आवंदा है ॥ तूं नारायण जोगपरायण, माधव तूंही मुकंदा है ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा देवंदा है ॥ तूं एकां अप्पे एक उथप्पे, थिति निज सुध थापंदा है ॥ २६ ॥ तो देवल मझां लोकति संझा, सीरणिया वाटंदा हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत भासे, ऊोणे सुर गावंदा है ॥ कालागरु अगरसुं मलयागर, धूपेम्हा धुखंदा है ॥ कुंकुम कसतूरी केसर पूरी, चंदनसुं चरचंदा है ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुंदा फूला हंदा, टोम्हर कंठ ठवंदा है ॥ चंपा गुलाबां भरीया छाबां, परमल तिहां वासंदा है ॥ कसाबोई चंगी रचिये अंगी, फूलां बीच फाबंदा है ॥ आभूषण धरियां तन ऊपरियां, कुंमल कान भिगंदा है ॥ २८ ॥ सूरत सोहंदी मूरत हंदी, दीठां नैण ठरंदा है ॥ तेरी बलि जाउं मोजां पाउं, वीनती तूंहि सुणंदा है ॥ २९ ॥ क्या कत्थूं गल्लां हुकम अदल्लां, समकित मन उलसंदा है॥ सिद्धांदा वासा तिहा रहासा, तुऊ सेवक विलसंदा है ॥ घग्घर नीसांणी पास वखाणी

गुण जिनहर्ष कहंदा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीघग्घर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे ऋद्धि समृद्धि मिली, शुभ योगै पुण्यदशा सफली ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलबली, मनवंछित आपै दादो रंग रली ॥१॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोछव राजेला ॥ सुपसाथैं गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सवही दिन आथै सवला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ पायक बहुला, किल्लोल करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वींझै चमर नि साण घुरै, नर बै दरबार खमा पुहरै ॥ जय२ करजोमी उचरै, सा निद्ध गुरु सब काज सरै ॥ ४ ॥ सरसा भोजन पान सदा, डुख रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुदा, गुरु कूरम दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ घमघम माद्दल नाद घुमें, बत्तीसे नाटक रङ्गरमे ॥ प्रगट्यो पुण्य प्रताप हमें, सवला अरियण ते आय नमें ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्यावो कुशल गुरु एक मनें, जृंभक सुर मंदिर भरै धनें ॥ ७ ॥ तत खण घण खंच्यो आवे, करि स्यांमवटा मेह वरसावे ॥ तिसीयां तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरयां जल कल्लोल करै, प्रवहण भवसायर मझ फरै ॥ वूमता वाहण जे समरै, ते आपद निश्चैतुं उवरै ॥ ए ॥ खमखम खमग प्रहार वहै, सो दामनि जिम समसेल सहै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खेमकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ सकल परचा पूरै, श्रीनाग पुरै संकट चूरै ॥ मंगलोर अधिके नूरै, देरावर भय टालै दूरै ॥ ११ ॥ वीरमपुर वाने सुधरै, खंभायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचंद सूर पाटे पवरै, जसु कीरति महीमंमल पसरै ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम द क्षण आगे, उत्तर गुरु दीपै शोभागे ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरगच्छनी महिमा जागे ॥१३॥ पुर पट्टण जनपद गामे, गाईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्त्ति पदवी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजननें सुखिया राखै ॥ समरयां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक भाखै ॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सद्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाभ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनरी आश फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥ जय२ जिनदत्त सूरिंद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ जसु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमांहे अती ॥ २ ॥ शुभ मंगल लील विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥ आराध्यां आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥ जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश बावन खेतलवीर कियां ॥ जसु नामे न पडे वीजलियां, भूत प्रेत न कर सके छलबलियां ॥ ४ ॥ जिण सिंध सवालख दिस साधी, पंच पीर नदी जिण पुल बांधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिबोधी श्रावक कीध सहू ॥ ६ ॥ वडनगरे ब्राह्मण द्वेष धरी, मृत गाय लइ जिण चैत्य धरी ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेद सहू गुरु पाय परी ॥ ७ ॥ वज्रमय थंभो दोय खंभ कियो, पोथी परगट परभाव थियो ॥ विद्या सोवनवरणे लक्षियो, वर नयर उज्जेणी सुजश लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुंबड वंसे जीवदया, मंत्री वाछग परसिद्ध थया ॥ वाहडदे कूखें जनम भणूं, ते चवदे विद्या जाण घणूं ॥ ए ॥ इग्यार बत्तीसै जनम भणूं, इग्यार इगताले दिक्ष गुणुं ॥

युगवर इग्यारै गुणहत्तैरे, स्वर्गे बारेसै इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ सूरी पटोधरणं, परभाव अंबेसर भयहरणं ॥ नवनिधि लछमी संपति करणं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ थुंभ सकल श्रीअजमेरे, गढमंभो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशलमेरे, दीपे गुरु गाजीखान फेरे ॥ १२ ॥ मुलतान नगर महिमा सागै, भावठ दालिद दूरे भागै ॥ फेरे असमालखानके सोभागे, गुरु पुर२में कीरति जागे ॥ १३ ॥ धन२ जे सद्गुरु ध्यान धरे, तेरनवन पूजा जेह करे ॥ गछ खरतरनी महिमा पसरै, कवि सूरि उदय जिनकीरति करै ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सद्गुरु श्रीजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसह जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव वंदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ (चोपाई) चंद कुलांवर पूनमचंद, वंदो श्रीजिनकुशल मुणिंद ॥ नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरै तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंडल सवियाणो गाम, धण कण कंचन अति अभिराम ॥ जिहां वसै जिल्हागर मंत्र, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे तीसे जम्म, सेतालें सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतहत्तरें जसु पाट, निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सरगें पायाल, अचिराचिर युग इण कलिकाल ॥ प्रभु प्रताप नवि माने सोय, मैं नवि नयणें दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धन्न सुवन्न, पुत्रहीण पामें वहु पुत्र ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संपत्ति मिलै ॥ आधी व्याधी चिंता संताप, ते डंकि नवि मंडै व्याप ॥ ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागै तिहां, गुरु समरण उत्कंठा जिहां ॥ सेवंता सुरतरुनी छांह, निश्चै दालिद्र मेटे बांहि ॥ ८ ॥ विसहर

विसनरें विस नरनाद, भूत प्रेत ग्रह व्यंतर राद ॥ प्रभु नामें ते न करै पीम, भाजै भावठ भवभय भीम ॥ ए ॥ रोग सोग सवि नासै दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंमित थाय, प्रभु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन ज-द्योत, जिहांअछै भवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में भेट्यो आज, रलियरंग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअं-गण सुरतरु फलियो, चिंतामणि करकमलै मिलियो, जदयो पर-मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्न गिणियो, जुगपवरागम जो में थुणियो, चंद्रगछ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो कांइ मने ॥१४॥ वार२ एक चित्त भणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सरै काज आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण पुरमें मन हरसै, अजिय जिणेसर पर भुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क वित्त ए मंगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत संसो धरो मनें ॥ १७ ॥ जिम२ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया, जयसागर ज्वझाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदै, ऋद्धि समृद्धे सो चिरनंदै, मनवंछित फल मुऊ हुवो ए ॥ १ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहो केम सरे ॥ दरशन वहिलो सद गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इण विखमी विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा छो तो वेगा आवो, हिव ढील घणीभर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद गुरु खरतर गछ साचो, कोइय न जाणे तुऊने काचो ॥ इण संक टमें आलश म करो, दादा डुसमननें दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक पमी सदगुरु हमसुं, तो ज्यूं कहसो तिण पर खमसुं ॥ हिवणा हठ

थे मत ताणो, निश्चे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब श्रीसंघ अठा लगै, पाछा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये गुरु अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुशल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले उजवालो, परघल निज छेरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गरूाथे ए गायो, सुणतां सदगुरु वेगो आयो ॥ राजी हुय सगला रंगरली, जिनचंदनी आस्या सफल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सदगुरुजी थे सांभलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सांनिध करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संपति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थांहरा विरुद अनेक हो ॥ थां समरयां संकट टलै, एहीज दादाजी ताहरी टेक हो ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस कियां बावन वीर हो ॥ सिंधमांहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणामांहे बीजली, बलीर झबकाय हो ॥ थे मंत्री राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्छव करतां उच्चमें, मूंछ मुगलरो पूत हो ॥ जाप करीनें जीवाडियो, संघ मांहे राख्यो दादे सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वडनगररे ब्राह्मणें, देहरे धरी मृतगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पाय हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकीया तें सहू दुःख हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुख हो ॥ दो० ७ ॥ अंबड हाथे अक्षरै, थे प्रगट्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग तूं जयो, आखै अंबिकादेव हो ॥ दो० ॥८॥ थांभो वज्र विदारनें, पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअक्षरे, उज्जेणीमांहि लीध हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घणा छै ताहरा, कहतां नावै पार हो ॥ भागसंजोगे दादो भेटियो, अडवडियां आधार हो ॥ दो० ॥

॥ १० ॥ हुं हूं सेवक तादृशो, थे आपो धन ऋद्ध हो ॥ कनककीरत सुपसाउलै, लाभउदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशण सदा देवो ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो जगबंधव जगगुरु त्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जग सगले पूरै, दादो सेवकनां संकट चूरै, दादो दुरित हरै सहूनी दूरै ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगांथी जात्री आवै, दादो देखीने ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमांहे राजै, जिहां सुजशनगारा नित वाजै, दादो छोगालां सेहर गाजै, दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूकरू घोली, हाथे लेइ सोवन कचोली, पूजो दादाजीनें मिलश टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतियां आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन सासन नित उजवालै ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत माहाराजा, दादो राजे खरतर गछ राजा, दादो समरथां सफल करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी, दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जाउं दादाजीनी हूं वलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन गहगाटै, जसु थांन सोहै जग थिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर निजर मुझ पर करियै, दादा आरति पीड़ा दुख हरियै, दादा जिम जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिध करज्यो, दादा दुस्मणानें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवंछित फलज्यो ॥ दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल मछालै, सेवकनां संकट टालै हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरै, सेवकनी चिंता चूरै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ छतरीनितरी छवि छाजै, विचमें थिर थुंभ विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ फूलरे यात्री मिल

आवै, दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घस भरिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥ ॥ गा० ॥ ८ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी हो ॥ गा० ॥ ए ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंछित पावै हो ॥ गा० ॥ १० ॥ पावै गुरु तिसियां पाणी, तिण वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ ११ ॥ ग्रह गोचर चोर जंजालै, पीमा हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ वाजै जग जशना वाजा, राजै खरतर गछ राजा हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ जसु जैतसिरी वर माता, जिह्वा गरमंत्र विख्याता हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ संवत सतरेसे इक्यासी, कातीपूनम परकासी हो ॥ गा० १५ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासे हो ॥ गा० ॥ १६ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनभक्ति जतीसर वंदे हो ॥ गा० ॥ १७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ; सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरू ॥ कुशल करण कलिमांहे प्रगटयो, खरतर गछ वरू ॥ स० ॥ बावनोचंदन मृगमद मेलो, पूजो प्रेम भरू ॥ स० १ ॥ चिंता चूरण विघ्न विमारण, दालिद दूरहरू ॥ स० २ ॥ दिनर साहिब चढते वांनं, ध्यावो ग्यानधरू ॥ स० ॥ वाजै जेहना जशना वाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अढारसमें अमसठै, मिगसरमास थिरू ॥ स० ॥ संघ सहित श्रीसदगुरु भेटे, श्रीजिनहर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमालै चरण नमंता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिनें, उदयरत्न करू ॥ स० ॥५॥ इति पदं ॥ पुनः आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आयो ॥ संकट देख सेवककूं सदगुरु, देशान्तरतैं ध्यायोजी ॥ स० ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अंधेरी, वाय पिण सबलो वायो ॥ पंचनदी हम बैठे बेरी, दरीयै चित्त भरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥ दादा उच्चभणी पोहचावण आयो, खरतर संघ सवायो ॥ समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ भाया भक्तिसूं पूर रहो रे, दुरिजन सब दुर हरो रे ॥ भा० ॥ मेरे मनमें भक्ति वैरागी, चित्त परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी भाग्यदशा अब जागी, जीया हो भा० ॥ १॥ सब सज्जन मिलकर आवो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥ वलि अक्षत थाल वधावो, जीहा हो भा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुलाई, जीया हो भा० ॥ ३ ॥ घस केसर भरके कचोली, मांहे मृगमद कुंकुम घोली ॥ गुरु पूज रचो भर झोली, जीया हो भा० ॥ ४ ॥ श्री जिनहर्ष सूरीसरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै सुभ काजा, जीया हो भा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राग केरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो भवि हितसुं, कु० ॥ कशर चंदन कपूर अरगजा, भाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु० १ ॥ मोगरा लाल गुलाव मालती, मन सुध माल करै भवि रुच- सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा पूरै गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुधारै ज्ञान वधारै, रूप रंग देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥५ ॥ कुशल सुरिंद गुरु सानिधका री, परतिख परचा पूरै संतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष सदा सुविलाशी, सत्यरत्न सुख एही ब्रतसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग देवश्रीचलत ॥ आज करो रे उच्छाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आछी वेला नें छे आछो दाव, इण आछी वेला क्यूं करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै वद्य सार, फुलवारीनो नहीं जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी ऊन्ना करजोड़, कोण करै म्हारा दादाजीनी होड़ आ० ॥ ४ श्रीखरतर गछपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार ॥ आ० ५ ॥ महिर निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु गरीबनिवाज ॥ आ० ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै नवरंग, सत्यरत्न मन ग्यान ऊमंग ॥ आ० ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ मैं निरख्या गुरु माहाराज, छतियां हर्षऋरी ॥ मैं० ॥ अमल अनंत गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमातमा रे, वं छित दायक स्वाम ॥ छ० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन प्रतिपाल ॥ ऋविजन ऋक्ते ऋावसुं रे, ध्यावै ऋर२ थाल ॥ छ०२ ॥ केशर चंदन कुमकुमारे, ऋरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती रे, पूजै सहियर साथ ॥ छ० ३ ॥ कुसल सूरीसर साहिबारे, श्रीजिन चंद सूरी पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥ छ० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन हर्ष सूरीसरू रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ छ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग प्रऋाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाउं गुरुरा य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरीसर सदगुरु, सफल धर्म्मी सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम मंगल गुरुरायकी सेवा, अशुऋ करम सब हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिद्रऋंजन अरि सब गंजण ॥ प- ग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नहीं परवाह अनेरी, मर ण महो इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

ज्ञा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ अब मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी भांत करो मेरे सद्गुरु, ज्युं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥ जलदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलभर पीजै ॥ सुरतरु सम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु० ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥ धर्मभगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो भरपूर, सेवकजन मन वंछित पूरण, समरयां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रेमरस पूरण, अशुभ हरण भये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा, वीनवै श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल लूवरकी ॥ सद्गुरु पूजण जावस्यां, म्हेतो कुशल सूरिंद गुण गावस्यां हे माय ॥ स० ॥ श्रीफल भेट चढावस्यां, म्हेतो चरणारी पूज रचावस्यां हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारूदेशमें सोभता, नगरवीकाणे राजे हे माय ॥ गाम गमालै दीपता, ज्यांरी महियल महिमा गाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरयां संकट चूरता, कुशल करण अवतारो हे माय ॥ सुखदायक श्रीसंघनें, खरतर गच्छ अधिकारी हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशांतरथी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय ॥ लुल२ शीस नमावता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥ स० ४ ॥ सज सिणगार मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥ तन मन प्राण लोभावतो, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ विछड्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनोरथ पूरवै, परघल लखमी ल्यावे हे माय ॥ म० ६ ॥ विषमी वेला वाटमें, समरयां सानिध आवे हे माय ॥ भूखां भोजन मेलवे, तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवे नित नवा,

आन आगल थिर थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामग्री, गावै गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै, भवि मिल भावना भावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमें, पर मानंद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ श्रीसद्गुरुजीसें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिब अरज सुणीज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सुधकर ध्यान लगायो ॥ महिर निजर अब कीजीये जी, चरणकमल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि व्याधि संकट दुख मेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, वधती संपद सारी ॥ दादो० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवै, अतर गुलाब केवरो छ्यावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरे, चिंता दोखी दुस्मन चूरे ॥ धन२ सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ नगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन जलसै ॥ गछपति कीर्त्ति सूरीसरू रे, वंदै वार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुझै समझीजै ॥ जगमें सुरतरु सारखो रे, कीरति ढारही भारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटपणें वरदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल सूरिंद धणी रे, कहै रामऋद्धिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ चाल भरतरीकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गछपति दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिनमणी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, राजेन्द्र कुल उदयाचले ॥ जिह्लासाह पितेश, जैतसिरी अंबर भलै ॥ २ ॥ गछपति चंदमुणिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणंद, तेज प्रकाशन मनरली ॥ ३ ॥ पुर पत्तन सब देश, झिगमिग ज्योती जी

झिगमिगै, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु उलगे ॥ ४ ॥ अरचै अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चंपक वेल, सुंदर आवत मलपति ॥ ५ ॥ शुन्न थिर थुंन्न वीकाण, बालूचर महिमा घणी ॥ कीरतबाग प्रधान, डुखभंजन चिंतामणी ॥ ६ ॥ पूरो वंछित आश, वांया तुम सुनिझरतणी ॥ दाता सुख कैलाश, चरण शरण किंकर भणी ॥ ७ ॥ पूजै पद गोविंद, चंडशिखर जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥ ॥ ८ ॥ उगणीसे अम्रताल, मिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण अतहि विशाल, कुशलनिधान हरख धरी ॥ ए ॥ गुरुगुण शरिता नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धिसार जस वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेमिया पार उतारो, तूं वण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता भाड्व नीर जलधि ज्युं, यो संसार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही भर मझ धारो ॥ में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण वाल गणपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उल्कापात गगन ज्यूं विषयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु रटै कोइ ईसा, अल्ला उमया प्यारो ॥ में ध्याउं जिनदेव कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुण अरजी आवे गत तमहर, तुरतही विघन विमारो ॥ रामबाग पुर गंज अजीमें, कुशलनिधान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ केइयक गुरुसे लखमी पावत, हुकम धरै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलकी, मांगू

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत उगणीसे अमृतालीश, मेरुत्रयोदशी लागे ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, दे ऋद्धसार तिहारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या मैं दरश तिहारा, द० ॥ श्रीसद्गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुझ मन निरमल काज ॥ दे० २ ॥ गुण ऋद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी, दुख दोहग गये भाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु तुह्म परउपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुभ थांन पुर२ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गछ खरतर राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामऋद्ध सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥ ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु, द्यो दोलत गुरु रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटै, दिन२ वधै सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुंदर नारी, सुज परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधारण, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २॥ राजा परजा पाय नमें सहू, गुरु समरण सुखसायजी ॥ स० ॥ दोखी दुसमन नृप भय पड़ियां, सद्गुरु करय सहायजी ॥ स० ३॥ विखमी विरियां संकट पड़ियां, समरयां आवे धायजी ॥ स० ॥ भूखां भोजन तिस्रियां पाणी, निर[illegible] धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलनें द्यो सुखसा[illegible], [illegible] कीरत [illegible] जी ॥ स० ॥ [illegible] मंगल भो[illegible], [illegible] कुशल सहाय जी ॥ स० ५॥ अभय महा सुखदाई सद्गुरु, नवनिधि वंछित आयजी ॥ स० ॥ सुमति सवाई नित घर [illegible]

दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ जिनकुश लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख संपति रिद्धि सिद्धि सब हाजरे, देश देशांतर कांइ भमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिशि नाम मंत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥ इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो ॥ जि० ४ ॥ अजय महा सुख संपति पामो, सुथिर थानक थित जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ छत्रपती थारे पाय नमें जी, सुरनर सारे सेव ॥ ज्योत थारी जग जागती जी, पुनि थांमे परतिख देव ॥ १ ॥ हुंतो मोहि रह्यो जी, म्हारा राज दादेरे दरबार ॥ केसर अंबर केवड़ो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय चंपेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हुं० २ ॥ पांगुलियांनें पांव समावै, आंधलियांने आंख ॥ रूपहीणांने रूप देवे दादा, पांखहीणाने पांख ॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिवा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ आठ पहर थांने नलगे जी, रंग घणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहली काम किये बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल२ चूक परी सदगुरुजी, मैं मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहुं न ध्यायो, पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूरया, आही थांरी मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चेसेती तुमगुण गावै, तुरत कटत दुख वेरी ॥ भक्त उधार कहावत जगमें, ताहे करत हुं अरजी ॥ स० ३ ॥ और देवकूं मैं नही ध्याउं, शरण ग्रही में तेरी, दूरसका मैं भेटण आयो, विपतदशा सब तरजी ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ क्षमारत्नकी वीनती सुणके, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ सदगुरुके चरण चित लायर२, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ बावन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस कीनी हर्ष लाय ॥ विद्या पुस्तक सोवनअक्षर, थांभो वज्र विम्हार पाय ॥ सद० १ ॥ मुलतानमें पंच पीर महाबल, पंचनदी साधी चित्त लाय ॥ इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरयां सब दुख जाय ॥स०२॥ गुरुके नामसें अष्टसिद्ध नवनिद्ध, गुरुगुण गावो सबही धाय ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः॥ होरी खेलो भविक सदगुरुके संग, नित आनंद उछव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत स्वर झीणा, अली कलीके संग जंग ॥ हो० ॥ १ ॥ रुत वसंत आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चंग ॥ हो० ॥ एसें साज समाज भक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अभंग ॥ हो० ॥ २ ॥ निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी अजब सुधारी, छिरको महकत सुरभिगंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन दरसणसे नैण, रामऋद्धीसार के चित उमंग ॥ हो० ४ इति पदं ॥ पुनः ॥नेमस्यामसें कहियो मोरी॥ इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, भली हिये भक्ति भराणी ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरीसर साहिब, खरतरगछरा जानी ॥ देशदेशमें थानक गुरुका, सोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन मृगमद भेली, चरणांरी पूज रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल खेवी, बहु विध पुष्प चढानी, भला फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक, हाजर होत सहानी ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरिके साहिब, वंछत

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आके श्रीसंघ सब हिलमिलके, संग लिये बालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद यालकेसनमुख गावै, पढत मधुर धुन गुण गोरी ॥ स० ॥१॥ केशर घोली झरी रे कचोली, पूजत हे बारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल भर्यो सदगुरुके, अबीर उडावत जरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनर भाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुने पकरी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं जण दुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि तदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत रामरुद्धिसार सुपाठक, वंदत हे दुय करजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ राग प्रभाती ॥ केसे२ अवसरमें गुरु रखी लाज हमारी ॥ के० ॥ मोकूं सबल भरोसा तेरा, चंद सूर पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ के० २ ॥ आगे तो केई वेर हमारी, चिंता दूर निवारी ॥ अबकी विरिया भूल मत जावो, सदगुरु परउपगारी ॥ के० ३ ॥ अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल सूरिंद गुरु तेरा, बमा भरोसा भारी ॥ के० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, तुम हो परउपगारी ॥ श्री० ॥ खरतर गछ नायक गुणलायक, जिनचंद सूरि पटधारी ॥ श्री० १ ॥ संत उधारण सुजश वधारण, भीमभंजण अति भारी ॥ नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० २॥ जगवछल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिध करतारी ॥ कहे जि[illegible] चंद मेरे हो सदगुरु, हम हें सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति पदं ॥ पु[illegible]ः ॥ श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणकमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलभर कंचनझारी ॥ देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी भांति करूं विध पूजा, आणके चित इकतारी ॥ राज कहत मेरे परमगुरूकी, वेर२ वलिहारी ॥ श्री० २॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥ कुशलगुरु देखके दरशण, मेरा दिल होत हे परशन ॥ जगतमें या शामो कोई, न देख्या नयण भर जोई ॥ १ ॥ विरुद भूमंमले गाजे, फरशतां पाप सब भाजे ॥ पूजतां संपदा पावे, अचिंती लछ घर आवे ॥ २ ॥ इके मुख गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज सुण लीजे, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशण दीजे हो ॥ कु० ॥ खरतर गछपति कुशल सुरिंद गुरु, मुझ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥ पतित उधारण विरुद तुह्मारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु० २ ॥ आधि व्याधी अरु दोखी दुसमन, ए सब दूर हरीजे हो ॥ कु० ३ ॥ खेमरतन सेवगकूं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ भविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो अरज करूं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥ विरुद घणा छै राजरा जी कांई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥ सुनिजर जोयजो साहिबा ॥ १ ॥ थांरे रावल राणा राजवी जी, थारा पूनम पूजे पाय ॥ सु० ॥ केशर अगर नें कुमकुमा जी, कांई मृगमद रही महकाय ॥ स० सु० २ ॥ थांरे पुफलां रे आगल

घूमरा जी, कांइ ढूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम नी जी, काई निरख करे जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थांरी गावी ठोमे थापना जी, काई उदयापूर आबेर ॥ स० महिमा जली गुरु मेमते जी, कांइ सालूमेवाली सांगानेर ॥ स० सु० ४॥ थांरी ज्योति घणी गुरु झिगमिगे जी, कांइ वधती गढ बीकाण ॥ स० ॥ आसा पूरण आविजो जी, थेतो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥ म्हारी वीनतडी जले मानज्यो जी, कांई दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सांगानेर विराजे, गुरु परतिख तिहां राजे रे ॥ म्हारा सद्गुरुजीनी बलिहारी ॥ मनवंछित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण पखालां थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिय कचोलो, मांहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु पाया, पूज्यां सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा, थांरे जात्री आवे अपारा रे ॥ म्हा० । सुध मन पूजा कीजे, दुख दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमां हे तारी, कीरत चिहुं दिशिमाहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अवर न कोई, दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवाली सांगाने रे, जिहां राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीसंघ मिल तिहां आवे, जिहां लूणियां गोठ रचावे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान सार गुरुराजा, ज्यांरा वाजे सदाइना वाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानंदन गुण गावै, करजोडी शीस नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दादाजोकी लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरशण दीज्यो जी गछपति साहिबा ॥ ॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विख्याता ॥ सद्गुरु महर करीज्यो मुझपर, ज्युं डिंभनकूं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद पटधारी, सेवकजन आधार ॥ विषमवाटमें सं कट काटै, संघ सकल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार ॥ नरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गुरुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणांबुज दरशणसेती, पापतिमर हट जाय ॥ गुरु परमातम सुगुण शोन्नागी, गुरुगुण केम कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर ठणकाती, लिये अली बहु लार ॥ नृत्य न्नक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृडु समीर ऊणकार हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरबार ॥ इंद नारिंद नमे पदपंकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ रुद्ध सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री आवे जात्र करणकूं, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊछर, करै सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत सुखकर, नंद चंद शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन न्नव्या, शुक्ल पक्ष शुन्न वार हो ॥ स० ॥ ए ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै, तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद जिम हंस सूरीसर, खरतर इंद्र उद्दार हो स० ॥ १० ॥ सदगुरु धर्मशील परन्नावै, कुशल होत नित साय ॥ रुद्धिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुनः ॥ मोरी सखी सहेल्यां आज चालोनी गुरु वंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद पाट अधिकारी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद हे ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगछना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥ डुष्ट कष्ट न्नय दूर करीनें, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥ पूनमरु न्नक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, पूजे विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगले

सरे, सऊ शोले सिणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर झणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशथी संघ चतुर्विध, आवै चित्त उलशाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥ मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥ बलिहारी गुरुनामनीसरे, वारीजाउं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥ संवत उगण वत्तीसे कार्त्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम गम्भालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगछ सुखकर सोभागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत्त शशि अभिनव, हंससूरि गणधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणांबुज सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ ऋद्धसार गुरु गुणगण ऊपर, नित प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ए ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह अकबर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंम्ल सम सूरी, दीपत वदन छवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंम्ल मांहे महिमा जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमाणिक्य सूरी पाट उदयगिरि, श्रीजिनचंद रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पेखतही हरखित भयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल पणिहारीकी ॥ श्रीसौभाग्य सूरीसरू, गुरु गछपति हो, खरतर गच्छ सुखकार ॥ साहिवजी ॥ कोगरी कुल दीपता, गुरु गच्छपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥ करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत अठारे वासठे, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे सीत्तोत्तरे, गु० पंच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें, गु० पद [illegible] खास ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोभता, गु० [illegible] ॥ सा० ॥ [illegible] ताता, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष पटोधरू, गु० दीपत गुणमणी खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समें, गु० पायो देवविमान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद वन्हि निधि ऋतुपती, गु० माघमास सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक्ष तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणें हरखाय ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरीसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥ कुशल कला नित नेहसें, गु० प्रणमें इम ऋद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति सौभाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी दिये छे देशना रे, त्रिभुवन जन हितकारज ॥ परखद बारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ भव्य मधुर तो भावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अजरपणुं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनामृत पानथी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांभले भव्य लहे सही रे, जिन पर भाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहां षट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप अभंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतभंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥ शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी परवरसतारे, भवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाभ पसायथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश भणें कल्याण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुण निधि श्रीजिनचंद मुणिंदा, सुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर वृंदा, सुगुरु म्हारा देशना दिव दीजै ॥ थांरी देशना सुण मन रीझै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, भूमंडल ऊपर आयो ॥ कमलादि सकल मन भायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाउल देव-

गंधार, वलि भैरव राग मझार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥ पंच सबद गहिर ध्वनि गाजे, जिनवर घर झालर बाजे ॥ सहु सज्ज थया धर्म काजे, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो, श्रीसंघना कारज सारो ॥ मधुरे स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥ सुण विनंती वचनविशेष, गुरु आपै धर्म उपदेश ॥ टालो भव कोम कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो भविप्राणी ॥ सुणतां मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रतपो ज्युं शशि सूर, दिन२प्रति वधते नूर ॥ हरो संघ सकल दुख दूर, सु० ८ ॥ गोरी मिल मंगल गावै, भर मोतियां थाल वधावै॥ लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जम्माव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद सूरीसरू, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गच्छराय हो ॥ श्रीजिनलाभ पाटोधरू, सुगुरु म्हारा दिन२ सोभ सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सोभागी, म्हारा शुभ गुण रागी, म्हारा हितधरू ॥ १॥ सुगुरु म्हारा देशना द्यो मनरंग हो ॥ संघ सहू उछक थयो, सु० सुणवा अमृतवांण हो ॥ वहिला वंछित पूर हो ॥ सु० थे ठो अवसर जाण हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरया, सु० विकस्या कमल कलाप हो ॥ राग विभास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसवद झालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार हो ॥ इम बहु विध भूमंझलै, सु० वरत्या जय२कार हो ॥ म्हा० ४ ॥ संघ सकल भगते करी, सु० जोवै थांरी वाट हो ॥ नीचे पधारो गछपती, सु० द्यो दरिशण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै उलसंत हो ॥ जलधर ज्युं गहरै स्वरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धांत हो॥ म्हा० ६ ॥ बहु भवियण प्रति-

बूऊवै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशता, सु० टालै ज्ञवडुख ज्ञोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तरणी जिम दिनमणी, सु० गुण उत्तीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निरख्यां मन उल्लास हो ॥ म्हा० ७ ॥ थे चिरजीवो गछपती, सु० राज करो इक आण हो, इम बोले मुनि सुध सदा, सु० वाणी कमाकल्याण हो ॥ म्हा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदियै, ज्ञविकजन ॥ एहवा० ॥ आप तरे उरनकूं तारे, शरण तिहारी गहियै ॥ ज्ञ० १ ॥ जिम सारथपति साथीजनकूं, वंछित देशें वहियै ॥ ज्ञ० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशें, लहै ज्ञविक सुख कहियै ॥ ज्ञ० २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गाजन महियै ॥ ज्ञ० ॥ वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाविक नौ तरियै ॥ ज्ञ० ३ ॥ एक असंजम दोष विधि वंधन, त्रिविध दंरू परिहरियै ॥ ज्ञ० ॥ चार कषाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज्ञ० ४ ॥ षट् काय रक्षक महाज्ञय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज्ञ० ॥ एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज्ञ० ५ ॥ गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज्ञ० ॥ रिदयकमल नितप्रति राखीजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज्ञ० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ज्ञवि तुह्म वंदो रे शीतल जिनपती रे ॥ ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनराज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोज्ञत तेज समाज ॥ ज्ञविजन वंदो रे ज्ञावै गछपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुधरम गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अंग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोहामणो रे, चवद पूरवधर चंग ॥ ज्ञ० २ ॥ प्रज्ञव सज्यंज्ञव जगमें परगमा रे, श्रीयशोज्ञद मुणिंद ॥ श्रीसंज्ञूतविजय ज्ञद्र डुजी रे,

श्रीथूलभद्द दिणंद ॥ भ० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुवा वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो भूनले रे, सुरनर नामत शीश ॥ भ० ४ ॥ तास परंपर चंद्रकुले भला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री उद्योतन सूरि सोहामणा रे, वयरी साख मझार ॥ भ० ५ ॥ वरधमान परमुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगट्या तिहांथकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ भ० ६ ॥ तास शीस जिनेश्वर सूरिजी रे, दुर्लभराय समक्ष ॥ खरतर विरुद लह्यो ते रूवडो रे, गच्छपति जीत प्रत्यक्ष ॥ भ० ७ ॥ नव अंग वृत्तिकारक दीपता रे, श्रीअभयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गच्छपती रे, श्रीजिनकुशल अमाय ॥ भ० ८ ॥ परम प्रभावक इण गच्छमें थया रे, आचारज गुणवंत ॥ शुद्ध सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि हरखंत होय संत ॥ भ० ९ ॥ शुद्ध परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री जिनलाभ सूरीश ॥ तास पटोधर जगमां परगमा रे, श्रीजिनचंद मुणीश ॥ भ० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे द्विजपत्ति ॥ गंभीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥ भ० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥ भंग पदारथ अति विस्तारसें रे, भाखे भवि हितकार ॥ भ० १२ ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे भली रे, जिनवाणी अनुसार ॥ एहने सेवो रे क्यूं भूला भमो रे, थाय सफल अवतार ॥ भ० १३ ॥ सुरतरु छंडी बांवल आदरे रे, काइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ भ० १४ ॥ नाम धारक आचारज छै घणा रे, पंचम काल मझार ॥ पिण इण सरिखो जगमां को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ भ० १५ ॥ वाचक लाभ णयकमल पसायथी रे, कमलसुंदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख पामसे रे, पातिकनी करि हाण ॥ भ० १६ ॥ इति वधावा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऊलस्यो ॥ ए चाल ॥ मोतियरूे मेह वरसीयो, सखि आज हुउ आणंद ॥ पूज पधारया विहरता, नामें सौनाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नंद रे, सद्गुरु सुरतरुनो कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ कांतिगुणे करी शोनता, सखि पंच महाव्रतधार ॥ वर छत्तीस गुणे सदा, विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसिया जे पर उपगार रे, उपशमरशना नंमार रे ॥ पाले पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता, सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम नलहल नाण रे ॥ जेहनो अतिशय विन्नाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोनता, मुनिवर जिम मोतीमाल रे ॥ कोई थिवर ने कोइ बाल रे, वंदीजै तेह त्रि काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गछ सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ सहु संघतणा सिरदार रे, सखि सुखलितणा नरतार रे ॥ जेहनें प्रणमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विसतारता, सखि देता धर्मोपदेश ॥ दान शीयल तप नावना, बारे नावन सुविशेष रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदेश र ॥ सखि० ॥ ६ ॥ सुणतां श्रीजिनराजना, सखि अमृतवचन विलाश ॥ क्षण में कर्म समूहनो, सखि निश्चै होवे नाश रे ॥ थाय निज ज्ञान प्रकाश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करतां निज रूप सुनाष रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

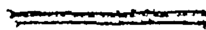
॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी, जगगुरु गोतम गणधारी रे ॥ सहियां गुंहली करो ॥ गुंहली करो

गुरु संगे, भगतितणै उछरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराया राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचेंद्री विषय निवारी, नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कषायकुं टालै, पंच महाव्रत सूधा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि गाजै, इम छत्रीश गुणें गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम अनुभव रंगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम भंग प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमारग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुभ लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अभ्यासी, भविजन चितकमल विकासी रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुभ भावे रे ॥ सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर भरमने चूरे रे ॥ सही० ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥ स० ॥ श्रुत सेवा जे करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुनः देशना ॥ नणदलबाई चुरूले जोबन झिल रह्यो ॥ ए चाल ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहियां, मधुर सुधारश वाण ॥ सदगुरु म्हारा, थो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उपदिस्या ए सहियां, नय निक्षेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी निरमली ए सहियां, भ्यासे घट२ चूंप ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो साभता ए सहियां, उदयाचल ज्युं दिणंद ॥ स० ॥ तेज झलामल सुरतरू ए सहियां, मुखछवि पूनमचंद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींचवा ए सहियां, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा ए सहियां, भाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ भगति नित साचवै ए सहियां, पूरब पुन्यसुथांन ॥ सद० ॥ तारण तरण जिहाज ज्यूं ए सहियां, सुध समकित सुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगछ महिमा निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥ रूद्धसारनी ज्ञावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदेशना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो, गुरु मनम्हो थे मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु ज्याजनी० ॥ अमृत उपम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारश खाणी, अति नय निक्षेप प्रमाणी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु ज्ञानी गुणवंता, ज्ञवि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण ऊजकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ ज्ञविजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक ज्यूं जलधर हसिया, उपदेशे डुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु धर्म शील सोज्ञागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, रूद्धसार वचन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गच्छकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पच्चख्काण व्रत पिछली अमावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, उर जो चउदस कम होय तो १४ का उपवास अमावस या पूनमको करे, इसका कारण यह हे की यह दोनों तिथि बराबर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हें तेसेंइ अमावस पूनम भी चिरंतन पक्षीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य करणेके हें, पारणा उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत जैनी पंचांगकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचांग परसे तिथियां गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका क्षय वृद्धि नहि होता, जंबूद्वीपपन्नत्तीमें पांच संवत्सर कहे हें, उसमें स अग्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर रखा हे, लेकिन् सूर्यसंवत्सर तीनसें सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जैनागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकांत नयवाद हेतुसें. इस वास्ते जो चौदश कम हो तो उपवास तथा पक्षी प्रतिक्रमण निस्संदेह पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क्षय तिथिके वितरणेको न करे, उर जो बेला करे तोहरीगोमेतो दोनों दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवछरीकी चोथ कम हो तो पांचमके दिन संवछरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके दिन कदापि काले भी नहि करे, उर जो चोथ दो होय तो पहली चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ भी तिथि दो होयतो पहली तिथि माननीय हे, दूसरी लौकिकतिथि हे, उसरे साठ घडीकी तिथि होनेके उसरी घडी अधवर्म

धमानोका काम नही, इस पर कोई एसा कहे की अपणे तो तिथि मान्य हे, सूर्य उदय होय जहां तक कोई भी तिथि तो उस दिन वोही तिथि मानते हे, इस वास्ते जो दुसरी थ अधघमी उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष हे? प्रश्नका उत्तर–हे भद्र, जो पहले दिन तिज मानी हे, उर ती दिन चोथ बहुत घरूी भुगतेगा, लेकिन् वह तिथि तीजही नीजेगा, इसी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घरूी अ रूी चोथ होणेसें चोथ मानीजेगा, लेकिन् जो तिथी दो होगी नमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तबतो री संपूर्ण तिथिकों छोरूके दुसरी थोरूीसी तिथिकूं व्रत करणा जम नही. कार्त्तिक माश बढे तो पहले कार्त्तिक चोमासो करे. ल्गुण तो बढताही नही, अगर बढतो दुसरे फाल्गुणमें चोमा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे. असाढ मासेकी चोदससें पचास गुणपचासमे दिन चोथकूं संवत्सरी रे, चोथ कम होयतो पांचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण भा- श आसोज बढेतो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो हो- तो दुसरे स्रावण सुद ४ कूं संवछरी करे, चोमासेकी चौदससें चास दिन लांघके संवछरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक पसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ हे, उर जो दो महीना होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक्ष दुसरे बढे महीनाका शुक्ल पक्ष एसें कल्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका सुदपक्ष दुसरेका वदिपक्ष एवं ३० दिन लूंण जानना, इन ३० दिनोंमें कल्याणकतिथिका व्रत पच्चखाण नहि करे, यह तिथियो का प्रमाण श्रीहरिभद्रसूरजी कृत तत्वतरंगणी ग्रंथमें प्रसिद्ध हे, सो किंचित्प्रमाण गाथा लिखी हे ॥ निहिपक्ख पुवति), कं.यंथा

जुत्तधम्मकज्जेय ॥ चाउद्दसीविलोवो, पुन्नमियपक्खिपम्डिक्कमणं ॥१॥
तन्नेवपोसहविही, कायव्वासव्वगेहिसुद्देहेउ ॥ नहुतेरसीइकीरई, ज
म्हानाणाइणोदोसा ॥ २ ॥ सूरोदयपम्डियाथावी, तेरसीहुंतिनप
क्खियंकुज्जा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउसम्मणा ॥ ३ ॥ ति
हिवुढ्ढीएपुव्वा, गहियापम्डिपुन्नजोगसंयुत्ता, इयराविम्माणणिज्जा, परं
थोवत्तितत्तुल्ला ॥ ४ ॥ (तेसेइ ज्योतिष्करंम पयन्नेमें जी एसाही
लिखा हे) ॥ छस्सिहियानअठमी, तेरसिसहियानपक्खियाहोई ॥ प
म्डिवेसहियानकयावि, इइजणियावीयरागेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि
पायं, कायव्वाअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तमंमि, नवमीछठीनका
यव्वा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे, कायवंपक्खियंतुपाएण ॥ चाउद्दसे
विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकहवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे
तब पहली सामायकदंरुक ३ वीर उच्चरके पीछे इरियावही पम्डिक्कमें,
क्योंकी आत्मार्थी आचार्य श्रीजद्रबाहूस्वामी, श्रीहरिजद्रसूरजी,
तथा श्राद्धविधिके कर्त्ता तपागच्छी श्रीरत्नशेखरसूरजी, तथा कमल
गच्छी नवपद प्रकरण कर्त्ता श्री सूरिः प्रमुख आचार्योंके बनाये
ग्रंथोंमें पहले करेमिजंते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे।
तथा श्रीमहावीरस्वामीके छव कल्याणक मान्य हे, इस बातक
कल्पसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे; खरतरगच्छ, तपगच्छ के आच
र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी संबंध ज
णके छठा कल्याणक न मानते हे उनोकों मिगंवरकी तरे मल्लि
नाथस्वामीकों जी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूंकी वो जं
आश्चर्यकारी संबंध समानत्वही हे. दुसरा अपणे मनकल्पितपणेसे
न माणनेसें अपणेही पूर्वाचार्य गुरुवोंकी आज्ञा लोपन होती हे
तेसें सर्वे पोषध अष्टमी चतुर्दशी कल्याणकादिक पर्वतिथिको करे
लेकिन् विनापर्व सामान्य तिथिमें पोसह करणेका कथन किस

सिद्धांतमें भी नही हे, पर्यूसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही क-रणी एसा बंधाण नही, अबकी भी करे। तथा आंबिलमें एक अन्नद्रव्य दुसरा उष्णजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन हे इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करणा नहिं चाहिये। तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनायकजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया हे, कारण इस कालमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा हे, तथा श्रावककूं पच्चरकाणमें पाणस्सलेणवाका पाठ कहणा युक्त नही, यह पाठ साधूका हे, तथा दिनप्रति एक उपवाश पचरकावे, जो अधिक तपकी इछा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन् पच्चरकाण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे। तथा जिस धान्यकी दो फाड होय सो सब विदलकी गिणतीमे हे, इस द्विदलधान्यकूं गोरस दही छाछके साथ नक्षण नहि करे, तथा मरण जन्मका सतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन् संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहां संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी हे. अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके हे जिसमे सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित समाचारीशतक पंचांगी प्रमाण सूत्रोंके पाठ संयुक्त हे सो अनेकांती बुद्धिवानोने गुरुगमसें देखके धारणा॥ यह खरतरगछमेंसें चोरासी गछ भया हे, जिस वास्ते खरतरगछमें चोरासी नंदि हे, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, इस उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४ मे निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरिः एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरिःके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० को शालमें अणहिलपुरपत्तनमें चैत्यवाशी उपकेशी गणवालोकूं ज्ञान उर क्रिया

करके जीता, तब दुर्लभराजाने खरतर विरुद दिया, तबसें कोटिक गच्छ चंद्रकुल वज्रशाखावाले खरतरगच्छ कहलाणे लगे, लेकिन् अभी स्वमताभिमानी खरतरगच्छकूं संवत् वारेसे ४ की सालमें जिनदत्तसूरजीसें भया एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित ग्रंथोमें लिखा है, लेकिन अपणे पूर्वाचार्योंके बणाये सम्यक्तसप्तति आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरिःके दो शिष्य भये, बड़े जिनचंद्रसूरि, जिनोने संवेगरंगशालादि ग्रंथ बणाये और श्रीमाल गोत्र थापा, दुसरे श्रीअभयदेवसूरिः, जिनोने नवांगकी वृत्ति शाशनदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरिः, जिनोने हजारों राजपूतोंको श्रावक बणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिनदत्तसूरजी एक लाख तीस हजार राजन्यवंसी माहेश्वरी तथा ब्राह्मनोंको श्रावक बणाये, राखेचा लूंणीया पारख, सांवसुखा मालू कोठारी, वोथरा नाहटा, वगेर गोलछा झावक चम्म डुगरू सेठिया भणसाली, इत्यादिक तीनसें गोत्र स्थापक भणशाली प्रमुखगोत्रोंकूं उसवंशमें श्रावक बणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखणेसे ग्रंथ वढ जायगा इस वास्ते इतने पर लक्ष्य लेना. एक अठारे जाति रत्नप्रभसूरिजीने उसियामें उसवाल बणाये है, बाकी प्राये सर्व उसवाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरिः माहाराज तक खरतरगच्छके प्रतिबोधक है, पीछे उसवालवंशी हुये पीछे संवत १५ सें से लेकर आज दिन तक उर२ यतियोने तथा सताव संवेगियोने इनोपर अपणा सिक्का जमाया है, मूल वंशावली देखोगे तो सब व दोलत खरतर वृहत्गच्छकी है, यह वात हमने बहोतों की वंशावली तपासके लिखी है, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री जिनकुशलसूरजी भये, उनोके शिष्य उपाध्याय श्रीक्षेमकीर्तिने क्षेमधाम शाखा सन्निवाणगढमें पांचसे राजन्यवंशीयोंकूं दीक्षा देणे

से प्रसिद्ध हुई, इस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसें विराजमान धर्मशीलगणिः परमगुरु हुये, जिनोंके शिष्य पंडित श्रीकुशलनिधानमुनिः हुये, उन परमपुरुषसाधूजी माहाराजका चरणाब्जचंचरीक उ० श्रीरामलालगणिः ने शिष्यमंडली पं। क्षेमचंदमुनिः चि। पेमचंद अमरचंदादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्त्तव्य सर्व जीवोके उपगारार्थ छपायके प्रसिद्ध करा है.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बड़ा उपासरा विद्याशाला ... श्री। परमोपगारी युक्तिवारिधिः। रामलालजी। गणिः ॥

